UNIVERSAL
LIBRARY
OU_176642
UNIVERSAL
LIBRARY

श्रीः

महाभारत

अठारहो पर्व

(पद्यमय)

लेखक- श्रीसबलसिंहजी चौहान ।

प्रकाशक-

भार्गव पुस्तकालय
गायघाट बनारस सिटी

भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित ।

विषय-सूची

विषय — पृष्ठ

आदिपर्व

मंगलाचरण १
महाराज जनमेजय के पास वेदव्यास का आगमन २
व्यासजी की आज्ञा से वैशम्पायन का जनमेजय से महाभारत की कथा आरम्भ करना २
भरतवंश का वर्णन २
महाराज शन्तनु की रानी का गङ्गाजी में फाँदकर प्राण दे देना ... ३
शन्तनु का वनमें स्त्रीरूप गङ्गाको देखना ३
शन्तनु और गङ्गा की परस्पर प्रतिज्ञा ४
गङ्गाजी के गर्भ से भीष्म की उत्पत्ति ४
शन्तनु का अपनी प्रतिज्ञा त्याग देना और गङ्गा का अपना परिचय देना ४
अपने पुत्र को वरदान देकर गङ्गा का चला जाना ५
भीष्म का परशुराम से राजनीति और धनुर्विद्या सीखना ५
सत्यवती के जन्म का वृत्तान्त ... ७
पराशर के वीर्य से, सत्यवती के गर्भ से वेदव्यास की उत्पत्ति ... ७
सत्यवती और शन्तनु का विवाह और भीष्म का राज्य न करनेकी प्रतिज्ञा करना ८
सत्यवती के गर्भ से चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य की उत्पत्ति ... ८
भीष्म का काशिराजकीकन्याएंहरलाना ९
भीष्म और परशुराम का युद्ध ... १०
अम्बालिका का अग्निमें जल मरना... ११
शिखंडी का जन्म ११
धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर की उत्पत्ति १४
कर्ण की उत्पत्ति १७
कर्ण का परशुराम से छल करके धनुर्विद्या सीखना १८
दुर्योधन आदि सौ भाइयोंकी उत्पत्ति २०
पाण्डवों की उत्पत्ति ... २२
द्रोणाचार्य का हस्तिनापुर में आना २८

विषय — पृष्ठ

भीष्म की आज्ञा से द्रोणाचार्य का कौरव पाण्डवों को धनुर्विद्या सिखाना २९
अर्जुनकाद्रुपद को जीतकरद्रोणाचार्य के पास लाना ३६
लाक्षागृह से निकलकर पाण्डवों का एक ब्राह्मण के यहाँ ठहरना ... ४२
भीम और बकासुर का युद्ध ... ४५
द्रौपदीकास्वयम्बरऔरअर्जुनकालक्ष्यवेध ५२
अर्जुन का द्रौपदी को लेकर कुन्ती के पास आना ५५
इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर का राज्य करना ५९
अर्जुन का चित्राङ्गदा के साथ विवाह करके कुछ दिनों तक मणिपुर में रहना ६०
अर्जुन और हनुमानकी भेंट . ६६

सभापर्व

मङ्गलाचरण ७२
युधिष्ठिर का राजसूय यज्ञआरम्भकरना ७३
दुर्योधन का यज्ञशाला में आना और स्थलके भ्रम से जल में गिर पड़ना ८२
सबसे पहले कृष्ण की पूजा होते देख कर शिशुपाल का कुपित होनाऔर कृष्ण को अनेक दुर्वचन कहना ९२
श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध ... ९३
युधिष्ठिर से विदा होकर सब राजाओं का अपने अपने घर जाना .. ९७
दुर्योधन का शकुनी की सलाहसे जुआ खेलने की तैयारी करना ...१०१
युधिष्ठिरकाशकुनी केसाथजुआखेलना १११
युधिष्ठिर का जुआ में अपना सर्वस्व हारकर द्रौपदी को भी हार जाना ११७
दुश्शासन का द्रौपदी के केश पकड़कर सभा में लाना १२१
दुश्शासन द्वारा द्रौपदीकाचारखींचा जाना १२७
द्रौपदी का श्रीकृष्ण की स्तुति करना १२८
द्रौपदी का चीर बढ़ना और सभामें अनेक प्रकारके उत्पात देख पड़ना १३०

विषय	पृष्ठ
धृतराष्ट्र का सभामें आना और द्रौपदी समेत पाण्डवों को दासभाव से छुड़ा देना	...१३१
द्रौपदी समेत पाण्डवों का वन को चला जाना	१३७
वनपर्व	
पाण्डवोंका काम्यक वनमें निवास करना	१४६
द्वैत वनमें मार्कण्डेय और पाण्डवोंका संवाद	... १५१
अर्जुन का हिमालय पर जाकर शङ्कर की आराधना करके दिव्य अस्त्र प्राप्त करना	...१५५
नल और दमयन्ती की कथा	...१५७
युधिष्ठिर के पास नारद का आगमन	१७०
जरा राक्षसका युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव और द्रौपदी को हर ले जाना	...१७४
भीम द्वारा जरा दानव का वध	...१७५
पाण्डवोंका दुर्योधन आदि कौरवोंको गन्धर्वों के हाथ से छुड़ा देना	...१८२
जयद्रथ का द्रौपदी को हर ले जाना और पाण्डवों द्वारा जयद्रथ का अपमान होना	...१८३
विराटपर्व	
पाण्डवोंका विराट के यहाँ छिपकर रहना	१८२
विराट की सभा में भीमसेन का एक मल्ल को मल्लयुद्ध करके हरादेना	१८५
भीमसेन का कीचक को मार डालना	२०४
भीमसेन का कीचक के सौ भाइयोंको भी मार डालना	...२०७
कौरवों का विराट के राज्य पर आक्रमण करना	...२११
अर्जुन और कौरवों का युद्ध	...२२३
कौरव सेना का भागना और द्रोणाचार्य का अर्जुन के साथ युद्ध करना	२२८
अर्जुन और हलम्बुष का युद्ध	...१३४
अर्जुन और भीष्म का युद्ध	...२३६
भीष्म, द्रोण और कर्णको जीतकर अर्जुन का विराट के यहाँ वापस आना	२४१
पाण्डवोंको पहचानकर विराटका अभिमन्यु के साथ अपनी कन्या ब्याह देना	२०६
श्रीकृष्ण का दुर्योधन के पास जाकर पाण्डवोंके साथ सन्धि का प्रस्ताव करना	...२४८
उद्योगपर्व	
युधिष्ठिर का विराट, द्रुपद और श्रीकृष्णके साथ कर्तव्यका बिचार करना	... २६१
श्रीकृष्ण का बलदेवसे कौरव वंश का वर्णन करना	... २६२
श्रीकृष्ण का बलदेवसे अर्जुनकी वीरता बतलाना	... २६६
दुर्योधन के बुलाने से अनेक राजाओं का हस्तिनापुर में एकत्र होना	...२८०
दुर्योधन और अर्जुन का श्रीकृष्ण को अपने पक्ष में लानेके लिए एकही समय में उनके घर पहुँचना और अर्जुनको अपने पैरोंकेपास सामने खड़े देखकर श्रीकृष्णका उन्हीं के पक्ष में हो जाना	... २८७
द्रौपदी का श्रीकृष्णसे रो-रो कर अपने सब दुःख कहना	... २६३
सन्धि का प्रस्ताव लेकर द्रुपदके पुरोहित का दुर्योधन के पास जाना	... ३०४
धृतराष्ट्रकी आज्ञा से संजय का श्रीकृष्ण और अर्जुनके पास सन्धि के लिए जाना	...३१२
विदुर का धृतराष्ट्रसे दुर्योधनकी दुष्टता कहकर उनको पाण्डवों के साथ सन्धि कर लेनेकी सलाह देना	३२१
श्रीकृष्ण का सात्यकि से दुष्यन्त और शकुन्तला की कथा कहना	...३३६
श्रीकृष्ण का सन्धि कराने के लिए हस्तिनापुर को जाना और विदुरके घर में ठहरना	...३५०
श्रीकृष्ण का कुन्ती से मिलना	...३५६
कुन्ती का श्रीकृष्ण से विदुला का इतिहास कहकर अपने पुत्रों को उत्तेजित करना	...३६०
श्रीकृष्ण का भीष्म, द्रोण आदि से विदा होकर हस्तिनापुरसे प्रस्थान करना	...३७१

विषय पृष्ठ

कर्ण की सलाह से दुर्योधन का युधिष्ठिर के पास दूत भेजकर उनको युद्ध का सन्देश देना ...३८०

व्यासजी का दुर्योधन के पास आकर उनको समझाना ३९०

धर्मराज का श्रीकृष्ण, द्रुपद और विराट आदि राजाओं की सलाह से युद्ध का निश्चय करना ...३९७

भीष्मपर्व ।

श्रीकृष्ण का हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर के पास जाना और उनकोयुद्धकेलिए उत्साहितकरना ४०२

कुरुक्षेत्र में कौरव पाण्डवकी सेना का एकत्र होना और द्रोण आदि गुरुजनों को सामने देखकर युद्ध से विमुख अर्जुन को श्रीकृष्ण का समझाना ... ४०८

अर्जुन और भीष्म का युद्ध ...४१३

द्रोण के ब्रह्मास्त्र द्वारा विराट-तनय शंख की मृत्यु ४ ६

अर्जुन औरभगदत्त का युद्ध, भगदत्त और उनके हाथी की मृत्यु ...४२७

पाँच दिन युद्ध, होने के बाद दुर्योधन का भीष्म को उलहना देना और भीष्म का पाण्डवों के रक्षक श्रीकृष्ण का माहात्म्य कहना .. ४३८

भीमसेन और द्रोणाचार्य का युद्ध...४४६

श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र लेकर भीष्म की ओर झपटना और उनका प्रण रखना ४५४

दसवें दिन अर्जुन के बाणों से घायल होकर भीष्म का रथसे गिरना...४६४

द्रोणपर्व

भीष्म के गिर जाने पर दुर्योधन का द्रोणाचार्य को सेनापति बनाना४६८

अभिमन्यु का जयद्रथ को हराकर चक्रव्यूह में प्रवेश करना ...४७८

अभिमन्यु की मृत्यु और पाण्डवों का विलाप ४८७

विषय पृष्ठ

पुत्रशोकसे पीड़ित अर्जुन का जयद्रथ के मारने की प्रतिज्ञा करना ...४९२

अर्जुन का द्रोणरचित व्यूह में प्रविष्ट होकर अनेक योद्धाओं को परास्त करके जयद्रथ का वध करना ...५०७

अश्वत्थामा हाथी की मृत्यु और भीम का द्रोणपुत्र अश्वत्थामा को रथ समेत फेंक देना ५१७

अपने पुत्र की मृत्यु जानकर द्रोण का प्राणायाम करके अपने प्राण त्याग देना और फिर धृष्टद्युम्न द्वारा उनका सिर काटा जाना ...५२०

कर्णपर्व

द्रोण की मृत्यु होने पर दुर्योधन का कर्ण का सेनापति बनाना ...५२५

कुन्ती का कर्णसे परशुरामके दियेहुए पाँच बाण माँग लाना और इन्द्र का उनके कुण्डलकवच माँगलेना५२७

भीमसेन का दुश्शासन की भुजा उखाड़कर उसकेरुधिरसे द्रौपदी के केश बँधवाना ५४०

युद्धभूमि में कर्णके रथ का चक्र पृथिवी में धँस जाना औरकर्ण की मृत्यु५४६

शल्यपर्व

दुर्योधन का शकुनि की सलाह से शल्य को सेनापति बनाना ...५५२

युधिष्ठिर और शल्यकायुद्धतथाशल्य की मृत्यु ५६१

गदापर्व

दुर्योधनकाव्यास-सरोवरमें छिपजाना५६४

पाण्डवों का दुर्योधन की खोजमें व्यास-सरोवर के पास पहुँचना और भीम के ललकारनेपरदुर्योधनका बाहर निकल आना ...५६७

भीमसेनऔर दुर्योधन का गदायुद्ध ५६८

दुर्योधन का घायल होकर गिरपड़ना ५६९

सौप्तिकपर्व

अश्वत्थामा का द्रौपदी के पाँचो पुत्रों के सिर काटकर दुर्योधन के पास लेजाना और दुर्योधनकी मृत्यु...५७५

विषय	पृष्ठ

ऐषिक पर्व

अर्जुन का अश्वत्थामा को बाँधकर द्रोपदी के सामने लाना और द्रौपदी का दया करके उनको छुड़ा-देना और धृतराष्ट्र का भीमसेनकी लोहमूर्ति को चूर्णकर डालना तथा श्रीकृष्ण को गान्धारीका शाप ...५७७

स्त्रीपर्व

संजय का पुत्रशोक से व्यथित राजा धृतराष्ट्रको समझाना ...५८१
कौरव स्त्रियों का विलाप ...५८५
पाण्डवों का धृतराष्ट्रके पास जाना और उनसे क्षमा माँगना ...५९१
युद्ध में निहत वीरों का दाहकर्म करना और स्त्रियों का सती होना ...५९५

शान्तिपर्व ।

व्यासजी की आज्ञा से पाण्डवों का शरशैय्या पर पड़े हुए भीष्म के पास राजनीति और धर्मोपदेश सुनने के लिए जाना ...६००
भीष्म का युधिष्ठिर से एकादशी का माहात्म्य कहना ६०८
भीष्मका युधिष्ठिर से गंगा का माहात्म्य कहना ६१७
युधिष्ठिर को उपदेश देकर भीष्म का प्राणत्याग करना ६२०

अश्वमेधपर्व

व्यासजीकीआज्ञासेयुधिष्ठिरका अश्व-मेध यज्ञ करनेका निश्चय करना ६३७
भीमसेन का राजायौवनाश्वको जीत-कर यज्ञ करनेके लिये अश्वलाना६४४
अर्जुनका लङ्का से सुवर्ण ले आना ...६५१
भीमसेन का श्री कृष्ण को बुलाने के लिएद्वारिका को जाना ... ६५४
यज्ञ का अश्व छोड़ाजाना और अर्जुन का घोड़े के पीछे जाना ... ६६१
राजा हंसध्वज का घोड़ेकोपकड़ लेना और उनके पुत्रों से अर्जुनकायुद्ध६७३
मणिपुरमेंबभ्रुवाहनकेसाथअर्जुनकायुद्ध६८७
बभ्रुवाहन द्वारा अर्जुन बध और चित्राङ्गदा तथा उलूपीका विलाप६९५
सञीवन मणि के प्रभाव से अर्जुनका जीवित होना ७०२
देश भर में भ्रमण करके घोड़े समेत अर्जुन का हस्तिनापुर को आना और अश्वमेध यज्ञकाअनुष्ठान...७३१

आश्रमवासिकपर्व

पाण्डवों का सुखपूर्वक हस्तिनापुर में राज्य करना ७४१
धृतराष्ट्रआदि का तपस्या करने के लिए वन को जाना ७५२
धृतराष्ट्र,गान्धारी और कुन्तीकीमृत्यु७५५

मुशलपर्व

अर्जुन का द्वारिकापुरी को जाना ...७५६
प्रभास तीर्थ में परस्पर युद्ध करके यदुवंशियों का विनाश ...७७१
श्रीकृष्ण का इस लोक से चला जाना७७२

स्वर्गारोहणपर्व

व्यासजी का पाण्डवों को हेवार में गलने की अनुमति देना ...७७६
परीक्षित् का राज्याभिषेक करके पाण्डवों का हिमालय पर जाना७८२
पाण्डवों का केदारनाथके दर्शनकरना७८४
नारद का पाण्डवों को ब्रह्मज्ञान का उपदेश देना ७९०
द्रोपदी की मृत्यु ७९१
सहदेव और नकुल की मृत्यु ...७९२
अर्जुन और भीम की मृत्यु ...७९३
युधिष्ठिर की मृत्यु ७९४
युधिष्ठिर का स्वर्गलोक मेंद्रौपदीसमेत अपने भाइयों और युद्ध मेंनिहत द्रोणाचार्यआदिवीरोंकोदेखना...७९५

महाभारथ

* श्री: *

अथ महाभारत भाषा

आदिपर्व

दो०—गजमुख सुखकर दुखहरण, तोहिं कहौं शिरनाय।
कीजै यश लीजै विनय, दीजै ग्रन्थ बनाय ॥
जगदीश्वर को धन्य जिन, उपजायो संसार।
क्षितिजलनभपावकपवन, करिइनको विस्तार ॥
नृपहिंदास दासहिनृपति, पवि तृण तृणहिंपखान।
जलधिअल्पसरलवुमरहि, उदधिकरैक्षणमान॥

प्रथमहिं आदिपुरुष को ध्यावों ❀ जा प्रसाद शिक्षा सब पावों ॥
परमपुरुष आखण्डित रूपा ❀ है सर्वातम रूप अनूपा ॥
अक्षर कृष्ण अक्षर मंझारा ❀ जानै देखत सब संसारा ॥
अक्षर भये हैं कृष्ण अभङ्गा ❀ परमपुरुष कर रूप अनङ्गा ॥
जो सर्वज्ञ लेप निर्लेपा ❀ ता महिमा को कह संक्षेपा ॥
जाके नाम तरत संसारा ❀ जाहि नाम दुखशोक सँहारा ॥
एक ब्रह्म ते अगणित रङ्गा ❀ बरण बरण संसारप अङ्गा ॥
ता माया सब देवता भयऊ ❀ त्रिगुण एक ते गुण निर्मयऊ ॥
पुरुषकबीज मूल पुनि खारहि ❀ मूलरूप बरणौं निरकारहि ॥
हरिहर कृष्णा तौ शाखा भयऊ ❀ जन्म बोध संहारण लयऊ ॥

दो०—एक ब्रह्म बहुरूप है, जानि जात नाहिं भेद ।
नानारूपक त्याहि बिषे, महिमा भाषत वेद ॥
कहौं निरञ्जन पुरुष प्रधाना ❋ पुनःब्यास मुनि गुणकेनिधाना ॥
हरिचरित्र कोउ भेद न पावहि ❋ के भाषा सँक्षेप कछु गावहि ॥
महामुनी जो ब्यास बखाना ❋ श्रीभगवन्त चरित जिनजाना ॥
जनमेजय राजा अवतारा ❋ धर्मरूप ऋष्मता कुमारा ॥
एके समय ब्यासमुनि आये ❋ राजसभा के माँहिं सिधाये ॥
पूजार्चा तब राजा कीन्हों ❋ हर्ष गात कछु पूछे लीन्हों ॥
सबही देख्यो तुम मह भारथ ❋ कौरव पाण्डवकर पुरुषारथ ॥
कौन प्रकार चरित्र अपारा ❋ मारे कौरव पंच कुमारा ॥
दो०—औरौ बंश चरित्र जो, सुनिये तोहिं प्रसाद ।
जाहि सुनत जो महामुनि, नाशत चित्तविषाद ॥
सुनिकै ब्यास कहै नृप पाहीं ❋ यह अब कहैक अवसर नाहीं ॥
बैशम्पायन शिष्य हमारा ❋ सो तो कहै चरित्र अपारा ॥
यह कहि ब्यासमुनि बनहिं सिधाये ❋ बैशम्पायन कथा सुनाये ॥
प्रथमहिं कहो वंश बिस्तारा ❋ जामें भये नृप अमित प्रकारा ॥
कृष्णपुत्र मारीच सु भयऊ ❋ मारिच सूरस भा निर्मयऊ ॥
सूरसभा पुत्र सूर्यावतारा ❋ सूर्य पुत्र स्वायम्भु भुवारा ॥
स्वयम्भु पुत्र नक्षत्र पति भयऊ ❋ बुद्धनाम सुत ता निर्मयऊ ॥
ताके पुत्र अनूपम आही ❋ वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥
अनुपम पुत्र नहंस भुवारा ❋ नहंस पुत्र संजति संसारा ॥
संजति पुत्र मरे जनमाहीं ❋ संजति पुत्र अनूपम आहीं ॥
दो०—संजतिपुत्र है प्रहजमा, जगत महासंचार ।
तस्य पुत्र जो भोज भे, सुनो जो वचन भुवार ॥
भोजपुत्र भयो सन्त अवतारा ❋ भरत नाम भयो तासु कुमारा ॥
मञ्जमीठ ताके सुत भयऊ ❋ तासु पुत्र ब्रह्मा निर्मयऊ ॥
बिष्णुसुता सत्य सुवनके माहीं ❋ तासुपुत्र शन्तनु नृपआहीं ॥
बिचित्रबीर्य है तासु कुमारा ❋ लीन्हो जासु पाण्डु अवतारा ॥

भये पाण्डुसुत अर्जुन नामा ❋ अर्जुनसुत अभिमन्यु गुणधामा ॥
अभिमन्युपुत्र परीक्षित रह्यऊ ❋ जनमेजय तिनके सुत भयऊ ॥
यहि प्रकार भा बंश बिस्तारा ❋ सोम बंश शंतनु है भुवारा ॥
महाबली जानत संसारी ❋ कर राज्य नित नीति बिचारी ॥
ब्रह्मा नाम रहै पटरानी ❋ रूपवन्त ना जाइ बखानी ॥
गोरी रति जब देखि लजाहीं ❋ तीनिलोक तासम है नाहीं ॥

दोहा—ब्रह्माका मन मोहिकै, हरण भयो तब ज्ञान ।
तासु रूप देखे बिना, भलजात सब ज्ञान ॥

शंतनु राजा गये शिकारा ❋ ब्रह्मा शंतनु गेह सिधारा ॥
ब्राह्मा रानी के ढिग गयऊ ❋ करि बहुयतन कामसुख लयऊ ॥
करिकै भोग ब्रह्मलोक सिधाये ❋ शंतनु राजा गृह तब आये ॥
रानी कथा सबै बिस्तारा ❋ शंतनु लज्जित क्रोध अपारा ॥
स्त्री जानि बधन नहिं करेऊ ❋ तब राजा संगति परिहरेऊ ॥
सो रानी बहु लज्जा पाई ❋ गङ्गाजी में प्राण गँवाई ॥
आगे सुनु राजा मन जानी ❋ शंतनु के घर नहि है रानी ॥
पूर्व बशिष्ठ हैं सुर पुरमाहीं ❋ अष्टबासु हैं तहाँ जो आहीं ॥
गौ बशिष्ठ की चोरी कीन्हा ❋ क्रोधित ऋषि शाप तब दीन्हा ॥
आपन गवसचोर भो आपा ❋ मानुष जन्म मृत्यु परितापा ॥

दोहा—मानुष जन्म होउगे, भुगतौ लोक मँझार ।
शापै दीन्ह बशिष्ठ तब, अतिक्रोधित संचार ॥

सब देवन मिलि कीन्ह बिचारा ❋ अष्टबासु जन्महि संसारा ॥
तब देवन गङ्गा हँकराई ❋ शाप हेतु तब कह समुझाई ॥
तुम्हरे गर्भ जन्म पर भावैं ❋ अष्टबासु मुक्त तन पावैं ॥
मानुषरूप धरो अवतारा ❋ जन्म बर्षलों गर्भ मँझारा ॥
गङ्गा जाना पर उपकारी ❋ मानुष रूप मध्य कै धारी ॥
खोजा सबहि जगत संसारा ❋ कहाँ जाउँ को पुरुष हमारा ॥
करै बिचार कहै तब बाता ❋ शंतनु भूप सबै जग ज्ञाता ॥
राजा तबै अखेटक गयऊ ❋ बन महँ गङ्गा दर्शन दयऊ ॥

शंतनु मोहे देखत नारी ❋ तब गङ्गासन कह्यो बिचारी ॥
कौन रूप बन हेतु हौ काहा ❋ कहौ सत्य सो हमहीं पाहा ॥

दोहा—गङ्ग कह्यो बात अस, देवाङ्गना हम जान ।
बाचा बँध सोई पुरुष, कन्या कहा बखान ॥

राजा हर्षित बाचा कीन्ही ❋ तब गङ्गा यह बोलै लीन्ही ॥
कौनो कर्म करत जब राऊ ❋ तामहँ भङ्ग देव जनि पाऊ ॥
तादिन हमहिं न पैहौ राजा ❋ यहि बाचा सो बध है काजा ॥
तब राजा घर को लै आये ❋ हर्षवत बधाय बजवाये ॥
राजा रहै हर्ष मन माहीं ❋ परम हर्ष सों बासर जाहीं ॥
बहुतक दिन बीते यहि भाँती ❋ बालक एक गर्भ जन्माती ॥
राजा हर्ष बहुत मन कीन्हा ❋ बहुत दान बिप्रनकहँ दीन्हा ॥
गङ्गा कर्म अचरजा सारा ❋ बालक लकै जलमहँ डारा ॥
अंत प्राण बालक के गयऊ ❋ बिस्मय मनमहँ राजा भयऊ ॥
कहत नहीं कछु बाचाबाधे ❋ रहा दुःख हिरदयमहँ साधे ॥

दोहा—याहि प्रकार सों गंग तव, सात पुत्र जलडार ।
बाचा बंध हित राजा, महा दुखितसंभार ॥

अष्टम गर्भहि भा संचारा ❋ तब शंतनु बिनती अनुसारा ॥
सात पुत्र के नाशे प्राना ❋ याहि पुत्र हमको देउ दाना ॥
हँसिकै गङ्गा तब यह कहीं ❋ इतने दिन तुम्हरे सँग रहीं ॥
बाचा छल आजुइ भा आनी ❋ हम हैं गङ्गा कहत बखानी ॥
अष्टम राजा आप बचाया ❋ यह कनिष्ठ जो अष्टम आया ॥
यह बृत्तान्त कहौं तोहि पाहीं ❋ राजा सुनो कथा मनमाहीं ॥
कामधेनु बशिष्ठ की आही ❋ आठोबासु हरण कर ताहीं ॥
ताही पाप शाप उन दीन्हो ❋ मानुष कर्म चोर इन कीन्हो ॥
ताते शाप लेउ समुदाई ❋ यहै कनिष्ठ हरण कर गाई ॥

दोहा—यहै हेतु हम मनुष तन, गंगा कहत विचार ।
परउपकार के कारणे, मेरोहि साथ तुम्हार ॥

गङ्गा पुत्र गोद कर लीन्हा ❋ स्वर्गहिलोक गमन तब कीन्हा ॥
इन्द्र बरुण यम पावक पाहीं ❋ औ दिक्पाल मिलायो ताहीं ॥
सब ते कहा पुत्र यह मोरा ❋ ताते दरश करौं जो तोरा ॥
सबहिं कृपा कीजै यहि काजा ❋ गङ्गा भाष्यो देव समाजा ॥
रण में अजय होहु बरदेवा ❋ पुत्र हमार जानु यह भेवा ॥
सबहि देवता काह तब बाता ❋ रण में अजय होइ कह माता ॥
जब लग अस्त्र रहै करमाहीं ❋ तीनि लोक कोउ जीतहि नाहीं ॥
सौंपा शन्तनु को तब जाई ❋ और कहा बहुतक समुझाई ॥
और एक कंकण तब दीन्हा ❋ हर्षि गात राजा लै लीन्हा ॥
जाके हाथ बराबर होई ❋ ताकर ब्याह करब नृप सोई ॥

दोहा—यह कहिकै तब जाह्नवी, भई जो अन्तर्द्धान।
राजा पुत्रहिं पालहीं, सबलसिंह चौहान ॥

पांच सात बर्ष कर भयऊ ❋ परशुराम पहँ पढ़ने गयऊ ॥
परशुराम किरपा बहु कीन्हा ❋ बिद्या राजनीति सब दीन्हा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु सिखे अपारा ❋ आपु समान कीन्ह संचारा ॥
भृगुपति बहुत दया तब कीन्हा ❋ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हा ॥
पढ़ि जो बिद्या भीषम आये ❋ बैशम्पायन कथा सुनाये ॥
यहि प्रकार तब भीषम भयऊ ❋ महाहर्ष शंतनु मन ठयऊ ॥
आगे कहो कथा बिस्तारा ❋ सावधान होइ सुनो भुवारा ॥
जैसे ब्यासमुनि को अवतारा ❋ सत्यवती के गर्भ मँझारा ॥
जैसे सत्यवती अवतारा ❋ तासु पुत्र मुनिब्यास कुमारा ॥
सुनत कथा पाप कर नासा ❋ पावत अन्त परमपद बासा ॥

दोहा—भारत कथा पुण्यफल, राजा सुनु बिस्तार ।
सबलसिंह चौहान कह, गुण गोबिन्द अपार ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहान भाषाकृतेआदिपर्व
वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

वैशम्पायन करत बखाना ❀ जनमेजय राजा सुनि ध्याना ॥
बस्वरुपचर राजा बलवन्ता ❀ महासुशील बीर गुणवन्ता ॥
गिरिकर नाम तासु यह रानी ❀ रूप शील नहि जाय बखानी ॥
रजस्वला सो रानी भयऊ ❀ तादिन राउ अखेटक गयऊ ॥
मारे साउज मृगा अपारा ❀ जल आश्रम राजा पगुधारा ॥
सरवर एक अनूप सुहावा ❀ नाना जन्तु कमल बहुछावा ॥
कञ्ज महा भँवरा इक आही ❀ केलिकरत भँवरी के पाही ॥
राजा देखि कामबश भयऊ ❀ भूलि ज्ञान राजा का गयऊ ॥
रानी रूप हृदय धरि राऊ ❀ बीर्यपात भयो वाही ठाऊ ॥
राजा कही बीर्य दे आहीं ❀ तासुको तेज पताकहि जाहीं ॥

दोहा—मन बिचार कर राजा, तपसी शुकहि बुलाइ॥
पद्मपत्र दोना कियो, ताहि वीर्य सौंपाइ ॥

भाष्यउ राज पक्षि सों बानी ❀ देहु बीर्य यह जहँ है रानी ॥
कहि संदेश तुरत मो आवहु ❀ तब पक्षी तुम बात सुनावहु ॥
पक्षी बीर्य चलेउ लै तबहीं ❀ आधो मारग पहुँचो जबहीं ॥
नदी एक के ऊपर आयो ❀ पक्षि सकल देखन तब धायो ॥
तिन्हें देखि गहि जानि अहारा ❀ दूनौं पक्षिन युद्ध सँचारा ॥
एक बुन्द जल महँ पर सोई ❀ महा युद्ध पक्षिनमहँ होई ॥
जौन बुन्द जल माही डारा ❀ एक मच्छि तव कीन्ह अहारा ॥
दूनों पक्षी लरत सो जाहीं ❀ दोना कतहूँ गयो उड़ाहीं ॥
जौनि मच्छि सो कीन्ह अहारा ❀ गर्भवन्त भै जल मंझारा ॥

दोहा—बहुत दिना तब बीतिगे, बिधि परपञ्च उपाइ ।
धीमर एक अखेट कहँ, माच्छि हेतु तहँ जाइ ॥

ओही मच्छि जालमहँ परी ❀ दीरघ मच्छि देखि सुखकरी ॥
दासा राम तहाँ कर राऊ ❀ धीमर मीन लाइ ता दाऊ ॥
राजा मच्छि देखि बिस्तारा ❀ तब मच्छीकर उदर बिदारा ॥

तासु उदर में देखि भुवारी ❀ कन्या एक अनूप कुमारी ॥
मच्छराज मन हर्ष अपारा ❀ बोलयउ बचन समय अनुसारा ॥
मच्छ देश पति राजा सोई ❀ निश्चय राजा जानहु होई ॥
कन्या नृप केवट को दीन्हा ❀ मच्छोदरी नाम त्यहि कीन्हा ॥
बहुत प्रीति केवट सों राऊ ❀ कन्या पालत अपने ठाऊ ॥
सात बर्ष की कन्या भयऊ ❀ नदी माहिं सो कन्या गयऊ ॥
केवट ब्याधी तनमां गही ❀ नाव घाट में कन्या रही ॥

दोहा—याहि प्रकारते राजा, सुनौ और बिस्तार ।
त्यहि मारग पाराशर, आयो जो पगुधार ॥

नदी घाट पाराशर जाई ❀ मच्छोदरि को देख्यउ आई ॥
कन्या देखि मोहि मुनि गयऊ ❀ कामातुर पाराशर कहेऊ ॥
लगन देखि ऐसा मुनि ताही ❀ जन्महि पुत्र सो पण्डित माही ॥
कन्या पाहिं कहा मुनिबाता ❀ नदीघाट कर मत सख्याता ॥
काम जो अनी पंचशर मारा ❀ स्त्री मानहु बचन हमारा ॥
रति दानहिं दे हमको नारी ❀ सुनि कन्या लज्जा भइ भारी ॥
कन्या कहा बाल तन मोरा ❀ जानों काह काम गति तोरा ॥
दिवस माहिं देखहिं नर नाना ❀ कैसे तुम भाषौ रति दाना ॥
ऋषि जो कहत न बचन बिचारी ❀ योजनगन्धा नाम तुम्हारी ॥
यौवनवन्त होहु छणमाहीं ❀ अन्ध कुहिर होवै पुनि ताही ॥

दोहा—यौवनवन्त भई सुता, औसुगन्ध तनुसान ।
दशादिशा अँधियार भा, कन्यादिय रतिदान॥

रति रस पाराशर तब कीन्हा ❀ ब्यासदेव जन्महिं तब लीन्हा ॥
जन्मेउ बालक गर्भ मँझारा ❀ पिता संग तब बन पगु धारा ॥
पुत्र हेतु रोवत सो रानी ❀ तबै ब्यास अस कह्यउ बखानी ॥
बिष्णू माया जन्म हमारा ❀ कौन काज दुख करो अपारा ॥
तप के काज पिता सँग जैहौं ❀ सुमिरत मन्त्र तुरतही ऐहौं ॥
कन्या कहे मम भयो कलंका ❀ लोकलाज कर्महु भौबंका ॥

पाराशर भाष्यो बिस्तारी ❀ आशिष मोर होहु सुकुमारी ॥
पाराशर बन तबहीं गयऊ ❀ ब्यासदेव पुत्रहि सँग लयऊ ॥
कन्या तब अपने गृह आई ❀ यह बृत्तांत सुनौहो राई ॥
ऐसो ब्यासदेव अवतारा ❀ भाष्यो मुनिवर सुनो भुवारा ॥

दोहा—ब्यासजन्मकी कथा यह, सुनु राजा धरि ध्यान।
पुण्यकथा श्री भारत, जो सुनि पाप नशान ॥

शंतनु राजा केतिक काला ❀ उपजा चित्तहेतु सो बाला ॥
पुरबै गंगा कंकण दीन्हा ❀ जगत सकल उमान सो कीन्हा ॥
काहू के कर होत सो नाहीं ❀ खोज्यो सकल जगत के माहीं ॥
मत्स्योदरि केवटकै बारी ❀ ताके करमहँ भयो बिचारी ॥
राजा कहे सुन्यो तब बाता ❀ ब्याहब मो कन्या बिख्याता ॥
भीषम कहे जाति की हीना ❀ कौन बुद्धि यहि बिधिने दीना ॥
शंतनुहू कीन्ह्यो यह कामना ❀ भीषम कह्यो ब्याह अनबना ॥
भीषम केवट सन कह जाई ❀ राजा ब्याह करन तब आई ॥
केवट यह बाचा करि लेऊँ ❀ तब कन्या राजा कहँ देऊँ ॥
मोरि कन्या के गर्भ अवतारा ❀ सोई राज्य करब संसारा ॥

दोहा—भीषम तब कीन्हो सोई, बचनबन्ध परमाण।
हमको राज्य न चाहिये, पिता होइ कल्याण ॥

भीषम प्रण कीन्हो ता पाहा ❀ जगतमाहँ ना करौं बिवाहा ॥
योग रूप रैहौं सेवकाई ❀ कन्या देउँ पिता को जाई ॥
बाचाबन्ध जब भीषम कीन्हा ❀ केवट राजहि कन्या दीन्हा ॥
ऐसे शंतनु ब्याहीं जाई ❀ सत्यावती नाम सो पाई ॥
सत्यवती पटरानीं भयऊ ❀ राज्यभोग तब शंतनु कियऊ ॥
चित्राङ्गद भयो एक कुमारा ❀ बिचित्रबीर्य दूसर अवतारा ॥
दूनों पुत्र भये नृप बारा ❀ महाबली गुण रूप अपारा ॥
चित्राङ्गदहि राज्य तब दीन्हा ❀ कछुकहिदिवसराज्य उनकीन्हा ॥
अन्तकाल शंतनु को भयऊ ❀ स्वर्गलोक राजा तब गयऊ ॥

दोहा—क्रिया कर्म शन्तनु कर, कीन्हो तीनि कुमार ।
सत्यवती मन शोक है, तरुण अवस्था भार ॥

देशराज्य भीषम रखवारा ❀ चित्राङ्गद भो राजभुवारा ॥
महायशी राजा यह भयऊ ❀ वैशम्पायन राजहि कह्यऊ ॥
भीषम जो प्रतिपालहिं राजहिं ❀ धर्मशास्त्र कोहत हरि काजहिं ॥
यहि प्रकार भारत बिस्तारा ❀ आदि पर्व संक्षेप पसारा ॥
कहत होत बहु कथा अपारा ❀ राजा सुनु यह बहुबिस्तारा ॥

दोहा—भारतकथा पुण्य फल, कहतहि पाप बिनाश ।
सबलसिंहचौहान कह, सुनतहि भक्तिप्रकाश ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंह चौहान भाषाकृते आदिपर्व
वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा बिस्तारा ❀ काशीराजा बीर भुवारा ॥
कन्या तीनि तासुघर रहई ❀ तिनके नाम सुनो तो कहई ॥
अम्बे जेठि अम्बिका नामा ❀ सबते छोटि अँबलिका जाना ॥
बरषैं दश बीते जब तासू ❀ तबहिं स्वयम्बर करेउ प्रकासू ॥
देश देशके राजा आये ❀ सत्यावती कतहुँ सुनि पाये ॥
भीषम पाहिं कहा तब रानी ❀ बन्धु बिवाहो कन्या आनी ॥
जीति स्वयम्बर कन्या लीजै ❀ दूनों बन्धु ब्याह करदीजै ॥
यह सुनिकै भीषम रथ साजा ❀ काशी गये जहाँ सब राजा ॥
तीनों कन्या रूप अपारा ❀ पटभूषणयुत यज्ञ मँझारा ॥
मन बाञ्छित बर चाहत सोई ❀ हाथे माल उपस्थित होई ॥

दोहा—तीनों कन्या एक सँग, जयमालालिये हाथ ।
मन बाञ्छित बर चाहतीं, आये बहु नरनाथ ॥

तीनों कन्या एकहि साथा ❀ भीषम जाइ गह्यो त्यहि हाथा ॥
तीनों कन्या रथहिं चढ़ाई ❀ हाँका रथ तब चला उड़ाई ॥

कन्या आरत नाद पुकारा ❋ रण ठाढ़े तब सबै भुवारा ॥
भयो युद्ध तहँ बरणि न जाई ❋ भीषम जीते सब जगराई ॥
राजन अस्त्र अनेक प्रहारे ❋ भीषम बीर काटि सब डारे ॥
देवन को बर भीषम पाहीं ❋ को जीते सन्मुख रणमाहीं ॥
हारे सब राजा बलधारी ❋ भीषम लैगयो तीनिउ क्वाँरी ॥
तीनों कन्या गहि लै आये ❋ सत्यावती मातु सुख पाये ॥
चित्राङ्गद अम्बिका बिवाही ❋ बिचित्रबीर्य अम्बि उरताही ॥
दोउ बन्धु दुइकन्या ब्याहीं ❋ अम्बालिका कह भीषम पाहीं ॥

दोहा—हमको हरण कीन तुम, गह्यो बांह सो बांह ।
जो अपना सुख चहौ तुम, हमसनकरौबिवाह ॥

भीषम कह प्रणहवै हमारा ❋ स्त्री भोग तजा संसारा ॥
स्त्री भोग पुत्र जो होई ❋ राजबंश दुइ होई सोई ॥
हम तजि राज्य तात के कारन ❋ स्त्री भोग तजा संसारन ॥
कन्या सुनतहि भई निरासा ❋ रोवति चलि भृगुपति के पासा ॥
भीषम केर गुरू उनजाना ❋ ता कारण तहँ कीन पयाना ॥
जाइ दुःख भृगुपति सों कहैं ❋ भीषम पाप करत जो अहैं ॥
हरि लायो ममकारण ब्याहा ❋ ताते कहौं बात भृगुनाहा ॥
परशुराम क्रोधित मन भयऊ ❋ कन्या लै भीषम पहँ गयऊ ॥
भीषम पाहिं कह्यो भृगुनाथा ❋ तुम हरिलायो पकर्यो हाथा ॥

दोहा—नारि भोग अरु राज्यसुख, तजा पिता के काज।
अब जो ब्याहहि कीजिये, होतजन्मकुललाज ॥

परशुराम तबहीं अस भाषहिं ❋ जीतौ युद्ध हमारे साथहि ॥
बचन हमार करौ परमाना ❋ नातरु रण ठानहु मैदाना ॥
तोहिं जीतिहौं कन्या देऊ ❋ भृगुनन्दन कहै यह भेऊ ॥
भीषम प्रण करिक रणठाना ❋ गुरुशिष्य कीन कठिन संधाना ॥
सातदिनालौं भा रणभारी ❋ दोऊ बीर महा धनुधारी ॥
सुर बरदानिक भीषम आही ❋ जगत माहिं को जीतन चाही ॥

अतिही मारु करै भृगुनाथा ❋ जय नहिं पायो भीषम साथा ॥
सात दिना लों भो रण भारी ❋ भीषम युद्ध भयो अनुहारी ॥
बहुतक शर मारे भृगुनाथा ❋ जय नहिं पायो भीषम साथा ॥
भृगुपति अस्त्र भये सब हीना ❋ तब अकुलाय शाप यह दीना ॥

दोहा—गुरु अपमान कीन तुम, क्षत्री है संसार ।
अस्त्रहीन ह्वै मृत्यु तव, सन्मुख रण मंझार॥

कीन्ह्यो क्षत्री गुरु अपमाना ❋ तव अपमान तजौ रणप्राना ॥
और प्रतिज्ञा यहै हमारा ❋ जेतक क्षत्री जगत मँझारा ॥
इन्हैं अस्त्र देवें अब नाहीं ❋ यहै प्रतिज्ञा अब मन माहीं ॥
परशुराम तो यह कहि जाई ❋ मे निराश कन्या वहि ठाई ॥
पक्ष करत हारे भृगुनाथा ❋ हमको बिधना कीन्ह अनाथा ॥
धिक है जीवन जन्म हमारा ❋ अब धिक रहो जगत मंझारा ॥
तब भीषम पहँ कहै रिसाई ❋ तो कहँ भीषम मारबजाई ॥
मोरे पाप तोर शिर भारा ❋ मो दरशन ते रण संहारा ॥
यहै शाप भीषम कहँ दीन्हा ❋ तब कन्याहिं सरारचि लीन्हा ॥
महादुखित पावक तनु जारा ❋ सोई कन्या भई जरि छारा ॥

दोहा—यहि प्रकार ते कन्या, तजि पावक में प्रान ।
सोई जन्मी द्रुपदघर, जाहि शिखण्डी नाम॥

राजा सुनो कथा परवेशा ❋ बिदरदेश महँ एक नरेशा ॥
शुद्रानाम तत्र कन्या अहई ❋ ताहि स्वयम्बर कीन्हा चहई ॥
सो कन्या हरि भीषम लीन्हा ❋ बिचित्रवीर्यकी दासी कीन्हा ॥
बैशम्पायन कहत बखानी ❋ सुनु राजा तुव बंश कहानी ॥
भीषम महाबीर जग जाना ❋ बानावरि नहि बीर समाना ॥
देश राज प्रतिपालन करई ❋ राजा काज सदा मन धरई ॥
भारत कथा पाप नहि रहई ❋ तृणसमान अघ पावक दहई ॥

दोहा—महभारत भाष्यउ यह, कीन्हीं अल्प बखान ।
सबलसिंह चौहान कह, सर्व पाप क्षय जान ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहान भाषाकृते आदिपर्व वर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा सवधाना ❀ वैशम्पायन करत बखाना ॥
चित्राङ्गद राजा पुर माहीं ❀ प्रेमरु हर्ष सदा मनमाहीं ॥
इक दिन राजा गये शिकारा ❀ महा अगम कानन मँझारा ॥
तहँ चित्राङ्गद गन्धब रहई ❀ राजा देखि क्रोध सो कहई ॥
मानुष ह्वै कै गंध्रब नामा ❀ अब निश्चयकरि तजिहै जामा ॥
बन में गंध्रब तबै प्रचारा ❀ चित्राङ्गद सों रण बिस्तारा ॥
गंध्रब बीर बाण सो मारे ❀ पैदल हय दल सब संहारे ॥
गंध्रब गये स्वर्ग अस्थाना ❀ देशराज सब ब्याकुल नाना ॥

दोहा—भीषम चिता चिन्ता भई, कहँ गये बन्धु नरेश ।
बहुप्रकार ते खोजहीं, कतहुँ न मिल्यो अँदेश ॥

क्रियाकर्म ताहीकर कीन्हा ❀ बिचित्रबीर्यको राज्यहि दीन्हा ॥
सत्यवती सो ब्याकुल होई ❀ पुत्रके हेतु मरत सो रोई ॥
भीषम ज्ञान बुझावै ताहीं ❀ करि बिचार या मन के माहीं ॥
यूवारूप कन्त का शोगा ❀ ताके ऊपर भयो बियोगा ॥
रात्रिकाल गङ्गा सुत जाई ❀ रात्रि दिवस बहु कथा सुनाई ॥
जाते मनै शान्ति हट आवै ❀ नीति कर्म सो कथा सुनावै ॥
दिन केतिक तो ऐसे गयऊ ❀ बिचित्रबीर्य तब चरचै लयऊ ॥
सर्व रात्रि माता के पाहीं ❀ भीषम कहा करै निशिमाहीं ॥
पाप चित्त कै राजा जाई ❀ देखि पराक्रम जाइ दुराई ॥
भीषम उत्तम अशन बनाये ❀ माता को तहँ लै बैठाये ॥

दोहा—आप ज्ञान उपदेश तै, भाष्यउ तहाँ पुरान ।
जाते माता थीर मन, प्रकट होइ मन ज्ञान ॥

यहै कर्म देख्यउ तब राई ❀ त्राहि त्राहि करि चलेउ पराई ॥
तब मनमें नृप करै बिचारा ❀ मनसों पाप न मिटै हमारा ॥
प्रातकाल नृप रछेउ उपाई ❀ तब पूछ्यो भीषमसों आई ॥
सुनो बन्धु आशा कर मोहीं ❀ पुराय अर्थ पूछौं मैं तोहीं ॥
मनसा पाप जो चित में करै ❀ कौन प्रकार जगत में तरै ॥
गुरुजन पर जो पाप सँचारा ❀ कैसे बन्धु होइ निस्तारा ॥
भीषम भाष्यो अर्थ पुराना ❀ पूछि सहज मनमें असजाना ॥
अनदोषहि जो दोष लगावै ❀ तो गुरु जन को जगत सतावै ॥
काशी माहँ जो करै प्रवेशा ❀ पावक महँ तनु दहै नरेशा ॥
ताको पाप हरण तब होई ❀ अर्थ पुराण बँधो है सोई ॥

दोहा—रंच रंच शर शर सबै, दाह करत जो आप ।
तब बंधव सों भाष्यउ, उर्ग होत सो पाप ॥

सुनिकैराजा बिस्मय माना ❀ कहा न काहुहि कीन्ह पयाना ॥
याहि भेद तौ काहु न पाई ❀ तब राजा बाराणसि जाई ॥
तहाँ जाइके दहेउ शरीरा ❀ येही रूप तजा नृप बीरा ॥
पाछे भीषम जानै पायो ❀ महाशोक तब मनमें आयो ॥
सत्यवती बहु रोदन करई ❀ बंश नाश भो धीरन धरई ॥
महाशोक तब भीषम पायो ❀ बंश नाश भा पाप बढ़ायो ॥
सत्यवती तब करै बिचारा ❀ पूर्व पुत्र तौ ब्यास हमारा ॥
पितु के संग तपस्या जाई ❀ ताहि ध्यानधरि लेहु बुलाई ॥
सत्यावती ध्यान तब धारा ❀ आये ब्यास तहां मंझारा ॥
सत्यावती कहेउ तब बाता ❀ करो उपाय बंश भो पाता ॥

दोहा—भई दया देखत हृदय, कहा बचन बिस्तार ।
धीर्य धरौ तुम मातजू, होय बंश अवतार ॥

तुव बधूनके गृह महँ जाई ❀ दृष्टि भोग करबै हम माई ॥
नगिनिहोइ बस्तरतजि आवहिं ❀ पुत्र दान बिधना सों पावहिं ॥
बधू ज्येष्ठि अम्बे जेहि नामहिं ❀ सत्यवती तब ताहि बखानहिं ॥
बस्त्र डारि कै नग्न शरीरा ❀ रहियो गृह सन्ध्यामहँ धीरा ॥

सत्यवती तब असकहि आई ❋ सन्ध्यासमय ब्यास तब जाई ॥
बिस्कट रूप भयानक होई ❋ अम्बे पाहिं गये मुनि सोई ॥
अम्बे कहँ तब लज्जा आई ❋ और हृदय महँ परम उपाई ॥
जाते मूंदि नयन जो आई ❋ ताते ब्यास बचन अस कहई ॥
होय पुत्र अन्धा अवतारा ❋ महाबीर जन्महि संसारा ॥
सत्यवती ते भाष्यउ जाई ❋ नयन मूंदि के हम पर आई ॥

दोहा—ताते अन्धा पुत्रह्वै, जन्महि गर्भ तुम्हार ।
बंशहोय तुव जगत महँ, नहीं राज्यअधिकार ॥

तबहि अम्बिका के गृह जाई ❋ अम्बिका केर चरित्र उपाई ॥
राजा कुल लज्जा उन पाई ❋ अष्टोगात पिंडोर लगाई ॥
गये मुनीश ताशु गृह जबहीं ❋ बिकटरूप देखा मुनि तबहीं ॥
अष्टोगात श्वेत सब अहहीं ❋ श्वेत बरण देखतभे सबहीं ॥
श्वेत रूप देखा तब चीन्हा ❋ तहाँ ब्यास अस बोले लीन्हा ॥
जन्महि पुत्र गर्भ मंझारा ❋ पाण्डु होय तब पुत्र भुवारा ॥
बिचित्रबीर्य के दूसरि नारी ❋ शुद्रसोहागिनि रही सो भारी ॥
दासि समान रही सो ताहो ❋ ब्यास गये ताके गृह माहीं ॥
शूद्रा सुनत अनँद तब पाई ❋ बिहँसत बदन सो मुनि पहँ आई ॥
देखत मुनि तब हर्षित भयऊ ❋ तबहिं महामुनि असबर दयऊ ॥

दोह—तोरे पुत्र जन्महि जगत, महाभक्त भगवान ।
अन्तर्द्धान भये मुनि, कीन्हा तुरत पयान ॥

पूरब कथा सुनो अब राऊ ❋ तीनों बधू गर्भ उपजाऊ ॥
ऋषिमाण्डव्य तबतज्योशरीरा ❋ गये तुरत यमराज के तीरा ॥
यमराजा बहु आदर कीन्हा ❋ बालदोष मुनि कहँ कहि दीन्हा ॥
शिशुतापन में टीडीं मारेउ ❋ ता अपराध इहाँ पगुधारेउ ॥
तब मुनीश प्रति उत्तर दयऊ ❋ शिशुतापन का दोष न लयऊ ॥
नयन मूंदि यम रहे चुपाई ❋ क्रोधित मुनि तब बचन सुनाई ॥
शाप हमार लेउ अब राई ❋ मनुषरूप जन्महु जग जाई ॥

शाप देइ मुनि त्यहिचाणजाई ❀ यम के मनहिं अँदेशा आई ॥
जाना ब्यास केर उपकारा ❀ शूद्रा गर्भहि जाय मँझारा ॥
बिदुर भये तब तासु कुमारा ❀ शूद्रा गर्भ लीन्ह अवतारा ॥
अंबिका गर्भ पांडु अवतारा ❀ सबशरीर पाण्डव बिस्तारा ॥

दोहा–अम्ब गर्भ धृतराष्ट्र भे, महाबीर बलवान ।
यहि प्रकारते बंश भो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानकृतेआदिपर्व वर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा परकाशा ❀ जाते होइ पाप का नाशा ॥
यजति पुत्र कुम्भजै बखाना ❀ कुन्ती भोजराज अनुमाना ॥
दूसर पुत्र सिंहासन माहीं ❀ नृपगन्धार देश इक आहीं ॥
गन्धा नाम जो राजा अहई ❀ गन्धारी कन्या घर रहई ॥
सो तो शङ्कर भक्ति अराधै ❀ इक शत सुत इक कन्या साधै ॥
तबहीं बर यह शंकर दीन्हों ❀ भीषम यहै सुता तब लीन्हों ॥
सोई सुता स्वयम्बर माहीं ❀ भीषम हरिलाये तब ताहीं ॥
भाष्यो मन में अन्धकुमारा ❀ होन पुत्र ता शत अवतारा ॥
धृतराष्ट्रक का कीन्ह बिवाहा ❀ महा हर्ष भीषम मन माहा ॥
गांधारी तब कंत निरोखै ❀ दूनों नयन अन्ध करि दीखै ॥

दोहा–पियदेखागन्धारिजब, अन्ध जन्म अवतार ।
बाँधी पट्टी नयन महँ, बिधि यह लिखा लिलार ॥

धृतराष्ट्रक की आज्ञा लीन्हा ❀ भीषम राज्य पाण्डु कहँ दीन्हा ॥
राजा पाण्डु सबै जग जाना ❀ आगे राजा सुनौ बखाना ॥
जो श्रीकृष्ण पितामह अहै ❀ शूरसेन राजा त्यहि कहै ॥
कन्या पुत्र जो दश हैं ताही ❀ ज्येष्ठ पुत्र बसुदेव जो आही ॥
कुन्तीभोज मित्र तौ आही ❀ शूरसेन की कन्या ताही ॥
प्रथमहि नाम तासुका अहै ❀ कुन्तिभोज प्रतिपालन चहै ॥

शूरसेन सो कन्या दीन्हा ❀ पुत्री कहि प्रतिपालन कीन्हा ॥
कुन्ती नाम दीन पुनि ताहीं ❀ कन्या रहि राजा गृहमाहीं ॥
बहुत प्रीति कन्या पर करई ❀ मनमा बचन कर्मना धरई ॥

दोहा—प्रेमहर्ष सों कन्यका, राजा गृह सो आह ।
वैशम्पायन भाष्यउ, सुनु राजा नरनाह ॥

एक समय तब ऋषि दुर्बासा ❀ आये कुन्ति भोज नृप पासा ॥
भाष्यउ आइ करब अवसासा ❀ चारिमास रहिबे तुम पासा ॥
पै जो मानहु बचन हमारा ❀ इच्छा भोजन देव अहारा ॥
जबहीं इच्छा होय हमारी ❀ तब हीं भोजन देहु बिचारी ॥
तपत अन्न तत्क्षणही पाऊं ❀ जबहीं भोजन चाहब राऊँ ॥
राजासुनि अन्तःपुर गयऊ ❀ सबके पह पूछत तब भयऊ ॥
सब रानी तब कहैं बुझाई ❀ कोउ न कहत करब सेवकाई ॥
कुन्ती तब भाष्यउ नृप पासा ❀ राखहु तात मुनिहिं चौमासा ॥
मैं तो सेवा करिहौं ताही ❀ भोजन देऊं जो मन में आही ॥
राजा राख्यउ मुनि कहँ जाई ❀ कुन्तो मुनि सेवा को आई ॥

दोहा—जो जो चाहत मुनि मनहि, सो सो कुन्ती देइ ।
प्रेम हर्ष सो महामुनि, बासि कुन्तीके सेइ ॥

ऐसा हमैं महा मुनि कहे ❀ बर्षा चारि मास तहँ रहे ॥
कुन्ती भक्ति तुष्ट मुनि भयऊ ❀ मालमन्त्र दुर्बासा दयऊ ॥
मालमन्त्र जाको तुम ध्यावो ❀ तीन देवको दरशन पावो ॥
ऐसे मालमन्त्र तो दयऊ ❀ मुनिबर बिदा भूपसों भयऊ ॥
दुर्बासा तब बनमहँ जाई ❀ कुन्ती मनमें रच्यो उपाई ॥
मन्त्र परीक्षा कुन्ती करई ❀ सूरज देखि मन्त्र उच्चरई ॥
सूर्य्य चन्द्र प्रत्यक्षै देवा ❀ मन्त्र परीक्षा कीन्हेसि भेवा ॥
हीन बुद्धि नारी अज्ञाना ❀ माला जपै सूर्य कर ध्याना ॥

दोहा—ध्यान धरतहीं देवकर, तत्क्षण तब तहँ आउ ।
बर प्रसाद तब दीन्हो, पुत्रहेत तुव जाउ ॥

सुनत लाज तब कुन्ती भयऊ ❀ दिनकर तब बोलै यह लयऊ ॥
मो नहिं ब्याह रही मैं कांरी ❀ मो बरदान जन्मभरि गारी ॥
मो कलंक तुम्हरे परसादा ❀ कुन्ती करति महा बिसमादा ॥
होइ प्रसन्न तब कह दिनमाना ❀ कर्ण मार्ग जन्महि परवाना ॥
महाबीर दानी जग जाना ❀ बिद्यावान बीर बलवाना ॥
यह कहि अंतर्गत रवि भयऊ ❀ सूर्य प्रताप पुत्र सो ठयऊ ॥
कर्ण मार्ग कर भो अवतारा ❀ कुंती ताहि नीर में डारा ॥
शूद्र अधीरथ धीमर नामहिं ❀ सोता गयो गंग अस्थानहिं ॥
देखा सुंदर बालक आहीं ❀ सो लै गो अपने गृहमाहीं ॥
राधा नाम तासु कै नारी ❀ प्रतिपालन कीन्हों त्यहि भारी ॥

दोहा—यहिप्रकारते कर्ण भे, कुन्ती प्रथम कुमार ।
करि संक्षेप बखानेऊ, कौन नहीं बिस्तार ॥

पाँचै सात बर्ष के भयऊ ❀ बालकसँग खेलन तब गयऊ ॥
सब मिलि देहिं कर्ण को गारी ❀ तेरो कहाँ पिता महतारी ॥
केवट लै प्रतिपाली तोहीं ❀ जानत मात पिता नहिं ओहीं ॥
कर्ण सुन्यो लज्जा तब होई ❀ संकरवर्ण कहत सब कोई ॥
गंगा तीर कर्ण तब जाई ❀ तन त्यागे का रच्या उपाई ॥
जबहीं तन त्यागे का चहे ❀ दिनकर हर्षि हाथ तब गहे ॥
काहे तन त्यागौ तुम बारा ❀ मैं जगज्योतिहुँ पिता तुम्हारा ॥
सुनते हर्ष कर्ण तब माना ❀ बोल्यउ कर्ण धन्य जगजाना ॥
पिता हमार सूर्य परमाना ❀ मो सम भाग्य न दूसर आना ॥
बिनती एक हमारी ताता ❀ तुम तो पिता कौन है माता ॥

दोहा—काके गर्भहि जन्म मम, कहु कृपाल दिनमान ।
तौ चित मोरा होइ थिर, कीन्हों कर्णबखान ॥

तबही सूर्य परीक्षा कीन्हा ❀ बस्तर एक कर्ण को दीन्हा ॥
अग्नि चीर जानै संसारा ❀ जो पहिरै सो मातु तुम्हारा ॥
कै कै छल पहिरै जो कोई ❀ मोर प्रताप भस्म सो होई ॥

यहि प्रकार तब कर्ण बुझाई ❋ अन्तर्द्धान भयो दिनराई ॥
कर्ण बीर बहुतै सुख पायो ❋ बस्तर लै तब गृहको आयो ॥

दोहा—बस्तर लै गृहराख्यऊ, चितदै सुनहु भुवार ।
बिद्या के हित कर्ण तब, कीन्हो हृदय बिचार ॥

परशुराम पहँ छलसों जाई ❋ बिप्ररूप करिगे वहि ठाई ॥
परशुराम तब बिद्या दीन्हा ❋ निजसमान धनुधारी कीन्हा ॥
कर्ण चतुर्दशि चले अन्हाई ❋ परशुराम तब आगे जाई ॥
पत्र कदम्ब पुहुप हैं नाना ❋ आधे हने तजे असमाना ॥
खरी तेल तो हाथहि लाई ❋ पाछे परशुराम तब जाई ॥
देखेउ सब खण्डित हैं फूला ❋ यहि प्रकार देखे सब तूला ॥
भूमिष धरौं तो होई पापा ❋ उछलै तपै कटोरा आपा ॥
मारेउ बाण वाट सब सोई ❋ लीन्हा रोंकि कटोरा ओई ॥
कै अस्नान चले तब राई ❋ वही बृक्षपर पहुँचे आई ॥
परशुराम भाष्यो तब बाता ❋ आधे हनै कौन सख्याता ॥

दोहा—कर्ण कहा हम काटेऊ, सुनत हर्ष भृगुनन्द ।
भयो शिष्य सापुत्रतब, मनमें भये अनंद ॥

शयन करेउ दिनकै भृगुनाथा ❋ धरा कर्ण जंघापर माथा ॥
बज्र कीट कीड़ा तो राही ❋ कर्ण जंघ छेदत कर ताही ॥
ताते रक्त जो तन महँ लागे ❋ परशुराम चौंके तब जागे ॥
क्रोधित परशुराम तब कहई ❋ कहु रे शिष्य जाति को अहई ॥
हो छत्री मोसों छल कीन्हा ❋ पाँच बाण तब भृगुपति दीन्हा ॥
कर्ण पाहिं तब कह परकाशा ❋ विद्या दै का करौं बिनाशा ॥
यही बाण ते मृत्यु तुम्हारा ❋ बर औ शाप है दोउ हमारा ॥
जबलगि बाण जो तोपहँ रहई ❋ तब लगिजगतअजयत्वहिकहई ॥
रिपु के हाथ बाण जब जाई ❋ मरिहौ कर्ण कहा समुझाई ॥
कर्ण बाण पाँचो तब लीन्हा ❋ अपने भवन गमन तब कीन्हा ॥
कर्ण बाण लै ओणहिं राखा ❋ अतिआनन्द बढ़ो अभिलाषा ॥

दोहा—सदा रहहिं हर्षितमन, कर्ण बीर गृह जाइ ।
भारतकथा पुनीत अति, सुनतहिपापनशाइ ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्ववर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

जनमेंजय अब होउ सुध्याना ❀ बैशम्पायन करत बखाना ॥
कुन्ती भोज राय परमाना ❀ कुन्ती केर स्वयम्बर ठाना ॥
देश देश के राजा आये ❀ कुन्त देश सब भूप सिधाये ॥
कुन्ती देखा अगणित भूपा ❀ देखे राजा अगणित रूपा ॥
कर्मलिखा को मेटन हारा ❀ पाण्डुराउ को कीन्ह बिचारा ॥
जयमाला पाण्डव कहँ दीन्हा ❀ याही भांति स्वयम्बर कीन्हा ॥
कुन्ती पाण्डु भयो तब ब्याहा ❀ देश देश के गे नरनाहा ॥
दायजु दीन बहुत तब राजा ❀ पाण्डव हर्ष परम सुखसाजा ॥
दायजु कन्या गृह लै आये ❀ प्रेम हर्ष तब भीषम पाये ॥
ऐसे कुन्ती पाण्डु बिवाहा ❀ सो सब कथा सुनौ नरनाहा ॥

दोहा—यह गाथा जनमेजय, सुनौ बचन परमान ।
सुनत पाप सब नाशहीं, बैशम्यन बखान ॥

राजा पाण्डु सबै जग जाना ❀ परजा लोग हर्ष अति माना ॥
पुरी हस्तिना उत्तम साजा ❀ भीषम प्रतिपालत है राजा ॥
मद्र सुदेश मद्रपति राऊ ❀ कन्या यक वा गृह जन्माऊ ॥
माद्री नाम जगत जन जाना ❀ समय संयोग स्वयम्बर ठाना ॥
तब भीषम वह जीति लै आये ❀ पाण्डु राउ को ब्याह कराये ॥
ऐसो भई माद्री रानी ❀ पटेश्वरी दोनों जग जानी ॥
पाण्डवराज भयो रजधानी ❀ कुन्ती और माद्री रानी ॥
देवराज के कन्या रहै ❀ पाराशरी नाम त्यहि कहै ॥
भीष्म बीर तब कीन बिचारा ❀ बिदुरहि व्याह तासु अनुसारो ॥
बिदुरौ कहँ सों दीन बिषाही ❀ प्रेम हर्ष सत्यावति आही ॥

प्रतिपालक तो भीषम अहे ❀ राज्य देश की रक्षा चहे ॥
यहि प्रकार जनमेजय राजा ❀ तोरे बंश चरित के काजा ॥

दोहा—बिदुर पाण्डु धृतराष्ट्र को, तीनों बंधु प्रमान ।
यह चरित्र तुववंश के, सुनु राजा दै कान ॥

शंकर बर अनुकम्पा ब्यासा ❀ गन्धारी के [illegible] प्रकासा ॥
उदर गर्भ तब भो परकासा ❀ बारह वर्ष गर्भ यह वासा ॥
महाकष्ट तब भइ गन्धारी ❀ भेषज कहेउ उदर तब फारी ॥
उदर माहिं तो नाहि उबारा ❀ ब्यास तहां तब मंत्र संचारा ॥
मन्त्रराज गन्धारि बचाई ❀ महादुःख गन्धारी पाई ॥
मांस पिण्ड देखा गन्धारी ❀ करते आप लिलारहि मारी ॥
शतपुत्रन हित शंकर ध्याये ❀ एक पुत्र नहिं जग में पाये ॥
तब मुनि ब्यास कहें समुझाई ❀ शत पुत्रहु होइहैं तुव आई ॥
बचन एक मैं कहौं उपाई ❀ सोई मन्त्र करो मनलाई ॥
चिन्ता तजि मानहु बच मोरे ❀ शत आत्मज होइहैं अब तोरे ॥

दोहा—यकशत कुण्ड खनाइकैं, घृतभरिये ता माहिं ।
शतखण्डनकरुमांसयह, डारो लै लै ताहिं ॥

शीतल जल सों करो पखारा ❀ कुण्डहि प्रतिही होइ कुमारा ॥
सुनि गन्धारी कुण्ड खनाये ❀ शत कुण्डनमहँ घृतहि भराये ॥
[illegible]तल जल सों पिण्ड पखारा ❀ एकोत्तर तब भाग संचारा ॥
[illegible]क यक भाग कुण्ड महँ डारी ❀ दोई भाग एक महँ धारी ॥
[illegible]ये तहाँ दुर्येधिन बारा ❀ प्रकट भये तहँ सकल कुमारा ॥
[illegible]र अंश इक कन्या जाना ❀ और पुत्र सब भे बलवाना ॥
[illegible]गुठ प्रमाण पुत्र अवतारा ❀ तब प्रतिपालहि सबै कुमारा ॥
[illegible]शासन अरु विविसुत भयऊ ❀ चित्रसेन बिक्रम निर्मयऊ ॥
[illegible]मृत्यु दुर्मुख इकबारा ❀ [illegible]स्यासुर योधन अवतारा ॥
[illegible] नाम अनेकन जाना ❀ जन्मे बीर अन्ध हर्षाना ॥

दोहा—शतपुत्रन प्रतिपालही, गन्धारी मनलाय।
परमहर्ष तब भीषम, देखा बंश उपाय ॥

यकदिन राजो पाण्डु नरेशा ❀ मृग बिहार कर बन परवेशा ॥
दवोगति कछु जानि न जाहीं ❀ ऋषि यक भोगकरै दिनमाहीं ॥
मृग स्वरूप को लै संचारा ❀ यहि अवसर राजा शर मारा ॥
स्त्री पुरुष के भेद्यहु बाणा ❀ दीनशाप तब मुनि परमाणा ॥
स्त्री भोग जब परकाशै ❀ ताही क्षणहि तोर तन नाशै ॥
शाप देइ मुनि तजा शरीरा ❀ महाशोच बश भयो नृप बीरा ॥
शोच करै आपुत्रा भयऊ ❀ महाशाप मुनिवर तब दयऊ ॥
ताही बनमें ऋषि बहु अहैं ❀ तिन्हैं जाय पाण्डव नृप कहैं ॥
भीषम पाहि कहेउ तिन जाई ❀ ऐसो शाप मुनीश कराई ॥
ताते बन में तप अब करिहैं ❀ जाकारण ते जग में तरिहैं ॥

दोहा—बनअखण्डकेमाहँ तब, राहहिं पाण्ड नरेश।
एस शाप यह पायऊ, कहा राउ अन्देश ॥

आये मुनि सब भीषम पाहा ❀ सब बृत्तान्त जाय तिन काहा ॥
भीषम सुनि कै पूछहि गाथा ❀ कहाँ अहैं पाण्डव नर नाथा ॥
मैं उनको लै आवत जाई ❀ बनोवास जहँ करत हैं राई ॥
भीषम चलेउ पाण्डु के पाहीं ❀ दूनो रानि चलीं पुनि ताहीं ॥
कुन्ती और माद्री नारी ❀ कन्त के पास चलीं अनुसारी ॥
आखण्डित बन पहुँचे जाहीं ❀ भीषम गये तुरत ही ताहीं ॥
बहुबिधि ते भीषम तब कहैं ❀ पाण्डव के मन में नहिं अहैं ॥
पाण्डव करत इहाँ बनबासा ❀ रहिव तात तजो तुम आसा ॥
बहु प्रकार गङ्गज समुझायो ❀ पै पाण्डव के मन नहि आयो ॥
याही बन में रहेउ भुआरा ❀ तब भीषम रणको पगु धारा ॥
बन में राजा हर्षित रहिहैं ❀ कुन्ती हमरो सेवा करिहैं ॥
महाशोक ते राजा रहई ❀ पुत्र हेत चिन्ता मन गहई ॥
तबै सकल मुनि भाषैं बाता ❀ तजो शोक पाण्डव नर नाथा ॥
तोर पुत्र होइहै बलधारी ❀ यह आशिष है पाण्डु हमारी ॥

ऐसे रहै तब बनहीं राजा ❋ होत शोच पुत्रन के काजा ॥
बिना पुत्र के कुल अँधियारा ❋ कैसे पितृ होय उद्धारा ॥
तब कुन्ती कहै पिय बासा ❋ मन्त्र एक है हमरे पासा ॥
यह जो माल मन्त्र मम पाही ❋ ध्यावों जाहि देव सो आही ॥
जौन देव आराधहि कुन्ता ❋ तौन देव वर देइ तुरन्ता ॥
ताते होय पुत्र अवतारा ❋ कन्त तजो मन को खम्भारा ॥

दोहा—यहि प्रकार तें कुन्तिहू, कन्ताहिं धीरज दीन ।
माला मन्त्र सुहाथ ले, देव अराधन कीन ।

माला मंत्र कोन परमाना ❋ प्रथमहिं धर्म केर धरि ध्याना ॥
ताते धर्म युधिष्ठिर भयऊ ❋ महाहर्ष पाण्डव मन ठयऊ ॥
दूजे पवन केर धरि ध्याना ❋ ताते भीम भयो बलवाना ॥
दोनों पुत्र भये तब भारी ❋ तब फिरि मनहिं बिचारेउ नारी ॥
अब काको मन धरिये ध्याना ❋ कै बिचार इन्द्रहि कहँ ठाना ॥
अर्जुन नाम सो भयउ कुमारा ❋ इन्द्र तेज तब भयो संसारा ॥
माता हर्षवन्त तब भाखै ❋ अर्जुन नाम पुत्रकर राखै ॥
पाण्डवराय देखि सुख पाये ❋ श्याम स्वरूप देखि मनभाये ॥
नयन बिशाल श्याम है देहा ❋ पाण्डवराउ करत बहुनेहा ॥
श्यामल रूप देखि पितु भाखै ❋ कृष्णासुनाम पिता तब राखै ॥

दोहा—दुइ नाम तब प्रथमहीं, मात पिता धरि ताहि ।
प्रेम हर्ष तन बन महा, राज रहै सुखमाहिं ॥

माद्री पुत्र हेत मन लाई ❋ कुन्ती बहिनी बैन सुनाई ॥
तब कुन्ती माला वहि दीन्हा ❋ औ पुनि नाममन्त्र कहि दीन्हा ॥
माद्री माल मन्त्र तब पाये ❋ अश्विनिकुमारहि तब तेहि ध्याये ॥
ताते पुत्र भयो अवतारा ❋ नकुल नाम जानत संसारा ॥
तब माला कर तेजहि जाई ❋ अन्तर्द्धान भयो वहि ठाई ॥
मन्त्र को तेज शक्ति तब गयऊ ❋ कुन्ती महादुःख तब कियऊ ॥
पुत्रन को प्रतिपालहिं माई ❋ प्रेम हर्ष राजा तब पाई ॥

चारि पुत्र हैं दुइ हैं माता ❋ प्रेम हर्ष पाण्डव नरनाथा ॥
इहाँ पाण्डवा बन में रहई ❋ उतही भीष्म देश में रहई ॥
राज दियो दुर्योधन राऊ ❋ प्रतिपालैं भीषम सो भाऊ ॥

दोहा—राजा भये अन्ध सुत, पाण्डु रह्यो बनबास ।
अब राजा सुनु आगे, कहत कथा तव पास ॥

सूरज बरतहिं पाण्डु भुआरा ❋ पाण्डुराव तब गयो शिकारा ॥
भानु अस्त होई बिस्तारा ❋ रानी मनमाँ करै बिचारा ॥
तादिन माद्रि रजस्वल भयऊ ❋ पूरणदिन नहान तब कियऊ ॥
माद्री कह कुन्ती के पाहीं ❋ जबलग पति आवैं घरमाहीं ॥
सुन्दरि रथ राखो अटकाई ❋ जाते कंत तौ भोजन खाई ॥
सन्मुख रवि बैठी सो रानी ❋ सूरज रथ तहँ जो ठहरानी ॥
पाण्डव राइ तबै गृह आये ❋ दिवस जानि कै अन्नहिं खाये ॥
पाछे माद्री उठि गृह जाई ❋ रात्री भई तुरत गृह आई ॥
तब राजा आश्चर्यहि कियऊ ❋ कुंती सकल भेद तब कहेऊ ॥

दोहा—माद्रीरूपहिं देखिकै, आस्थर भये जो भानु ।
सुनत पाण्डुराजा तबै, लगे मैन के बानु ॥

माद्री पहँ राजा तब जाई ❋ करि रवि केलि ज्ञान भुलवाई ॥
ऋषिहि शाप तब आइ तुलाना ❋ अंतकाल भे पाण्डव प्राना ॥
गर्भवती माद्री तब भई ❋ पाण्डव नृपति देह तजि दई ॥
देखा पाण्डु भयो तन नाशा ❋ दउ रानी तब रुदन प्रकाशा ॥
दाह कर्म राजा कर कीना ❋ गर्भ हेत माद्री रहहीना ॥
कछु दिन गये पुत्र अवतारा ❋ माद्री तनहिं तजा संसारा ॥
कन्त के शोक माद्री गयऊ ❋ सुतप्रतिपालन कुन्ती कियऊ ॥
सहदेव नकुल माद्री नंदा ❋ तीन पुत्र कुन्ती के बंदा ॥
पाँच पुत्र कुन्ती तब पाला ❋ माद्री केर भयो जब काला ॥
ऋषि ब्राह्मण सब करत उपाई ❋ भीषम पाहिं कहा तब जाई ॥

दोहा—पाण्डव नृपतिरु माद्री, बन में तजा शरीर ।
पांच पुत्र प्रति पालन, कुन्ती करत गँभीर ॥

ऋषिवर ते भये पंच कुमारा ❋ पाराडव नृपति बंश अवतारा ॥
कुन्ती पांच पुत्र लै रहई ❋ शतबालक गंधारि के अहई ॥
भीषम सुन्यो तुरंग सिधाये ❋ कुन्ती कहँ घरही लै आये ॥
पाँच सात बय के तब भयऊ ❋ प्रतिपालन भीषम तब ठयऊ ॥
खेलन को जब जात समाजा ❋ कौरव पाराडव एकहि साजा ॥
पाँच पुत्र कुन्ती के आहीं ❋ ताहि समान एकसौ नाहीं ॥
खेलि भीम सों सकेउ न कोई ❋ दुर्योधन तब चिंता होई ॥
दिन दिन बालक पांचौ ऐसे ❋ केहरि के समान हैं जैसे ॥

दोहा—दुर्योधन को चित्त हो, पांच देखि बरियार ।
रिपु बिचार देखै तहां, कुरुपति मन खम्भार ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृते आदि पर्ववर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो जो कुन्ती अहई ❋ पाँच पुत्र यहि ऐसे कहई ॥
तुम्हरे पिता कर यह राजू ❋ कर्म दोष ते भयो अकाजू ॥
सुनिकै पांचो चिंता करहीं ❋ पिता राज याहै संचरहीं ॥
खेलन करन जात सब साथा ❋ पाँचो बांधव औ कुरुनाथा ॥
खेलन भीम कहे यह साथा ❋ राज्य हमार करो नरनाथा ॥
हमरे पिता कर यह देशा ❋ विधिवश भा कहनाथ नरेशा ॥
खेलत भीम और सो भाई ❋ भीम कहे तो जीति न जाई ॥
एक बृक्ष पर हैं सब भाई ❋ चढ़े जाइ तब भीम हराई ॥
धाइ बृक्ष तब भीम हलायो ❋ गिरे सबै तो थाह न पायो ॥
पेड़ हलाय दीन तो हाँका ❋ परे भूमि जिमि सब फल पाका ॥

दोहा—भीमसेन की करि हँसी, हर्षत है सो भाइ ।
बहु प्रकार दुर्योधन, मन में करै उपाइ ॥

एकहि बार गहैं दश भाई ❋ पटकि भीम तब चरण घुमाई ॥

सदा बिवाद भीम सों होई ❀ शत भाई जीता नहिं कोई ॥
जहँ वे खेलन करहिं पयाना ❀ शतबान्धव तहँ कर अपमाना ॥
चिन्ता करि दुर्योधन राई ❀ मारन भीम को रच्यो उपाई ॥
महाबली सो मरत न मारा ❀ दैके गरल करौं संहारा ॥
यकदिन प्रीति बहुत तब कीन्हा ❀ छलकरि गरल भीम को दीन्हा ॥
खाते गरल चेत ना रहई ❀ हर्षि गात दुर्योधन कहई ॥
तब गङ्गा में दीन बहाई ❀ बूड़े भीम पतालहि जाई ॥
भोगवती गंगा है जहाँ ❀ बहत भीम पहुँचे गे तहाँ ॥
तहाँ बीर तब पहुँच्यो जाई ❀ गंगा धार रह्यो अटकाई ॥

दोहा–नागसुता अस्नान को, आई सुनौ सो राउ ।
देखि कलेवर भीमको, सुता हर्ष तब पाउ ॥

शंकर शाप देखिके बारी ❀ ता कहँ कन्या बरै बिचारी ॥
शंकर शाप हेतु सुनु राई ❀ प्रतिदिन हर पूजै सो जाई ॥
नाग कि कन्या पुजै महेशा ❀ पुष्परु वेलपत्र धर बेशा ॥
यक दिन फूल और नहिं पाये ❀ बासी पुष्प तो जाइ चढ़ाये ॥
ताते हरहि क्रोध बहु कीना ❀ दीन शाप तब यह परवीना ॥
मृतक पुष्प लै पूजेउ मोहीं ❀ मृतकै पुरुष प्राप्ति होइ तोहीं ॥
तब कन्या यह बिनती लाई ❀ उग्र शाप कब होइ गोसांई ॥
हर भाष्यउ मृतकहि बर पाई ❀ पाछे अमृत पान जियाई ॥

दोहा–कन्या सोई शाप हित, भीमहिं दीन जिआय ।
अतिसुन्दर पतिदेखिकै, हृदय बहुत हर्षाय ॥

खबरिके हेत सो जाइ भुवारा ❀ नागसुता यह प्रीति बिहारा ॥
तबहीं बर कीन्हेउ मनलाई ❀ पाछे तबहिं शेष पहँ जाई ॥
अमृत दैके भीम बचाये ❀ पुरपाताल भीम सुख पाये ॥
चारि बन्धु कुन्ती महतारी ❀ महाशोक कीन्हा तब भारी ॥
भीम केर उपदेश न पावा ❀ महाशोक कुन्ती मन आवा ॥
कुन्ती कह हम जन्म दुखारी ❀ कहाँ गये सुत भीम हमारी ॥

महाशोच भे चारिउ भाई ❀ कहूँ न खोज भीम कर पाई ॥
दोहा—चारि बन्धु अरु कुन्तिहू, पावत शोक अपार ।
यहि प्रकार राजा तहाँ, रहै भीम पतार ॥
यकदिन भीम गये चलि तहाँ ❀ अमृत सात कुण्ड हैं जहाँ ॥
सातौं कुण्ड कीन्ह तब पाना ❀ भागे रक्षक नाग पराना ॥
शंकर सुन्यउ सकल व्यवहारा ❀ मनमें कीन्हे क्रोध अपारा ॥
खायउ अमृत उदर अघाई ❀ मृत्युलोक को सुमिरेउ भाई ॥
चलेउ सुभीम मृत्युपुर जबहीं ❀ महादेव घेरा पुनि तबहीं ॥
महा मारु कीन्हेउ संहारा ❀ शंकर भीम तौ पुरी पतारा ॥
महादेव को क्रोध अपारा ❀ तब त्रिशूल लै उदर जो फारा ॥
अमृत सातौ कुण्ड निकारी ❀ हर्षित गात महेश पुरारी ॥
मृतकहि भीम भवानी जाना ❀ महादेव सों कीन्ह बखाना ॥
धन्य धन्य तुम वीर अपारा ❀ खायो अमृत पुरी पतारा ॥
दोहा—धन्य बीरबल साहसी, गौरी कहत बिचारि ।
कृपा करौ तुम स्वामिजू, देहु जीव संचारि ॥
जीव दान शंकर तब दीन्हा ❀ उठ्यो भीम तब रिस बहुकीन्हा ॥
रहु रहु कहि तौ उठा जुझारा ❀ महादेव तब हर्ष अपारा ॥
केहरिनाद तहाँ तब कीन्हा ❀ तुरतहि नाम बृकोदर दीन्हा ॥
हर्षित गात भीम बलवाना ❀ महादेव तब कीन्ह पयाना ॥
बासुकि महाहर्ष तब भयऊ ❀ नाना मणी भीम कहँ दयऊ ॥
बिदा माँगि तब भीम भुआरा ❀ तब चलने को हृदय बिचारा ॥
हर्षित भीम बिदा सो भयऊ ❀ अहिलमतीशोकहि त्यहिठयऊ ॥
विविध भाँति समभायो ताही ❀ कछु दिन में ऐहौं तुम पाहीं ॥
चले हर्ष नरपुर को आये ❀ माता बन्धु तब दर्शन पाये ॥
मिल्यउ पुत्र हर्षित महतारी ❀ दुर्योधन अचरज भा भारी ॥
दीन्हाबिष पुनि मरिय जिआये ❀ बर्ष दिना बीते पुनि आये ॥

दोहा—कुन्ती माता हर्ष तब, हर्षित धर्म भुआर।
कै संक्षेप बखानेऊँ, भारत कथा अपार॥
धर्मराज यह कह तब बाता ❋ भीमआदि सुनियो मम भ्राता॥
सावधान तैं रहब सँभारा ❋ दुर्योधन है शत्रु हमारा॥
एकहि संग रहब सवधाना ❋ याहै मन्त्र धर्मसुत ठाना॥
यह बिचारि करि पाँचौं भाई ❋ विस्मय रहैं सचेत सदाई॥
यहि प्रकार ते रहैं सवधाना ❋ बैर के बीज प्रथम हित ठाना॥
यहि प्रकार पाण्डव रह ताहाँ ❋ पाँचो बन्धु सचेतन माहाँ॥
महाबीर बृकओदर अहै ❋ कौरव सब मन शङ्का रहै॥
आपै आप रहै सवधाना ❋ बैशम्पायन करत बखाना॥
यहि बिधि ते तब भो अवतारा ❋ कुरु पाण्डव दोउ बंश भुआरा॥

दोहा—राजा जनमेजय सुनो, भारत कथा अनूप।
उत्पति यही प्रकारते, कुरुपाण्डव दुइभूप॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्वे वर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

वैशम्पायन उवाच॥

राजा सुनो कथा अनुसारा ❋ कुन्ती हर पूजा बिस्तारा॥
सोई लिङ्गको यह परभावै ❋ राजा स्त्री पूजन पावै॥
कुन्ती पूजै प्रतिदिन जाई ❋ औ गन्धारी पूजन आई॥
कुन्ती भेद न जान गँधारी ❋ नहिं कुन्ती गन्धारी नारी॥
यहि प्रकार ते पूजा ठवहिं ❋ एक एक को देख न पावहिं॥
प्रतिदिन तौं यह पूजा करहीं ❋ दूनो त्रिय हरिभक्ति सँचरहीं॥
राजेश्वरि महीश जग जाना ❋ प्रतिदिन तब पूजन परमाना॥

दोहा—राजा जनमेजय सुनो, आगे कथा बखान।
भारतकथा सुपुण्यफल, जाते पाप नसान॥
भीषम कीन्हेउ हृदय बिचारा ❋ विद्यावन्त न एक कुमारा॥
कुरु पाण्डव दोऊ सो अहहीं ❋ विद्यावन्त न एकौ रहहीं॥
द्रोणाचार्य कि चिन्ता करहीं ❋ जो आवैं बिद्या संचरहीं॥

भृगुपति कर शिष्य जो अहै ❀ विद्याशास्त्र ज्ञान तो रहै ॥
यह तो चिन्ता भीषम पाई ❀ खेलनको सब बान्धव जाई ॥
सब बान्धव अरु कुरुपति साथा ❀ खेलत गेंदहि कुँवरन हाथा ॥
विधिवश गेंद कूप में परई ❀ सबमिलि शोच तहां सब करई ॥
कन्दुक परेउ कूप महँ जाही ❀ कोऊ काढ़ि न सकतो ताही ॥
कुरुपति गेंद लेन सो चहही ❀ काढ़ो हठकरि राजा कहहीं ॥
बालकरूप कहैं सब कोई ❀ काढ़ै गेंद समर्थ न होई ॥

दोहा—याहि प्रकार ते बाल सब, करत युक्ति उपाइ ।
बहुत प्रकार बिचारत, गेंद काढि नाहिं जाइ ॥

ताहो समय द्रोण गुरु आये ❀ द्रुपद माहँ जो मान गँवाये ॥
द्रुपद समीप जान जो चाहा ❀ द्वारपाल तब रोंकेउ ताहा ॥
राजा पास जान नहि दीनो ❀ भयो उदास द्रोण मनहीनो ॥
यहि अन्तर हस्तिनपुर आये ❀ बालक सब सो देखन पाये ॥
युक्ति करत तो गेंदके काजा ❀ दुर्योधन सो बन्धु समाजा ॥
देखि द्रोण तब कहेउ सुनाई ❀ गेंद काढ़ि देहों मैं भाई ॥
धनुषमाहि तृण शर संचारा ❀ पढ़िके मन्त्र गेंदको मारा ॥
गेंद उठाय सो ऊपर आयो ❀ दुर्योधन तब आनन्द पायो ॥
गेंद उठाय कै लीन भुवारा ❀ भीषम के पासहिं पगुधारा ॥
भीषम पाहि कह्यउ समुझाई ❀ कन्दुक परेउ कूप में जाई ॥

दोहा—बहुतयुक्तिकीन्हीहमहुँ, गेंद काढ़िनाहिं जाइ ।
यहि अन्तर यकब्राह्मण, तहाँसो पहुँच आइ ॥

देखत विप्र कहा तब बाता ❀ कन्दुक काढ़ि दीन सख्याता ॥
सींकको शर शायक संधाना ❀ कूप मध्य मारेउ तब बाना ॥
गेंद कूप ते बाहर आई ❀ भीषम ते कह कुरुप बनाई ॥
तब भीषम मन करत बिचारा ❀ दूजो बिप्र नहीं संसारा ॥
परशुराम कर शिष्य सुजाना ❀ द्रोणाचार्य तासुको नामा ॥
करि आदर तब बेगि बुलाये ❀ चरण धोइ आसन बैठाये ॥

भीषम बचन कहा उन पाहीं ❀ आपु रहौ हस्तिनपुर माहीं ॥
बालक सब तौ अहैं हमारा ❀ विद्यावन्त करहु अबसारा ॥
याहे बात कहन तब लीन्हा ❀ पाँच गाँउ सामर्पण कीन्हा ॥
हर्षित द्रोण रहे पुनि ताहीं ❀ स्त्री पुरुष हर्ष मनमाहीं ॥

दोहा--द्रोणाचार्य रहै तहाँ, पुरी हास्तिना माँह ।
याहि प्रकार ते गुरु भये, सुनौ वचन नरनाह ॥

कुरु सौबान्धव एक समाजा ❀ पाँचबन्धु पाण्डव तहँ साजा ॥
भीषम सौंपि द्रोणके पाहा ❀ ओर हर्ष सों बाते काहा ॥
इन सबहिन को क्षत्री करिये ❀ विद्या अस्त्र ज्ञान संचरिये ॥
अस्त्र शस्त्र सिखये मन जानी ❀ हर्षित भीषम कहत बखानी ॥
सुनतहि द्रोण बहुत सुखमाना ❀ जो तुम कहा सोइ परमाना ॥
विद्याशाला एक बनावा ❀ उत्तमस्थान सो देखि सोहावा ॥
कुरु पाण्डव एकहि सब साथा ❀ विद्या पढ़त नाइ गुरु माथा ॥
अग्निबाण जल बाण कहाये ❀ पवन बाण गुरु जानि सिखाये ॥
अहिकर बाण नाग शर साधा ❀ केकाबाण मोर बहु बाधा ॥
खग शायक पिप्पील प्रमाणा ❀ अन्धकार औरहु रवि बाणा ॥

दोहा—जो विद्या है युद्ध की, सिखत सो हरुके पास ।
बाणावरी अस्त्र सब, सिखे क्षत्रियन आस ॥

पारथ के बाणावरि माहाँ ❀ पावत नहि कोई जगमाहाँ ॥
सबै लोग तौ देत बड़ाई ❀ धन्य धन्य पारथ की माई ॥
स्वर्ग पताल मृत्यु असमाना ❀ कम्पमान पारथ के बाना ॥
सदा कर्ण आवहि पुनि ताहाँ ❀ बैठत आनि द्रोण के पाहाँ ॥
परशुराम को शिष्य तौ अहै ❀ अतिहो प्रीति द्रोण पर रहै ॥
राजनीति औ शस्त्र बिधाना ❀ द्रोणाचार्य तो सिखवें नाना ॥
प्रति बासर नाना ब्यवहारा ❀ पढ़तरु सुनत अनेक प्रकारा ॥

दोहा—राजा याहि प्रकारते, विद्या सिखवत ताहि।
सौबान्धवकुरुनाथजो, पाण्डव पाँचौ आहि ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृतेआदिपर्व वर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

राजा सुनो कथा परवेशा ❋ कौतुक यक बड़ भयो नरेशा ॥
कुन्ती शिवपूजन को जाई ❋ यहि अन्तर गन्धारी आई ॥
दासी सब लै संग गँधारी ❋ हरके मराडप तब पगु धारी ॥
गंधारी कुन्ती कहँ देखी ❋ पूछै बात तो कहा बिशेखी ॥
कारण कौन इहाँ को आई ❋ ताकर भेद कहौ समझाई ॥
कुन्ती करत शम्भु की सेवा ❋ दूनों कह तब एकहि भेवा ॥
कहत गँधारी तू कत आई ❋ राज स्त्री तौं पूजन जाई ॥
इहाँ सदा हम पूजत अहई ❋ तू कत आइ गँधारी कहई ॥
पेता गर्भ तोरभी अहई ❋ राजेश्वर हर पूजन चहई ॥

दोहा—कुन्ती कह हम पूजतीं, प्रथमहिं राज्य हमार।
आदिहु ते हम पजती, जानै सब संसार ॥

दूनों महाद्वन्द तब कीन्हा ❋ एक एक कहँ गारी दीन्हा ॥
महादेव तब भाष्यउ बानी ❋ काहेका दो भइउ अयानी ॥
जो पूजा कर भक्ति हमारा ❋ ताकर हम कहैं सुनो बिचारा ॥
शैलसुता अर्द्धाङ्गी आहीं ❋ ताहू केर बश्य हम नाहीं ॥
पूजत श्रद्धा भक्ति जो कोई ❋ ताके बश्य जगत हम होई ॥
तजो द्वन्द मानौ मैं कहऊँ ❋ जो मो भक्ति तासु मैं अहऊँ ॥
बचन एक भाषत मैं नारी ❋ तजहु कलह तुम द्वन्द बिचारी ॥
कनक फूल अरु सुगँध उपाई ❋ जो कोउ पूजत आनि चढ़ाई ॥
औ ताहीकर सुनहु बिचारा ❋ तासु पुत्र तौ होइ भुवारा ॥
ऐसा कहि हर अन्तर्द्धाना ❋ परम हर्ष गन्धारी माना ॥

दोहा—कहत गँधारी कंत से, महाहर्ष परिहास।
कहौ जाइसब सुतन त, करौ पुष्प परकास ॥

कहि गन्धारी गृह को जाई ❋ पुत्रनते कहि तबहिं बुझाई ॥
कनक के फूल सहस बनवाई ❋ दीजै पुत्र तौ हमको ल्याई ॥
राजा सुनतहि कनक मँगायो ❋ चम्पा पुष्प अनेक गढ़ायो ॥
गढ़त सुनत तौं पुष्प उपाई ❋ तब कुन्ती गृह बिस्मय जाई ॥
बैठी जाय शोच के भवनहि ❋ भोजन अन्न तौ कीन्हों कछुनहि ॥
महादुःख मनमें उपजाये ❋ बिद्यापढ़ि आतमज सब आये ॥
क्षुधावन्त भीमहि तब जाई ❋ क्षुधा लागि भोजन दे माई ॥
कुन्ती तब उत्तर नहि दीन्हा ❋ महाक्रोध भीमहिं तब कीन्हा ॥
तीनिवार तौ बोलि कुमारा ❋ उत्तर दीन न मातु सिकारा ॥
राँधन केरि सभा सब रहे ❋ सोतो भीम राजासन कहे ॥

दोहा–दोय पहरमें पठन करि, आये घरके माहिं ।
अजहूँ भोजन है नहीं, माता बोलत नाहिं ॥

गुरुके पाहि दुःख सहि आवै ❋ घरमें कछु भोजन नहिं पावै ॥
माता बोल न उत्तर देई ❋ कहु बन्धव काकरिये सोई ॥
आज्ञा देहु सभा सब अहे ❋ खाऊ जाइ बृकोदर कहे ॥
धर्मराज कह ऐसी बाता ❋ भीमसेन केरे सख्याता ॥
माता क्षुधावन्त जो आही ❋ कैसे कैं सुनु भोजन खाही ॥
माता कह तौ पूछौ जाई ❋ मोरे कहे न बोलत माई ॥
राजा कह अर्जुन तुम जाहू ❋ पूछौ जाइ कौन दुख आहू ॥
पारथ गे माता के पासा ❋ हाथ जोरि कै बचन प्रकासा ॥
विद्या पढ़ी क्षुधा तौ पाई ❋ भोजन का तो आवै माई ॥

दोहा–अजहूँ राँधनकीन नहिं, कौन दुख मनमाहिं ।
सत्यसत्य जो मातु है, सो भाषहु हम पाहिं ॥

माता कही होब कह पूता ❋ ऐसी बात भई अजगूता ॥
पारथ कहो कहो तुम माई ❋ करब सत्य जो कीन्हा जाई ॥
तब कुन्ती भाषै यह बाता ❋ गन्धारी को छन्द सख्याता ॥
कनक पुष्प पूजै जो कोई ❋ तासु पुत्र महिराजा होई ॥

उन सुवर्ण दीन्हों सो नाना ❀ पुष्पहि गढ़त अनेक विधाना ॥
हमहूँ कहाँ सुवर्णहि पाई ❀ जाको पुष्प लै आनि बनाई ॥
अर्जुन कहा सुनो हो माता ❀ यह तुम कहा कौनि बड़ि बाता ॥
प्रातहिकाल देब हम माता ❀ राँधन करहु आप सख्याता ॥
सुनि कुन्ती आनन्दित भई ❀ राँधन करन तबहिं चलिगई ॥
भोजन पान करे सब कोई ❀ रात्रीकाल प्रकट तब होई ॥

दोहा—अर्जुन सो कुन्ती कहत, आनो पुष्प तुरन्त ।
प्रातकाल पूजन चहौं, शंकर हेतु तुरन्त ॥

प्रात काल की बेरा भयऊ ❀ घरी दोइ निशि बाकी रह्यऊ ॥
कुन्ती कहत देव अब आई ❀ पारथ कहा देउँ अब माई ॥
धनुष बाण तब अर्जुन गहई ❀ माता धीर धरो अस कहई ॥
जहाँ कुबेर केर बगवाना ❀ तहाँ सो अर्जुन मारे बाना ॥
काटे तरुवर पुष्प उड़ाये ❀ बाणके तेज पुष्प बहु आये ॥
शिवके मण्डप पुष्प जो आये ❀ भीतर बाहर पुष्प जु छाये ॥
शिवमण्डप फूलन सों पाटे ❀ औरौ बाण जो अर्जुन छाँटे ॥
कनक पुष्प चम्पा अनुहारा ❀ शोभा बहुत सुगन्ध अपारा ॥
शिवमण्डप पुष्पन सों छाये ❀ अर्जुन पाहि बाण तब आये ॥

दोहा—अर्जुन कह माता सुनौ, पूजो शंकर जाइ ।
जितिक फूल मनमाहीं, मण्डपमाल बजाइ ॥

कुन्ती सुनत हर्ष मन भई ❀ करि अस्नान मण्डपहि गई ॥
देखा पुष्प अनेक प्रकारा ❀ पूजत कुन्ती हर्ष अपारा ॥
तुष्टवन्त गिरिजापति भयऊ ❀ आशिर्बाद कुन्तीकहि दयऊ ॥
तोर पुत्र होइहैं महि राजा ❀ पुरी हस्तिना नगर समाजा ॥
यह बर दीन्हो तब त्रिपुरारी ❀ कुन्ती तब गृह को पगुधारी ॥
यहि अवसर गंधारी आई ❀ कनक पत्र बहु पुष्प भराई ॥
जातहि देख्यो मण्डप माहीं ❀ अगणित पुष्प भरे ता आहीं ॥
बाहर भीतर पुष्प सुहाये ❀ तब कुन्ती कहँ देख न पाये ॥

पूछै बात कुन्ति के पाहीं ❀ कहो पुष्प तुम पाये काहीं ॥
कुन्ती कह हम भेद न पायो ❀ अर्जुन पुष्प कहाँ ते ल्यायो ॥

दोहा—तुष्टवन्त गिरिजापतिहिं, मोहिं दीन्ह बरदान।
अस कहिकै शंकर तबै, भये जो अन्तर्द्धान ॥

ऊर्ध्व श्वास गंधारी लीन्हा ❀ अपने गेह गमन तब कीन्हा ॥
भाष्यो जाय पुत्र के पाहीं ❀ कुन्ती धन्य जगत में आहीं ॥
कहा पुत्र सौ कहा पचासा ❀ अकिले अर्जुन पुरई आसा ॥
कहा पुत्र हमरे सौ भयऊ ❀ अर्जुन जो पुरुषारथ कियऊ ॥
महादुःख में भइ गन्धारी ❀ कहा राज्य धन बृथा हमारी ॥
सकल राज्य धन महिकर होई ❀ अर्जुन पुत्र धनंजय सोई ॥
यहि प्रकार दुःखित गन्धारी ❀ कुन्ती तब गृह को पगुधारी ॥
अर्जुन पाहिं कहै तब बानी ❀ मस्तक चूमि अशीशै रानी ॥
तुमहि धनंजय पुत्र हमारा ❀ आश हमारी पुरवनहारा ॥
बहु प्रकार ते दीन अशीशा ❀ बारबार तब चूमति शीशा ॥

दोहा—यह इतिहास पुनीत अति, सुनत पाप उद्धार ।
कुरु पाण्डव सब एकही, विद्या पढ़ि चटसार॥

इति श्रीमहाभारते भाषा सबलसिंह चौहान कृते आदिपर्व
वर्णनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

गुरु के पहँ बैठे सब ताहा ❀ नाना अस्त्र शस्त्र अवगाहा ॥
एकबार चटशालै माहीं ❀ कर्णआदि बैठे सब ताहीं ॥
यहि अन्तर भीषम चलि आये ❀ तहाँ जायकै बचन सुनाये ॥
को कस विद्या लह्यो कुमारा ❀ करौ परीक्षा अग्र हमारा ॥
आपुइ आपु दिखावो सोई ❀ काके विद्या केतिक होई ॥
सबही बीर अस्त्र तौ करहीं ❀ भीषम पाहि सबै अनुसरहीं ॥
दुर्योधन शतबंधव धाये ❀ पाछे पाँच पाण्डवा आये ॥
करत अस्त्र अर्जुन सब ताहीं ❀ सन्मुख तौ भीषम के पाहीं ॥

जबहिं अस्त्र अर्जुन ने कीन्हा ❀ धन्य धन्य सब बोले लीन्हा ॥
भीषम कह्यउ धनंजय पाहीं ❀ त्वहिं समान कोउ जगमें नाहीं ॥

दोहा–तोर अस्त्र अस देख्यऊँ, बहुत मोर मनमान।
तव समान कोऊ नहीं, भीषम कहत बखान ॥

सुनिकै कर्ण कहन तब लागे ❀ सभा माँझ भीषम के आगे ॥
अर्जुन कै तुम कीन बड़ाई ❀ हीन कीन कौरव शतभाई ॥
मोर अस्त्र जो देखन पावहु ❀ तौ अर्जुन को ज्ञान भुलावहु ॥
कर्ण बीर अस्त्र तौ करई ❀ मानहु वज्र भूमि में परई ॥
कम्पमान अवनी तौ होई ❀ ऐसा अस्त्र कर्ण कर सोई ॥
कर्ण केर पुरुषारथ देखी ❀ दुर्योधन मन हर्ष बिशेखी ॥
आलिङ्गन तब कर्णहिं दीन्हों ❀ मित्र बोलि सत्या तब कीन्हों ॥
राजाकर्ण दोउ शत लीन्हां ❀ पुहुमीमाहिं मन्त्र तौ कीन्हों ॥

दोहा–दुर्योधन अरु कर्णहू, तत्क्षण भये सँघात।
हर्ष गात दूनौ भये, भीषम के सख्यात ॥

कहा कर्ण दुर्योधन पाहीं ❀ आशा एक मोर मन माहीं ॥
मल्ल युद्ध देखो तुम राऊ ❀ हारत कौन कान के दाऊ ॥
सुनिक अर्जुन सह्यो न भारा ❀ क्रोधवन्त कर्णहिं परचारा ॥
द्रोण गुरू अर्जुन ते कहै ❀ तोरे सन्मुख शत्रु न रहै ॥
महाबीर अर्जुन कहँ जाना ❀ मल्लयुद्ध करिबे को ठाना ॥
पुत्र सनेह इन्द्र नभ छाये ❀ पुत्र हेत सूरज चलि आये ॥
युद्ध साज साजे हैं दोऊ ❀ चकित भये देखत सब कोऊ ॥
किरपाचार्य कहै तब बाता ❀ पाछे युद्ध करौ सख्याता ॥
सोम श अर्जुन कहँ जाना ❀ आपन बंशहिं करौ बखाना ॥

दोहा–शुद्रपुत्र तुम कर्ण हौ, मात पिता नहिं जान।
कौने मुख कीन्हों चहौ, अर्जुन सों मैदान ॥

तबै कर्ण सुनि लज्जा पाई ❀ दुर्योधन अस कह्यो सुनाई ॥
राजा जौन छत्र विधि पाई ❀ सहसी क्षत्री उत्तम राई ॥

बरणी बिक्रम राजा सोई ❀ अर्जुन कर्ण तुल्य जो होई ॥
आधो आसन राज हमारा ❀ राजा कहै सो कर्ण तुम्हारा ॥
अधिरथ तब यह सुनि कहुँ पाई ❀ अर्जुन कर्णहि होइ लड़ाई ॥
पुत्र के हेतु तुरत ही धाये ❀ सभा के मांझ ततत्तण आये ॥
कहत सुपुत्र द्वन्द्व नहिं काजा ❀ होइ सो देख्यो राजहि राजा ॥
सभा माहिं यह बचन सुनायो ❀ कर्ण लजाय के माथ नवायो ॥
भीमसेन भाषै यह बानी ❀ सुनो कर्ण तुम अति अज्ञानी ॥
त्तत्रिन सभा में बैठ्यउ जाई ❀ नेकु न लाज चित्त तुव आई ॥

दोहा—क्षत्रि सभा के योग्य नहिं, अरे हीन अज्ञान ।
सुनत कर्ण तब कोपउ, सबलसिंह चौहान ॥

क्रोधित कर्णहिं सूर्य निहारा ❀ प्रकटि सूर्य तब सभा मँझारा ॥
भाषै रवि तू पुत्र हमारा ❀ कर्ण सुनो नहिं करो खँभारा ॥
यह कहि सूरज अन्तर्धाना ❀ सभा सबै तब अचरज माना ॥
सूर्य को पुत्र सभा सब जाना ❀ दुर्योधन तब करत बखाना ॥
मूढ़ वृकोदर रे अज्ञाना ❀ बचन हमार सुनो दै काना ॥
घटते जन्म अगस्त्यहु लयऊ ❀ भृंगि गर्भ शृंगी ऋषि भयऊ ॥
द्रोण गुरू सकल अवतारा ❀ जानो तो सर्वज्ञ संसारा ॥

दोहा—दुर्योधन की बात यह, सुनो सकल दै कान ।
सभा के लोग उठे तब, सन्ध्या भो परमान ॥

कछु दिन तो यहि विधि ते गयऊ ❀ बिद्या पढ़ि संपूरण भयऊ ॥
गुरुदक्षिणा सबहि तब दीन्हों ❀ हर्षि द्रोण गुरु भाष्यो लीन्हों ॥
अर्जुनसों तब भाष्यउ बाता ❀ स्वारथ मोर करो सख्याता ॥
द्रोपद राजा मित्र हमारा ❀ मारि किरीटहि राज्य बिठारा ॥
अर्द्ध राज्य वहि हमहीं दीन्हा ❀ शपथ कीन्ह तबहीं हम लीन्हा ॥
थाती राजै दै बन गयऊँ ❀ पूरणतप मैं पुनि तहँ ठयऊँ ॥
द्वारपाल जाने नहिं दीन्हों ❀ मेरो तो अपमानहिं कीन्हा ॥
ता कारण मैं मांगत येहू ❀ द्रुपदहिं बाँधि चरणतर देहू ॥

अर्जुन सुनतहि तुरत सिधाये ❀ द्रुपद पाहिं लो युद्ध लगाये ॥
लगत बाण तब अर्जुन साधे ❀ द्रुपदराज को तुरतहि बाँधे ॥

दोहा—नाग पास सों बाँधिकै, लै आयो गुरुपास ।
द्रुपदबहुतलज्जितभयो, विनय कीन्ह परकास॥

कह्यो मित्र मैं तौ नहिं जाना ❀ मेरो कीन्हों है अपमाना ॥
गुरू द्रोण किरपा तब करेऊ ❀ अब नहिं ऐसे भ्रम में परेऊ ॥
खोलिकै बंधन बिदा कराये ❀ महा हर्ष द्रोणा गुरु पाये ॥
आशिर्बाद तुरतही दीन्हा ❀ धन्य धन्य अर्जुन को कीन्हा ॥
कीन्ह उचित तुम स्वार्थ हमारा ❀ अबते पारथ नाम तुम्हारा ॥
तुम्हरे सन्मुख शत्रु विनाशा ❀ हर्षित गुरू बचन परकाशा ॥
यही प्रकार शस्त्र व्यवहारा ❀ भयो सभा सो सुनहु भुवारा ॥
अपने गृह पारथ तब जाई ❀ परम हर्ष भो देखत माई ॥
या विधि पाण्डवकेरि कहानी ❀ सुनतै होय पाप कै हानी ॥
जाते मनबाञ्छित फल पावहि ❀ अन्तकाल बैकुण्ठ सिधावहि ॥

दोहा—पाण्डव बिजय कथा यह, राजा सुनु दै कान ।
बिजयहोय सबजगतमें, होय शत्रु क्षय जान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानकृतेआदिपर्व वर्णनोनाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

वैशम्पायन उवाच ॥

दुर्योधन तब रचा उपाई ❀ पांडुके पुत्र प्रबल भे आई ॥
भीम भयंकर खल मति अहई ❀ सो बिवाद हमसों नित चहई ॥
भाखा जाय तात के पासा ❀ भीषम राजा होत उदासा ॥
पांचों कण्टक राज्य हमारा ❀ राज्य हमारि तौ कहै बिचारा ॥
दिनदिन होत सबै बरियारा ❀ तात करो कछु मन्त्र बिचारा ॥
तिनहिंन देखि क्रोध हमदावहि ❀ सदा दुष्ट भीषम परभावहिं ॥
तातं करो कछु मन्त्र बिचारा ❀ होइनिकण्टक राज्य हमारा ॥
जानो तात सत्य मन माहीं ❀ राज्य दुष्ट तौ पाँचौ आहीं ॥

येतो साँच होत मन माहा ❀ शत्रु हमार निकासै आहा ॥

दोहा—ता कारण सुनु तात अब, भला न होई सोइ।
शत्रु रहत है निकट हो, मम कस भला जो होइ॥

धृतराष्ट्र सु मन्त्री हँकारे ❀ बैठि एकान्तहि मन्त्र बिचारे ॥
मन्त्रिन ते राजा तब कहई ❀ मोर पुत्र तौ राजा अहई ॥
पाण्डव पुत्र राज्य मनलावै ❀ पिता राज्य के सबहिं सुनावै ॥
करौ मन्त्र मन्त्री अनुसारा ❀ होइ निकण्टक पुत्र हमारा ॥
धृतराष्ट्र की बातैं सब सुनी ❀ मन्त्री मन्त्र करत हैं पुनी ॥
सब मन्त्री कहैं मन्त्र बिचारा ❀ सावधान होइ सुनौ भुवारा ॥
दुर्बल शत्रु जानि कै राई ❀ निश्चिन्तहि होइ रहौ न भाई ॥
बुद्धि करन औ यत्न प्रकाशा ❀ जाते शत्रु होइ तव नाशा ॥
ब्याधिहिसे सब होइ सवधाना ❀ जाते ब्याधि न होत निदाना ॥
शत्रु दुर्बल अग्नि समाना ❀ क्षणमा भस्म करै जगजाना ॥

दोहा—ब्याधि शत्रु अरु नदी जल, स्त्री पावक नीर।
इन बिश्वास न मानिये, सुनौ मन्त्र सोधीर॥

करिये यहै मन्त्र ठहराई ❀ तातकालही जाइ नशाई ॥
धीरज कीन्हे सिद्धि तौ होई ❀ करै उतायल भुलवै सोई ॥
यह कहिकै मन्त्री सब आये ❀ मन्त्र बिचारन को मन लाये ॥
काली नाम जो मन्त्री अहई ❀ दुर्योधन राजा सों कहई ॥
मन्त्र हमार सुनौ जो राऊ ❀ करौ एक परपञ्च उपाऊ ॥
लाक्षा भवन करिय निर्माना ❀ तामहँ जारहु शत्रु निदाना ॥
यहै मन्त्र सबही ठहराई ❀ यत्न करहु जो होय सहाई ॥

दोहा—सौबान्धव मिलि मन्त्रकरि, गये पिता के पास।
प्रेम हर्ष मन में बहुत, करत बचन परकास॥

दुर्योधन दुश्शासन अहहीं ❀ सो धृतराष्ट्र पितासों कहहीं ॥
लाक्षा भवन करौं निर्माणा ❀ जामें पांचौ तजिहैं प्राणा ॥
सुनिकै मन्त्र सबन मन भावा ❀ बरुण नगर में महल बनावा ॥

लक्ष भवन की आज्ञा पाये ❀ बरुणनगर में महल बनाये ॥
पठये बिदुर देखिबे काजा ❀ कीन्हों लक्ष केर सब साजा ॥
देखि बिदुर चक्रत तब भयऊ ❀ यह दुष्पापके रचना ठयऊ ॥
विश्वकर्माते बिदुर सुनायो ❀ तहां सुरंग एक बनवायो ॥
ताके ऊपर खम्भ लगावा ❀ याहि प्रकार बिदुर बनवावा ॥
रत्नमुद्रिका करसों लीन्हा ❀ थवई बोलि हाथ तब दीन्हा ॥
दुर्योधन जानै नहिं जैसे ❀ भाई सुनो मन्त्र यह ऐसे ॥

दोहा—यहि प्रकारते बिदुर करि, गे दुर्योधन पास ।
उत्तम ठांव भवनभो, कहिन बात परकास ॥

लक्ष भवन यहि रूप बनाये ❀ कुन्ती को धृतराष्ट्र बुलाये ॥
भीमरु दुर्योधन इकठाऊ ❀ बनत नाहि अस बोलत राऊ ॥
बरुण नगर में महल बनाये ❀ तहँ तुम रहौ परम सुख पाये ॥
सुनिकै कुन्ती सचकरि माना ❀ करि प्रणाम तब कीन पयाना ॥
पांचो पुत्र संग लै लीन्हा ❀ बरुण नगरे तुरतै शुभकीन्हा ॥
देखा उत्तम महल बनाये ❀ परम हर्ष तब कुन्ती पाये ॥
ब्राह्मण भोज प्रतिष्ठा कीन्हा ❀ विविधदान बिप्रनकहँ दीन्हा ॥
ब्याधी एक त्रिया तब आई ❀ तासु पती मारेउ बनराई ॥
पांच पुत्र लै तब ह्वाँ आई ❀ कुन्ती गेह उपस्थी भाई ॥
भोजन पान करेउ परवाना ❀ रात्रीकाल रही पुनि थाना ॥

दोहा—पावकतन बिनतीकरी, गदा लीन्ह तब बीर ।
पाँचपुत्र मातासहित, बनहिं चले मतिधीर ॥

सुरँग मार्ग तब कीन पयाना ❀ पहुँचे नदी तीर परमाना ॥
कियो स्नान तब चले चलाई ❀ बनबन फिरे तो पांचोभाई ॥
कुन्ती माता को संग लीन्हा ❀ यही प्रकार गमन तब कीन्हा ॥
लाक्षागृह पावक तब जारा ❀ लागी जोइ स्वर्गसों धारा ॥
नगरलोक सब रोदन करई ❀ पाण्डव बिना धीर नहिं धरई ॥
हाय युधिष्ठिर बृकोदर बीरा ❀ हा कुन्ती लक्ष्मणा शरीरा ॥

हा माद्री के सुत बलधारी ❀ नगर लोग रोदनकर भारी ॥
पाँच पुत्र लै रहती ताहा ❀ ब्याधी केरि त्रिया जो आहा ॥
धृतराष्ट्रक राजा के पाहीं ❀ दूतन बात कही सब ताहीं ॥
रोदन महा भयो भयकारा ❀ धृतराष्ट्रक रोदन बिस्तारा ॥

दोहा—बिदुर आदि रोदनकरैं, नगरलोग विस्तार ।
कपटरूप धृतराष्टकहु, रोदन करत अपार ॥

क्रियाकर्म तिनको तब कीन्हा ❀ बिप्र बुलाय दान बहु दीन्हा ॥
याहि प्रकार दुष्ट मन राजा ❀ दुर्योधन कीन्हों पुर साजा ॥
यहिबिधि लाक्षाभवन जरावा ❀ जरतपाण्डवन कृष्ण बचावा ॥
श्रीहरि सदा भक्त रखवारा ❀ नाशहि पाप उतारहिं पारा ॥
सुनु राजा जनमेजय बाता ❀ याहि प्रकार बंश बिख्याता ॥

दोहा—आदिपर्व गाथा सनौ, कहौं भाषि संक्षेप ।
श्रवण पानते अङ्गगत, रहत पाप नहिं लेप ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहान भाषाकृते आदिपर्व वर्णनोनामएकादशो ऽध्यायः ॥ ११ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

सुनु राजा अब कहौं बखाना ❀ कुन्ती बन में कीन पयाना ॥
पाँचौ पुत्र सङ्ग करि लीन्हा ❀ तबहि प्रवेश महाबन कीन्हा ॥
थकित भई तब कुन्ती माता ❀ क्षुधातृषा ते भयो तनु गाता ॥
भीमै कुन्तिहिं कन्ध चढ़ाई ❀ सहदेव नकुल गोद लै जाई ॥
धर्मराज अर्जुन द्वउ भाई ❀ एक गोद में दोऊ चढ़ाई ॥
महाबलो हैं भीम भयंकर ❀ प्रलय काल में जैसे शंकर ॥
यहि प्रकार ते बन पगु धारी ❀ चले जात सुमिरत गिरिधारी ॥
चलेजात मानहुँ अति रंका ❀ महाबली है भीम अशंका ॥
सन्ध्याकाल में उतरे जाई ❀ क्षुधा तृषा लागी बहुताई ॥
कुन्ती लखि दुख सहै न भारा ❀ क्षुधा तृषा ते तनु बिकरारा ॥
बटके तरु तर राखिनि जाई ❀ भीम करत जल हेतु उपाई ॥

दोहा—जलके हेतु बृकोदर, बहुबन खोजत जाइ ।
चारिबन्धु अरु कुन्तिहू, तुष्टनींद बहुआइ ॥
बनके मध्य मिलो जल जाई ❀ करत बिलाप भीम बहुताई ॥
माता देखि भीम दुख नाना ❀ विधि चरित्र नहिंजात बखाना ॥
विचित्रबीर्य केरि बधुआहै ❀ शूरसेन नृप कन्या आहै ॥
पाण्डव आनी जननि हमारी ❀ क्षुधा तृषाते दुःखित भारी ॥
राज्य देश सब छूट हमारा ❀ सहे दुःख बन माँझ अपारा ॥
जासु तेज जहँ बीर भुआरा ❀ तासु दुःख अस सहैको पारा ॥
धृतराष्ट्रक दुर्बुद्धि बिचारा ❀ जन्मेउ बंशहि धर्म बिसारा ॥
दुर्योधन पाये मति भारा ❀ कर्णआदि सबहैं अबिचारा ॥
दोहा—करत बिचार भीमतहँ, चारिबन्धु हैं सैन ।
कुन्तीजननी सहितसब, रोइ भीम कह बैन ॥
ताही समय हिडंबक दानो ❀ बहिबनरहै सो कालसमानो ॥
मानुष गन्ध पाय बिशेखा ❀ उच्च बृक्ष चढ़िकै तब देखा ॥
देखेउ मानुष छः जन अहै ❀ बहिनिहिडम्बि बयन तब कहै ॥
छः मानुष को धरि लै आवहु ❀ मरमानन्द ते भोजन पावहु ॥
सुनत हिडम्बिनि आई तहँवाँ ❀ भीम आदि बन्धव सब जहँवाँ ॥
देखि हिडम्बिनि भीमहि कैसा ❀ महादिब्य पवत सम जैसा ॥
बन्धव मोर हिडम्बहि नामा ❀ हमको तिनपठयो यहि कामा ॥
सहित तुम्हैं छः बन्धव कारण ❀ यह देखो आई हति मारण ॥
रूप तुम्हार मोर मन पागा ❀ कामबाण हिरदय में लागा ॥
दोहा—जारिदेह तुम आपनो, कहदोउ नाम विशेश ।
परमसुन्दरी कौन मो, कतबन कीन प्रवेश ॥
तुमहिं बरण चाहतहौं आपहि ❀ पै हिडम्ब शंका मन आवहि ॥
सुनत बृकदोर भाषेउ बाता ❀ यह सुन्दरकी अहै मम माता ॥
औ मम बन्धव हैं ये चारी ❀ ता कन्या ते बृहत बिचारी ॥

जो तुम आयउ पास हमारा ❋ कहहिडम्ब का करै तुम्हारा ॥
देव दैत्य गन्धर्ब का करिहैं ❋ काहू के डर हम नहिं डरिहैं ॥
सुनत हिडम्बिनि हर्षित भयऊ ❋ जबहिं बृकोदर बातैं कह्यऊ ॥
भगिनी गही देखि जब जानौं ❋ क्रोधित ह्वै चलो पावकमानौं ॥
देखि भगिनि मानुष तनधारी ❋ कामभाव से देखिसि नारी ॥
देखत महाक्रोध सो भयऊ ❋ भगिनी कहँ मारन तब ठयऊ ॥
मोर अहार बिघ्न तैं कीन्हा ❋ पठवों यमपुर बोलै लीन्हा ॥

दोहा—यह कहि मारन चलो तहँ, दान भीम तब हांक।
अरे दैत्य मैं अधम तू, बचन बृकोदर भाक॥

मोर पियारी मै यह नारी ❋ तैं मतिहीन चहत है मारी ॥
जेतक बल तन अहै तुम्हारा ❋ देखब तेज आज परचारा ॥
सुनत हिडम्ब क्रोध सों कहै ❋ आजु काल जाना तौ गहै ॥
धावा क्रोधवन्त इकबारा ❋ गहिकै कर दैत्यहि फटकारा ॥
परा जाय दश धनुष के पारा ❋ तुरतहिं उठि धावा बिकरारा ॥
भीमंहि दानव धरि फटकारा ❋ आपु तेज ते भीम सँभारा ॥
बृक्ष उखारि दैत्य लै धावा ❋ भीम बृक्ष तब एक चलावा ॥
बृक्षहिं बृक्ष निवारण भयऊ ❋ बृक्ष युद्ध तब निरफल गयऊ ॥
दूनौं महाबीर बल योधा ❋ दूनौं सरस आपने क्रोधा ॥
कुन्ती सहित जो बन्धव चारी ❋ छूटी निद्रा चेत सँभारी ॥

दोहा—देखा तहां हिडम्बि को, रूप अनूप तरङ्ग ।
देखत कुन्ती देवि तब, पूछत ताके सङ्ग ॥

कहौ कहा तुम अपनो नामा ❋ कौन हेतु कीन्हों बन ग्रामा ॥
की तुम देव दैत्य की नारी ❋ आपन अर्थ कहो बिस्तारी ॥
करि प्रणाम हिडम्बिनि कहई ❋ हमतौ जाति राक्सिनि अहई ॥
भाई मोर हिडम्बक नामा ❋ तिन हमहीं पठये यहि कामा ॥
पुत्रसहित मारण तुव हेता ❋ यहि कारण हम आइ सचेता ॥
पुत्र तुम्हार देखि हम पावा ❋ मोहित भई मोह मन आवा ॥

हमतो बेरे पुत्र तुव कारण ❋ बन्धु मोर तो आयो मारण ॥
तुम्हरे सुतनसों तेहि रण ठाना ❋ संगर महा होत मैदाना ॥
सुनत बात तब चारों भाई ❋ तुरतहिं देखि भीम तेहिं ठाई ॥
महायुद्ध दानव के साथा ❋ अर्जुन कहा भीमसों गाथा ॥

दोहा—भर्मकरौ जनि बांधव, दुइजन मारब आइ ।
नातर तुम बैठो इहाँ, हम यहि मारन जाइ ॥

पारथ बचन सुनत भे क्रोधा ❋ पारथ दैत्यको अतिबल योधा ॥
तब दानव को भीम पछारा ❋ मुष्टिक घाउ उदर पर मारा ॥
लागत घाव शब्द घहराना ❋ परा भूमि में छोंड़ेउ प्राना ॥
दैत्यको बध्यो हर्ष तब कीन्हा ❋ दुष्टदैत्यको यमपुर दीन्हा ॥
कन्या सो मानुष तनु धारी ❋ भीमके संग करत सुखभारी ॥
नाना गिरि बन पर्वत देखा ❋ पाँच बन्धु अरु कुन्ती पेखा ॥
संग हिडम्बिनि पिय के पासा ❋ दीप दीप देखा परगासा ॥
हिडम्बिनि गर्भ पुत्र अवतारा ❋ नाम घरूका बीर अपारा ॥
घरवत कच्छ नाम बिस्तारा ❋ अस्त्र शस्त्र सिखये निस्तारा ॥
तबहिं हिडम्बी कहत बुझाई ❋ जाऊँ देश तो आज्ञापाई ॥

दोहा—ममसुमिरण जबहीं करौ, देखा बचन तुम्हार ।
जो आज्ञा तुव पावऊँ, जाउँ देश अनुहार ॥

पुत्र कहै तो याहै बानी ❋ सुनतैं भीम हर्ष तो मानी ॥
कुन्ती पाहिं भीम तो कहई ❋ आनदेश अब जान को चहई ॥
यह आज्ञा तब कुन्ती दीन्हा ❋ लै सँग पुत्र गवन बन कीन्हा ॥
पाँचो बन्धव बनमें रहहीं ❋ राजा आगे मुनिवर कहहीं ॥
देश देश भरमतहीं राई ❋ माता सग ल पाँचो भाई ॥
कुन्ती को दिन बनमहँ गयऊ ❋ इकदिन व्यासके दरशन भयऊ ॥
कुन्ती कीन्ह्यो सबहिं प्रणामा ❋ पाँचो बन्धु परे पद धामा ॥
दुखी देखि पाण्डव बन माहीं ❋ करुणाकीन व्यास मुनि ताहीं ॥
आशिर्वाद व्यास तब दीन्हों ❋ औ कुन्ती सों बोल लीन्हों ॥

सुत तुम्हार होइ नृप संसारा ❀ दुष्टन केरो बल संहारा ॥
दोहा—चक्रनगर यक है यहाँ, तहाँ रहौ तुम जाइ ।
यहकहि ब्याससिधारयो, कुन्ती को समुझाइ ॥
कुंती पुत्र संग सब लीन्हा ❀ तब यक चक्र नगर शुभ कीन्हा ॥
रहे जाइ यक द्विज के गेहा ❀ भीख मांगि के पालत देहा ॥
पांचौ बन्धु माँगि लै आवैं ❀ जननी को लैके पहुँचावैं ॥
माता राँधत करत सुसारा ❀ आधा भीम को देत अहारा ॥
आधा चारि बन्धु औ माता ❀ भोजन करैं प्रेम सुख गाता ॥
बहुत दिना बीते यहि देशा ❀ माता सहित जो धर्मनरेशा ॥
ब्राह्मणगृहमें रुदन जो करई ❀ महा बिलाप चित्तमहँ धरई ॥
रोदन सुनेउ बिप्रगृह माहीं ❀ कुन्तीमन चिन्ता तब आहीं ॥
पुत्री पुत्र नारि लै साथा ❀ रोदनकरत बहुत द्विजनाथा ॥
कौन दुःख तोहिं भा द्विजराई ❀ भीम के पाहँ कहत समुझाई ॥
दोहा—येतेदिन द्विजगृहरहे, कहा दुःख द्विजपाव ।
भीमसेनके अग्रमहँ, कुन्ती कहत सुभाव ॥
जाते द्विज कि आपदा हरई ❀ सोई भीम करो तुम सहई ॥
यह तौ है निज धर्म हमारा ❀ कुन्ती तब यह कह्यो बिचारा ॥
ब्राह्मणदुःख जो क्षत्री देखहि ❀ टारै दुःख सो क्षत्री लेखहि ॥
इनके घरमें बास हमारा ❀ अब चहिये इनको दुखटारा ॥
यहै धर्म है पुत्र हमारा ❀ यही धर्म ते उतरब पारा ॥
धर्म करत जो पै दुख होई ❀ तबहुँ धर्म नहिं छांड़त कोई ॥
धर्महिं ते होई धन राजा ❀ धर्महिं ते होई शुभकाजा ॥
ताते भीम कहत समुझाई ❀ जाते द्विज को दुःख नशाई ॥
सुनत बृकोदर करै बिचारा ❀ कौन दुःख जो है करतारा ॥
जो माता की आज्ञा होई ❀ अवशि बिचार करब हम सोई ॥
दोहा—माता पिता निदेशकहँ, पुत्र करत परमाण ।
धन्य जन्म ताको जगत, पावै पद निर्वाण ॥

भीमसेन माता समुझाई ❋ कौन दुःख द्विज पूछहु जाई ॥
टारौं दुःख प्रातही यहै ❋ भीमसेन माता सों कहै ॥
मारौं दुष्ट दैत्य संहारौं ❋ जो संकट द्विज के सो टारौं ॥
अब माता पूछौ तुम जाई ❋ कौन हेतु रोवत द्विज राई ॥
माता ताको धीर धरायो ❋ जो कुछ कष्ट पूछि सोआया ॥
कुन्ती तबै हर्ष मन भई ❋ तब द्विजपहँ सो पूछन गई ॥
रोवै ब्राह्मण करै बिलापा ❋ रोवत पुत्र एक पुनि आपा ॥
कन्या रोवति आपु पुकारी ❋ बिकलवन्त तब बहुद्विजनारी ॥
ब्राह्मणकहत जबै लग ताहीं ❋ तुम तीनों रहिहौ गृहमाहीं ॥
पुत्र कहा जो मैं चलिजाऊँ ❋ पिताके ऋण उबारतौ पाऊँ ॥

दोहा—स्त्री अरु कन्या कहैं, हम जैहैं चलि ताह ।
तुम रहिहौ जो जगत में, बहुतक होइ बिवाह ॥

रोवत हैं चारों बिलखाई ❋ तब कुन्ती पूछन को आई ॥
कौन दुःख रोदन करु भारी ❋ सो तुम हमसे कहौ बिचारी ॥
हमहैं तुम्हरे गृह मंझारा ❋ तुम दुख छूटै धर्म हमारा ॥
सोई दुःख कहौ द्विज मोहीं ❋ सत्य कहौ दुख का द्विजतोहीं ॥
मैं तो करब दुःख परत्राना ❋ मम आगे तुम करौ बखाना ॥
हम तो दुःख छुटाउब माई ❋ तव आशिष हमार दुःख जाई ॥
आशिष तोर यहै कल्याना ❋ रोदन तजिकै करौ बखाना ॥
तुव रोदन देख्यों अति राई ❋ कारण हम पूछन को धाई ॥

दोहा—कौन दुःख केहि त्रासते, रोदन विस्मय आहिं ।
ब्राह्मणिपै कुन्ती तबे, पूछे हित गहि बाहिं ॥

तबै ब्राह्मणी कहै बिचारी ❋ बिपदा मोरि सकै को टारी ॥
नाम बकासुर दैत्य जो आहै ❋ प्रति दिन सो मानुषबलि चाहै ॥
एकचक्र नगरी कर राजा ❋ मानुष एक खात नित साजा ॥
बर्ष पाँचमा यक घर परै ❋ ता घरको नर भक्षण करै ॥
एक मनुष्य को चहै अहारा ❋ सो आपद है आजु हमारा ॥

मोल लेइँ तौ शक्ति है नाहीं ❀ यह चरित्र होवै गृह माहीं ॥
स्त्री पुत्र घर पुत्री अहै ❀ काहि देउँ रोवत द्विज कहै ॥
सो सब जाई नगर भुवारा ❀ चारिउ जनको करहिं अहारा ॥
भागे तीनि लोक नहिं जाऊँ ❀ यहि बिचारमहँ दुःखहि पाऊँ ॥
सुनिकै कुन्ती सुतपहँ जाई ❀ भीमादिक तहँ हैं सब भाई ॥

दोहा-कुन्ती भाष्यो बिप्र सुनु, अमृत बचन सुधार ।
नगर तुम्हारे रहत हैं, है तौ धर्म हमार ॥

एक पुत्र घर कन्या एका ❀ तुम दोउ प्राणी कह सविवेका ॥
पाँच पुत्र बल अहै हमारा ❀ यह तो करों तोर उपकारा ॥
भीम नाम जो पुत्र है मोरा ❀ देखा नयनन ताकर जोरा ॥
मारेउ दैत्य एक बल धारी ❀ सोई पुत्र मोर बल भारी ॥
कुन्ती धीर बिप्र कहँ दीन्हा ❀ आइ भीम ते वैसे लीन्हा ॥
सुनत भीम भा काल समाना ❀ अबहिं बकासुर तजिहै प्राना ॥
ब्राह्मणि आनि अन्न कछु दीन्हा ❀ भीमसेन तब भोजन कीन्हा ॥
मारि हँकारि जहाँ बकराई ❀ सुनतहि क्रोध बकासुर धाई ॥
चला बकासुर क्रोधित अयना ❀ देख्यो भीमको अपने नयना ॥

दोहा-भोजन करत सुठाढ़ तहँ, देखा दैत्य प्रकाश ।
क्रोधवन्त तब भाषेउ, रूपबरणि नहिं जाश ॥

दूनौं हाथ दौरिकर मारा ❀ करेउ न शङ्का पवनकुमारा ॥
खातहि अन्न बृकोदर बीरा ❀ बकासुरहिं तब धरेउ शरीरा ॥
करिकै अचमन भीम सुजाना ❀ बाम हस्त ते गह्यो निदाना ॥
बृक्ष उखारि एक कर लयऊ ❀ दैत्यके मस्तक सों पुनि दयऊ ॥
तबहिं बकासुर बृक्ष उखारा ❀ महाक्रोध करि भीमको मारा ॥
बृक्ष बृक्ष ते निरफल जाई ❀ महायुद्ध प्रकटत भो आई ॥
तब फिरि मल्लयुद्ध दोउ ठाना ❀ उठ्यो गर्द लोपित भे भाना ॥
पीठि उपरि जंघा दियो भारा ❀ धरि ग्रीवा तब भूमि पछारा ॥
मुखते रुधिर धार बहिराना ❀ परा भूमि में छांड़ेउ प्राना ॥

मारि बकासुर भीम भुवारा ❀ सो द्विजकर आपदा उधारा ॥

दोहा–भीम बकासुर को हन्यो, द्विज हरष्यो मनमाह।
कुन्ती परमानन्द भै, सुनौ बात नरनाह ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहान भाषाकृतेआदिपर्व वर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

हर्षि गात द्विज आशिष दीन्हा ❀ पूजेउ भुजा हर्ष मन कीन्हा ॥
मारि बकासुर भेट्यउ भाई ❀ कुन्ती चरण भीम परे जाई ॥
रहे तहां पुनि हर्षित गाता ❀ सुनु जनमेजय कलिकी बाता ॥
तबै ब्यासमुनि आये तहां ❀ चक्रनगर पाराडव हैं जहां ॥
पाराडव सबै कीन्ह परनामा ❀ मुनि सों कह पूरे मनकामा ॥
आसन दीन्ह कीन्ह बिश्रामा ❀ तबहिं ब्यासमुनि कह्योबखाना ॥
पाँचो बन्धु ते कहत बुझाई ❀ कन्या एक अहै सुनु राई ॥
बड़ तप करि शंकर आराधे ❀ नृपन बिजय बर इच्छा बाँधे ॥
महादेव सेवा मन लाये ❀ तुष्टवन्त गिरिजापति आये ॥
मांगु मांगु बोलत गङ्गाधर ❀ हर्षित कन्या मांग्यो तब बर ॥

दोहा–पति पति देहू बचन कहि, मांगे पाँचौ बार ।
भुवन बिजय बर शंकर, पूरण आश हमार ॥

तुष्टवंत शंकर तब कहहीं ❀ जो तुम्हरे मन इच्छा अहहीं ॥
पांचो पति शुभ होइँ तुम्हारा ❀ भुवन बिजय जीतहिं संसारा ॥
सुनिकै बिलखि बदन भैवारी ❀ तब शंकर ने कहा बिचारी ॥
पति नहिं दीन कलंक लगाये ❀ भल शंकर पूजा बर पाये ॥
पुरबै शाप केर फल पाये ❀ पाछे शंकर बचन सुनाये ॥
तुव पति कौरव बंश सँहारा ❀ यक बर शंकर दीन उदारा ॥
राजा द्रुपद केरि सो बारी ❀ ब्यास कहै यह भेद बिचारी ॥
बान्धव दोय तासु के अहैं ❀ भेद सु तास ब्यासमुनि कहैं ॥
धृष्टद्युम्न द्रोण को मारै ❀ भीष्म कोहि शिखरिड सँहारै ॥

यहि प्रकारते ब्यास बुझाई ❀ सुनत चले जहँ पाँचौं भाई ॥

दोहा—तापस ह्वै पाण्डव चले, कुन्ती माता संग ।
बन उपबन देखत फिरत, देश बिदेश बिहंग ॥

चलत फिरत आये पुनि तहाँ ❀ मणिपुर ग्राम एक है जहाँ ॥
तहँ गन्धर्ब केर अस्थाना ❀ चित्ररथ केर बिश्रामहिं जाना ॥
तहाँ रहस्य कथा सुनि राई ❀ चित्राङ्गद तेहि कन्या आई ॥
ताल भङ्ग हमहीं दुख भारी ❀ ग्राह भई ता कारण बारी ॥
ताते ग्राह भई सो नारी ❀ रहत तहाँ सरवर मंझारी ॥
पाँच बन्धु कुन्ती महतारी ❀ तासु नगर पहुँचे अनुसारी ॥
चारो बान्धव इत उत जाहीं ❀ इच्छाहेतु नगर के माहीं ॥
पारथ गे अस्नान के काजा ❀ ग्राह रहै सो सर युत राजा ॥
पारथ सरवर प्रबिशे जाई ❀ सोई ग्राह गह्यो पद आई ॥

दोहा—पूर्बै दीन्हा शापतब, पुच्छकहै इमि ताहि ।
पारथके पग परसते, शापसिन्धु तरिजाहि ॥

ताते पारथ पद गह्यो आई ❀ तुरतहिं मुक्ति शापसों पाई ॥
पूरुब शाप पिताकी पाई ❀ भा उधार तुम परसि गुसांई ॥
ताते हमहुं सत्य करि जाना ❀ तुम पारथ जानत परमाना ॥
मैं तुव पद छाँड़ों अब नाहीं ❀ चलो हमारे पिताके पाहीं ॥
मैं तुव दासी पारथ जानो ❀ कपट हेतु तुम जनि भय मानो ॥
पारथ कहै सुनो बर नारी ❀ जो तुम आशा करो हमारी ॥
याही नगर रहो बर नारी ❀ तो पुनि पैहो दरश हमारी ॥
यहि प्रकार धीरज तब दीन्हा ❀ मानिवचन उठिकै शिरलीन्हा ॥

दोहा—तब पारथ अस्नान करि, गये तुरत निजबास ।
पाँचौ बन्धव तहँ रहैं, प्रात चले परगास ॥

चित्राङ्गद तब भई उधारा ❀ पाँच पाराडवा पुनि पगुधारा ॥
ब्राह्मण रूप चले तो आई ❀ नाना देश सो देखत जाई ॥
माँगत खात चले तो ताँहा ❀ पाँचलदेश उदीशन माहाँ ॥

चलतहिं देशनिकट तब गयऊ ❀ महाहुलास चित्तमहँ भयऊ ॥
कृष्णदेव द्वारावति रहैं ❀ मन में बहुत बिचारत अहैं ॥
द्रुपदराज की एक कुमारी ❀ शंकर पूजि लयो बरभारी ॥
इच्छा बर जो मांगहि लीन्हा ❀ पाँच पती बर शंकर दीन्हा ॥
ता कारण हरि करैं बिचारा ❀ पाँच बन्धु हैं पाराडु कुमारा ॥
कुंती संग कहाँ धौं अहैं ❀ मनहीं मन श्रीपति तौ कहैं ॥
कन्या का शंकर वर अहै ❀ ता कारण हरि शोचत रहै ॥
ई कन्या को पति जो होई ❀ सकल कौरवा मारै सोई ॥
पूरब शाप भवानी पाई ❀ ताते पाँचपतिहि निरमाई ॥

दोहा—धर्मराज पारथ सहित, भीमसेन बल वीर ।
कुन्ति नकुल सहदेव ये, कौने वन केहि तीर ॥

सब जानत हैं अन्तर्यामी ❀ भक्त हेतु जन्मे जगस्वामी ॥
यहि प्रकार शोचत भगवाना ❀ कुरुदलपाप पहाड़ बखाना ॥
दुष्ट मनुष्य जन्म जो पावैं ❀ साधुन कष्ट सदा मनभावैं ॥
ऐसे श्रीपति करैं बिचारा ❀ मारत दुष्ट सन्त प्रतिपारा ॥
मोर भक्त जन संकट पावै ❀ ताते मन उद्वेग जनावै ॥
श्रीपति तबै गरुड़ हंकारा ❀ तासों कहत सुनन्ददुलारा ॥
भक्त मोर हैं पाँचो भाई ❀ कौंने बन हैं देखहु जाई ॥
भेंट होइ तौ कहि सब बाता ❀ द्रुपद कुमारी चरित सख्याता ॥
पञ्चल देश रहै तुम जाई ❀ तहां स्वयम्बर होई भाई ॥
कोइ स्वयम्बर जीतिहि नाहीं ❀ तब वह पारथ जीतिहि ताहीं ॥

दोहा—कन्या तासु अनुप है, सब सो मङ्गलदाय ।
कहौ जाय बिनतासुवन, पाँच बन्धु के ठाय ॥

गरुड़ कीन बेगिय परनामा ❀ आज्ञा पाय चलेउ तब ग्रामा ॥
बन बन हम सो खोजत जाई ❀ बहु बन उपबन देशन आई ॥
पाँचो पांडव कहुँ नहिं पाये ❀ खोजत गरुड़ अनेकनठाये ॥
धर्मराज इत कियो बखाना ❀ चारहु बन्धु सु अग्र समाना ॥

पूर्ब ब्यास जो कहा बिचारी ❀ पञ्चल देश को करहु तयारी ॥
ब्राह्मण रूप रहत हैं ताहीं ❀ पञ्चल देश नगर के माहीं ॥
हमरे श्रीपति हैं जो सहाई ❀ कारण कौन शोचिये भाई ॥
सबै जगत के तारण हारा ❀ संत तारि दानव संहारा ॥
धर्मज की बातैं यह सुनी ❀ चारौ बन्धुन मनमहँ गुनी ॥
पाँच बन्धु माता संग लीन्हे ❀ जहँ मन चहै तहाँ शुभ कीन्हे ॥
गरुड़ मिले यहि अन्तर आई ❀ पाण्डव पाहिं कहत समुझाई ॥

दोहा--श्रीपति कहेउबिचारिकै, सुनौ धर्म के राज।
कन्या नृप पांचाल की, तासु स्वयम्बर काज ॥

द्रुपद राज घर द्रौपद बारी ❀ तहाँ स्वयम्बर होइहै भारी ॥
ताते श्रीपति हमहिं पठावा ❀ सो सब बात मैं तुम्हैं सुनावा ॥
सो कन्या पारथ को बरै ❀ कर्म लिखा सो कैसे टरै ॥
ताते तुम अब चलिये ताहीं ❀ पाञ्चल देश द्रौपदी जाहीं ॥
यह कहि गरुड़ तुरन्तहि गयऊ ❀ धर्म राज हर्षित मन भयऊ ॥
सुनि संदेश चले अतुराई ❀ कुन्ती सह वे पाँचो भाई ॥
पाञ्चल देश पाण्डवा जाहीं ❀ देना दीश नगरके माहीं ॥
तापस रूप रहे तहँ जाई ❀ भीख माँगिकै दिवस गँवाई ॥

दोहा—याहिप्रकारसबपाण्डवा, धारि तपासिनकर भेश ।
गुप्तरूप निवसत भये, नृप पाञ्चाल सुदेश ॥

जैसा उपजा यादव नाऊँ ❀ ते दूनौं नृप द्रौपद ठाऊँ ॥
पूर्ब यज्ञ राजा तप कीन्हा ❀ ते दोऊ मुनि आहुति दीन्हा ॥
अग्निकुण्ड में भयो कुमारा ❀ धृष्टद्युम्न नाम संचारा ॥
नाम द्रौपदी सो निर्मयऊ ❀ जन्मै जन्म कन्या को भयऊ ॥
बेद बचन ते कन्या भयऊ ❀ देवन स्वर्गबाणि तौ कियऊ ॥
यह कन्या ते कुरुबल नाशा ❀ नभ बाणी देवन परकाशा ॥
यहि के भर्त्ता अर्जुन होई ❀ जाते कुरुबंशहि नशि सोई ॥
सुर बाणी जब यह सब सुनी ❀ पुत्र ते मृत्यु होइहै गुनी ॥

द्रोणाचार्य है जाकर नाऊं ❀ धृष्टद्युम्न तेहि प्राण नशाऊँ ॥
यहै बात पूरब तौ सुनी ❀ द्रुपदराज तब मन में गुनी ॥
दोहा—लाखभवन मेंदाह सुनि, मन में करै विचार ।
देववाक्य मिथ्या नहीं, पाण्डव हैं संसार ॥
कैसेहुके परचै नहिं पाये ❀ तबै स्वयम्बर भूप उपाये ॥
देश देश तब खबरि पठाये ❀ क्षत्री बीर भूप सब आये ॥
धनुषयज्ञ जब रच्यउ भुवारा ❀ जाको मानुष चढ़ेउ न पारा ॥
अतिबिस्तारिक कुण्ड खनाये ❀ तेल कड़ाहे बीच भराये ॥
ताके तरे हुताशन लागी ❀ जाको देखि बीरता भागी ॥
गाड़ा खम्भ बज्र कर ताहा ❀ ऊपर खम्भ मच्छकर आहा ॥
हीराकनी के नयन बनाये ❀ ताके तरे सो चक्र भ्रमाये ॥
निशिदिन सो फिरतो बिकरारा ❀ देखत तजा भर्म संसारा ॥
जो कोऊ यह धनुष चढ़ाई ❀ बेधत राहु बाण ते आई ॥
मीन नयन में बेधहि बाणा ❀ सो कन्या पावहि परमाणा ॥
दोहा—यहै यन्त्र निर्माण करि, पठवा जगत सँदेश ।
जहाँ जौन नरनाहहै, क्षत्री जो जेहि देश ॥
दुर्योधन बन्धव शत भाई ❀ देशहि देश जहाँ जो राई ॥
राज सभा बैठे हैं जाहाँ ❀ तापसरूप पाण्डु हैं ताहां ॥
बैठि सभा सब साज बनाई ❀ नानारूप बरणि नहिं जाई ॥
कन्या नव शृँगार तब कीन्हा ❀ हाथ माहिं जैमाला लीन्हा ॥
सब राजन को कन्यहिं देखा ❀ भूप अनूप जात नहिं लेखा ॥
सब कहँ दोख द्रौपदी नयना ❀ धृष्टद्युम्न बोलेउ तब बयना ॥
राहु बेध जाके बल होई ❀ बरिहै द्रौपदि कन्या सोई ॥
यह कहिके द्रौपदिहि बुझाई ❀ चीन्हों सब राजागण जाई ॥
कुरुपति कर्ण दुशासन अहाई ❀ बिक्रमबेर कुबेर तौ कहई ॥
जहाँ सुशर्मा भूपति भारी ❀ चित्रसेन बीरहु बलधारी ॥

दोहा—एक एक सब राजनें, देखा कन्या ताहि।
महाबीर पुरुषारथी, बैठ सभा के माहि ॥

कन्या रूपते मोह भुवारा ❀ आप आपुको करैं शिंगारा ॥
सुर आये सब चढ़े बिमाना ❀ यदुबंशी तहँ कीन पयाना ॥
हलधर और प्रद्युमन बीरा ❀ श्रीकृष्ण अनिरुद्ध गँभीरा ॥
देव दुन्दुभी बाजत बाजा ❀ अन्तरिक्ष देवन कर साजा ॥
महाबीर राजा हैं जेते ❀ क्षत्री बीर पराक्रम तेते ॥
तब कुरुनाथ शल्य अनुसारा ❀ अश्वत्थामा आये जु भुवारा ॥
अलिङ्ग कलिङ्गके देश भुवारा ❀ भोजबंश बीरन पगु धारा ॥
पुत्ररु पौत्र बीर यदुबंसी ❀ एकै एक करत परहंसी ॥
धनुष माहँ गुण देनके काजो ❀ भये समर्थ न एको राजा ॥
चक्र सुदर्शन कृष्ण पँवारा ❀ मायालोप लखै को पारा ॥

दोहा—चक्रराय परत्यक्ष ह्वै, फिरता है दिन सोइ।
राहु बेध भूपति करै, नाहिं समर्थ जग कोइ ॥

तब भीषम बोलै कहँ लागे ❀ धृष्टद्युम्न कुँवर के आगे ॥
हम तो ब्याह करब नहिं भाई ❀ पूरब शपथ कीन्ह हम राई ॥
हमहिं जो लखिकै छेदनकरई ❀ कुरुपति को कन्या सो बरई ॥
यह कहिकै तब शारँग लीन्हों ❀ चरण भारते गुण बहु दीन्हों ॥
तबहिं शिखण्डी दरशन दीन्हों ❀ महाखेद भीषम मन कीन्हों ॥
जबहीं लखा शिखण्डि कुमारा ❀ तबहीं धनुष हाथ ते डारा ॥
गुण उतारि तुरतहिं सो डारा ❀ देखि शिखण्डो भीषम हारा ॥
द्रोणाचार्य कोपि उठि जबहीं ❀ भीषम बीर हारिगे तबहीं ॥
करि प्राक्रम तब धनुष चढ़ाये ❀ बाण हाथ तब तुरत चलाये ॥
चल्यो सुबाण तेजगति धाई ❀ लाग चक्रमो परो भु आई ॥

दोहा—लज्जित भे तब द्रोण कुरु, हारे सर्व भुवार।
तब राजा लज्जितभये, द्रौपद मन खम्भार ॥

पारथ तपो रूप तहँ रहे ❀ देखा हारि भूप सब गहे ॥
द्विज समान ते पारथ आये ❀ तब द्विज तो परिहास मचाये ॥

एक द्विज कहा जातहौ काहा ❀ हारे बीर महाबल माहा ॥
महाबीर नृप चत्री हारे ❀ कन्यालाभ बिप्र पशु धारे ॥
सुता देखि द्विज बाउर भयऊ ❀ यह कहि द्विज बैठारन लयऊ ॥
गहिकै भुज बिप्रन बैठारा ❀ बीर महाबल बैठ न पारा ॥
पारथ उठे फेरि द्विज गह्यऊ ❀ धर्मपुत्र तब द्विजसन कह्यऊ ॥
जानि पराक्रम जात हैं ताहां ❀ बेधी राहु अपनबल ताहां ॥
आपन तेज आप सब जान ❀ कारण कौन करों परमाना ॥
सुनिकै बिप्र छाँड़ि तब दीना ❀ पहुँच्यो जहाँ यन्त्र है मीना ॥

दोहा—कहत बीर सब भूप तब, यों गुण शारँग लाव ।
हानि लाभ जानत नहीं, द्विजको यही स्वभाव ॥

राजा करैं सबै उपहासा ❀ असम्भाव कह बिप्र प्रकासा ॥
पारथ दीखे श्रीभगवाना ❀ चक्रका तेज हरण कर जाना ॥
पारथ तब भुज धनुष चढ़ाये ❀ अलख पञ्चशर गुरुते पाये ॥
मारो बाण क्रोध तब होई ❀ मीन नयन में बेधेउ सोई ॥
राहु बेध पारथ तब कीन्हा ❀ हर्षित इन्द्र दुन्दुभी दीन्हा ॥
देखि बिप्र हर्षित सुख पाये ❀ बेदध्वनि आनँद ते लाये ॥
सबै भुवार देखि कहैं बाता ❀ सबको मानमथ्यो द्विज ज्ञाता ॥
द्विजकी बिधि चत्री अपमाना ❀ एक मते भे भूप अयाना ॥
द्रुपदहि मारौ नजर उजारौ ❀ कन्या पावक माहीं डारौ ॥
राज्य देश तौ देहु बहाई ❀ पै इक बिप्र बधो नहिं जाई ॥

दोहा—यह बिचारिकै भूप सब, द्रुपद गुरू परधाव ।
पारथ राहु को बेधेउ, क्षत्री लज्जा पाव ॥

तब राजा शरणौं द्विज आवा ❀ पारथ धनुष हाथ परभावा ॥
अस्त्र गहे राजा पर धारा ❀ अभय कीन्ह तहँ मनमंझारा ॥
कर्ण बीर धनुष लै धाये ❀ दुर्योधन चक्र ते आये ॥
अर्जुन कर्णहि पूर्ब बिरोधा ❀ कर्ण बीर बल अर्जुन योधा ॥
तपकु तेज बिप्र रण ठाना ❀ चेति सूर्यसुत तब पछितांना ॥

जब देखा यह तौ कुरुराजन ❁ लज्जा भई बीरके काजन ॥
दुश्शासन भगदत्त भुवारा ❁ जयद्रथ सोमदत्त बरियारा ॥
जरासंध और शिशुपाला ❁ शल्यावधि जेतिक भूपाला ॥
भूरिश्रवा सुशर्मा बीरा ❁ अलिंग कलिग के हैं रणधीरा ॥
शैल्याशल्य और चितकरना ❁ काशीराज बिराटपुर बरना ॥

दोहा—अंशुमान अरुकीचकहु, बलिअरुजितकभुवार।
सकल बीर तब कोपेउ, यह द्विजकर संहार ॥

शेलै शक्ति बाण की धारा ❁ मुद्गर खड्ग अस्त्र परिहारा ॥
असंख्य अस्त्र द्विजपर सब बर्षे ❁ महाराज दुर्योधन हर्षे ॥
घेरि बीर पारथ सब पेखी ❁ बाणहिं बाण परत सब देखी ॥
बरषैं बाण असंख्य अपारा ❁ माया कीन्हेउ देव भुवारा ॥
अलखित दुइगुण ताहाँ आये ❁ सो पारथ शारँग मनलाये ॥
परम हर्ष भे पाण्डवनन्दन ❁ बरषत बाण बाणते खण्डन ॥
बरषत बाणन भो अँधियारा ❁ प्रलयकाल प्रकटेउ संसारा ॥
पारथ बाण छिपानेउ याना ❁ गज अनेक के मस्तक बाना ॥
रथ अरु अश्व पैदल बहुमारा ❁ अर्जुन एक अनेक भुवारा ॥
मारे बहु पैदल असवारा ❁ महायुद्ध परकट संचारा ॥

दोहा—बहुत अस्त्र तब बरषहीं, मानो सावन धार ।
अर्जुन बीर अकेलो, क्षत्री बहुत भुवार ॥

पवन के पुत्र बृक्ष लै धाये ❁ नकुल और सहदेव जो आये ॥
दोऊ पुत्र सँग द्रौपद राजा ❁ महायुद्ध खेत महँ साजा ॥
भीम तौ युद्ध शल्य ते ठाना ❁ रथते शल्य परा मैदाना ॥
परावश्य शल्य कह जानो ❁ छांड़े ताहि धे नहिं प्राना ॥
हाहा करि सब ब्राह्मण धाये ❁ दशौ दिशामें शोर मचाये ॥
कर्णबीर तब काहसि बाता ❁ तपके हेतु द्विजन के ताता ॥
सुनि सब राजा भये सक्रोधा ❁ दशौ दिशा तब करै बिरोधा ॥
महा मारु कीन्ही प्रभुताई ❁ दशौ दिशा ते छेड़ा जाई ॥

दशौ दिशाते बर्षत बाना ❀ महायुद्ध नहिं जात बखाना ॥
जौन दिशा को पारथ ताकै ❀ क्रोधवन्त बीरन रण हाँकै ॥

दोहा—जौनी दिशि राजा सबै, क्षत्री बीर अपार ।
भारहोतजेहिदिशिसबै, तेहिदिशिपरतपुकार ॥

क्षत्री छेकि लगे शर मारन ❀ सोते सहह सहस्र हजारन ॥
बरषत बाण बुन्द गण घोरा ❀ पारथ बाण हाथ तब जोरा ॥
पारथ बाण चहूँ दिशि मारे ❀ युत्थ युत्थ क्षत्री संहारे ॥
जौनि दिशा पारथ शर मारै ❀ भागैं बीर न कोउ सँभारै ॥
जौनि दिशा हेरै जहँ जोई ❀ सम्मुख रणमहँ रहै न कोई ॥
बिप्र मुनीश हते जहँ जेते ❀ करत बिचार कहैं सब तेते ॥
जय जय शब्द बिप्र सब कीन्हा ❀ दिशनि बिजय सबबोलैं लीन्हा ॥
दशौ दिशा पारथ के बाना ❀ क्षत्री नृपति सबै भहराना ॥
भागेउ दल पैदल असवारा ❀ पारथ बिजय कीन तेहिबारा ॥

दोहा—जीतिभई द्विज कहत तब, बिस्मय सबै भुवार ।
बिप्र नाहिं यह क्षात्र है, नृप सब करत विचार ॥

राजा सब तब करत बिचारा ❀ नहीं बिप्र क्षत्री अवतारा ॥
दुर्योधन तब करै बिचारा ❀ क्षत्री जानब येही बारा ॥
शकुनी पाहिं कहत अस बाता ❀ काहे जाइ बिप्र सख्याता ॥
ब्राह्मण कुल तुम करौ बिवाहा ❀ क्षत्री कुलै हेतु केहि चाहा ॥
धनसम्पति मनमानो लीजै ❀ यह कन्या कुरुपतिको दीजै ॥
शकुनि गयो तब हाथ उठाई ❀ पारथ पाहिं कहा समुझाई ॥
पारथ सुनी बात यह काना ❀ क्रोध भयो तब कालसमाना ॥
भीमसेन तब मारण धाये ❀ पारथ क्रोधित बात सुनाये ॥
राजा पाहिं कहो तुम जाई ❀ बात कहत लज्जा नहिं आई ॥
राहु बधे समरथ नहिं भयऊ ❀ क्षात्री धर्म कहां तब रह्यऊ ॥

दोहा—भानुमती जो रानिहैं, सोइ आनि मोहिं देहु ।
धन कुबेरको भवनसम, जो चाहौ सो लेहु ॥

सो सुनि क्रोध भयो कुरु राऊ ❀ महा मारु करने मन लाऊ ॥
कर्ण द्रोण दुश्शासन धाये ❀ पै पारथ पै जीति न पाये ॥
महा मारु तिनहिन सों होई ❀ बीच परे ब्राह्मण सब कोई ॥
राजा सबै परम भय पाये ❀ हारि बीर सब अस्त्र गँवाये ॥
अस्त्र के हीन भये सब राऊ ❀ अपने अपने देश सिधाऊ ॥
राजा सबही देश तौ गयऊ ❀ परम हर्ष सब पाण्डव भयऊ ॥
ब्राह्मण रूप हैं पाँचौ भाई ❀ जीते हर्ष स्वयम्बर आई ॥

दोहा—जीति स्वयम्बर पाण्डवा, तब कन्या लै जाइ ।
परम हर्ष पगु धरत भे, जहाँ रहति है माइ ॥

कुम्भक नामक द्विज जा अहई ❀ ताके गृह में कुन्ती रहई ॥
द्रौपद राजा करत उपाई ❀ भेद लेन कहँ पुत्र पठाई ॥
धृष्टद्युम्न कुपित तौ जाई ❀ देखन अचैं हेतु उपाई ॥
पाँचौ बन्धु गये तब ताहाँ ❀ कुन्ती मातु बैठि है जाहाँ ॥
माता पाहिं कहा तब जाई ❀ तव प्रसाद हम भिक्षा पाई ॥
माता कह्यो भला भौ काजा ❀ पाँचौ बन्धु भोग कर राजा ॥
पाछे पारथ भेद बताई ❀ बिजय नाम अरु कन्या पाई ॥
बिजय नाम सब द्विजन धराई ❀ कुन्ती सुनत लाज तब आई ॥
पुनि कुन्ती तौ करत बखाना ❀ कर्म को लिखा होत नहिं आना ॥
बचन हमार न मिथ्या होई ❀ पाँचौ बन्धु भोगकर सोई ॥

दोहा—याहि बिधि पत्नी गादकरि, कुन्ती देवी ताह ।
पांचपती याहे कारण, सुनौ बचन नरनाह ॥

धृष्टद्युम्न यह देख्यो ताहीं ❀ वह चरित्र सब कुन्ती पाहीं ॥
गुप्त भये देखा मन लाई ❀ यहि अन्तर कृष्णाहु तब आई ॥
बहुत प्रकार हर्ष तब माना ❀ पूजेउ चरण हर्ष भगवाना ॥
बहु प्रकार ते कृष्ण बुझाये ❀ धीरज दै यदुपतिहु सिधाये ॥
द्रौपद सुत देखेउ प्राकर्मा ❀ जाइ पितासों भाष्यउ मर्मा ॥
राजा सुनौ हर्ष सब पाये ❀ रथ चढ़ि तहवाँ आपु सिधाये ॥

सुत सँग लै राजा तहँ जाई ❋ पाराडव कहँ सब देत बड़ाई ॥
प्रोहित सहित घरहि लै आयो ❋ परम हर्ष राजा तब पायो ॥
राजा साज बहुत बिस्तारा ❋ दिये पाराडु को द्रुपद भुवारा ॥
रनिवासे कुन्ती तब गई ❋ बन्धू संग परम सुख लई ॥

दोहा—प्रेम हर्ष ते रहेउ तहँ, पाण्डव पांचौ भाइ ।
राजा परम अनन्द सों, मङ्गल बात चलाइ ॥

परचै दीन युधिष्ठिर राऊ ❋ परम हर्ष तब द्रौपद पाऊ ॥
पाराडव नाम सुने पुरबासी ❋ देखत धाये प्रेम हुलासी ॥
द्रौपद राजा कहत बुझाई ❋ तब बिवाह की बात चलाई ॥
तुम हौ जेठ धर्म कुमारा ❋ उचित बरौ तुम कह्यो भुवारा ॥
धर्म के राज कहिनि तब बाता ❋ बचन एक भाष्यो मम माता ॥
पाँचौ बन्धव बरहिं कुमारी ❋ सुनत द्रुपद बिस्मय भा भारी ॥
माता आज्ञा मेटि न जाई ❋ धर्मराज भाषत समुझाई ॥
द्रुपद कहा तुम धर्म कुमारा ❋ कौन शास्त्र में कहहु बिचारा ॥
एक पुरुष के तिय बहु जाना ❋ नारिकेर पति होत न आना ॥
धर्मराज कहैं तब बाता ❋ शास्त्र सर्ब जो आज्ञा माता ॥

दोहा—यहै बात कहताहि सुनत, कथा प्रसंग उपाय ।
त्यहि अन्तर वा ठौर में, ब्यासमुनीशहि आय ॥

पूर्ब कथा तब ब्यास सुनाई ❋ ब्यास बचन द्रौपद सुनि पाई ॥
शंकर बचन सुना जब काना ❋ छूटेउ भ्रम तब द्रुपद सुजाना ॥
लग्न धराई ब्याह संचारा ❋ पाँचबन्धु को ब्याह बिचारा ॥
भयो ब्याह दायज बहु लायो ❋ रथ घोड़ा गज बहुतक पायो ॥
पाराडव कहँ पूजन तब कीन्हा ❋ कन्या धनहि दान बहु दीन्हा ॥
द्रौपद कहा उचित यह काजा ❋ जब तुम होब महीपति राजा ॥
यहि प्रकार ते पाँचौ भाई ❋ द्रौपद के घर रह तब जाई ॥
प्रेमहिं हर्ष रहैं सुख पावैं ❋ महाअनन्दित दिवस गँवावैं ॥

दोहा—यहि बिधि जनमेजय सुनो, भयोद्रौपदीब्याह।
सबलसिंह चौहानकहि, सुनतहिपरमउछाह॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेआदिपर्व वर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

वैशम्पायन उवाच॥

सुनु राजा रहैं पांचौ भाई ❀ दुर्योधन सब अर्थहि पाई॥
शकुनी कर्ण दुशासन आये ❀ सबसों राजा बचन सुनाये॥
मन्त्रिन सहित गये सब तहँवां ❀ अन्धराय को मन्दिर जहँवां॥
धृतराष्ट्रक सुनिकै व्यवहारो ❀ करो मन्त्र जय होइ तुम्हारा॥
बिदुर न पावे भेद बखाना ❀ तैसे मन्त्र करो परमाना॥
दुर्योधन भाषै तव बाता ❀ द्रुपदकेर बल है बिख्याता॥
द्रुपद पाहिं अस कहो बुझाई ❀ राज्य पाट धन लीजै भाई॥
पाण्डव कहँ अब देहु निकारी ❀ हो हमरे तुम प्रीतम भारी॥
नाहिंत पठवो दूती ताहाँ ❀ रानि द्रौपदी पास है जाहाँ॥

दोहा—कारउपहासहिजाइकै, अति आदर ह्वै ताह।
तब लज्जित ह्वै द्रौपदी, त्यागबपाण्डवचाह॥

नातरु गुप्त बीर कोउ जाई ❀ मारै भीमसेन को भाई॥
भीम मरै तौ पाण्डव मरई ❀ ससाह बीर जो कोउ यह करई॥
नाहिंत आनो ताहि बुलाई ❀ समय बूझि कै मारब भाई॥
यह तो बात सुनत सख्याता ❀ कर्ण कहै राजा सों बाता॥
जेतिक मन्त्र कहा तुम धीरा ❀ एकहु मन्त्र होब नहिं बीरा॥
सजग रहैं वे पांचौ भाई ❀ मारि न सकिहौ कोऊ पाई॥
सुनतहि धृतराष्ट्रक अस कहई ❀ कर्ण बातनीकी यह अहई॥
भीषम द्रोण बिदुर बुलवाई ❀ मन्त्र करो कछु आन उपाई॥
ऐसे सबै मन्त्र तब करहीं ❀ एकै एक बचन अनुसरहीं॥
भीष्म कहेउ यह मन्त्र हमारा ❀ जो मानो तुम बचन भुवारा॥

दोहा—जैसे धृतराष्ट्रक तुम, तैसे पाण्डु हमार।
गन्धारीअरुकुन्तियक, सो मैं कहौं बिचार॥

दुर्योधन जस अहै भुवारा ❀ तैस युधिष्ठिर धर्मकुमारा ॥
आपन पुत्र औ पाण्डु कुमारा ❀ यक समान ते जानु भुवारा ॥
जो राखौ मम बचन सनेहू ❀ बांटि राज्य दूनौ कहँ देहू ॥
उनके कर्म सबै नृप सांचे ❀ महा महा बिपदा सों बांचे ॥
केतिक जीवन है जगमाहा ❀ अयश जाइ लीजं नरनाहा ॥
येही मन्त्र द्रोण मन माना ❀ कपटरूप धृतराष्ट्रहि जाना ॥
दुर्योधन कपटी परमाना ❀ भीषम केर मन्त्र तब माना ॥
धृतराष्ट्रक भाषै परमाना ❀ आपु बिदुर तुम करहु पयाना ॥
आनौ जाइ कुन्ति कहँ साथा ❀ बन्धुनसहित धर्म नरनाथा ॥
पाँचो बन्धु साथ लै आवो ❀ हमरे बचन सो जाइ सुनावो ॥

दोहा—होकर हर्षित बिदुरतब, तुरतहि कीन पयान ।
जहाँ द्रुपद राजा अहै, पहुँचे ताही थान ॥

द्रुपदराज सों जाइ बखाना ❀ धृतराष्ट्रक पठवा मोहिं आनौ ॥
अर्धराज्य देवै निज सोई ❀ तबपाण्डव को अतिसुख होई ॥
सत्य बात तो बिदुर बखाना ❀ सो सुनि धर्मपुत्र सुख माना ॥
द्रौपद बहुत बड़ाई कीन्हा ❀ द्रुपदराज ने आज्ञा दीन्हा ॥
कुन्ती सहित द्रौपदी लीन्हा ❀ अहोभाग्य पाण्डव को चीन्हा ॥
पहुँचे जब निज देशहि जाई ❀ धृतराष्ट्रक तब कीन उपाई ॥
भीषम द्रोण कर्ण बलबीरा ❀ आगे पठये हर्ष शरीरा ॥
आगे होइ लेन हित आये ❀ नगरलोग सब देखन धाये ॥
कुन्ती अन्धहि कीन प्रणामा ❀ सब बान्धव पहुँचे निजधामा ॥

दोहा—मिले धर्मसुत बन्धु शत, बैठे सभा मँझार ।
प्रेम हर्ष भीषम तहाँ, कीन्ही प्रीति अपार ॥

तब धृतराष्ट्र कही असि बाता ❀ कुन्ती सहित सुनौ सबभ्राता ॥
आधा राज देब हम राजा ❀ इन्द्रप्रस्थ जहाँ लग साजा ॥
सो सुख भोग करौ तुम जाई ❀ धृतराष्ट्रक तब कहेउ बुझाई ॥
राजा कहँ कीन्हो परनामा ❀ परम हर्ष पायो सुखसामा ॥

कुन्ती सहित द्रौपदी साथा ❀ प्रेमहि हर्षि चले नरनाथा ॥
इन्द्रप्रस्थ महँ कीन्ह्यो थानो ❀ रजधानी आपनि करि जाना ॥
करि शुभ शकुन भये तब राजा ❀ आज्ञा भइ तब बाजहिं बाजा ॥
प्रेम हर्ष मन राजा भयऊ ❀ सर्व कलेश नाश दुख गयऊ ॥
कृष्णकृपा ते दुख भे नासा ❀ पाई राज्य भक्ति विश्वासा ॥

दोहा—याहि प्रकार तब धर्मसुत, राजा तहँवां आइ ।
वैशम्पायन महामुनि, तिनसों कहत बुझाइ ॥

केतिक दिवस राज्य तब कियऊ ❀ एक दिना नारदमुनि गयऊ ॥
राज अग्र तब कहै बखानी ❀ मन्त्र एक सुनु नृप विज्ञानी ॥
तुम्हरे हित हम मन्त्र बखाना ❀ सुनो करो हिरदय परमाना ॥
सुन्दर रूप रहे दुइभाई ❀ महावीर बल बिक्रम राई ॥
यक नारी तिन दुइते भाई ❀ ताही हेतु बिरोध उपाई ॥
यहि कारण तब दोउ जुझारा ❀ आपु आपु में भे संहारा ॥
यकपत्नी तुम पांचो भाई ❀ ता कारण हम कहत बुझाई ॥
जासु बिरोध होइ नहिं राऊ ❀ सो राजा तुम करो उपाऊ ॥
द्रौपदिका प्रतिपाल दुराऊ ❀ ताते होइ सबहि सुख भाऊ ॥
ऐसा कहि नारद परिमाणा ❀ दीन्हों सबै बांधि निर्माणा ॥

दोहा—नेमकरी मुनि दीन्हे, कहा राउ सन बात ।
जो कोइ यह लंघनकरै, लहै महाउतपात ॥

नेम उलंघन करै जो कोई ❀ बारह बर्ष बास बन होई ॥
यह कहिकै तब नारद जाई ❀ पांचो बन्धु रहे तब राई ॥
नेम समय द्रौपदि के पासा ❀ आप अन्तत में करै बिलासा ॥
यक दिन राव युधिष्ठिर ठाऊ ❀ द्रुपदसुता आई सति भाऊ ॥
तहाँ अस्त्र सब पारथ केरा ❀ उच्चस्वर यक ब्राह्मण टेरा ॥
पारथ पारथ करै पुकारा ❀ पारथ सब है काज तुम्हारा ॥
तस्कर एक मोर धन लीन्हो ❀ जातचला सो मैं कहि दीन्हो ॥
सुनि पारथ तब आतुर भयऊ ❀ अस्त्रकार्य तुरतहि तब गयऊ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

धर्मराज अंदेशा करई ❀ पारथ हेतु तो बिस्मय धरई ॥
कौन देश कहँ पारथ गयऊ ❀ यहि चिन्ता में राजा भयऊ ॥
पारथ देखा बन बन नाना ❀ नारद बचन हेतु परमाना ॥
पारथ तहाँ तो हर्षित जाही ❀ जहाँ मुनी कोऊ नहि आही ॥
पारथ कहँ तब मुनि जो देखा ❀ पूछत रूप सँन्यासी बेखा ॥
कौन हेतु बनको पगुधारा ❀ तब पारथ यह बचन उचारा ॥
पांच बन्धु औ द्रुपदी रानी ❀ नारद दीन नेमकरि आनी ॥
नेमालङ्घन करै प्रकासा ❀ बारह बर्ष जाइ बनबासा ॥
एक दिना तो धर्म भुवारा ❀ द्रुपदी हेतु सङ्ग सुवनारा ॥
आरत नाद बिप्र यक करई ❀ मोरा धन तस्कर सब हरई ॥
नारद बचन बिसरि तो गयऊ ❀ अस्त्र हेतु तब गृह में गयऊ ॥
राजा देखत लज्जा पाये ❀ आपु आपु तो लाज लजाये ॥
नारद बचन समझि मनमोहा ❀ तब हम तीरथ भमन चाहा ॥
यहि कारण तब मुनिहिं बुलाई ❀ पारथ तीरथ भर्मत जाई ॥
रैवा पर्वत देखा जाई ❀ तहँवाँ दर्श कृष्ण कर पाई ॥
कृष्ण पार्थ को लाये ताहाँ ❀ द्वारावती नाम के पाहाँ ॥

दोहा—पारथ कहँ लै राखेऊ, प्रेमरु हर्ष अपार ।
घरघर प्रतियदुबंशिहित, नितनित देतअहार ॥

यकदिन तबै सहोद्रा देखी ❀ बलदाऊ सन कहा बिशेखी ॥
भाषत बात सहोद्रा ताहा ❀ यह तो बीर तपी नाहं आहा ॥
काम स्वरूप तेज तनु तासू ❀ प्रेम सदा हिरदय परकासू ॥
कहत शेष ना जानहु ताहीं ❀ प्रेमै सदा रहै मनमाहीं ॥
एकबार जो कौतुक होई ❀ क्रीड़ा करहिं सखी सब कोई ॥
चितै सहोद्रा तहँ पारथहीं ❀ प्रेमै सदा रहै मनमहहीं ॥
लीन तबै पारथ पहिचाना ❀ आन भेद जानहिं भगवाना ॥

और न जानत यादव कोई ❁ पारथ हेतु सहोद्रा सोई ॥
एकै बार सहोद्रा ताहीं ❁ चलि अस्नान चढ़ी रथ माहीं ॥
जौन द्वार पारथ यदुराई ❁ तौने द्वार सहोद्रा जाई ॥
पारथ बीर बिलंब जनि लाऊ ❁ बेगि आपने धाम सिधाऊ ॥
पारथ धाइ चढ्यो रथ जाई ❁ चल्यो सहोद्रा लै तब राई ॥
कृष्ण आदि औरो यदु जेते ❁ सजे युद्ध को क्रोधित तेते ॥
पारथ रथ रोंका तब ताहीं ❁ मार्‍यो बाणन यदुदल माहीं ॥
तबै सहोद्रा कहत बिचारी ❁ मैं रथ हाँकौं तुम करु मारी ॥
तबहिं सहोद्रा रथहि चलाये ❁ पारथ बुंद बाण बरषाये ॥
बामे हाथ गहे धनु जाना ❁ गहे चाप औ धनु संधाना ॥
बायें हाथ चलावै बाना ❁ महाबीर नहि जात बखाना ॥

दोहा—यक समान शर द्वैकरे, देखा तब बलदेव ।
हल मूशल तब हाथलै, कोपि चले सुनु भेव ॥

नारायण सेना तब साजा ❁ यदुकुल मतो बाजने बाजा ॥
क्रोधवन्त बलदेव भे जबहीं ❁ आये कृष्ण बुझाये तबहीं ॥
तपी रूप पारथ है भाई ❁ मम आज्ञा कन्या लै जाई ॥
कहि बलदेव तो बात बुझाई ❁ म्वहि काहे नहिं बात जनाई ॥
अबै बोलावो पारथ भाई ❁ करि बिवाह तब सौंपहु साँई ॥
तब श्रीपति पारथहिं बोलाये ❁ कन्या लै पारथ तब आये ॥
वेद के मत से भयो बिवाहा ❁ हर्ष होइ बलदेव तो काहा ॥
बड़ा बीर पारथ हम जाना ❁ दोऊ हाथ चलावत बाना ॥
दोउ कर शायक एक समाना ❁ अति धनुधारी सब जग जाना ॥
यहि प्रकार पारथ को करनी ❁ बारह बर्ष अन्त भौ भरनी ॥

दोहा—बारह बर्ष बास बन, ऐसे गये सिराइ ।
पारथ लेइ सुभद्रा, अपने गृह तब आइ ॥

तौ पुनि निज देशहिं सो आये ❁ नारि सहोद्रा संगहि लाये ॥

कृष्ण समेत राज्य को आये ❀ प्रेम हर्ष आनँद तब पाये ॥
एक समय कृष्ण हैं साथा ❀ पारथ आदि सभा नरनाथा ॥
बिप्ररूप पावक सख्याता ❀ कही जो आइ सभा में बाता ॥
सुनियो बात हमार बिचारा ❀ मयसुतनाम जो तहाँ भुवारा ॥
बारह वर्ष यज्ञ तब कीन्हा ❀ ता कारण ब्याधा तनु दीन्हा ॥
द्वापर होइ कृष्ण अवतारा ❀ पारथ सन तुम्हार उद्धारा ॥
ता कारण हम आये याही ❀ हमरो नाथ निबेड़ा चाही ॥

दोहा—बाचा करौ तौ मांगहूँ, कहा बचन परमान ।
तब हरि पारथ भाषही, कीजै सत्य बखान ॥

कैसे होइ ब्याधि तनु नाशा ❀ सोई बचन करौ परकाशा ॥
पारथ कहि यह बात बखाना ❀ इन्द्र केर आहै बगवाना ॥
पशु पक्ष्यावतार बहु जाना ❀ ताहि देह ते ब्याधि नशाना ॥
वह बन दहै पाव जो साई ❀ तौ हमरी तनु ब्याधि नशाई ॥
मन्दानल हैं हम संसारा ❀ करौ हमार यहै उपकारा ॥
सुनियो कृष्ण धनञ्जय सोई ❀ करि परतिज्ञा भाषत दोई ॥
चलो जाइ सो बनहिं जरैये ❀ जाते आपु परम सुख पैये ॥
गहिकै अस्त्र चले पुनि ताहीं ❀ नर नारायण दूनों आहीं ॥
सो बन देखा नयनन जाई ❀ मारे बाण बुन्द सम आई ॥
शर पंजर बन ऊपर भयऊ ❀ बन भीतर पावक निर्मयऊ ॥

दोहा—पावक बनमाहीं लगी, सुरपति क्रोध अपार ।
प्रलयकाल के मेघ सब, आयउ बैर सँभार ॥

बर्षसि नीर सबै बन ताहाँ ❀ पावक जरै खाण्डबन जाहाँ ॥
अन्धकार मेघन घन साजा ❀ अतिही क्रोधवन्त सुर राजा ॥
यको बुन्द जल भेदत नाहीं ❀ भै निशङ्क पावक बन खाहीं ॥
पशु पक्षी अरु तरुवर जेते ❀ पावक सकल जराये तेते ॥
जीव जन्तु सब करैं पुकारा ❀ दानव दैत्य भयो सब छारा ॥

मयदानव भो यक सुनु राई ❀ सो पारथ पहँ बिनती लाई ॥
आपनि शरण राखु नृप मोहीं ❀ कबहुँक करब काज हम तोहीं ॥
पारथ सुनेउँ हर्ष मनभारी ❀ देहु छाँड़ि भाषत बनवारी ॥
पावक पाहिं धनंजय भाखा ❀ सो दानव जारतही राखा ॥
पारथ की अस्तुति बहु ठाना ❀ भाष्यो तुम दीन्हे़ जिव दाना ॥

दोहा-पारथ हर्षित प्रेममन, पुलकित सबै शरीर ।
खण्डतबन दाहन करे, पावक प्रकट गँभीर ॥

धूर्मि नाम यक नागिनि रहई ❀ सोई सदा खण्ड बन अहई ॥
पावक जरै भागि सो जाई ❀ तेज पुञ्ज आकाश उड़ाई ॥
पारथ देखि बाण परिहारा ❀ पंख काटि पावक महँ डारा ॥
सो जरि भस्म भई पलमाहीं ❀ पावक सबै खण्ड बन दाही ॥
भे प्रसन्न पावक परमाना ❀ दीन्हेउ श्वेतबाहिनी नाना ॥
महादेव आराधेउ जबहीं ❀ बाहन श्वेत दिव्यरथ तबहीं ॥
सबै देवता हर्षित होई ❀ यक यक बर दीन्हेउ सब कोई ॥
यह कहिकै बैसन्दर जाई ❀ गृह आये पारथ यदुराई ॥
कछुदिन तहाँ रहे भगवाना ❀ पुनि द्वारावति कीन्ह पयाना ॥
गये द्वारका श्रीयदुबीरा ❀ पाण्डु रहे सब हर्ष शरीरा ॥

दोहा-यहि प्रकार जनमेजय, तोर बंश गुणमान ।
प्रेमकथा अद्भुत सुनहु, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेआदिपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥

देव पुहुप तो नारद आना ❀ लै दीन्हो तब श्रीभगवाना ॥
कृष्ण तो दीन रुक्मिणी पाहीं ❀ सतिभामा क्रोधित भइ ताहीं ॥
पारिजात एहो भगवाना ❀ सतिभामा लाये भगवाना ॥
तब रुक्मिणि बहुतै दुखदाई ❀ यहिते सरस फूल मनलाई ॥
सुनि श्रीपति गे पारथ पासा ❀ जाय बचन कीन्हे परकासा ॥

कदली बनहि तुरतही जैये ❀ सुगँधराज पुष्पन लै ऐये ॥
पारथ गये धनुष शर लयऊ ❀ कदलीबनमें प्रविशत भयऊ ॥
तोरत फूल तहाँ रखवारे ❀ हनूमान सो जाय पुकारे ॥
सो सुनि हनुमत क्रोधित भयऊ ❀ पारथ पाहिं कहन अस लयऊ ॥
यही पुहुप पूजत रघुराई ❀ चोरी करत चोर अन्याई ॥

दोहा—पारथ कह तब राम को, करत बड़ाई कीश ।
जानेउ सब पुरुपारथहम, जौन राम अवधीश ॥

मोहिं समान कौन धनुधारी ❀ क्रोधी पारथ कह्यो बिचारी ॥
शार्ङ्ग हाथ गहेउ रघुनाथा ❀ ढोये कस पर्वत कपिनाथा ॥
कह्यौ न प्रभुता सुनु हनुमाना ❀ बाँधौं सिन्धु पलक महँ जाना ॥
झूठ बचन कस कहत अयाना ❀ बाँधौ सिन्धु न हतिहौं प्राना ॥
सुनु रे कीश महा अज्ञाना ❀ क्रोध कियो पारथ बलवाना ॥
पारथ हनू सिन्धुतट आये ❀ बाण बुन्द पारथ झरि लाये ॥
सौ योजन शरबाँधि सँवारा ❀ हनूमान बिस्मय अतिभारा ॥
देखि कहैं हनुमत यह बाता ❀ सेतुपार हम जाब सख्याता ॥
यद्यपि बाँध रहै दृढ़ होई ❀ मानहुँ सत्य धनुर्द्धर सोई ॥

दोहा—पारथ कही बात यह, भरे गर्ब अहँकार ।
केतिक बार तुम्हारही, करौं पार संसार ॥

तब हनुमान क्रोध अति छायो ❀ उत्तर दिशा क्रोध करि धायो ॥
योजन सहस बदन बिस्तारा ❀ औ लीन्हेउ पुनि बहुत पहारा ॥
देखि रूप बिस्मय संसारा ❀ रोम रोम प्रति बँधे पहारा ॥
आये तुरत पयोनिधि तीरा ❀ आपुहि आपु लड़त दोउ बीरा ॥
पारथ देखत भूनेउ ज्ञाना ❀ सुमिरेउ तबहिं चरण भगवाना ॥
अपने मनमें श्रीपति जाना ❀ भयो बिवाद पार्थ हनुमाना ॥
हनू भार को जगमें सहै ❀ तीनिलोक को उलटन चहै ॥
यहै बिचार करैं यदुबीरा ❀ कमठरूप तब धरेउ शरीरा ॥

शरको बाँधि पार्थ पुल कीन्हा ❋ तेहिमधि जाइ पीठि हरि दीन्हा ॥
हनू भार पीठो पर धारा ❋ रक्त बहायो बदनसो फारा ॥

दोहा—रक्त बर्ण तब देख्यो, करि बिचार हनुमान ।
मोर भार संभार को, को है जग में आन ॥

धरेउ ध्यान श्रीकृष्ण को पाये ❋ कूदि हनू तट ऊपर आये ॥
निज रुधिरै देखेउ बनवारी ❋ पारथ हनु तौ अस्तुति सारी ॥
श्रीपति कह दोउ एक समाना ❋ पारथ बीर और हनुमाना ॥
याहि प्रकार प्रीति परमाना ❋ श्रीपति तब भे अन्तर्द्धाना ॥
पारथ सखा भये हनुमाना ❋ यहि प्रकार ते ऋषिहि बखाना ॥
पाछे उडुप पार्थ लै गयऊ ❋ श्रीपति ताहि रुक्मिणी दयऊ ॥
द्वारावती रहत बनवारी ❋ पारथ धन्य कहत गिरिधारी ॥
यहै रहस्य कथा सुनु राऊ ❋ तोरे बंश चरित्र उपाऊ ॥
इन्द्रप्रस्थ तब पाण्डव रहहीं ❋ कौरवदल हस्तिनपुर बसहीं ॥
प्रेम अनन्दित सकल रजाई ❋ बैशम्पायन कथा सुनाई ॥

दोहा—पाण्डव विजय कथा यह, सुनत पापकोनाश ।
बड़ बिस्तार न कीन्हेऊँ, करेउँसंक्षेपप्रकाश ॥

कहैं बात तब श्रीयदुराई ❋ पारथ धन्य धन्य भक्ताई ॥
तोहिं समान भक्त नहि कोई ❋ भयो जगत में है नहिं होई ॥
पारथ कहै सुनौ जगतारण ❋ मिथ्या कहौ आपु केहिकारण ॥
मोहिं समान जगत बहुतेरे ❋ तीनिलोक में अहैं घनेरे ॥
मैं पातकी कौन मंझारा ❋ नाथ जो तुमहि सहाय हमारा ॥
कहैं कृष्ण ऐसो नहिं कहहू ❋ तुम समानतुमही जग अहहू ॥
और अहै तो आनि देखावहु ❋ झूठि बात केहि हेत सुनावहु ॥
पारथ कहै जो आज्ञा पाऊ ❋ नाथ आनिअगणितदिखराऊ ॥
तब श्रीपति यह आज्ञा दीन्हा ❋ पारथ गमन ततक्षण कीन्हा ॥
खोजेउ पारथ सब संसारा ❋ माया हरि जानै को पारा ॥

दोहा—कोइ न पायो आपुसम, मनमें करै बिचार।
सबजगकर्ता हरि अहै, माया जेहि संसार॥

तब पारथ मन कीन्ह बिचारा ❀ हीन वस्तु देखा संसारा॥
बिष्टा देखा पारथ तहँवाँ ❀ बाँधि बस्त्र लै आये जहँवाँ॥
श्रीहरि अग्र कहैं तब बाता ❀ खोजा सबहि जगत सख्याता॥
मोहिं समान जगत नहिं कोई ❀ पायो नहीं कहा प्रभु सोई॥
सर्ब जगत के अन्तर्यामी ❀ गुढ अगूढ़ लखो तुम स्वामी॥
एक अहहि तौ हमहिं समाना ❀ सुनौ देवपति तुम भगवाना॥
आपे अग्र दिखाइ न जाई ❀ हृदय प्रेम जानेउ यदुराई॥
महा प्रफुल्लित श्रीभगवाना ❀ धन्य धन्य पारथ बलवाना॥
डारि देउ मैं तौं सब जाना ❀ मोरे अर्द्ध अङ्ग तुम प्राना॥
मोर तोर है एक शरीरा ❀ काहे दोन होत है बीरा॥

दोहा—मनुजरूप तुम पार्थहौ, भापैं श्रीभगवान।
नारायण जानो हमहिं, सुनियो बचन प्रमान॥

बिष्णु नाम मेरो परमाना ❀ नाम बिभत्सु तोर जगजाना॥
नाम बिभत्सु जबै हरि दयऊ ❀ सुनत पार्थ तब हर्षित भयऊ॥
तब बिष्ठा को दीन्हों डारी ❀ करि अस्नान परे पगु भारी॥
परे कृष्ण के चरणन जाई ❀ प्रेमहि हर्ष भये यदुराई॥
कछु दिन रहे पार्थ पुनि ताहीं ❀ बिदा होय आये घर माहीं॥
अपने गृह तब पारथ गयऊ ❀ प्रेमै हर्ष जगतपति भयऊ॥
पाराव्व जे भारतहि बखाना ❀ जनमेजय सुनकर सुखमाना॥

दोहा—भारतकथा पुनीतअति, जाते पाप बिनास॥
श्रवण पानके करतही, यमपुर छूटे त्रास॥

जो फल व्रत एकादशि कीन्हे ❀ जो फल होम [illegible] के कीन्हे॥
जो फल कोटिक कन्या दीन्हे ❀ जो फल सब तीरथ के कीन्हे॥
जो फल होय शास्त्र के [illegible] ❀ जो फल होम [illegible] के [illegible]॥

जो फल यज्ञ धर्म करवावै ❀ सो फल या भारत सुनि पावै ॥
भारथ कथा सुनै अरु गावै ❀ ताके पाप निकट नहिं आवै ॥
जो फल रणमें प्राण गँवाये ❀ सो फल श्रीभारत सुनि पाये ॥
भारत कथा पुराय परवेशा ❀ सावधान होइ सुनो नरेशा ॥
पैठे धर्म पाप क्षय जाई ❀ आयुर्बल होवे अधिकाई ॥

दोहा–क्षत्री सुनत सुमार्ग लहि, मानुष ज्ञान प्रकास ।
सबलसिंह चौहान कह, होइ परमपद बास ॥

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि सबलसिंह चौहान
भाषाकृते षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

इति आदिपर्वसमाप्तम् ॥

भा... ...स्तकालय
गायघाट
बनारस सिटी

महाभारत

सभापर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामितुलसीदास-कृत
रामायणकी रीति पर दोहा-चौपाई में
सरलता से वर्णित है।

जिसमें

शिशुपालवध-पूर्वक श्रीमहाराज युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ, मय-रचित सभा में भीमसेन करके दुर्योधन की अप्रतिष्ठा, दुर्योधन-रचित मययज्ञ में युधिष्ठिरादि पराजय, द्रौपदी-चीरहरण, युधिष्ठिरादि को गन्धारीदत्त वरदान, पुनः द्वितीय यूपयज्ञ में युधिष्ठिरादि का पराजय तथा बन-बास-गमन आदि की कथा सविस्तार वर्णित है।

काशी

बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा—
भार्गव भूषण प्रेस काशी में मुद्रित।

* श्रीः *

अथ महाभारत भाषा

सभापर्व

दोहा—सुमिरि व्यासगणपतिचरण, गिरिजाहरभगवान।
सभापर्व भाषा भनत, सबल सिंह चौहान॥
सत्रह सो सत्ताइसे, संवत शुभ मधुमास।
नवमी अरु गुरु पक्ष सित, भै यह कथा प्रकास॥

अब नृप सुनहु कथा भै जोई * तव हित हेतु कहत मैं सोई॥
कुरु पाण्डव सोहैं द्वौ आछे * जस समाज बरणयों मैं पाछे॥
इन्द्रप्रस्थ द्वौ बसैं सुखारी * मतिदृग अन्धराज्य अधिकारी॥
धन महि सेन सौंपि सब दीन्हा * बुद्धिचक्षु निजसुत नृप कीन्हा॥
कानि राज्यपद की अतिभारी * भीष्म द्रोण भे आज्ञाकारी॥
सोहत दुर्योधन नृप गादी * भूमि पाण्डुनन्दन कै सादी॥
इन्द्रप्रस्थ महँ पूरब ओरा * कुरुसमाज सोहत घनघोरा॥
बसत तहाँ सब भूप समाजा * भीषम बाहुलीक महराजा॥
बिदुरकृपागुणनिधि सुखधामा * रविनन्दन अरु अश्वत्थामा॥

दोहा—भरद्वाजसुत आदि भट, दुर्योधन रुख देखि।
करतकाजकुरुनाथसँग निशिदिनरहतबिशेखि॥

चित्ररम्य सोहहि बहुभाँती * त्रिदशपुरी देखत सकुचाती॥
तेहि थल ते गत पश्चिम आसा * योजन नव कुन्तीसुत बासा॥
तहाँ युधिष्ठिर राजहिं राजा * बिपुलसम्पदा सहित समाजा॥

मतिद्दग दीन्हि नगर पचीशा ❀ धर्मनन्द लीन्हे धरि शीशा ॥
दुर्योधनहिं राज्य सब दीन्हा ❀ धर्मराज कछु मर्ष न कीन्हा ॥
भूमि अनेक नरेशन केरी ❀ जीति धर्मसुत लीन्ह घनेरी ॥
अर्जुन भीमसेन बलदाई ❀ जीति लिये जहँ तहँ भुत्रराई ॥
ते सब दण्ड देहिं नृप धर्महिं ❀ नहिं डरपहिं कुरुराज कुकर्महि ॥

सो०—आवहिं बिपुल नरेश, जीते प्रथमहिं पाण्डु जे ।
करहिं बिनय उपदेश, देहिं दण्ड मतिद्दग सुतहिं ॥

देन दण्ड कुरुपतिगृह आवहिं ❀ करि बिनती अनेक समुझावहिं ॥
पाण्डुसुतनकी अति भय मानी ❀ दण्ड पठाइ देइँ रजधानी ॥
दुर्योधनभय मिलन न जावहिं ❀ गुप्तरूप धन दण्ड पठावहिं ॥
इन्द्र समान राज्य नृप करई ❀ चलै सुमार्ग सत्य नहिं टरई ॥
नीति निपुणता जगमहिं छाई ❀ प्रजालोग सुख लहहिं अघाई ॥
सम्पति गृह कुबेर ते भारी ❀ राज बन्धु सब आज्ञाकारी ॥
मयकी सभा बनाई जोहै ❀ रचना अद्भुत लखि मन मोहै ॥
महल अनेक बने शीशाके ❀ लखि मन मोहै सुरईशा के ॥
जलअगाध थल नहिं लखिपरई ❀ जहँ थल द्दग जल मनहुँ घुमरई ॥
लखि विचित्र थलचितभ्रमिजाई ❀ फिरसँभरत नहिं कोटि उपाई ॥

दोहा—भीमसेन अर्जुन नकुल, लघुभ्राता सहदेव ।
महावीर बहुभुजबली, करहिं नृपति की सेव ॥

नृप पदवी शिर कौरव करी ❀ तिनते अधिक धर्मनृप करी ॥
यकदिन धर्मराजमन भ्राजा ❀ राजसूय करि होई काजा ॥
निजमन्त्री अरु बन्धु बोलाये ❀ करि मत ठीक ब्यासपहँ आये ॥
भाइन सहित चरण शिर नावा ❀ कुशल पूछि ऋषिकराठ लगावा ॥
ऋषिरुखपाइ धर्म महिपाला ❀ कहेउ मनोरथ सकल भुवाला ॥
जाइ पार तौ करौं उपाई ❀ नतु चुप साधिरहौं ऋषिराई ॥
कह ऋषि कुशल मनोरथ तोरा ❀ करहिं भूप बसुदेवकिशोरा ॥
सुनत नरेश बिदा पुनि माँगी ❀ ऋषिपदपरसि चले अनुरागी ॥
निज मन्दिर नृप आतुर आये ❀ देश देश कहँ पत्र पठाये ॥

लिखि अनेकविधि विनय बड़ाई ❀ दीन्ह पत्र हरि नगर पठाई ॥

दोहा—प्रियपरिजनपरिवारअरु, हलधरसहित कृपाल ।
सबइ आइ करुणायतन, कीजै मोहिं दयाल ॥

बासुदेव द्वारका बिराजत ❀ बलयुत यदुबंशी सब राजत ॥
यकदिन माधव के मन आई ❀ नहिं कछु गजपुरकै सुधि पाई ॥
ऊधो हलधर सभा घनेरी ❀ चरचा करत पाण्डवन केरी ॥
बहुबिधि करत बिचार खरारी ❀ तेहि अवसर आये चर चारी ॥
बेतपाणि तब खबरि जनाये ❀ सुनि यदुनन्दन तुरत बुलाये ॥
जाय सबन नायो तहँ माथा ❀ उठिकै पत्र लीन यदुनाथा ॥
बाँचि सभा महँ सबन सुनाई ❀ दूतन दीन्हेउ बास दिवाई ॥
तेहि अवसर ऋषि नारद आये ❀ हरिगुण गावत बीन बजाये ॥

दोहा—ऋषिहिदेखिकरुणायतन, कीन्हेउ दण्डप्रणाम ।
सहितसभाउठिमुनिचरण, धरयोशीशनिजराम ॥

दीन सुआसन अति अनुरागा ❀ प्रभु करजोरि रजायसु माँगा ॥
हम सनाथ आगमन तुम्हारे ❀ निजजन जानि नाथ पगुधारे ॥
अब कृपालु करि मोपर दाया ❀ आगम हेतु कहौ ऋषिराया ॥
तब बोले ऋषि सहित सनेहू ❀ तुमहिं न उचित बचन प्रभुयेहू ॥
तुव दरशन त्रिभुवन महराजा ❀ यहिते अधिक कवन बड़काजा ॥
यह हरि केवल हेतु हमारा ❀ शक्र कहेउ कछु चलती बारा ॥
भयउ कृपालु भूप शिशुपाला ❀ देत सुरन दुख कठिन कराला ॥
अतिबल देवाङ्गना बिलासी ❀ करत दशाननादि कै हाँसी ।
सबन कहत मैं आप बिधाता ❀ संहरता करता अरु त्राता ॥
तेहिकी नाथ पन्थ कर बासी ❀ करहु कृपालु सहज सुखरासी ॥
श्रुतिमारग यहि निपट उलंघा ❀ पठइय शीश सुदर्शन संघा ॥

दोहा—सुनेश्रवणऋषिमुखबचन, कृपासिन्धुभगवान ।
भृकुटिभङ्गकीन्हेउमनहुँ, उदयकेतु अस्थान ॥

रिसबस युगल बिलोचन लाला ❀ कहेउ न ऋषि बचिहैं शिशुपाला ॥

काटौं शीश चक्र गहि हाथा ❀ करौं माथ सुरनाथ सनाथा ॥
सुनिअस दै अशीश ऋषि नारद ❀ ब्रह्मसभा गे ज्ञान बिशारद ॥
कह हरि उद्धव हलधर तेरे ❀ तात परम असमंजस मेरे ॥
ध नरेमश निमन्त्रण दीन्हा ❀ ऋषि नारद यह आयसु कीन्हा ॥
युगल कर्म करतब्य हमारे ❀ कल न बिना शिशुपालहि मारे ॥
अतिबल धर्मराज के भाई ❀ जीते जिन नरेशसमुदाई ॥
हम बिन यज्ञ युधिष्ठिर करिहैं ❀ गये बिना शिशुपाल उबरिहैं ॥
कहहु युगल तुम मन्त्र बिचारी ❀ पितुसम हो हमरे हितकारी ॥
जो कछु करत मोर अपराधा ❀ सो नहिं सकत नेकु करि बाधा ॥
दाहत लोकपाल शिशुपाला ❀ सो यह होत हृदय मम शाला ॥

दोहा—सुनत शत्रु बध सुरति करि, नैन तरेरे राम ।
फरकत अधर सरोष अति, बोले बाणी बाम ॥

राखहिं भूलि रिपुहि जे जीती ❀ उदय न होत कहत अस नीती ॥
यहि प्रकार रिपुमूल उखारी ❀ उदित यथातम नाशि तमारी ॥
कीन्हे बिना शत्रु पद नाशा ❀ करिय प्रतिष्ठा की जनि आशा ॥
जल बिन रजहि पङ्क करि दीन्हे ❀ थिर नहिं रहत यतन बहुकीन्हे ॥
तब लग सुखन बिदित तनधरको ❀ जीवन जबलग एको अरिको ॥
जिमिरबिशशिहि राहु दुख देता ❀ सब सुर तव सहाय क्रतुकेता ॥
अहिजिमि सत्य शत्रुहरि सोई ❀ देखि ठाढि रोमावलि होई ॥
हम न डरत सपनेहु रणकालहि ❀ भा रोमांच सुनत शिशुपालहि ॥
ताते अब न नागपुर जाहू ❀ रिपु जगजीवत कल नहिं काहू ॥
महिषमती पुर लीजै घेरी ❀ सजहु बाजिगज सैन्य घनेरी ॥
गत दिन यदुकुल के तलवारी ❀ लहा न दामिनिकै छबि भारी ॥
अब उडुगण तरबारि तरंगा ❀ लहैसुछबि रबिकिरणि न संगा ॥
चलि शिशुपालप्राण हत कीजै ❀ करौं धर्म मख आयसु दीजै ॥
अस कहि करल लगे मद पाना ❀ उगिलत बमत बचनकरि नाना ॥
सुनि उद्धव ते सैन बुझाई ❀ तुम कछु कहहु कहेउ यदुराई ॥

दोहा—सत्य सत्य यह बात, भाषे मूशलपाणि जो ।
सुनत मन्त्र मम तात, उद्धव यदुनन्दनकहेउ ॥

सहज जीति शिशुपाल न जैहै ❀ भूपसमूह सहायक ऐहै ॥
रोगसमूह राजयक्ष्मा जिमि ❀ नृपसमूह शिशुपाल प्रबलतिमि ॥
समयपरे प्रभु मारिय ताही ❀ सहसा कर्म उचित अस नाही ॥
अपर न हितदायक जग तोसे ❀ करत धर्म मख नाथ भरोसे ॥
तुम विहीन करिहैं मख नासा ❀ होइहै धर्म नरेश उदासा ॥
अइहैं विपुल भूप मखमाहीं ❀ बाँधि बाँधि तब मरिये ताहीं ॥
कारज युगल बनत अस कीन्हे ❀ प्रथम ताहि तुमहीं बर दीन्हे ॥
सहि शत अधिक एक अपराधा ❀ करिहौ तव प्राणनके बाधा ॥
इन्द्रप्रस्थ अइहैं सब राजा ❀ खुलि जइहैं रिपुमित्रसमाजा ॥
उठे सुनत हरि उद्धव बानी ❀ भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी ॥
हने निशान साजि बहु सेना ❀ उठी धूरि जनु अर्क रहेना ॥

दोहा—हलधर ऊधो सात्यकी, अपर लोग सब साथ ।
निज नरेश के द्वार पर, जात भये यदुनाथ ॥

उग्रसेन ते माँगि रजाई ❀ इन्द्रप्रस्थ कहँ चले गोसाँई ॥
हरिपुर ते दल चले समूहा ❀ चतुराननमुख जिमि श्रुतिजूहा ॥
आवत सुन्यउ धर्म महराजा ❀ मिलनचले सँग सुभट समाजा ॥
आवत देखि कृष्ण रथ त्यागा ❀ हलधर सहित उमाँगि अनुरागा ॥
मिलत न प्रीति हृदय कहिजाती ❀ पुनि पुनि भेंटि जुड़ावत छाती ॥
रविनन्दिनि तट दल समुदाई ❀ दीन नृपति बिश्राम कराई ॥
हरि बलदेव लोग कछु साथा ❀ चले अवास धर्म नरनाथा ॥
सकल बन्धु तेहि अवसर आये ❀ हरिहि बिलोकि नयनजलछाये ॥

दोहा—मिले बृकोदर विजय नर, युगल बन्धु हरषाय ।
पछी कुशल कृपाल तब, कहौ युधिष्ठिरराय ॥

कुशल देखि तव चरण मुरारे ❀ जो तुम दीन जानि पगुधारे ॥
हलधर कीन्ह कृपा सब भाँती ❀ अरु सात्यकि ऊधो संघाती ॥

आये प्रभु मोहिं कीन्ह सनाथा ❀ प्रणतारति भञ्जन यदुनाथा ॥
सभा मध्य हरि हलधर गये ❀ शुभ सिंहासन बैठत भये ॥
धर्म महीप कहत मृदुबाणी ❀ गे अन्तःपुर शारँगपाणी ॥
मिलिरानिनकहँ सहित हुलासा ❀ बहुरि गये कुन्ती के पासा ॥
बन्दत चरण देखि अनुरागी ❀ पुनिपुनि कण्ठ लगावनलागी ॥
द्रुपदसुता पूछत कुशलाता ❀ परमानन्द प्रफुल्लित गाता ॥
कछुक मधुर पकवान मिठाई ❀ द्वारे हलधर दीन पठाई ॥
राम सहित नृप भोजन कीन्हा ❀ उद्धव सहित सात्यकी दीन्हा ॥
राम बहुरि अन्तःपुर आये ❀ उद्धव सात्यकि संग लगाये ॥
कुन्ती रामहिं आवत जाना ❀ आगे चलि कीन्हेउ सनमाना ॥
चरणन परे मातु उर लाये ❀ भूप सहित पुनि द्वारसिधाये ॥

दोहा–तहाँ द्रौपदी हर्षयुत, करतबिबिधिसनमान।
भोजनकरवायोहारहिं, बहुरि खवायो पान ॥

यदुपति कछुक घरी तहँ रहिकै ❀ चलत भये रानिन ते कहिकै ॥
आये धर्म महीपति पासा ❀ बिछी प्रयंक सेज शुभवासा ॥
तहां पौढ़ि प्रभु सोवन लागे ❀ रहा यामदिन यदुपति जागे ॥
जुरी सभा बहु गायन आये ❀ सकल कलामहँ कुशल सोहाये ॥
जागि धर्मसुत राम जगाये ❀ परम सुखद आसन बैठाये ॥
आसव पान राम तब कीन्हा ❀ होय नृत्य अस आयसु दीन्हा ॥
राम बचन सुनि गायन गाये ❀ बहु प्रकार करि नृत्य रिझाये ॥
एहिबिधि दिनप्रति सहित सनेहा ❀ कछु दिन कृष्णरहे नृपगेहा ॥
अद्भुत यज्ञ दिवस नियराना ❀ आवत तहाँ महीपति नाना ॥
जरासन्ध सुत प्रबल भुवारा ❀ आइ तहाँ दल कीन्ह जोहारा ॥
भेंट देइ क्रतु शिबिर भुवाला ❀ तेहि अवसर आये शिशुपाला ॥
धर्मराज तब नकुल बोलाये ❀ मनभावत शुभ बास देवाये ॥
देश देश के भूपति आये ❀ धर्मराज पद शीश नवाये ॥
भेंट अनेक भूप बतलावहिं ❀ करहिं प्रणाम बास शुभपावहिं ॥
परहिं ते चरण कृष्ण के आई ❀ पुनिपुनि धर्मसुतहि शिरनाई ॥

बीर बृकोदर आदिक मिलिकै ❀ बैठहिं भूपसभइ सबहिलिकै ॥
भई भीर पाण्डव दरबारा ❀ कोउ न पावत और दुवारा ॥
तब बोले हँसि शारँगधारी ❀ कुरुपति कहँ अब लेहु हँकारी ॥

दोहा—चरबर बोलेनरेशतब, दिन्ह्यो तिनहिं रजाइ ।
लै आवहु कुरुनाथ कहँ, करहिं सभा मम आइ ॥

बहुरि बोलाय एक चर लीन्हा ❀ गङ्गासुतहिं निमन्त्रण दीन्हा ॥
बाहुलीक गृह एक पठावा ❀ करिबहु भाँति विनयसमुझावा ॥
द्रोण कृपा गृह पत्र पठाई ❀ लिखिअनेकबिधिबिनय बड़ाई ॥
बिपुल दूत नर नाह बोलाई ❀ दै पुङ्गीफल नृप समुझाई ॥
जे सब बिपुल नागपुरबासी ❀ सचिव महाजन जे गुणरासी ॥
पृथक पृथक कहि नाम नरेशा ❀ पठये चर बहु करि उपदेशा ॥
सुनत निदेश प्रजाजन आये ❀ नमन्त्रित अरु बिनहि बोलाये ॥
आवहिं चले प्रजा बहुतेरे ❀ ग्राम ग्राम प्रति यूथ घनेरे ॥
उचित अवास दीन सब काहू ❀ मखदरशनहित अतिउत्साहू ॥
चरबर उहाँ नागपुर गये ❀ सबकहँ देत निमन्त्रण भये ॥
गयो दूत कुरुपति दरबारा ❀ दीन पत्र बहुबार जोहारा ॥
तब कुरुपति शकुनी हँकराये ❀ बाँचि पत्र सब भेद सुनाये ॥
पूछि मन्त्र आज्ञा नृप कीन्हो ❀ सजिनिजसैन दुन्दुभी दीन्ही ॥
भीषम द्रोण कर्ण सजि आये ❀ कृपाचार्य सब साज बनाये ॥
सजि दल चलत भयो कुरुराई ❀ बाजत पटह भेरि सहनाई ॥
कज आरूढ कुरुपति छबि पाई ❀ चहुँदिशि तुरँग रहे ठहनाई ॥
चरचर कहेउ कि कुरुपति आये ❀ धर्मनरेश सुनत सुख पाये ॥
बन्धु बोलाइ सकल तिन लीन्हे ❀ मिलहु जाय नृप आयसु दीन्हे ॥
बन्धु सकल अरु सुभट समाजू ❀ चले भीम भेंटन कुरुराजू ॥
तब उठि साथ चले यदुनन्दन ❀ जेहि मग आवत कौरव नन्दन ॥
प्रथमहिं मिले पितामह आगे ❀ हरिहि देखि रथ तजि अनुरागे ॥
कृपाचार्य अरु द्रोण कुमारा ❀ बाहुलीक विकरण सरदारा ॥

दोहा—अतिआदरमिलिसबनकहँ, भीमसहितयदुराय।
कियो नकुल सहदेव सँग, बास करावहु जाय॥

नाना भाँति करहु सेवकाई ❀ असकहि अग्र चले यदुराई॥
मिलहिं बरूथ सुभट मगमाहीं ❀ करत जोहार चले सब जाहीं॥
बिदुर दीख यदुनन्दन आये ❀ द्रोणसमेत त्यागि रथ धाये॥
पुनि पुनि कृपासिन्धु भगवाना ❀ मिले बहुत बिधिकरि सन्माना॥
तब पारथहि कहेउ यदुराई ❀ सुथल शिबिर करवावहु जाई॥
बिदुर समेत रम्य अस्थाना ❀ पारथ गुरुसंग कीन पयाना॥
भीम समेत चले यदुराई ❀ आगे आवत लखि कुरुराई॥
विविध भाँतिबाजत बहु बाजा ❀ हय हींसत गर्जत गजराजा॥
कुरुपति भीमहि आवत देखा ❀ सहित रमापति सुन्दर भेखा॥
शकुनी करण सहित अनुरागे ❀ तब कौरवपति कुञ्जर त्यागे॥
तब कुरुपतिहि मिले यदुराई ❀ विविधभाँति पूछी कुशलाई॥
आये भीमसेन अनुरागे ❀ कीन जोहार भेंट धरि आगे॥
अतिहित मिलत भये कुरुराई ❀ चले समेत समाज लेवाई॥
जहँ यमुनातट निपट सुपासा ❀ दीन तहाँ कुरुनायक बासा॥
पटल वितान गड़े बहुतेरे ❀ डेरा परे कुरुपतिहिकेरे॥
यदुपति बहुरि सभामहँ आये ❀ समाचार सब नृपहिं सुनाये॥
सुनिनरेश तब अति सुख लहेऊ ❀ तुरत बोलि मन्त्रिन सबकहेऊ॥
मख समाज सब साजहु जाई ❀ हयगजरथदल द्रव्य बनाई॥
धर्मराज कर आयसु पाये ❀ निजनिजकारजसकल सिधाये॥

दोहा—इहाँ करण शकनी सहित, नृप लखिप्रातःकाल।
शिबिरशिबिरमिलिभूपतिन, गयेजहाँशिशुपाल॥

ते कुरुनाथहि आवत जाना ❀ आगे मिले त्यागि अभिमाना॥
तहँ कुरुनाथ रहे कुछ काला ❀ भये बिदा कहि सकल हवाला॥
देखत धर्म प्रताप महाना ❀ जात चले मनकृत अनुमाना॥
राजत तहाँ पाण्डुकुलदीपा ❀ उतरे चहुँदिशि बिपुलमहीपा॥

लै लै भेंट घरन ते आये ❀ कुञ्जरपुर नरेश बहु छाये ॥
बहुत भेंट पाण्डव के आवत ❀ हम राजा बिन हेतु कहावत ॥
कुरुपति यह देखत निजनैनन ❀ शोचत मनमहँ कहिकहि बैनन ॥
एक नगरमहँ दुइ अधिकारी ❀ भयो बड़ा यह अनरथ भारी ॥
अबलग जगतबिदित लघुभाई ❀ ते अब भये तुल्य बलदाई ॥
जगती बहु पदवो थल थोरे ❀ ते अब भये बरोबरि मोरे ॥
गजपुर चलिहि न एक दोहाई ❀ करिहैं आज्ञा भंग प्रजाई ॥
होत अवज्ञा जे नृप केरे ❀ मरण नीक तेहि जीवन तेरे ॥

दोहा—हमकहँ दण्ड न देहि ते, दाहिं धर्मजहि जाइ ।
छलबलकरि बश कीजिये, असकछु होइ उपाइ ॥

यहि बिधि गे कुरुनाथ बिताना ❀ नित्यनिमित्त करत अस्नाना ॥
इहाँ धर्मसुत सँग सबभाई ❀ हलधर उद्धव अरु यदुराई ॥
सुभट सकल दिशि शोभा पाये ❀ प्रथमहिं बाहुलीकगृह आये ॥
करि नरनाह बिनय करजोरी ❀ गये पितामह भवन बहोरी ॥
दूरिहि ते अभिवादन कीन्हा ❀ उठि गांगेय लाय उर लीन्हा ॥
मिलि हलधरहि प्रेमयुतहीते ❀ कुशल प्रश्न पूछी सबहीते ॥
माँगि बिदा सुतधर्म सिधाये ❀ द्रोणभवन अतिआतुर आये ॥
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा ❀ बिदुर ज्ञाननिधि परमउदारा ॥
सबहि यथोचित मिलि नरपालू ❀ बिनय सप्रेम कहेउ निजहालू ॥
माँगी बिदा चले नरनाथा ❀ द्रोणकुमार भयो तब साथा ॥
वैद्यभवन कुरुनाथ चले जब ❀ फिरे सहितहरिहलधर उद्धव ॥
भूपति कहेउ हेतु अस्नाना ❀ है कछु भेद धर्मसुत जाना ॥
लखि हलधर की भौंह तिरीछी ❀ फैलि रही यह बात सुतीछी ॥
कहहिं परस्पर सब बिलखाहीं ❀ बिग्रह देखिपरत भल नाहीं ॥

दोहा—सकलबन्धु अरुद्रोणसुत, सुभटसमाजबिशाल ।
आवत देखे धर्मसुत, सपाद उठेशिशुपाल ॥

पुनिपुनि भेंटउ नृप शिशुपाला ❀ पूछि कुशल कहिसकेल हेवाला ॥

सब मिलिकर भोरहि मख कीजै ❀ बेगि जाब मैं आयसु दीजै ॥
जरासन्धसुत गृह नृप आये ❀ यहि प्रकार सबभूप मँझाये ॥
आये बहुरि सभा महँ राजा ❀ बोलि लीन सब सचिव समाजा ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

मखशाला कहँ अब तुम जाहू ❀ अद्भुत रचहु कहेउ सब काहू ॥
तिन पुनि शकट अनेक पठाये ❀ कदलीखम्भ बिपुल भरि आये ॥
षोड़श सहस खम्भ कञ्चन के ❀ चहुँदिशि सोहत हैं मञ्चन के ॥
हरित मणिन के पत्र मँगाये ❀ पद्मराग के पुष्प सोहाये ॥
सोहत मध्य अनूप चँदोवा ❀ कहि न जाय जानै जिन जोवा ॥
गजमुक्ता झालरि चहुँ पासा ❀ रङ्ग रङ्ग रत्नन की भासा ॥
षोड़श सहस खम्भ कदलीके ❀ रचि दीन्हें अस्तम्भन नीके ॥
मखशाला अति चित्र बनाई ❀ देखत बिशुकर्मा सकुचाई ॥
बुधजन बिपुल देखि अनुरागे ❀ बहुबिधि चक्र बनावन लागे ॥
आये धौम्य घटज ऋषि ब्यासा ❀ शौनक नारद शुक दुर्वासा ॥
शुक्राचार्य बृहस्पति आये ❀ कश्यप विश्वामित्र सोहाये ॥

दोहा—यहिबिधि अट्ठासीसहस, आयगये ऋषिजानि ।
नृपप्रणामकीन्हेउसबहिं, जोरि जोरि युगपानि ॥

सोरठा—मखमण्डलमहँबास, दीनमहीपतिमहिसुरन ।
जहँ सबभाँति सुपास, थलबैठ आहुतिचलै ॥

दूत उवाच ॥

बहुरि नरेश सभा महँ आये ❀ दुर्योधन पहँ दूत पठाये ॥
लावहु सहित समाज लेवाई ❀ चले दूत नृप आयसु पाई ॥
जाय देखि कुरुपति दरबारा ❀ आवहि मिलन महीप अपारा ॥
कीन्ह जोहार नृपहिं तेहिकाला ❀ कहेउ बोलावत धर्मभुवाला ॥
सुनि माँगेउ नरनाह तुरंगा ❀ शकुनी करण दुशासन संगा ॥
तजि हयद्वार तहाँ पगुधारा ❀ जहँ नृपधर्मराज दरबारा ॥
अर्जुन भीमसेन दरवानी ❀ ले आवहिं राजन सनमानी ॥

सभा भेद नहिं जान महीशा ❀ जलतजि थलहिं चलेअवनीशा ॥
भीम कहा कुरुपतिहि सुनाई ❀ दहिनेपन्थ न आवहु भाई ॥
कपटी भूप क्रोध करि साना ❀ पवनतयनकर कहा न माना ॥
जानेउ तर्क करत यहि बोचू ❀ जलमग मोहिं बतावत नीचू ॥
चल सरोष आगे नरनाहा ❀ लागे बूड़न बारि अथाहा ॥
हाहाकार भीम करि धाये ❀ चहुँदिशि लोग दोरि सब आये ॥
गहि कर धाइ दुशासन लीन्हा ❀ नृपहिं बारिते बाहर कीन्हा ॥

दोहा—करिअस्नान नरेशतब, पहिरे बसन नवीन ।
चहतचलनतेहिमगसँभरि, जहँअर्जुनआसीन ॥

ऊपर महल सुता पंचाला ❀ तेहि देखे ये सकल हेवाला ॥
बिहँसि कहेउ सब सुनहु सहेली ❀ जानत है कुलरीति पहेली ॥
अन्धसुवन जिमि प्रकट भयेरे ❀ मनहुँ शृङ्ग करसायल केरे ॥
अस कहि बचनद्रुपद की जाता ❀ हँसी ठठाइ सुनी नृप बाता ॥
भीम दुशासन अरु कुरुराई ❀ अपर न काहू सो सुनि पाई ॥
भा नरेश मन क्रोध अपारा ❀ कहेउ न कछु आगे पगुधारा ॥
परन पांवड़े बहुपट लागे ❀ चलत नरेश भये पुनि आगे ॥
बिहँसि भीम कुरुनाथहि कहेऊ ❀ कपट सनेह सदा तुम रहेऊ ॥
जो मग तुम कहँ दीन बताई ❀ गयो कपटवश तहाँ न भाई ॥
अस कहि भीम ठाढ़ होइ रहेऊ ❀ कहत बचन आपुस महँ भयऊ ॥

भीम उवाच ॥

पिता अन्ध क्यों सूझी पूता ❀ हँसे भीम करि तर्क बहूता ॥
कौरवनाथ सुनी सो बाता ❀ क्रोध कृशानु जरे सब गाता ॥
तब नरेश अस मन अनुमाना ❀ हमहिं बोलाय कियो अपमाना ॥
तेहिते अधिक पाण्डवन करा ❀ होय सुफल तब जीवन मेरा ॥
यहि विधि नृप निजमन अनुमानी ❀ गये जहाँ पारथ दरबानी ॥

दोहा—आवत नृपहि बिलोकि तब, उठेपार्थ हरषाय ।
करिजोहार पुनिपाणि गहि, लैगये सभालेवाय ॥

बहुलज्जा कछु क्रोधकि ज्वाला ❀ गयो नरेश सभा की शाला ॥
उठे धर्म नृप आवत देखी ❀ कृष्णसहित सबसभा बिशेखी ॥
लखि हलधर कह कुरुकुलदीपा ❀ कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा ॥
मन बाञ्छित बर आशिष पाई ❀ मिले बहुरि धर्मज कुरुराई ॥
लीन नरेश निकट बैठाई ❀ नीके रहेउ सुयोधन भाई ॥
रूक्ष बचन तब कुरुपति कहेऊ ❀ हम नीके तुम नीके रहेऊ ॥
धर्मसुवन कह मधुरी भासा ❀ कुशल हमारे सोहत पासा ॥
बैठे कमलनयन यदुराई ❀ अपर कुशल हम कौनि बताई ॥
मनमहँ रोषविवश कुरुनाथा ❀ भौंह मिरोरि मुच्छ धरि हाथा ॥
राते नयन करत चहुँ ओरा ❀ तब बोले बसुदेव किशोरा ॥

दोहा–कुरुपति के गर्मी अधिक, देखि परत मुखझूर ।
अस कहि बिहँसे मधुर हरि, सहित सभा भरपूर ॥

ब्यंग बचन सुनि यदुपतिकेरे ❀ अरुणनयन कुरुनाथ तरेरे ॥
हरि मुसकानि बारि सुधिकैके ❀ रहे कुरुपतिहि अहित चितैके ॥
देखि भूप रुख बचन खरारो ❀ लागे किंकर करन बयारो ॥
नाना भांति सुगन्ध सिचावा ❀ अतर गुलाब सकल छिड़कावा ॥
कह नृप तात सुनहु नरनाहा ❀ आये पिता न कारण काहा ॥
हम समस्त रनिवास बोलावा ❀ कोऊ एक भूलि नहिं आवा ॥
जिनकर काज सकलबिधि भारी ❀ आई कस न मातु गन्धारी ॥
बोले कुरुपति बचन सोहाये ❀ हम नरेश सबकी बदि आये ॥
कहेउ धर्मसुत तुम्हरे आये ❀ हम नरनाह बहुत सुख पाये ॥
आये भीष्मादिक सरदारा ❀ सबप्रकार भल भयो हमारा ॥
अब तुम मम आयसु उर धरहू ❀ यज्ञकाज सब निजकर करहू ॥
तब बोले कुरुनाथ महीशा ❀ आयसु होइ करौं धरि शीशा ॥
कहेउ धर्मसुत सकल खजाना ❀ कञ्चन रौप्य रतन मणि नाना ॥
धातु लोह ताम्रादिक जेते ❀ अनुचर राखि देहु निज तेते ॥
तुम्हरो साद बिना को आवै ❀ अपर कहा हमहूँ न दावै ॥

जहँ लागै जेहि भाँति बिधाना ❋ करेउ तात तहँ निजमनमाना ॥

दोहा—धर्मायसु कुरुनाथ सुनि, बोलि सकल जनलीन ।
कञ्चन कोष बिशालपर, राखिशकुनिकहँदीन ॥

पुनि कुरुपति गुरुसुतहि हँकारा ❋ सौंपि रतन मणिगण भण्डारा ॥
मम परतीति बिना जनि कोई ❋ पावै धनद सुरेश कि सोई ॥
पुनि सौबल नरनाह बोलाये ❋ रौप्य ताम्रके कोष सुहाये ॥
सकल सौंपि कुरुनाथहि दीन्हा ❋ पुनि बोलाइ उनका नृपलीन्हा ॥
रहेउ जो धातु लोह सब भारी ❋ कुरुपति कीन ताहि अधिकारी ॥
देखि धर्मसुत सकल बनावा ❋ दुश्शासनहि बहोरि बोलावा ॥
ममहित तुमहि परिश्रम भाई ❋ कहेउ दुशासन होइ राई ॥
सुनि अस बचन भूप सुख माना ❋ सौंपि दीन सब मोदीखाना ॥
मोदी भवन दुशासन आये ❋ थलप्रति शतशत बैश्यटिकाये ॥
चिट्ठा सकल नरेशन केरे ❋ आवहि चले दुशासन नेरे ॥

दुश्शासन उवाच ॥

मनद पा[illegible] पुनि मोदीखाना ❋ जाइ तुलावहि विविध विधाना ॥

दोहा—[illegible] धर्म नरनाह तब, विकरण लीन बुलाइ ।
[illegible]कोष सौंपे सकल, कहि मृदु बचनबनाइ ॥

बहुरि [illegible] दुमन्त बोलाये ❋ सौंपि महिष गोवृन्द सोहाये ॥
[illegible] बोलाइ नरेशा ❋ सौंपि गयन्द यूथ उपदेशा ॥
[illegible]हि सो बहुरि बोलावा ❋ सौंपि तुरङ्गम साज सोहावा ॥
सहदेवहि बोले नरनाहू ❋ भाजन भवन तात तुम जाहू ॥
[illegible] धनगृह सकल जे भाई ❋ राखि देहु तुम अनुचर जाई ॥
शिबिरशिबिर प्रति शकट भराई ❋ पठवहु जाइ नृपन कहँ भाई ॥
कहेउ नाथ यह काज तुम्हारा ❋ कीजै कछु श्रम अङ्गीकारा ॥
अस कहि बहुरि धर्मधुर धीरा ❋ जात भये रबिनन्दन तीरा ॥
कह रबिसुत मम कारज होई ❋ माथ मानि करब हम सोई ॥

दोहा—[illegible]नन्द कह यज्ञ महँ, दानकर्म बहु होइ ।
प्रभु सबपर शिरताजहोइ, कारियकृपाकरिसोइ ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

दुर्योधन आदिक जे करता ❋ सबन बोलिकह पाराडव भरता ॥
आयसु कर्ण करहिं जस जाहो ❋ फेरहु पत्रन करहु न नाही ॥
माँगहिं जो जब रबिकुलकेता ❋ करब सकोच न सो तब देता ॥
रबिसुत कहेउ करन यह काजू ❋ मखगृह गये धर्म महराजू ॥
जो यह बनी बस्तु बिधि नाना ❋ मेवा मधुर बिपुल पकवाना ॥
नकुलहि भूप कीन अधिकारी ❋ लागे करन अनेक तयारी ॥
लिये चतुर बिद्वान बोलाई ❋ जिन देखे मख बिपुल कराई ॥
जे संकल्प ऋषिन के आगे ❋ धरहिं ते बोलहिं चतुर सभागे ॥
आये मख ऋषि सहसअठासी ❋ अपर बिप्र जे गुणगणरासी ॥
तिनकर भोजनादि सेवकाई ❋ सौंपि पार्थ कहँ धर्मजराई ॥
इहाँ कुरुपतिहि सबहिं हँकारा ❋ करण दुशासनादि सरदारा ॥

दोहा करि दुर्बचन भीम बहु, द्रुपदसुता मम सङ्ग ।
कह नृपकीजै अवशिसोइ, यज्ञ होहिजोहि भङ्ग ॥

ताते करण अवशि शिर धरहू ❋ दान प्रमान त्यागि तुम करहू ॥
दुश्शासनहि कहेउ नरनाहू ❋ बिपुल सीध पठवहु सबकाहू ॥
चिट्ठा द्विगुण त्रिगुण करि दीजै ❋ यश लीजै मखभङ्ग करीजै ॥
रहहि न देश कोष जब सोई ❋ मखबिध्वंस हँसी सब कोई ॥
कहहिं न तब कोइ धर्महिराजा ❋ चलहिं न छत्र न बाजहिं बाजा ॥
यहिबिधि भूपति आयसुदीन्हा ❋ सादर सबन मानि शिरलीन्हा ॥
बिकरण कहेउ युगल कर जोरी ❋ सुनिये बिनय कृपानिधि मोरी ॥
भीम द्रौपदीकृत अपराधा ❋ नाहिंन धर्मसुवन कृतबाधा ॥
यह अनर्थ शिर तासु बिसाई ❋ नाथ लोक परलोक नशाई ॥
बिहँसि नरेश कही सुनु भ्राता ❋ भीमसमेत द्रुपद की जाता ॥
कीन्हेउ स्वल्प बचन अपराधा ❋ धर्मनरेश प्रबल कृत बाधा ॥
चाहत होन युधिष्ठिर राजा ❋ होत भङ्ग ममपद पति लाजा ॥
बन्धु नीति अस कहति पुकारे ❋ नहिं कल्याण शत्रु बिन मारे ॥

नीति अधर्म न नेक विचारिय ❀ जिहिबिधितेहिबिधिशत्रुहिमारिय ॥
जहँलगि चहियो करिये हानी ❀ कहतपुकारि नीतिअसिबानी ॥

दोहा—सुनिभ्राताभुखबचनअस, बिकरण रह चुपाय ।
नृपआयसुसबशीशधरि, चलतभयोशरनाय ॥

होत प्रात याचकगण जागे ❀ जहँ तहँ बंश प्रशंसन लागे ॥
आवहिं बिप्रबृन्द बहुतेरे ❀ चहुँदिशि करत बितान घनेरे ॥
सुनि अस शोर उठे जब जागे ❀ देन दान रबिनन्दन लागे ॥
लेखक मन्त्री करण बुलाये ❀ पत्र याचकन बिप्रन पाये ॥
कोउतुरङ्ग गज कोउ निधि पावा ❀ कोउ मणि हाटक भार सोहावा ॥
भाजन बसन लहै पुनि कोई ❀ कोउ अतिरङ्क धनदसम होई ॥
जहँ रबिनन्दन चारि देवावहिं ❀ याचक जाहिं बीस तहँ पावहिं ॥
सबन दुशासन दीजै आना ❀ बस्तु पठावत बिन अनुमाना ॥
चिट्ठाद्विगुण त्रिगुण करि दीन्हे ❀ देत कि बार बीसगुण कीन्हे ॥
यहिबिधि करहिं अधर्म अनेका ❀ छूटन हेतु धर्मसुत टेका ॥

दोहा—लखिअनरथअतिसात्यकी, हृदयपरमदुखपाय ।
सकलकथा बिस्तारते भीमहिंकह्योबुझाय ॥

भीम हृदय पुनि भा दुख भारा ❀ आये देखि सकल ब्यवहारा ॥
भयो रोष उर अति दुख पाये ❀ सात्यकिसहित कृष्णपहँ आये ॥
कहेउ भीम हरि परम अकाजू ❀ भयो नाश युग लोकसमाजू ॥
निपट यज्ञ यह अनरथ मूला ❀ हमपर भयो ईश प्रतिकूला ॥
असकहिकहेउ सकल इतिहासा ❀ चलत न गदगद बिक्रमभासा ॥
प्रभु यह कृत्य योग जगमाहीं ❀ सकत सुरेश धनद रहि नाहीं ॥
सुनि अस भीमहिं गह्वर बानी ❀ धरहु धीर कह शारँगपानी ॥
कहत बृथा तुम हमहिं संदेशा ❀ कहहु जाइ जहँ धर्मनरेशा ॥
अब कीजै हम कौन उपाऊ ❀ कीन्ह भूप करता कुरुराऊ ॥
कछु न होत अब कौन हमारा ❀ करै भाग्य सब जो करतारा ॥

अब तुम कहहु नरेशहि जाई ❋ मन भावत तम करैं उपाई ॥
दोहा—बन्धुसकलअरुसचिवगण बोलिभीमिसबबात।
कहत भयो गद्गदगिरा, सुनतगये जरि गात॥
धर्मसुतहि सब दूषण देहीं ❋ कीन कुसाज साज बिन जेहीं ॥
उठे भीम संग सकल समाजा ❋ चले जहाँ कुन्ती सुत राजा ॥
धर्म नृपहि कृत सकल प्रणामा ❋ बहुरि एकान्त गये लै धामा ॥
लागे कहन भीम कर जोरी ❋ सुनहु नाथ बिनती यक मोरी ॥
कहेउ सात्यकी लखि अस रङ्गा ❋ बहुरि कहेउ निजगमन प्रसङ्गा ॥
अनुचितसकल देखिजिमि आये ❋ सबप्रसंग कहि सकल सुनाये ॥
पुनि जस बचन कहेउ भगवाना ❋ कुरुपति केर कुकर्म बखाना ॥
सुनि अस सहमि भूमि नृप परेऊ ❋ धीरधुरीण धीर पुनि धरेऊ ॥
उठि बैठे नृप मञ्च बिशाला ❋ बोले भीम नाइ पद भाला ॥
अब नरेश मोहि देहु रजाई ❋ कुरु अनुचर सब देउँ उठाई ॥
जिनकै कीरति जगत प्रशंशी ❋ करिहैं काज सकल यदुबंशी ॥
सोरठा—साम्बसहित अनिरुद्ध, प्रद्युम्नादिकुमार जे।
ते सब बिगत बिरुद्ध, करिहैं कारजनाथअब॥
जनि बिचार कीजै नृप आना ❋ इनकर उचित करब अपमाना ॥
जो कदापि कर आयुध धरिहैं ❋ ता पुनि कठिन गदामममरिहैं ॥
मतिदृगबंश बीर अस को है ❋ रहै ठाढ़ मम सन्मुख जो है ॥
तुम नृप यज्ञ करौ सज्जि साजा ❋ मैं मदनाश करौं कुरु राजा ॥
बेगि भूप म्वहि देहु रजाई ❋ देहुँ भगाइ कुरुपतिहि राई ॥
यदुवंशिन प्रतिथल पुनि राखी ❋ कीजै दूरि पाप अभिलाखी ॥
सब विधि मूढ़ चहत उपहासा ❋ मति दृगबंश करौं सब नासा ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥

कहेउ धर्मसुत चुप करि रहऊ ❋ भूलि न बात बन्धु अस कहऊ ॥
जन्म प्रयंत सदा निज जाना ❋ करिय न काहूकर अपमाना ॥
निज कृत कर्म मूढ़ फल पैहैं ❋ हमहिं न रमारमण बिसरैहैं ॥

कहेउ भीम अबहीं लग राजा ❋ नहिं भारी कछु भयउ अकाजा ॥
बड़ अकाज होई अब आगे ❋ यह कुरुनाथ धर्मपथ त्यागे ॥
आयसु देहु युधिष्ठिर राई ❋ करौ बाद कुरुपति सन जाई ॥

दोहा—कहेउ भूप अनुचित न अब, बोलहु बश अज्ञान।
हम समेत कुरुनाथ कर, होत तात अपमान ॥

निज मन भाषहिं कौरवराजू ❋ ताते हम सौंपेउ सब काजू ॥
कहेउ न कछु यदुबंशिन पाहीं ❋ गृह तजि अनत उचित असनाहीं ॥
यहि बिधि प्रिययदुबंशिहि त्यागी ❋ कीन आजु सो ममशिर लागी ॥
अब अपमान किये बड़ि हानी ❋ रहहु चुपाइ तात अस जानी ॥
परहित लागि होइ अपराधा ❋ नहिं जग बुध करिहैं उपबाधा ॥
पर अपमान बचे निज हाई ❋ दोष न धरहि बिबुधगण कोई ॥
होइहि तात न हँसी हमारी ❋ सदा सहायक गिरिवर धारी ॥
यह निश्चय आवत मन मोरे ❋ तात तजहु परतीति न भोरे ॥
जे खल चहत आन अपमाना ❋ तिनकर सदा करत भगवाना ॥
अस जिय जानि शोक परिहरहू ❋ यज्ञकाज सब प्रमुदित करहू ॥
होइहि सो जु करहिं भगवाना ❋ तुमहिं हमारि शपथ पितुआना ॥
अब नहिं प्रकट बात यह होई ❋ राखहु सकल हृदय निज गोई ॥
धर्मराज के बचन सोहाये ❋ निजनिजकारज सकल सिधाये ॥

दोहा—लखि अनरथ यदुबंशमणि, निजबिचार मनकीन।
आठ सिद्धि नव निद्धि कहँ, बोलि सुआयसु दीन॥

जे सब धर्मराज भण्डारा ❋ होइ तहां अब बास तुम्हारा ॥
निकसै कोटिन मग किन कोई ❋ घटै न सो परिपूरण होई ॥
होइ भक्त मम काज न भङ्गा ❋ करहिं नजग जेहिंअयश प्रसङ्गा ॥
ताते तुमहि कहहुँ सिख येहू ❋ धर्मज बास कोश अब लेहू ॥
करिहैं कुरुपति अति सेवकाई ❋ निज यश हेतु द्रव्य परजाई ॥
नहिं सनमानि सकै करि जासू ❋ करेहु बिबिध तुम आदर तासू ॥
सो हमहूँ तुमहूँ मिलि कीजै ❋ लेश कलेश न भक्तहि दीजै ॥

कीन्ही बिदा सीख दै भूरी ❀ सब भण्डार भयो भरि पूरी ॥
निकसत सकलबस्तुबिधिकोटी ❀ कोशप्रमाण होत नहिं छोटी ॥
यह चरित्र कीन्हे भगवाना ❀ मर्म न दूसर जानत आना ॥

दोहा—धर्मज भट निजयूथसँग, गये देखि सब कोस ।
सुमिरतयदुनन्दनचरण, पुनिपुनिकरतभरोस ॥
आयोदिनशुभ यज्ञकर, गहगह हने निशान ।
मखमण्डलमहँधर्मसुत, प्रातहिकरिअसनान ॥

प्रथम बिभूति सुखद सब काला ❀ तापर डासि नागरिपुछाला ॥
कुश आसन मृगचर्म सोहावा ❀ चित्रगलीचा अतिसुख पावा ॥
द्रुपदसुता अरु पति जगतीके ❀ पहिरे यज्ञविभूषण नीके ॥
वेदमन्त्र द्विज करहिं उचारा ❀ आसन धर्मराज पगु धारा ॥
जहँ तहँ बिपुल बाजने बाजे ❀ आसन धर्मनरेश बिराजे ॥
प्रथम भूप पूजे गणनायक ❀ सोहत साथ आपु कुरुनायक ॥
जहँ लागत मणि कञ्चनकाजू ❀ तहँ हर्षत बहु कौरवराजू ॥
ऋषिगण देव पुजावन लागे ❀ चक्र नवग्रह अति अनुरागे ॥
यज्ञक्रिया जस वेदन बरणी ❀ धर्मनरेश करत तस करणी ॥
श्रुतिमारग जस पूजन कह्यऊ ❀ याम चारि गत बासर भयऊ ॥
हवनसमय अब अतिनियराना ❀ आवनलगे महीपति नाना ॥
मखमण्डल देखत तेहि काला ❀ आये सहदेवहि शिशुपाला ॥
यातुधान लखि सहित समाजा ❀ कर गहि बैठारत कुरुराजा ॥
बहु सनमान करत महिपाला ❀ बैठारे जहँ मञ्च बिशाला ॥

दोहा—तेहिअवसर आवतभये, नरनाथन के बृन्द ।
बैठारत शकुनी करण, कुरुपतिसहितअनन्द ॥

भीषम द्रोण बिदुर तब आये ❀ कर गहि दुश्शासन बैठाये ॥
मगहराज के बन्धव आये ❀ आसन परम सुहावन पाये ॥
जिनकै कीरति जगत प्रशंसी ❀ तेहि अवसर आये यदुबंशी ॥
आसव पिय हल आयुधहाथा ❀ तेहि पाछे आवत यदुनाथा ॥

ऊधव सात्यकि सहित कुमारा ❀ कर गहि भीम पन्थ बैठारा ॥
लागेउ होन हुताशन काजा ❀ ग्रन्थिनिबन्धन कर महराजा ॥
कृपाचार्य कुरुपतिहि बखाना ❀ अब नृप समय आइ नियराना ॥
नृप शिर तिलककरै अब कोई ❀ राजसूय करता तब होई ॥
तासु पखारि चरण नरनाहू ❀ करै बहोरि बरण सबकाहू ॥
सकल तिलकभूपतिशिर करई ❀ तब नरनाह श्रुवा अनुसरई ॥

दोहा—कुरुपति बालमीकिसन, कहेउ बचनशिरनाइ ।
नाथ तिलककरि यज्ञ हित, लीजै चरण धुवाइ ॥
कहेउ आदिकबि कश्यपहि, तिनघटसुतहिसुनाइ ।
यहिबिधिसबम्बमोंकहत, उठतनकोउऋषिराइ ॥

कहेउब्यास सब ऋषि अस कहहीं ❀ सकल भुवनपति सोहत अहहीं ॥
तिनहिं बिलोकत उठत न कोई ❀ आवै जो सबबिधि बड़ होई ॥
प्रथमहिं उठ रमापति आऊ ❀ सब ऋषिबृन्द आइहैं पाऊ ॥
कहे भीम अब बेगि खरारी ❀ उठत न होत अकारज भारी ॥
सुनि अस धर्मराज रुख पाई ❀ ठाढ़ भये उठि सहज सुभाई ॥
त्यागि मञ्च मन अति हर्षाई ❀ मृगपति ठवनि चले यदुराई ॥
लखि शिशुपाल क्रोध अति कीन्हा ❀ चर्म कृपाण हाथ गहिलीन्हा ॥
गरजि जलदइव गिरा गँभीरा ❀ कहेउ नीच सुनु रे यदुबीरा ॥
नहिं जानत निजजाति प्रभावा ❀ सकल सभामहँ उठिशठ धावा ॥

दोहा—अब जानिपग आगेधरहु, नत मम चलत कृपान ।
तासुबचनअवलोकि तब, ठाढ़ रहे भगवान ॥

कुरुपति आदि कुटिल मनहरषे ❀ मान भङ्ग लखि हलधर मरषे ॥
चहत ताहि मूसल गहि मारन ❀ पुनि पुनि ऊधव करत निवारन ॥
फरकत यदुबंशिन के बाहू ❀ जहँ तहँ सब बरजैं सब काहू ॥
करत कोप शिशुपाल समाजा ❀ बरजि बरजि राखत ऋषिराजा ॥
थर थर कांपत सब नर नारी ❀ कहहिं होत यह अनरथ भारी ॥
बिकल होत अति धर्मजराजा ❀ सबबिधि आपन जानि अकाजा ॥

भीम कहेउ मृदुबचन सुनाई ❋ दमघोषकसुत रहो चुपाई ॥
जनि दुर्वचन कहिय अब भारी ❋ होई अनरथ निपट पछारी ॥

दो०-भीम बचन दमघोष सुत, सुनि कछु कान न कीन्ह ।
कहेउ दुर्वचन बहु हरिहि, प्रभु कछु उतर न दीन्ह ॥

रे शठ निपट जाति कर हीना ❋ नाग नगरते भये कुलीना ॥
सनकादिक ऋषिबृन्दन आगे ❋ रञ्चक कानि न कीनि अभागे ॥
हम बैठे सब बिपुल भुवारा ❋ ज्येष्ठबन्धु कहँ लघु करिडारा ॥
बड़आश्चर्य द्विजन के आगे ❋ चरण अहीर धुवावन लागे ॥
अब द्विजबृन्द भये पुनि कैसे ❋ शूद्र न मानत गुरु कहँ जैसे ॥
प्रथम ग्वालगृह प्रकटि अभागा ❋ पुनि यदुबंश कहावन लागा ॥
भयो बर्णसंकर जग जाना ❋ सब कर मूढ़ करत अपमाना ॥
सुनि कटु बचन उठे यदुबंशी ❋ राखहिं उद्धव आदि प्रशंशी ॥
पारथ भीम आदि सब योधा ❋ कहत न कछुक जरत उर क्रोधा ॥

दो०--निजमन्दिर लखि आगमन, कछु न कहत तेहि पास ।
शोचाविवश नृप धर्मसुत, लखि यदुनन्द उदास ॥

हर्षविवश कुरुनायक आदी ❋ बिस्मयवश सब ऋषि सनकादी ॥
सुनहु तात कह नृप मृदु बानी ❋ रहहु चुपाइ काज निज जानी ॥
मखविध्वंस होइ मम ताता ❋ तुमकहँ लाभ कवनि बड़ि बाता ॥
बचन न मानत धर्मज केरे ❋ कहत हरिहि बहु बचन करेरे ॥
घूमि बैठु निज आसन जाई ❋ नत ह्वैहै मखभङ्ग लराई ॥
धर्मनरेश बन्धुयुत नीचू ❋ धावत ग्वालचरण मख बीचू ॥
हरि उदास सुनि बचन तिराछे ❋ आगे चलत न घूमत पीछे ॥
देखि दशा यदुनन्दन केरी ❋ करुणा हृदय हलधरहि घेरी ॥
सहि न सकत गहि ऊधव राखत ❋ पुनिशिशुपाल बचनअस भाखत ॥

दोहा-बिप्रबृन्द की कानि तजि, चरण धुवावन जात ।
बीरहीन जानै अवनि, मूढ़ न मन खिसियात ॥

यहिबिधि कहत बिपुल दुर्वादा ❋ बिन घन होत गगनमहँ नादा ॥

भा दिग्दाह उलूक पुकारे ❋ महि डगमगत उदित भे तारे ॥
यातुधान कटु कहत अनेका ❋ कृतअपराध अधिक शत एका ॥
बोलन चहत अपर कटुबाणी ❋ कहेउ सरुष तब शारँगपाणी ॥
अब रसना जनि चपल चलाई ❋ नतु जैहै शिर सहित उड़ाई ॥
कहि अस बचन नयनरतनारे ❋ कालरूप कर चक्र सँभारे ॥
लागेउ घूमन चक्र कराला ❋ कहेउ बचन गम्भीर कृपाला ॥
अब न बचन निकसै मुखतेरे ❋ नतु जैहौ यमसदन बसेरे ॥
सुनि कर गहेउ चर्म करवाला ❋ कहि दुर्बचन उठेउ शिशुपाला ॥
यातुधान भट उठेउ सरोषा ❋ यदुजन अस्त्र गहहिं करि रोषा ॥
पारथ झपटि धनुषगुण दीन्हा ❋ गदा उठाइ पवनसुत लीन्हा ॥
मख दीक्षित नृप रक्षण हेतू ❋ गये युगल भट पहुँचि सचेतू ॥
झपटिझपटि भट आयुधगहहीं ❋ धरु धरु मारु मारु धरु कहहीं ॥

दोहा—भीष्म द्रोण शकुनी करण, दुर्योधन नरनाह ।
ठाढ़ सजग जहँ धर्मसुत, जासुभङ्गउतसाह ॥

बिकल धर्मसुत धरे न धीरा ❋ उमहे यातुधान यदुबीरा ॥
रक्षण मखसमाज ऋषि धीरन ❋ कुरुपति ठाढ़किये निजबीरन ॥
भीम दुशासनादि भट भारी ❋ रक्षहिं यज्ञसमाज सुखारी ॥
अस मन चाहत कौरवराजू ❋ होइ महामख भङ्ग समाजू ॥
गजपुर भयो कोलाहल भारी ❋ मनहुँ प्रवेश कीन यमधारी ॥
बिकल शोकबश शत्रु अजाता ❋ मोहिं दारुणदुख दीन बिधाता ॥
कुन्ती आदि सकल बर नारी ❋ बिकल होहिं निजकर उरमारी ॥
ब्यासआदि सब धर्मनरेशहि ❋ समुझावत करि बहुउपदेशहि ॥
इहां होत बहु हाहाकारा ❋ दामिनिसम दमकहि असिधारा ॥
बिपुल सहायक जे भट भारी ❋ आइगये शिशुपाल पछारी ॥
बहु यदुबंश सहायक राजा ❋ आये साजि बजावत बाजा ॥

सो०—हल मूसल निजपानि, गहेउ रेवती रमण जब ।
परम रोषवश जानि, ऊधव करत प्रबोध बहु ॥

केवल एक छांड़ि शिशुपाला ❀ अपर न होइ जीव बश काला ॥
जब लगि तुम नहिं करौ प्रहारा ❀ चलो न अपर मनुज हथियारा ॥
होइ सरोष भय देहु देखाई ❀ यातुधान जेहि जाइ पराई ॥
जेहि बिधि धर्म जात मखभङ्गा ❀ होइ तात सोइ तजिय प्रसङ्गा ॥
परम चतुर ऊधव मुखबानी ❀ हलधर लोन्ह सकल शिरमानी ॥
उत शिशुपाल प्रचारत आवा ❀ बार बार हरि चक्र फिरावा ॥
पाणि सुदर्शन भेष कराला ❀ डरत न कटुक कहतशिशुपाला ॥
प्रलय समय जिमि शंकर करे ❀ तेहि प्रकार हरि नयन तरेरे ॥
त्यागेउ हरि बहु बार भ्रमाई ❀ करत रमापति शम्भु दाहाई ॥
रवि सम तपत सुदर्शन धाये ❀ दनुजन देखि महाभय पाये ॥

दोहा—ताके कण्ठ सुदरशन, घूमेउ बार हजार ।
शीशकाटिप्रभुरुखनिरखि, गयोविष्णुआगार ॥

शीश विहीन रुण्ड महि परेऊ ❀ देवन देखि सुमन झरि करेऊ ॥
यदुबंशिन असि चर्म उठाये ❀ दनुजन देखि महाभय पाये ॥
मूसल पाणि गहेउ हलधारी ❀ दनुजन देखि भयो भयभारी ॥
अतिभयभीत निशाचर भागे ❀ पीछे यदुबंशो गण लागे ॥
अपरि सँभारि समर समुहाहीं ❀ चलत न अस्त्रभाजि जेहिजाहीं ॥
यहिविधिनिशिचर निकरपराने ❀ जहँ तहँ गये जात नहिं जाने ॥
धावन धर्महिं खबर जनाई ❀ नाथ विजन यदुनन्दन पाई ॥
चक्रपाणि गहि रूप कराला ❀ काटेउ दमघोषक सुतभाला ॥
भयबश देखि अमित प्रभुताई ❀ गये निशाचर सकल पराई ॥
खण्डितशीश परेउ शिशुपाला ❀ महाराज भूतल यहि काला ॥

दोहा—सुनतमर्षि कह धर्मसुत, हरियहनीकनकीन्ह ।
अपर कहहु केते सुभट, यमपुरशासनदीन्ह ॥

एक चैद्य बिन कह हलकारा ❀ अपर न गयो युगल दिशिमारा ॥
सुनि सरोष भय कुरुनरपाला ❀ भृकुटी कुटिल बिलोचन लाला ॥
फरकत अधर कहन अस लागे ❀ द्रोणी द्रोण धर्मसुत आगे ॥

उचित न मखमण्डल महँ ऐसो ❀ भई पितामह बात अनैसो ॥
मखिहित प्रथम निमन्त्रण दीन्हा ❀ भवन बोलाइ तासु बध कीन्हा ॥
यज्ञादिक कारज यश हेतू ❀ अपयश पूरि रह्यो भरि खेतू ॥
मखविध्वंस भयो सब भाँती ❀ निपट बन्धु ये बंश कुजाती ॥
तात यत्न कीजै अब सोई ❀ अपयश भङ्ग जौनबिधि होई ॥
करिय साज सजि समर बहोरी ❀ जेहि संसार धरै नहिं खोरी ॥
नतु महिहीन होई यदुबंशी ❀ की जग रहै न कुरुकुलवंशी ॥

दोहा–द्रोण पितामह सजग होइ गहहु हाथ हथियार।
होइ नाश यदुकुल सकल, नतु अब बंश हमार॥

सम्मुख समर यदुन सन लेहू ❀ जियत न जान द्वारकहि देहू ॥
महारथिन निज धनुष चढ़ाये ❀ सजग भये नृप आयसु पाये ॥
निजदल नृप संदेश पठावा ❀ करहु समरहित सकल बनावा ॥
धर्मराज रुख लखि सब भाई ❀ सजग ठाढ़ भे धनुष चढ़ाई ॥
दीख बिदुर भा अनरथ भारी ❀ आयो धर्मनरेश पछारी ॥
कहेउ गुप्त यह अनुचित ताता ❀ उचित तुमहिं नहिं शत्रुअजाता ॥
चिन शिशुपाल हेतु मखरच्छा ❀ अपर बीर हरि बधे न इच्छा ॥
यदुपति सदा करत हित तोरा ❀ करत शत्रुवत अन्धकिशोरा ॥
सबबिधि चहत तुम्हार अकाजू ❀ ताते सजत समर हित साजू ॥
हरि तब यज्ञ सुफल करवैहैं ❀ नृप निज चलत बिगार करैहैं ॥
सुनि असबचन भीम मनमाना ❀ भूप बिदुर सब सत्य बखाना ॥
दुष्टरूप कुरुनाथ सुभाऊ ❀ है हमरे सब कछु यदुराऊ ॥
पठै संदेश द्रौपदी रानी ❀ हरिमन समर किये बड़ि हानी ॥

दोहा–धर्मराजसुनिसुनिबचन, निजमनकरतबिचार।
हरिबियोगइतअयशउत, उरदुखदुसहअपार॥

पुनि धीरज धरि धर्मनरेशा ❀ कह्यउ बिदुरमत भल उपदेशा ॥
कह सुत धर्म पितामह पासा ❀ नाथ तुम्हार सदा हम दासा ॥
अब करि यतनकरहु प्रभु सोई ❀ भल रजा अबते कछु होई ॥

तुम कुरुपतिहि देउ समुझाई ❀ जेहि न होइ हरि संग लड़ाई ॥

भीष्म उवाच ॥

कहेउ बात भलि जस मन मोरा ❀ मैं समझावों अन्धकिशोरा ॥
अस कहि भीष्म तहाँ पगुधारा ❀ जहँ कोपत कुरुनाथ भुवारा ॥
नृपहिं पितामह बहु समुझाये ❀ सहितसमाज धर्म पहँ आये ॥
कहत काह पूछत कुरुनायक ❀ कहेउ नरेश होइ ज्यहिलायक ॥
अब यह बिमल पितामहबानी ❀ हम तुम सकल करिय शिरमानी ॥
कह कुरुनाथ उचित मत एहा ❀ समर सरोष त्यागि संदेहा ॥
जिन नहिं नेकु कानि मन मानी ❀ दीन उतारि चणक में पानी ॥

दोहा—नीचहोततौ बधउचित, तुल्यसमर अब योग्य ।
अपरयतनकरि अयशते, कबहुँ नहोबअरोग्य ॥

बाहुलीक कह सुन नृप बानी ❀ सत्य बिबेक धर्म नयसानी ॥
जेहि सब बधेउ दनुजकुल टीका ❀ करब तासु अस कहब न नीका ॥
जबते भा हरि जन्म पुनीता ❀ बधत बली दुष्टन कह बीता ॥
कोजगमिलहि तुमहिं समयोधा ❀ करत समर यदुपतिहि प्रबोधा ॥
हरिसन जे भट रणकृत भारे ❀ मानहुँ मरे प्रथम के मारे ॥
तात समुझि परिहरिहु कुमतिही ❀ सोह न समर तुम्हैं यदुपतिही ॥
चलिहिं न बिक्रम सहित सहाई ❀ नाहक प्राण गँवै हो जाई ॥
चलिहि चक्र हल मूसल नाना ❀ हरि हलधर करिहैं घमसाना ॥

दोहा—तब कहिहौ पछिताइ हम, काहकमारग कीन्ह ।
तहिअवसरहलधरसहित, यदुपतिदर्शनदीन्ह ॥

गहे राम हल मूसल हाथा ❀ आगे तेहि पीछे यदुनाथा ॥
चर्म कृपाण गहे कर माहीं ❀ उग्ररूप छूटत रिस नाहीं ॥
यादव सात्यकि दुहुँदिशि आवत ❀ अस्त्र गहे बहु यदुपति धावत ॥

कृष्ण उवाच ॥

कहेउ कृपाल धर्मसुत पाहीं ❀ हम शिशुपाल बधे मखमाहीं ॥
यदपि भई यह बात अयोगू ❀ दोष तुम्हार न दैहैं लोगू ॥

अब तुम साज साजि मख करहू ❋ जान बिस्मय मन रञ्चक धरहू ॥
नतु कीजै हमहूँ तुम सोई ❋ कहहिं बचन कुरुनायक जोई ॥
जो दमघोष सुवन कर अङ्गू ❋ होइ जो प्रकट करै रणरङ्गू ॥
मृतक परेउ जो महि शिशुपाला ❋ ताहि पठावहु भवन भुवाला ॥
संग करहु सेनापति जाई ❋ आवहिं दगड बाँधि बरिआई ॥
जे नृप दगड चैद्य कहँ देता ❋ पठवहु निजचर सेन समेता ॥
आवहिं दगड सबन प्रति बाँधी ❋ भूप भई महि बिगतउपाधी ॥

दोहा—धर्मराज सुनि हरि बचन. कह अस उचित ननाथ।
बधबोलाइ करि दण्डाहत, पठइय निजजसाथ॥

तासु तनयबध समुझि दुखारी ❋ पुनि यहदगड बिपति बड़ि भारी ॥
कह प्रभुउचित नीति कह बाता ❋ नृपकहँ दगड बिचारन ताता ॥
निज सेनापति भूप बुलावा ❋ कहेउ यथा हरि आयसु पावा ॥
आवहु दगड बाँधि सब तेरे ❋ नहिं शिशुपाल सुतन के नेरे
गुप्त कहेउ यह हरि नहिं जाना ❋ चैद्य राखि रथ कीन्ह पयाना ॥
माहिष्मती नगर पहुँचाई ❋ लीन्हे डाँड़ि अपर भुवराई ॥
कह शिशुपाल सुतन ते येहू ❋ हो अदगड तुम दगड न देहू ॥
अपर नरेश करै कोउ भीरा ❋ बेगि जनावब धर्मज तीरा ॥
सब हम करब सहाय तुम्हारी ❋ धर्म दोहाय नगर तब झारी ॥
असकहि बहुविधि धीरज दीन्हा ❋ आपु गमन हस्तीपुर कीन्हा ॥

दोहा—इहाँ तुरत यदुबंशमणि, आयसु दीन्ह कराय।
बाजे बिबिध निशानघन, सबन दीन बैठाय ॥

याम निशागत यह सब भयऊ ❋ पुनि यदुनाथ महामख ठयऊ ॥
जस मखमारग वेदन बरणा ❋ कीन धर्मसुत सब आचरणा ॥
भयो तिलक पूर्णाहुति कीन्हा ❋ छत्र धराय राज्यपद दीन्हा ॥
बाजे बिपुल शंख घरियारा ❋ भेरि धेनुमुख पवँरि दुवारा ॥
बिपुलदान द्विजवृन्दन पाये ❋ ऋषि मुनि अशन पान करवाये ॥
भे बकशीश याचकन भारी ❋ शतयोजन नहिं रह्यउ भिखारी ॥

जहँ तहँ बारमुखी बहु नाची ❋ नगर नगारे की धुनि माची ॥
कछुदिन सबहि राखि नरनाहा ❋ करि सतकार समेत उछाहा ॥
नृपन बिदाहित आयसु मांगे ❋ चलती बार निपट अनुरागे ॥
साजि बाजि गजबाहन नाना ❋ दुर्योधन दल कीन पयाना ॥
फिरे पाण्डुनन्दन पहुँचाई ❋ उद्धव राम सहित यदुराई ॥
बाहुलीक पद पुनि शिरनावा ❋ गङ्गा सुवन ते आयसु पावा ॥
बिदुरहि मिलत नाथ जगती के ❋ भेंटत रामकृष्ण अति नीके ॥
कीन्ह बिदा अति पुलक शरीरा ❋ गे सुत धर्म द्रोण गुरु तीरा ॥

दोहा—गुरुहिनायशिरभेंटिपुनि, अतिहितद्रोणकुमार।
मगमहँमिलिरबिनन्दनहि, जातभये आगार ॥

यदुबंशिन मिलि धर्म भुवारा ❋ कीन्हेउ अशन अनेक प्रकारा ॥
सकल बहोरि सभामहँ आये ❋ कोउ विश्राम करत सुखपाये ॥
कोउ खेलत बहु पंसासारी ❋ खेलत कौतुक की बलभारी ॥
देखत नृत्य गान सुन कोऊ ❋ कोउ मृगयाहित सजत सँजोऊ ॥
हरि हलधर युत धर्म नरेशा ❋ लखि मन सकुचत कोटि सुरेशा ॥
जेहि मारग निकसत कुरुचन्दा ❋ देखिपरत बहु याचक बृन्दा ॥
आवत लखि कुरुनाथ सवारी ❋ कहहिं प्रशंसि प्रचारि प्रचारी ॥
दुर्योधन आदिकन सुनाई ❋ करैं धर्मसुत केरि बड़ाई ॥
काहे न होहिं धर्मसुत भारी ❋ जिनके तुम समान भण्डारी ॥
दानकृपाण निपुण सब भांती ❋ भूप दशा कैसे कहि जाती ॥
जासु किंकरन के मन ऐसे ❋ आपु नरेश होहिं धौं कैसे ॥

दोहा—रहे न जगमहँ रङ्क कोउ, सब नर धनपद पाव।
तासुकोशकीरतिबिमल, कहहुमनुजकिमिगाव॥

कुरुपतिधर्मसुयश सुनि कानन ❋ बिदरतहृदय मनहु पबिबानन ॥
अति सकुचत जनु अवनिसमाई ❋ यहि बिधि कुरुपति मन्दिरजाई ॥
करत बनै नहिं काज नशाना ❋ पुनिपुनिधिगनिज जीवनजाना ॥
बिभव बिलोकि युधिष्ठिर केरा ❋ कुरुपतिउर संशय कृत डेरा ॥

प्रातहि उठे धर्मसुत राजा ❀ हलधर कृष्णसमेत समाजा ॥
बैठ सभा मन्दिर महँ जाई ❀ दूतन कही खबरि असि आई ॥
प्रभु अब नागनगर भल बसई ❀ अमरावती जानि लघु हँसई ॥
अब कोउ रंक न अस यहि ग्रामा ❀ तुमते हीन जासु गृहसामा ॥
सबके गृह मणि कञ्चन रासी ❀ दास अनेक अनेकन दासी ॥
गजरथ चपल तुरंगम छाये ❀ गृह गृह जनु हरि धनद बसाये ॥

दोहा–प्रथमजयतितवजयकरण, जय कुरुनाथ भुवाल ।
कहहिं परस्पर रङ्क ते, जिनकीन्हेंधनपाल ॥

धर्मराज तव दान पताका ❀ बिदित रसातल भूतल नाका ॥
दूतबचन सुनि अति सुखमाना ❀ बहुरि नरेश करत अनुमाना ॥
कहत दूत सब जो निधि मेरे ❀ भे तस रङ्क नागपुर केरे ॥
यहि मन्दिर ते जिमि मैं एका ❀ प्रकट तथा धनवान अनेका ॥
नेक कोश मम भयो न खाली ❀ दीनदशा सुनि भूतल हाली ॥
सो यह द्रव्य कहांते आई ❀ पूछहू भीमहिं भूप बोलाई ॥
सुनि नृपबचन पवनसुत हाला ❀ कह्यो भयो यदुनाथ दयाला ॥
सत्य तुम्हारि समुझि मनमाहीं ❀ त्राता अपर दीख कोउ नाहीं ॥
देखि अनाथ दया प्रभु कीन्हीं ❀ राखिलाज करुणानिधि लीन्हीं ॥
कुरुपति चहत भङ्गमख कीन्हा ❀ कृपासिन्धु सोइ करै न दीन्हा ॥

सो०–रही प्रीति उर छाइ, यदुपतिकीकरणीसमुझि ।
दशा न सोकहिजाइ, जोरिपाणिबिनवतहरिहि ॥

जय राधावर हलधर सोदर ❀ जयति दयानिधि जय दामोदर ॥
जय जय जय बृन्दाबन बासी ❀ लक्ष्मीपति बैकुण्ठ निवासी ॥
निज जन हेत सदा तुम त्राता ❀ मम पति राखिलीन तुम जाता ॥
हलधर सहित जयति जयजोरी ❀ राखेउ लाज दयानिधि मोरी ॥
सुनत बचन कह दीनदयाला ❀ रहो तुम्हारि लाज सबकाला ॥
तुम सरीख जे भूतल राजा ❀ नहिं तिनकहँ नृपहोत अकाजा ॥
कह नृपनाथ सुनौ गिरधारी ❀ एक हृदय मम संशय भारी ॥

चैद्य जाहि निजधाम पठावा ❀ रोष मोंहिं केहि कारण आवा ॥
बिदुर बुझाइ कह्यऊ ममपाहीं ❀ तब संतोष भया मन माहीं ॥

दोहा—हँसिबोल्यउयदुबंशमणि, तुमहिंउचितयहभाव।
नीतिधर्म उर बसत है, कस न रोष उरआव ॥

जो नृप होत अज्ञ अबिचारी ❀ करत न रोष सभय लखिरारी ॥
आवत जहाँ निमन्त्रण दीन्हे ❀ शत्रु मित्र तहँ उचित न चीन्हे ॥
अनुचित खोरि धरत सब लोगू ❀ समता तासु कहत बधयोगू ॥
यशहित भूप यज्ञ तुम ठयऊ ❀ अयश बिलोकि क्रोध उर भयऊ ॥
तदपि नीच अस ज्यहि थलपैये ❀ करिय बिनाश बिचार न लैये ॥
कीन क्षमा तुम अस जियजानी ❀ यह बध योग अमङ्गलखानी ॥
सुनि नृपधर्म परम सुखपाये ❀ हलधर कृष्णसमेत नहाये ॥
उद्धव सात्यकि राम सोहाये ❀ प्रथम कृष्ण कुन्ती गृह आये ॥
अशन पानकरि सहितसमूहा ❀ माँगी बिदा चले दल जूहा ॥

दोहा—बहु प्रकार रानिन मिलि, कुन्तीपद शिरनाय।
प्रद्युम्नादि कुमार जे, मांगत सबहि रजाय ॥
चढ़ेसकलनिजनिजरथन, चले निशान बजाय।
पुर बाहरलग धर्मसुत, फिरत भये पहुँचाय ॥

गये द्वारकहि जब यदुराई ❀ बैठे सभा धर्मसुत आई ॥
करहिं धर्मसुत राज्य सुखारी ❀ मुखरुख जोगवत बान्धवचारी ॥
अभिमनु आदि बिलोकि कुमारा ❀ लहत मोद मन धर्मभुवारा ॥
यक दिन बाजि चढ़े नरनाथा ❀ सुभट समाज चले बहुसाथा ॥
अश्वारूढ़ बन्धु बरचारी ❀ धाये बन्दी बिरद पुकारी ॥
अभिमनु आदिक साथ कुमारा ❀ महिषमती नगरी पगुधारा ॥
आगे मिल्यउ चैद्यसुत आई ❀ कीन अनेक भाँति पहुनाई ॥
अभयबाहँ करि ताहि बसाये ❀ कहिअदराड नृप निजपुरआये ॥
धर्मनरेश जानि सब लायक ❀ दराड पठाइ देहि नरनायक ॥

दोहा—यहिबिधिबिपुलप्रतापनृप, बसत नागपुरमाहिं।
सबलसिंहलाखिजासुगति, धनदशक्रसकुचाहिं॥

इतिश्रीमहाभारतेसभापर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृतेशिशुपालबधनयुधिष्ठिरयज्ञकथनंनामप्रथमोऽध्यायः॥१॥

दोहा—जनमेजयकहऋषिकहहु, सकलकथा बिस्तारि।
परमप्रीतिकुरु पाण्डवन, नाथभईकिमिरारि॥

कह ऋषि सुनु नृप गजपुरबासी ❀ कुरु पाण्डव चरित्र सुखरासी॥
सुनत होइ नर बिनहिं प्रयासा ❀ सिद्धि कामना सुरपुर बासा॥
आयो देखि धर्म मख जबते ❀ निशि न नीद कुरुनाथहि तबते॥
बन्धु बिभव लखि परम उदासा ❀ यतन बिचारत केहि बिधिनासा॥
गजपुर दूसरि फिरत दोहाई ❀ सुनि जरिजात गात कुरुराई॥
यकदिन कुरुपतिसचिव बोलाये ❀ शकुनी करण दुशासन आये॥
पूछत सबही कुरु कुलदीपा ❀ होइ नाश जेहि धर्ममहीपा॥
कीन्ह सबन मिलि यहमत ठीका ❀ जोरि समूह समर अब नीका॥
कीजै सकल बन्धु अब घेरी ❀ चहुँ दिशि धर्मज भवन गरेरी॥

दोहा—पितहिपूछिअनुचितउचित, तसकीजैतबकाज।
उचितमन्त्रशकुनीकह्यो, सबकेमनभलआज॥

करण दुशासन नृप मनमाना ❀ बुद्धिचक्षु पहँ कीन पयाना॥
संजय दीख कि कुरुपति आये ❀ करि सतकार बिबिध बैठाये॥
मतिदृगचरण धरैं सब शीशा ❀ पावहिं मनभावती अशीशा॥
शकुनी कह्यो सुनौ महराजा ❀ तुम्हरे सुतहि रोष बड़लाजा॥
पाण्डव सभा प्रबल इन देखी ❀ अति बिस्मय बश रूप बिशेखी॥
तह कछु भूप भयो अपमाना ❀ ताते दुर्योधन दुख माना॥
होत अवज्ञा गजपुर माहीं ❀ भीम कानि मानत कछु नाहीं॥
एक राज्य महँ भे दुइ राजा ❀ कीन मन्त्र यह जानि अकाजा॥
दल बटोरि कीजै रण रीती ❀ लीजै धर्म नरेशहि जीती॥

दोहा—बन्धु मित्र अरु पुत्र सब, थल गरेरि करिनास।
देश कोश लीजै सकल, धर्महि यमपुरबास॥

सुनि मतिदृग शकुनी मुख बानी ❋ बोले बचन देखि बड़ि हानी ॥
मन्त्र तुम्हार हमहिं नहिं भावत ❋ ईश बाम अस बचन कहावत ॥
समर दक्ष जिन के मन ऐसे ❋ जीते जाहिं पाण्डुसुत कैसे ॥
जिनके साथ सदा बनवारी ❋ करि न सकहिं रण शक्रप्रहारी ॥
लरिकाईं खेलत नहिं हारे ❋ तासु न बिगरहि बात बिगारे ॥
जीति सकहि को धर्मकुमारा ❋ जहँ जगदीश आपु रखवारा ॥
उनते समर न पैहौं पारा ❋ अब सुत जनि यहकरहु बिचारा ॥
धर्मराज अपराध बिहीना ❋ करत तात तुम मन्त्र अलीना ॥

दोहा—सुनि शकनीबालबहुरि, भूप कही भलि बात ।
हारि जीति कीन्हे समर, कुरुपतिजानि न जात ॥

शकुनिउवाच ॥

द्यूतकर्म हम निपुणहिं कुरुपति ❋ पंसासार ख्याल अद्भुतगति ॥
कपट अक्ष भावै मन जोई ❋ सुनहु नरेश परइ तब सोई ॥
कपट भेंट पाण्डव न बोलाई ❋ जीति लेब सब अक्ष खेलाई ॥
ऐहैं धर्म महीपति आछे ❋ युद्ध जुवा पग धरै न पाछे ॥
देश कोश नृप सकल लगाइहि ❋ जीतिलेब सब रहिनहिं जाइहि ॥
युद्ध किये पाण्डव नहिं हरिहैं ❋ उनकर पक्ष कृष्ण तब धरिहैं ॥
जीते ख्याल न बढ़िहि बिरोधू ❋ कही न कोउ अनुचित करि क्रोधू ॥
भूप हमारि मानि सिख लीजै ❋ अपरबात जनि चित्त धरीजै ॥

दोहा—कपटभेदकरिपाण्डवन, जीतहु देहु निकारि ।
एकछत्र महिभोग बहु, रहइ न कण्टकधारि ॥

सुनि कुरुपति मन भयो अनन्दा ❋ जनु चकोर पायो निशि चन्दा ॥
पुनि पुनि शकुनी केरि बड़ाई ❋ करै लाग कुरुपति हर्षाई ॥
भलगुण तात गुप्त करि राख्यउ ❋ ममहितहेत तात सोइ भाख्यउ ॥
नीक लाग मत अन्ध नरेशहि ❋ पुनि पुनि शकुनी कह उपदेशहि ॥
पूछहु तात बिदुर पहँ जाई ❋ परमभक्त गुणनिधि मम भाई ॥
यादव कुल जिमि उद्धव ज्ञानी ❋ तिमि कुरुबंश बिदुर सज्ञानी ॥

तब कुरुनाथ बिदुर गृह आये ❀ शकुनि दुशासन संग सोहाये ॥
देखि बिदुरमन अति अनुरागा ❀ आसन दीन रजायसु मांगा ॥
शकुनी बरणि कहेउ सब साजा ❀ तुमहिं मन्त्र पूछत कुरुराजा ॥

दोहा—उनकहँदीन्हेउबिभवबिधि,तुमजानिकरहुखभार। निज सेवाते कान बश, केशव जो करतार ॥

बिदुरबचन कुरुपतिहि न भाये ❀ तुरत पितामह के गृह आये ॥
करत प्रणाम धरणि धरि शीशा ❀ देखि गङ्गसुत दीन अशीशा ॥
सत्यब्रत के बैठ समीपा ❀ कही कथा कौरवकुलदीपा ॥

भीष्म उवाच ॥

जो तुम सुत पूछहु मम हीका ❀ कहब रहा अस कहब न नीका ॥
नृप मुख बचन चहिय नय लीन्हे ❀ राज्य न रहत ताहि तजि दीन्हे ॥
भल न रिझाउब इन बातनते ❀ जीत न उनके उतपातन ते ॥
जस उन सुभट समर महिजीते ❀ मख कारज कीन्हे मन चीते ॥
अस मख यहि कुलकाहुन कीन्हा ❀ जगउठि गयो याचकन चीन्हा ॥
मरेउ न हरि हलधरके मारे ❀ युग करि जरासंध ते फारे ॥
को अस सुभट भयो यहि बंशा ❀ जासु करिय बहुबार प्रशंशा ॥

दोहा—जेनर मानत जीति निज, हारि मानि तिमिलेत। बिदितकरहिंजयअजयतजि,तेहियमभलिसिखदेत॥

तुम अब तात रहउ चुपसाधी ❀ जनि कीजै करि यतन उपाधी ॥
यह मत नृप तुम अस ठहरायो ❀ करिसोवत जिमि सिंह जगायो ॥
भीष्मबचन कुरुपति सुनिलीन्हा ❀ नाहिन कछु प्रतिउत्तर दीन्हा ॥
उठि पुनि शकुनी सहित नरेशा ❀ बिषसम लाग अमीउपदेशा ॥
कीन्ह द्रोणकहँ दण्ड प्रणामा ❀ लहेउ अशीश होइ मन कामा ॥
कहि शकुनी सबहेतु सुनावा ❀ द्रोणद्रोणसुत मनहिं न आवा ॥

द्रोण उवाच ॥

भरद्वाज सुत कह सुनु राजा ❀ हम तुम्हार बाञ्छित शुभकाजा ॥
आयसु जासु रमापति करई ❀ तासु पराजय समुझि न परई ॥

करहु न सो दुर्योधन राजा ❀ जेहि पीछे बड़ होइ अकाजा ॥
दो०—गुरुमुख बचन नरेश सुनि, जानी जनकी बात ।
शीश नाइ मांगी बिदा, गये जहां रविजात ॥
आदर बहुत तरणि सुत कीन्हा ❀ रत्न सिंहासन आसन दीन्हा ॥
कर्ण उवाच ॥
कहेउ रजायसु होइ नरेशा ❀ प्रभु आगमन मोहिं अन्देशा ॥
तेहि अवसर कुरुपति रुख पाई ❀ शकुनी बिधिवत कथा सुनाई ॥
कह रविसुत नृप सुनु मत मोरा ❀ बोलि लेहु सब भूप किशोरा ॥
मम घट कालनिशा नियराई ❀ कार्त्तिकमास शरदऋतु पाई ॥
खेलत द्यूत सकल संसारा ❀ तबहिं बोलाइहि पाण्डुकुमारा ॥
लखि नहिं परहि कपट चतुराई ❀ यह सलाह रविसुत मनभाई ॥
दुर्योधन सुनि अतिसुख माना ❀ मुनि पुनि भेंटत करत बखाना ॥
दो०—आतुर उठि शकुनीकरण, मगकृत बाक बिलास ।
सबलसिंह कह तब गये गान्धारी के पास ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते
दुर्योधनमन्त्रप्रश्नवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कीन्ह प्रणाम मातुपुर भूपति ❀ दे अशीशआसन प्रमुदितअति ॥
कहेउ मनोरथ निज नरनायक ❀ करिय न तात बात बेलायक ॥
दीन्हीं ईश तुमहिं ठकुराई ❀ बैठि रहहु निज भवन चुपाई ॥
सुत जग जन्म सुफल करिलीजै ❀ बन्धु बिरोध कदापि न कीजै ॥
मातु बचन नृप मनहिं न आये ❀ भानुमती गृह आपु सिधाये ॥
शकुनी आदि भवन निज गये ❀ भूप सेज पर शोभित भये ॥
भानुमती ते सकल हेवाला ❀ कहि पूछेव कौरव कुलपाला ॥
जोरि युगल कर कौरव रानी ❀ कहेउ नाथ सुनिये मम बानी ॥
करिय न बन्धु बिरोध बलीते ❀ सजग भये पुनि जाहिं न जीते ॥
दो०—नाहिं भाये रानी बचन, निजबल कहेउ भुवार ।
होतप्रात आये सभा, हने निशान अपार ॥

आये कुरुपति निजमखशाला ❀ बैठि चित्रसारी नरपाला ॥
चरबर बहु कुरुनाथ पठाये ❀ बोलि बोलि सब भाइन लाये ॥
आये शकुनी करण दुशासन ❀ करि जुहार बैठे निज आसन ॥
सकल बन्धु आये तिहि तीरा ❀ लषण कुँवर आदिक भै भीरा ॥
नाइ नाइ शिर नृपहि जोहारी ❀ जहँ तहँ सोहत हैं भट भारी ॥
प्रतिप्रवँरिन दरबानि समाजा ❀ बिपुल बिभव राजत कुरुराजा ॥
पूछेहु सबहिं भरत कुलकेतू ❀ कहि बिस्तार कहेउ सबहेतू ॥
निज निज मन्त्र न राखहु गोई ❀ सब मिलि करहु करब हम सोई ॥
प्रथम मन्त्र जो शकुनि बखाना ❀ ठीक नीक सबके मनमाना ॥

दो०—एकछत्र कीजिय धरणि, दै पाण्डव बनबास।
सबन कह्यो मत ठीक यह, कुरुपति हृदय हुलास॥

बिकर्ण उवाच ॥

बिकरण कह्यउ जोरि कर दोऊ ❀ नाथ अयशभाजन जनि होऊ ॥
जिन कीन्हेउ बशत्रिभुवननाहा ❀ जगदुर्लभ प्रभु ताकहँ काहा ॥
रक्षक जासु रमापति राजै ❀ तासुकहिय क्यहि भाँति पराजै ॥
कौरवनाथ कही असि बानी ❀ सुनु ममबचन बन्धु सज्ञानी ॥
पाण्डव जीति सकै किन कोई ❀ कहहु शेष कीजै बश सोई ॥
जाके शीश धरी सब धरणी ❀ पाण्डव की केतिक है करणी ॥
शेष दिनेश जाहिं किन जीते ❀ बिजय न एक धर्मसुनही ते ॥
सकल कहहिं सो बचन प्रमाना ❀ एक कहहिं कीजै जनिकाना ॥
अस कुरुनाथ कहेउ मुसक्याई ❀ दुश्शासन बोल्यो शिरनाई ॥

दो०—नाथ कीजिये बात यह, सत्य सत्य मत मोर।
मैं अनुचर करिहौंसकल, कुरुपति आयसु तोर॥

बन्धु बचन सुनि नृप सुखपाये ❀ शिल्पकार बहु तुरत बुलाये ॥
जाय सजहु तुम सदसि सुहाई ❀ देखत जाहि चकित सुरराई ॥
तबलगि रचना रचहु सँवारी ❀ द्यूतदिवस जब आव दिवारी ॥
सब थवई नरनाह पठाये ❀ अनुचरसाथ बिपुल तिनपाये ॥

लोक काष्ठ कर सुनि सुनि आवहिं ❋ रचहिं सभा नृप आयसु पावहिं ॥
सात मास महँ करि निपुणाई ❋ दीन्ही मनहु नवीन बनाई ॥
दुर्योधन नृप सभा निहारी ❋ बैठहिं दिनप्रति होहिं सुखारी ॥
सुन्दर मास दमोदर आवा ❋ कालनिशाथल अति नियरावा ॥
शकुनी करणहिं पूछि नरेशा ❋ पत्र पठाइ दिये प्रतिदेशा ॥

दोहा—कालनिशा जागरण हित, आवहु सब भुवराइ।
द्यूतखेल खेलहु इहाँ, करहु सभा मम आइ ॥

खेलब हम अरु धर्मकुमारा ❋ देखहु आय सकल सरदारा ॥
दुर्योधन कर आयसु पाई ❋ गजपुर सब आये भुवराई ॥
सुखद शिबिर पाये सब काहू ❋ बहु सतकार करत नरनाहू ॥
कुरुनन्दन तब बिदुर बोलाये ❋ जाहु धर्म पहँ कहि पठवाये ॥
धर्मराज गृह बिदुर सिधाये ❋ तुरंग सवार साथ शत धाये ॥
चपल तुरङ्गम बिदुर सँवारा ❋ जात चले पाण्डव दरबारा ॥
बिदुर आगमन सुनि सुख पाये ❋ आगे मिलन धर्म सुत आये ॥
बहुरि सभा लै गयो भुवारा ❋ सादर सिंहासन बैठारा ॥
पुनि पुनि भूप रजायसु मांगत ❋ प्रीति बिलोकि बिदुर अनुरागत ॥

बिदुर उवाच ॥

दोहा—हृदय बिचारत न लखत, कौरव की मतिपोच।
हाथी हरहट मदगलित, नाहिंन शील सँकोच ॥

सुनहु तात मम आगम काजा ❋ तुमहिं बोलावत हैं कुरुराजा ॥
अभिवादन करि कहेउ सँदेशा ❋ आये ममगृह बिपुल नरेशा ॥
द्यूतहेतु हम साजि उछाहू ❋ सो तुमहूं आवहु नरनाहू ॥
इहैं कालनिशि जागहु आई ❋ देखहु मम समाज समुदाई ॥
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता ❋ कुरुपति के मन है छल ताता ॥
शकुनी करणहि सहित दुशासन ❋ चाहत तुम कहँ देश निकासन ॥
यहै मनोरथ जीतब भूपा ❋ कहूँ कहेउ यह भेद न भूपा ॥
तुमहिं परम प्रिय जानि सुनावा ❋ करहु भूप जो बनहि बनावा ॥

कहत भये अस धर्मजराई ❀ सुनहु सचिव भीमादिक भाई ॥
कुरुपति के ईर्षा भै भारी ❀ हमकहँ जीतन कहत हँकारी ॥

दोहा—युद्ध जुवाँबश होत नहिं, भ्राता करहु बिचार ।
होत तासु जय तात सुनु, जेहि सहाय करतार ॥

यह कुरुपति भलि बात बिचारी ❀ मानत जीति न जानत हारी ॥
बिदुर बिचारि कहो मोहिं पाहीं ❀ का समुझत कुरुपति मनमाहीं ॥
बोले बिदुर कही भलि बाता ❀ हम यह भेद न जानत ताता ॥
कह्यउ भीम मतिभ्रम कुरुराऊ ❀ सो किमि जानहिं भाउ कुभाऊ ॥
चलहु भूप अब करहु तयारी ❀ खेलिय नृप गृह पंसासारी ॥
उन श्रमकरि सब भूप बुलाये ❀ कौतुक देखन ते नृप आये ॥
जो न नरेश चलौ तुम काली ❀ कुरुपति होइ मनोरथ खाली ॥
भीम बचन सबके मन भाये ❀ भूप प्रात गजबाजि सजाये ॥
गये बितान पटल लदि आगे ❀ पटह धेनुमुख बाजन लागे ॥

सो०—निकर नगारे बाज, बोले बिरद पयान के ।
गरजि उठे गजराज, हय हींसत घहरात रथ ॥

बिदुर समेत चढ़े नृप हाथी ❀ चलत भये भीमादिक साथी ॥
उठे निशान चले नरनायक ❀ धाये बिपुल चहूँदिशि पायक ॥
तुरगारूढ़ नागिनि करबालहि ❀ गहिकर घेरिचले नरपालहि ॥
कुरुपति सुन्यो धर्मसुत आये ❀ आतुर लषण कुमार पठाये ॥
उलका द्विरद दुशासन साथा ❀ नायो धर्मराज पद माथा ॥
दै अशीश नृप धर्म समोदा ❀ बैठारेउ कुरुपतिसुत गोदा ॥
मुक्तमाल दीन्ह पहिराई ❀ दिये बिबिध पकवान मिठाई ॥
कीन्ह बिदा कुरुनाथ कुमारा ❀ आप बितान बीच पगु धारा ॥

दोहा—तेहि अवसर आवत भयो, धर्मराज रनिवास ।
त्यागि त्यागि पटपालकी भीतर गई अवास ॥

लषण समेत बिदुर इत आई ❀ सकलकथा कुरुपतिहि सुनाई ॥
कुरु रनिवास सबन सुधिपाई ❀ मिलन द्रुपद तनया कहँ आई ॥

सुनि आवत दुर्योधन रानी ❀ चलीं मिलनहित सकल सयानी ॥
तजि नरबाहन सब रनिवासा ❀ मिलीं द्रौपदी सहित हुलासा ॥
करि सबबिधि सबकहँ सतकारा ❀ भाँति अनेक भई जेवनारा ॥
कुरुपति बन्धुन की सब रानी ❀ निजनिज भवन गमन कृत भारी ॥
चलन चहेउ दुर्योधन रानी ❀ द्रुपदसुता राखेउ गहि पानी ॥
करन धर्मसुत कै पहुनाई ❀ भूरि बस्तु कुरुनाथ पठाई ॥
अशन पान करि धर्मजराजा ❀ लीन बोलि द्विज साधु समाजा ॥
बैठे युधिष्ठिर भाइन लैके ❀ बिप्रन सहित सुआसन दैके ॥
द्रुपदसुता अरु पाण्डव रानी ❀ सोहहिं पटल कपाट सयानी ॥
लग्यो पुराण सुनन तब भूपा ❀ हरिकी कथा रसाल अनूपा ॥

सो०—हरिकी कथा रसाल, कहन लगे द्विज विदुषवर ।
सुनत धर्म महिपाल, जहँ तहँ दरवानी खड़े ॥

इहाँ राय दुर्योधन निरयस ❀ सञ्जय ते तब कहत गयो अस ॥
अब तुम जाहु धर्मसुत ठाँई ❀ भा शकुनीकर मन्त्र सहाई ॥
कहेउ धर्मसुत ते समुभाई ❀ प्रात द्यूत खेलहि इत आई ॥
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये ❀ आतुर धर्मराय पहँ आये ॥
भूप समीप लीन बैठाई ❀ तब सञ्जय बोलेउ रुख पाई ॥
तुमहि प्रात कुरुनाथ बोलावो ❀ द्यूतकर्म हित साज बनावा ॥
कहेउ भूप सञ्जय सुनु बानी ❀ मिलबप्रात सबकहँ हम आनी ॥
सुनि सञ्जय उठि आतुर आये ❀ धर्मबचन कुरुपतिहि सुनाये ॥

दोहा—सुनहु भूप सञ्जय कह्यो, यह कह धर्मजराइ ।
स्वजनसहितकुरुपतिहिंमैं, प्रातभेंटिहौंआइ ॥
सबलसिंह सञ्जय बचन, सुनिकौरवकुलनाथ ।
जात भयो विश्रामथल, युवती वृन्दन साथ ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषाकृतेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

तेहि रात्रीकर भयो विहाना ❀ पाण्डव गये द्रोण अस्थाना ॥
संग भूमिसुर साधु समाजा ❀ नमत द्रोणपद पाण्डवराजा ॥

परत दण्डवत धर्मज चीन्हा ❋ द्रोण उठाइ लाइ उर लीन्हा ॥
पाइ अशीश भेंटि सब भाई ❋ मिले द्रोणनन्दन पुनि आई ॥
पूछी कुशल प्रश्न नृप आछे ❋ तब कुरु कही कुशल सब पाछे ॥
कहहु कुशल सब धर्मकुमारा ❋ बोले बचन भूप श्रुतिसारा ॥
नाथ कुशल सबबिधि अनुगामी ❋ तव अशीश मोरे शिर जामी ॥
माँगी बिदा भूप शिरनायो ❋ तुरत पितामह के गृह आयो ॥
परशि चरण नृप द्वौ कर जोरा ❋ लखि हरषे मन गङ्गकिशोरा ॥

भीष्म उवाच ॥

दोहा–पुत्र युधिष्ठिर भद्र तब, होइसोआयसुदीन्ह ।
करणीकुरुपतिकीसमुझि, सजलनयनकछुकीन्ह ॥

बहेउ युगल तनु प्रेमप्रबाहा ❋ आयसु माँगि चले नरनाहा ॥
बुद्धिचक्षु के मन्दिर आये ❋ पितु भ्रातापद शीश नवाये ॥
धरम आगमन सुनि सुख पाये ❋ परम प्रीति मतिदृग उर लाये ॥
परत चरण लखि पाँचौ भाई ❋ बरबस भूप लिये उर लाई ॥
रहे भूप तेहि थल घरि चारी ❋ करत प्रीति मतिदृग बैठारी ॥
उठि धर्मज नाये पद शीशा ❋ बिदा कीन नृप दिये अशीशा ॥
चले समाज समेत भुवारा ❋ कुरुपति के मन्दिर पगुधारा ॥
आवत देखि धर्म नरनाथा ❋ उठे भूप भट यूथप साथा ॥
मिलि अनेकबिधि करि सतकारा ❋ कुशल पूछि आसन बैठारा ॥

दोहा–भेंटभलीविधियगलनृप, बहु आदर बहुभाइ ।
धर्मराय देखेउ बहुरि, रविनन्दन गृह आइ ॥

रविसुत सुनेउ धर्मसुत आये ❋ बिसासेन कहँ तुरत पठाये ॥
आगे मिलत चरणगहि रहेऊ ❋ चिरंजीव अधरम करि रहेऊ ॥
सुत समेत रविसुत पहँ आये ❋ मिलत परस्पर चषजल छाये ॥
कुशल प्रश्न पूछत मृदुबानी ❋ गये अँगारमती जहँ रानी ॥
धर्महि देखि रानि सुख भरेऊ ❋ भीमादिक भ्रातन आदरेऊ ॥
लखि सतकार बिपुल सुखपाये ❋ आतुर भूप बिदुर गृह आये ॥

मिले कृपहिं नृप अति हित तेरे ❋ आवत भये बहुरि नृपडेरे ॥
खान पान करि पति जगतीके ❋ पुनि सोहैं सिंहासन नीके ॥
रही तम्बूरनकी ध्वनि माची ❋ बारबधू बहु बृन्दन नाची ॥

दो०—करत हास्य भीमादिसब, लखि अप्सरा ललाम।
यहि प्रकार आनन्दते, बिगत भई निशियाम॥

तेहि अवसर संजय तहँ आये ❋ लै सँदेश कुरुनाथ पठाये ॥
खेलन अक्ष चलहु नृप आजू ❋ तुमहिं बोलावत कौरवराजू ॥
संजय बचन भूप सुनि लीन्हा ❋ नहिं ताकर प्रति उत्तर दीन्हा ॥
बिप्रवृन्द तेहि अवसर आये ❋ प्रथम भूप उठि शीश नवाये ॥
दीन्हे सबन यथोचित आसन ❋ बहुरि आप बैठे सिंहासन ॥
गायक नर्त्तक बदन दुराई ❋ रहे चुपाइ भूप रुख पाई ॥
वेद ऋचा द्विजबृन्दन गाये ❋ सुनि बश प्रेम सभा मनभाये ॥
गावहिं बिदुष सकल गुण पूरे ❋ बिबिध प्रकार बजाइ तँबूरे ॥
होतहि प्रात धर्म के जाये ❋ गन्धारी गृह आतुर आये ॥
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई ❋ दीन्ह अशीश मातु सुखदाई ॥

सो०—दासीबृन्दबिशाल, दीन्हे मञ्च अनेक धारे।
बैठे धर्म नृपाल, सचिवसखा भाइन सहित॥

कनक प्रयंक बिराजत रानी ❋ जनु सोहात कैलास भवानी ॥
उठि नरनाह रजायसु माँगा ❋ बन्दि मातुपद अति अनुरागा ॥
अति बल कुरुनन्दन के भाई ❋ सबके भवन धर्मसुत जाई ॥
भेंटत सबहि गये दिन चारी ❋ आई काल निशा भयकारी ॥
दीपक श्राद्ध अद्भुत कीन्हा ❋ बिपुलद्रव्य महिदेवन दीन्हा ॥
कीन्हेउ श्राद्ध बुद्धिदृग एका ❋ धरिदीन्हे मणिदीप अनेका ॥
गजपुर प्रकटि रही उजियारी ❋ भयो बिनाश निशातम भारी ॥

दो०—जात भयो ताही समय, सभा भवन कुरुनाथ।
बिकरण दुश्शासनकरण, सौबल शकुनीसाथ॥

दिया किंकरन डारि गलीचा ❋ अद्भुत बसन परे बिचबीचा ॥

बैठि गयो कुरुनायक जाई ❀ आवन लगे नृपति समुदाई ॥
बाह्लीक गंगासुत आये ❀ भूरिश्रवा बृषसेन सोहाये ॥
युद्धामन्यु अलम्बु उलूका ❀ मगहय बन्धु चतुर अहिमूका ॥
सोमदत्त शशिबिन्दु सुबेशा ❀ सैन्धवपति अरु शल्य नरेशा ॥
आइ गये नृप तीस हजारा ❀ रहत सदा जे कुरु दरबारा ॥
करहिं वकीलति निजमहि हेतू ❀ अचल करहिं कौरव कुलकेतू ॥
आये सभा वकील घनेरे ❀ जे हित करत नरेशन केरे ॥
कौरव नायक के शत भाई ❀ आये साथ सुभट समुदाई ॥

सो०—तेहि अवसर गे आइ, बेतपाणिगण गुणनिपुण ।
दीन सबन बैठाइ, यथा उचितआसनसबन ॥

दो०—द्रोण कृपा भीषम करण, आवत लखि कुरुनाथ ।
सहित सभा संभ्रम उठे, बैठारे गहि हाथ ॥

आये बहु मतंग पुर बासी ❀ सचिव महाजन जे गुणरासी ॥
सबहि नरेश कीन्ह सतकारा ❀ आवत देखे द्रोणकुमारा ॥
करि आदर अनेक नरनाहू ❀ कहेउ धर्मसुत पहँ तुम जाहू ॥
बेतपाणि तब खबरि जनावत ❀ सहित समाज युधिष्ठिर आवत ॥
तब लग धर्मराज पगु धारा ❀ जहँ तहँ नृपबहु करत जोहारा ॥
मिले अग्र आतुर दुर्योधन ❀ बैठारे करि बिबिध प्रबोधन ॥
अति प्रताप कुन्तीके बालक ❀ सोहत सभा प्रजाप्रति पालक ॥
तेहि अवसर कुरुपतिरुख पाये ❀ पंसासारि दुशासन लाये ॥
दोन्हौ धरि अजीतिरिपु आगे ❀ करगहि भीम बिलोकन लागे ॥
सो कुरुपति निज हाथ डसाई ❀ लिये धर्मसुत अक्ष उठाई ॥
फरकेउ अशुभ नयन भुज बायें ❀ उर थरहरेउ छींक भइ दायें ॥

सो०—दिये धर्मसुत डारि परेउ न पांसा जो कहेउ ।
शकुनीलीन सँभारि, फेंकेउ कहि नाहिं पव परेउ ॥

धर्मराज पांसा महि मारे ❀ बोले बचन नयन रतनारे ॥
खेल हमार अहै कुरुपति ते ❀ शकुनी ते खेलहिं केहिमति ते ॥

कहहु कुमन्त्र लागि श्रुतिमाहीं ❀ युद्ध जुवां लायक तुम नाहीं ॥
शकुनी लज्जित निपट सभामा ❀ कुरुपति हृदय रोषतरु जामा ॥
हृदय रोष ऊपर छल कीन्हा ❀ बिहँसि राइ प्रतिउत्तर दीन्हा ॥
हम शकुनी कहँ नृप बैठारा ❀ यामें कछु न अकाज तुम्हारा ॥
शकुनी हारहि सो हम देहीं ❀ अङ्गीकार जीति करि लेहीं ॥
हम हारे शकुनी के हारे ❀ बडि अनुचित नृपज्ञान बिचारे ॥
जो निज हानि भूप तुम जानो ❀ निज किंकर तुमहू कोउ आनो ॥

सो०– हम खेलब तव साथ, होइ नीच सब भाँति जो।
कह्यो बचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिरमौरमम ॥
धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनो।
हमहिं न ओछि महीश, मैं खेल नृपसरासिमहँ ॥

दोहा–धर्मराज सन भीम तब, कहन लगे कर जोरि ।
छल है जुआं न खेलिये, सुनिये विनती मोरि ॥

चलि नरेश कीजे निज राजू ❀ शकुनी ते खेलिय केहि काजू ॥
अति हित भीमसेन कै बानी ❀ युगल बन्धु पारथ मनमानी ॥
बरजत सकल धर्ममहराजहि ❀ भीष्मादिक सबसहित समाजहि ॥
जनि पांसा अब धर्म चलावहि ❀ बाम बिधाता कछु नहिं भावहि ॥
होनहार को सकत मिटाई ❀ बोले धर्मराज सुनु भाई ॥
जो यह बोलत कुरुपति बाता ❀ छलबिहीन लागत मोहिं ताता ॥
क्षत्री धर्म कांछ हम कांछे ❀ युद्ध जुवां पग परइ न पाछे ॥
यकदिशि काल प्रचारहि जबहूं ❀ क्षत्रिधर्म धरि मुरिय न तबहूं ॥
त्यहिमा फिरि आपुसिकर बीचू ❀ पाछे पांव धरै सो नीचू ॥

दोहा–अस कहि धर्म नरेश तब, पांसालीनउठाय ॥
दशा संकटा कठिन है, निपट रही नियराय ॥

मन्द बर्षपति गतबल भयऊ ❀ रबि कुदृष्टि मूरतिथल गयऊ ॥
सबग्रह अशुभपरे थलही थल ❀ बर्षप बर्ष त्रयोदश निर्बल ॥
कहहिं बिदुषजन नृपहि शरिष्टा ❀ महाराज दिन तुमहि अरिष्टा ॥

जब असबचन सुनहिं कुरुनायक ❀ लागहिं हृदय कठिन जनुशायक॥
भावीबिश नृप मनहिं न भाये ❀ भाषि दावँ निज अक्ष चलाये॥
पुनि शकुनी कर लीन उठाई ❀ कहेउ करण कुरुपति रुख पाई॥
धर्मज बृथा न बड़ श्रम कीजै ❀ पाँसा में कछु होइ बदीजै॥
काढ़ि कराठते गज मणि माला ❀ सो धरिदीन धर्म महिपाला॥
हरि तमालमणि कुरुपति राखी ❀ पाँसा चलन लगे बल भाखी॥
कपट अक्ष शकुनी सम्भारे ❀ कहत परत सोइ बिनहिं बिचारे॥
होत जीत कुरुनायक केरी ❀ हारे धर्मज वस्तु घनेरी॥

दोहा—ताहीसमय बुलाइयो, निज कुरुनाथ दिवान।
आयो आयसुमानिसोइ, परमप्रपञ्चनिधान॥

हारि जीति जो होइ हमारी ❀ सो तुम सकल लिख्यो सम्भारी॥
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई ❀ लागेउ करन शूद्रपति सोई॥
रहे जे धर्म कोश गम्भीरा ❀ जीति लिये मुक्तामणि हीरा॥
मोती रतन जवाहिर जेना ❀ मूंगा कञ्चन कोश समेता॥
शकुनी कपट अक्ष बल जीते ❀ चितभ्रम धर्मज भे सुखबीते॥
जीति बस्तु धर्मज गृह राखी ❀ बोलहिं बिकल भूमिपतिसाखी॥
शकुनी पुनि पुनि अक्ष चलाये ❀ जीति देखि कुरुगण सुखपाये॥
परहिं न धर्मराज के पांसे ❀ चकित लोग सब देखि तमासे॥
आदि बरादि लोह अरु चांदी ❀ रहेउ न शेष ताम्र कोशादी॥
द्रब्य जो होति धातु षट दोई ❀ रहेउ न धर्मराज गृह कोई॥

दोहा—शकुनीअक्षसँभारिकै, फिरिलीन्हेउनिजहाथ।
कपट भेदमहँ दक्षअति, पक्ष धरे कुरुनाथ॥

अष्टधातु आयुध भयकारे ❀ क्षणमहँ सकल धर्मसुत हारे॥
तरकस कवच धनुष दस्ताना ❀ चर्म त्रिशूल कटार कृपाना॥
शक्ति कराल अस्त्र सबचीन्हे ❀ पृथक पृथक धरिधर्मज दीन्हे॥
तजे अक्ष शकुनी छलकारी ❀ यहि बिधि गये धर्मसुत हारी॥
बाढ़ेउ रोष धर्मसुत अङ्गा ❀ धरेउ सकल दल नृप चतुरङ्गा॥

तब शकुनी छल अक्ष चलाये ❀ कोरे कागज जीति लिखाये ॥
धरेउ धर्म महिषी गण गाई ❀ जीते शकुनी अक्ष चलाई ॥
ब्याघ्र कुरङ्ग सृगाल शशादी ❀ कानन नर बानर चित्तादी ॥
पक्षी बहु बिचित्र बहु भाँती ❀ रङ्ग रङ्गके अगणित जाती ॥
कनक पींजरा सोहहिं पाँती ❀ लखि शोभा भारती भुलाती ॥

दोहा—नृपआयसुअनुचर सकल, सेवहि खगमृग वृन्द।
प्रथम नाम कहि धर्मसुत, धरे विगत आनन्द ॥

करते शकुनि अक्ष जब डारैं ❀ धर्म हारि सब लोग पुकारैं ॥
बाहन रथ शिबिका सुखपाला ❀ ऊँट महिष अरुशकट बिशाला ॥
यक यक भिन्न भिन्न धरिदीन्हे ❀ शकुनी जीति कपटबल लीन्हे ॥
धरेउ नरेश तुरंगम सामा ❀ केहेउ पृथक शाला प्रतिनामा ॥
यहि प्रकार धरि धर्मज बाजी ❀ हारे सकल तुरंगम ताजी ॥
लखि आपन सबभाँति बनाऊ ❀ रोम रोम हरषे कुरुराऊ ॥
धर्मज नयन बामभुज फरके ❀ भयबश अङ्ग धकाधक धरके ॥
रहेउ न चेत भयो मतिभङ्गा ❀ धरेउ धर्मसुत यूथ मतङ्गा ॥
देश देश जहँ मत्त समाजा ❀ धरेउ दावँ प्रति धर्मजराजा ॥

दोहा—पांसा शकुनी पाणि गहि, देत भूमि जब डारि।
करत कुलाहललोगसब, निज निज दाँव पुकारि ॥

हारे धर्मराज गज सर्बा ❀ शकुनी अक्ष लेइ सह गर्बा ॥
रहत सदा जे भूपति सङ्गा ❀ शेष रहे ते सकल मतङ्गा ॥
पृथक पृथक कहि भूपति नामा ❀ धरेउ नरेश जिनहिं बिधिबामा ॥
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे ❀ भइ शिरहारि धर्मसुत केरे ॥
चकित लोग सब देखि तमासा ❀ कहैं न परत धर्मसुत पांसा ॥
पुनि पुनि परत दावँ कुरुपति को ❀ को जानै परमेश्वर गति को ॥
सुनिकर सरुष धर्मसुत पाहीं ❀ बाहुलीक आदिक पछिताहीं ॥
शकुनी पाण्डव सुतहि प्रचारा ❀ लीन जीति भाजन भण्डारा ॥
कञ्चन आदि जड़ित मणिभाजन ❀ हारे सकल धर्म महराजन ॥

सो०—बसन कोश गे हारि, रङ्गरङ्ग के अति सुभग ।
दीन्हे पांसा डारि, शकुनी सांचे कपटके ॥
दोहा—देश देशके पाण्डवन, देत भूप अवनीश ।
सकलपत्रधरि दावँपर, दीन्हेउ धर्म महीश ॥
शकुनी पाँसा तमकि चलाये ❀ कुरुपति जयति निशान दिवाये ॥
बोलि लिये तब धावन चारी ❀ द्विरद दुमत्त दुमुख दुर्द्धारी ॥
कहेउ कि हम जीते नृपभारी ❀ जे नहिं मानत आनि हमारी ॥
एक बिहीन धर्म महिपालहि ❀ जे न डरत सपनेहु रणकालहि ॥
ते अब सहज जीति हम पाये ❀ बिन प्रयास बिधि ताप बुझाये ॥
पठवहु बोलि सकल नरनाहू ❀ आवहिं नहिं सेना सजि जाहू ॥
देहिं दण्ड नत आनहु बाँधी ❀ देश देश प्रति करहु उपाधी ॥
दण्ड चतुरगुण दशगुण लेहू ❀ मिलहिं न तेहिं मम शासन देहू ॥
दुर्योधन कर आयसु पाये ❀ निजनिज कारज सकल सिधाये ॥
अश्वारूढ़ अनेक बुलाये ❀ देश देश लिखि पत्र पठाये ॥
दोहा—मिलहु आइ आतुर निपट, त्यागि सकल सन्देह ।
देहु दण्ड कुरु भूपतिहि, नत जैहौ यमगेह ।
जहँ कहुँ बीर धीर नृपजाना ❀ साजि विकटदल कीन पयाना ॥
जिनते बैर भाव अधिकाई ❀ करि उपाय तहँ करैं लराई ॥
सपनेहु पाण्डुसुवन बल पाई ❀ कीन अवज्ञा जेहि सुधि आई ॥
करहिं उपाधि तासु सँग नाना ❀ जेहि बिधिहोय तासु अपमाना ॥
दण्ड चतुरगुण शतगुण लेहीं ❀ लखि बलहीन त्यागि तब देहीं ॥
काहुहि बाँधि लेहिं कार सङ्गा ❀ काहुहि करहिं समरमहँ भङ्गा ॥
यह कुरुपति अतिशय सुखपावा ❀ दुर्दर्शनहिं बहोरि बुलावा ॥
तात सजहु तुम दल चतुरङ्गा ❀ लेहु धीर भट यूथप सङ्गा ॥
महिषमती नगरी कहँ जाई ❀ धरिआनहु निशिचर समुदाई ॥
जहँ शिशुपाल सुवन बिख्याता ❀ किये दण्ड बिनु शत्रु अजाता ॥

दोहा—दण्ड बाँधे लीजै उचित, कीजै अवशि पयान।
सांज दल दुर्दर्शन चले, बाजन लगे निशान ॥

देखि युधिष्ठिर अति दुखपावा ❀ दुर्योधन ते बचन सुनावा ॥
नीति नरेशन के असि होई ❀ जो जस दण्ड उचित सो देई ॥
हम अदण्डकृतसुतशिशु पाला ❀ तुम पठये दल अतिविकराला ॥
जो है है महि दीन हमारी ❀ तुम ते ना पाई भिखियारी ॥
मखमह गयो तासु पितु मारा ❀ किये दण्ड बिनु युगल कुमारा ॥
तुमहिं उचित है तब मतिवन्ता ❀ लेहु दण्ड जनि नृप प्रयन्ता ॥
यह प्रतिपालहु बात हमारी ❀ मनभावहि तस करहु अगारी ॥
तुमहिं नरेश उचित यह बाता ❀ बार बार कह शत्रु आजाता ॥

सो०—धम्मराज के बैन, सुनि बोले कुरुनाथ तब ।
हमैं उचित यह हैन, करिय दण्ड बिन चैद्यसुत ॥

अवनी प्रति अदण्ड करि देहीं ❀ हम तजि राज्य कमण्डलु लेहीं ॥
तव मुख कहत बनत यह बाता ❀ अपर न काहुहि सुनत सोहाता ॥
धर्मराज सुनि कुरुपति बानी ❀ गे जरिगात तेज बल हानी ॥
भीमसेन फरके भुज दण्डा ❀ अधर फरहरत रोष प्रचण्डा ॥
पारथ भयो बिलोचन लाला ❀ लखि आनर्थक धर्मभुवालो ॥
नाहि न समय रोष कर भ्राता ❀ किमि समुझै मूरख अज्ञाता ॥
परम सुजान चतुर जे बीरा ❀ समय बिचारि धरैं मन धीरा ॥
जाहि अभय हम दीन बसाई ❀ अब तापर दारुण भय आई ॥
सकल हारि कर मोहिं न शोचू ❀ जस यह परेउ परम संकोचू ॥

सो०—निजनयननलखिमाहिं, हो दुसहदुखनिपटलखि।
तात नतोहिबिधिसाहिं, समय जानि धीरज धरहु ॥
शपथ हमारि हजार, आयसुबिन जानकरियमह।
त्यागहु सकल बिचार, तात भये अपमान कर ॥

तब बोले सहदेव सभागे ❀ का देखो देखिहो अब आगे ॥
अबते भूप ख्याल तजि दीजे ❀ रक्षत प्राण भवन भग लीजे ॥

नत दुर्योधन नृप अति नीचू ❋ मागहि सबहि बुलाय कुमीचू ॥
नहिं सहदेव बचन मन भाये ❋ धर्मराज कर अक्ष उठाये ॥
भीम बहोरि कहेउ सुनु भ्राता ❋ चारि याम यामिनि रहि जाता ॥
याम सपाद दिवस चढ़िजाई ❋ अब अवसर नृप चलिय नहाई ॥
भीम बचन सुनि कह कुरुराजा ❋ शकुनी ते भागे बड़ि लाजा ॥
प्रथम हीनकरि चहत न खेले ❋ तासु संग बड़ि हास पछेले ॥
कुन्ती सुत सुनि अति दुख पाये ❋ राखि दाँव बड़ अक्ष चलाये ॥

सो०—परे न धर्मज अक्ष, शकुनी लीन उठाय कर ।
कपट भेद महँ दक्ष, पुनि पाँसा फेंको चहत ॥

दोहा—धर्मराज निजराज्य सब, धरि दीन्हे यकदाय ।
जीतिलीन्हशकनीसकल,बिनश्रमकपटउपाय ॥

सो०—धरन लगे नर देव, राज्यसकलचित भ्रमबसी ।
कहि दीन्हेउ सहदेव,चारि बरणब्राह्मण बिना ॥

ब्राह्मण कहहु जाहि किमि हारे ❋ सब प्रकार शिरमोर हमारे ॥
लखि सहदेव करि चतुराई ❋ बिहँसि रहे कुरुनाथ चुपाई ॥
राज्य जीति कुरुनायक लीन्ही ❋ गह गह जयति दुन्दुभी दीन्ही ॥
कपट बितान शेष जे रहेऊ ❋ सो धरि बहुार धर्मसुत कहेऊ ॥
सहित समाज धरे सहदेऊ ❋ शकुनी जीते छल बल तेऊ ॥
देश कोष समत धरि दीन्हा ❋ नकुल जीति कुरुनायक लीन्हा ॥
पारथ धरेउ सहित सब सामा ❋ हय गज बसन कोष धन ग्रामा ॥
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये ❋ परमानन्द निशान दिवाये ॥
धरेउ दांव नहि रहेउ सँभारा ❋ हारे भूप सकल परिवारा ॥
बहुरि भूप युत सहन भँडारा ❋ हारे भीम सहित परिवारा ॥
हारि गये कुरुनायक जीते ❋ गयो रङ्क पद भागि महीते ॥
दीन्हे द्विजन याचकन दाना ❋ हय गज भूमि रतन मणि नाना ॥
गजपुर रहेउ न रङ्क अभागी ❋ केवल धर्म धुरन्धर त्यागी ॥

दोहा—चितभ्रमचकितअजातअरि,धरिशरीरनिजदीन्ह ।
धर्म धुरन्धर धीरधर, नहिं विचार कछुकीन्ह ॥

दीन्हे शकुनी अक्ष उलारी ❀ किंकर भये धर्मसुत हारी ॥
छूटि राज्य पद दास कहाये ❀ भये अचेत रहे शिर नाये ॥
पुनि पुनि शकुनी कहेउ नृपाहीं ❀ जो कछु शेष रहा गृह माहीं ॥
उठत ख्याल अब सो धरिदीजै ❀ पाछे पगधरि अयश न लीजै ॥
धर्म सुतहिं कुरुनाथ प्रचारा ❀ गूढ़ गिरा कहि बारहिं बारा ॥
तुम नृप विदित सत्यव्रतधारी ❀ परहिं न पद ये कर्म पछारी ॥
अटपटि कुरुनन्दन कै बानी ❀ समुझि न परी तर्कछलसानी ॥
उर बरि उठो रोष दुखज्वाला ❀ धरेउ भूप तनया पञ्चाला ॥
बान्धव प्रियजन अति दुख भरेऊ ❀ मानहुँ अन्ध महानद परेऊ ॥

सो०—शकुनी सबन पुकारि, साखी करि नरनाह बहु।
दीन्हेउ पाँसा डारि, हारिगये नृप धर्मसुत ॥
लखि अनरथकी बात, भीमादिक भाई सकल।
भस्म भये सब गात, मानहुँ बिनु मारे मरे ॥

धर्मराज तन सुधि बिसराये ❀ करते उठत न अक्ष उठाये ॥
भयो शोकबश धर्म भुवारा ❀ मनहुँ कमलबन परेउ तुषारा ॥
भीषम बिदुर निपट दुख पावा ❀ द्रोण कृपा महि शीश नवावा ॥
बाहुलीक उर दुख अधिकाई ❀ गये सभा तजि गृह अकुलाई ॥
मन बिस्मय बसि द्रोण कुमारा ❀ काधौं कीन चहत करतारा ॥
सचिव महाजन गज पुर बासी ❀ बिलपत बिकलपरी जनुफाँसी ॥
समुझि समुझि कुरुनाथ सुभाऊ ❀ होत हृदय नहिं धीरज काऊ ॥
रबि सुत शकुनी उर आनन्दा ❀ मनहुँ उदधि लखि पूरणचन्दा ॥

दोहा—दुश्शासन आदिकअनुज, सकल प्रफुल्लितगात।
रोम रोम कुरुनाथ के, हर्ष न हृदय समात ॥

हीर चीर गज बाजि लुटाये ❀ द्विजन दाननानाबिधि पाये ॥
भे याचकगण सकल अयाची ❀ बिजय नगारे की धुनि माची ॥
जीती कुरुपति पाण्डव रानी ❀ कहेउ धर्मसुत ते यह बानी ॥
अनुचर भयो समेत समाजा ❀ करहु मानि मम आयसु काजा ॥

कह्यउ युधिष्ठिर आयसु होई ❀ माथे मानि करब हम सोई ॥
रूख बदन करि कह कुरुराई ❀ द्रुपद सुता कस देहु मँगाई ॥
सदसि बीच सुनि निर्भय बानी ❀ रोषज्वाल सुनि उर सरसानी ॥
धरि धीरज रिस सो उरमारी ❀ मूर्च्छिपरेउ नृप अवनि दुखारी ॥
रह्यउ न चेत कह्यउ कछु नाहीं ❀ अटकिरहेउ मणि खम्भन माहीं ॥

दोहा—सबलसिंह धर्मजदशा, लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहिं, परम रोष सरसान ॥

इति श्रीमहाभारते सभापर्वभाषाकृते दुर्योधन धर्म पराजय
द्यूतवर्णननामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दोहा—सुनिये नृप निज वंश के, पुनि चरित्र सुखदाय ।
बोले दुर्योधन बहुरि, कामी प्रात बुलाय ॥

सूत प्रात कामी ज्यहि नामा ❀ करत सदा कौरवपति कामा ॥
अतिगम्भीर बचन नृप कह्यऊ ❀ धर्मराज महराज न रह्यऊ ॥
भये आजुते दास हमारे ❀ सब परिवार द्रौपदी हारे ॥
सो न युधिष्ठिर देत मँगाई ❀ द्रुपद सुता तुम आनहु जाई ॥
ल्यावहु सभा द्रुपद की जाता ❀ तुम सब विधि प्रपञ्चमग ज्ञाता ॥
कह्यउ संदेश गये पति हारी ❀ अब तुम सेवहु सेज हमारी ॥
सुनत प्रात कामी उठि धावा ❀ आतुर धर्म शिबिर कहँ आवा ॥
दुर्योधन कर सकल सँदेशा ❀ कह्यउ शीलतजि सकल भदेशा ॥
चलहु सभा बोलत कुरुनाथा ❀ नतु धरि लैजैहैं निजहाथा ॥

सो०—सुनत सूत मुखबात, भयवश कांपी द्रौपदी ।
विकल भये सब गात कौरवनाथसुभावलखि ॥

धरि धीरज कह द्रुपद कुमारी ❀ सुनहु सूतपति बात हमारी ॥
कस यह बचन कहा कुरुराई ❀ राजसभा त्रिय केहिविधि जाई ॥
कह्यो सूत यह आयसु मोहीं ❀ धरि लैजाहु सभा महँ तोहीं ॥
सुनत निठुर सारथि मुखबानी ❀ अति सरोष दुर्योधन रानी ॥
कहेउ सूत ते बचन रिसाई ❀ जानि परत तुम्हरे शिर आई ॥

भूले कहे भूल कहि तेरे ❋ गये बिसार भुज पाराडव केरे ॥
समुझि परत यह हैतु बिशेखा ❋ चहत नयन तव यमपुर देखा ॥
बोलेउ सूत सुनहु महरानी ❋ आयउँ मैं नृप आयसु मानी ॥
बचन तुम्हार शीशधरि जैहौं ❋ दोष न मैं कुरुपति पहँ पैहौं ॥

दोहा-सुनत सारथी के बचन, तुरत दीन दुरियाय।
रूख देखि रानी बदन, गयो भागि भयपाय ॥

कहि सन्देश सकल तेहि दीन्हा ❋ सुनि कुरुनाथ क्रोध अति कीन्हा ॥
दुश्शासनहिं बुलाय नरेशा ❋ कहेउ सरोष सूत सन्देशा ॥
पुनि पुनि कहत रोष दारुण अति ❋ केश पाणिधरि ल्याव घसीटति ॥
यह शठ पाराडुसुवन भय पाई ❋ सक्यउ न मूढ़ द्रोपदी ल्याई ॥
भीम बाहु लखि कम्पित गाता ❋ अजहूँ गहवर कहत न बाता ॥
सबते प्रिय निज जीवन जानी ❋ सकल मूढ़ नहि धीरज आनी ॥
चलेउ दुशासन आयसु मानी ❋ आयउ द्रुपदसुता जहँ रानी ॥
आवत सरुष दुशासन देखी ❋ पञ्चाली भय ग्रसित विशेखी ॥
कहेउ दुशासन सरुष रिसाई ❋ चलु बोलत दुर्योधन राई ॥

दोहा-दुश्शासनके बचन सुनि, द्रुपदसुता अकुलानि।
हमरे तुम सहदेव सम, कहत जोरि युगपानि ॥

तात नीति मग देखु बिचारी ❋ कैसे जाय सभा महँ नारी ॥
जबलगि हमशिरते न अन्हाहीं ❋ पुरुषमुख देखन कहँ नाहीं ॥
मैं रज स्रवत एक पट धारी ❋ सभा गये पति जाय तुम्हारी ॥
तात चलै कर अवसर नाहीं ❋ ननु जातिउँ मैं कुरुपति पाहीं ॥
भीष्मादिक क्षत्री बहु राजा ❋ जात सभामहँ त्रियकहँ लाजा ॥
तात एकान्त बोलि कुरुराई ❋ मैं सब बिधि कहतिउँ समुझाई ॥
मम दिशि ते समुझाइ नरेशा ❋ कहेउ तात अतिभल संदेशा ॥
दुश्शासन तब नैन तरेरे ❋ सुनु री हारि गये पति तेरे ।
कस न बिचार कीन तिन मूढ़ा ❋ म्वहिं समुझावति जिमि मैं मूढ़ा ॥

दोहा-चलतिन तैं त्रिय सदसिकहँ, करति उतरप्रतिगात।
जोरियुगलकरद्रौपदी, कहति विकल अतिबात॥

सुनहु तात तुम नीति निधाना ❋ सो मग नहि तुम जो नहिं जाना ॥
तुमकहँ तात शपथ शत मोरी ❋ कह्यउ तात नहिं राखेउ खोरी ॥
कहहु सत्य तजि जीवन पापू ❋ हारे नृप मोहिं प्रथम कि आपू ॥
हारे होहिं प्रथम निज रूपा ❋ किंकर भये मिट्यउ पद भूपा ॥
दासन के गृह होंहि न रानी ❋ नीति बिचारि समुझु मम बानी ॥
छूटि गये सब नात हमारे ❋ नृप हारे हम जाहिं न हारे ॥
जो मोहिं प्रथम धरेउ नरनाथा ❋ यागि लाजचलिहौं तव साथा ॥
ह्वै किंकरी करौं सब काजू ❋ जो कहिहैं कौरव शिरताजू ॥
बेगि समुझि प्रति उत्तर दीजै ❋ आयसु होय अवश सोइ कीजै ॥

दोहा—सुनि दुश्शासन बचन अस, धायो नैन तरेरि ।
हारि गयो अज्ञान पति, नीति बिचारति चेरि ॥

सो०—कहत कटुक दुर्वाद, रोष भरा धावत भयो ।
देखि जाय मर्याद, भयवश भागी द्रौपदी ॥

जात पुकारत आरत बानी ❋ देखि दुशासन अति रिस मानी ॥
झपटि केश लीन्हेउ गहिहाथा ❋ चलेउ घसीटत जहँ कुरुनाथा ॥
देखि दशा दासिन के वृन्दा ❋ करहिं बिलाप बिपति परिफन्दा ॥
दुर्योधन कर सब रनिवासू ❋ बिलपत गिरत नयनमग आंसू ॥
परी धर्मसुत शिबिर तरापा ❋ गजपुर सकल शोकबश कांपा ॥
गहे दुशासन द्रौपदि बारा ❋ निकसत नाग नगर गलियारा ॥
देखि दशा बिलपहिं पुरबासी ❋ जड़ जंगम खग मृग नृप दासी ॥
जेहिमगनिकसत अन्धकुमारा ❋ देखि बज्र उर जात दरारा ॥
देखत सब जहँ तहँ बिलखाहीं ❋ होत शोर जेहि मारग माहीं ॥

दोहा—देखि झरोखन महल ते, दासी बृन्द हवाल ।
जाय जाय रनिवासप्रति, बिदितकीन्ह ततकाल ॥

सुनिअसिगतिकौरवगण रानी ❋ बिलपहिं सकल हृदय हति पानी ॥
दुर्गति सुनत द्रौपदी केरी ❋ करुणाभवन भवन प्रति घेरी ॥

नाँघत पँवरि पँवरि प्रति जाता ❀ द्रुपदसुता परबश बिलखाता ॥
मोहिं छुड़ाव मातु गन्धारी ❀ बार बार कह द्रुपदकुमारी ॥
भीतर दासिन खबरि जनाई ❀ तजि पर्यङ्क जननि उठि धाई ॥

गान्धारी उवाच ॥

हा पुत्री हा धर्मज प्यारी ❀ बलि बलि जाय मातु गन्धारी ॥
छूट केश उघरि गयो चीरा ❀ बिलपति दासी गण सँग भीरा ॥
आवत जानि मातु गन्धारी ❀ गयो दुशासन बेगि अगारी ॥
जब लगि रानि द्वार पग दयऊ ❀ राज सभा दुश्शासन गयऊ ॥
कोउ मुसक्यात द्रौपदी देखी ❀ करत मूढ़ कोउ तर्क बिशेखी ॥

सो०–करतदयाकोउधीर, कोउधिककहदुश्शासनहिं ।
तजतनयनकोउनीर, कोउनिन्दतभीमादिकन ॥
द्रुपदसुता के केश, गहिखैंचतकरुपतिअनुज ।
बैठे सकल नरेश, मध्यसभा तह लैगयउ ॥

सिंहासन सोहत कुरुराई ❀ जाय समीप दीन ठढ़ियाई ॥
चहुँ दिशि चकित चितैपांचाली ❀ राजसभा लखि थरथर हाली ॥
लज्जाबश नहिं रहेउ संभारा ❀ स्रवत नयनमग ते जलधारा ॥
अतिसुन्दरिलखि द्रुपदकिशोरी ❀ कामिन केरि भई मति भोरी ॥
कहहिं जासु गृह द्रुपद कि कन्या ❀ धन्यधन्य पाण्डवपति धन्या ॥
पुनि पुनि दुश्शासनहिं सराहीं ❀ हे बड़िभागि गही जेहि बाहीं ॥
धन्य आजु दुर्योधन राई ❀ आयसु जासु मानि धरि आई ॥
लोचनलाभ हमहिं जेहि दीन्हा ❀ सुफल जगतमहँ जीवनकीन्हा ॥
धर्मदशालखि कोउ दुखपावहिं ❀ कोउ पछिताइ शीशमहिनावहिं ॥

दोहा–दुश्शासन कह द्रौपदी, का रोवत बेकाज ।
होत न आये सदसिमहँ, चेरिनको बड़िलाज ॥

भीषम बिदुर नाव महि शीशा ❀ द्रोण कृपा उर शोच सरीशा ॥
सकल धर्मशीलन दुख पावा ❀ नीचन के उर आनन्द छावा ॥
शकुनी करण अनन्द समीछे ❀ दुर्योधन करि नयन तिरीछे ॥

दुश्शासन ते कहेउ प्रचारी ❀ बसनहीन करु द्रुपदकुमारी ॥
लै बैठारि देहि मम जानू ❀ बान्धव बेगि कहा मम मानू ॥
उठे दुशासन आयसु मानी ❀ बिकरण कहत जोरियुग पानी ॥
तव मुख बचन न सोहत ऐसे ❀ कुरुकुलतिलक कहत तुम जैसे ॥
बृद्ध द्रोण गुरु भीषम आगे ❀ तुम नृप कहत लाज भय त्यागे ॥
देश देश के भूपति राजत ❀ तुम दुबचन कहत नहिं लाजत ॥
ज्येष्ठ बन्धु के जो त्रिय होई ❀ मातु समान कहत श्रुति सोई ॥

दोहा–क्षण मा तासु उतारि पति, तुम डारी कुरुराज।
अब अस कहत कि जो सुने, होतनीचउरलाज॥

पूरण शशिमहँ कीरति तोरी ❀ जनि महीश डारहु करि थोरी ॥
मानि बिनय मम प्रभु अनुरागी ❀ देहु द्रुपद तनया अब त्यागी ॥
धर्मराज सँग बिन अपराधू ❀ कीन नाथ तुम कर्म असाधू ॥
बिकरण बचन धर्म नय साने ❀ सुनि सरोष रविनन्दन रिसाने ॥

कर्णउवाच ॥

सुनु बिकर्ण तव तन शिशुताई ❀ बृद्ध बचन नहिं शोभापाई ॥
छोट बदन कहेउ बड़ि बाता ❀ सुनि किमि सकै महिपगुरुज्ञाता ॥
है यह सभा सकल गुणखानी ❀ तुम निजजानि अधिक सज्ञानी ॥
गाल फुलाय बचन कहि दीन्हा ❀ चाहत है सबका लघु कीन्हा ॥
वयस न भपन के मत योगू ❀ जानत तुम न हँसत सब लोगू ॥

दोहा–खेलहुसब मिलिबालकन, जाय शरासनबान।
सीख देउ जनि भूपतिहि, हौतुमाशिशुअज्ञान ॥

बालक इव गृह भोजन करहू ❀ निजमन अहमिति नेक नधरहू ॥
दुर्योधन आयसु शिर धरहू ❀ गृहकारज सब सादर करहू ॥
कह विकर्ण नृप सुनु मत जीको ❀ अब नहिं होनहार कछु नीको ॥
जस नृप तस मन्त्री बुधवाना ❀ असकहि गृहनिजकीन्ह पयाना ॥
बहुरि सकोप कहत कुरुराजा ❀ द्रुपदसुता मम देख समाजा ॥
नयन हीन सब सूझत नाहीं ❀ बोलेउ तोहि सभा महँ ताहीं ॥

है यह सभा अन्ध नृप केरी ❋ केहि प्रकार सूझै री चेरी ॥
हैं हम सुवन अन्ध नृपती के ❋ भीमसहित तुम जानत नीके ॥
अन्ध तुम्हैं किमि देखै कोऊ ❋ देखहु सबहि भीम तुम दोऊ ॥

दोहा—देखन हित अन्धी सभा, तुमकहँलीन्हबुलाय।
कीन्हेउममअपमानजिमि, तुमअपने गृहपाय॥

अब द्रौपदी बसन निज त्यागू ❋ बैठि जांघ मम करु अनुरागू ॥
अन्धी सभा न देखै कोई ❋ जानब गति हमहीं तुम दोई ॥
आये चतुर पाँच पति तेरे ❋ भे बिन नयन सभा मिलिमेरे ॥
सूझत तुम समेत बहु भीमहि ❋ करहिं न रोष बृकोदर जीमहि ॥
बहुरि बिलोकि दुशासन ओरा ❋ मानत तैं नहि आयसु मोरा ॥
बेगि द्रुपदतनया नँगियाई ❋ लै मम जानु देहु बैठाई ॥
भूप बचन सुनि भीम कराला ❋ निकसत रोम रोम प्रति ज्वाला ॥
लपट नयन मग प्रकट बिलोकी ❋ लीन गदा रिस रहत न रोकी ॥
बान्धव सकल भीम रुख पाई ❋ भये सरोष सुभट समुदाई ॥
पारथ पाणिगही असि मूठी ❋ कह नृप होति सत्य मम झूठी ॥

सो०—धर्मजबदन निहारि, बिकलसकलरिसमारडर।
दीन गदामहिडारि, भीमबिकल पारथ असिहि॥

रहे पाण्डुसुत सब शिर नाई ❋ वारिज नयन वारि सरसाई ॥
चलेउ दुशासन रोष रिसाता ❋ कह कुरुपतिहिबिदुर असिबाता ॥
बचन हमार भूप सुनि लीजे ❋ पीछे अम्बर हरण करीजे ॥
प्रथम कथा शुभ सुनहु नरेशा ❋ अग्निशर्म ब्राह्मण यक देशा ॥
राक्षस यक प्रहर्ष अति भारी ❋ कीन युगल मिलि मित्राचारी ॥
यक यक पुत्र दुहुन के होई ❋ निर्भय सकल भाँति भय सोई ॥
गये काल भे युगल सयाने ❋ मित्राचार परस्पर माने ॥
गये अहेरे दोऊ यकदाई ❋ फिरत विपिन कन्या यक पाई ॥

दोहा—राक्षससुत तो यह कहा, कन्या को हम लेह।
बिप्र कहै दे मित्र मोहिं, परी दुहुन अवरेह॥

युगल परस्पर शोर मचावा ❀ पुनि यह मन्त्र ठीक ठहरावा ॥
जा कहँ चाहै अब यह कन्या ❀ पावै सो यह त्रिभुवन धन्या ॥
झगरत गे कन्या के पासा ❀ करहु दया जापर विश्वासा ॥
जासु हृदय डारहु जयमाला ❀ पावै सोइ कहु बचन रसाला ॥
कन्या कहेउ सुनौ मतिवन्ता ❀ जो सरिष्ट सोई मम कन्ता ॥
राक्षस कहेउ कि मैं गुणवाना ❀ कह द्विज मैं सब विधि सज्ञाना॥
झगरत अग्निशर्म पहँ आये ❀ कहेउ वाद निजपद शिरनाये ॥
दुइमा को सरिष्ट को नामी ❀ भाषहु सत्य बचन तम स्वामी ॥

दोहा—पुनि पुनि बिनती करतहौं, कहिये करुणाऐन।
मित्र पुत्र निज पुत्र ते, तब बोले द्विज बैन ॥

हमते बाद बिनाशि न होऊ ❀ जाउ प्रहर्ष तीर तुम दोऊ ॥
चले बिवाद करत स्वर ऊंचे ❀ तुरत जाय तेहि भवन पहूँचे ॥
तब प्रहर्ष पूछत मन लाई ❀ का झगरत हा तुम दोउ भाई ॥
तब वे कहन लगे निज स्वारथ ❀ ज्यहि प्रकार जस भयोयथारथ॥
तुम प्रहर्ष करि कहो बिचारा ❀ दुइमा कौन सरिष्ट कुमारा ॥
राक्षस सुनत मौन होइ रहेऊ ❀ तब बिचारि दूनौसन कहेऊ ॥
कश्यप ऋषिहि पूछि मैं आवों ❀ वेगि यथारथ तुम्हैं सुनावों ॥
उठि प्रहर्ष ऋषि के गृह जाई ❀ कीन प्रणाम चरण शिरनाई ॥

दोहा—कीन्ह बिनय करजोरि कर, बैठेउ आयसुपाय।
ऋषि पूछेउ आये कहाँ, कहिये राक्षसराय ॥

ऋषि बचन सुनि प्रीति समेता ❀ लाग्यो कहन प्रहर्ष सचेता ॥
अग्निशर्म सुत औ सुत मोरा ❀ कौन विपिन महँ झगराझोरा ॥
झगरत आये द्वौ मम भवनहिं ❀ कौन सरिष्ट कहो हम गवनहि ॥
कह कश्यप सुनु राक्षस राऊ ❀ झूंठ बचन तुम कहेउ न काऊ ॥
जो सुत होय तुम्हार सरिष्ठा ❀ तौ अब सत्य कहो मतिनिष्ठा ॥
होय श्रेष्ठ जो बिप्र कुमारा ❀ कहेउ असत्य न त्यागिबिचारा ॥
कहे असत्य अधोगति जाई ❀ लक्ष वर्ष सो नरक रहाई ॥

ऐसे थल यह उचित न ताता ❀ भूलि असत्य कहेउ जनि बाता ॥

दोहा—कश्यपऋषिहिं प्रणामकरि,राक्षसनिजघरजाय।
दुनहुन के आगे बचन, कहन लाग समुझाय॥

कह राक्षस सुनु ब्राह्मण पूता ❀ तब पितु हमसे सरस बहूता ॥
मातु तारि है बड़ी सयानी ❀ हमरे सुतते तुम बड़ ज्ञानी ॥
सत्य कहा राक्षस जिउअधिका ❀ दुइसै बर्ष आयु में अधिका ॥
अन्त न कराठ परी यम फांसी ❀ भा कमलापति नगरनिवासी ॥
सत्य असत्य केर अस बीचू ❀ होत कृषी जस सींच असीचू ॥
बीचु अनीति नीति कर भारी ❀ जनु रजनी अँधियारि उज्यारी ॥
कहोबिदुर नृप नीकि न रचना ❀ जनि बोलहु अधर्म असबचना ॥
नागफाँस कर नहिं अन्देशा ❀ जो तुम करत अधर्म नरेशा ॥
सुनिअसबचन बिदुर दिशि ताकी ❀ भृकुटिकीन कुरुपति रिस बाँकी ॥

दोहा—भृकुटिभङ्गकुरुनाथलखि,बिदुर रहे चुप साधि।
थरथर कम्पति द्रौपदी,दृष्टिबिलोकिउपाधि॥

सो०—परी बिपति बारीश, लखिदरकत उर बज्रको।
धरि न धरत महीश, निज समुझावत द्रौपदी॥

कपट द्यूत शकुनी ते हारे ❀ बिधि यह गति लिखिदीन ललारे॥
अहह देव दिवसन कर फेरू ❀ गिरि ते रज रज होत सुमेरू ॥
सभामध्य पति पाँच हमारे ❀ महाबीर रण टरत न टारे ॥
मोहि उघारि होन कब देहैं ❀ उठिकै भीम अवशि सुधि लेहैं ॥
बहुरि सभा यहि भूप अनेका ❀ समरथ शूर एकते एका ॥
जानन हार धर्मपथ केरा ❀ क्षत्री भीषम आदि बड़ेरा ॥
यद्यपि न भूपहि कहिनि निहोरी ❀ तो परन्तु लेहैं सुधि मोरी ॥
गङ्गासुत चुपाइ किमि रहि हैं ❀ आखिर उठि राजासन कहि हैं ॥

दोहा—अनुचित होइ न पाइ हैं, लेहैं मोहिं छुड़ाइ ।
आजु पितामहते सरिस, धरि बीर को आइ॥

हैं गुरु द्रोण सभामहँ सोई ❀ जिनते अस्त्र सिखे सब कोई ॥

भारद्वाज तनय रण शूरा ❀ लेहैं मोहि छुड़ाय जरूरा ॥
इत उत बहु भरोस ठहरावत ❀ पुनि २ निजमन कहँ समुझावत ॥
बहुरि कहत कुरुनाथ रिसाई ❀ खैंचहु चीर दुशासन भाई ॥
लेहु बसन सब आतुर छोरी ❀ गहि बैठारु जांघपर मोरी ॥
होइ मोरि रुचि पूरण भ्राता ❀ आलिङ्गन करि द्रुपदकि जाता ॥
अतिशय बिकल द्रौपदी कांपी ❀ लेत राहु चन्द्रहि जिमि झाँकी ॥
इतउत दिशा दुखित मन हेरी ❀ केहरि मनो मृगी बन घेरी ॥
भीषम द्रोण करण दिशि चितई ❀ निजपति देखि आश सब बितई॥

दोहा—सकलसभा दिशि देखिपुनि, चितई पाण्डवओर।
भीमहिं देखि सरोष पुनि, बरज्योधर्मकिशोर॥

बहुरि कह्यो कुरुनाथ प्रचारी ❀ उठ्यो दुशासन रिसकरि भारी ॥
आतुर कहत बचन कटु धावा ❀ मनहु कृतान्तराज चलिआवा ॥
एकपाणि लीन्हे गहि केशा ❀ यक कर बसन गहे यम भेशा ॥
सकल सभाजन त्रियगहि हेरी ❀ ग्राम ग्राम गज नगर बसेरी ।
बहु अवनीपति जे मन साधू ❀ बूड़त बारिधि शोक अगाधू ॥
धीरन के मुख जोवत अहइ ❀ चहत पितामह अब कछु कहई ॥
निश्चय द्रोण चुपाइ न रहिहैं ❀ अवनि बचन गङ्गासुत कहिहैं ॥
कृपाचार्य गति पति लखि बामा ❀ रहिहैं किमि चुप अश्वत्थामा ॥
यहिबिधि निजमन करत भरोसा ❀ शील धीर जे भारग दोसा ॥

सो०—जे शठ कायर क्रूर, मानभङ्ग सब विधिचहत।
सकल सभा भरिपूर, करत मनोरथ पृथकपुनि॥

एकरिसि बसन दुशासन जाई ❀ सरुषप्रचारत पुनि कुरुराई ॥
बीर धुरेण रहे चुप साधी ❀ भीगत भये सकल अपराधी ॥
लखि दुर्दशा द्रुपदतनया की ❀ शोकज्वाल पाण्डव उर बाँकी ॥
बारिज नयन बही जल धारा ❀ रहे नाइ शिर पाण्डु कुमारा ॥
निपट बिकललखि पाण्डु किशोरा ❀ नहिंबिदरत उर कठिन कठोरा ॥
तदपि दुष्ट अस तेहि थल माहीं ❀ जे हरषत मन धरषत नाहीं ॥

दुर्योधन कर प्रबल प्रतापा ❀ तपत मनहुँ रबि द्वादश तापा ॥
अति करुणा सबके उर होई ❀ प्रति उत्तर करि सकत न कोई ॥
भीष्मद्रोण कुरु बिभव बिलोकी ❀ रहे चुपाइ सके नहिं रोकी ॥

दोहा—तीक्षणभृकुटिसरोपलखि,आतकुरुनाथभुवार।
सकलसभाभयबश बिकल,कांपहिं बारहिंबार॥

कृपाचार्य उर शोच अपारा ❀ कहि न सकैं कछु द्रोण कुमारा ॥
कोउ शिर नाय रहे सकुचाई ❀ अश्रुपात कोउ कृत दुखदाई ॥
जे नृप धीर बीर बल भारी ❀ जानि सत्य लखि होहि दुखारी॥
सकहिन कछु कहि काहुहि काऊ ❀ दुर्योधन कर समुझि सुभाऊ ॥
बार बार कह कौरव राजू ❀ बेगि दुशासन करु यह काजू ॥
खैंचन लाग बसन गहि पानी ❀ द्रुपदसुता तब अति अकुलानी ॥
तनया बिकल द्रुपद नृप केरी ❀ छूटी आश सकल दिशि हेरी ॥
कालरूप लखि कौरवनाथा ❀ जाय रहेउ चित जहँ यदुनाथा ॥
राधारमण बचन सुनु मेरे ❀ कौन बिलाप कलाप करेरे ॥
बूड़त बिरह सिन्धु रघुनाथा ❀ जिमि गहिलीन भरत कर हाथा ॥
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा ❀ राखि बिभीषण रावण मारा ॥
ध्रुवहि निरादर किय पितुमाता ❀ ताकहँ नाथ भयो तुम त्राता ॥
तुम बिन नाथ सुने को मेरी ❀ करि बिलाप दे हाँक करेरी॥

दोहा—भुज उठाय हरिनगरदिशि,पाहिपाहिपुनिटेरि।
कृष्ण कृष्ण राधारमण, दीन्ही हांक करेरि॥

दैत्य दलन प्रहलाद उबारण ❀ लागहु मम गोहारि जगतारण ॥
मम अनाथ के नाथ गोसांई ❀ सो न होइ लज्जा जेहि जाई ॥
तुम बिन आरत पक्ष गही को ❀ राखु रमापति लाज गई को ॥
पाण्डव त्यागी सुद्धि हमारी ❀ तुम जनि त्यागहु गिरिवरधारी ॥
बैठे सभा सकल अघधारी ❀ कोउ न चहत छुड़ावन नारी ॥
परबश लाज जात हरि मेरी ❀ त्रिभुवन नाथ शरण मैं तेरी ॥
बीते काल दयानिधि ऐहौ ❀ मोहि उघरि देखि पछितैहौ ॥

ग्राह ग्रसे गज कीन पुकारा ❋ तब तुम नाथ न लायहु बारा ॥
दोहा०—गोकुल बोरत घेरि घन, जिमि रक्षा तुम कीन्ह ।
नाइयो मातलि सूतमद, गिरिवरकरधरिलीन्ह ॥
ते तुम नाथ कहां गिरधारी ❋ यह पापी खैंचत मम सारी ॥
खैंचि बसन मम करिहि उघारी ❋ का करिहौ तब आय खरारी ॥
गये लाज प्रभु बिरद न रहिहै ❋ तुमहिं कृपालु काह कोउ कहिहै ॥
सरबस हरेउ बचेउ यक बसना ❋ सोऊ हरत बचावत कसना ॥
दवा जरत जिमि गोपन राखा ❋ कौरव अग्नि दीन्ह गृह लाखा ॥
तब तुमहीं यदुनाथ उबारा ❋ दीनदयाल कहाँ यहि बारा ॥
दारिद दहि द्विजके दुख काटे ❋ धनपति सरिस सदन धन पाटे ॥
जिमि गुरुसुत आनेउ यदुराई ❋ राखिलेहु मम लाज न जाई ॥
दोहा०—श्रीपतिदीनदयालअब, तुम पतिराखहुमोरि ।
फिरि हरि कैसी करहुगे, जब पट लेहैं छोरि ॥
नीचसभा प्रभुम्बहिं नँगियावत ❋ करुणासिन्धु धाय किन आवत ॥
द्रुपदसुता लखि बिकल पुकारा ❋ प्रणतपाल हरि बिरद सँभारा ॥
द्वारावति तजि नांगे पायन ❋ आतुर आइ गये नारायन ॥
प्रथम पाहि मुख ते जब काढ़ा ❋ प्रकट बसनरूप पट बाढ़ा ॥
बसन रूप धरि बसन समाने ❋ धीरज द्रुपद सुता उर आने ॥
खैंचेउ प्रथम जोर भरि जेता ❋ निकस्यो बसन बसन मगतेता ॥
देखि चरित्र क्रोध ते पागा ❋ परमरोष करि खैंचन लागा ॥
खैंचत बसन मूढ़ यहि भांती ❋ मथसागरसुर असुर कि पांती ॥
कढ़नो मन्हुँ शेष भय सारी ❋ दुश्शासन जनु देव सुरारी ॥
खैंचत सरुष दुशासन सारी ❋ निजतन पुरवत बसन खरारी ॥
सो०—देखि बसन कै बाढ़ि, भक्ति प्रेम बश द्रौपदी ।
भइ रोमावलिठाढ़ि, बिनय करत गदगदगिरा ॥
गयो शोच मन भयो अनन्दा ❋ जनु चकोर पायो निशि चन्दा ॥
कृष्णचन्द्र मैं तव बालहारी ❋ जय गोपाल गोवर्धन धारी ॥

जय शारंगधर जय असुरारी ❀ जय मनमोहन कुञ्जबिहारी ॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा ❀ कमलनयन शोभा शतकामा ॥
पीताम्बरधर धरणी पालक ❀ जय वसुदेव देवकी बालक ॥
जय तव कर सरोज यदुराय ❀ कीन्ह्यो जेहि कर मोपर दाया ॥
जे पद सरसिज मम हित धाये ❀ दुश्शासन कर दर्प नशाये ॥
जय मधुसूदन यदुपति स्वामी ❀ जय त्रिलोकपति अन्तर्यामी ॥
जय अघारि जय जय अविकारी ❀ जय जय जय केशी कंसारी ॥
जय मम लज्जा राखनहारे ❀ जयति यशोदा नन्ददुलारे ॥

दोहा—जयकृपालु करुणायतन, जयति कौशलानन्द ।
मोरपक्षधर मुरलिधर, जय जय आनँदकन्द ॥
जयतिसच्चिदानन्द हरि, ईश्वर जगदाधार ।
राखौ लज्जा जाति निज, जय मम नाथ उदार ॥

निर्भय हर्ष बिबश पञ्चाली ❀ कहि चिग्घारति जय बनमाली ॥
जय जयकार पूरि पुनि रहेऊ ❀ दुष्टन बिना सबन जय कहेऊ ॥
देवन देखि सुमन झरि कीन्हो ❀ गहगह गगन दुन्दुभी दीन्ही ॥
बाढ़त देखि बसन चहुँ फेरा ❀ मन थिर भयो पाण्डवन केरा ॥
हरिप्रताप दिनकर सम भयऊ ❀ कौरवसिसुकि कुमुदसम गयऊ ॥
हरिहि पुकारति द्रुपदकुमारी ❀ खैंचत सरुष दुशासन सारी ॥
करत जोर बहु भाँति दरेरा ❀ बाढ़त बसन सकल चहुँ फेरा ॥
अरुण श्याम सित रङ्ग हरेरे ❀ भाँति भाँति के बसन घनेरे ॥
पीत रङ्ग के बहुत निकारे ❀ पीताम्बर के ओढ़नहारे ॥

दोहा—मिश्रित रँग के पट बढ़े, थके दुशासन हाथ ।
देवन जे देखे नहीं, ते पुरये यदुनाथ ॥

आपु बसनतनु धरि भगवाना ❀ बढ़ये बिबिध रङ्ग परिधाना ॥
द्रुपदी चषपुतरी प्रभु कीन्ही ❀ विरदावलि मूरति करि दीन्ही ॥
खैंचत चीर दुशासन हारा ❀ अम्बर मनहुँ देवसरिधारा ॥
द्रुपदसुता के अम्बर तेरे ❀ हारे भुजा दुशासन केरे ॥

निकसे पट बिचित्र बहुतेरे ❀ नहिं समात मन्दिर नृपकेरे ॥
दश सहस्र गजबल थकिगयऊ ❀ दशगज अम्बर हरण न भयऊ ॥
निपट होत लखि अनरथ बाता ❀ नाना भाँति होत उतपाता ॥
शिवा यज्ञशाला में बोली ❀ ढहे भवन धरणी जब डोली ॥
अशुभ शब्दकृत रासभ श्वाना ❀ मेघन बिना ब्योम घहराना ॥

सो०—हींसे सकल तुरंग, हयशाला महँ बार यक ।
चिघरे मत्तमतंग, निजनिजआश्रमबिकलसब ॥

भयो दाह दिग कररत कागा ❀ तदपि न बसन दुशासन त्यागा ॥
बढ़ति बिलोकि तजै पुनि धरई ❀ अनत गहै पुनि सो परिहरई ॥
बिदुर दीख भा अनरथ भारी ❀ गे ज्यहि गृह बिलपति गन्धारी ॥
कहेउ रिसाइ मन्त्र सुनु मोहीं ❀ होत अकाज न सूझत तोहीं ॥
कृष्ण आजु द्रुपदी तन व्यापे ❀ बसन बढ़ाइ बिरद अस्थापे ॥
नहिं होइहि सुत धर्म अकाजू ❀ जिनके यदुनन्दन महराजू ॥
सदा दास कर करत सहाई ❀ प्रणतारति भञ्जन यदुराई ॥
जे हरि हन्यो निशाचर राजू ❀ सहि दुख निजभक्तन के काजू ॥
सो जानी सब बात तुम्हारी ❀ नहिं अज्ञान ग्रसित गन्धारी ॥

दोहा—जानिबिकलप्रह्लादजिमि, जो हरिभक्तअनन्य ।
साहिश्रमनिकस्योखम्भते, कश्यपहन्योहिरन्य ॥

सो०—अब अनेकउतपात, देखि परतअनरथ निपट ।
होन चहत सोइ बात, तुव तपबलते थपिरही ॥

अबते रानि कहा सुनु मोरा ❀ भाग्य अभाग्य होत अब तोरा ॥
बमन छुड़ाव दुशासन करमन ❀ चलन चहत ननु चक्रसुदरसन ॥
गन्धारी सुनि अति दुख पाई ❀ बिलपत बिदुर संग उठि धाई ॥
मतिदृग सुत खंचत इत चीरा ❀ थक्यो पराक्रम भयो अधीरा ॥
भुज थकिगयो बढ़त नहिं जाना ❀ बसनत्यागिमन अतिखिसियाना ॥
निज आसन बैठउ शिरनाई ❀ मनहुँ रंक निधि पाइ गँवाई ॥
दुर्योधन नृप बैठ उदासा ❀ मानहुँ भयो राजपद नासा ॥

श्रीहत भयो सकल मदभङ्गा ❋ निपट बिकल अपमान तरङ्गा ॥
सुनत शोर मारग श्रुति केरे ❋ पूछत मतिदृग संजय तेरे ॥
होत कहाँ यह हाहाकारा ❋ संजय कहै सहित विस्तारा ॥

सो०—सुनत दशा दुखपाय, संजय करगहि पाणिनिज।
सभा बिलोक्यो जाय, कुरुपतिकीअनरथकथा॥

मध्य सभा कञ्चन सिंहासन ❋ सो धृतराष्ट्र नृपतिकरआसन ॥
बैठि गये तहँ मतिदृग जाई ❋ परम रोष नहिं बरणि सिराई ॥
दुश्शासन कहँ नृप दुरिआई ❋ शठ कुरुकुल तैं दोन लजाई ॥
दुर्योधन पर क्रोध अपारा ❋ कहि कटु बार बार धिक्कारा ॥
त्यहि अवसर आई गन्धारी ❋ कहि दुर्बचन कीन्ह रिस भारी ॥
कीन्हो दुष्ट कर्म तुम नीचू ❋ परिहौ अधम नरक के बीचू ॥
दीन्हेउ सरुष शाप गन्धारी ❋ कह मतिदृग सुनु द्रुपद कुमारी ॥
पुत्रबधू जे सकल हमारी ❋ मनक्रमबचन अधिक तुम प्यारी ॥
तव संग शठन कीन अपराधा ❋ भइ मम बृद्धापन महँ बाधा ॥

दोहा—पुत्रितोहिं ममशपथशत, मनबाञ्छितबरमांगु।
दुष्टन कीन कुकर्म सो, ममदिशितेसबत्यागु ॥

अब तुम मम निहोर शिरमानी ❋ करहु क्षमा अपराध भवानी ॥
बेगि माँगु पुत्री बरदाना ❋ तुम सम मोहिंनप्रियकोउ आना ॥
धर्मराज कुरुपति प्रिय मोरे ❋ नाहिन सुता तदपि सम तोरे ॥
बार बार नृप कह बर माँगू ❋ द्रुपदसुता मन सुनि अनुरागू ॥
बोली बचन जोरि युग पाणी ❋ सुनहु नरेश सत्य मम बाणी ॥
मोहिं समेत सकल परिवारा ❋ दास भाव भे पाण्डुकुमारा ॥
सो नरेश माँगे म्वहिं दीजे ❋ दासभाव बिनु सकल करीजै ॥
बाहन अस्त्र देहु सब काहू ❋ कीजै बेगि बिदा नरनाहू ॥
मतिदृग कहेउ तोहिं मैं दीन्हा ❋ माँगु अपर कछु आयसु कीन्हा ॥

दोहा—सुनहु पिता कह द्रौपदी, मनबाञ्छित बरदान।
मै पायों तुम्हरी कृपा, नाथ शपथ नृप आन ॥

तव प्रसाद अब कुरुकुल केतू ❀ फिरि होइहै सुखसम्पति सेतू ॥
जाचत बिप्र माँगै बर चारी ❀ कहत वेद अस नीति बिचारी ॥
क्षत्री तीनि वैश्य कुल दोई ❀ माँगै एक शूद्र सुत होई ॥
मैं तो पुत्रबधू क्षत्रानी ❀ लीन्हे माँगि तीनि बर जानी ॥
अब नहिं पिता मनोरथ मोरा ❀ नरनायक मम मानि निहोरा ॥
बुद्धि चक्षु चर चतुर बोलाये ❀ सब के बाहन अस्त्र देवाये ॥
चढ़ि बाहन गहि आयुध हाथा ❀ चले अवास धर्मनरनाथा ॥
परसे चरण बुद्धि दृग केरे ❀ बोले भूप युधिष्ठिर तेरे ॥
लज्जाबिवश बचन सुनि तोरा ❀ हे सुत होत बिकल मन मोरा ॥

सो०—बचन तोर सुनि तात, लज्जितअवनिसमातमैं।
मोहिं अक्षत यह बात, पुत्र परमअनुचितभई ॥

होइ तुम्हार परम कल्याणा ❀ सुनु अशीष मम बचन प्रमाणा ॥
जीति तुम्हारि राज्य सब लीन्ही ❀ दुर्योधन अनीति बड़ि कीन्ही ॥
सो मैं तुमहिं देत निज पानी ❀ लीजे सुत प्रसाद मम मानी ॥
मतिदृगआयसु शिर धरि लीन्हा ❀ शीश नवाय गमन गृह कीन्हा ॥
प्रथम नरेश कीन्ह जहँ डेरा ❀ दीन्ह त्यागि त्यहि ओर न हेरा ॥
पटल वितान सेन चतुरङ्गा ❀ चपल तुरङ्गम मत्त मतङ्गा ॥
सकल धर्म नन्दन तजि दीन्हा ❀ सहित कुटुम्ब भवनमग लीन्हा ॥
मिले बिदुर मारग महँ आई ❀ जात भये निजभवन लेवाई ॥
रानिन सहित नृपाव अन्हवाये ❀ खान पान बिश्राम कराये ॥

दोहा—यहँ उठि कुरुपतिसभाते, गे सबनिजनिजधाम।
खान पान असनान करि शेष दिवस रहयाम ॥
द्रोणकरणभीषमशकुनि, निजनिजगृहमगलीन।
खान पान बिश्राम पुनि, सबभूपालन कीन ॥
प्रथम करोअसनानपुनि, भोजन करिकुरुनाथ।
सबलसिह आयो सभा, दुरद दुशासनसाथ ॥

इति महाभारते भाषाकृते द्रौपदीचीरबद्धनंनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा—सुन्दर कनक प्रयंकपर, शयन करी कुरुराय ।
बिदुर भवन हैं धर्मसुत, कही चरवरन आय ॥
सुनि नरेश मन अति दुख पाये ❀ सौबल शकुनी करण बोलाये ॥
सहित दुशासन करत सलाहा ❀ बोले दुर्योधन नरनाहा ॥
जीत्यो राज धर्मसुत केरी ❀ दीन्हीं बहुरि पिता सोइ फेरी ॥
जीति अवनि पिता तजि दीन्हा ❀ सो हमरे हित अतिभलकीन्हा ॥
छूटे भूप दासि गति तेरे ❀ लेत भूमि असिधार गरेरे ॥
त्यागब राज्य उचित मत ताते ❀ किंकरता बिनु धर्मज जाते ॥
अब तुम यतन बतावहु सोई ❀ मृषा मनोरथ मोर न होई ॥
परबश होत मनोरथ खाली ❀ संशयबिबश उठत मन हाली ॥
कीन्ह सकल कछु सरेउ न काजू ❀ भयो जानि मम परम अकाजू ॥
दोहा—अबते कीजै यतन कछु, बिदुरभवन सुतधर्म ।
हैं अबहीं सुनिये सचिव, कहकुरुनाथकुकर्म ॥
गुप्त शत्रुगति प्रकट भई सो ❀ आपुस बीती प्रीति गई सो ॥
यहै लाभ भा सचिव हमारा ❀ मारत शत्रु गयो बिनु मारा ॥
बड़ अनरथ अब सजग भये ते बहु उतपात करैं हम ते ते ॥
सुनि कुरुनाथ बचन अनुरागे ❀ सब मिलि मन्त्र बिचारनलागे ॥
परेउ ठीक मत नृप सुख पाये ❀ बहुबिधि सौबल सिखै पठाये ॥
धर्म नरेश बिदा उन मांगी ❀ बिदुर पठाइ फिरे अनुरागी ॥
निज गृह जात युधिष्ठिर राई ❀ सौबल मिल्यो बीच मग आई ॥
कीन जोहार माथ महिलाई ❀ कहन लगेउ पुनि बचन बनाई ॥
युक्ति सहित करि छल चतुराई ❀ निज बश कीन युधिष्ठिरराई ॥
चलहु नरेश कुरुपतिहि जीती ❀ लीजै बैर द्यूत करि नीती ॥
दोहा—बड़ि अनीति शकुनी करी, शठ समेत कुरुराज ।
होतदुसहदुखहृदयमम, गतितुम्हारिलखिलाज ॥
सोइ गति होई कुरुपति केरी ❀ हृदय बुताइ ज्वाल तब मेरी ॥
करि बहुयतन नृपहिं पलटाई ❀ कुरुसमाज कहँ गये लेवाई ॥

करि बहुप्रीति सभा बैठारी ❀ मँगवाई पुनि पंसासारी ॥
भावी प्रबल मेटि को सकई ❀ बरजि बरजि सब प्रियजनथकई ॥
धर्मराज कर अक्ष गहे जब ❀ विहँसि बचन यह कर्ण कहेतब ॥
का अब धरत युधिष्ठिर राऊ ❀ कह नृप जो कहिये कुरुराऊ ॥
हारहि सो अस कुरुपति कहई ❀ द्वादश बर्ष बिपिन सो रहई ॥
कन्दमूल फल करै अहारा ❀ उदासीन इव सब आचारा ॥
हारै सो निज भवन न जावै ❀ आतुर कानन पन्थ सिधावै ॥

दोहा—होइ बैठ जेहि थल यथा, तस कानन मग लेइ।
अन्नअशन अरुराज्यसब, सो तजितृणइवदेइ॥

अनुचर अपर लेइ नहिं संगा ❀ एक त्यागि निजबंश प्रसंगा ॥
तापस तनु धरि कानन जाई ❀ देइ महीपति चिन्ह दुराई ॥
यहि बिधि द्वादश बर्ष बितावै ❀ नेम सहित त्यरहीं जब आवै ॥
ग्राम निवास करै अज्ञाता ❀ बर्ष दिवस कहिजाय न जाता ॥
मिलै न खोज रहै यहि भाँती ❀ बर्ष त्रयोदशईं जब जाती॥
पावै राज्य चौदही आये ❀ खोज त्रयोदशईं बिनु पाये ॥
जो कदापि त्यरहीं सुधि पाई ❀ द्वादश बर्ष बहुरि बन जाई ॥
जब जब खबरि तेरहीं पाई ❀ तब तब सो कानन मग जाई ॥
मिलै न खबरि तेरहीं जासू ❀ सो पुनि करै राज्य निज बासू ॥

दोहा—भीष्मादिक सब थरहरे, सुनि कुरुपतिकीबात।
कहिप्रमाणधरिदाउँसोइ, दीन्हों शत्रु अजात॥

कह सौबल सुनु धर्मकिशोरा ❀ होइ खेल शकुनी सँग मोरा ॥
मैं खेलों तुम्हरी बदि राजा ❀ देखो शठ शकुनी कर काजा ॥
बोले कुरुजन धर्मज ताता ❀ छल कहि भूलब शत्रु अजाता ॥
कर गहि अक्ष युधिष्ठिर राऊ ❀ मानि प्रमाण धरो सोइ दाँऊ ॥
बरजत रहे सकल हितकारी ❀ केहिबिधि मिटै जो होनेहारी ॥
तमकि धर्मसुत अक्ष चलाई ❀ परेउ दाँव शकुनी कर आई ॥
खल खेलार अजित शकुनीते ❀ पुनि पुनि हारि गये नहिं जीते ॥

दोहा–हारेउ दाउँ अधर्म अरि, चुप करि रहे शिर नाय ।
बिजय नगारे किंकरन, हने सो आयसु पाय ॥

छूटत सभा देश गृह कोशा ❀ लखि उर शोक होत सहरोशा ॥
चितै शल्यदिशि धर्मज ज्ञानी ❀ बोले स्रवत नयन जल पानी ॥
सुनु शठ तैं सब लाज गँवाई ❀ भयसि बृथा माद्री कर भाई ॥
मम दुर्गति देखहु मुसक्याई ❀ धिक धिक त्वहिं जननीके भाई ॥
हम हारे शठ तैं नहिं हारे ❀ लाजरोष कहँ गये तुम्हारे ॥
जानत जगत तोहि सब लायक ❀ बिक्रम थकेउ देखि कुरुनायक ॥
धिक धिक पापबुद्धि शठ तोरी ❀ निजनयनन देखहु गति मोरी ॥
धिकधिक कितवकितवअभिमानी ❀ दोन्हेउ मूढ़ त्यागि मम बानी ॥
नहिं कछु कुरुपति केर कुकर्मा नहि शकुनीकृत कर्ण अधर्मा ॥
समरथ भीष्म द्रोण संघाती ❀ तिन्हें दोष देइय क्यहि भाँती ॥
तैं शठ भयसि पापकर मूला ❀ होत नमूढ़ हृदय तव शूला ॥

दोहा–देखि दशा मम लाजतजि, रहे मूढ़ चुपसाधि ।
कहि न सकहिं कोउ नीचकछु, कृतकुरुनाथ उपाधि ॥

सुनु अधर्म निजकाल बिताई ❀ जो न बिनाश करौं तव आई ॥
तो न गहौं शरचाप कृपाना ❀ करौं त्याग क्षत्रीकुल बाना ॥
अस कहि भूप अश्रु पशु धारा ❀ कहत रोषबश पवन कुमारा ॥
गरजि जलदसम नयन तरेरे ❀ बोले चितै दुशासन ओरे ॥
निपट नीच तव बुद्धि पिशाची ❀ निश्चय मीच शीशपर नाची ॥
ज्यहि कर बसन द्रौपदी केरे ❀ गहि खैंचेउ करि जोर दरेरे ॥
सो उखारि डारौं भुज तेरे ❀ दाह बुताय हृदय तब मेरे ॥
ठोंकि जंघ बैठहु कहि चेरी ❀ भइ मतिभ्रम कुरुनायक केरी ॥
चलत कुशल करि सिंह जगाई ❀ बैनतेय बलि बायस खाई ॥
होत यथा यह बात अयोगू ❀ तेहिविधि हमहिं हँसत सबलोगू ॥

दोहा–सुनत सभा अस कहत मैं, सब प्रति बचन पुकारि ।
तबलग धिक मोहिं कुरुपतिहिं, जबलग डारौं न मारि ॥

संगर भूमि गदा लै हाथा ❀ जंघ भङ्ग करिहौं कुरुनाथा ॥
कहे बचन कर फल देखरावों ❀ तौ मैं क्षत्रियबंश कहावों ॥
अवधि बिताइ कहा मम मानू ❀ जो न बिनाश करौं तब जानू ॥
तौ हम होई निरयपथगामी ❀ पन्नग योनि जन्म परिनामी ॥
बैठु जंघ मम द्रुपदसुता ते ❀ कहेउ सो दुर्योधन मुख जाते ॥
निज पद ते मरदउँ मुख सोऊ ❀ बन्धु हमार बोध तब होऊ ॥
दिवस बिताइ गदाधरि लरिहौं ❀ अन्ध नरेश बंश संहरिहौं ॥
त्रिय तजि पुरुष न राखौं एका ❀ मतिदृगबंश सत्य मम टेका ॥
कृष्ण शपथ नृप चरण दोहाई ❀ बीते दिवस करब सब आई ॥

दोहा—असकहिनिजकरगहिगदा, भीम चले नृपसाथ।
बोले पारथ रोप बश, जो कुमार सुरनाथ॥

सुनु रविनन्द अधम मलरासी ❀ कीन्हेउ मम विस्मय तजिहासी ॥
धरणी सम करिहौं शर मारी ❀ करण प्रतिज्ञा सत्य हमारी ॥
बृद्ध पितामह द्रोण हमारे ❀ निज नैनन सुख देखनहारे ॥
धन्य धन्य सब लायक केरे ❀ निज निजनैन परम सुख हेरे ॥
जन्म प्रयन्त सत्य ब्रत कीन्हा ❀ अन्तकिवयस लाभभल लीन्हा ॥
शर सागर कौरव कुल बोरौं ❀ भीष्मादिक क्षत्रिनशिर फोरौं ॥
तौ मैं कुन्तीसुत शुचि साँचा ❀ काटौं तव शिर कठिन नराचा ॥
मोहि अजातशत्रु के आना ❀ बीते दिवस करौं मनमाना ॥
अस कहि चले युधिष्ठिर सङ्गा ❀ बोले नकुल रोष भरि अङ्गा ॥
सुनु रे करण पाप कर अंशा ❀ करौं बिनाश सकल तव बंशा ॥
विष्वक्सेन आदि सुत तोरे ❀ होइहैं नाश सकल कर मोरे ॥

दोहा—सबलसिंहकहिनकुलअस, गये युधिष्ठिर पास।
जो न करौं यह सत्य सब होइ नरक ममबास॥

इति श्री महाभारतेसबलसिंहचौहानभाषा कृतेसभापर्वणिबल युधिष्ठिरछद्म करणंनाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

कह ऋषिराय सत्य सुनु राजा ❀ मष्टरहे कुरुनाथ समाजा ॥
तब सहदेव शकुनितन हेरी ❀ भृकुटि भङ्ग करि नयन तरेरी ॥
शकुनी तब मति ईश भ्रमाई ❀ नीच मोचु करि यत्न बोलाई ॥
द्यूत हराय कियो छल भारो ❀ कोन सकल दुर्दशा हमारी ॥
जानेउ तुम इनके रिस नाहीं ❀ ईर्षा लाज न कछु मन माहीं ॥
जनि भूलेउ यहि भूलि बिशेखी ❀ बीते दिवस परी सब देखी ॥
कुरुपति नाशसहित परिवारा ❀ होइहै मम कर मरण तुम्हारा ॥
बीते अवधि शरासन धरिहौं ❀ रिपुकृत कर्म प्रकट सब करिहौं ॥
कृष्ण शपथ अरु धर्म महीशा ❀ करौं समर तव खण्डित शीशा ॥

दोहा—बीते दिवस प्रमाण निज करौं सकलप्रण सांच।
मातिदृगसुतकाटिकोटिगिरिहैं, दाहनकरै नराच ॥

अस कहि चलन भूपपहँ चह्यऊ ❀ द्रुपदसुता तब रिसबश कह्यऊ ॥
सुनहु दुशासन रुधिर तुम्हारा ❀ जब ममशिर होइ बहै पनारा ॥
बाँधउ कच तब करि असनाना ❀ कोटि भूप यदुपति के आना ॥
अस कहि केश दिये छिटकाई ❀ दुश्शासन के रुधिर नहाई ॥
जेहि बिधि नाथ लाज ममराखी ❀ करेहु सत्यप्रण जनअभिलाखी ॥
जङ्घ भङ्ग कुरुपति सुनि काना ❀ मैं सुख विपुल लहब भगवाना ॥
बढ़त केश बिगलित पञ्चाली ❀ अति भयकार मनो कङ्काली ॥
तनु सुन्दरता भय गति दूरी ❀ रोष कराल रहा भरिपूरी ॥

दोहा—असकहिद्रुपदकुमारिपुनि, चलीयुधिष्ठिरसाथ।
बल्कल लाये दास गण, लखिरुख कौरवनाथ ॥

ज्यहि मग जात युधिष्ठिरराई ❀ अग्र दिये धरि भाजन जाई ॥
दुर्योधन कर आयसु जोई ❀ किङ्कर कहत जोरि कर दोई ॥
नृप बल्कल अब धारण कीजै ❀ गृहमगतजि कानन मगलीजै ॥
अस सुनि भीम भयो मन रोषा ❀ धिक कहि देत भुजन परदोषा ॥
रोष तरङ्ग बिलोचन लाला ❀ कह्यउ नाय धर्मजपद भाला ॥
हम नृप दास भये अब नाहीं ❀ आयसु नीच करत केहि पाहीं ॥

राज्य त्यागि कानन मग जैहैं ❋ तहँ कुरुपति का हमहिं सिखैहैं ॥
प्रथम द्रुपदतनया निज धारे ❋ का नृप बहुरि जन्म धरि हारे ॥
जो न तजत मम नीच पछारी ❋ चहत बिलोकन शठ यमधारी ॥
आयसु मोहिं नराधिप देहू ❋ बिक्रम बन्धु देखि करि लेहू ॥
दुर्योधनहिं प्रकट देखरावों ❋ जो तुम्हार अनुशासन पावों ॥

दोहा—तौ सौभाई आजु सब, कुरुपति आदि बटोरि।
मारि पठावों यमपुरन, नृप तव शपथ करोरि ॥

आजु सहायक हैं भगवाना ❋ जीवित एक न पैहे जाना ॥
जिन करुणाकरि चीर बढ़ावा ❋ सो मम बाहु सहायक आवा ॥
तदपि मरण जो यहि थल होई ❋ धिक मम बिस्मय कहै न कोई ॥
भीष्मादिक बिनु मारे मरिहैं ❋ वृश्चिकराशि न एक उबरिहैं ॥
सहिअसिबिपति न जीवननीका ❋ समुझाइये महीपति जीका ॥
पारथ कहेउ मोर मत येहू ❋ बेगि नरेश रजायसु देहू ॥
तमकि तमकि निज अस्त्र उठाये ❋ सजगदेखि कुरुगण भयपाये ॥
बल्कल बसन अनूप सुहाये ❋ जे प्रथमहिं कुरुकिंकर लाये ॥

दोहा—भीम बचन सुनिकुरुपति, जाइ जनायो हाल।
बुद्धिचक्षु सुत रोषवश, भयो बिलोचन लाल ॥
कहत भयो कुरुनाथ तब, यूथप सुभट बोलाइ ।
घेरिपँवरि मारहु सकल, जियत न पावहिं जाइ॥

भूपति आयसु धनुष चढ़ाये ❋ सुभट समूह रोषवश धाये ॥
करण दुशासनादि भट भारी ❋ घेरि पँवरि प्रति ठाढ़ अगारी ॥
सातौ द्वार घोर ठढ़िआई ❋ कीन्हेउ बज्र केवार देवाई ॥
इत यह साज सजे कुरुराई ❋ उत आयसु माँगत सब भाई ॥
बेगि महीपति देव योगू ❋ करिये समर न कर्म अयोगू ॥
रिस उर मारे बड़ दुख होई ❋ कीन्हे समर मिटै नृप सोई ॥
होइ जोति तब नृप भलि बाता ❋ मरण नीक नहिं शत्रुअजाता ॥
जो यहि विधि भइ जगतहँसाई ❋ करब काह जग जीवन भाई ॥

कीन्हे समर भुजा सुख पावैं ❀ अतिकराल तनताप बुझावैं ॥
सुर पुर तात लहब सुख नीके ❀ करिकरि खराड खराड कुरुपतिके ॥
नतु नरेश जारत उर शोषू ❀ मिलिहि न युगललोक संतोषू ॥

दोहा—पुनिपुनिअनुजसरोपअति, माँगतसकलनिदेश।
मनबिचारकरकोटिबिधि, बोले बचन नरेश ॥

बन्धु बचन अस भूलि न कहऊ ❀ भयो अरोग्यअरुझिजनि रहऊ ॥
जन्म प्रयन्त होम जिमि करई ❀ अन्तकि बेस ताहि परिहरई ॥
तिमि सहि शीश सकल दुखसेतू ❀ चहत बिगारन अब बिनुहेतू ॥
बर्ष त्रयोदश भे मम लेखे ❀ अब निजनयन उमापति देखे ॥
पशुपतीश देखिय नैपाला ❀ डाकिनि देश भयंकर काला ॥
रामनाथ सम ईश्वर देखी ❀ होइहै जीवन सुफल बिशेखी ॥
महा काल उज्जैन अशेखी ❀ अमरनाथ कश्मीर सो देखी ॥

दोहा—बिश्वनाथ वाराणसी, बहुरि देखि शशिभाल।
सुनहुबन्धुआनन्दयुत, कटिहिसहजसबकाल ॥

अस कहि भूपति चिह्न दुराये ❀ पहिरे बलकल बसन सुहाये ॥
द्रुपद सुता युत बान्धव चारी ❀ पहिर बसन वेष अतिभारी ॥
रतन जटित पट चित्र उतारे ❀ ते नरेश त्यहि थल सब डारे ॥
कुरु किंकरन परे पट पाये ❀ गत दरिद्र धनवान कहाये ॥
बन्धु सुजन जनसंग महीपा ❀ आगे चले पाराडुकुल दीपा ॥
उदासीन इव बेष बनाये ❀ मनहुँ महातपतनु धरि आये ॥
जाहिं पवँरि जहँ बल्कलधारी ❀ धावहिं सुभट समूह प्रचारी ॥
सो मग त्यागहि धर्म कुमारा ❀ आतुर आवहिं आन दुवारा ॥
बज्र केवार जड़े तहँ पावहिं ❀ शायकवीर सरोष चलावहिं ॥

दोहा—कहहुँदुशासनशकुनिकहुँ, यूथनाथ भटबृन्द।
देखि पँवारि प्रति धर्मसुत, गये जहाँ रविनन्द ॥

देखा करण धर्मसुत आये ❀ बलकलधर शर चाप चढ़ाये ॥
बिहँसि कहा सुनु शत्रु अजाता ❀ तुमका द्रुपद सुता भयत्राता ॥

भ्रमरमध्य जिमि बोहित परई ❀ गहि कर हाथ पार कोउ करई ॥
त्राता नारि भली तुम पाई ❀ करण तर्क करि हँसे ठठाई ॥
कछु नहि कहा धर्म नर नाहू ❀ बोले भीम भयो उर दाहू ॥
सुनु रविनन्दन दूषण यामे ❀ भेद न दम्पति श्रुति परिणामे ॥
द्रुपद सुता है जीति हमारी ❀ हँसी न देखहु हृदय बिचारी ॥
होउ न अङ्ग बिवश परतीती ❀ देखहु पूछि बिदुरसन नीती ॥
निज तन होत प्रकट यक देही ❀ बाम अङ्ग त्रिय परम सनेही ॥
तोमरि जाति पुत्र निज होई ❀ कहे बिदुर यह प्रगट न गोई ॥

दोहा—सुनि न कहेउ रविसुतकछू, चुपकिरहे अरुगाइ।
बोले धर्म नरेश तब, आरत बचन सुनाइ ॥

मोहिं करण अब मारग देहू ❀ करि दुर्गति जनि जीवन लेहू ॥
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं ❀ दीजे पन्थ कवनविधि तोहीं ॥
फिरे धर्मसुत सुनि असि बानी ❀ स्रवत नयनवारिजमग पानी ॥
जात पवँरि जेहि शत्रु अजाता ❀ होत शोर तहँ ज़नु पवि पाता ॥
सुभट सरोष अस्त्रगहि धावहिं ❀ लखि सुत धर्म अपरमगजावहिं ॥
यहिविधिनृपचहुँदिशिफिरि आये ❀ मारु मारु तजि पन्थ न पाये ॥
भे अति बिकल धर्मसुत जौमा ❀ शिरधुनि कहत शोकयुत भीमा ॥
भूप तुम्हारि क्षमा दुखदाई ❀ करत शील उर बज्र की नाई ॥
अब नहिं मिलिहैं कुरुपति भारी ❀ भे नृप कुपथ कुमीचु हमारी ॥

दोहा—अहहदैवतुवगतिअगम, मरे मीचु बिनु आइ।
मनकी मनहींमें रही, कहिविलपतिसबभाइ ॥

होत सभा महँ भूप रजाई ❀ जियत न जात भवन कुरुराई ॥
हमहिं न रहत मरे कर शोचू ❀ भा नृप दुखद तुम्हार संकोचू ॥
इत नरहार भार तुव नाथा ❀ उत रण सुभट न कारव नाथा ॥
यह नरेश बड़ शोक समाजा ❀ बीर बधे नहिं होत अकाजा ॥
जाहि बन्धु जन प्रियजन मारे ❀ हृदय शोक दुख होत हमारे ॥
कह धरि धीर युधिष्ठिर राई ❀ सुनहु तात तुम तजि कदराई ॥

सदा सहायक हैं करुणाकर ❀ कस न खबरि लेहैं राधावर ॥
द्रुपदसुता को लाज बचाई ❀ तिनहिं न बात बड़ी यह भाई ॥
अस कहिलोचन बारि बिमोचैं ❀ बिदुर सुमेत बन्धु सब शोचैं ॥

दोहा—सकल कहैं आरत बचन, त्राहित्राहियदुनाथ ।
सजलनयनपुनिपुनिकहत, राधावरधुनिमाथ ॥

जातविकल लखिद्रुपद किशोरी ❀ कहत घटोत्कच दोउकर जोरी ॥
सुनो बिनय मम धर्मकुमारा ❀ विश्वम्भर रखवार तुम्हारा ॥
अब नरेश मोहिं आयसु देहू ❀ जिमि निजकिंकरब कर नेहू ॥
तब नरेश निज पृष्ठि चढ़ाई ❀ सहित कुटुम्ब नाथ सब भाई ॥
करि दुर्योधन भवन अलंघा ❀ जाउँ भूप तव आयसु संघा ॥
न तो महीपति आयसु देहू ❀ करौं महारण करि संदेहू ॥
नतु यहि अवसर जहँ कुरुराई ❀ जाइ समीप देहुँ पहुँचाई ॥
आयसु बेगि देहु मोहिं राजा ❀ तवपद शपथ करौं सोइ काजा ॥
कहेउ भीम कहँ हैं कुरुनाथा ❀ तहँमैं जाउँ गदा गहि हाथा ॥

सो०—करु सुत सोइ उपाय, भूपति आयसु देहिं जो ।
जियकी जरनि बुताय, सम्मुखलखिदुर्योधनाहिं ॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य, अबहीं जो कीन्हों प्रथम ।
होत शरीर असत्य, को जानै जीवन मरण ॥

भीम बचन सबके मन भाये ❀ आयसु माँगि माँगि शिर नाये ॥
कहेउ धर्मसुत अबकी बारा ❀ मानहु आयसु सकल हमारा ॥
मारग यही विपिन कहँ लीजै ❀ बिग्रह बन्धु कदापि न कीजै ॥
यहि प्रकार कहि धर्म किशोरा ❀ बोले चितै घटोत्कच ओरा ॥
धन्य धन्य सुत भाग तुम्हारा ❀ लीन उबारि सकल परिवारा ॥
सब समेत अब सुत बड़भागी ❀ काननपन्थ चलिय डर त्यागी ॥
सपनेहुँ आन विचार न करहू ❀ मम अनुशासन सुत उर धरहू ॥
कहेउ सुभग शिष धर्म कुमारा ❀ कीन सबन मिलि अङ्गीकारा ॥
कुम्भोत्कच तनु धरेउ बिशाला ❀ छायोरूप श्याम कच लाला ॥

दोहा—होन लग्यो उतपात बहु, चले पवन उनचास ।
अन्धकार माया प्रबल, दिवसनाथ उर त्रास ॥

माया वश राक्षस की धारी ❋ सब परिवार पृष्ठि बैठारी ॥
सहित द्रौपदी धर्मज राई ❋ दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई ॥
वाम बाहु पर बान्धव चारी ❋ भीमादिक लीन्हेउ बैठारी ॥
पुनिपुनिगर्जिचलत जब भयऊ ❋ नृप करजोरि बिदुर सन कहेऊ ॥
तात पितासम आपु हमारे ❋ शिशुपन ते सब विधि रखवारे ॥
मम सुधि अब यादवपति लीन्ही ❋ रक्षा आपु जन्म भरि कीन्ही ॥
हरिते अधिक हितू तुम मोरे ❋ पितुमाता सम हित न निहोरे ॥
अबते एक मोरि रखवारी ❋ करउ तात मम विनय बिचारी ॥
जो गृह रहै देइ दुर्योधन ❋ तात निहोरे कियेउ प्रबोधन ॥
तुम तहँ जात रहेउ कछुकाला ❋ गये दिवस दुखकटहिं बिशाला ॥
जब जब सुरति करै मम माता ❋ करहु प्रबोध बिकल लखिगाता ॥
भोजन पान अधीन तुम्हारे ❋ मातु प्राणधन के रखवारे ॥

सो०—विपिन महादुखरूप, ताते उचित न मातु सँग ।
कही युधिष्ठिर भूप, गहवर उरव्याकुलनिपट ॥
कहेउ प्रणाम हमार, तातमातसनविविधिविधि ।
असकहिधर्मकुमार, चकित चितै रोवन लगे ॥

कहेउ बिदुर नृप धीरज धरहू ❋ आतुरगमन बिपिन मग करहू ॥
हम कुन्ती बहुविधि समुझै हैं ❋ रञ्चक शोक न शोश बिसै हैं ॥
हमहिं उचित बिनु कहे तुम्हारे ❋ सब प्रकार पद सेवन हारे ॥
तदपि कहेउ तब अति भल कीन्हा ❋ महा बिरति तजि धीरज दीन्हा ॥
अब नहिं काम यहाँ के ठाढ़े ❋ कुरु आयसु आवत भट गाढ़े ॥
तुम कहँ करुणासिन्धु सहाई ❋ दीन घटोत्कच कहँ पहुँचाई ॥
गमन कीजिये शत्रु अजाता ❋ भये मरण नृप नीकि न बाता ॥
बिदुर वचन सुनि धर्म नरेशा ❋ कहेउ मातुकहँ पुनि संदेशा ॥
मोर प्रणाम कहेउ जननी ते ❋ मिलिहौं वर्ष त्रयोदश बीते ॥

दोहा—मोहिंनहोय लवलेशदुख, तवप्रसाद बन जात।
बीते दिन पद देखिहौं, शोचपरिहरिय मात॥

भीम सँदेश बिदुरसन कहेऊ ❀ ममदिशि तात मातु सन कहेऊ॥
कहेउ सहायक जो यदुराई ❀ बीते दिवस गहौं पद आई॥
भयो हमार कठिन अपमाना ❀ अमरशरीर तजत नहिं प्राना॥
होत न कछु अब कौन हमारा ❀ काधौं अग्र करिय करतारा॥
कुरुपति सदृश एक बिनु रोरे ❀ सब शठ देखि परत रिपु मोरे॥
कोउ सज्जन परमारथ बादी ❀ पापी सकल भीष्म द्रोणादी॥
तुम धर्मिष्ठ बिदुर सब भाँती ❀ गदगदगिरा न पुनिकहिजाती॥
कह पारथ सुनु तात सुजाना ❀ तुम समर्थ बिज्ञाननिधाना॥
कहब न बिपति मातुसन भारी ❀ जेहिसुखलहहिं न होहिदुखारी॥

सो०—करेहु यत्न सोइ तात, मातुलहै सुख शोचतजि।
करि कौरवकुलघात, दरशावों जननी बदन॥

दोहा—पृथकपृथकमातहिंकहेउ, निजनिजसबनसँदेश।
तेहिअवसरकरुणानिपट, बरणिनजाइ नरेश॥

बार बार कह द्रुपदकिशोरी ❀ सुरति करायहु मातहि मोरी॥
पूजनीय तुम श्वशुर हमारे ❀ नहिं सँदेश पठावन हारे॥
अनुचित क्षमब कुअवसर जानी ❀ कहेउ मातुते मम प्रिय बानी॥
पदसेवा कर अवसर आवा ❀ भाग्य कठिनतब मोहिंभ्रमावा॥
जो जीवत राखहिं जगदीशा ❀ धरिहौं आइ चरणतर शीशा॥
तुव प्रसाद सब पुत्र तुम्हारे ❀ रहिहैं मोहिं समेत सुखारे॥
अस कहि बिदुरचरण गहि रानी ❀ बिलपत भाषत आरतबानी॥
पुनि पुनि मिलत धर्म नरनाहू ❀ बहेउ बिलोचन बारि प्रबाहू॥
तेहि अवसर कुरु आयसु मानो ❀ चहुँदिशि बीर धीर अरुशानो॥
गहे अनेक नगिनि करबाला ❀ रूप भयंकर धनुष बिशाला॥

दोहा—धर्मसुतहि पारथ कहेउ, नाथ रजायसु होइ ।
चलत बार कौरव सुभट, कछुक दीजिये खोइ ॥
नहिं भायो पारथ बचन, नायाबिदुरपद भाल ।
चलौ घटोत्कचते कहेउ, सत्य धर्म महिपाल ॥
लखिकुम्भोत्कचभूपरुख, आतुर बार नलागि ।
गर्जि तर्जि उच्चाट करि, गयोनागपुर त्यागि ॥
सबलसिंहसुनि बिदुरमुख, कौरवनाथ हवाल ।
ह्वै उदास शकुनी करण, बोलिलियेततकाल ॥

इति श्रीमहाभारतेसभापर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचिते पाण्डवबनगमनंनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति सभापर्व समाप्तम् ॥

महाभारत

वनपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामितुलसीदास-कृत रामायणकी रीति पर दोहा-चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

जंगलों में पांचो पाण्डवों व द्रौपदी का दुर्वासादि मुनियों
का समागम व अनेक असुरों द्वारा दुःख पहुँचना
पश्चात् धौम्योपदेश से अज्ञातवास रहने का
बिचार अनेक कथाओं में वर्णित है।

काशी

बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा—

भार्गव भूषण प्रेस काशी में मुद्रित।

श्रीगणेशाय नमः

अथ महाभारत भाषा

बनपर्व

दोहा—अब वनपर्व कथायह, आगे सुनहु नरेश।
छांड़ो देशहिं धर्मसुत, कीन्हों वन परवेश॥

काम्यक बिपिन रहे तहँ जाई ❀ धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई॥
जहां बिपिन हैं बहु बिस्तारा ❀ सिंह भालु बाराह अपारा॥
कामी नाम दैत्य यक रहई ❀ महा सो बीर पराक्रम अहई॥
ताके डर बहु तपसी डरई ❀ तेहि बन निशिबासर सो रहई॥
मानुष बाप पाइके धायो ❀ धर्मराज सन पूछन आयो॥
किंवर नाम अहै बन मोरा ❀ को तुम बीर अहौ बरजोरा॥
धर्मराज बोले यह बानी ❀ पाण्डुपुत्र हैं सब जग जानी॥
भीम धनञ्जय नकुल कुमारा ❀ सहदेव है लघु बन्धु हमारा॥
हमहीं राज युधिष्ठिर अहहीं ❀ सत्य बचन तोसों सब कहहीं॥
यह द्रौपदी अहै पटरानी ❀ हारे राज्य लियो बन आनी॥

दोहा—सुनतदैत्यहँसिबोलेऊ, बिधिम्बहिंदीन्हअहार।
भीम नाम बलबीर सो, बैरी अहै हमार॥

रहे बकासुर बन्धु हमारा ❀ ताको भीमसेन संहारा॥
शंख हमार हिडम्बक रहई ❀ मार्‍यो ताहि दैत्य अस कहई॥
सोविधि मोकहँ दीन्ह मिलाई ❀ आजु मारिहौं पांचो भाई॥
शोणित करों भीम कर पाना ❀ तब संतुष्ट होय मम प्राना॥
यह कहि दैत्यरूप तब धारा ❀ बृक्ष एक हँसि भीम उपारा॥
मार्‍यो भीमसेन करि क्रोधा ❀ किंवर नाम दैत्य बड योधा॥
मार्‍यो बृक्ष तासु के माथा ❀ क्रोधित भयो दैत्यकर नाथा॥

एकै एक जीति नहिं पायो ❀ दूनों ओर जूझ मन लायो ॥
तब पर्वत यक दैत्य उपारा ❀ भीम सेन के उर पर डारा ॥
मारु मारु करिकै तब धावा ❀ चन्द्रहि राहु ग्रसन जनु आवा ॥

दोहा—उठेउ भीम तब क्रोध करि, मल्लयुद्ध दिय ठान।
जिमि सुग्रीवहिं बालसें, बिबिध भांति मैदान॥

क्रोधित भीम गह्यो तब ताहीं ❀ दूनो हाथ दियो कटि माहीं ॥
बहुरि भीम पकरेउ शिरबारा ❀ क्रोधवन्त होइ भूमि पछारा ॥
आरत दूनों कीन्ह चिघारा ❀ मुख ते चली रुधिर की धारा ॥
भीम दैत्य को जबहिं संहारा ❀ छाँड़ेउ तब जब प्राण निकारा ॥
बधेउ दैत्य कहँ भीम जुझारा ❀ हर्षित भे तब पवनकुमारा ॥
मिलि सब बन्धु हर्ष उर छाये ❀ दुर्वासा तहँ देखन आये ॥
साठि सहस्र शिष्य लै साथा ❀ बोलेउ बचन सुनहु नरनाथा ॥
हम सब कहँ भोजन करवावो ❀ नातरु ब्रह्मशाप तुम पावो ॥
त्रासवन्त पाण्डव सब भयऊ ❀ तब द्रौपदि हरिसुमिरन करेऊ ॥
सुमिरत श्रीहरि आये जबहीं ❀ क्षुधावन्त भाषेउ तिन तबहीं ॥
भोजन नेकु न कछु गृह अहई ❀ श्रीपतिसों यह द्रौपदि कहई ॥
यदुपति कछू न भोजन अहई ❀ लावा पात्र सो यदुपति कहई ॥
भोजन भोजन लैकर आई ❀ यकु रञ्चक भाजी तहँ पाई ॥
पुनि कृष्णहि अस बचन सुनाये ❀ तीनों लोक तृपित होइजाये ॥
मुनि गणकेर उदर भरि आये ❀ श्रीहरि द्वारावती सिधाये ॥
दुर्वासा कहँ भीम बुलाये ❀ भोजन हेतु चलो मुनिराये ॥
दुर्वासा तब बचन प्रकाशा ❀ कबहुँ न होइ भक्तकर हासा ॥

दोहा—यह कहिगे दुर्वासऋषि, हर्षित धर्मकुमार।
सूर्य बिनय करि द्रौपदी, पूजा करि बिस्तार॥

ह्वै प्रसन्न तब रवि वर दीन्हों ❀ मांगु मांगु यहकहि सो लीन्हों ॥
कहा द्रौपदी धर्म उपाई ❀ अन्नपूरणा देहु गुसाईं ॥
ह्वै प्रसन्न रवि तहँ अति दीन्हों ❀ धर्मराज कहँ हर्षित कीन्हों ॥

प्रतिदिन तहँ ब्राह्मण बिधिनाना ❀ भोजनकरैं बहुत सुख माना ॥
साठि सहस तहँ मुनिवर आये ❀ नित प्रति तहँ भोजन करवाये ॥
ऐसे धर्मराज तहँ रहई ❀ परमहर्ष बन भीतर अहई ॥

दोहा—ब्राह्मण भोजन प्रतिदिन, बनमें धर्म भुवार ।
पाण्डव विजय रहस्यहै, सुने पाप सब छार ॥

आगे सुनु जनमेजय राजा ❀ धर्मराज कीन्ह्यो जस काजा ॥
सरवर एक सुभग बन रहेऊ ❀ जल हित तहँ सहदेवहि गयऊ ॥
जलमें एक जन्तु तहँ रहई ❀ पायो शब्द बचन सो कहई ॥
को तुम जीव कहौ अब भाई ❀ कहौ सो सब मम कथा बुझाई ॥
प्रति उत्तर सहदेव न दीन्यो ❀ तुरतहि ग्राह लीलि तब लीन्हो ॥
यहि प्रकार तहँ चारिउ भाई ❀ लीले ग्राह सरोवर जाई ॥
धर्मराज तहँ करो बिलापू ❀ पाछे गये सरोवर आपू ॥
जल भाजन देखेउ तब राई ❀ तट में चरण चिह्न हैं भाई ॥
अरु बक चिह्न पाइ लखि राजा ❀ तब चलिगयो सरोवर काजा ॥
लखि भाजन राजन तब गहई ❀ पावन शब्द ग्राह तब कहई ॥

दोहा—को जीवत को जगतो, कहौ भेद समुझाइ ।
बिन भाप सरवरहिते, कोउ न जल लैजाइ ॥

धर्म राज तब मनमहँ जाना ❀ यही जन्तु कछु कन्यो बिधाना ॥
धर्म राज तब कह समुझाई ❀ जीव जौन सो सुनु मनलाई ॥
दया शील समता मन रहई ❀ सत्य छोड़ि मिथ्या नहि कहई ॥
विष्णुभक्ति आने करि ज्ञाना ❀ प्रेमभाव मनमहँ जो ठाना ॥
जाके हृदय कपट है नाहीं ❀ परसेवक सो है जगमाहीं ॥
जीव सदा सो भक्त कृपाला ❀ तू किमि जीवै सुनु चण्डाला ॥
कहे बचन अस धर्मभुआला ❀ तब छोड़ेउ सहदेवै काला ॥
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी ❀ धर्म राज तब कहेउ बखानी ॥
सेवा मात पिता की करई ❀ सदा धर्म हिरदय महँ धरई ॥
पाप कपट जिय कबहु न जाना ❀ जीवै सदा भक्त भगवाना ॥

तू किमि जीवै जो निज चोरा ❀ परो है अधम काल के फेरा ॥
इतनी सुनेउ ग्राह पुनि जबहीं ❀ नकुलहि कहँ छांड़ेउपुनि तबहीं ॥
और सत्य अपने जिय माना ❀ हैं यह धर्मराज जिय आना ॥

दोहा–कोजीवतहै जगत में, सुनिये धर्मकुमार ।
सुनुरे पापी पातकी, धर्मज बचन उचार ॥

देह आपनी हठ करि जाना ❀ करै योग बिधि बेद प्रमाना ॥
ये षटचक्र बिदारै जोई ❀ जीवै सदा भक्तजन सोई ॥
तू तो भक्ति धर्म नहिं जाना ❀ सदा मृत्युमुख सुनु अज्ञाना ॥
इतना सुनि त्यहि अर्जुनबीरा ❀ उगिलि ग्राह है हर्ष शरीरा ॥
पुनि तब ग्राह कही यह बानी ❀ धर्मराज सुनि कह्यो बखानी ॥
जीवत योग देह महँ होई ❀ भावत कर्म धर्म नहिं सोई ॥
कामी क्रोध लोभ अहँकारा ❀ कालरूप जानै संसारा ॥
जीवे जो यह भक्त सुजाना ❀ जीवै सदा भक्त भगवाना ॥
तैं किमि जिये मूर्ख अज्ञानी ❀ परो नरक चौरासी खानी ॥
सुनत भीम उगिलेउ तिहिवारा ❀ बिनय कीन्ह तिहिं बारम्बारा ॥

दोहा–सुनिये भूपति धर्मसुत, जानत सब संसार ।
छुवो जो चरण शरीर मम, तब होवै उद्धार ॥

परस्यो चरण भूप तेहिं जबहीं ❀ दिब्यरूप राजा भो तबहीं ॥
धर्मराज पूछ्यो हरषाई ❀ कौन कहो गति कैसे पाई ॥
तबहि राउ सों कहेउ बिचारी ❀ सुनहु धर्मसुत बिपति हमारी ॥
हम तो यही शाप हित पाई ❀ ताते तव लीलेउँ सब भाई ॥
सो तब तुमहिं चीन्हि हम पायो ❀ तुमहीं ते उद्धार करायो ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचोहानभाषाकृते वनपर्व
धर्मराजग्राहसंवादः प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनु राजा यह कथा सुहाई ❀ जौन हेतु हम यह गति पाई ॥
मैं यक बार अहेरे गयऊँ ❀ कर्महीन तबहीं सो भयऊँ ॥
एक कहार मृतक ह्वै गयऊ ❀ मम सँग अश्व न एकौ रहेऊ ॥

परेउँ भूलिकै सो बन माहीं ❀ बिपिन सघन तहँ सूझ न आहीं ॥
तीनि कहार रहे तेहि पाहीं ❀ एक मृतकभा तेहि बनमाहीं ॥
कर्महीन ते दुख मैं लहेऊ ❀ करत तपस्या ऋषि बन रहेऊ ॥
तौन महाऋषि जान न पाये ❀ तिन्हैं कहार तहाँ धरि लाये ॥
आनि पालकी माहिं लगाये ❀ निजपुरको फिरि तब हम आये ॥
द्वारे धरी पालकी आई ❀ बैठ मुनीश्वर पुनि तेहिं ठाई ॥
भोजनपान खबरि नहिं लयऊ ❀ बासर गयउ राति पुनि भयऊ ॥

दोहा—बासर बीते रैनि भै, कीन्हेउँ मैं उच्चार ।
प्रथम पहर मैं भाषेऊं, को जागत संसार ॥

तब मुनि कही तहाँ यह बाता ❀ जन्म मृत्यु दुख सुखसँग ताता ॥
क्षुधा तृषा ते नित दुख सहई ❀ करत बन्ध सो सुख नहिं लहई ॥
जानै यह जग दुःख समाजा ❀ सो जानै सब सोवत राजा ॥
दूजे यहै चलाई बाता ❀ जागै कौन कहौ सति ताता ॥
पुनि बोल्यो मुनि बात प्रमाना ❀ योगी योगकरैं नित ध्याना ॥
कामरु क्रोध लोभ अहँकारा ❀ बसै देह में सब बटमारा ॥
सदा ज्ञान ते रहै सचेता ❀ सोवत जागत रहै सो येता ॥
तीजे पहर पूछ मैं आहो ❀ सो सुनि बोले पुनि मुनि पाहो ॥
जो कोइ ध्यान करै जग माहीं ❀ ताको संकट परै न काहीं ॥
दिव्यज्ञान करि हरि को जानै ❀ हिसा कपट हृदय नहिं आनै ॥
जो दुःखी सो संशय भरई ❀ परबश ह्वै प्रचार सो करई ॥
सो जागै सब सोवै राजा ❀ सोवै खोव आपन काजा ॥
चौथ पहर कहेउ को जागै ❀ क्रोधित मुनि बोले मो आगे ॥
सुनु मूरख जाग जो ज्ञानी ❀ तू किमि जागगृह अभिमानी ॥
ग्राह होय राजा तैं जाई ❀ भूप शाप ऋषिको यह पाई ॥

दोहा—तबमैं बिनती कीन्हेऊं, भा बड़ दोष हमार ।
कृपाकीजिये महामुनि, होंज्यहि बिधि उद्धार ॥

बोले मुनि तब परम उदारा ❀ द्वापर युग उद्धार तुम्हारा ॥

पाण्डुपुत्र अइहैं बन माहीं ❋ धर्मपुत्र धर्म मन माहीं ॥
परसे अङ्ग होब उद्धारा ❋ पुनि दीह्यों बर याहि प्रकारा ॥
सो राजा तव दर्शन पाई ❋ मम उद्धार भयो अब आई ॥
यहि प्रकार ते पायउँ शापू ❋ मेटेउ शाप कृपा करि आपू ॥
अस्तुति करि राजा दिवि गयऊ ❋ धर्मराज मन हर्षित भयऊ ॥
भाइन सहित हर्ष हिय भयऊ ❋ तेहि थल बसे धर्म सुख लयऊ ॥
सुनो भूप जनमेजय बाता ❋ सो जड़भरत रह्यो मुनि त्राता ॥

दोहा—रहे हर्षि बनमाहिंसो, परम मनोहर ठांय ।
सहित द्रौपदी राजतहँ, अरुसबचारिउभाय ॥

तब सो द्रुपदराज भगवाना ❋ धृष्टद्युम्न संग करेउ पयाना ॥
मिलन हेतु सो बनमहँ आये ❋ बहु विधि उन्हैं कृष्णा समुझाये ॥
दुखसुख यहबिधि करतब राजा ❋ हस्तिनपुर कर राज समाजा ॥
यहि विधिमिले तिनहिं सोजाई ❋ सहित द्रौपदी पाँचो भाई ॥
धौम्य ऋषिहि मिलिबहु सुखमाना ❋ तबहि द्रुपदगृह कियो पयाना ॥
पाण्डव बसहिं जौन बन माहीं ❋ काम्यक वन उत्तम है जाहीं ॥
बहु दिन भये तौन बनमहहीं ❋ चारिउ बन्धु धर्मसुत रहहीं ॥

दोहा—बहुदिन काम्यकबनहिं में, रहे पाण्डु तहँ आइ ।
ह्वै उदास पुनि धर्मसुत, छांड़ासो बन जाइ ॥

तबहिं द्वैत बन पाण्डव गयऊ ❋ मार्कण्डे मुनि दर्शन दयऊ ॥
नारद आदि सुनी यह तबहीं ❋ पाण्डव गये द्वैत बन जबहीं ॥
तहाँ बसहि बहु ऋषय समाजा ❋ पाण्डव शोक मेटिबे काजा ॥
सो सम्बाद बहुत बिस्तारा ❋ कछु संक्षेप सुनो सुख सारा ॥
बसे द्वैत बन पाण्डव आई ❋ तहाँ द्रौपदी बात चलाई ॥
कहे बचन तब धर्मनरेशहि ❋ बिपिन बास बहु सहे कलेशहि ॥
पापी दुर्योधन जग जाना ❋ शकुनी कर्ण दुशासन नाना ॥
अन्ध नृपति कछु कहो न जाई ❋ सुनो धर्मसुत . पाँचो भाई ॥
हमहिं सहित उन बनहि पठाये ❋ दुर्योधन छल ख्याल न लाये ॥

नेकु दया हिरदै नहिं लायो ❀ कपट अन्न करि बनहिं पठायो ॥
दोहा—आपु सहेउ बहुदुःख बन, हमैं सहो नहिं जाइ ।
दुर्योधन अपकारि सों, रानी कह्यो बुझाइ ॥
नाना यज्ञ धर्म बहु कीन्हा ❀ ताकर यह फल विधि बहुदीन्हा॥
भीम बीर अर्ज्जुन धनुधारी ❀ पलमा करैं सकल संहारी ॥
ये तुम्हरे बाचा के कारन ❀ सकैं न कौरवदल संहारन ॥
आज्ञा देउ सुनौ हो राऊ ❀ मारैं शत्रु देश तब पाऊ ॥
क्षमा केर अवसर अब नाहीं ❀ छिपिकै रहब कहाँ धौं जाहीं ॥
क्षमा के समय क्षमा है भारी युद्ध समय कीजै हठि रारी ॥
राजधर्म क्षत्री के कर्मा ❀ मारु शत्रु जिन कीन कुकर्मा ॥
द्रौपदि केर बचन ये सुनिकै ❀ बोले बचन धर्म मुनि गुनिकै ॥
कहे बचन राजा त्यहि ठहईं ❀ धर्महिं सदा वेद मो अहईं ॥
बारह संवत निजमुख हारा ❀ चित्त क्षमा तेहि हेतु हमारा ॥
दोहा—किये क्रोधसम पाप नहिं, राजा कह्यो बुझाइ ।
क्रोधकिय पुनि धर्म नाहिं, भाषेउ पाण्डव राइ ॥
दान धर्म सब कालहि करई ❀ पर दुःख तेहि जनि परिहरई ॥
है सब घटमें पुरुष प्रधाना ❀ दुखसुख सब समान करिजाना ॥
एक पुरुष है सुख दुख दाता ❀ दूसर अहै न सुनु मम बाता ॥
सुनत भीम क्रोधित ह्वै गयऊ ❀ धर्मराज सन बोलत भयऊ ॥
जोपै धर्म महा सुख पाये ❀ तौ बनको सहेतु केहि आये ।
कौन धर्म महँ बहु सुख पाये ❀ देखत देखत राज्य गँवाये ॥
कौन धर्म्म दुर्योधन राऊ ✱ राज्यको सुख सो सकल बनाऊ ॥
आज्ञा देउ बधौं सौ भाई ❀ फिरि पीछे लैजावँ लवाई ॥
तुम्हिं राज्य बैठारहु राजा ❀ ऐसो जाय करौं सब काजा ॥
अर्ज्जुन धनुष खैंचि शर धारैं ❀ यक क्षणमें कुरुराज संहारैं ॥
दोहा—तुम्हैं हीनबल कौरवा, जानै अपने जीम ।
आज्ञा देवहु धर्मनृप, कह्यो कोप करि भीम ॥

भीम बचन सुनि राजा कहई ❀ जुआ खेल हारे सब अहई ॥
वाचा हारि करौ सत कर्मा ❀ पीछे युद्ध कीजिये धर्मा ॥
धर्म न छाड़ब जबतक प्राना ❀ धर्म ते राज्यबृद्धि जगजाना ॥
ताही समय व्यास तहँ आये ❀ हर्ष हृदय पाराडव समुझाये ॥
तब यकमन्त्र व्यासमुनि कहेऊ ❀ सुनिकै धर्मराज सुख भयऊ ॥
पुनि यह मन्त्र जपौ तुम जाई ❀ पारथते तब कहेउ बुझाई ॥
देउँ मन्त्र जपतै बर पैहौ ❀ युद्ध जीति पृथ्वीपति ह्वैहौ ॥
इन्द्र बरुण यम शंकर देवा ❀ होत सबै परसन्नहिं सेवा ॥
यह यहिकै ऋषि व्यास सिधाये ❀ काम्यकवन पुनि पाराडव आये ॥
काम्यकबन पुनि भयउ प्रकाशा ❀ पाँचौ बन्धु द्रौपदी पासा ॥

दोहा—यहिप्रकारते बनहिं महँ, रहे पाण्डुसुत आनि ।
जनमेजय नृप आगेहू, बैशम्पानि बखानि ॥

इतिश्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहान भाषाकृतेवनपर्वकाम्यकवनपाराडववासबर्णननामद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

सुनु राजा रहैं जौन प्रकारा ❀ चारिउ बान्धव धर्मकुमारा ॥
केतिक दिवस रहे तिहि ठाहीं ❀ यकदिन पारथ नृपसो काहीं ॥
आज्ञा होय जाउं मैं तहँवाँ ❀ गौरीपति के दर्शन जहँवाँ ॥
आज्ञा पाइ चरण छुइराई ❀ चढ़ो हिमाचल पर्वत जाई ॥
व्यास मन्त्र जो दिया दैऊ ❀ तौन मन्त्र जपि ध्यान लगैऊ ॥
फल औ मूल भषे त्रयमासा ❀ पुनि दुइमास भयो उपवासा ॥
शंकर तब प्रसन्न ह्वै आये ❀ पारथ सों इमि बचन सुनाये ॥
काहे तप कठोर तनु त्रासा ❀ मन इच्छा सो करौ प्रकासा ॥
जो बाञ्छा उर अहै तुम्हारे ❀ होइ सिद्धि सुनु बचन हमारे ॥
भये शम्भु कहि अन्तर्द्धाना ❀ तेहि बन पारथ पुनितप ठाना ॥

दोहा—अन्तर्द्धान महेश भे, अरु अर्जुन बर पाइ ।
ह्वै प्रसन्न तप करत भे, शंकरसों मन लाइ ॥

तप साधत बीते कछु काला ❀ और चरित्र सो सुनौ भुवाला ॥

रूप किरात धरो हर तहवाँ ❀ करत उग्र तप पारथ जहवाँ ॥
दोउकर धनुषबाण कर लीन्हो ❀ रूप सुन्दरी गौरी कीन्हो ॥
भूत कटक सब संग लेवाई ❀ कोल भील कर बेष बनाई ॥
अहै नाम शुक दैत्य कुमारा ❀ शूकर रूप घोर पुनि धारा ॥
पारथ के आगे भे आई ❀ रूप किरात महेश्वर जाई ॥
चला दैत्य तारक के काजा ❀ करो बिचार भूतके राजा ॥
गर्ज्यो शूकर पारथ आगे ❀ ध्यान छाँड़ि के पारथ जागे ॥
धनुष बाण पारथ कर गहेऊ ❀ तब किरात अर्जुन सन कहेऊ ॥
बहुत परिश्रम करि मैं आयों ❀ बड़ो पराक्रम करि मैं पायों ॥

दोहा–तेहि चाहत है मारनो अरे मूढ़ अज्ञान ।
अर्जुन कहो न माने तब, हन्योतासुशिरबान ॥

सुवररूप तजि दानव भयऊ ❀ तब किरात मन क्रोधित भयऊ ॥
मारेसि सुवर आपने हाथा ❀ पठवों तोहिं सुवर के साथा ॥
यमपुर अबहिं पठावों तोहीं ❀ तैं अब बीर बिरोधेसि मोहीं ॥
जो शक्ती है तनु तुव हारी ❀ ताते अस्त्र देहु परहारी ॥
सुनि कै क्रोध धनंजय ठाना ❀ पुनि किरातपर बर्ष्यो बाना ॥
एको बाण न भेदेउ अङ्गा ❀ बिस्मय करि पारथ मन भङ्गा ॥
तबहँसि शंकर बचन बखाना ❀ और बाण तोहिं करों निदाना ॥
अर्जुन धनुष हन्यो वर जोरा ❀ टूट्यो अस्त्र तोन पुनि घोरा ॥
अर्जुन कह्यो किरात न होई ❀ होय बिष्णु की शंकर सोई ॥
माया बपु करि बंचेउ मोहीं ❀ भयो चकित चिन्ता मन सोहीं ॥

दोहा–खड्ग घाव जो मारऊ, सो निष्फल ह्वै जाय ।
तबहिंवृक्षयक लीन्हेऊ, पारथ क्रोधित धाय ॥

शंकर भूत बाण अस मारा ❀ काटि वृक्ष भूतल में डारा ॥
तब पारथ मुष्टिक अस मारा ❀ पौरुष करि अर्जुनहिं प्रहारा ॥
शंकर पुनि तहँ हाथ पसारा ❀ अल्प तेज को पारथ मारा ॥
लागत भूमि परेउ मुरझाई ❀ क्षणक एक पुनि चेत सो आई ॥

रहु रहु पुनि कहि उठ्यो प्रचारी ❀ तबसो हृदय निहारि निहारी ॥
प्रथमहिं पूज्यो शंकर जोई ❀ पारथ ताहि बिलोक्यो सोई ॥
सो माला हर गरे निहारा ❀ देखि चकित भे पाण्डु कुमारा ॥
निश्चय जान्यों शंकर होई ❀ परेउ दौरि चरणन पर सोई ॥
क्षमा करौ यह चूक हमारी ❀ बिनु जाने कीन्ही मैं रारी ॥
तब शंकर प्रसन्नचित भयऊ ❀ हितकरि चितै परमसुख दयऊ ॥
मैं प्रसन्न हरि हर कहि दीन्हा ❀ तब अर्जुन प्रणाम सो कीन्हा ॥

दोहा—पशुपतास्त्रमन्त्राहिसहित, हर अर्जुन कहँ दीन्ह।
हर्षित गात धनञ्जयहु, चरणकमल गहिलीन्ह॥

तुम सँग युद्ध पार को पाई ❀ ऐसी शक्ति न काहू भाई ॥
अस्त्र देइकै पशुपति नाथा ❀ अन्तर्द्धान भये गणनाथा ॥
हर्षवन्त कह पारथ बैना ❀ मैं शंकर देख्यों भरि नैना ॥
धनि जीवन जग आज हमारा ❀ जो शंकर निजनैन निहारा ॥
पारथ बहुत हर्ष जिय पायो ❀ तौने समय देव सब आयो ॥
इन्द्रआदि सँग सब दिकपाला ❀ पारथ ऊपर भयो दयाला ॥
हर नारायण सुरपति कहई ❀ तुम नररूप जन्म सुत अहई ॥
भूमि सहै नहिं क्षत्री भारा ❀ तेहि कारण अवतार तुम्हारा ॥
जेहि विधि अस्त्र जौन हैं जेते ❀ सिखै देव हम तुमकहँ तेते ॥
यह कहि शक्र अस्त्र सब दीन्हे ❀ मन्त्रनसहित समर्पण कीन्हे ॥

दोहा—कालदण्ड यम दीन्हेऊ, वरुण दियो जलवान।
वज्रदण्ड इन्द्रादि दै, हर्षित भो बलवान ॥

जब उपकार अग्नि को कीन्हो ❀ पावक अस्त्र तहाँ बहु दीन्हो ॥
सप्तपञ्च गाण्डिव धनु लीन्हों ❀ नन्दिघोपरथ हुतभुक दीन्हों ॥
आपन अस्त्र यक्षपति दीन्हो ❀ तबहीं इन्द्र कछुक शिष कीन्हों ॥
मातुलसाथ स्वर्ग कहँ ऐहो ❀ अस्त्र अनेक तहाँ तुम पैहो ॥
यह कहिकै सुरपति तब गयऊ ❀ रथ सह सूत उपस्थित भयऊ ॥
देवसभा जब पारथ गयऊ ❀ नाना अस्त्र इन्द्र तब दयऊ ॥

बहुविध अस्त्र सिखाये ताही ❀ इन्द्रलोक पारथ जहँ आही ॥
देव अस्त्र पढ़ि सब बिधि जानी ❀ सुरपति जिष्णु परमसुख मानी ॥
दोहा—सिखे अस्त्र बहु पारथहि, देवपुरी महँ जाय ।
चिन्ता करत युधिष्ठिरहु, पारथ को हित पाय ॥
कौने देश धनञ्जय गयऊ ❀ चारिउ बान्धव शोचत भयऊ ॥
कीन्ह्यो शोच द्रौपदी रानी ❀ तबहिं धर्मसुत कह्यो बखानी ॥
विद्या महाब्यास ते पायउ ❀ तौन कारण बनहिं सिधायउ ॥
गौरीपति अवराधन गयऊ ❀ कौनहेत जिय बिस्मय भयऊ ॥
हर पूजाते संशय नाहीं ❀ है कल्याण लोक तिहुँ माहीं ॥
होउ प्रसन्न शोच केहि काजा ❀ इमि सबको समुझावत राजा ॥
तप कारण पारथ तहँ जाई ❀ सुनत भीम तब कह्यो रिसाई ॥
जो बियोग पारथ सँग होई ❀ प्राण त्याग करिबो सब कोई ॥
प्रथमहिं आज्ञा देतेउ राजा ❀ सहतेउँ कत यह दुःख समाजा ॥
क्षमा किये राजा कह लहिये ❀ दिनदिनदुखबहुबिधिकिमिसहिये ॥
दोहा—राज देश सब छूटेऊ, राव तुम्हारे हेत ।
देहु रजायसु राज तुम, अबते होउ सचेत ॥
मरिये शत्रु देश तब पाई ❀ बनको दुःख सहो नहिं जाई ॥
बारह बर्ष सहो दुख भारा ❀ एक बर्ष अज्ञात भुवारा ॥
अर्जुन बीर बड़ो धनुधारी ❀ और सहायक श्रीबनवारी ॥
राव तुम्हारी आज्ञा पावों ❀ दुर्योधन शतबन्धु नशावों ॥
भीम बचन श्रवणन सुनि लीन्हे ❀ धर्मराज उत्तर पुनि दीन्हे ॥
सुनो भीम जो बचन बखानो ❀ दोष हमार सत्य करि जानो ॥
सुनि मम बचन रहो अरुगाई ❀ पीछे बन्धु करौ मनुसाई ॥
अब यहि समय रहो चुप भाई ❀ तबै दस्वऋषि तह चलिआई ॥
धर्मराज उर आनँद छाये ❀ अर्घ देइ आसन बैठाये ॥
कहेउ आप सब बरणि कलेशा ❀ महादुखित होइ बरणि नरेशा ॥
दोहा—तजेउँ देश बहु दुख सहेउँ, दुर्योधन के काज ।

आदि अन्त सुनि आगे, बरजो दुख सब राज ॥
सुनिकै तब दुख कहो बखानी ❀ मिटै न कर्म लिखा सुनु बानी ॥
तुम तो बड़ो दुःख नृप पाये ❀ राज्य छोड़ि बनबासहि आये ॥
नल दुख सुनो मनहिं धरि राजा ❀ घटै पाप बहु सौख्य समाजा ॥
पांसे खेलि हारि सब देशा ❀ रानी सँग वन कीन्ह प्रवेशा ॥
एक बस्त्र दोनों ढिग रहेऊ ❀ सोऊ तजि राजा बन गहेऊ ॥
पायउ सो दुख बहु बन जाई ❀ छुट्यो दुःख मे राजा आई ॥
ताको कहउँ सहित बिस्तारा ❀ सावधान होइ सुनो भुवारा ॥
तासु दुखहि सुनिहो जो राऊ ❀ सुनतहि प्राण न धैर्य रहोऊ ॥
पायउ पतिब्रता दुख जेता ❀ तोपर कहो जाइ नहिं तेता ॥
दोहा–सुनत दुखहि बहु नृपतिके, पारथ बीर न होइ ।
धर्मराज के सम्मुखहि, कहत दस्व ऋषि सोइ ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृतेवनपर्वणि

नलोपाख्याननामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सुनु नृप है नैषध यक देशा ❀ तहँ पुनीत नल नाम नरेशा ॥
बहु बिस्तार कहो नहिं जाई ❀ लघु करि ताहि कहौं समुझाई ॥
यक दिन राव सरोवर जाई ❀ पंगति हंस देखि बहु पाई ॥
तबहीं हंस पकरि नृप जाई ❀ रोइ हंस तब नृपहिं सुनाई ॥
राजा बेगि छांड़िदे मोहीं ❀ कन्या एक मिलावों तोहीं ॥
देश बिदर्भ भीम नृप रहई ❀ कन्या एक तासु गृह अहई ॥
दमयन्ती बिधि रूप सँवारी ❀ देखि गिरा रति रूप निहारी ॥
सुनतहि राज हर्ष मन लीन्हा ❀ तुरतहि छांड़ि हंस कहँ दीन्हा ॥
राजा गे अन्तःपुर माहीं ❀ देश बिदर्भ हंस उड़ि जाहीं ॥
उतरो जाइ हंस सो तहवाँ ❀ पारिजात फूले बहु जहवाँ ॥
दोहा–उत्तम सरवर देखिकै, उतरो हंस बिचारि ।
बिधिरचना सब सखिन सँग, आई राजकुमारि ॥
देखि हंस कहँ राजकुमारी ❀ गहन हेत तब बुद्धि बिचारी ॥

तब वह हंसरूप अति धारेउ ❀ निजबश कन्या को मन कारेउ ॥
सुनु दमयन्ती बात हमारी ❀ नैषध देश महीपति भारी ॥
नल राजा उपमा को कहई ❀ देखत रूप मोहि जग रहई ॥
तब यह सफल तोर है रूपा ❀ जो पति पावहु नलसों भूपा ॥
सुनि दमयन्ती हृदय जुड़ाना ❀ हंसबचन सुनि हर्षित प्राना ॥
कह दमयन्ती करहु उपाई ❀ जाते होइ मोर पति राई ॥
भये स्वयम्बर उनकहँ बरिहों ❀ अरु काहूको चित्त न धरिहों ॥
सुनत बचन यह कहेउ बुझाई ❀ जात अबहि मैं कहों उपाई ॥
बढ़ो हंस तब पंख पसारी ❀ देखि रही तब राजकुमारी ॥

दोहा—हंस देश नैषध गयो, राजहि कहा बुझाइ ।
कन्या मन तुमसों बस्यो, करहु हर्ष मन राइ ॥

राजा सुनत हर्ष मन कीन्हो ❀ पूरब कथा कहन मन लीन्हो ॥
देखि सुताकर चितहि उदासा ❀ रानी नृपसों बचन प्रकासा ॥
राजा सन रानी कह बाता ❀ कन्या योग स्वयम्बर गाता ॥
सुनत बचन राजा मन भायो ❀ देश देश तब विप्र पठायो ॥
राजा भीम स्वयम्बर कीन्हो ❀ भूपन सबहिं निमन्त्रण दीन्हो ॥
नल राजा कहँ नेवत पठावा ❀ करि निजसाज तुरंग सिधावा ॥
नारद सुरपुर बात जनाये ❀ चारो दिगपति सुनतहि धाये ॥
इन्द्र बरुण यम पावक अहई ❀ चारिहु देव चले मुनि कहई ॥
मारग मांझ मिले नर राई ❀ सुरपति बचन कहो समुझाई ॥
हम सब जात स्वयम्बर काजा ❀ हँसिकै बचन कही सुरराजा ॥
हमरे हेत दूत ह्वै जाहू ❀ दमयन्ती हमसों कर ब्याहू ॥
चारि जने हम यक मनमाना ❀ सुनि नल राजा बहुत लजाना ॥

दोहा—बोले नल नृप मन्दिरै, रहैं बहुत रखवार ।
राजसुता पहँ कैसही, जाय बचन उच्चार ॥

इन्द्र कहो मम आज्ञा होई ❀ तुमहिं जात देखै नहि कोई ॥
करि मन दुखित चले नृप तहँवां ❀ राजकुवँरि अन्तःपुर जहँवां ॥

दूनों जन ते दरशन भयऊ ❀ दुवो रूप मूर्छित ह्वै गयऊ ॥
सखी धाइ तब शीतल नीरा ❀ सींचेउ तब जल दुवो शरीरा ॥
दूनों चेत भये मन माहा ❀ तब परचा दीन्हों नरनाहा ॥
जौन प्रकार इहां को आये ❀ आवत काहु न देखन पाये ॥
इन्द्र बरुण मय पावक आये ❀ तेइ दूत करि मोहिं पठाये ॥
चारो जन कहँ मनमहँ धरहू ❀ एक जने कहँ स्वामी करहू ॥
लज्जित ह्वै दमयन्ती कहई ❀ देव नाग नर चित्त न अहई ॥
केवल पति हम तुम कहँ जाना ❀ देव नाग नहिं कोउ मनमाना ॥

दोहा—जादिन हंसहि रूपकह, ता दिन मैं पतिजान ।
देव नाग नर गन्धरब, हृदय और नहिंआन ॥

राजा कहेउ दोष म्वहिं होई ❀ कहैं देव हमहीं सब कोई ॥
ह्वै चर आपन काज सवाँरा ❀ देव अवज्ञा दुख है भारा ॥
कह कन्या नृप देवन साथा ❀ पठयहु तुमहिं होन नरनाथा ॥
जिय अपने मन तुमहीं आनों ❀ तुम तजि कैसे दूसर जानों ॥
यह कहि कन्या नृपहि बुझाये ❀ देवन पै नल राजा आये ॥
देव सबै तब पूछन लीन्हो ❀ तबहीं नल यह उत्तर दीन्हो ॥
मोहिं छाँड़ि मन और न माना ❀ मैं गुण रूप तुम्हार बखाना ॥
सुनत देव भे अन्तर्द्धाना ❀ राजसभा नल करेउ पयाना ॥
देश देश के राजा आये ❀ अद्भुत भूषण रूप बनाये ॥
चारिउ देव भये नल रूपा ❀ लखि नहिं परे सो एक स्वरूपा ॥

दोहा—बैठ जहाँ नल भूपवर, सब करि करि शृङ्गार ।
सँग प्रोहित कर माल लै, सभा माँझ पगुधार ॥

प्रोहित सब कर नाम बताये ❀ नल राजा कर नाम सुनाये ॥
कन्या देखि तहाँ यह रूपा ❀ पांचो जन बैठे नलरूपा ॥
बिनय करत तब राजदुलारी ❀ अयि देवहु मैं शरण तुम्हारी ॥
नैषध पति है स्वामी मोरा ❀ करौ प्रकट पद बन्दत तोरा ॥
सुनिकै बिनय दया सुर कीन्हे ❀ आपन रूप बहुरि धरि लीन्हे ॥

चीन्हे नल तब राजदुलारी ❋ जयमाला ताके उर डारी ॥
राजा सत्य बचन कह सोई ❋ देवन तजि जनि हम मन होई ॥
यहै प्रतिज्ञा सत्य हमारी ❋ नायक तुमहिं करबर्नहिन्यारी ॥
दीन्ह देवपति यह बरदाना ❋ इन्द्र कहे सम पवन पयाना ॥
सुमिरत तुम ढिग तुरतहि ऐहों ❋ याते सदा तुम्हैं सुख दैहों ॥

दोहा– पावक अग्नी शक्ति दै, बरुण दियो जलबान ।
धर्म विषे रति यम दई, भे सब अन्तर्द्धान ॥

देव सबै बर देकर गयऊ ❋ आशा भङ्ग सकल नृप भयऊ ॥
यहि प्रकार दमयंति सगाई ❋ वेदमन्त्र करि जो बिधि गाई ॥
दायज भीम नृपति बहु दीन्हा ❋ ह्वै कै बिदा चलन चित कीन्हा ॥
बाजन शब्द मनो घन गाजा ❋ नगर आपने आयउ राजा ॥
ऐसे आइ बसे रजधानी ❋ नल राजा दमयन्ती रानी ॥
केतिक दिवस बीति इमि गयऊ ❋ नाना केलि रङ्ग रति भयऊ ॥
नृपके पुत्र प्रकट यक भयऊ ❋ इन्द्रसेन अस नामहिं लयऊ ॥
कन्या एक भई पुनि ताके ❋ बहुतक हर्ष भई मन वाके ॥
ऐसे रँगरस राजा कीन्हा ❋ इन्द्र सरिस उपमा कहँ लीन्हो ॥
धर्मवन्त नैषधपति राजा ❋ पालै प्रजा पुत्रके काजा ॥

दोहा–राज्य करै नलराजहो, करि बहु धर्म प्रकाश ।
दमयन्ती अरु भूपवर, पूजेउ दूनों आश ॥

आगे सुनो धर्मभुव राऊ ❋ देवलोक कर करेउ उपाऊ ॥
बैठे सभा देवता जाई ❋ कलियुग बैठ तहाँ सुख पाई ॥
इन्द्र तहाँ यक बात चलाई ❋ दमयन्ती राजा नल पाई ॥
देवन कर करेउ अपमाना ❋ नलराजा कहँ पति करि जाना ॥
सुनि यह कलियुग उठा रिसाई ❋ बोलेउ बचन क्रोध जिय लाई ॥
नलके निकट जात सुरराई ❋ राज छोड़ावउँ निज बरियाई ॥
कलियुग द्वापर दोनों भाई ❋ पहुँचे नगर नैषधहि आई ॥
द्वापर ते कलि कह मुसुकाता ❋ होहु अत्र यह सुनु मम बाता ॥

हम अब बिप्ररूप ह्वै जैये ❀ चलिये अब पुष्करसों कहिये ॥
पुष्करसों यह तब करि बाता ❀ तुम अबजीतौ नल कहँ ताता ॥

दोहा—जीतिलेहु नलराजहो, कह कालयुग समुझाइ ।
बैलरूप तब कालियग, कहेउ तासु ते आइ ॥

धरि यह रूप उन्हैं समुझाई ❀ नल पहँ जाउ स्वरूप बनाई ॥
तहाँ पुनीत रहै नल राई ❀ तिनके बदन प्रवेशहु जाई ॥
एक समय बनमें नल राजा ❀ तृषा लागि जल लीन्हेउ राजा ॥
यहि प्रकार तब अवसर पाये ❀ नलशरीर महँ कलियुग आये ॥
पुष्कर गे तब नलके पासा ❀ जाइ करेउ यह बचन प्रकासा ॥
जुआ हेत आयहुँ तुम पाई ❀ आजु दुवो जन खेलिय भाई ॥
नल राजा के मन महँ आई ❀ खेलन हेत सो करेउ उपाई ॥
दमयन्तीके बचन न भाये ❀ नलराजा सब द्रब्य गवाये ॥
सोन रूप जो लाव भुवारा ❀ धरत दाउँ पलमहँ सब हारा ॥
गज तुरङ्ग हारे सब राऊ ❀ एको बार न जीत उपाऊ ॥

दोहा—बहुतदावँ जब लायऊ, हारेउ सब भण्डार ।
पुरजन मन्त्री संग ले, आये नल दरबार ॥

रानी अरु मन्त्री समुझाये ❀ राजा के कछु मनहि न आये ॥
रानी कह सब हारे राजू ❀ खेलु न अब उठि चलु नलराजू ॥
रोइ कही छूटत सब देशा ❀ झूठ बचन नहि मानु नरेशा ॥
एक सखी बोली तेहि पासा ❀ पठवो पुत्र सासु के पासा ॥
वह सो आइ यहाँ ले जैहैं ❀ सुत कन्या बिदर्भ पहुँचैहैं ॥
कहिये और बात कछु नाहीं ❀ पढ़न हेत पठये तुम पाहीं ॥
सुत कन्या तब रथ बैठावा ❀ सारथि देश बिदर्भ पठावा ॥
पहुँचे बेगि सारथी तहवाँ ❀ देश बिदर्भ भोम नृप जहँवाँ ॥
दमयन्ती पठये लै साथा ❀ सुत प्रतिपाल करो नरनाथा ॥
खेले जुआ कहेउ सो गाथा ❀ चिन्तावन्त भये नरनाथा ॥

दोहा—यहकहि साराथि तब चलो, राजाहिकियो जोहार ।
बहुतदेश तहँ देखिकै, अवध नगर पगु धार ॥

है ऋतुपर्ण भूप अस नाऊं ❀ ह्वै सारथी रहे तेहि ठाऊं ॥
राज्य सकल तब पुष्कर जीता ❀ यह कलियुग कीन्हेउ विपरीता॥
पुष्कर कहो रहो कछु अहई ❀ दमयन्ती लावहु यह कहई ॥
सुनत राउ भो क्रोध अपारा ❀ रानी के आभरण उतारा ॥
हारे अस्त्र आभरण जेते ❀ राज स्थान आदि पुर तेते ॥
सर्बस हारि उठे नल राजा ❀ पासा खेले भयउ अकाजा ॥
दमयन्ती जानो यह राजा ❀ कियो चलन बन केर समाजा ॥
रोइ चली दमयन्ती रानी ❀ सो करुणा किमि करौं बखानी ॥
राज्य तजा बनवास सिधाये ❀ ताकी करुणा जाति न गाये ॥
दासी दास बहुत बिलखाहीं ❀ दमयन्ती नृप पाछे जाहीं ॥

दोहा—चले जात नृपराज सो, पुरजन धीर धराय ।
दमयन्ती नृप ऊपमा, रामचन्द्र सों जाय ॥

पुष्कर दूत फिरे सब गाऊं ❀ नलराजा कर लेब न नाऊं ॥
उनहि कोउ जो भोजन देहीं ❀ पकरि ताहि कारागृह देहीं ॥
नगर लोग नृप पाछे जाहीं ❀ भयबश होइ बहुत बिलखाहीं ॥
बाहर नगर रहे दिन तीनी ❀ भोजन खबरि न केहू लीनी ॥
क्षुधावन्त तब राजा भयऊ ❀ पक्षि एक तहँ देखत भयऊ ॥
सुनु रानी यह बचन हमारा ❀ यह पक्षी है आजु अहारा ॥
आपन बसन तासु पर डारो ❀ सो पक्षी लै गगन सिधारो ॥
गा अकाश तब बोल्यो बयना ❀ हमैं न अब तुव देखौ नयना ॥
खेलि अक्ष सब राज्य गंवावा ❀ बसन हीन तबहीं सुख पावा ॥
राजा सुनि यह चक्रित भयऊ ❀ बसन लिये वह पक्षी गयऊ ॥

दोहा—राजा कह रानी सुनहु, क्षुधावन्त भे प्रान ।
परमहंस यह देहते, चाहत कियो पयान ॥

अर्द्ध बसन पहिर्‍यो नरनाहा ❀ रानी संग चले गहि बाँहा ॥
दमयन्ती धीरज धरि कहई ❀ दुख सुख नारि पुरुष सब सहई ॥

चले राह राजा अरु रानी ❀ द्वै राहैं तब आइ तुलानी ॥
दक्षिण दिशि यक मारग जाई ❀ रानीसन बोले नलराई ॥
दूसर मारग सुनु मन लाई ❀ देश बिदर्भ सूत यह जाई ॥
पाय पितागृह सुख तुम रहऊ ❀ संग हमारे दुख किमि सहऊ ॥
रानी सुनत भरे जल नयना ❀ रोदन करति कहति अस बयना ॥
कन्त चित्त है तुव थिर नाहीं ❀ ऐसे बचन कहत मुख माहीं ॥
पतिके दुखलौं त्रिय दुख होई ❀ पितु को राज्य कामकेहि सोई ॥
जो तुम दुख बन सहौ अपारा ❀ तो पतिसुख हमार सब छारा ॥

दोहा—कुण्डिनपुर कहँ चलौ नृप, जो मनमानै कन्त ।
तुमकहँ देखत भीमनृप, करिहैं प्रेम अनन्त ॥

बोले राव भीम नृप पाहीं ❀ ऐसे रानि जाब हम नाहीं ॥
हमको पन्थ देखावत कन्ता ❀ कौन काज पितु राज्य अनन्ता ॥
चले जात बन गहन गँभोरा ❀ रानी सहित धर्म नृप धीरा ॥
एक बृक्ष तर बनहिं मँझारी ❀ सोयउ राउ संग लै नारी ॥
देखि राउ उर में बहु सोगा ❀ देखो विधि कीन्हों कस योगा ॥
रबि शशि जिन कहँ देखेउ नाहीं ❀ सो मम संग फिरत बन माहीं ॥
मेरे संग बिपिन दुख पैहैं ❀ बहु संताप कहाँ लों सैहैं ॥
जाउँ याहि तजि जो बन माहीं ❀ आखिर पिता भवन सो जाहीं ॥
यह विचार नृप के मनआया ❀ कलियुग हृदय धर्म उपजाया ॥
बसन अर्द्ध लीन्हो पुनि राजा ❀ दयाहीन कलि के बश साजा ॥

दोहा—क्षण आवै नल निकटही क्षणकचलैतजिमोह ।
करै बिचार अनेक बिधि, कबहुँ करै मनक्षोह ॥

भीमसुता तजि चलि भे राजा ❀ बहुरोदन करि चले अकाजा ॥
गये राव मन बहुदुख पागी ❀ भीमसुता तेहि अवसर जागी ॥
चहुँदिशिचितै चकित चित भयऊ ❀ हाहाकरि बहुरोदन ठयऊ ॥
हाहा स्वामी कन्त हमारे ❀ तजि मोकहँ बन कहाँ सिधारे ॥
प्रथमहिं कहो न छाँड़ब तोहीं ❀ जब लगि घट बिच जीवन मोहीं ॥

यहि दुख जीवन जात हमारा ❀ बचन झूठ नृप भयउ तुम्हारा ॥
कीन्ह्यो सेवा सदा तुम्हारी ❀ कौनि चूक भै कन्त हमारी ॥
आज्ञा भङ्ग कबहुँ नहिं कीन्हा ❀ केहिहितत्यागिहमहिं दुखदीन्हा ॥
धीरज आइ देउ जो नाहीं ❀ कैसे प्राण रहैं बन माहीं ॥
कहौ नाथ कैसे तुम रहहू ❀ हमहिं छोड़ि किमि धीरजगहहू ॥

दोहा—सघन बिपिन महँ रोवती, दमयन्ती बिलखाइ ।
कौने अवगुण कीन्हेउ, दीनकन्त दुखआइ ॥

सर्प एक तब सन्मुख आवा ❀ रानी पद मुख भीतर लावा ॥
रानी बिकल बहुत बिलखाई ❀ हाय कन्त मोहिं राखौ आई ॥
नैषध देश स्वामि जब जैहौ ❀ कहो कन्त मोकहँ कहँ पैहौ ॥
ब्याध एक तहँ देखेउ आई ❀ बधिक सर्प कहँ टारेहु जाई ॥
बधिक सर्प कहुँ डारेउ मारी ❀ पीड़ित काम कह्यो सुनु नारी ॥
कामवश्य होइ बोलेउ बानी ❀ केहि हित बनमें फिरौ भुलानी ॥
तब रानी कहँ चिन्ता आई ❀ नलको मनमें पुनिपुनि ध्याई ॥
रानी शाप बधिक कहँ दीन्हा ❀ तुरतभस्म तेहि खलकहँ कीन्हा ॥
करत बिलाप चली बनमाहीं ❀ गिरिकन्दर बन ढूँढ़त जाहीं ॥
कोई नल की कहै न बाता ❀ रोवत रानी अति बिलखाता ॥

दोहा—भृगु बशिष्ठमुनि अङ्गिरा,नारदमुनि जहँ आहिं ।
करि विलाप तब रानिसो,पहुँचीतेहि थल माहिं॥

जाइ तिनहिं कीन्ह्यउ परणामा ❀ आपन दुःख कहा तब बामा ॥
सबमुनि मिलि यहआशिष दीन्हों ❀ मिलिहैं नलसुनिजियसुखकीन्हों ॥
अन्तर्द्धान भये मुनि राई ❀ चिन्ता उरे रानी के आई ॥
सपनो सो मनमें यह जानी ❀ मानुष जन्म कहा तब रानी ॥
कर्मवश्य बन फिरौं भुलानी ❀ ऐसे शोचि रानि अकुलानी ॥
नलको खोजत बहुदुख पाये ❀ आपनपति कहुँ देखि न पाये ॥
नायक कहो नगर को जैये ❀ खोजा जाई कर्म गति पये ॥
बनमहँ ढूँढ़ि बहुत दुखपाये ❀ ग्रामनगर खोजो चितलाये ॥

दोहा—चली संग बन राजके, बसे एक बन आहिं ।
सिंधुरयूथकबहुततहँ, निकसे त्याहिबन माहिं ॥

कचरिगये तहँ बहु बनिजारा ❋ हाइ हाइ सब करैं पुकारा ॥
दमयन्ती देखो तब ताहीं ❋ बहुत लोग कचरे बन माहीं ॥
दमयन्ती कह करत बिलापा ❋ मैं बचि गई कौन बश पापा ॥
कीन्हों गमन बहुत दुख पाई ❋ दिना आठ दश पन्थ सिराई ॥
नाम बाहुबल राजा आही ❋ उत्तम नगर चित्तवर जाही ॥
तौन नगर महँ पहुँची आई ❋ लरिकनतहँ दुख दीन्ह बनाई ॥
मनमें दुःख अहै तेहि भारी ❋ बावरिरूप फिरिहि तहँ नारी ॥
ऊपर महल भूप महतारी ❋ देखो तिन निज नयननिहारी ॥
तब रानी यक सखी पठाई ❋ दमयन्ती कह सँग ल आई ॥
तब पूँछेउ राजा महतारी ❋ आपनि ब्यथा कहौ सुकुमारी ॥

दोहा—दमयन्ती यह भाष्यऊ, हम मानुष अवतार ।
करौंकहाँलगिबातबहु, बिधिदुखालेखालिलार ॥

कह्यउ रावकी तब महतारी ❋ रहो गेह काहू सुकुमारी ॥
दमयन्ती बोली यह बाता ❋ रहै धर्म रहिवे तहँ माता ॥
होइ जौन शुचि सेवों चरणा ❋ ऐसी होइ रहिहौं तेहि शरणा ॥
ब्राह्मण सों पूछति मैं बाता ❋ जाते सुख पावों मैं माता ॥
सुनि राजा की मातु बखाना ❋ पुत्री कह्यउ सो बचन प्रमाना ॥
मम कन्या जो अहै सुनन्दा ❋ रहो तासु संग कहि आनन्दा ॥
तहाँ जाइ दमयन्ती रहई ❋ नलकी कथा सुनो जस अहई ॥
यक ब में दावानल लाग्यो ❋ तहँ यक सर्प जरै दुख पाग्यो ॥
ऊँचेस्वर तब कीन्ह पुकारा ❋ हा बिधि मोकहँ कौन उबारा ॥
मैं नारद को डसिकै लीन्ह्यो ❋ अचलशापमोकहँ ऋषि दीन्ह्यो ॥

दोहा—चलिनहिंसक्योंहततेहि, बनमें लागी आगि ।
कौन उबारैआनि अब, जरत सकौं जो भागि ॥

तबहि भूपमन दया जो आई ❋ तुरत जाइ तेहि लियो उठाई ॥

बोल्यो ब्याल पैग गनि जाहू ❀ तब हमार होई निरबाहू ॥
राजा चल्यो पैग गनि ताहू ❀ दशो पैग बोले नरनाहू ॥
दशो पैग जब कह्यो भुवारा ❀ काट्यो नलके मांझ लिलारा ॥
श्याम स्वरूप भूप ह्वै गयऊ ❀ दै यक बसन मन्त्र दुइ दयऊ ॥
एक मन्त्र पैहो निज रूपा ❀ एक मन्त्र ते हौ भूपा ॥
यहि बिद्या भय तोहिं न होई ❀ यहगति तोरि कीन्ह मैं जोई ॥
है ऋतुपर्ण अवधपुर राई ❀ हैं सारथी रहो तहँ जाई ॥
बाहुकनाम राखि तहँ दयऊ ❀ यह तबकहि करकोटक गयऊ ॥
शापहु ते सो भयउ उबारा ❀ गयउ भूप ऋतुपर्ण के द्वारा ॥

दोहा—बाहुकनामा सारथी, रहों आपु के धाम ।
होइबिकटहयजौनतुम करौ शुद्ध मम काम ॥

ऐसे भूप हेतु तहँ जाई ❀ भीम भूप मन चिन्ता आई ॥
तबहीं बिप्र समूह बोलाये ❀ नल दमयन्ती खोजि पठाये ॥
बहुतक देश फिरे द्विज जाई ❀ बीरबाहुपुर देखेउ आई ॥
बिप्र सुदेव देखि गो ताहीं ❀ दमयन्ती मिलि जलके पाहीं ॥
ब्राह्मण को दमयन्ती चीन्हा ❀ करि प्रणाम बहुरोदन कीन्हा ॥
द्विजको लै पुनि निजगृह आई ❀ तबहिं सुनन्दा सब सुधि पाई ॥
राज मातु तहँ दौरी आई ❀ दमयन्ती कहँ चीन्हेउ जाई ॥
भूपमातु पूछी यह बाता ❀ आपन देश नाम कहु ताता ॥
भीम भूप के प्रोहित अहई ❀ नाम सुदेव हमारो कहई ॥
रोय सुनन्दा नृप महतारी ❀ अहोप्रथम नहिंकीन्ह चिन्हारी ॥

दोहा—सेवाकीन्हि हमारिबहु, नल राजा की बाम ।
मैं अनचीन्हे तुमहिंसों, करवायों सब काम ॥

भीमसों ब्राह्मण जाय सुनायउ ❀ राजा निजदल लोग पठायउ ॥
कन्या को लै गयउ भुवारा ❀ राजा भीम बिदर्भ सिधारा ॥
पाछे नल कर खोजन हेता ❀ ब्राह्मण बिदाकिये नृप जेता ॥
नामपर्ण बोले द्विज पाहीं ❀ तिनसों अब दमयन्ती कहहीं ॥

बारह मास दुःख भो जाता ❀ जाइ कहेउ तब द्विज सब बाता ॥
मोर स्वयम्बर कहियो जाई ❀ सुनत दुःख जो औरो पाई ॥
आधोबसन तजो निशिनारी ❀ बनबिचदीख न असन बिचारी ॥
यहै बात सुनि रोवै जोई ❀ जानेउ नल राजा सो होई ॥
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँ पाई ❀ ग्राम ग्राम देशन प्रति जाई ॥
अवध नगर राजा गृहगयऊ ❀ तहाँ जाइके यह दुख कहेऊ ॥

दोहा—सुनि बाहुक तहँ रोयऊ, ब्राह्मण पायउ आस ।
यहै देखिके ब्राह्मणहु, गे दमयन्ती पास ॥

दमयन्ती पूछत बिलखाई ❀ कहो विप्र सब बात बुझाई ॥
जननी पास गई तब नारी ❀ हूव उदास तब बचन उचारी ॥
नलकी खबरि कही समुझाई ❀ मिलन केर सब करहु उपाई ॥
मोर स्वयम्बर कहि समुझावो ❀ विप्र सुदेशहि तुरत पठावो ॥
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा ❀ कहै जाइ सम्मत उपदेशा ॥
जो आजुहि नृप पहुँचहु जाई ❀ तो दमयन्ती पावहु राई ॥
को नल बिन पहुँचे यहिबारा ❀ यही प्रतिज्ञा चित्त बिचारा ॥
माता सब बिप्रन सन कहई ❀ तुरत अवधपुर दीन्ह पठाई ॥
सब यह हाल सुनावहु जाई ❀ है ऋतुपर्ण सभा जेहि ठाई ॥
तब राजा बाहुक हँकराई ❀ एकदिवस महँ पहुँचउ जाई ॥

दोहा—आजुहि पहुँचउँ तहाँ सो, बरहुँ भीमजाहि जाहि ।
आज करौं परुषारथहि, देशबिदर्भहि आहि ॥

यह कहि बिप्र तुरन्त पठाये ❀ बाहुक रथहि साजि लैआये ॥
राजा ते यह कहि समुझाई ❀ आजु बिदर्भ देउ पहुँचाई ॥
सुनतहि राव भयो असवारा ❀ जोतेउ रथ सारथि तेहि बारा ॥
छूटि बसन तब करते परेऊ ❀ लेन हेत राजा मन करेऊ ॥
कहेउ सूत शत योजन राहा ❀ लौटत पर लीन्ह्यो नरनाहा ॥
इन्द्र केर चेला नरनाहू ❀ बृक्ष बहेर मिला तेहि ठाहू ॥
देहु राव ऋतुपर्ण सो कहहो ❀ फूल पत्र फल येते रहही ॥

एकोतरसै फल अरु आता ❋ भूमी माहिं परे झरि पाता ॥
यक संशय फल है तरु माहीं ❋ पांच कोटि दल हैं तरुवाहीं ॥
बाहुक कह्यो उतरि हम गनिहैं ❋ फिरतबार जो ममसति मनिहैं ॥

दोहा—बाहुक हठकारिकै गनै, पत्र फूल फल ताहि ।
जोकछु भाषत राज भो सो सब तरु में आहि ॥

बाहुक कह्यो कौन यह ज्ञाना ❋ अक्ष सुविद्या राव बखाना ॥
बाहुक अक्ष दुगुन गनि दीन्ह्यउ ❋ गणितमन्त्र राजा सो लीन्ह्यउ ॥
जब नल भूप मन्त्र यह पाये ❋ तबसों कलियुग चले पराये ॥
पूरब विष ज्वाला तनुलागा ❋ तौन त्रासते कलियुग भागा ॥
अस्थित भयउ बहेरे माहीं ❋ ताते पाप बहेरे आहीं ॥
यह कौतुक तब मारग भयऊ ❋ पाछे देश बिदर्भहि गयऊ ॥
तब पूछो यक भीम भुवारा ❋ कहौ आप जू कहँ पगुधारा ॥
ह्वै लज्जित नृप कहेउ बुझाई ❋ मिलन आपकहँ आयन भाई ॥
राजा बहुबिधि आदर कीन्हा ❋ उत्तम सदनबास तब दीन्हा ॥
दमयन्ती तब रचो उपाई ❋ नल को चीन्हो मन में आई ॥

दोहा—करन रसोई साज सब, बाहुक पास पठाय ।
पावकअरु जल ना दियो, कीन्हों ऐसउपाय ॥

पवन ते पावक आनेउ पानी ❋ पावकध्यानअगिनि पुनि आनी ॥
दासी डारी देख व्योहारा ❋ दमयन्ती सों करत विचारा ॥
दमयन्ती दोउ बाल पठाये ❋ दासी सँग रथशालहि आये ॥
देखि सुतन कहँ जलभरिनैना ❋ बाहुक ते दासी कह बैना ॥
क्षुधावन्त बालक सुनि लेहू ❋ भोजन आनि कछुक इन देहू ॥
तब बाहुक बालक कहँ दयऊ ❋ लै बालक अन्तःपुर गयऊ ॥
यह प्रसाद है मिष्ट प्रमाना ❋ निश्चय नल दमयन्ती जाना ॥
तब दमयन्ती आई तहँई ❋ रथशाला बाहुक है जहँई ॥
पछिले दुख की कथा चलाई ❋ सुनत रुदन कीन्हो नरराई ॥
रानी कहा कृपा अब करहू ❋ माया तजौ रूप सो धरहू ॥

दोहा—करकोटकको ध्यान धरि, जप्यो मन्त्र शत आनि ।
पूर्वरूप तब पायऊ, नलको तब पहिंचानि ॥

तब ऋतुपर्ण चकित लखिभयऊ ❋ बहुबिनती राजासन ठयऊ ॥
क्षमा करो सब दोष हमारा ❋ मैं माया तव जानि न पारा ॥
तब नर भीम अनुग्रह कीन्हो ❋ नृप ऋतुपर्णहि बहुसुख दीन्हो ॥
नलहि पाइ तब हर्षित राजा ❋ आज्ञा भे तब बाजे बाजा ॥
सो ऋतुपर्ण बिदा तहँ भयऊ ❋ अवधनगर तब राजा गयऊ ॥
तब नरवर भूपति पगुधारा ❋ लै दल परिग्रह संग भुवारा ॥
जो ऋतुपर्ण सों विद्या पाये ❋ तब पुष्कर पर जुआ लगाये ॥
मन्त्र यन्त्र नल जेते जाई ❋ हारो पुष्कर नृप को भाई ॥
देश कोश साहस भण्डारा ❋ रथ गज द्रब्य जो हती अपारा ॥
जीते नल पुष्कर जो हारा ❋ फिरि क्रोधित ह्वै कहेउ भुवारा ॥

दोहा—दमयन्ती के दास तुम, कुटुँबसहित हो आन ।
कलिदुख हमकहँ दीन्हेऊ, तुमहिं कहैको जान ॥

पुनि नल भे नैषध के राजा ❋ आज्ञा भइ बाजे तहँ बाजा ॥
अर्द्ध बसन रानी लै दीन्हे ❋ अर्द्ध फारि जो नृप नल लीन्हे ॥
राव देखि सो अति दुख लयऊ ❋ बैठे नृप दुख बिसरि सुगयऊ ॥
धार्मिकनल तब धर्महिं कीन्हो ❋ एक ग्राम पुष्कर को दीन्हो ॥
ऐसे राजा दुख सो पाये ❋ पुण्य बीर राजा कहवाये ॥
पुनि मुनि बृहदश्वहु अनुसारा ❋ सुनो युधिष्ठिर धर्म हमारा ॥
यहि के सुने पाप तनु भागै ❋ ब्याधि होय सो तन नहिं लागै ॥
दुखी सुनै सबदुख मिटिजाई ❋ बन्दित हो त्यहि बन्दि छोड़ाई ॥
राज्य ते हीन सो राज्यहि पावै ❋ जेहि दुख बहुत सुने क्षय पावै ॥
होयहो धर्मज तुमहुँ भुवारा ❋ जो यह कथा सुनेहु सुखसारा ॥

दोहा—सुनि बृहदश्व बचन बर, धर्मराज सुख पाव ।
नशै पाप तनु सुख बढ़ै, नलचरित्र जो गाव ॥

इति श्रीवनपर्वणिनलोपाख्यानंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

बहुदिन राजा तेहि बन रह्यऊ ❋ यकदिन नारद मुनि तहँ गयऊ ॥
नारद कहि संबाद अपारा ❋ तीरथ बरत महातम सारा ॥
तेहि अन्तर सुनिके यह भयऊ ❋ लोमशऋषि पुनितेहि थलगयऊ ॥
राजा देखत पूजा कीन्ह्यउ ❋ अर्घपाद्य दै आसन दीन्ह्यउ ॥
लोमश कहेउ सुनहु भुवराई ❋ मोकहँ तुम ढिग इन्द्र पठाई ॥
यक दिन इन्द्रलोक पगुधारा ❋ देखा अर्जुन सभा मँझारा ॥
सिखे शस्त्र अरु अस्त्र अपारा ❋ परमअनन्दित आहि कुमारा ॥
पारथ हित चिन्ता तुम पाये ❋ सुरपति ताते हमहिं पठाये ॥
कहन कुशल पारथ की राजा ❋ हम इतको आये यहि काजा ॥
सुनहु तहां हम जावैं राऊ ❋ राजा सुनत परम सुख पाऊ ॥
सहित बन्धु नारी नर नाथा ❋ तीर्थ राजको चलि मुनि साथा ॥
धौम्यनाम प्रोहित सँग लागे ❋ चले जात अति मन अनुरागे ॥
तीर्थराज के दर्शन कीन्हे ❋ परम हर्ष भूपति मन लीन्हे ॥
औरौ पुनि तीरथ हैं जेते ❋ परसे कहत न आवैं तेते ॥
नैमिष बन काशी अस्थाना ❋ गया सुरसरी आदि बखाना ॥
सब तीरथ परसे तब राजा ❋ चित उदवेग धनंजय काजा ॥
गन्धमदन पर्बत भे पारा ❋ बद्रिक आश्रम गये भुवारा ॥
तीरथ बिन्दुसरहिं तब देखा ❋ नाना बन पर्बत बहु लेखा ॥

दोहा—तीरथ बिन्दुसरहि पुनि, पाँचौ जने अन्हाइ ।
पुष्प पत्र फल शोभितहि, देखत तरुवर जाइ ॥

पूर्व ओर से पवन उड़ाई ❋ पुष्प एक तेहि सरमहँ आई ॥
अहैं सहसदल पुनि तेहिमाहीं ❋ सुन्दर बहुत सुगन्धित आहीं ॥
जल ते फूल द्रौपदी लीन्हा ❋ भीमसेन के आगे कीन्हा ॥
आइ सो फूल देवके लायक ❋ सुनो बृकोदर हो मम नायक ॥
बेगि अनुग्रह मोपर कीजै ❋ यकशतपुष्प आनि मोहिं दीजै ॥
सुनिकै बचन बृकोदर कहई ❋ देहौं आनि शोच जनि लहई ॥
धनुषबाण कर लैकर धाये ❋ जौने दिशि सों पवन ते आये ॥

चलो सिन्धुसम भीम रिसाई ❋ गँधमादन गिरि देखेउ आई ॥
सो पर्बत गह्वर बन भारी ❋ नाना सर्प रहत विषधारी ॥
नाना मोर नृत्य तहँ करईं ❋ कोकिलकुहकिहरषिजिय भरईं ॥

दोहा—छैयोऋतु तहँ प्रकट शुभ, करत भँवर गुञ्जार।
अमृतसम फल लाग्यऊ, हरष्योपवनकुमार॥

बहु बन भीतर हरषि अपारा ❋ कुन्तीसुत जो पवन कुमारा ॥
तेहि बनविहरत भीम सो फिरहीं ❋ नाद सिंह सम पुनि पुनिकरहीं॥
हने ग्राह मृग गैंड़ा भारी ❋ क्रीड़ाकर इमि बनहिं मँझारी ॥
भगे जन्तु पुनि बन के नाना ❋ सिंह भालु मृग सबै पराना ॥
गरजे भीम जन्तु सब भागे ❋ कदली बन देख्यउ यक आगे ॥
महागँभीर सो वह बन अहई ❋ क्रीड़ित भीम तहाँ अस रहई ॥
तोरेउ बृक्ष ताहि बन नाना ❋ मिष्ट पाक फल करि सो पाना ॥
गरजै भीम करै फल पाना ❋ जीव जन्तु सब शङ्का माना ॥
तेहि बन माहँ रहैं हनुमाना ❋ शब्द सुनत सो करेहु पयाना ॥
हनूमान तब देह बढ़ावा ❋ उज्ज्वलरूप अनूप सुहावा ॥

दोहा—बोले कुबचन भीमसों, बन तैं कियो उजार।
मोरे हाथहिं मरण तुव, भाष्यो पवनकुमार॥

यह कुबेर बन सब जगजाना ❋ करत भोग यह कह हनुमाना ॥
हनू संग जो बन रखवारा ❋ दुर्यो बीर बलपुञ्ज जुझारा ॥
तिन सब आइ कही असबाता ❋ भयो भीम सुनि क्रोध ते ताता ॥
धनुषबाण पुनि कर लै लीन्हेउ ❋ युद्ध बृकोदर बहुबिधि कीन्हेउ ॥
हते भीम जे बन रखवारा ❋ तब कुबेर पहँ जाइ पुकारा ॥
मानुष एक गहे धनुबाना ❋ कदलीबन कीन्हेउ खङ्काना ॥
हनूमान तेहि बरजन ठाना ❋ सुना कुबेर आपु जो काना ॥
आइ कुबेर हनू समुझाई ❋ करो बिरोध न तुम कपिराई ॥
देखौ तुम यह मानुष नाहीं ❋ मानुष बेष देव कोउ आहीं ॥
लेहु फूल खावो फल नाना ❋ जेतिक मनमहँ होइ सुजाना ॥

दोहा—हनूमान यह सुनतही, क्रोधै बहुत बढ़ाइ ।
फूल काज बिधि भीमसों, कीन्हों ऐस उपाइ ॥

हनूमान बोले यह बानी ❋ सुनिये भीम बचन अस जानी ॥
रामकाज लगि मैं यकबारा ❋ लङ्का बीर बहुत संहारा ॥
सागर नांघि लङ्क मैं जारा ❋ महिरावण पाताल सँहारा ॥
यहै नेम मेरे मन माहीं ❋ मैं कछु प्रीति देखावत नाहीं ॥
इतना प्रेम आप करिलेई ❋ पाछे फूल जान लै देई ॥
यह हमार लंगूर जो आहीं ❋ ताते बात कहत तोहिं पाहीं ॥
भूमि ते मम लंगूर उठावो ❋ लेके फूल जान तब पावो ॥
सुनतहि भीम कोप जिय गयऊ ❋ टारन चित्त लँगूर सो चह्यऊ ॥
बायें हाथ गह्यउ तब ताहीं ❋ नेकु न डोला सो महि नाहीं ॥
फिरि बल कीन्हो भीम जुझारा ❋ बज्र लँगूर टरत नहिं टारा ॥

दोहा—गहेउ गदाकर भीम जो, धरो भूमि महँ ताहिं ।
दोनों कर लंगर सो, गहो आशु करमाहिं ॥

हारेउ भीम करेउ बहु करणी ❋ कपि लंगूर न डोलत धरणी ॥
भीमसेन यह मन में जाना ❋ महाबीर ये हैं हनुमाना ॥
हारो भीम ठाढ़ होइ रह्यऊ ❋ हर्षि गात कपि बोलत भयऊ ॥
ह्वै प्रसन्न भाष्यो हनुमाना ❋ मांगो बर जो तुम मनमाना ॥
यह सुनि भीम कहन अस लागे ❋ अस्तुतबचन हनुमान के आगे ॥
जब कौरव कहँ मारन जाई ❋ तब कपि करियो मोर सहाई ॥
रामकाज कीन्ह्यउ जिमि भाई ❋ तैसेइ होउ हमार सहाई ॥
हनूमान बोले यह बाता ❋ भीमसेन सुनिये यह ताता ॥
पारथ के रथपर हम रहिहैं ❋ रक्षा करत अस्त्र सब सहिहैं ॥
ऐसे बचन कहे हनुमाना ❋ भीमसेन सुनि बहु सुखमाना ॥

दोहा—यह रहस्य राजा सुनो, हनू भीम व्यवहार ।
दूनों पवनपुत्र बल, कह सुनि हृदय बिचार ॥

भयउ प्रसन्न कुबेर सुजाना ❋ भीमसेन लखि बहु सुखमाना ॥

लेहु फूल जेते मन भावै ❀ यहै हनू तब बात सुनावै ॥
सुनतहि भीम हर्ष युत भयऊ ❀ अपने गृह कुबेर तब गयऊ ॥
रक्षक कोउ बोलत कछु नाहीं ❀ तोरत फूल जौन मन माहीं ॥
बिहरत भीम हरषि बन माहीं ❀ सुमन सुगन्धित तोरेउ आहीं ॥
भीमसेन बन में बहु गरजैं ❀ हांक सुनत पशुपक्षी लरजैं ॥
व्याघ्र सिंह औ गज मतवारे ❀ गैंडामहिष अनेकन मारे ॥
भीमसेन को शङ्का भयऊ ❀ भागि जन्तु तेहि बनते गयऊ ॥
जनमेजय तब हर्षित भयऊ ❀ बैशम्पायन कथा सो कह्यऊ ॥

दोहा—भीमसेन मन हर्ष अति, लीन्ह फूलकरि हेत ।
बैशम्पायन कहत भे, सुनिये भूप सचेत ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहान भाषाकृतेवनपर्वणि ।
भीमहनुमत्संवादोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

धर्मराज मन चिन्ता भयऊ ❀ कहँ मम बन्धु वृकोदर गयऊ ॥
जिय अकुलाइ मनों उर दरकै ❀ कुशकुन देखि बाम अँगफरकै ॥
निशिस्वपना लखि बिस्मयराऊ ❀ कुशलक्षेम बिधि भीम मिलाऊ ॥
कहा धौम्य यह बचन बिचारी ❀ घटउत्कच सुमिरन अनुसारी ॥
घटउत्कच आये नृप पासा ❀ का आज्ञा यह बचन प्रकासा ॥
जब राजा यह बोलत भयऊ ❀ गँधमादनगिरि भीम जो गयऊ ॥
नाना कुशकुन देखियत भाई ❀ ताते चितचिन्ता अधिकाई ॥
तीनिउ बन्धु पुरोहित रानी ❀ राजा कह यह बचन बखानी ॥
सबको सुत लै चलिये तहवाँ ❀ गँधमादनगिरि भीमहै जहवाँ ॥
सुनत हरषि उठि कर्यो प्रणामा ❀ जो आज्ञा कहिये सो कामा ॥

दोहा—पांचो जने चढ़ाइ पुनि, पीठि आपने आन ।
गँधमादनपर भीम जहँ, कीन्हे तुरत पयान ॥

नाना बन तहँ देखत जाई ❀ घटउत्कच के ऊपर राई ॥
बहु इतिहास पन्थकर अहई ❀ लिखे न जाइ सूक्ष्म सो कहई ॥
गँधमादन पर्वत जेहिठाई ❀ धर्मराज प्रविशे तहँ जाई ॥

देखि धर्मसुत मन हरषाई ❀ करमें धनुष भीम के आई ॥
अगणित रणमहँ मारे बीरा ❀ बीर बृकोदर अभय शरीरा ॥
देखेउ राजहिं पवन कुमारा ❀ करि प्रणाम तब बचन उचारा ॥
भीमहिं देखेउ अद्भुत रचना ❀ लिये धनुषशर बोलेउ बचना ॥
समर सहाय देव कोउ नाहीं ❀ असमाहस सुत तोहिं न चाहीं ॥
सुनत भीम बहु लज्जा पाये ❀ घटउत्कच तब बचन सुनाये ॥
आज्ञा कौन मोहिं यहि ठाऊँ ❀ रहौं कि निज आश्रम में जाऊँ ॥
आज्ञा पाय चरण शिरनायउ ❀ अपने थल घटउत्कच आयउ ॥

दोहा—रहे युधिष्ठिर तौन थल, चारि बन्धु यकसाथ ॥
करत हर्ष बहुतै बनहिं, धर्मराज नरनाथ ॥

एक दिवस तहँ अचरज भयऊ ❀ मृगया हेतु बृकोदर गयऊ ॥
धौम्यपुरोहित लोमश तहँवा ❀ गे मज्जन हित सरवर जहँवां ॥
तीनों बन्धु द्रौपदी साथा ❀ आसन पर बैठे नरनाथा ॥
जरा नाम यक दैत्य सा अहई ❀ मनहिं बिचारि त्यहीसन कहई ॥
तहँ तीनों जन पीठि चढ़ाई ❀ पवन बेग लै चला उड़ाई ॥
धर्मराज बोले यह बानी ❀ पापकर्म कह कर अज्ञानी ॥
हमको लिये जात कहि काजा ❀ बहुतहि ताहि बुझायउ राजा ॥
धर्मकथा सुनि भूपति पाहीं ❀ हँसेउ दुःख सुनि मानत नाहीं ॥
चोर धर्म कह लम्पट नाना ❀ निसरतकाम न सबकोउ जाना ॥

दोहा—छोड़ै ताहि न दैत्य सो, लैकर चलो उठाइ ।
पर्वत कन्दर घोर बन, दानव लीन्हे जाइ ॥

जानि दुष्ट तेहि धर्म भुवारा ❀ ऊँचे स्वर बहु करी पुकारा ॥
येहो भीम गयो कहँ भाई ❀ परा दुःख हम ऊपर आई ॥
आरत नाद जबै सुनि पायो ❀ लैकर गदा बृकोदर धायो ॥
दूरिहि ते तब भीम निहारा ❀ लिये जात सो धर्मकुमारा ॥
तब सहदेव भूमिपर आयो ❀ कूदि हाँक तब ताहि सुनायो ॥
तबहिं बृकोदर धावत आवा ❀ गदा हाथ करि गर्जि सुनावा ॥

दैत्य अशङ्क मानि नहिं शङ्का ❀ हांकत बीर क्रोध करि बङ्का ॥
तबहिं द्रौपदी धर्म कुमारा ❀ पीछे नकुल बीर बरियारा ॥
इनकहँ तुरत भूमि बैठावा ❀ देकर हांक भीम पर धावा ॥
भीम कही निज मरण के काजा ❀ पापी लै भाजे सुतराजा ॥

दोहा—आजु मारितोहि एकशर, पठवों यमके पाहिं ।
यहकहि गदाघाव तेहि, दीन्ह्यो मस्तकमाहिं ॥

गदाघाव तब भीमे सँभारा ❀ तबहीं खल यक बृक्ष उपारा ॥
मारो बृक्ष भीम पर जाई ❀ मारो गदा भीम पलटाई ॥
दोनों बृक्ष युद्ध परिहारा ❀ मल्लयुद्ध तहँ पुनि बिस्तारा ॥
दोनों बीर लरैं बरजोरा ❀ करैं युद्ध मानो घनघोरा ॥
कम्पमान धरणी तहँ होई ❀ प्रलय काल आवै जनु सोई ॥
मुष्ठिक एक भीम तब मारा ❀ छांड्यों दैत्य प्राण तेहि बारा ॥
परम हर्ष भो धर्मकुमारा ❀ और अनन्दित भे परिवारा ॥

दोहा—आशिर्वादहि देत मुनि, राजा सूँघत माथ ।
लोमशऋषिपूजतभुजहिं, हरषि आपने हाथ ॥

परम हर्ष राजा तब पायो ❀ कहि संक्षेपहिं भारत गायो ॥
पुनि सब मिलिकै कीन्ह बिचारा ❀ बद्रिक आश्रम गे त्यहिबारा ॥
नाना पुष्प रम्य अस्थाना ❀ रहे हर्षि बन राव लोभाना ॥
संवत चारि बीति इमि गयऊ ❀ पञ्चम वर्ष उपस्थित भयऊ ॥
यही प्रकार रहे बन राऊ ❀ धौम्यआदि मुनि भोजन पाऊ ॥

दोहा—नाना ज्ञान कथा तहाँ, राजा करहि प्रकास ।
चारि बन्धु हैं संग महँ, और द्रौपदी पास ॥

इति बनपर्वणिजरादैत्यवधबदरिकाश्रमस्थानं नामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

कछुदिन राव बीति इमि गयऊ ❀ धौम्य पुरोहित ते नृप कह्यऊ ॥
पार्थ बिनु देखे मुनिराई ❀ मम चित चञ्चल रहे सदाई ॥
पञ्चम वर्ष खोज अब करई ❀ अर्जुन देखा जलदृग हरई ॥

पूरब कह्यो पार्थ यह बानी ❀ पञ्चम वर्ष मिलौं त्वहि आनी ॥
धवलाचल पर दरश हमारा ❀ निश्चय पैहौ धर्मकुवारा ॥
चलौ सो परबत देखौ जाई ❀ पारथ दरश हेत तहँ राई ॥
प्रोहित सहित द्रौपदी रानी ❀ तीनों बन्धुरु लोमश ज्ञानी ॥
कीन्ह विचार चले सब तंहँवां ❀ परबतधवल आइ पुनि जहँवां ॥
लोमश धौम्य संग त्रयभाई ❀ ज्ञानकथा बहु बरणत जाई ॥
प्रथम गन्धमादन गिरि देखा ❀ पूरण बारि राव अवरेखा ॥
सोहै मालपृष्ठ तेहि पासा ❀ धवला पर्बत परम प्रकासा ॥
फटिकशिला तहँ देखत भयऊ ❀ दानवघोर जहाँ पुनि रह्यऊ ॥

दोहा—रक्ष यक्ष दानव बहुत, सब कुबेरके दास ।
सो पर्वत देखौं तहाँ, पुरी कुबेर प्रकास ॥

देखि भीम तहँ राक्षस जेते ❀ बेगहि भीम सँहारेउ तेते ॥
तबहिं कुबेर मरम सब पायो ❀ युद्ध हेतु तब आपु सिधायो ॥
तब प्रणाम करि धर्म कुमारा ❀ शुद्ध बचन कहि युद्ध निवारा ॥
हर्षित ह्वै कुबेर पहं गयऊ ❀ धर्मराज तेहि पर्बत रह्यऊ ॥
अर्जुन देवलोक महँ रह्यऊ ❀ अस्त्र अनेक सुरनते लह्यऊ ॥
देवन कर शत्रु जे पाये ❀ मारि सकल यमलोक पठाये ॥
जासों देव युद्ध मों हारा ❀ सो मारे सब पाण्डु कुमारा ॥
होइ सन्तुष्ट देव बर दयऊ ❀ कीट अस्त्र तब बासव दयऊ ॥
समय एक तहँ सो सुर आई ❀ बैठि सभा महँ सभा बनाई ॥
यम कुबेर जलपति बैसन्दर ❀ बैठे और अनेक मुनिन्दर ॥

दोहा—तब अर्जुन कहँ गोदलै, बैठे देव भुवार ।
नृत्यकरत तहँ नृत्यकी, हर्षित सभा मँझार ॥

नाम उर्बशी देव अप्सरा ❀ नृत्यकरत सो सभा मांझरा ॥
बीणा ताल मृदङ्ग बजाये ❀ नाना रूप नृत्य लय लाये ॥
इन्द्र गोद सोवत बलवाना ❀ मानो दूसर इन्द्र समाना ॥
पारथ देखि उर्बशी नारी ❀ पीड़ित कामस्वरूप निहारी ॥

काम भाव तेहि अवसर भयऊ ❀ नृत्यगीत बहुविधि तेहि ठयऊ ॥
प्रीति सुहित अर्जुन तेहि हेरा ❀ सो सुरपति देखेउ तेहि बेरा ॥
जो उर्बशी तुमहिं बश करेऊ ❀ तौन त्रिया सुत तुमकहँ दयऊ ॥
अर्जुन कहो जाय जो हारा ❀ इनते प्रकटो बंश हमारा ॥
उठ्यो अखारा नृत्य सेराना ❀ अपने गृह सुर कियो पयाना ॥
सुरपति गे अपने अस्थाना ❀ निजथल गे पारथ बलवाना ॥
अर्द्ध निशा बीती सो आई ❀ तेही समय उर्बशी आई ॥
अर्जुन के मन्दिर पगु धारा ❀ देखे लगे कपाट दुआरा ॥
बहुत यतन करि खोलि केवारा ❀ अर्जुन कहँ त्रैबार पुकारा ॥

दोहा—चेत पाइ अर्जुन तब, मन में करै बिचार ॥
अर्द्धरात्रि किमि उर्बशी, आई निकट हमार ॥

कहै धनञ्जय बचन बिचारी ❀ ममढिग केहि हित आई नारी ॥
अर्द्ध रात्रि बीती पुनि गयऊ ❀ निद्रा वश्य देव सब भयऊ ॥
जो कछु दुख है चित्त तुम्हारा ❀ कहो प्रात सो करों उधारा ॥
राति जाउ अपने गृह नारी ❀ पुरुष पियार एक की नारी ॥
पारथ बात सुनी मो नारी ❀ मोहिं मदन कर है अनुसारी ॥
हृदय समानो रूप तुम्हारा ❀ कामव्यथा तन जरत हमारा ॥
सुनत धनञ्जय बिस्मय माना ❀ त्राहि त्राहि करि मूँदेउ काना ॥
यक ब्राह्मणी दुजे सुरनारी ❀ इन्द्र अप्सरा मातु हमारी ॥
ऐसि बात अपने मुखमाहीं ❀ भूलि बात जनि कहु मोहिंपाहीं ॥
सुनत उरवशी ब्याकुल भयऊ ❀ दुःखित ह्वै पारथ ते कह्यऊ ॥

दोहा—हम आईं तुम आशकारि, सो तौ भई निराश ।
जानेउँ अहौ नपुंसक, यहकहिबचन प्रकाश ॥

तब यह शाप पार्थ कहँ दीन्हा ❀ ह्वै उदास निज गृह मग लीन्हा ॥
पारथ चित्त भयउ परितापा ❀ पाप किये बिन पायउँ शापा ॥
होतहि प्रात उदित भे भाना ❀ बैठी सभा इन्द्र सुर नाना ॥
प्रात होत पारथ तहँ जाई ❀ हाथ जोरि तब कह्यउ बुझाई ॥

काह्लि नृत्य जो नारी कीन्हा ❀ निशिको शाप हमैं तेहि दीन्हा ॥
होउ नपुंसक दीन्हो शापा ❀ ताते मो मन भा संतापा ॥
सुनिकै इन्द्र महादुख पावा ❀ तुरत सभा महँ ताहि बुलावा ॥
इन्द्र कहै नारी कह कीन्हा ❀ मो सुत कहा शाप तैं दीन्हा ॥
सुनत उर्बशी लज्जा पाई ❀ हाथ जोरि तब बिनय सुनाई ॥
मेरो शाप होय उपकारा ❀ क्रोध न कीजै देव भुवारा ॥

दोहा—होइ यक बर्ष नपुंसक, नृप बिराटके देश ।
संबत बीते शाप ते, होइहौ मुक्त सुबेश ॥

यह बर तब पारथकहँ दीन्हा ❀ अपने भवन गमन तब कीन्हा ॥
तबहि इन्द्र पुत्रहिं समुझाई ❀ देव अस्त्र दीन्हेउ बहु आई ॥
कुण्डल कवच इन्द्र तब दीन्हों ❀ भाषे मुनि अर्जुन शुभ कीन्हों ॥
मिलि सब देव शंख यक दीना ❀ जाके नाद शत्रु बलहीना ॥
पाँच बर्ष सुर पुर महँ भयऊ ❀ पारथ तबहिं इन्द्रसों कह्यऊ ॥
आज्ञा दीजै इन्द्र भुवारा ❀ परशौं पद कह धर्मभुवारा ॥
सुनिकै इन्द्र तुरत बर दयऊ ❀ तब रथ मातलि साजत भयऊ ॥
भेंटि सकल सुर चढ़े बिमाना ❀ मृत्युलोक कहँ कियो पयाना ॥
रथ प्रवेश करि आयउ तहँवा ❀ धवल शिखरपर राजा जहँवाँ ॥
धर्मराज पारथ कहँ देख्यउ ❀ पुनिनिजजन्मसुफलकरि लेख्यउ ॥
पारथ जाय चरण नृप गह्यऊ ❀ पूछी कुशल हर्ष बहु भयऊ ॥

दोहा—सर्बकथा बिस्तार से, पारथ कियो बखान ।
राजा आगेसहितबिधि, बरण्यो बन्धुसुजान ॥

जेहिविधि शंकर दरशन पाये ❀ जिमि किरात ह्वै हरतहँ आये ॥
जैसो युद्ध भयो तेहि ठांवा ❀ सुरपति जैसे दरशन पावा ॥
जैसे रथ चढ़ि स्वर्गहि गयऊ ❀ जैसे अस्त्र लाभ तहँ भयऊ ॥
शाप उर्बशी जिमि बर दीन्हा ❀ जैसे देव अस्त्र सब लीन्हा ॥
धर्मराज कहँ सर्ब जनायो ❀ राजा धर्म हर्ष तब पायो ॥
तेही समय इन्द्र तहँ आये ❀ धर्मराज ते कहि समुझाये ॥

सबजीत बर जबहीं दीन्हा ❋ अन्तर्द्धान इन्द्र तब कीन्हा ॥
तबहीं मातलि रथ लै गयऊ ❋ धर्मराज आनन्दित भयऊ ॥
पुनियहकथासो ऋषिहि सुनाये ❋ घटउत्कच तेहि अवसर आये ॥
करि प्रणाम सब के पद बन्दे ❋ कहे बचन तब परम अनन्दे ॥

दोहा–देश छोड़ि करि राजा, आये दूरि पयान ।
चलौ सबै काम्यक बनहिं, हर्षित भये सुजान ॥

सुनत बात यह सब मन भाये ❋ तब सबकहँ फिरि पीठि चढ़ाये ॥
सबको लै काम्यक बन आये ❋ रहे तहाँ आनँद बहु पाये ॥
काम्यकबनहि बहुतदिन गयऊ ❋ परमआनंदित सब जन रह्यऊ ॥
तहाँ बहुरि आये यदुनाथा ❋ मिले आइ पाराडव सुत साथा ॥
मिले कृष्ण पुनि धीरज दीन्हा ❋ द्वारावती गमन पुनि कीन्हा ॥
अभिअन्तर तब कथा सुनाये ❋ मार्कराडेय महामुनि आये ॥
बहु संवाद तहाँ मुनि कीन्हों ❋ सो संक्षेप कहन मैं लीन्हो ॥
ऐसे पाराडव वन महँ रह्यऊ ❋ कथा प्रसंग धर्म तब कह्यऊ ॥

दोहा–पञ्च बन्धु अरु द्रौपदी, रहे पाण्डु बनमाह ।
भारत पुण्य कथा यह, जनमेजय नरनाह ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहान भाषाकृतेवनपर्वणि अर्जुन

बरप्रोक्तकाम्यकवन आगमनन्नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

ऐसे पाराडव बन सुख पाये ❋ दूत जाय कुरुनाथ सुनाये ॥
काम्यक बन महँ पाँचो भाई ❋ तबहि बिचार करैं शतभाई ॥
करण दुशासन शकुनी राजा ❋ मन्त्र कुमन्त्र करैं सबकाजा ॥
बनोबास पाराडव दुख नाना ❋ बलकलबसन करैं परिधाना ॥
माथे जटा तपी के भेशा ❋ देखिय शत्रु कियो उपदेशा ॥
देखब जाइ द्रौपदी पासा ❋ सब मिलिकै करिबे उपहासा ॥
दुखमें शत्रु देखिये राई ❋ याते आनँद और न भाई ॥
दुर्योधन दल साज करायो ❋ भीषम द्रोण भेद नहि पायो ॥
और सबै रथ पैदर साजा ❋ चले हर्षि दुर्योधन राजा ॥

काम्यक बनमें पहुंचे जाई ❀ देखत ताहि हरष बहुपाई ॥

दोहा–काम्यकबन देखा तबै, एक सरोवर आहि ।
देवरु किन्नर गन्धरब, क्रीड़करैं तेहि माहि ॥

देव चरित्र सुनहु सज्ञाना ❀ कुरुपतिको होइहै अपमाना ॥
नाम चित्ररथ गन्धरब राऊ ❀ स्त्री सहित सरोवर आऊ ॥
पत्नी सहित सो क्रीड़त भयऊ ❀ वाही थल दुर्योधन गयऊ ॥
दुर्योधन लखि लज्ञा पायो ❀ क्रोधवन्त गंधर्ब सुनायो ॥
अरे मूढ़ त्वहि यह हंकारा ❀ ताकर फल तुम लह्यउ भुवारा ॥
हाथ अस्त्र वह गंध्रव नाना ❀ दियो तिनहिं आज्ञा परमाना ॥
मारु मारु यह आयसु दीन्हे ❀ अस्त्र गहे सो धरि सब लीन्हे ॥
भयउ युद्ध सो क्रोधित होई ❀ गन्ध्रव मानुष सम नहिं कोई ॥
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा ❀ यहलखिकरणक्रोध अति कीन्हा ॥
हाथ अस्त्र लैके तब धाये ❀ गन्ध्रव दल में बाण चलाये ॥

दोहा–गन्ध्रब दलमें बाण बहु, भयो भूमि अँधियार ।
ऐसे मारे करण बहु, क्रोधित बाण अपार ॥

गन्ध्रब सबै पराभव कीन्हे ❀ क्षत लागे तब जात न चीन्हे ॥
मारेउ करण खैंचि कर तीरा ❀ चल्यउ रुधिर गन्धर्ब शरीरा ॥
अस्त्र अनेक करत परिहारा ❀ रुण्ड मुण्ड गन्धर्ब संहारा ॥
काहू हाथ कटेउ अरु पाऊ ❀ काहू केर हृदय महं घाऊ ॥
रुधिर नदी गन्ध्रबरण भयऊ ❀ भाग सबै मार्ग तब लयऊ ॥
भागे सब कहुं खोज न पाये ❀ पाछे देखत करण सिधाये ॥
देखि पराभव इन्द्र कुमारा ❀ हाथ धनुष शर तब परचारा ॥
तब गन्धर्ब दुशासन मारा ❀ परो दुशासन भुवि असभारा ॥
रथते दुश्शासन भुइँ आये ❀ लज्ञावन्त महा भय पाये ॥
करण के संग तबै रण ठाना ❀ महाबीर दोउ एक समाना ॥

दोहा–क्रोधवन्त गन्धर्ब पति, मारे बाण प्रचण्ड ।
करण सँभारिसक्यउनहिं, कटे छत्र अरुदण्ड ॥

मारे रथ सारथि संहारा ❀ हाथ धनुषगहि करण मुवारा ॥
मारे तब गन्ध्रब शर नाना ❀ शरनतेज रजभयो निदाना ॥
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा ❀ दुर्योधनहिं बांधि पुनि लीन्हा ॥
पाण्डव कर बैरी मैं जाना ❀ रहा तोहिं दुख देहैं नाना ॥
कुरुपति कहँ बांधेलिय जाई ❀ देखेउ भीमसेन तब धाई ॥
देखि हरषि मनआये तहँई ❀ रहे धर्मसुत पुनि जेहि ठहँई ॥
जोरि हाथ राजासन कहई ❀ ऐस दुःख दुर्योधन सहई ॥
दुर्योधनहिं बाँधि लै जाई ❀ चलिकै राज्य करो सब भाई ॥
महा अधर्मि शत्रु भो नाशा ❀ मिल्यउ राज तुव बिनहिं प्रयाशा ॥
तबहिं राव यह कहा बखानी ❀ कैसे नाश भयउ अज्ञानी ॥

दोहा—कौन प्रकारहि हेतु कहु, कैसे शत्रु विनाश ।
सो सब मम आगे कहो, कीन्हों भीम प्रकाश ॥

कही भीम राजहि समुझाई ❀ गा अखेट दुर्योधन राई ॥
विधि रचनाते गन्ध्रब आयउ ❀ युवती सँग सरक्रीड़ा ठयउ ॥
देखा तहं दुर्योधन राऊ ❀ गन्ध्रब गण रण तहाँ उपाऊ ॥
करण आदि सेना सब भागी ❀ छाँड़ो राजहि परम अभागी ॥
गन्ध्रब राज महाबल करेऊ ❀ दुर्योधनहि बांधि लै गयऊ ॥
सुनत धर्मसुत बिस्मय भयऊ ❀ भीमसेन ते यहि बिधि कह्यऊ ॥
नीति शास्त्र नहिं जानत अहहू ❀ मूरुख रूप सदा तुम रहहू ॥
तब पारथ ते यह कहि राजू ❀ लेउ छुड़ाइ सुयोधन आजू ॥
बन्धु बन्धुसों कलह प्रमाना ❀ बन्धु बन्धु को बल जगजाना ॥
तुमहीं तुरत लयावहु भाई ❀ गन्ध्रब कहँ तुव दे बिचलाई ॥

दोहा—जो गन्ध्रब छांड़ै नहीं, तौ तेहि करब सँहार ।
मारि निपातौ धरणि पर, कुरुपति लेहु उबार ॥

आज्ञा सुनि पारथ तहं जाई ❀ हांक दई गन्ध्रबहि आई ॥
देखत पारथ गन्ध्रब नाना ❀ शीघ्रवन्त तब करेउ पयाना ॥
तब बिचार गन्धर्बन कीन्हा ❀ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्हा ॥

तब पारथ अस बाण चलाये ❁ भूमि स्वर्ग सोपान बनाये ॥
बाणनपर ह्वै राजा आये ❁ धर्मराज के दरशन पाये ॥
ऐसो गर्ब करिय जनि भाई ❁ जाते अपनो मान गँवाई ॥
दुर्योधन सुनि लज्जा पाई ❁ मरणहेत कछु करेउ उपाई ॥
तबहीं राज शोध बहु कीन्हा ❁ मरम बचन कहि धीरज दीन्हा ॥
हम तुम भाई एक समाना ❁ तोर मोर एकै अपमाना ॥

दोहा–हम तुम एक बन्धु हैं, ताते कहा बिचार ।
यह सुनि पायो सुखअमित, पापी कुरूभुवार॥

राजा कह यह बचन सुनाई ❁ मांगो बर पावउ तुम भाई ॥
धर्मराज बोले मुसुकाता ❁ दुर्योधन नृपसों यह बाता ॥
अवसर पाइ सुनो नृप जबहीं ❁ तुमते बर मांगब हम तबहीं ॥
कह्यउ सत्य राजा तब गयऊ ❁ कुरुदल तेजहीन सब भयऊ ॥
राजा धर्म बही बनबासा ❁ पूछहिं तपसिन सहित हुलासा ॥
केतक काल रहे सुख पाई ❁ एकदिना जयद्रथ तहँ आई ॥
अर्जुन भीम रावके संगा ❁ माद्रीसुत दूनो रण रंगा ॥
मज्जन हेतु सरोवर जाई ❁ तेही समय दुष्ट सो आई ॥
देखि अकेलि द्रौपदी रानी ❁ ले हरिकै भाग्यउ अज्ञानी ॥
तौने समय पार्थ तहं आये ❁ देख्यो चरित्र क्रोध जिय पाये ॥

दोहा–भीम सहित पारथ बली, भेंट्यउ दुर्मतिजाय ।
भीम पछारो तासु को, परा भूमि महँ आय॥

दूनो कर शिर केश उपारा ❁ बांधे बोझ समान भुवारा ॥
श्वासा हीन रह्यउ तनुमाहीं ❁ ऐसे लाय धर्मसुत पाहीं ॥
राजा देखि दया मन भयऊ ❁ छांड़िय यह आज्ञा नृप दयऊ ॥
जो कोइ पाप करै जग माहीं ❁ बिन भुगते छूटत सो नाहीं ॥
धर्म कथा कहि ताहि सुनायो ❁ दया धर्म भाषै मन लायो ॥
पापकर्म को फल तब पावै ❁ नरक माहिं परलोक नशावै ॥

ऐसे ज्ञान बोध समुझावा ❀ करि प्रबोध अस्नान करावा ॥
तब आज्ञा दै धर्म नरेशा ❀ गयउ द्रुमति सो अपने देशा ॥

दोहा—धौम्य नाम प्रोहित तहां, धर्मराज के साथ ।
बारह संबत पूरभे, कहौ बात नरनाथ ॥

अब अज्ञात बरष परमाना ❀ कहां रहउँ सो करहु बखाना ॥
कुरुके दूत फिरैं सब ठाऊ ❀ कहां दुरौं सो कहो उपाऊ ॥
जो कोउ लखै गुप्त दिनमाहीं ❀ बारहबर्ष फेरि बन जाहीं ॥
तौ हमारे दुख छूटत नाहीं ❀ रहिये गुप्त कौन बन माहीं ॥
यह बिचारि मन रोदन कीन्हा ❀ हमैं बिधाता बहु दुख दीन्हा ॥
धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई ❀ धर्मराज ते कह समुझाई ॥
तुम तो धर्मरूप हौ राऊ ❀ बिपति काल कादर कस आऊ ॥
सुख दुख ब्यापक है संसारा ❀ चित्त धीर्य करु पाण्डुकुमारा ॥
माया विष्णु गुप्त है राजा ❀ गुप्तरूप देवन कर काजा ॥
बामनरूप छल्यउ बलिराऊ ❀ देवकाज कीन्ह्यउ परभाऊ ॥

दोहा—रामरूप माया धरी, रावण कीन्ह सँहार ।
चित चिन्ता केहि हेतकर, सुनिये धर्मभुवार ॥

यहि प्रकार प्रोहित समुझाये ❀ तबहिं धीर राजा मन आये ॥
पांच बन्धु अरु प्रोहित संगा ❀ करत तहां बहुकथा प्रसंगा ॥
जयद्रथ बहु लज्जा जिय पावा ❀ पार्थ भीम अपमान करावा ॥
लाजवन्त हर सेवा ठाना ❀ गङ्गाधर को कीन्हों ध्याना ॥
बहुत प्रकार तपस्या करेऊ ❀ पाइब जीती मन महँ धरेऊ ॥
होइ प्रसन्न तब शंकर आयो ❀ मांगु मांगु बर बचन सुनायो ॥
करि परणाम जयद्रथ कहई ❀ जीता पांच पाण्डवन चहई ॥
गङ्गाधर बोले यह बाणी ❀ पारथ तन मन शारँगपाणी ॥
चारिहु बन्धु जीतिहौ राऊ ❀ पारथ कहँ जीते नहि पाऊ ॥
यह बर तो गङ्गाधर दीन्हों ❀ जयद्रथ हृदय हर्ष बहु कीन्हों ॥

यह बनपर्व कही मैं गाई ❀ रहे बनै महँ धर्मजराई ॥
जे फल तीरथ करि अरु दाना ❀ सिन्धु आदि सरिता अस्नाना ॥
जो केदार बद्रिकाश्रम जाये ❀ जगन्नाथ के दरशन पाये ॥
नाना दुख व्रतकरि जो सहई ❀ सो बनपर्व सुने फल लहई ॥

दोहा–कहि बनपर्व कथा यह, सुनु जनमेजय राय ।
पुण्य कथा श्रीभारत, सबलसिंह कहि गाय ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेबनपर्वणि गन्धर्व दुर्योधन युद्धवर्णनन्नाम

अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति बनपर्ब समाप्तम् ॥

महाभारत

विराटपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामितुलसीदास-कृत
रामायणकी रीति पर दोहा-चौपाई में
सरलता से वर्णित है।

जिसमें

द्रौपदी-सहित युधिष्ठिर आदि पाँचों भाइयों का व्यासोपदेशसे नृप बिराट के यहाँ सैरन्ध्री, कंक, जयन्त, बृहन्नला, सेनी और बाहुकनाम से दासवत रहना, जयन्त द्वारा मल्ल-वध तथा हस्ती मदनाश पुनः सैरन्ध्री का रूप देख कीचक का आसक्त होकर जयन्त द्वारा मृत्यु, धेनु-हरण को जानकर बृहन्नला द्वारा समस्त कौरव आदिवीरों का परास्त होना, अभिमन्युबिबाह, श्रीकृष्ण का पाण्डवों को पाँच ग्राम देने के लिये समझाना और उसको न मान कर महाभारत रचने आदि की कथा वर्णित है।

काशी

बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा—
भार्गव भूषण प्रेस काशी में मुद्रित।

श्रीगणेशाय नमः

अथ महाभारत भाषा

विराटपर्व

दोहा—कहे सकल बनपर्व के, ऋषि नरेश को ठाट ।
सबलसिंह चौहान कहि, भारत पर्व विराट ॥
धर्मराज तब बिकलह्वै, सुमिरयो ब्यासमुनीश ।
नाशनदासकलेशहित, आये त्रिमि जगदीश ॥

दण्ड प्रणाम नृपति उठि कीन्हा ❋ मुनिबरबिहँसि लायउरलीन्हा ॥
चारिउ बन्धु द्रौपदी रानी ❋ परसेउ चरण ब्यास के आनी ॥
आय दीन मृग चर्म बिछाई ❋ चरण धोय बैठायो आई ॥
पातन को ब्यजना कर लीन्हों ❋ पवनकुमार पवन तब कीन्हों ॥
भोजन तब लै आई रानी ❋ नकुलदीन्ह जलभाजन आनी ॥
करि भोजन ऋषि शयन अनन्दे ❋ सहदेव आय चरण तब बन्दे ॥
कह्यो राउ नयनन भरि बारी ❋ भलेहि नाथ ममसुरति बिसारी ॥
कह्यो कलेश बरणि नहि आवा ❋ अन्धसुवन मोहिं बहुत सतावा ॥
कपट रूप करि भूमि छुड़ाई ❋ सबहिं बोलाय सुनाय कराई ॥

दोहा—द्वादश वर्ष जाइके, बिपिन बसेरो लेइँ ।
खोज न पावहिं तेरहों, इनहिं राज हम देइँ ॥

जो हम शोध तेरहीं पावैं ❋ द्वादश वर्ष बहुरि बन जावैं ॥
मोहित दुरन बतावहु ठाऊँ ❋ कहिबन कौन देश ऋषिजाऊँ ॥
खोजत बर्ष मध्य जो पैहै ❋ बहुरि बनै कुरुनाथ पठैहै ॥
आज्ञा देउ रहौं तहँ जाई ❋ जहँ सुखहोइ दुःख कटिजाई ॥
जाउँ तहाँ जहं मोहिं छपावै ❋ कहुँ कुरुनाथ खोज नहिं पावै ॥
कहेउ ब्यास नृप सुनहु बिचारा ❋ है नहिं अन्त छपाव तुम्हारा ॥

त्यागहु पकरि आइ सेवकाई ❋ नृप बिराट गृह रहौ छपाई ॥
सत्य बचन सुनु भूप हमारा ❋ तहँ कटि जैहै काल तुम्हारा ॥
करौ बिचार नृपति अब सोई ❋ भीतर वर्ष न जानै कोई ॥

दोहा—जाइ रहौ वैराट में, जहाँ न जानै कोइ ।
काल कटै बिपदा घटै, अधिक अधिक सुख होइ ॥

जैहै बीति बिपति सुख पैहौ ❋ नृपति फेरि धरणीपति ह्वै हौ ॥
जाइ रहौ तुम देश पराये ❋ रहिहौ सबसन शीश नवाये ॥
ओछी पूरी कहै जो कोई ❋ सहिहौ बिलग न मानब कोई ॥
मद साधे नृपताक दुराये ❋ रह्यो जाति औ नाम छपाये ॥
हीन रूप ह्वै रह्यो भुवारा ❋ यामें होइ छपाव तुम्हारा ॥
बोलेउ राउ जोरि युग पानी ❋ नाम सकल ऋषि कहो बखानी ॥
आपुस में कहिये हम सोई ❋ होइ दुराव न जानै कोई ॥
नृप के बचन सुनत सुख पाये ❋ व्यास सबन के नाम बताये ॥
कङ्क नाम भूपति को भाखा ❋ नाम जयन्त भीम को राखा ॥

दोहा—नाम धनञ्जय को कह्यो, बृहन्नला ऋषि ब्यास ।
सेनौ सहदेवहि कह्यो, सकल गुणन को रास ॥

बाहुक नाम नकुल को फेरा ❋ शैलन्ध्री द्रौपदी केरा ॥
काटहु कलह जाय नर देवा ❋ गर्ब छाँड़ि कीजै सब सेवा ॥
छाँड़ि क्रोध रहियो तुम राजा ❋ आयसु मानि करेहु नित काजा ॥
कबहुँ न करेहु गर्ब अपकारा ❋ सेयहु नृपति समेत बिचारा ॥
रह्यो सदा सबको रुख राखे ❋ परम अधीन दीन बच भाखे ॥
निशिदिन करेहु नयन लखि काजा ❋ जाते रहै प्रसन्नित राजा ॥
भीम आदि बरजेउ सब भाई ❋ जनि काहूसन करहि लड़ाई ॥
भये प्रकट जनिहै कुरुराजा ❋ होइहै नृपति तुम्हार अकाजा ॥

दोहा—यहि बिधि तब बहु शिष दये, गये ब्यास ऋषिराज ।
सोई मन्त्रन में धरचो, मनसा बाचा काज ॥

पाई परम सीख भूपालो ❋ बसे कछुक दिन तेहि प्रणशाला ॥

नितप्रतिसकल अहेर सिधावहिं ❋ खगमृग अमितमारिले आवहिं ॥
धौम्यसहित ऋषिसहस अठासी ❋ भोजन करहिं सहज सुखरासी ॥
एक दिवस नृप निकट बुलाये ❋ कह्यो ब्यास सोइ बचन सुनाये ॥
हम अज्ञात वास अब करिहैं ❋ मिलै न सुधि तेहि देशदौरिहैं ॥
बंश पुरोहित मम हितकारी ❋ करौ कहा भलि चहौहमारी ॥
संवतबादि मिलेउ म्वहि आई ❋ महि पर्यटन करो तुम जाई ॥
यह कहि नयननीर भरि आये ❋ बिदाकरत नृप अति दुख पाये ॥
सकल ऋषिन करि दण्डप्रणामा ❋ बिदाकिये कहिकहि सबनामा ॥
चले सकल मिलि आशिष दीन्हा ❋ नैमिष विपिनबास तिन कीन्हा ॥
करि अतिकष्ट करहिं जप योगा ❋ करुणा सहित करहिं प्रिययोगा ॥
कथा विचित्र महामुनि कहेऊ ❋ जनमेजयमुनि सुनिसुख लहेऊ ॥
मुनिसन प्रश्न बहुरि नृप कीन्हा ❋ किमि अज्ञातबास उन लीन्हा ॥

दोहा–ब्याससीखता ऋषि कह्यो, भामन भूप उचाट ।
पाँच बन्धु सँग द्रौपदी, आये नगर बिराट ॥

सरवर निकट बैठ मत लीन्हा ❋ कहेनि छिपाइ यतन के चीन्हा ॥
पुरते कछुक दूरि बन रहऊ ❋ अन्धकूप ता भीतर रहेऊ ॥
शमी बृक्ष ता मध्य बिराजा ❋ ताके निकट गयउ चलि राजा ॥
अस्त्र सनाह बसन वर त्यागी ❋ शमी बृक्ष राखेउ बड़भागी ॥
भीमसेन यक मृतक लै आई ❋ बृक्ष मध्य दीन्हो लटकाई ॥
अब तरु भयउ निकण्टक सोई ❋ याके निकट न अइहै कोई ॥
यह कहि फिरि सरवर तट आये ❋ नृपति आपु द्विजरूप बनाये ॥
सबहिं राखि तहँ चलेउ नराटा ❋ गयो प्रथम तब नगर बिराटा ॥

दोहा–दरबानीद्विज देखिकै, अद्भुत रूप बिलोकि ।
करयो नगर पैसार नृप, द्वार सके नाहिं रोकि ॥

पैठत नगर शकुन नृप भयऊ ❋ भीमसेन सहदेव ते कहेऊ ॥
कैसे शकुन होत ये भाई ❋ हमहिं गणित करि देहु बताई ॥
एसे लक्षण मैं पहिचाने ❋ होइहैं काज सकल मनमाने ॥

मिली बाल बालक मगलीन्हे ❀ धेनुबाल प्यावत सुख कीन्हे ॥
सुख महँ दिवस बीतिहैं नीके ❀ ह्वैहैं काज महीपति जीके ॥
अशकुन एक होत है भीमा ❀ यहै शोच आवत है जीमा ॥
लीलै मूष बाम मंजारी ❀ बीते कछु दिन कलह पछारी ॥
सरवर बन्धब चारि ठयेऊ ❀ राजसभा चलि भूपति गयऊ ॥
द्विजको रूप महीपति कीन्हे ❀ अन्नमाल शिर चन्दन दीन्हे ॥
लकुटि पाणि पुस्तकी सोहाई ❀ सभा मध्य पहुँचे सो जाई ॥

दोहा—दीन्ह अशीशक्षपीश तब, भेंट्यो सहित सनेह।
उठि बिराटनृप बिप्रलखि, शिरनायोयुतनेह ॥

कह नृप विप्र कहांते आयो ❀ धर्मराज तुम पास पठायो ॥
कहेउ बचन मो चलती बारा ❀ करिहैं नृप प्रतिपाल तुम्हारा ॥
हम पर परम अवस्था आई ❀ काटहु दिन बिराट गृह जाई ॥
मोसन बचन कहेउ यह साँचो ❀ गिरिवर गुहा पैठिगये पांचो ॥
जाहु बिराट महीपति पासा ❀ उहां तुम्हैं सब भाँति सुपासा ॥
ब्राह्मण नृपति युधिष्ठिर केरा ❀ जानो सब गुण ज्ञान निबेरा ॥
धर्मसुवन तुम पास पठावा ❀ ताते निकट तुम्हारे आवा ॥
सुनि महीप कीन्हो सनमाना ❀ बैठारे गुण ज्ञान निधाना ॥
कहो नाम निज भूपति पूँछा ❀ कहेउ नरेश सकल छलछूँछा ॥
कङ्कनाम म्वहिं ब्यास बखाना ❀ सुनिक्षितिपतिकीन्हो सनमाना ॥
जान्यो ब्राह्मण परम अनूपा ❀ अर्द्धासन बैठारेउ भूपा ॥

दोहा—प्रीति पुनीत भुवालकी, परमस्वच्छ द्विजदेखि।
रह्यो युधिष्ठिरकोसभा, है गुणवान बिशेखि ॥

पुनि आयो तहँ पवनकुमारा ❀ आनि भूपकहँ कीन्ह जुहारा ॥
दीरघ तन दीरघ भुज दण्डा ❀ निरखत कौतुक भयो अखण्डा ॥
नृपके निकट भीम जब गयऊ ❀ देखि सभा सब चकृत भयऊ ॥
सकैं न बूझि सबै भय पावा ❀ कौतुक कौन देश ते आवा ॥
है यह कान परत नहिं चीन्हे ❀ मल्लरूप दरबी कर लीन्हे ॥

चकित सभासद करहिं बिचारा ❀ यह धों कौन आहि करतारा ॥
आवत देखि बिराट महीपा ❀ बूझे ताहि बुलाय समीपा ॥

दो०—कितते आये कौन तुम, कहा तुम्हारो नाम।
कौन जाति केहि हेत कहि, आयो मेरे धाम ॥

सुनु नृप नाम जयन्त हमारा ❀ राज युधिष्ठिर केर सुवारा ॥
करों बिबिध बिधिते जेवनारा ❀ व्यञ्जन अमित बनावनहारा ॥
अति सुगन्धयुत मिष्ट सलोने ❀ करौं पाक और नहिं होने ॥
जेइ कृतज्ञ भूप भूपाला ❀ बकसत नितपटमणिगण माला ॥
सरवर भीमसेन की राखत ❀ अमृत सरिस बचन नृप भाषत ॥
भोजन करत भीम के सङ्गा ❀ पालि नृपति तनकीन्ह मतङ्गा ॥
सुनिबिराटनृप अतिहित कीन्हा ❀ रहउ बन्धुसम आदर दीन्हा ॥
जिमि राखत तुव पाण्डुकुमारा ❀ तेहिते हेत हमार अपारा ॥

दोहा—निरखे सरवरि भीमको, भणते ताको देह ।
तैसो बली बिचारिके, ढिगराखे करि नेह ॥

निशा पाय अस पार्थ बिचारा ❀ केहि बिधि नगर करौं पैसारा ॥
होय दुराव न जानै कोई ❀ सहदेव यतन बतावहु सोई ॥
सुधि भूली तुमको किन भाई ❀ सुरपुर असुर बध्यो जब जाई ॥
तब सुरनाथ कृपा अतिकीन्हा ❀ अस्त्रसिखाइ मुकुट निज दीन्हा ॥
तव उन पुत्रभाव करि जाना ❀ दीन्ह वास भीतर अस्थाना ॥
देखि मेनका देह बिसारी ❀ भई कामवश सुरपति नारी ॥
रति मांगी तुमते करि ईड़ा ❀ पारथ करहु संग मम क्रीड़ा ॥
पूरण करा मोरि अभिलाषा ❀ त्राहि त्राहि माता तुम भाषा ॥
तब मेनका क्रोध अति कीन्हा ❀ होवहु हिजुशाप यह दीन्हा ॥
प्रात होत सुरपति पहँ जाई ❀ शापकथा तुम सकल सुनाई ॥
कहेउ सुरेश मेनकहि बोली ❀ शाप अनुग्रह करो अमोली ॥
सुनि सुरेश के बचन रसाला ❀ कीन्हो शाप अनुग्रह बाला ॥
जब चाहो तब वर्ष प्रयन्ता ❀ बृहन्नला तन होयहु सन्ता ॥

सुरे त्रिय शाप आशिषा भयऊ ❀ द्विजरूप अर्जुन ह्वै गयऊ ॥
भूषण बसन द्रौपदी केरा ❀ तन शृँगार कीन्हे बहुतेरा ॥

दोहा—बृहन्नला ह्वै पन्थ तब कीन्हों तिय को रूप ।
कङ्कण किङ्किणि आदिदै, अभरण सजे अनूप ॥
शिर सिन्दूर तमोल मुख, मेंहदी युत युगपानि ।
जावक चरण मृदंगकी, धुनि कीन्हीं तिन आनि ॥

गयो द्वार नृप पाण्डुकुमारा ❀ कहेउ जनावहु हे प्रतिहारा ॥
गायन राज्य युधिष्ठिर केरा ❀ आयो करि पुहुमी को फेरा ॥
सब नृप द्वार देश फिरि आयों ❀ भोजन कहुँ न पेट भरि पायों ॥
जब बन चले युधिष्ठिर राई ❀ कहेउ मोहि तब निकट बुलाई ॥
जायो भवन बिराट भुवारा ❀ तहँ ह्वै है प्रतिपाल तुम्हारा ॥
बेतपाणि राजा सन जाई ❀ समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
गायक द्वार एक प्रभु आवा ❀ कहत युधिष्ठिर मोहिं पठावा ॥

दोहा—सुनि बोले भीतर नृपति, सब बझयों व्यवहार ।
सकलगानसांगीतलखि, कला चौसठी चार ॥

नृपति युधिष्ठिर केर अखारा ❀ करौं गान सांगीत प्रचारा ॥
गावहुं मोहन राग रसाला ❀ नाचि नाचि रिझवों महिपाला ॥
अपनो गुण कहिबे निजबानी ❀ कहत भूप आवत गिल्यानी ॥
रहत रहे जे धर्म समाजा ❀ मम गुण पूँछु कङ्कसन राजा ॥
बिद्या पढ़ी सकल नृप जेती ❀ जानत सकल कङ्कऋषि तेती ॥
जब बन चल्यो युधिष्ठिर राई ❀ कहेउ मोहिं निज निकट बुलाई ॥
सेवहु तुम बिराट नृप जाई ❀ मिलेहु मोहिं निजकाल बिताई ॥
है समरत्थ बिराट भुवाला ❀ सो तुम्हार करिहै प्रतिपाला ॥

दोहा—मैं पारथको सारथी, बृहन्नला म्वहिं नाम ।
जीवन आयों आपुघर, लियों आइ बिश्राम ॥

धर्मपुत्र करिकै बहु नेहू ❀ पठयो इहां जानिकै गेहू ॥
इतनो भार हमारो लेहू ❀ बस्तर अन्न बर्षभरि देहू ॥

लघु कन्या बालकन पढ़ाऊँ ❀ पुरगगति सांगीत सिखाऊँ ॥
बिद्या अमित बरणि नहि जाई ❀ अल्प दिवसमहँ देउँ सिखाई ॥
भूपसुता उत्तरा कुमारी ❀ सौंपी पढ़न योग सुकुमारी ॥
फिर सहदेव पहूँचे आई ❀ नृपसों बचन कहत शिरनाई ॥
मैं तो धर्मपुत्र को ग्वाला ❀ अतिशय कृपाकरहिं महिपाला ॥
निकसि दूरिबन बोथिन गयऊ ❀ दै उपदेश पठै म्वहिं दयऊ ॥
करि जानौं गायन के सारू ❀ अरु जानौं नवविधि हथियारू ॥
मो देखत गोधन को हरई ❀ को नर जुरि मम समता करई ॥
बर्ष पञ्च इक धेनु चराई ❀ सेवन करैं पञ्चशत गाई ॥
सत्य बचन यह सुनहु भुवारा ❀ सनि खोए है नाम हमारा ॥
मोहिं जयन्त कङ्क ऋषि जानहिं ❀ उनहिं बूझि भूपति तब मानहिं ॥
सुनि तिन जानेहु बुद्धि बिशाला ❀ सौंपी सब सुरभी भूपाला ॥

दोहा—फेरि नकुल आये तहां, लीन्हे ताजन हाथ ।
देखि रूपकी राशि तब, चकित भये नरनाथ ॥
कौन देशको जातिकहु, कहा तुम्हारो नाम ।
केहि कारण बैराट कहिं, देखो मेरो धाम ॥

बाहुकराय युधिष्ठिर केरा ❀ रावत मान सबै बिधि मेरा ॥
मैं दुरिकै बन गया भुवारा ❀ दै सबते हम कहँ दुखभारा ॥
काटर कूचर अश्व चलावों ❀ योजन शत प्रणाम लै धावों ॥
बूझहु कङ्क ऋषिहि गुण मेरो ❀ आयों नृपति नाम सुनि तेरो ॥
मा कहँ सापो साहन जेते ❀ करो बनाय सूध सब तेते ॥
सुनि भूपाल अमित सुख पावा ❀ पाराडु सुवन ते हेत बढ़ावा ॥
देखि मूक मुखतिन तेहि काला ❀ कह बाहुक तन चतुर भुवाला ॥

दोहा—सौंपेउ साहन नकुल कहँ, हो भूपाल उदार ।
बहुरि सो आई द्रौपदी, भूपतिभवन मँझार ॥

नगी किधौं पन्नग की जाई ❀ कमला किधौं देह धरि आई ॥
रानिन सहित सखिनकै बृन्दा ❀ निरखैं मुख चकोर जिमिचन्दा ॥

कह रानी निज नाम बतावो ❋ केहि कुल की कुलबधू कहावो ॥
कहौ जाति आपनि गुणग्रामा ❋ केहि कारज आइउ ममधामा ॥
पाण्डव सदन द्रौपदी रानी ❋ दासी तासु लेहु म्वहिं जानी ॥
सुनेहुँ श्रवण तुव अमित बड़ाई ❋ देखेहु द्वार बिपतिबश आई ॥
पतिसंग चली बिपिन जब रानी ❋ मोसन कही बिहँसि यहबानी ॥
तुम गृह जाहु बिराट भुवाला ❋ काटेहु काल कछुक दिनबाला ॥

दोहा–आइउँ तुव सेवाकरन, सैलंधरि मम नाम ।
आज्ञा देहु कृपाल ह्वै, करौ यहाँ बिश्राम ॥

बोली बिहँसि बचन तब रानी ❋ केहि सेवा में बहुत सयानी ॥
चन्द्रबदनि सोइ बेगि बताऊ ❋ सौंपों तुमहिं सहित चित चाऊ ॥
भोजन मैं करवावों रानी ❋ भूषण अङ्ग सजों सुखदानी ॥
चुनि चुनि नये बसन पहिराऊँ ❋ लै दर्पण मुखद्युति दरशाऊं ॥
लै कुंकुम घनसार लगावों ❋ कुसुमावलि शुचि सेज बनावों ॥
अतर लाय तन पान खवावों ❋ तुम्हरी आज्ञा सदा बजावों ॥
करिहौं दोय काज नहिं रानी ❋ छुवहुँ चरण नहिं जूठनि खानी ॥
सैलंधरी बचन सुनि काना ❋ रानी बहुत कीन सनमाना ॥
तनया सम मेरे गृह रहियो ❋ मोसन मन की बातें कहियो ॥
हलुकी भारी कोइ न भाषहिं ❋ सब कोई आदर तुव राखहिं ॥
तुम थोरहिं कीजै सन्तोषा ❋ निशिदिन करौं तुम्हारो पोषा ॥
सैलंधरी जोरि युग पानी ❋ करतबिनय सुनियो कछु रानी ॥
रक्षक मोर पञ्च गन्धर्बा ❋ निशिदिनमोहिं रखावत सर्बा ॥
अति बलवन्त भयानक सोई ❋ रहैं संग देखै नहि कोई ॥
सो वे अन्तरिक्ष के बासी ❋ करैं प्रीति जानैं निज दासी ॥
पाप बुद्धि देखै म्वहिं कोई ❋ करैं निबर्त होय किन जोई ॥
जाको अन्न खाइये रानी ❋ तापै रहिय सदा छल हानी ॥
याते तुमकहँ प्रथम जनाई ❋ पाछे जनि ठहरै कनि जाई ॥
सत्यबचन सुर मोर सहाई ❋ लखै कुदृष्टि जियत नहि जाई ॥

राखी निकट परमहित मानी ❀ निशिदिन प्रीतिकरत प्रतिरानी ॥
सजत शृंगार सिखावत जोई ❀ सैलंधरी बचन सोइ होई ॥
काल पाइ कै पाराडुकुमारा ❀ मिलहिं समेत द्रौपदी दारा ॥
सकल अवस्था निजनिज कहईं ❀ फिरि बिलगाय मौन ह्वै रहईं ॥
जब भूपतिहि जोहारन आवहिं ❀ प्रथमकङ्कऋषि को शिरनावहिं ॥

दोहा—यहिबिधिपांचौ पाण्डुसुत, और द्रौपदी बाम ।
कालक्षेप पुनिकरहिंजिमि, क्षुद्रसकलगुणग्राम ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषा सबलसिंहचौहानकृते विराटपर्व पाराडव अज्ञातवासवर्णननाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दोहा—कछु दिन बीते नगरमो, गृह गृहप्रतिउत्साह ।
अपनी दुहिताकोरच्यो, नृपति बिराट बिवाह ॥

देश देश कहँ दूत पठाये ❀ सकल क्षितीश पुहुमि के आये ॥
सभा बिचित्र रची तहँ राजा ❀ जनु अमरावति रच्योसमाजा ॥
आपु लसैं जैसे सुर साईं ❀ सब नरेश जनु सुर समुदाईं ॥
सुरगुरुसम ऋषि कङ्क बिराजा ❀ अतिबिचित्रतह बनो समाजा ॥
कहूं नृत्यकारी नचि गावैं ❀ कहूं नाटकी स्वांग लै आवैं ॥
नाचहिं कहुं निदूषकरि जाला ❀ कूजहिं कांख बजावहिं ताला ॥
गाल फुलावहिं करहिं तमासा ❀ नाना भाँति करहिं परिहासा ॥
बारमुखी बहु नाचहिं गावहिं ❀ बानी बेनु मृदङ्ग बजावहिं ॥
बाजहिं आउझ झांझ तंबूरे ❀ मुनिमन हरत राग अतिपूरे ॥
चन्द्रबदन उर्बशी लजाहीं ❀ जिनहिंदेखिरतिद्युतिकछु नाहीं ॥
काहूँ मल्लरहिं अति भारे ❀ कहूँ मेष अति लरहिं सिंगारे ॥
मति दम्पति कहुँ लरहिं दँतारे ❀ श्याम वर्ण पर्वत से भारे ॥

दोहा—शोभा राजसमाज की, मोपै कही न जाय ।
देश देश के भूप सब, जरे सुवेश बनाय ॥

मल्ल एक तहँ आव प्रचराडा ❀ दीरघ तन दीरघ भुजदराडा ॥
औ द्वौ चरण कड़ा द्वौ पानी ❀ पीत बसन शोभा की खानी ॥

बड़ो भीर भूपन के देखी ❋ कही सभा महँ बात परेखी ॥
अहंकार युत बचन बखाना ❋ सुनहु महीप बचन दै काना ॥
जीति बिदर्भ देश जे भृङ्गी ❋ जीते मल्ल सरङ्ग तिलङ्गी ॥
काशमीर लाहोर चंदेरी ❋ बन्दर सब करनाटक हेरी ॥
अङ्ग बङ्ग कामरू मँझाई ❋ औरो देश बिलोकेउ जाई ॥

दोहा—मोसे मल्ल जरे नहीं, कोउ न कौनेउँ देश ।
है कोई मोसे जुरे, आज्ञा देहु नरेश ॥

सुनि सुनि सभा न बोलै कोई ❋ मन साहस काहू नहि होई ॥
नृप बिराट को सुधि ह्वै आई ❋ तब जयन्त कहँ लीन्ह बोलाई ॥
सुनि जयन्त मम आज्ञा मानो ❋ मल्ल युद्ध तुम यासों ठानो ॥
मैं अपने मन कीन्ह बिचारा ❋ तुम सुआर यह मल्ल जुझारा ॥
जा हारो तो हारि न होई ❋ जीते द्रव्य देइ सब कोई ॥
धारे मारो जो मल्ल जुझारा ❋ जगमहँ होइहि सुयश तुम्हारा ॥
सुनि जयन्त बोल्यो कछु नाहीं ❋ रहे चुपाय कङ्क मुख चाहीं ॥
कहेउ कङ्क किमि हृदय डेराना ❋ करु जयन्त नृप बचन प्रमाना ॥

दोहा—तब जयन्त यह मल्लसों, कही बात अरगाय ।
हम तुम रससों खेलिये, लीजै सभा रिझाय ॥
तू जो आनै रोष मन, डारै भुजा उपारि ।
हम परदेशी उदरहित, देहैं भूप निकारि ॥

कहेउ मल्ल सुनु कौन बिचारा ❋ तैं कस कादर बचन उचारा ॥
दीरघ भुजा बचन कहे दीना ❋ ऐसी कहै होय जो हीना ॥
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये ❋ तब जयन्त यह बचन सुनाये ॥
करु अब जौन होय बल तोरा ❋ जनि मानसि खल मोरनिहोरा ॥
मल्लयुद्ध लागे दोउ करना ❋ मुष्टिघात अरु घालहिं चरना ॥
मल्लयुद्ध दोउ यहि बिधि करहीं ❋ लपटहिं धरहि भूमि भुकिपरहीं ॥
फिरि फिरि करि बल उठहिसँभारा ❋ समबल युगल न मानहिं हारा ॥
तब जयंत भुजबल अति कीन्हा ❋ मल्ल उठाय डारि महि दीन्हा ॥

करि बड़ क्रोध सो भूपर डारा ❋ जनु सुरवज्र गिरिन को मारा ॥
सँभरि उठ्यो यह बचन सुनाये ❋ अब मारौ खल तू कित जाये ॥
लै तब गुरज उठो अकुलाई ❋ हनो जयन्त नासिका जाई ॥
बिषम चोट थर हरेउ शरीरा ❋ मूर्छि गिरेउ महि पाण्डवबीरा ॥
देखेउ कङ्क सेलंध्री जानी ❋ हाइ हाइ करि अति अकुलानी ॥
चेति जयन्त उठो गल गाजी ❋ जान न पाइहि अब खल भाजी ॥
भूमिहि सातबारे धरि मारहु ❋ गहिरे गर्ब दुष्टको गारहु ॥
फेरि जुरेउ जिमिकरि बलजोरी ❋ कीन्ह प्राण बिन मल्ल मरोरी ॥

दोहा—मृतक तासु तन क्रोधकरि, दीन्हों दूरि पँवारि।
दश देशके भूप सब, करत बड़ाई झारि ॥

देखत सभा सब नर हर्षे ❋ बसन कनक मणि मोलनबर्षे ॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा ❋ कहौ सुनौ अब भा जस काजा ॥
मत्त गयन्द नृपति को ऐसो ❋ कज्जल गिरि भूधर ह्वै जैसो ॥
कानि महावत की नहिं आवे ❋ करै प्राण बिन जो ढिगपावे ॥
सुन्दर महल दिये महिपारी ❋ गये निकट नर डारै फारी ॥
शूंडि दाबि बहु बृक्ष उखारै ❋ नहिं कुन्तल ते रहै सँभारै ॥

दोहा—बांधहु जाय गयन्द कहँ, पठये नर नरपाल ।
सकै निकट नहिं जाय कोउ, देखि देव बिकराल॥

जाय भूप सन कथा सुनाई ❋ कोऊ निकट सकै नहिं जाई ।
कैसेहु हाथ न कुञ्जर आवै ❋ अब सो करिय जो भूप बतावै ॥
तब जयन्त ते कहेउ बोलाई गजहि पकरि लै आवहुजाई ॥
कै बांधहु कै डारहु मारी ❋ पुरको कण्टक देहु निकारी ॥
जब नरेशकी आज्ञा पाई ❋ चल्यो बृकोदर अति हरषाई ॥
सिंहनाद गरज्यो बलबीरा ❋ तब गयन्द थरहरेउ शरीरा ॥
पूछ पकरि झकझोरेउ ऐसे ❋ दाबत मृग करु चीता जैसे ॥
दशन पकरि लै पहुँचो थाना ❋ ज्यों अजया लीजै गहि काना ॥
बाँधि ताहि भूपहि शिरनायो ❋ तब जयन्त बसनन पहिरायो ॥

दोहा—यहिबिधि बीते मास दश, नृप बिराट के तीर ।
कालक्षेप निशिदिन करैं, पाण्डुपुत्रबलबीर ॥

इति श्रीमहाभारते विराटपर्वसबलसिंहचौहान भाषाकृतेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दोहा—कीचक बली बिशालतन, नृप तरुणीको बन्धु ।
सहसद्विरदसमताहि बल, यौवनमदअतिअन्धु ॥

शत बान्धव कीचक के बली ❋ बल अवगाहन नृप अस्थली ॥
सोहत यक यक मातु के जाये ❋ ऐसे सुभट महीपति भाये ॥
एक दिवस कीचक हरषाई ❋ निज भगिनी के मन्दिर जाई ॥
रानी ढिग कीचक चलिजाई ❋ कीन्ह प्रणाम चरण शिरनाई ॥
बन्धु बिलोकि हृदय हरषानी ❋ दीन्हअशीश मुदित मन रानी ॥
भोजन करत कनक की थारी ❋ द्रुपद सुता तहँ करत बयारी ॥
देखि चेरि कहँ कीचक बीरा ❋ काम बिबश थरहरेउ शरीरा ॥
इति भगिनीसन बचन बखाना ❋ दासी बस ह्वै रह्यो पराना ॥
तहँ कीचक तन दशा बिसारी ❋ सेलन्धरि दिशि रहो निहारी ॥
भयो कामबश बुद्धि भुलानी ❋ छाँड़िसि लोकलाज कुलकानी ॥
सेलंध्री अपने मन जाना ❋ कामबिबश यह खल बौराना ॥
ताहि सुनाय कहो सुनु रानी ❋ अकथकथा कछु कहौं बखानी ॥
गन्धब पञ्च महा बल भारे ❋ ते मम संग निशिदिन रखवारे ॥
अन्तरित्त देखै नहि कोई ❋ तुम कहँ प्रथम सुनायों सोई ॥
मोहिं कुदृष्टि बिलोकै जोई ❋ सो नर कठिन कालबश होई ॥

दोहा—अवशि हनैं गन्धर्ब तेहि, मोहिं बिलोकै जोइ ।
बली होइ की निर्बली, जीवत बचै न सोइ ॥

यदपि सेलंध्री बिभव बखाना ❋ कीचक मनहु सुन्यो नहिंकाना ॥
काम अन्ध नहिं सूझत तेही ❋ बिषअस छहरि गयो सब देही ॥
भयो बिकल सब दशा बिसारी ❋ द्वौ करजोरि बिनय अनुसारी ॥
भगिनी सन बोलो बिसवासी ❋ मांगे देहु मोहिं निज दासी ॥

मोकहँ मिलै मोहि यह इच्छा ❀ मांगों लाज छाँड़ि यह भिक्षा ॥
मोहि दया करिके यह दीजै ❀ याको बदि सहस्र तुम लीजै ॥
लाज छाँड़िके करौ ढिठाई ❀ करौ बचन क्रुर हृदय जुड़ाई ॥
होइ मोरि तौ जाउ लवाई ❀ देउँ बन्धु किमि बस्तु पराई ॥

दोहा—द्रुपदसुता की अनुचरी, देत मोहि अति क्षोभ ।
यह मोरे जनु पतरी, करो बन्धु जानि लोभ ॥

जादिन प्रथम भवन मम आई ❀ कन्या कै राखेउँ मैं भाई ॥
कह मुनि सुनु कुरुकेतु भुवारा ❀ सुनइन काम बिबश मतवारा ॥
रानी बचन कहे बिधि नाना ❀ कीचक सुन्यो न एकौ काना ॥
बोली बहुरि बचन यह रानी ❀ सुनहु बन्धु इक कथा पुरानी ॥
द्रुपद सुतापति सँग बन गयऊ ❀ इसहि पठाइ भवन मम दयऊ ॥
रहै जीविका हित गृह माहीं ❀ दासी मोरि बन्धु यह नाहीं ॥
जाइय भवन दई नहिं जाई ❀ देउँ कौनि बिधि बस्तु पराई ॥
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये ❀ क्रोधवन्त ह्वै बचन सुनाये ॥

दोहा—कहु कैसे तू राखिये, दासी बल करिलेहुँ ।
राज्य पाट सब छीनिकै, कोटिकोटि दुख देहुँ ॥

चेरी लागि नशावहु राजू ❀ तोरे कहा सुधरिहै काजू ॥
अति बलवन्त बन्धु शतमोरे ❀ राखिलेइ ऐसो को तोरे ॥
सुन्यो कठोर बन्धु की बानी ❀ बोली परम क्रोध ह्वै रानी ॥
पर तरुणीरत जे जग भयऊ ❀ ते निजकरणी सों मिटिगयऊ ॥
जो चाहौ आपनि कुशलाता ❀ फेरि कहौ जनि याकी बाता ॥
रावण कथा सुन्यो तुम भाई ❀ रामचन्द्र की नारि चोराई ॥
सियाहरत नहिं लागि बिलम्बा ❀ नश्यो दशानन सहित कुटुम्बा ॥
गौतमतियलखि शक्र लुभाने ❀ भयो सहसभग जग स जाने ॥
बाँधेउ असुर पाप बश सोई ❀ भयो खण्ड जानत सब कोई ॥
ह्वै सकाम गिरिजा तन हेरा ❀ एक नयन बिन भये कुबेरा ॥
शुम्भ निशुम्भ असुर अभिमानी ❀ मोहा परम शक्ति जियजानी ॥

कथा प्रसिद्ध सकल जग खानी ॐ अपने पाप मिटा अभिमानी ॥
बन्धुबधूरत रघुपति जानी ॐ मारेउ बालि हिये शर तानी ॥
परत्रियरतहितशठ मन दीन्हा ॐ पै है फल खल आपन कीन्हा ॥

दोहा—भगिनीमुखकेबचनसुनि, कियपयाननिजधाम।
बिकल महाजियकलनहीं, घरी मुहूरत याम ॥

कीचकको सुधिबुधि नहिं रहेऊ ॐ सूने महल सेलन्धरि लहेऊ ॥
कामअन्ध अञ्चल तेहि गहेऊ ॐ आतुरह्वै यहि बिधि तब कहेऊ ॥
चित हमार तुव रूपहि पागो ॐ भया असक्त सुधीरज भागो ॥
मेर तरुणी शशि अनुहारी ॐ सबपर होय सोहागिल नारी ॥
उत्तम भूषण बसन बनावो ॐ अरु दासी को नाम मिटावो ॥
बचन तुम्हार मेटि नहिं जाई ॐ रहो नारि मम हृदय समाई ॥
सुनत बचन मन शङ्का आई ॐ कहेउ सेलन्ध्री बचन बनाई ॥
तुमहिं देखि मोह्यो मन मोरा ॐ कीन्हे प्रीति नाश है तोरा ॥
गन्धर्ब पञ्च मोहि रखवारी ॐ दीरघ तन मन बिक्रम भारी ॥
मोहि छुवत वे तुरतै आवैं ॐ सुनु कीचक तुव प्राण नशावैं ॥
तब मारे मम अपयश होई ॐ मोकहँ दोष देइ सब कोई ॥
या महँ उभय प्रकार बिगारा ॐ मरण तोर मम देश निकारा ॥
तुव भगिनी सुनि देइ निकारी ॐ इहां जीविका उठी हमारी ॥
यह सुनि कीचक अति भयमानो ॐ गई पराइ पाराडु की रानी ॥
निशिदिन ताकहँ नींद न आवे ॐ धन सम्पति घरबार न भावे ॥
बोलि दूतिका यहिबिधि कहेऊ ॐ वह दासी मम चितबसि रहेऊ ॥

दोहा—मनसा बाचा कर्मणा, तुम अबकरहु उपाय।
मृगनयनीनिशिकरवदनि, मोपरभुरै लैआउ ॥

भुरै लै आउ सेलन्ध्री आवे ॐ निज इच्छा माँगो तुम पावे ॥
गई दूतिका बिबिध प्रकारा ॐ लागी करन युक्ति उपचारा ॥
बहुत भांति दूती समुझायो ॐ चित्त सेलन्ध्री एक न आयो ॥
यहाँ बिचार न बोलै सोई ॐ आजु कालिह कछुकाज न होई ॥

रही मास द्वै अवधि हमारी ❀ नहिं जानै कुरुपति अपकारी ॥
कीचक आतुर ह्वै उठि धायो ❀ जहां सैलन्ध्री तहँ चलि आयो ॥

दोहा–सूने घरमों पायकै, गहे केश कर धाय ।
अब कहु राखै तोहिंको, कौन छुड़ावै आय ॥

गन्ध्रब महँ गन्ध्रबपति होई ❀ सकै छुडाय तोहिं नहिं सोई ॥
गन्ध्रब के बल तू अभिमानी ❀ बोलु छुड़ाय देइ अब आनी ॥
यदपि बली रक्षक तू होई ❀ मोरे तुल्य होइ नहिं सोई ॥
ब्याकुल भई नीचबश रानी ❀ गई लाज अब हृदय डेरानी ॥
हरे कृष्ण नाम यह भाखी ❀ दुश्शासन ते तुम पति राखी ॥
सैलन्ध्री बिनवै मृदुबाणी ❀ बिबिधप्रकार जोरि युग पाणी ॥
यदपि बिनयकृत बिबिध प्रकारा ❀ सुनै न काम बिबश मतवारा ॥
बोला कामवश्य रिसिआई ❀ तजौं तोहिं करि निजमनभाई ॥

दोहा–दासी कर्म कराइकै, त्रासदेखावहुँ तोहिं ।
अपनो मनभाई करौं, यहीबानि अबमोहिं ॥
कैसहु खल नाहिंहठ तजै, अंचल डरो फारि ।
करते केश न तजै सो, अतिअकुलानीनारि ॥

सैलन्ध्री तब बुद्धि बिचारी ❀ बिबिध भाँति कीन्हीं मनुहारी ॥
रसते प्रीति बढ़ति हैं जोई ❀ तस नहि कछु अनरस ते होई ॥
दान मान युत आदर धरई ❀ परतिय सो अपने वश करई ॥
यथा बीजते द्रुम उठि जाई ❀ तिमि रस की प्रतीति सरसाई ॥
निशिदिन लिये रहै मनु हाथा ❀ बढ़ै हेत तब परतिय साथा ॥
मिष्ट सुधा सम बचन सुनावै ❀ इष्ट समान हिये बिच लावै ॥
कहत बचन फुरवै सब सोई ❀ परपत्नी ताके बश होई ॥
यह कीचकहु सुन्यो न चीन्हा ❀ परतियबरबसकेहिबश कीन्हा ॥

दोहा–जानत रसकी प्रीति नाहिं, तैं खल एकौ बात ।
परतरुणीको मन दयो, तबसबसुखसरसात ॥

रहसिरहसिअबमनमिलै, तौलाहिहँसिपरनारि॥
बौरायो यह बचन कहि, गूढ़ उपाय बिचारि ।
तजे केश तब गृह अभिमानी ❋ सैलन्धरी गई जहँ रानी ॥
कह ऋषि सुनु कुरुबंश भुवारा ❋ गये बीति पुनि इकपखवारा ॥
दीपमालिका के दिन रानी ❋ बोली सैलन्ध्री सों बानी ॥
भोजन मिष्ट कछुक हित भाई ❋ सुरा पात्र दै आवहु जाई ॥
द्रुपदसुता सुनि अति अकुलानी ❋ जाब मोर उहँ नीक न रानी ॥
लज्जा मोरि जीव वहि केरा ❋ रानी जात न लागी बेरा ॥
यदपि सैलन्ध्री कह्यो बखानी ❋ बरबस ताहि पठायो रानी ॥
पिये मत्त मद कनक प्रयंका ❋ देखि सैलन्ध्री भयो सशंका ॥
अशन पान महि राखि परानी ❋ धाय केश पकरे गहि पानी ॥
सैलंध्री तब बचन उचारे ❋ गहत केश केहि हेत हमारे ॥
तुव मन बसेउ मोर मन सोई ❋ दिनरति कीचक पशुगति होई ॥
दोहा—रैनि गये तुम आयऊ, नाच अखारे जाय ।
शिथिल भयो यहबातसुनि, केशदिये मुकराय॥
योग भोग सूने सदन, बननिशिकीचकराय ।
जाउ तहाँ हौं आइहौं, यामक रैनि गँवाय ॥
जहाँ उत्तरा की चटसारा ❋ होइ मिलाप हमार तुम्हारा ॥
खलते लाज बचन नहिं जानो ❋ करि छल गई बहुरि जहँ रानी ॥
कीचक यह सुनि अति सुखपावा ❋ कह्यो सलंध्री बचन सुहावा ॥
जात भयो अपने गृह सोई ❋ हेरत बाट निशा कब होई ॥
गई दुखित तहँ द्रौपदि रानी ❋ है पतिभूप जहाँ सुखदानी ॥
कीचक कानि न याको राखी ❋ सो गति बाम भूपसन भाखी ॥
आयसु अर्जुन को नृप दीजै ❋ कीचक मारैं सो नृप कीजै ॥
यह कहिकै उपजी तन तापा ❋ ऊँचे स्वर करि कीन्ह विलापा॥
रोवत बाम श्वास नहिं आवै ❋ भूपति बहुत भाँति समुझावै ॥
दोहा—मास दिवस बीते त्रिया, सो व्रत पूरण होइ ।
तौ लगि कालहि काटिये, लखै कछू नाहिं कोइ ॥

अवधि बीत कीचक संहारों ❀ तब त्रिय और बिचार बिचारों ॥
की तब लगे रहा मन मारा ❀ की बनबास करावो नारी ॥
सुनि नृपबचन बिकलभै रानी ❀ करत बिलाप हिये अकुलानी ॥
उतर देत नहिं बनहिं बनावा ❀ नयनन नीरगरे भरि आवा ॥
रोदन करत चली तब रानी ❀ गै पति अब पति बात न मानी ॥
बिलखि बदन तिय पहुँचो तहाँ ❀ हते बीर बल अर्जुन जहाँ ॥
नयन सनीर कढ़त नहिं बानी ❀ कथा समस्त बखानी रानी ॥
बरणी कीचक की अधिकाई ❀ कह्यो भूपमन कछु नहिं आई ॥
दीन्ह जवाब धरणि के धरणा ❀ आइउँ पार्थ तुम्हारी शरणा ॥
मेरो कहो गोसाइं कीजे ❀ हति कीचक जगमें यश लीजे ॥
तुमहिं अछत अस हाल हमारा ❀ बल पौरुष कहँ गयो तुम्हारा ॥

दोहा—कह्यो पार्थ तब त्रियासों, करि अतिक्रोध कराल।
आज्ञा पावौं भूप को, शठहिं बधौं उत्ताल ॥

जो भूपति की आज्ञा पावों ❀ तौ कीचक यमलोक पठावों ॥
नृप की कानि न तोरी जाई ❀ तोरे कछु नहिं करौं उपाई ॥
सरवर तीर सबन के आगे ❀ चलती बार बचन नृप माँगे ॥
मम आयसु बिन कृत कठिनाई ❀ कृष्ण चरण तेहि कोटि दुहाई ॥
नृपको बचन न मेटो जाई ❀ मास दिवस तुम रहो चुपाई ॥
सुनत सैलंध्री अति दुखमाना ❀ पारथको कछु बचन बखाना ॥
छूटो तुमहिं क्षत्रिकुल बाना ❀ तजेउ सानधरि बेष जनाना ॥
लाज हीन भयो पाण्डुकुमारा ❀ तुमहिं जियत अस हाल हमारा ॥
सो सुनि पार्थ रहो शिरनाई ❀ माद्रो सुनत तीर चलि आई ॥

दोहा—गई नकुल सहदेव पहँ, बिलखि बदन बरनारि।
अधिकारी ता दुष्टकी, सब बिधि कही पुकारि ॥

कीचक बांह हमारी गही ❀ तुम में कहौ कहां पति रही ॥
मेरे कहेको नहिं हँसि टारो ❀ क्यों न आपने अरिकहँ मारो ॥
सहदेव नकुल कही सुनु रानी ❀ मेटि न जाइ भूपकी कानी ॥

कह्यो नृपति म्वहिं बारहिं बारा ❀ भ्राता यह न करेउ अपकारा ॥
कटुक कहेउ सुनिलेउ चुपाई ❀ काहुहि उतरु न दीजै भाई ॥
बिन आज्ञा कृत करम दुरन्ता ❀ जानौं पाप मोर बपुहन्ता ॥
तुव दुख देखि मोहिं कठिनाई ❀ नृप आयसु मेटी नहिं जाई ॥
सहदेव नकुल बहुत दुखपावा ❀ जोरिपाणि रानिहिं समुझावा ॥

दोहा–सुनि सुनि तेरे बचन अब, बाढ़त क्रोधअपार।
मेटाजाय न नृपबचन, बिनयो बारहिबार ॥
मारौं कीचक क्षणकमहँ, भूपतिआयसु पाय।
करै अवज्ञा नारि अब, काकरिनरकाहिजाय ॥

मास एक तू और निवारी ❀ तब सकिहौं कीचककहँ मारी ॥
इनहूँ ते तिय भई निरासा ❀ पहुँची भीमसेन के पासा ॥
सजल नयन भरि आँशू ढारे ❀ मींजत नयन भये रतनारे ॥
पवनपुत्र तब यहिविधि जानी ❀ बिलखी ठाढ़ि द्वारपर रानी ॥
आयो द्वार लखे तिय नयना ❀ श्वासलेत कछु कहै न बयना ॥
बोली बिलखि आजु गृहमाहीं ❀ कीचक दुष्ट गहो ममबाहीं ॥
पाण्डु सुवन पै फिरो पुकारी ❀ वे गुहारि लाग्यो नहिं चारी ॥
अब तुम स्वामी रहो चुपाई ❀ गहि सो दुष्ट मोहिं लैजाई ॥
सुन्यो श्रवण जब सकल प्रसङ्गा ❀ रोष बढ़ो बिकसो सब अङ्गा ॥
लखि त्रियके मुखकै मलिनाई ❀ दौरिगई दृग में अरुणाई ॥
बूझत बचन उतरु नहि देती ❀ गहवर बयन नयन जलसेती ॥
कीचकको सुनि तब मुख नामा ❀ भयो सक्रोध भीम बलधामा ॥
देखत जो न बधौं क्षण जाई ❀ कोटि युधिष्ठिर केरि दोहाई ॥

दोहा–लीन्हों मीचु बुलाइकै, नीच आपने हाथ।
जीतो चाहत श्वाननर, सिंहबली के साथ ॥

दादुर जुरा चहत हरि सङ्गा ❀ चीतहि जीता चहै कुरङ्गा ॥
चहत कपोत बाजसनरारी ❀ मूषक जीतन चहत मँजारी ॥
गर्दभ चहत मतङ्गहि ठेलो ❀ चहत भुजङ्ग गरुड़सँग खेलो ॥

तुम सन कही बचन कटुबागी ❀ अपने हाथ मीच वहि माँगी ॥
कहेसिबिलोम बचन तजि ज्ञाना ❀ यहि कर काल आय नियराना ॥
सैलंध्री यहि बिधि समुझाई ❀ चल्यो भीम त्रिय रूप बनाई ॥
नाच महल महँ बैठो भीमा ❀ दीप बुझाय क्रोध करि जीमा ॥
तहां काम बश कीचक आवा ❀ नारिजानि कुचपाणि चलावा ॥
गहे भीम तब दो भुज दण्डा ❀ मल्लयुद्ध तहँ भयो अखण्डा ॥
करिबल भीम ताहि महि डारा ❀ चला पराय अधम हियहारा ॥
मोहिं युधिष्ठिर भूप दुहाई ❀ कीचकबधौं जियत नहिं जाई ॥

दोहा—कालसर्पसों खेलेउ, कामलहरि अकुलाय ।
पूँछ मरोरी सिंहकी, अब जीवत नहि जाय ॥

पकरो भीम क्रोध करि धाई ❀ भिरा बहुरि शठ ताल बजाई ॥
दो महं हारि न कोई मानैं ❀ कोपि अमित गति युद्धहि ठानैं ॥
अतिबल भीमसेन तब कीन्हा ❀ पटक्यो भूमि कण्ठ पग दीन्हा ॥
मारि दुष्ट प्राणन बिन कीन्हा ❀ मूढ़ उठाय पुहुमि तब दीन्हा ॥
महा खोहड़े राखो जाई ❀ जानैं पुरजन नहिं ज्यहिं भाई ॥
डारेउ भीम तहां बलवाना ❀ परेउ अधमतन शृङ्गसमाना ॥
लरत ढहेउ गृह शब्द अघाता ❀ सुनि नरेश जागो अधराता ॥
चाहेउचलन खड्ग गहि पानी ❀ बरजेउ युगल जोरिकर रानी ॥
नाम सैलन्ध्री तुव घर दासी ❀ कीचक करी तासु संग हासी ॥
गन्ध्रब पंच तासु रखवारे ❀ जानि परी कीचक उनमारे ॥
चुपकि रहेउ नृप तो कुशलाई ❀ सुनि त्रिय बचन बैठ अरगाई ॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा ❀ कहेउ सो भीमकीन्हजस काजा ॥

दोहा—मारि दुष्ट धरि खोहमें, मनकी व्यथा नशाय ।
अर्द्धनिशासुतपवनको, निजथल पहुँचोजाय॥
जागे पुरजनसदनप्रति, प्रात भयो नर नारि ।
मृतकदेखिकीचकनहीं, कोउनहिं सक्योबिचारि॥

इति श्रीमहाभारते कीचकवधवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा—अन्तःपुर चरबर बदन, सुधि पाई नरपाल ।
सचिवसभासदसुभटसँग,तहँआयोतेहिकाल॥

नृप बिलोकि शङ्का उपजावा ❀ सजल नयन मुख बचननआवा ॥
शोक बिवश तन दशा बिसारी ❀ करत बिलाप ताप अति भारी ॥
क्यहियहिबध्यो जानि नहिं जाई ❀ बार बार कहि नृप बिलखाई ॥
करिय उपाय मिलै ज्यहि शोधा ❀ बिनअरिनिधनमिटिहिनहिंक्रोधा॥
बन्धु बद्ध सुधि तात्तण पाई ❀ भूपति की तरुणी तहँ आई ॥
रोदन करत बहुत अकुलानी ❀ देखत भूप ब्यथा तन जानी ॥
अपने मनही महँ दुख माना ❀ बार बार यह बचन बखाना ॥
कीचक कौने शूर सँहारो ❀ जासों युद्ध जुरो सो हारो ॥
अङ्ग नहीं चत और न आयो ❀ भूलिरहेउ कछु शोध न पायो ॥
इमि महीप द्र बचन बखानी ❀ बोली बिलखि बदन ह्वै रानी ॥

दोहा—रहै तुम्हारे धाम में, जाहि सैलन्ध्री नाम ।
गन्धबरक्षक तासु के, रक्षत आठौ याम ॥
कीचकअतिआसक्त ह्वै गही सैलन्ध्री बाल ।
ताही दिन ते मैं लख्यों, घेरो है याहि काल ॥

कीचक तिन गन्धर्बन मारे ❀ नहिं काहू पर गयउ उखारे ॥
अब चलि क्रिया तासु की कीजै ❀ लै लै कुश सबअञ्जलि दीजै ॥
रानी बचन श्रवण सुनि राजा ❀ लागो करन क्रियाको साजा ॥
तब कुतवाल बोल्यो राऊ ❀ प्रजा लोग सब बेगि बोलाऊ ॥
लै कीचक को घाटै जाऊ ❀ बिधिसों सर्ब क्रिया करवाऊ ॥
कह ऋषि कङ्क नीचको अङ्गा ❀ छुवतै उकृत होइ सो भङ्गा ॥
उत्तम जाति होइ नर कोई ❀ छुवै अङ्ग कीचक कर सोई ॥
गयो नृपति सुधि आय तुरन्ता ❀ कहेउ लै आउ सुवार जयन्ता ॥
बार बार तासन कह राऊ ❀ कीचक मृतक घाट लैजाऊ ॥
सुन्यो न बचन रहेउ चुपकाई ❀ फेरि नृपति अस कहेउ रिसाई ॥
तैं मेटो बल बचन हमारो ❀ मूढ़ कहा तव होइ गुजारो ॥

मरत्यउँ तोहिं मूढ़ अज्ञानी ❀ मानत पाण्डुसुवन के आनी ॥
धर्मराज पठयो तकि मोहीं ❀ सरबरि गनौं बन्धुको तोहीं ॥
नृपके बचन श्रवण सुनि भीमा ❀ कहेउ बचन क्रोधित ह्वै जीमा ॥

दोहा—मारो कीचक मैं कहां, कत कीजत है क्रोध ।
मो दुख मानत बादि नृप, अन्तहि लीजै सोध ॥
भोजन भाजन छांड़िकै, मैं नाहिं अन्तहि जाउँ ।
मनसा बाचा कर्मणा, तुमकहँ बहुत डेराउँ ॥

सो०—करी कृपा नरनाहु, याहिबिधि कहो जयन्तसों ।
कीचक को लैजाहु, दूरि नगर ते कृति करहु ॥
बन्धु कुटुम्बी सोइ, मृत्यु कहा सों काढ़ि कै ।
कहा परो है मोहि, ऐसे कर्म न हौं करौं ॥

बारबार इमि कह्यो भुवारा ❀ कृति करवावहु जाय सुवारा ॥
देखि कङ्क ऋषि केर इशारा ❀ तब जयन्त इमि बचन उचारा ॥
जो अब भोजन को कछु पावों ❀ तो कीचक लै घाटै जावों ॥
भोजन अमित भूप मँगवावा ❀ बैठि जयन्त तहाँ सब पावा ॥
रोवैं कीचक के सब भाई ❀ बरणि बिबिधबलशील बड़ाई ॥
मेवा बहु पकवान मिठाई ❀ खात जयन्त न होत अघाई ॥
कह नरेश सुनु बचन जयन्ता ❀ मृतढिग भोजन कर्म दुरन्ता ॥
लैजा लोथ करत कत देरा ❀ क्रियाकरन हित होत अबेरा ॥

दोहा—करि भोजनबलवन्ततब, कीचकलियो उठाय ।
दूरि नगर ते घाट पर, मृतक उतारो जाय ॥
इत कीचकके बन्धुसब, पकरि सैलन्ध्री बाल ।
जारनचल्योकुबन्धुसँग, लियोचल्योतेहिकाल ॥

जेहि हित मारो बन्धु हमारो ❀ पकरि पांय वाके संगजारो ॥
बरजत पुरजन सो नहिं मानै ❀ काहू बचन चित्त नहि आनै ॥
करत बिलाप द्रौपदी रानी ❀ को राखै बिन शारंगपानी ॥

त्रिबिधभाँतिसों करत बिलापा ❀ अतिशयकङ्क ऋषिहिदुखब्यापा ॥
देखत रह्यो बिराट भुवाला ❀ सोउ न रोकिसक्यो तेहि काला ॥
पकरि ताहि तहँवां लै आयो ❀ कीचकमृतक जहाँ पौढ़ायो ॥
भरि भरि घृतघट केतिक आने ❀ चन्दन अगर न जायँ बखाने ॥
तहँ द्रौपदी अधिक सन्तापा ❀ हा गन्ध्रब कहि करतबिलापा ॥
छुवत मोहिं तुव उर न दरेरा ❀ तुव बल थकितभयो यहि बेरा ॥

दोहा—रुदनकरत लखि द्रौपदी, गृह तब चल्योजयन्त।
क्रोध बढ़ेउ सब अङ्गमें, देखत कर्म दुरन्त ॥
बसन उतारि धरेउ कहूँ, भीम भीम ह्वै धाय ।
फलिगात दूनो भयो, उपमा कही न जाय ॥

ह्वै गये अरुण नयन रतनारे ❀ उठो क्रोध नहिं रहत सँभारे ॥
भृकुटिकुटिल अति क्रोध प्रचण्डा ❀ काल दण्ड सम द्वौ भुजदण्डा ॥
कुचर समान कलेवर भयऊ ❀ सरवर निकट भीम चलिगयऊ ॥
करै बिचार करौं अब सोई ❀ जेहि त्रियबचै निधन खल होई ॥
वेष छपाय बन्यो गन्धर्बा ❀ कीचक बन्धु बधौं जेहि सर्बा ॥
मरैं सकल सो करौं उपाई ❀ जेहि खलएक जियत नहि जाई ॥
बसन उतारि खोह धरि दीन्हा ❀ भीमरूप तब भीम ने कीन्हा ॥
नग्नरूप तन परम मतङ्गा ❀ कीच चढ़ाइ लीन्ह सब अङ्गा ॥

दोहा—कीच चढ़ाई सकलतन, केश दिये मुकराय ।
कर तरुवर लै बज्र सम, दै दिखराई आय ॥

कीचक बन्धु भजे अकुलाई ❀ कह गन्धर्ब पहुँचिगा आई ॥
भीम बटोरि बीर सब लयऊ ❀ सुर जनु बज्र गिरिनको हयऊ ॥
भीम लपेटि पङ्कतन धायो ❀ बड़े केश बहुधा मुकरायो ॥
बेष भयानक लखि बिकरारो ❀ चहुँदिशि भागिचले नरदारा ॥
हने हांकि कीचक के भाई ❀ बृन्द घात दै गदै मिलाई ॥
ह्वै निशङ्क सब लोथ उठायो ❀ चिता बनाइ सकलि चढ़ायो ॥
ताके हाथ कहा हथियारू ❀ सो सब बरणों ताको सारू ॥
कह जयन्त कछु बरणि न जाई ❀ जब गन्धर्ब पहूँचो आई ॥

प्रथम भजे नर देखत जोई ❋ करत पुकार भूपसन सोई ॥

दोहा—गयेशेष तहँ नर जिते, कही भूप सन जाय ।
कर तरुवर गन्धर्ब लै, तेहिथल पहुँचो आय ॥

मानुषरूप गहे द्रुम पानी ❋ कीचक कुलकी घालिसि घानी ॥
महाराज पठवहु सब योधा ❋ लेयँजाय तिन्हकर सब शोधा ॥
जब यह बचन सुन्यो नृप काना ❋ भयो सशङ्क अचम्भव माना ॥
अङ्ग अङ्ग हालेउ सब गाता ❋ मुखसेनिकसिसकत नहि बाता ॥
वह शव कीचक भीम जरायो ❋ फिरि जहद्रुपदसुता तहँ आयो ॥
खलबधि भीमनिकट जब गयऊ ❋ रानी अङ्गन अतिसुख भयऊ ॥
बोली बचन हास करि रानी ❋ राख्यो तुम पाण्डव को पानी ॥
हता सो अर्जुन भया जनाना ❋ तुमलगिरह्यो बंश को बाना ॥
जब द्रौपदी कही यह बाता ❋ भयो प्रसन्न भीम सब गाता ॥

दोहा—गृह तन पठई द्रौपदी, आपु गये सरपास ।
न्हाय धोय पहिरेबसन, आयो आपु अवास ॥
सरवर तर द्रुम डारिकै, आयो भूप निकेत ।
धाय धाय नर नारि सब, पूँछत करि करि हेत ।

पहुँचो भीम भूप दरबारा ❋ समाचार कछु कहेउ भुवारा ॥
कहु जयन्त कैसी भै भाई ❋ कैसे गन्ध्रब पहुँचो आई ॥
अरुण नयन देखो युत क्रोधा ❋ ताकी सरबरि और न योधा ॥
हाथ तमाल मनहुँ यमदण्डा ❋ कालदण्ड सम बाहु प्रचण्डा ॥
अति बिशाल तन बेष कराला ❋ देखिय जनु कालहु के काला ॥
कीचक बन्धु हते बलभारे ❋ सो तेहिं मम देखत संहारे ॥
बड़े बीर मारे बलवाना ❋ कोऊ भागि न पायो जाना ॥
तहँ नृप एक बुद्धि म्वहिं आई ❋ गिरिकन्दरमहँ रह्यो लुकाई ॥
कृष्ण देव मम कीन्ह सहारा ❋ भूप कृपा करि मोहिं उबारा ॥
निकरि न सक्यों तासुकी त्रासा ❋ गिरि कन्दर भे देखि तमासा ॥

दोहा—नीचे ऊपर काठ करि, कीचक दीन्हों डारि ।
आयो बीर कराल तहँ, जहँ सैलन्ध्री नारि ॥

ताके कान मांझ कछु कहेऊ ❋ हौं सशङ्क बैठे तहँ रहेऊ ॥
देखत सो उड़ि गयो अकाशा ❋ डारि दियो द्रुम सरवर पासा ॥
सुनत नरेश चित्त भयमानी ❋ देवीरूप सैलन्ध्री जानी ॥
अरु गन्धर्व भक्ति डरराख्यो ❋ निशिदिन नृपसेवाअभिलाख्यो ॥
पांचव बान्धव कालहि पाई ❋ भये एक थल सब जन आई ॥
कहा द्रौपदी नृपहि सुनाई ❋ चारि बन्धु तुम लाज बिहाई ॥
द्रुपदकुमारि बार बहु भाखी ❋ भीम लाज मेरी हठि राखी ॥
सुनत प्रसन्न भये सब भाई ❋ कोउ सकै नहिं भेदहि पाई ॥
रही राति कछु प्रात तुलाना ❋ गये सकल निजनिज अस्थाना ॥

दोहा—याहिविधि बीतेदिवसकछु, नृपतिविराटनिकेत ।
दुरे रहे पाण्डव सकल, कालक्षेप के हेत ॥

इतिश्रीमहाभारतेविराटपर्व सबलसिंहचौहानभाषाकृते
कीचकबधवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दोहा—बैशम्पायन सों कही, जनमेजय यह बात ।
कहौकथा मम बंशकी, सुनत न श्रवणअघात ॥

कह ऋषि चितदै सुनहु भुवारा ❋ कथा विचित्र अमियरस सारा ॥
दुर्योधन नृप यह सुधि पाई ❋ कीचक केहु मार्‍यउ शतभाई ॥
शकुनि कर्ण ते पूछि नरेशा ❋ कीचक बध बड़ मोहि अँदेशा ॥
सहस नागबल अति बरियारा ❋ कहो कर्ण केहि कीचकमारा ॥
सुनत कर्ण इमि कह्यो बखाना ❋ कहौं सुनहु नृप मैं जस जाना ॥
मो मन उपजत यह संदेहू ❋ भीम कर्‍यो है कारज येहू ॥
पठवहु दूत तहां चलि जाई ❋ सुधिलै खबरि जनावहि आई ॥
भूपति की आज्ञा जब पाई ❋ पठयहु शकुनि दूत समुदाई ॥

चले दूत नहिं लागी बारा ❀ पहुँचे देश बिराट भुवारा ॥
सकल भांति तिन कीन्ह ढिठाई ❀ तहां न सुधि पाण्डव की पाई ॥
भये थकित घूमे हलकारा ❀ आय नृपति कहँ कीन्ह जुहारा ॥
जोरिपाणि तिन बिनय सुनाई ❀ पाण्डवकी कहुँ सुधि नहिंपाई ॥
सकल बिराट पुरी हम देखी ❀ लेत सुद्धि तहँ रहे बिशेखी ॥
केहिं मारे कीचक सौ भाई ❀ सो कछु भेद जानि नहिं जाई ॥
लखे न पाण्डुसुवन तेहि ठावां ❀ सुन्यो श्रवण नहि एकौ नावां ॥
कह्यो दूत नृप सों बच येहू ❀ सुनि नरेश मन भा संदेहू ॥

दोहा—भूपति मन संदेह करि, बोले भीषम द्रौन ।
पुर बिराट कीचक वधे, केहिधौं कारण कौन ॥
कीचक को संहारि है, भीम बिना नहिं और ।
कह्योद्रोणगजसहससम, सुभटन को शिरमौर ॥

कह्यो सुशर्मा नृप सुनि लीजै ❀ अब कछु और बिचार न कीजै ॥
संग चलू कछु देहु सहाई ❀ बेढ़ों नृप बिराट की गाई ॥
और यतन ते वे नहिं ऐहैं ❀ धेनु हरण सुनि तुरतै धैहैं ॥
सुरभिहरण सुनि नहिं सहि रैहैं ❀ लागि गोहारि चले सब ऐहैं ॥
होत युद्ध नहिं रहहि सँभारा ❀ तहँ खुलि जैहै शत्रु तुम्हारा ॥
भूपति अमित सैन्य सँग दीन्हों ❀ बिदा बेगि तेहि अवसर कीन्हों ॥
गमनी संग चमू चतुरङ्गा ❀ उठी धूरि छपिगयो पतङ्गा ॥
शकुनि बोलाय कह्यो इमिराजा ❀ अब सब करहु कटक कोसाजा ॥

दोहा—चली चमू चतुराङ्गिणी, गज तुरंग के यूथ ।
रथी महारथि अतिरथी, सुभट पदातिबरूथ ॥

चली सैन को बरणै पारा ❀ बाजे गोमुख शङ्ख नगारा ॥
झांझ ढोल अरु भेरि बजाई ❀ मारू राग सहित सहनाई ॥
चलत नृपहि अतिहोत अतङ्गा ❀ टेर नकीब भये बहु डङ्का ॥
बिरद बखानि बन्दिजन बोले ❀ हाली धरा धराधर डोले ॥

दल कलिङ्ग भगदत्त महीपा ❋ आये साजि नरेश समीपा ॥
द्विरद दुमत्त दुशासन अत्री ❋ शकुनी कृतबर्मा से क्षत्री ॥
बिकरण करण शल्य बलधामा ❋ कृपाचार्य अरु अश्वत्थामा ॥
सिन्धुराज लक्षन बलवाना ❋ सजिसजि निजदलहने निशाना ॥
बाहुलीक गङ्गाधर राजा ❋ नृप काम्बोज कीन रणसाजा ॥
सौ बान्धव दुर्योधन केरे ❋ औरौं सजे बीर बहुतेरे ॥
भीषम द्रोण हलम्बुस साजे ❋ सोमदत्त भूरिश्रव गाजे ॥
दक्षिण दिशा सुशर्मा घेरा ❋ उत्तर दिशि कुरुनाथ गरेरा ॥

दोहा–बन वीथिन छायें सुभट, लियो देश सब घेरि ।
बाँध्यो ग्वालसमूह तहँ, लीन्हों धेनु खदेरि ॥

कितकग्वाललिय बाँधि सुशर्मा ❋ केतिक भाजि गये वशभर्मा ॥
ते नरेश पहँ जाय पुकारे ❋ धेनु बृन्द हरिगये तुम्हारे ॥
सेनापति पठवहु बलदाई ❋ शत्रु जीति गो लेइ छोड़ाई ॥
गोधन हरा सुशर्मा आई ❋ उठि नरेश चलि लेहु छुड़ाई ॥
जो न नरेश होहु असवारा ❋ तौनहिं गोधनमिलिहि तुम्हारा ॥
और न सकहि सुशर्महिं जीतो ❋ सुनु नरेश मन मान प्रतीती ॥
देखिसचिवदिशि नृपति सुजाना ❋ करि सुधि कीचककी पछिताना ॥

दोहा–कीचककहँ सुमिरै नृपति, यह कहि बारहिंबार ।
वा बिन सुरभी बेढ़ियो, को कहि लखै पुकार ॥
हरुये बोल्यो भूप तब, सेनापाल बुलाय ।
धाइ सुशर्मा वीर जे, सुरभी लेहु छुड़ाय ॥

उत्तर शंख नृपति सत बीरा ❋ और सजे आमत रणधीरा ॥
चले नरेश साजिकै साजा ❋ बाजे बिपुल जुझाऊ बाजा ॥
गजरथ अरु पदादि बहु सङ्गा ❋ बहु कुरङ्गगति चलै तुरङ्गा ॥
करि बहु यत्न सुशर्मा हाँकी ❋ चलि नहिं सकत धेनु सब थाकी ॥
सहदेव खुरा व्याधि उपजाया ❋ ताते धेनु सकत नहिं जावा ॥

तब लगि सुभट गये सब आई ❀ बाजे पटह शंख सहनाई ॥
पणव धेनुमुख भेरि समूहा ❀ बाजे कटक भयो अति हूहा ॥
उभय कटक महँ बाजन बाजे ❀ करि करि नाद वीर सब साजे ॥
द्वउ दिशि दल उमड़े घनघोरा ❀ जहँ तहँ सुभट भिरे बरजोरा ॥
अन्धध्वन्ध रण भयो असूझा ❀ अपन बिरान परत नहिं सूझा ॥
बिविध भाँति तन अस्त्र प्रहारे ❀ टरै न एक एक के टारे ॥
उत्तर कुँवर आनि रण मराडो ❀ बाणन ते रिपु सैन बिहराडो ॥
देखि सुशर्मा क्रोध अपारा ❀ करि संधान सारथी मारा ॥
करि अति नाद सुशर्मा गाजे ❀ चढ़ि तुरङ्ग उत्तर रण भाजे ॥
गयो नगर तन अति भयमानी ❀ लै धनु शंख कीन्ह रण आनी ॥

दोहा—शंख सुशर्मा बीरते, परो आनि जब जोर ।
महाभयंकर युद्ध भो, बिशिख चले चहुँओर ॥
बिजयबृहन्नल घररहो, पाण्डुपुत्र तहँ चारि ।
देखत कौतुक युद्धको, सकै न कोऊ हारि ॥

पञ्चबाण तब शंख प्रहारे ❀ ते शर काटि सुशर्मा डारे ॥
शर बहुत्यागि कीन्ह अति जूझा ❀ मूर्छित कुँवर नयन नहिंसूझा ॥
देखि सारथी रथी अचेता ❀ दल पीछेगा यतन समेता ॥
तब बिराट नृप करि संधाना ❀ एकबार मारे सौ बाना ॥
ते शर बिशिख सुशर्मा काटे ❀ बाण पचीस क्रोध करि छांटे ॥
मूर्छित भया बिराट भुवारा ❀ करि निबन्ध निजरथपर डारा ॥
बर्षन बाण सुशर्मा लागा ❀ भयो अधीर कटक सब भागा ॥
नृपहि बांधि सब जीति सहाई ❀ चल्यो धेनु लै शंख बजाई ॥

दोहा—सहदेव बपुष गुवालके, कङ्कऋषिहिशिरनाय।
टेरि सुशर्मा हाँक दै, भिरे ततक्षण जाय ॥
मत्त करीदल तासुको, अंकुश टेर सुनाय ।
फेरो बलकारि सिंह ज्यों, गहो कोपि धरधाय ॥

भया युद्ध कछु कहत बनै ना ❋ देखत थकित भई सब रैना ॥
मल्लयुद्ध तहँ भयो अपारा ❋ लात घात मुष्टिका प्रहारा ॥
भिरहिं गिरहिं उठिलरहिं सँभारी ❋ अतिबल युगल न मानै हारी ॥
तबहिं सुशर्मा बलकरि हारो ❋ पाण्डुपुत्र गहि धरणि पछारो ॥
मल्लयुद्ध करि दल बिचलायो ❋ छोरि बिराटहि दलमहँ लायो ॥
भीमसेन गज यूथ सँहारे ❋ पकरि तुरङ्ग तुरङ्गन मारे ॥
गहि पदादि के शीश उपारे ❋ और सबै मल्लन को मारे ॥
बारहि बार भीम रण गाजे ❋ सुनि सुनि नाद शत्रु सब भाजे ॥
नकुल कीन्ह तब खड्ग प्रहारा ❋ कटीसेन बहि शोणित धारा ॥

दोहा—बहा सरित तहँ रक्तकी, गयो सुशर्मा भाजि ।
छोरि विराटहि लै चले, पाण्डुपुत्ररण गाजि ॥

आय कङ्क कहँ नायो माथा ❋ देखि सकल दल भयो सनाथा ॥
फिरी धेनु सुख भयो अपारा ❋ गृहकहँ चल्यो बिराट भुवारा ॥
उत्तर दिशि दुर्योधन राई ❋ बेढ़ि लई सुरभी समुदाई ॥
द्रोण दुशासन अरु भगदन्ता ❋ किते जूह लै चले तुरन्ता ॥
धेनु बृन्द यक करण बिलोकी ❋ रथ दौराय लीन्ह तहँ रोकी ॥
मिथुना ग्वाल धेनु लै भाजा ❋ तेहि तहँ खुरा ब्याधि उपराजा ॥
बहु बिधि मारि ग्वालगण थाके ❋ अचलभयो धनुचलत न हांके ॥
मिथुना शाप करण कहँ दीन्हा ❋ फल पैहो तुम आपन कीन्हा ॥
जैसे अचल कीन्ह धनु मोरा ❋ भारत में अटकै रथ तोरा ॥

दोहा—अपर ग्वाल गण आइकै, बहुबिधि करीपुकार।
उत्तर उत्तर की दिशा, बेढ़ो धेनु तुम्हार ॥

सुरभी शत हरिगई तुम्हारी ❋ बैठ सुचित्त सदन महँ झारी ॥
हरी एक दुर्योधन गाई ❋ एक दुशासन लै हँकवाई ॥
करिवर एक करण हरिलीन्हा ❋ कृतवर्मा आगे धरि दीन्हा ॥
नृप भगदत्त गाय बहुतेरी ❋ हरे यूथ चहुँ ओर गरेरी ॥

पीत श्याम सुरभी बहु चोरी ❋ हरिलीन्हीं कपिला अरु धौरी ॥
लक्षन कुँवर हरे यक जूहा ❋ लै कलिङ्ग यक धेनु समूहा ॥
कुँवर पुकार श्रवण सुनु मेरी ❋ हरी द्रोण सुरभी बहुतेरी ॥
लिये जात धन अश्वत्थामा ❋ उत्तर दिशि उत्तर बलधामा ॥

दोहा—ग्वालबिपाल कपाल करि, उत्तर तें बहुभांति।
कही तुम्हारी धेनु हरि, लीन्हें कुरुपतिजाति॥

बाहुलीक गङ्गाधर गाई ❋ हरिकाम्बोज लीन्ह अगुवाई ॥
सोमदत्त भीषम रण गाढ़े ❋ शकुनी शल्य रोंकि मग ठाढ़े ॥
करत कुलाहल गिरिगिरि जाता ❋ दीरघ दीरघ स्वर करिबाता ॥
कहत गोपकरि बिबिध बिलापा ❋ धेनु हरण सुनि तोहिं न ब्यापा ॥
ऐसो धिक जीवन जग तोरा ❋ शालत उर न बचन सुनिमोरा ॥
उत्तर कहत सुनहु सब ग्वाला ❋ सेना सहित न भवन भुवाला ॥
मेरे रथ नहिं सारथि भाई ❋ होत लेत मैं धेनु छुड़ाई ॥
जो मेरो रथ हांकत होई ❋ कौरव जियत न छांड़ौं कोई ॥

दोहा—द्रुपदसुता यह बचन सुनि, अर्जुनते अकुलाय।
कह्यो बृहन्नल कुँवरका, तुम रथहांको जाय ॥

कह्यउ पार्थ तुव त्रिय बौरानी ❋ रथहाँकब गति हम नहिं जानी ॥
कहै कुँवर मोसन नहिं होई ❋ देव निकारि देश ते सोई ॥
दासी भुरै कुँवर उरझावा ❋ चहत जीविका मोरि छुड़ावा ॥
जानौं गाय सकल मैं गीता ❋ बिबिधभांति नाचौं संगीता ॥
और बजावहुँ मैं सब बाजा ❋ करौं प्रसन्न उदर हित राजा ॥
चहत मोरि सबबिधि उपहासी ❋ मृषा कुँवर बोलत यह दासी ॥
यह कहि पार्थ रहे अरगाई ❋ द्रपदसुता रानी पहँ आई ॥
तहाँ बैठि उत्तरा कुमारी ❋ कहेउ सैलन्ध्री उचन उचारी ॥
बचन हमार सुनहु महरानी ❋ धेनु बेढ़ि कुरुपति अभिमानी ॥
पठवहु कुँवर भवन नहिं राजा ❋ धेनु गये लागी कुल लाजा ॥

दोहा—यह पारथ को सारथी, बृहन्नला यहि नाम ।
जो यह हांकै कुँवर रथ, जीतै सब संग्राम ॥
अब पठवहु उत्तरा कुमारी ❀ प्राणन्ते वह अधिक पियारी ॥
जो यह कहहि हिज्जते बानी ❀ सो फुर करहि सत्य सुनु रानी ॥
कन्या सरस जानि मन ताको ❀ विद्या सकल पढ़ाई याको ॥
हाँकब रथ न कहा किन कोई ❀ याको हठ टारैं नहिं सोई ॥
सुनिकै श्रवण सैलन्ध्री बानी ❀ कह्यउ उत्तरी ते यह रानी ॥
संग सैलन्ध्री के तुम जाऊ ❀ बिजय बृहन्नल को समुझाऊ ॥
हठकरि कह्यउ काज ज्यहि होई ❀ उत्तर को रथ हाँकै सोई ॥
सुनत बचन आतुर सो आई ❀ संग सैलन्ध्री लीन्ह लेवाई ॥

दोहा—जाय पार्थ पहँ रुदन करि, गई कण्ठलपटाय ।
मलिनबसन गुड़िया भई, खेलनमोहिंसोहाय॥
सुन्योश्रवणयहि पुरनिकट, आयो हैं कुरुराय ।
तिनकोभूषण बसन गुरु, मोकहँ देउ छिनाय ॥
जबलगि करौ न वचन फुर मोरा ❀ तब लगि कराठ न छाँड़ों तोरा ॥
भूषण वसन कौरवन केरा ❀ बिन आने नहिं होय निबेरा ॥
अर्जुन ते उत्तराकुमारी ❀ बोली बहुरि नयन भरि बारी ॥
भीषम द्रोण करण उरमाला ❀ दुर्योधन को मुकुट बिशाला ॥
देहु गुरू म्वहिं आनि छिनाई ❀ यहि बिधि बारबार रटलाई ॥
कहत द्रौपदी श्रवणन बानी ❀ सभासुद्धि सब तोहिं भुलानी ॥
बीती अवधि डरहु केहि काजा ❀ लरहु निकट आयो कुरुराजा ॥
क्षत्री युद्ध डरहिं जो पारथ ❀ कर्म धर्म बहुताहि अकारथ ॥
का क्षत्रिय द्विज गाइन काजा ❀ उठि न लरै कुल आवै लाजा ॥
तुम शरमात प्रबल त्रिय नाहीं ❀ जियडेरात जिमिपिय पहँ जाहीं ॥

दोहा—चित्तचाउ रत साहसी, महाबाहु बलधाम ।
बृहन्नला को रूपधरि, तुम छांड़ेउ वह नाम ॥

क्योंहठिरह्यउ चुपकि तुम पारथ ❋ करौ युद्ध है उत्तर स्वारथ ॥
कह द्रौपदी श्रवण लगि बाता ❋ भय दृग अरुण फूलिसब गाता ॥
कह्यो उत्तरी बचन रसाला ❋ देहु मँगाय बसन मणिमाला ॥
बार बार यह कहि बिलखाई ❋ तजै न करउ रही लपटाई ॥
समुझाया बिधि पार्थ अनेका ❋ सुनि उत्तरी तजत नहिं टेको ॥
अर्जुन देखि दया उपजाई ❋ दृगजलपोंछि कुँवरि समुझाई ॥
कौरव जीति बसन मणि लेऊँ ❋ पुत्रो तोहिं त्त्णक महँ देऊँ ॥
जो नहिं भूषण बसनहि लावों ❋ आननफिरि न तोहिं दिखरावों ॥
करि प्रबोध उत्तरी पठाई ❋ उत्तर ते बोल्यो हरषाई ॥

दोहा—उत्तरसों तबहीं कही, बिजय बृहन्नल बात ।
साजो कौरव युद्धको, ह्वै प्रसन्न सब गात ॥
पारथ सारथि मैं किया, जानत हौं रथ हाँकि ।
जहाँ होत है सारथी, जीति सकै को ताकि ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्व पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

सुन्यो बचन यह राज कुमारा ❋ हृदय माँझ सुखभया अपारा ॥
टोप सनाह पार्थ के आगे ❋ राखे बचन कहन इमि लागे ॥
कवच पहिरि पारथ परमाना ❋ जाते अङ्ग न भेदै बाना ॥
जिमि कीचक पहिरे बरनारी ❋ तिमि सनाह कृत सुवननगारी ॥
देखि लोग सब हँसे ठठाई ❋ कैसे हिज्ज युद्ध समुहाई ॥
सिन्धु समान कटक कुरुराई ❋ रथ लै भाग्यो युद्ध डराई ॥
सबके बचन हासरस पागे ❋ सुनत द्रौपदी शरसम लागे ॥

दोहा—कहत पार्थते द्रौपदी, बौरावत क्याहिकाज ।
रथसाजौ अब कुँवर को, रण जीतौ कुरुराज ॥
बर्षदिवस की अवधिबादि, गये और दिनबीति ।
कीजै युद्ध निशङ्क ह्वै, रही कौन की भीति ॥

भयो बृहन्नल सारथी, रथ आरुह्यो कुमार ।
साजिकटकलीन्होधनुष, कोपि गह्यो तलवार ॥

गन्धर्बन जे मन्त्र सिखाये ❋ सो पढ़ि पार्थ तुरङ्ग उठाये ॥
ह्वै सारथी बेगि रथ हाँको ❋ औघट बाट न कानन ताको ॥
कौरवदल लखि सिन्धुसमाना ❋ उत्तरके घट रह्यो न प्राना ॥
गाजत गजहिं हिसत हैं घोरा ❋ दुन्दुभि भेरि नाद अतिशोरा ॥
शङ्ख नाद पूरे सब कोई ❋ मारु मारु सब दलमहँ होई ॥
द्वन्द्व घराट ध्वनि अति ठहनाई ❋ मारू राग सहित सहनाई ॥
रङ्ग रङ्ग बैरख फहराई ❋ हरित पीत सित श्याम सोहाई ॥
बाजत सेन सेन पर डङ्का ❋ बरणि बन्दिजन कहत अतङ्का ॥
सारथि सन उत्तर करजोरा ❋ लै चलु भागि भवन रथमोरा ॥
बारबार तेहि बिनय बखानी ❋ एकौ बात न सारथि मानी ॥

दोहा—करतबिनय सोनहिंसुनत, रथत्याग्योअकुलाइ।
भाजत लखि उत्तर कुँवर, गह्यो पार्थ तब धाइ ।

बांधि धरी रथ ऊपर आई ❋ सम्मुख चल्यो सेनपर धाई ॥
तब गुरु द्रोण पार्थ पहिचान्यो ❋ सबही ते यहि भांति बखान्यो ॥
बाँधिरथी रथ ऊपर धारो ❋ ह्वै निशङ्क रणको पगुधारो ॥
अवगाहन सागर संग्रामा ❋ भुजबल पैज करी बलधामा ॥
शूर सजग ह्वै सब धनु बाणा ❋ लेहु शूल अरु शक्ति कृपाणा ॥
पवन गवन सम अर्जुन आवत ❋ वा बिन को जगमें असधावत ॥
दुर्योधन ते द्रोण बखानो ❋ अब सब सजग होहु बलवाना ॥
भूप भलो कछु परत न दीसो ❋ है आवनि यह अर्जुन कीसी ॥
कह भीषम सुनु बचन हमारा ❋ मृग सँग धावत दीख सियारा ॥
छुवत नितम्ब तासु पद धावत ❋ सुनु नरेश यह पारथ आवत ॥
धरो बाँधि रथ राजदुलारा ❋ त्रियस्वरूप यह पाराडु कुमारा ॥

दोहा—मन्द दृष्टि भइ द्रोणकी, भीषम गये बुढ़ाय।
कह्यो शकुनियहकरणसों, हँस्योकरणहहरा॥
सुनि भीषम भा क्रोध अपारा ❋ कह नरेश सुनु बचन हमारा॥
बन बन फिरत बहुत दुख पावा ❋ परम क्रोध करि पारथ आवा॥
चलहि क्रोधकरि तुमहिं बिलोकी ❋ ये शठ एकौ सकहिं न रोकी॥
भीषम कह्यो करण सन बोली ❋ दल की तीनि बनावहु टोली॥
एक सेन लै चलहु भुवालो ❋ एक करै गोधन प्रति पाला॥
पारथ रोंकि करौ संग्रामा ❋ एक सेन ते सब बलधामा॥
यहि बिधि भीषम मन्त्र दृढ़ाई ❋ तीनि अनी करि सेन बनाई॥

दोहा—द्रोणी कृतबर्मा शकुनि, शत बन्धव बीरेश।
कृपाचार्य अरु करण सँग, सो लै चल्यो नरेश॥
नृप भगदत्त शल्य बलदाई ❋ चले संग लै धेनु लवाई॥
भीषम द्रोण आदि रणधीरा ❋ मग रोके ठाढ़े सब बीरा॥
करै शंखध्वनि औ गल गाजैं ❋ मारू पटह भेरि बहु बाजैं॥
गोमुख ढाक ढोल पणवानक ❋ बाजत सब अति होत भयानक॥
द्विरद यूथ देखत अति भारी ❋ भादौं जलद घटा जनु कारी॥
रथके ठाट भूमि सब छाये ❋ परै न भूपर तिल छिटकाये॥
तुरँग पदादि बिलोकि अपारा ❋ भयो सशंक बिराट कुमारा॥

दोहा—उत्तर सों साराथि कही, भय न करहु कछुयङ्क।
सकलनिपातौंअरिचमू, रहियो आप निशङ्क॥
असकहिफेरोतुरँगरथ, सुनिपाण्डव कुलदीप।
पलकनबीतीबिपिनमहँ, लैगे नगर समीप॥
अन्धकूपतरुवर शमी, ता पर धनु अरु बाण।
बेगि लै आवहुमो निकट, गञ्जौं अरिदलप्राण॥

सुनत बचन उत्तर हरषाई ❋ त्यहिद्रुम निकट तुरत चलिजाई ॥
चढ़ेउ पार्थकी आज्ञा मानी ❋ अस्त्रसनाह बिलोक्यो आनी ॥
पार्थ सुनौ मणि श्वेत सनाहा ❋ श्वेत धनुष श्वेतै गुणग्राहा ॥
आनौ बेगि छुवै मति सोई ❋ अस्त्रसनाह नृपतिकर होई ॥
फिरि देख्यो उत्तरा कुमारा ❋ अर्जुन ते यह बचन उचारा ॥
कनक रचितमणि खचितसोहाये ❋ धनुष सनाह देखि युगपाये ॥
आयसु होइ डारि महि दीजै ❋ कह पारथ यह कत मत कीजै ॥
यह सहदेव नकुल धनु गेरा ❋ रहि न सकै मम खैंचि देरा ॥
सो उत्तर छांड्यउ अरगाई ❋ और सनाह बिलोक्यो जाई ॥
कोटि भाँति उत्तर बल करेऊ ❋ जब न उठ्यो तब सो परिहरेऊ ॥
उठो न धनुष कवच हिय हारो ❋ अर्जुन ते इमि बचन उचारो ॥

दोहा–उठ्यो न धनुषसनाहकर, कोटिभाँति बलकीन्ह ।
लोहमयी जनु बज्रसम. केहि निमित्त कै दीन्ह ॥

परी गदा गिरिवर समताई ❋ है केहिको म्वहिं देव बताई ॥
कह अर्जुन उत्तरा कुमारा ❋ याको सुनहु सकल ब्यवहारा ॥
लोहमयी धनु कवच कराला ❋ भीमसेन को गदा बिशाला ॥
लावहु और करिय रण जाई ❋ मग हमार देखत कुरुराई ॥
लाव बेगि धनु कवच हमारा ❋ पल लागत जनु कल्प अपारा ॥
जो गृह जाइ भाजि कुरुराई ❋ फिरि का करब युद्ध महँ जाई ॥
अक्षय तूण जाइ तहँ देख्यो ❋ संभ्रम भयो कुँवर यह लेख्यो ॥
छुवत पाणि उत्तरा कुमारा ❋ अहि ह्वै बिशिख करत फुंकारा ॥
स्वै किरीटि स्वै कवच बिलोका ❋ रविसमतेज धनुष अवलोका ॥
पारथते तब कह्यउ कुमारा ❋ धनु जनु दिनकर तेजपसारा ॥
तब आयुध हम छुवन न पावैं ❋ ब्यालरूप शर काटन धावैं ॥
सुनु सारथि मम बचन सुनाये ❋ मोपर अस्त्र न जायँ उठाये ॥
यह सुनि कै पारथ हरषाई ❋ कवच अस्त्र सब लीन्ह उठाई ॥

दोहा—निर्गुणधनुगुणकरिसाई, सूध कीन्ह बाण ।
काढ़ो, गङ्गा, भूमि ते, धोये सकल कृपाण ॥
पहिरिकवच शिरटोपदै, निजधनु करि टंकोर ।
हांक्योरथ बहुकोपकरि, पहुँचो कटक बहोर ॥
बीर धनुर्द्धर धरिकै, मनमहँ कहूँ न हारि ।
भा दुर्घट सब घटनमहँ, कौरवदलअतिकारि ॥

बैठो आनि ध्वजा हनुमन्ता ❋ जाके बलको नहिं कछु अन्ता ॥
करि अतिक्रोध धनुष शर लीन्हो ❋ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हो ॥
चल्यो पार्थ निज रोष बढ़ाई ❋ जीतन हित दुर्योधन राई ॥
सारथिते उत्तर कर जोरो ❋ कहै सुनहु बिनती कछु मोरी ॥
तुमते कहौं बृहन्नल बांची ❋ मोते कहो बात सब सांची ॥
कौन आप म्वहिं देव बताई ❋ मो मन की संशय मिटिजाई ॥
कह अर्जुन भाषत सति भाऊ ❋ है ऋषि कङ्क युधिष्ठिर राऊ ॥
हौं अर्जुन यह सुनहु कुमारा ❋ भीम जयन्त तुम्हार सुवारा ॥
सेनी सहदेव नामहिं जानो ❋ बाहुक नकुल मैनहै मानो ॥

दोहा—वह है रानी द्रौपदी, जाहि सैलन्ध्री नाम ।
कछु न भय चित कीजिये, जीतौं सब संग्राम ॥
तुम्हरी सुरभी सो हरी, लेत हमारो शोध ।
अब सुन बीते सो अवधि, तब मैं कीन्हेंक्रोध ॥

इति श्रीमहाभारते विराटपर्व कथनंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दोहा—उत्तर फिरि लागो चरण, सुनु स्वामी सतिभाय ।
दशौ नाम अपने कहौ, तौ मो मन पतियाय ॥

कौरव बंश जन्म हम लीन्हा ❋ अर्जुन नाम ब्यासमुनि कीन्हा ॥

बान पन्थ सुर द्विरद उतारा ❋ पार्थ नाम भा जगत हमारा ॥
जीत्यो बात कवच संग्रामा ❋ कीन्ह्यो सुनासीर को कामा ॥
भये प्रसन्न समेत समाजा ❋ बिजयी नाम धरो सुरराजा ॥
पुनि नरेश शिर मुकुट बँधावा ❋ तहाँ किरीटि नाम कहवावा ॥
द्रुपद नरेश सेन जब काटी ❋ एक मिलाय मांस अरु माटी ॥
पुनि बिभत्सरसकरि रण राखा ❋ नाम बिभत्सद्रोण यह भाखा ॥
धनपति जीति दण्ड लै आना ❋ नाम धनञ्जय कृष्ण बखाना ॥
द्वौ कर जोरि करौं संग्रामो ❋ परो सब्यसाची तब नामा ॥
श्वेत तुरँग मैं रथ मचिआऊं ❋ भयो श्वेत बाजी तब नाऊँ ॥

दोहा–रथ साजत मैं युद्धहित, ध्वज बैठत हनुमान ।
नामकपिध्वजजगावदित, याहि ते तू जान ॥

शब्द होत रह हमरो बाना ❋ शब्दभेद जग नोम बखाना ॥
औरहु सुनौ बिराट कुमारा ❋ हम तुम्हार कीन्हो अपकारा ॥
बारबार बिनवों कर जोरी ❋ सो सब चूक बकसिये मोरी ॥
भीमसेन शत कीचक मारे ❋ ते अपराधी हते हमारे ॥
बरबस गह्यो द्रौपदी रानी ❋ मारेउ भीम मानि गिल्यानी ॥
मारेउ मल्ल द्विरद गहिलायो ❋ तेरे गृह हम अतिसुख पायो ॥
तुम्हरे आनि बिपति सब डारी ❋ बर्ष दिवस की अवधि हमारी ॥
द्वादश बर्ष बिपिन ह्वै आये ❋ तब छायामहँ अतिसुख पाये ॥
सुनि यह श्रवण बिराट कुमारा ❋ जोरियुगल कर बचन उचारा ॥
हलकी भारी जो हम कहेऊ ❋ आप समर्थ श्रवण सुख लहेऊ ॥
जो कछु हम ते भा अपराधू ❋ सो सब क्षमा करहु तुम साधू ॥

दोहा–बीर धनञ्जयक्रोधकरि, चल्या सबलरथहांकि ।
अतिबलचले तुरँगतब, रहे शिथिल ह्वै थाकि ॥
पाय तेज गन्धर्व को, अतिबल भये तुरंग ।
कही द्रोण गुण पार्थ सों, कौन करै रण रंग ॥

आय धनुर्द्धर भा रण काजू ❋ सन्मुख करै युद्ध को आजू ॥
बीरबली नहिं धीरज धरिहै ❋ कौन बीर अर्जुन सन लरिहै ॥
दल जैहै चहुँ ओर पराई ❋ युद्ध जुरे नहिं कोउ समुहाई ॥
सुनहु सकल मम बचन सुहावा ❋ याते अधिक शोच उर आवा ॥
प्रलय काल जेहि करे मशाना ❋ कोधौं सहै पार्थ कर बाना ॥
कोटि उपाय करो सब सोई ❋ अर्जुन जीति सकै नहिं कोई ॥
यहि बिधि कहि गुरुद्रोण बुझावा ❋ भयो अपर नृप चरित सुहावा ॥
प्रथम पार्थ युग बाण चलाये ❋ ते गुरु द्रोण निकट चलि आये ॥

दोहा—एक गिरो गुरुचरणतर, एक श्रवण ढिग आइ।
करिप्रणाम पारथ कहो, पर भूमि पर जाइ ॥
तजे पार्थ पुनि बाण युग, गयो पितामहँ पास ।
पराचरणयकश्रवणमहँ, कीन्हों आय प्रकास ॥

प्रथम पितामहँ पार्थ प्रणामा ❋ तुम ते कहो सुनहु बलधामा ॥
पुनि अर्जुन यह कह्यो सँदेशा ❋ तुम सम्मुख रण मोहिअँ देशा ॥
क्षमब नाथ अपराध हमारी ❋ कुरुपति हमैं बैर है भारी ॥
कपट द्यूत करि भूमि छुड़ाये ❋ तेरह बर्ष महादुख पाये ॥
करिहौं आजु भयङ्कर रारी ❋ अब न पितामह लागि हमारी ॥
यह कहि बचन बाणमहि जाई ❋ कह्यउ पितामह सबन सुनाई ॥
कह भीषम अब अर्जुन आवा ❋ करहु सकल मिलि रणकोदावा ॥
सकल सजग ह्वै गहि हथियारा ❋ करहु युद्ध जनि करहु अबारा ॥

दोहा—कहेउ द्रोण गाङ्गेय ते, सुनिये बचन प्रमाण ।
श्रवणलागि मोसे कह्यो, यह अर्जुन को बाण ॥

तुम सम्मुखरण उचित न मोको ❋ ताते बिनय सुनायो तोको ॥
कपटद्यूत करि बिपिन निकारा ❋ तेरह बर्ष सह्यो दुख भारा ॥
अब न गुरू अपराध हमारा ❋ करिहौं कटक सकल संहारा ॥

असकहि बाण परो महिजाई ❀ ह्वै सचेत सब करहु लराई ॥
तेहि अवसर अर्जुन तहँ आई ❀ देखै सकल बीर समुदाई ॥
गर्जत जहँ तहँ धनुष चढ़ाये ❀ तहँ कुरुनाथ देखि नहिं पाये ॥
उत्तर ते यह पार्थ बखाना ❀ सुनु बिराटसुत बचन प्रमाना ॥
अपरनिधन निसरहिं नहिं काजा ❀ चलु रथहाँकि जहाँ कुरुराजा ॥
सुनि बिराट सूत तुरँग उठाये ❀ जेहिदलनृपति तहाँ चलि आये ॥
लीन्हों पार्थ भूप कहँ ताकी ❀ लैगा बेगि कुँवर रथ हांकी ॥
भीषम द्रोण सेन सब धाई ❀ पहुँची निकट भूप के आई ॥
हाहा हूत सेन महँ भयऊ ❀ दल तीनों यकमिल ह्वै गयऊ ॥
कह नरेश सब बीर बोलाई ❀ को रोंकै अर्जुन कहँ जाई ॥

दोहा—जीतन पारथ बीर हित, बोटक लियो कलिङ्ग ।
अचल मेरुसों रणरचो, कियो कोटि रणरङ्ग ॥

नृप कलिङ्ग अर्जुन बल पाई ❀ द्वौदिशि बाणबुन्द भरिलाई ॥
दश शर तब कलिङ्गनृप छाटे ❀ आवत पार्थ बीचहीं काटे ॥
पुनि अर्जुन यकबाण प्रहारा ❀ कुन्तल नृपकलिङ्ग को मारा ॥
पुनि शर हन्यों काल के धोके ❀ काट्यो गजके ध्वजा पताके ॥
गजतजि चढ्यो अपररथ आई ❀ कीन्ह कलिङ्ग युद्ध अधिकाई ॥
तब कलिङ्ग कीन्हो अतिकोपा ❀ शरनमारि पारथ रथ तोपा ॥
अग्नि बाण तब पार्थ पँवारा ❀ सब शर भये निमिषमहँ छारा ॥
पुनि शतबिशिख कलिङ्ग चलाये ❀ ते सब अर्जुन मारि गिराये ॥

दोहा—पार्थ सहसदश बाण ते, हतो कोपि करि बीर ।
मूर्छितगिरोकलिंगरण, धरि न सकतदलधीर ॥

इति श्रीमहाभारतेकलिङ्गयुद्धवर्णननामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दोहा—जबकलिंगमूर्छितभयो,तबबिकरण रणसाजि ।
कोपि शरासन बाणलै, आयो सन्मुखगाजि ।

तब बिकरण करि कोप चलाये ❋ भूमि अकाश बाण ते छाये ॥
घोर युद्ध कीन्हों यहि भांती ❋ ह्वैगै मनहुँ दिवस महँ राती ॥
अतिशय अन्धकार तहँ भयऊ ❋ परै न लखि दिनकर छपिगयऊ॥
बिकरणहनो क्रोध करि जियमों ❋ तीस बाण पारथ के हियमों ॥
पारथ बाण क्रोध करि छराड्यो ❋ पलमहँ शर बिकरणके खराड्यो ॥
औरौ बाण पाण्डुसुत छांटे ❋ हय गय मरे अमित रथ काटे ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर मारा ❋ काटिसेन बहि शोणितधारा ॥
परी लोथ धरणी पर पाटी ❋ बूझि न परै शीश अरु माटी ॥
कहां जंघ कर शिर पद डारे ❋ कहूँ कबन्ध परे महि भारे ॥

दोहा—तब बिकरणचालीस शर, हन्यो कीश बलवन्त।
कोटि बाण पारथ हन्यो, संगर भयो अनन्त॥
तब बिकरण साहससहित, भूमि परो मुरछाय।
देखि करण बलवीर तब, आयो धनुष चढ़ाय॥

धनुष चढ़ाय करण ललकारे ❋ कठिन बाण अर्जुन पर मारे ॥
ते शर सर्बजिष्णु रण खड्यो ❋ करि अति क्रोधसहसशरछराड्यो ॥
ते सब बिशिख करण पुनि काटे ❋ लाघव शर पारथ पर छांटे ॥
आवत देखे बाण अपारा ❋ अर्जुन अग्निबाण तब मारा ॥
करण बाण जारे सब आगी ❋ लागी जरन सेन सब भागी ॥
बरुण बाण तब करण चलायो ❋ क्षण भीतर सब अनल बुतायो ॥
अर्जुन शर बूड़त जब जाना ❋ मारो तुरत पवन को बाना ॥
तासु चलत गा नीर सुखाई ❋ ध्वजा पताका छत्र उड़ाई ॥
अहिशर करण त्याग तब कीन्हा ❋ नागन सकलपवन भखिलीन्हा ॥
तब अर्जुन शिखिबाण चलाये ❋ मोरन सकल सर्प सम खाये ॥
रविसुत अन्धकार शर पाग्यो ❋ देखत सब पक्षीगण भाग्यो ॥
परै देखि नहिं नयन पसारा ❋ ब्याकुल भयो बिराटकुमारा ॥
अर्जुन ते तब बचन उचारा ❋ प्राण जात अब करहु उबारा ॥

तब पारथ रविबाण प्रहारा ❀ तम भा दूरि भयो उजियारा ॥

दोहा–तब रविनन्दन कोप करि, मारे पर्वत बान ।
पारथ रथपर शैलगण, चहुँदिशि ते फहरान ॥

बज्र बाण तब पार्थ प्रहारा ❀ सब गिरि भयो निमिषमहँछारा ॥
तब रविसुवन क्रोध उपजावा ❀ पढ़ि सुमन्त्र यमबाण चलावा ॥
पार्थ कठिन शर आवत जाना ❀ मृत्युबाण कीन्हो संधाना ॥
अस्त्र शस्त्र लड़ि शीतल भयऊ ❀ रविसुत कोपि कठिन शरलयऊ ॥
सो लै अर्जुन के उरमारा ❀ बही प्रवाह रुधिर कै धारा ॥
रविनन्दन बिराटसुत ताका ❀ मारो कठिन बाण दै हांका ॥
अब अर्जुन रण करहु सँभारा ❀ करौं निधन सारथी तुम्हारा ॥
अर्जुन लये बाण कर चोखे ❀ कहो करण भूल्यो जनि धोखे ॥
यम अरु इन्द्र बरुण चलि आवैं ❀ सारथि छाँह छुवन नहिं पावैं ॥
सुनु रविसुत केतिक बल तोरे ❀ सन्मुख युद्ध करहि जो मोरे ॥
यह कहिकै अर्जुनशर छण्डित ❀ कीन्होंविशिखकर्ण को खण्डित ॥
पुनि पार्थकृत विशिख प्रहारा ❀ भञ्ज्यो तुरँग सारथी मारा ॥
शतसहस्त्र शर भालक लीन्हे ❀ रविनन्दन उर भेदन कीन्हे ॥
अगणित बाण हृदय महँ लागे ❀ सहि न सके रविनन्दन भागे ॥

दोहा–रण अर्जुन को नेकहू, सहि न सकोस्वइबान ।
रणमण्डित तजिको भयो, रवि सोंतेजानिधान ॥

गयो पराय कुरुपति के आगे ❀ बिह्वल बचन कर्ण तहँ पागे ॥
सुनु नरेश भा कठिन मशाना ❀ सहि न सक्यो अर्जुन के बाना ॥
जब यह सुन्या कर्ण मुखबाता ❀ क्रोध कृशानु जरै सबगाता ॥
बोल्यो नृपति कुटिलकरि भौंहैं ❀ अरुणबरण भे नयनरिसौंहैं ॥
क्षत्रीकुल बालक रिसगारी ❀ करत युद्ध पग परै पछारी ॥
आयो कर्ण युद्ध ते भागी ❀ तुमहिं बिलोकिमोहिं रिसलागी ॥
तुम अर्जुन कहँ पीठि दिखाई ❀ मैं बड़िलाज बरणि नहिं जाई ॥

भूरि श्रुवा मगहपति आगे ❀ द्रोणहिं बोलि कहन नृप लागे ॥
तुम सब में पाले यहि कामहिं ❀ पारथ जीति सकै संग्रामहिं ॥

दोहा—यह कहिकैकुरुनाथतब, नेकु न मानी शङ्क ।
चल्यो निशानबजाइरण, भयो महाआतङ्क ॥

भयो चलत अशकुन अति भारी ❀ रविके अछत फेकरि सिआरी ॥
बिनु घन नभमण्डल घहराई ❀ रहे गिद्ध दल ऊपर छाई ॥
बोल उलूक भयंकर वानी ❀ बिनु बारिद नभ बरसत पानी ॥
करर्रै काक कङ्क नभ ठाटी ❀ चलहिं जम्बुगण मारग काटी ॥
रासभ श्वान भयंकर बोली ❀ बोलत धरा बार बहु डोली ॥
गिरिगिरि परत शरासन पाणी ❀ परत म्यानतजि निकर कृपाणी ॥
खास दास कर छत्र बिशाला ❀ परो टूटि अरु नृप मणिमाला ॥
दिशा धूँधि धरणी पर छाई ❀ गये नृपति के चमर उड़ाई ॥
अशकुन और भयो यकबाँका ❀ भूपति रथको टूट पताका ॥

दोहा—भै शंका भूपाल तब, कह्योद्रोणसन बोलि ।
अशकुनकारणसकलगुरु, हमाहिंबतावहुखोलि ॥

कह्यो द्रोण गुरु सुनु कुरुराई ❀ कहत शकुन अतिबिकट लराई ॥
ह्वै हैं इहाँ कठिन संग्रामा ❀ होहिं निराश सकल बलधामा ॥
कह्यो बचन गुरु रह्यो चुपाई ❀ बोल्यो करण नृपति सन आई ॥
रण भाजे मो कहँ भै लाजा ❀ अब मैं लरब पार्थसन राजा ॥
यह कहि करण हाँकि रथदीन्हा ❀ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हा ॥
देखि पार्थ लीन्हो शारङ्गा ❀ पुनि रणरच्यो करण के सङ्गा ॥
उभय बोर लागे शर मारन ❀ सोते सहस हजार हजारन ॥
तब रवि सुवन क्रोधअति कीन्हों ❀ बाण पचीस फोंकपर दीन्हों ॥
हाँक मारि रथ ऊपर छराड्यो ❀ अर्जुन ते शर बीचहि खराड्यो ॥
और पाँच शर पार्थ चलाये ❀ करण बली ते काटि गिराये ॥

दोहा—करणधनुर्द्धरक्रोध करि, हन्यो नराच अचूक ।
ते पारथ निजशरन तें, काटिकियोदुइटूक ।

ओर सहस शर त्यागेउ पायल ❋ ताते भयो तरणिसुत घायल ॥
लक्ष बाण सेना पर मारे ❋ हय गज रथ पदाति संहारे ॥
पारथ करेउ युद्ध सरसाई ❋ रण महँ रक्त नदी बहिआई ॥
मत्त मतङ्ग मरे जे भारे ❋ भये सरिस दोउ ओर करारे ॥
चमकत खड्ग मीन सम जाने ❋ चर्म सेवा सरिस अरुझाने ॥
अहिसम रुधिर नदी महँ साँगी ❋ जहँ तहँ परी भूपजनु नाँगी ॥
शिर बिन कवच सहित उतराहीं ❋ जहँ तहँ सुभट ग्राह जनु आहीं ॥
बिन शिर सेन जात पहिचाने ❋ मनहुँ सूस जल में उतराने ॥
रथ के चक्र अमित उतराहीं ❋ जनु आवर्त्त भ्रमत जलमाहीं ॥
परी पत्र पुरइनि सम मानो ❋ बहत ढाल कच्छप सम जानो ॥

दोहा—भैरव भूत पिशाचसम, गावत करिकरि हेत ।
नाचत चौंसठियोगिनी, रुधिरापियतयुतप्रेत ॥

अन्ध धुन्ध रण भयो भयंकर ❋ नाचत हँसत लेत शिरशंकर ॥
कटकटाहिं जम्बुक रण धावहिं ❋ पियहिंरुधिरमल खाहिंअघावहिं ॥
गिद्ध आदि पक्षीगण धाये ❋ रणमहँ भये तृपित मनभाये ॥
उठहिं कबन्ध मुण्ड बिन धावहिं ❋ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं ॥
देखेउ करण भिहावन खेता ❋ लीन्हो धनुष कीन्ह चितचेता ॥
करि रिस शत सहस्र शर मारे ❋ पाण्डुसुवन ते काटि निवारे ॥
अर्जुन कोपि बाण दश त्यागे ❋ काटे तुरँग स्वामि उर लागे ॥
भयो बिरथ तब तरणिकुमारा ❋ भयो आन रथपर असवारा ॥
करि रिस कीन धनुष टंकोरा ❋ अशनिसमान शिलीमुख जोरा ॥
हाँक मारिकै करण चलावा ❋ बीचहि अर्जुन काटि गिरावा ॥
समबल युगल करण अरु पारथ ❋ कीन्हों महाभयानक भारथ ॥
सत सहस्र शर पार्थ निवारे ❋ हय गज कटे सुभट बहुमारे ॥

कीन्हों पार्थ कठिन संग्रामा ❀ कोटिन सुभट गिरे बहुनामा ॥

दोहा–करण धनुर्द्धर के हिये, एक बार सौ बान ।
मारो अर्जुन कोप करि, कीन्होंकठिनमशान ॥

तरणितनय कहँ मूर्च्छा आई ❀ रथ सारथी दीन्ह पहुँचाई ॥
दुश्शासन तब युद्ध सँभारो ❀ देख्यो करण महाबल हारो ॥
लै कर धनुष कोपि बलवाना ❀ पारथ पर छाँड़े बहु बाना ॥
ते शर जिष्णु काटि सब डारे ❀ दश शर दुश्शासन उर मारे ॥
पाँच बाण सारथि के अङ्गा ❀ बीस बाण ते हने तुरङ्गा ॥
चारि बाण काटे रथ चाका ❀ सात बाण ते ध्वजा पताका ॥
पारथ कीन्ह कठिन शरजाला ❀ करि फुंकार चले जनु ब्याला ॥
भये बिरथ दुश्शासन भाजे ❀ शंखध्वनि करि पारथ गाजे ॥
अर्जुन बाण बुन्द झरिलाई ❀ कुरुसेन सब चली पराई ॥

दोहा–भारत अति पारथ कियो, मारी सेन अनन्त ।
बाण शरासन साजिकै, तब आयो भगदन्त ॥

आपन दल जब डोलत ताको ❀ मत्त द्विरद आगे नृप हाँको ॥
दश सहस्र शर एकहि बारा ❀ कीन्हों नृप भगदत्त प्रहारा ॥
ते शर पार्थ काटि महिडारे ❀ लक्षबाण करि क्रोध पँवारे ॥
पारथ बाण काटि भगदत्ता ❀ आगे पेलि चल्यो मयमत्ता ॥
निकट देखि अर्जुन धनुताना ❀ मारो मगधराज उर बाना ॥
चेत न रह्यो शिथिल सब अङ्गा ❀ तब कुन्तल लै फिरेउ मतङ्गा ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाँटे ❀ भारत भूमि बाणते पाटे ॥
रण सन्मुख जेतो दल पायो ❀ मारि पार्थ यमलोक पठायो ॥

दोहा–अति सकटभा कटक महँ, सेना चली पराइ ।
तब पारथ रणभूमि में, गर्जे शङ्ख बजाइ ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दोहा—पार्थबाण नहिं सहिसक्यो, कुरुदलचल्योपराइ ।
देखि द्रोणगुरु क्रोध करि, आये रथ दौराइ ॥

हाँक मारि यह बचन सुनायो ❋ पार्थ सँभारु द्रोण अब आयो ॥
सुनि यह बचन पार्थ चलिआगे ❋ करन प्रणाम गुरूसन लागे ॥
देख्यो द्रोण नमित पद सोई ❋ आशिष दयो मनोरथ होई ॥
अस कहि गुरु कोदण्ड चढ़ायो ❋ होहु सजग कहि बाण चलाया ॥
सुनि अर्जुन कहि लीन्ह पिनाका ❋ शर संधानि दीन पुनि हाँका ॥
सजग अहो कहि बाण चलावा ❋ गुरुप्रेरित शर काटि गिरावा ॥
लघु संधानि द्रोण शर मारे ❋ ते सब पार्थ काटि महिडारे ॥

दोहा—सहस बाण संधानकरि, पार्थ कियो रण रंग ।
रथ सारथि चूरण कियो जूझे चारि तुरङ्ग ॥

तब गुरु चढ्यो अपर रथ जाई ❋ लै धनु बाण बुन्द झरिलाई ॥
द्रोण बिशिखयहि भाँति चलायो ❋ भूमि अकाश बाण ते छायो ॥
ते शर पार्थ निमिष महँ काटे ❋ दिशि अरु बिदिशि बाणते पाटे ॥
कोपि द्रोण शर अनल प्रहारा ❋ किये बाण अर्जुन के छारा ॥
सहस शिखा पारथ चहुँ ओरा ❋ जारनचल्यो अनल करि शोरा ॥
बरुण बाण तब पार्थ चलायो ❋ क्षणभीतर सब अनल बुतायो ॥
कोपि द्रोण ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❋ नारायण शर पारथ मारा ॥
अस्त्रअस्त्र तेभयो निवारण ❋ तबलगिनिशितबिशिखअतिमारण ॥
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❋ बज्र बाण पुनि कीन्ह प्रहारा ॥
तब धनु तानि द्रोण रणलायक ❋ तड़प्यो सेनानी को शायक ॥
ताते इन्द्र बाण क्षय कीन्हो ❋ तब पारथ मृत अस्त्रहि लीन्हों ॥

दो०—मृत्यु अस्त्रलै द्रोणगुरु, कीन्हों तुरत प्रहार ।
सबलसिंह चौहान कह, चल्यो करत फुंकार ॥

संघटकरि अकाश उड़ि गयऊ ❋ लड़त लड़त सो शीतल भयऊ ॥

परे भूमि दोनों शर आई ❀ कह्यो द्रोण अर्जुनहिं सुनाई ॥
सुनहु पार्थ रण करहु सँभारा ❀ अब नहिं होय तुम्हार उबारा ॥
असकहि महाकालशर लीन्हा ❀ पढ़िकै मन्त्र फांकपर दीन्हा ॥
जान्यो पार्थ भयो अब मरणा ❀ सुमिरे कृष्ण देव के चरणा ॥
छूटो जबहिं द्रोण को बाना ❀ मुख पसारि लीन्हों हनुमाना ॥
तब अर्जुन यक बाण प्रहारा ❀ रथ सारथी द्रोण कर मारा ॥
सहस बाण मारे गुरु अंगा ❀ चारि बाण ते बध्यो तुरंगा ॥
बिरथहि भयो द्रोण जब जान्यो ❀ भूरि श्रवा आनि अरुझान्यो ॥
मारे अर्जुन के दश बानो ❀ बीस बाण मारे हनुमाना ॥
द्वै द्वै शर तुरंगन के मारे ❀ शिथिल भयो पग टरत नटारे ॥

दोहा—तबपारथअतिक्रोधकरि, मारो बाण कराल ॥
मूर्च्छि गिरे भूरिश्रवा, सुधि नरहीतोहिकाल ।

सब सारथि स्यन्दन पलटावा ❀ लै नरेश के आगे आवा ॥
द्रोण अपर रथ कै असवारी ❀ सन्मुख पार्थ जुरे धनुधारी ॥
ह्वै सरोष गुरु बहुशर छांड़ेउ ❀ आवत अर्जुन बीचहिं खांड़ेउ ॥
तबहीं पारथ क्रोध अपारा ❀ गुरु उरकठिन बाण यक मारा ॥
जबहिं द्रोण कहँ मूर्च्छा आई ❀ फिरेउ सूत स्यन्दन पलटाई ॥
अर्जुन कोपि धनुष धरि हाथहिं ❀ बधी सेन काटे बहु माथहिं ॥
परी लोथ धरणी पर छाई ❀ रणमहं रुधिर नदो बहिआई ॥
सब योगिन तहँ करत विहारा ❀ ताल बजाइ करत किलकारा ॥
भक्षहि माँस रुधिर पुनि पीवहिं ❀ आशिष देहिं पार्थ चिरजीवहिं ॥
जीत्यो पार्थ द्रोण संग्रामो ❀ सुनि आयो तहँ अश्वत्थामा ॥

दोहा—पवन गमन सम द्रोणसुत, गयोतुरतरथ हाँकि ।
बिशिखचलायोक्रोधकरि, पारथकीदिशिताकि ॥
सो शर काटे निमिषमहँ, कीन्होंपुनिशरजाल ।
द्रोणतनय के उर हन्यो, अर्जुन बाणकराल ॥

लागत बाण भयो तनुपीरा ❀ रुधिर धार गा भीजि शरीरा ॥
धनुष चढ़ाय द्रोणसुत छांड़े ❀ दिशिऔविदिशि बाण सब मांड़े ॥
ते शर अर्जुन काटि निवारे ❀ द्रोणी हृदय बाण दश मारे ॥
भा अतिक्रोध द्रोणसुत जियमें ❀ मारौं शर अर्जुन के हिय में ॥
फूटि कवच निसरेउ शर पारा ❀ बहत प्रवाह रुधिर कै धारा ॥
अर्जुन अंधकार शर मारा ❀ कुरु दलमध्य भयो अँधियारा ॥
ब्याकुल कटक भागि सब गयऊ ❀ प्रभाअस्त्र द्रोणी गुणदयऊ ॥
ताते फैलि रह्यो उजियारा ❀ अर्जुन निशितबिशिखतबमारा ॥

दोहा–तबरणकोप्यो द्रोणसुत,खण्ड्या अर्जुन बान ।
भाषापर्व बिराट यह, सबल सिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते विराटपर्वणिनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दोहा–बैशम्पायन से कही, जनमेजय शिरनाय ।
कीन्हकृतारथमोहिंतुम, अद्भुतचरित सुनाय ॥

कह मुनि सुनु जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र श्रवण मन लाई ॥
गुरु सुत दर्पण बाण चलायो ❀ भूमि अकाश आरसी छायो ॥
देखि अनेक द्रोण सुत पायो ❀ पारथ के उर में भ्रम छायो ॥
परत देखि बहु अश्वत्थामा ❀ काके संग करों संग्रामा ॥
यह कहि पार्थ चलायो बाना ❀ कीन्ह द्रोणसुत कठिन मशाना ॥
लड़त लड़त द्वौदल मिलिगयऊ ❀ द्रोणी कोपि खड्ग कर लयऊ ॥
कीन्ह प्रहार द्रोणसुत डाटा ❀ धनुगुण पारथ को तब काटा ॥
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ निज असि काटि सारथी मारा ॥
पुनि मारे द्रोणी के बाजी ❀ भयबश गयो युद्ध तजि भाजी ॥

दोहा–अर्जुन धनुगुण साजिकै,कीन्ह बिशिख सधान ।
रोक्योतबजयदर्थचालि,साजिशरासन बान ॥

सिन्धुराज दश बिशिख चलाये ❀ ते सब अर्जुन काटि गिराये ॥

पुनि मारेउ पारथ यक तीरा ❀ कवच भेदिगा छेदि शरीरा ॥
सिन्धु नृपति तब मूर्च्छा आयो ❀ स्यन्दन डारि सूत लै जायो ॥
तब करि क्रोध शकुनि चलिआयो ❀ अर्जुन को बहु बाण चलायो ॥
ते शर काट्यो पाण्डुकुमारा ❀ पुनि यक बाण शकुनिउरमारा ॥
बाण लगत तन मोह जनावा ❀ तबहिं सूत रथ फेरि चलावा ॥

दोहा—कोप कियो संग्राम तब, पार्थहन्यो बहु तीर ।
पारथकेएकहुबिशिख,सहिनसकतकोउबीर ॥

शकुनो गिरत शल्य चलि आये ❀ पारथपर बहु बिशिख चलाये ॥
सो शर अर्जुन काटि निवारे ❀ बाण पचीस शल्य उर मारे ॥
भयो बिकल ब्यापी बहुपीरा ❀ गयो भागि उर रह्यो न धीरा ॥
रथ आगे पुनि पार्थ चलावा ❀ जीति युद्धि तब शंख बजावा ॥
बाहुलीक गङ्गाधर आये ❀ नृप काम्बोज युद्ध हित धाये ॥
सोमदत्त करि क्रोध अपारा ❀ लैकर धनुष सेन ललकारा ॥
कीन्ह सकल मिलि युद्ध प्रचारा ❀ चहुँदिशि असि अर्जुन कहँ मारा ॥
शूल सांगि कोऊ शर बरसा ❀ कोउ असि घात हने कोउफरसा ॥
देख्यो पार्थ असे चहुँ ओरा ❀ करि अति क्रोध पार्थ शरजोरा ॥
भये एक ते बिशिख हजारन ❀ कौरवदल लाग्यो संहारन ॥
कोपि पार्थ बहु बाण प्रहारो ❀ सोमदत्त को दल सब मारो ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर मारत ❀ सन्मुख आनि जुरे सब मारत ॥
लै कृपाण कर पार्थ उठो तब ❀ मारि भगायदयो बल करि सब ॥
भजे शूर ते नहिं फिर हेरत ❀ रण में पार्थ दौरिकै घेरत ॥

दोहा—पार्थबाणनहिंसक्योसहि,कुरुदलचल्योपराइ ।
धनु टंकारयो क्रोध करि, सोमदत्त तबआइ ॥

लै सो बिशिख पार्थ पर छांड़े ❀ शक्र सुवन तेहि बीचहिं खांड़े ॥
कह अर्जुन कुरुपति बन काढ़ा ❀ शकुनी करण मन्त्र सुनि गाढ़ा ॥
तुमहुँ कीन्ह नहिं न्याय हमारा ❀ मारन हेतु धनुष कर धारा ॥

अब नहिं बचहिं बचन सुनुसांचा ❀ असकहि पारथ हन्यो नराचा ॥
लाग्यो बिषम बाण उरजाई ❀ सोमदत्त कहँ मूर्च्छा आई ॥
बाहुलीक हाँक्यो रथ आगे ❀ करन युद्ध पारथ सन लागे ॥
लैकर धनुष कीन्ह संधाना ❀ अर्जुन को मार्यो सौ बाना ॥
ते शर पार्थ काटि सब दीन्हा ❀ पार्थ सहसशर त्यागन कीन्हा ॥
बाहुलीक ते शर सब काटे ❀ लक्ष बाण अर्जुन रथ पाटे ॥

दोहा—आवत देखे बाण जब, पारथ गाहिको दण्ड ।
पलमहँखण्डयोसकलशर, कीन्ह्योयुद्धअखण्ड ॥

शत सहस्र शर एकहि बारा ❀ बाहुलीक उर पारथ मारा ॥
रथ अचेत ह्वै गिरत बिलोका ❀ गङ्गाधर पारथ कहँ रोका ॥
बाण शरासन कृत संधाना ❀ अर्जुन पर छांड़े बहु बाना ॥
ते शर खण्डि पार्थ शर त्याग्यो ❀ सोमदत्त सुत उर सो लाग्यो ॥
परेउ मूर्च्छि गङ्गाधर जबहीं ❀ रणकाम्बोज कीन्ह पुनि तबहीं ॥
आवतही अर्जुन बलवाना ❀ हृदय मांझ मारेउ यकबाना ॥
लागत चेत न रह्यो शरीरा ❀ रथ मुरझाइ गिरेउ रणधीरा ॥
द्विरद द्विमत क्रोध करि धाये ❀ लक्षन कुँवर हलम्बुष आये ॥
संग चमू चतुरङ्ग घनेरी ❀ लीन्हों पाण्डुसुवन कहँ घेरी ॥

दोहा—शङ्क न मानत पार्थ भट, यद्यपि ग्रसत अनेक ।
डरत न गजसेना निरखि, सिंहबली जिमिएक ॥

घेरि पार्थ सब करहिं लड़ाई ❀ सेन किधौं बर्षा ऋतु आई ॥
घोर घने गज दीरघ धाये ❀ पावस जलदघटा जनु छाये ॥
श्वेत बरण गजदन्त विभांती ❀ सो जनु उड़त गगन बकपांती ॥
होत चमर जहँ तहँ दल माहीं ❀ राज हंस जनु गगन उड़ाहीं ॥
घन गर्जत बाजत जे डंका ❀ असि प्रहार जनु बिज्जुदमंका ॥
धनुजनु सुरपति धनुष बिशाला ❀ बुंद मनहुँ बरषत शरजाला ॥
अर्जुन मनहुँ बीररस पागे ❀ शर समूह पुनि मारन लागे ॥

दोहा--प्रलयकाल के पवन सम, पार्थ बाण हहराइ।
आइ फँसे कुरुदल भजे, नीरद से भहराइ॥

द्विरद द्विमत्त कीन्ह अतिकोपा ❋ शरन मारि पारथ रथ तोपा॥
पारथ कीन्ह तुरत संधाना ❋ अरि शरखंडि हने बहुबाना॥
पंच बिशिख ते द्विरद प्रहारो ❋ दुइशर लै द्विमत्त उर मारो॥
परे मूर्च्छि रण दूनौं भाई ❋ लक्षन कुँवर जुरे तब आई॥
अर्जुन उर मारे दश बाना ❋ सत्तरि बाण हने हनुमाना॥
रुधिर धार भीज्यो सब अंगा ❋ पारथ कोपि लीन्ह शारंगा॥
यहिबिधि कीन्हों बिशिख प्रहारा ❋ रथ सारथी कुँवरको मारा॥
प्रेरेउ बहुरि बाण बहु साजी ❋ कीन्ह निधन कुरुपति सुतबाजी॥
भये अरूढ़ कुँवर रथ आना ❋ कीन्हों बहुरि बिशिख संधानो॥
तब पारथ करि क्रोध अपारा ❋ अशनिसमान बाण उरमारा॥

दोहा—मूर्च्छिपरा रणभूमि महँ, जब कुरुनाथ कुमार।
साजिहलम्बुष धनुष शर, कीन्हों युद्ध अपार॥

गहि कर धनुष हलम्बुष धाये ❋ पारथ रथ सन्मुख चलि आये॥
सात कोटि दानवगण साथहि ❋ धाये सकल धनुष धरि हाथहि॥
धरि बाँधहु दानवपति टेरो ❋ धरु धरु मारु मारु कहि घेरो॥
कहुँ कीन्हों शर शक्ति प्रहारा ❋ मुद्गर गदा शूल केहु मारा॥
फरस कृपाण चले गहि मारन ❋ कोउ खंजर कोउ परिघ कटारन॥
कोउ कर सुभट भुशुण्डी लीन्हे ❋ महा मारु पारथ पर कीन्हे॥
भिन्दिपाल कोउ वृक्ष उपारी ❋ केहुँ गिरिशिला पार्थपर डारी॥

दोहा—सात कोटि दल दैत्य को, करिकरिक्रोधअपार।
सबमिलिकीन्होंपार्थपर, निजनिजअस्त्रप्रहार॥
कियेहस्तलाघवआतिहि, सबको बाणकृपाण।
रोंक्योपारथअसुरबहु, मारिकियो बिनप्राण॥

मारि पार्थ घाल्यो दल घानी ❋ असुर सेन महराइ परानी ॥
दनुजराज तब करि संधाना ❋ पारथ पर प्रेरेउ शत बाना ॥
ते शर काटि पार्थ रण कोपा ❋ बाणन मारि दैत्य रथ तोपा ॥
ते शर दैत्यराज सब काटे ❋ बाणन मारि पार्थ रथ पाटे ॥
अर्जुन अग्निबाण फटकारा ❋ सब शर कटे निमिष महँ छारा ॥
स्यन्दन सूत तुरग जरिगयऊ ❋ अन्तर्द्धान असुरपति भयऊ ॥
प्रकट गयो स्यन्दन असवारा ❋ सन्मुख चला करत ललकारा ॥
बधौं पार्थ तोहिं एकै बाना ❋ काल तुम्हार आय नियराना ॥

दोहा—यह सुनि पारथ तब कह्यो, दनुजराज सों बात ।
किये बड़ाई निजबदन, नाहिंकछुबलसरसात ॥

हम तुम करिय आजु संग्रामा ❋ जीतै युद्ध होय बलधामा ॥
असकहि पार्थ लीन्ह शारङ्गा ❋ दनुजराज के बधे तुरङ्गा ॥
अमितबाण करि क्रोध पँवारो ❋ स्यन्दन भञ्जि सारथी मारो ॥
बहुरि असुर स्यन्दन चढ़िआयो ❋ पारथ कहँ बहु बाण चलायो ॥
पाण्डुपुत्र सब शायक खण्ड्यो ❋ लक्ष बाण दानवपति मण्ड्यो ॥
तेऊ बिशिख काटि महि डारे ❋ बहुरि धनञ्जय बाण पँवारे ॥
आवत देखि पार्थ को बाना ❋ दनुजराज कीन्हों संधाना ॥
आवत शर अर्जुन के काटे ❋ खण्ड खण्ड करि बीचहि पाटे ॥
देखि पार्थ करि क्रोध अपारा ❋ तुरग सूत दानव को मारा ॥
यहि बिधि पार्थ बीसरथ भञ्जेउ ❋ अरु अनेक दलबादल गञ्जेउ ॥
सके न जीति हारि हिय मानी ❋ तबहिं हलम्बुष माया ठानी ॥

दोहा—मारु मारुकहि दनुजपति, गयो अकाशउड़ाय ।
बरषनलाग्योगिरिशिखर, अन्धकारउपजाय ॥
सिंहनाद करि गगन महँ, गरजत बारहिंबार ।
बिटपचलायोक्रोधकरि, बिबिधभाँतिहथियार ॥

इति महाभारते विराटपर्बणिहलम्बुष युद्ध वर्णनंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दोहा—दैत्य युद्धते बिकलभे, तब उत्तरा कुमार ।
पारथ राखहु प्राण अब, याहिबिधिकरतपुकार ॥

दीन बचन सुनि पाराडु कुमारा ❋ पढ़ि रविमन्त्र बाण तब मारा ॥
सहसकिरणिशर कीन्ह प्रकाशा ❋ भयो तुरत माया निशि नाशा ॥
पुनि अर्जुन कीन्हों संधाना ❋ मारे दैत्यराज उर बाना ॥
परो धरणिखसि मूर्च्छित भयऊ ❋ स्यन्दन घालि सूत लै गयऊ ॥
देखि युद्ध कृतबर्मा धाये ❋ शंखध्वनि करि हांक सुनाये ॥
मैं आयों पारथ रहु ठाढ़ो ❋ सेना बधि तेरो मन बाढ़ो ॥
असकहि कृतबर्मा रण कोपी ❋ करिशरजाल दीन्ह रथ तोपी ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाये ❋ शर पञ्जर करि पार्थ दबाये ॥
अर्जुन अनलबाण तब मारे ❋ बिशिख असंख्यजारि सबडारे ॥
कृतबर्मा करि क्रोध अपारा ❋ कठिन बाण अर्जुन उर मारा ॥

दोहा—लग्यो कठिन शर पार्थउर, क्षतयुत भयो शरीर ।
लीन्ह शरासन क्रोधकरि, पाण्डुपुत्र रणधीर ॥

करि अतिक्रोधशिलीमुखछांड्यो ❋ नृप को धनुष शक्रसुत काट्यो ॥
कटे धनुष कृत शूल प्रहारा ❋ बीचहि पार्थ काटि महिडारा ॥
करि रिसछाँड़यो शक्ति प्रचण्डा ❋ शरन मारि अर्जुन द्वै खण्डा ॥
पुनि पारथ करि क्रोध कराला ❋ कृतउर हन्यो बिशिखतेहिकाला ॥
बाण लगत तन मोह जनायो ❋ तब कुन्तल गज फेरि चलायो ॥
कृपाचार्य कीन्हों संधाना ❋ अर्जुन पर छाँड़े बहु बाना ॥
आवत पार्थ काटि महि डारे ❋ सहस बाण करि क्रोध पँवारे ॥
ते नराच कृत बीचहि खाँड़े ❋ लक्ष बाण पारथ पर छाँड़े ॥
कठिनबिशिखअर्जुन गुण दीन्हो ❋ आवत बाण सकल क्षयकीन्हो ॥

दोहा—पुनि किरीटिफिरि क्रोध करि, मारे बाणअनन्त ।
रथ तुरंग पैदल गिरे, मतवारे मैमन्त ॥

अर्जुन बहु कुरुकटक निपातो ❀ कृप तब भयो क्रोध ते तातो ॥
अर्जुन उरमारे दश बानहिं ❀ कृपके उर मारे हनुमानहिं ॥
लैकर धनुष पार्थ रिसिआना ❀ कृप के उर मारे दशबाना ॥
दश शर हन्यो सारथी अङ्गा ❀ बीस बाण ते हन्यो तुरङ्गा ॥
चारि बाण काटे रथ चाका ❀ पाँच बाण ते ध्वजा पताका ॥
भयो बिरथ कृप चढ़ि रथआना ❀ पुनि अर्जुन तेहिं कीन्ह मशाना ॥
कृपाचार्य बहु बिशिख पँवारे ❀ अर्जुन सकल काटि महिडारे ॥
लक्ष बाण तब पार्थ चलाये ❀ आवतही कृप काटि गिराये ॥
कृपाचार्य तब धनु कर लीन्हों ❀ महामार पारथ पर कीन्हों ॥
तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❀ बज्र बाण कृप के उर मारा ॥

दोहा–जब कृप रण मूर्च्छितभयो, गयो कटक महराइ ।
तब उत्तर कुरुनाथ ढिग, पहुँचो रथ दौराइ ॥

पार्थहि देखि नृपति ढिग आयो ❀ तब भीषम कोदण्ड चढ़ायो ॥
तब अर्जुन भीषम ढिग हेरा ❀ कीन्हों चितहि शोच बहुतेरा ॥
उत्तर सुनहु पितामह आये ❀ परशुराम जिन युद्ध हराये ॥
अस कहि कीन्हों दण्ड प्रणामा ❀ आशिष दयो होइ मनकामा ॥
पुनि अर्जुन कुरुपतिदिशि ताका ❀ उतर कुमार बेगि रथ हाँका ॥
नृप दिशि जात पार्थ अवलोका ❀ शर संधानि गङ्गसुत रोका ॥
जात कहां कहि बाण चलावा ❀ सो शर अर्जुन काटि गिरावा ॥
पारथ दीन बाण गुण चोखा ❀ भीषमपर छांड्यो करि रोखा ॥

दोहा–आवत देख्यो युद्ध महँ, जब अर्जुन को बान ।
परमक्रोधकरि गंगसुत, कीन्हों बिशिखसँधान ॥

हांक मारि शर कीन्ह प्रहारा ❀ आवत बाण काटि महि डारा ॥
पुनि भीषम निज तेज संभारो ❀ पारथ कहँ बहु बाण सिधारो ॥
ते शर कीन्ह पार्थ शतखण्डा ❀ हन्योक्रोधकरि बिशिख प्रचण्डा ॥
लख्यो गङ्गसुत आवत बाना ❀ शर संधानि शरासन ताना ॥

शंतनुसुत काढ्यो करि रोखा ❋ तज्यो बाण पारथ पर चोखो ॥
ते शर अर्जुन काटि निवारे ❋ भीषम ते यह बचन उचारे ॥
धनुष सँभारि पितामह लीजै ❋ सावधान मोसन रण कीजै ॥
यह कहि अर्जुन बाण चलायो ❋ कौरवदल बहु मारि गिरायो ॥
द्विरद लच्च मारे मतवारे ❋ अश्वपदादि असंख्य सँहारे ॥
दश सहस्र स्यन्दन बध कीन्हा ❋ रुण्ड मुण्ड कछु जात न चीन्हो॥
शोणित सरित बहो बिकरारा ❋ काक कङ्क कृत माँस अहारा ॥
पियहिं रुधिर जम्बुक पल खाहीं ❋ कटकटाहिं फेकरैं हुआहीं ॥
गिद्ध खाहिं पल उड़हिं अकाशा ❋ शंकर देखहिं युद्ध तमाशा ॥
जहँ तहँ बहु कबन्ध उठि धाये ❋ मारु मारु कहि शब्द सुनाये ॥

दोहा—भयो भयंकर खेत अति, अर्जुन कीन्ह मशान ।
नाचत चौंसाठि योगिनी, करि करि शोणित पान ॥

भीषम देखि क्रोध जियआना ❋ कीन्हों कठिन बाण संधाना ॥
होय सक्रोध नराच प्रहारो ❋ रथ कहँ तीनि पैग पै टारो ॥
पुनि भीषम कीन्हों सन्धाना ❋ पारथ के मारे सौ बाना ॥
लच्च बाण हनुमानहिं मारे ❋ अष्ट बिशिख ते तुरँग प्रहारे ॥
तब भीषम यह मन्त्र बिचारा ❋ करौं निपात बिराट कुमारा ॥
मृत्यु बाण कीन्हों संधाना ❋ छूट्यो बिशिख पार्थ तब जाना ॥
ह्वै सरोष शिवशायक लीन्हों ❋ ताते मृत्यु अस्त्र च्चय कीन्हों ॥

दोहा—हन्यो शिलीमुख तानि धनु, ह्वै सरोष पारत्थ ।
सहस पैग पीछे टरो, शन्तनुसुतको रत्थ ॥

पुनि रथ हांकि गङ्गसुत आयो ❋ पारथपर बहु बिशिख चलायो ॥
तब पारथ कीन्हों रिस भारी ❋ ध्वजा खण्डि भीषम की डारी ॥
कोटि बाण सेना पर मारे ❋ हय गज रथ पदाति संहारे ॥
मारि बिछाय दियो दल ऐसो ❋ प्रलय पवन कदलीबन जैसो ॥
क्रोध सहित पारथ शर छूटे ❋ शीश सेन केतिक के टूटे ॥

कटे जानु जंघा यक बाहौ ❋ चले भाजि रणते नहिं चाहौ ॥
करि अति क्रोध धनुषशर सांध्यो ❋ नागफांस केतिक भट बांध्यो ॥
पारथ बाण बृष्टि जब ठानी ❋ भयो बिकल कुरुसेन परानी ॥

दोहा—तब भीषम अति क्रोध करि, मारे तीक्षण बान ।
शत लागे पारथ हिये, शत सहस्र हनुमान ॥

तब अर्जुन करि क्रोध अपारा ❋ तुरग सूत भीषम को मारा ॥
भयो बिरथ गङ्गासुत जबहीं ❋ पूरो शंख पार्थ रण तबहीं ॥
भीषम आय चढ़ो रथ आना ❋ अर्जुन पर पुनि शर संधाना ॥
दुर्योधन सब बांधव आये ❋ चहुँ दिशि ओर पार्थ के धाये ॥
मूर्च्छा बिगत द्रोण गुरु जागे ❋ तानि शरासन शायक त्यागे ॥
करण आदि जागे सब बीरा ❋ लै लै पाणि शरासन तीरा ॥
चहुँ दिशि गांसि पार्थ कहँ लीन्हा ❋ बाणवृष्टि क्रोधित ह्वै कीन्हा ॥
मुद्गर गदा शूल कोउ मारेउ ❋ सांग सेलि कोउ खड्ग प्रहारेउ ॥
लग्यो चक्र फरसा कोउ मारा ❋ केहु मारेउ कोतह हथियारा ॥
कोटिन सुभट भुशुण्डी लीन्हें ❋ महामारु पारथ पहँ कीन्हें ॥
तदपि पार्थ मन नेकु न मुरई ❋ शर सन्धानि प्रबल रण करई ॥

दोहा—जबजान्योरथग्रसितभो, कान्होबोशिखसन्धान ।
पारथछांड़्योक्रोधकरि, रण महँ मोहनबान ॥

पारथ मोहन बाण चलावा ❋ जो शर कृष्णदेव सिखरावा ॥
मोहे सब कौरव बल बीरा ❋ परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा ॥
भयो गङ्ग को आशिष सांचा ❋ नहिं मोहेउ भीषम रणबांचा ॥
उत्तर पठ्यो पार्थ प्रचारी ❋ पट भूषण सब लेहु उतारी ॥
चल्यो पार्थ की आज्ञा मानी ❋ पहुँचो निकट भूप के आनी ॥
कुरुपति और बीर बहुतेरे ❋ भूषण बसन मुकुट सब केरे ॥
लेत कुँवर एकहु नहिं जागे ❋ रथ लै धरे पार्थ के आगे ॥
दुर्योधन की मूर्च्छा जागी ❋ निजदिशि देखिलाज अतिलागी ॥

पार्थ बिजय लखि रिस उपजायो ❀ लैकर धनुष युद्ध हित आयो ॥
जाग्यो सकल सुभट समुदाई ❀ चले युद्ध हित धनुष चढ़ाई ॥
भीषम आइ बरजि दल राख्यो ❀ अरु यह बचन भूप ते भाख्यो ॥
लरे एक ह्वै सब मिलि धायो ❀ अर्जुनते रण जय नहिं पायो ॥

दोहा—चुप ह्वैरहौ कि गृह चलौ, पारथअति बलधाम।
लज्जा ह्वै है भूप सुनु, ताजि भागे संग्राम ॥

विकल भयो नृप अति दुखपावा ❀ क्रोध बिबश मुख बचन नआवा ॥
दीरघ श्वास ब्याल जिमि लेई ❀ लगे बज्रवत उतर न देई ॥
भीषम ते बोल्यो बिलखाई ❀ गई पितामह बिगरि लराई ॥
कह भीषम अबलगि नहिं लाजा ❀ भाज्यो कटक भूप नहिं भाजा ॥
ताते नृप बरजत मैं तोहीं ❀ कारण समुझिपरो सब मोहीं ॥
अर्जुन पर दयालु भगवाना ❀ तुमते सहि न जाइ नृप बाना ॥
रण भागे तुव जक्त हँसाई ❀ ताते भवन चलो कुरुराई ॥
जीते पारथ सकल समाजा ❀ तबलगि बिजय न भागे राजा ॥
भाजे सकल सेन किमि भारी ❀ बिनु नरेश भागे नहिं हारी ॥
भीषम बचन सुनत कुरुराई ❀ फिरे भवन सँग भट समुदाई ॥

दोहा—भीषम आयसु मानिकै, दल लै चल्यो अवास ।
धावन धायगयो तबहिं, नृप बिराट के पास ॥
जीति उत्तरै आरिचमू, कौरव गयो पराइ ।
सुत सपूत कीन्हों बिजय, भाग तिहारे राइ ॥

भूपति खेलत पंसासारी ❀ संग कङ्कऋषि लै सुखकारी ॥
सब जन सुतकी कीरति गावैं ❀ हर्ष नृपति आनन्द बढ़ावैं ॥
बार बार नृप निज मुख बरणी ❀ उत्तर कीन्हि अमानुष करणी ॥
रथ चढ़ि एक न सङ्ग समाजा ❀ सेन सहित जीत्यो कुरुराजा ॥
भीषम द्रोण करण कृप हारे ❀ और कहाँ जग जीव बिचारे ॥

उत्तर सम जग कोउ न जुझारा ❀ भयो कबहुँ नहि होनेहारा ॥
बार बार नृप कीन्ह बड़ाई ❀ कह्यो कङ्कऋषि तब मुसुक्याई ॥

दोहा—बिजयबृहन्नल जेहि कटक, सो कतजीतोजाइ ।
जुरे युद्ध संग्राम थल, कालहु देइ भगाइ ॥

इतनी सुनत भूप उर जरेऊ ❀ राते दृगकरि बहुरिस भरेऊ ॥
ततक्षणही नरनाह बिराटा ❀ हन्यो कङ्कऋषि पंस ललाटा ॥
छूटे रुधिर द्रौपदी धाई ❀ अञ्जलि में लैलीन्हों आई ॥
निरखि भूप मन चिन्तामानी ❀ कह्यो सैलंध्री भेद बखानी ॥
बिन जाने चित होत अंदेशा ❀ कह्यो सैलंध्री सुनहु नरेशा ॥
भूतल रुधिर परै जो येहू ❀ द्वादश वर्ष न बरसैं मेहू ॥
यह कहिकै भूपति समुझायो ❀ भीमसेन के उर दुख आयो ॥
फरकत अधर नयन भे राता ❀ चाहत भीम कियो उतपाता ॥

दोहा—महाक्रोधलखि भीम उर, धर्मपुत्र दै सैन ।
बरजो केहरि क्षुधित ह्वै, युक्त कहूँ यह हैन ॥

उत्तर कुँवर भवन चलिआयो ❀ भूपति सों यह बचन सुनायो ॥
आजु बृहन्नल सब दल जीतो ❀ कौरव गयो युद्ध ते रीतो ॥
मारि शूर सब दीन्ह भगाई ❀ प्रबल पवन जिमि मेघ उड़ाई ॥
भयो मौन नृप धाम सिधावा ❀ भीतर उत्तर बोलि पठावा ॥
युद्ध कथा सिगरी कहि दीनी ❀ सारथि की शरजाल प्रबीनी ॥
है अर्जुन जिन कौरव मारे ❀ दिवस इते यहि ठौर निवारे ॥
यहि प्रकार सुत कहि समुझाये ❀ सुनि बिराट तब अति सुखपाये ॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र श्रवण सुख दाई ॥

दोहा—धर्मपुत्र नरनाह सों, अर्जुन बोल्यो बैन ।
जाने हम सब कौरवन, अबकछु चिन्ता हैन ॥

तेरह बरष दिवस दश, बीतिगये यहि भाव ।
अब बैठौ शिरछत्र धारि, गुप्त करत कत नाव ॥
दीन्ह त्रास कुरुनाथ निकारा ❀ बसि बनबास सहे दुखभारा ॥
छूटे अशन बसन घर नासा ❀ अन्नहीन कीन्हो उपवासो ॥
भूख प्यास ते भयो बियोगी ❀ उदासीन जैसे रह योगी ॥
बल बिहीन तुमको नृप जानी ❀ अन्धसुवन कछु कानिन मानी ॥
आयसु होइ जीति अपराधी ❀ भुजबल जीतिलेउँ महि आधी ॥
करि सन्धान बाण शर धारा ❀ बोरौं कुरुधसहित परिवारा ॥
देहु निदेश धनुष संधाना ❀ भूप मरे कौरव सब जानौं ॥
यहि बिधि कहत परस्पर बाता ❀ बीति रैनि गै भयो प्रभाता ॥
दोहा—प्रात होत शिर छत्र धारि, धर्मपुत्र सुख पाय ।
दान दियो बहुयाचकन, बिप्र समूह बोलाय ॥
बान्धव चारिउ जोरि कर, ठाढे भये सुजान ।
करनहार सब राज के, करत भूप सन्मान ॥
नाहिं बाहन पदत्राण नाहिं, उत्तरसहिता बिराट ॥
नृपति युधिष्ठिर चरण उठि, राख्यो आनि ललाट ॥
भई ढिठाई होइ जो, सब क्षमियो अपराध ।
चूक न मानत दास की, भूप बड़े जे साध ॥
बिन जाने करवाई सेवा ❀ क्षमहु चूक बड़ि भइ नरदेवा ॥
आछी पूरी चित मत धरियो ❀ भूप अनुग्रह हम पर करियो ॥
मम गृह रही द्रौपदी रानी ❀ दासो भाव आजुलग जानी ॥
बहु प्रकार ते टहल कराई ❀ सो सब क्षमा करहु तुम राई ॥
अस कहि परो चरण कर जोरी ❀ कीन्ह बिनय बहु भांति निहोरी ॥
मन बच कर्म दास तुव स्वामी ❀ कीजै कृपा जानि अनुगामी ॥

कह्यो भूप सन बारहिं बारा ❀ सबिनय बचन बिराट भुआरा ॥
सुनत युधिष्ठिर आनँद पाये ❀ करि सनमान बिराट बुझाये ॥

दोहा—बिपति हमारी सब हरी, राख्यो पुत्र समान ।
तोसों तोहिं न दूसरो, महि मण्डल नृपआन ॥

तुव पटतरि को दीजे आना ❀ उऋण होउँ नहि अपने जाना ॥
तुम सबको दीनी सब भलिहै ❀ तुव कीरति जगमें नृप चलिहै ॥
नित नित नेति बढै अतिभारी ❀ भयो भूप तुव भुजा हमारी ॥
जाति समर सुरभो जे आनी ❀ ज्यतनी त्यतनी जोकी जानी ॥
ते सब सबको ताको दीन्हीं ❀ सबकी बिदा महीपति कीन्हीं ॥
पहुँच्यो जाइ नगर कुरुराजा ❀ सन्ध्या समय समेत समाजा ॥
बैठ्यो भवन मानि गिल्यानी ❀ भये स्वप्न ब्रत अन्न न पानी॥
कुश बिछाय कृत शयन भुआला ❀ हरि दानव लै गयो पताला ॥
दानवराज बहुत समुझावा ❀ तुम लगि भूप हमारो दावा ॥
जो तुम प्राण त्याग कारि दीन्हा ❀ जग मिटिगयो दानवी चीन्हा ॥
तुव भटतन करि सकल प्रवेशा ❀ करब युद्ध जनि करब अँदेशा ॥

दोहा—करहु युद्ध कदराइ तजि, छांड़हु सब सन्देह ।
प्रविशहिं सबको देह में, दैत्य आइ करि नेह ॥

यहि प्रकारे कुरुपति समुझाये ❀ दैत्य सङ्ग मृत लोक पठाये ॥
जेहि थल शयन कियो तो राई ❀ कुश साथरी गयो पौढ़ाई ॥
गयो दनुज पुनि असुर समाजा ❀ प्रात होत जाग्यों कुरुराजा ॥
द्रोण करण तहां चलि आये ❀ कहि निजभेद भूप समुझाये॥
नरकासुर द्रोणी के अङ्गा ❀ भा प्रवेश नृप सुनहु प्रसङ्गा ॥
लोह करण तन करण समानो ❀ यहिप्रकार सब दानव जानो ॥
तेहि अवसर आये सब योधा ❀ दनुजनाम कहि नृपति प्रबोधा ॥
यहि बिधि नृपति कह्यो बलधामा ❀ मारि पार्थ जीतब संग्रामा ॥
कृतदानव तन सकल प्रवेशा ❀ करहु युद्ध नृप तजहु अँदेशा ॥

सुनि नरेश अतिशय सुख पाये ❋ शकुनी बोलि मन्त्र ठहराये ॥
जाय दूत जहँ धर्म नरेशा ❋ उनते यहि विधि कह्यो संदेशा ॥
अवधिसाधि तुम कीन्ह प्रकासा ❋ द्वादश बर्ष करहु बनबासा ॥
यहि बिधि भूपति दूत पठावा ❋ नृपति युधिष्ठिर पै चलि आवा ॥
सहित द्रौपदी पांचौ भाई ❋ बैठ देखि यह बात सुनाई ॥

दोहा—प्रकटे भीतर अवधि में, फेरि करहु बनवास ।
मिति सो पूरण कीजिये, तबतुमकरहुअवास ॥
कहि सबबिधिमलमासकी, समुझायो सो दूत ।
समुझि ताप बैठो तहाँ, जिमिसुरपुरसुरदूत ॥

इति श्रीमहाभारतेविराटपर्ववर्णनोनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

दोहा—उत्तर सों कीन्हों मतो, नृप बिराट तेहि बार ।
दुहिता दीजै अर्जुनहिं, करि बिवाह शुभचार ॥

अर्जुन ताहि नृत्य सिखरायो ❋ निशिबासर गुण गान बतायो ॥
सो दुहिता ताको अब दीजै ❋ अब कछु और बिचार न कीजै ॥
यह कहि भूपति दूत पठायो ❋ अर्जुन ते यह बात सुनायो ॥
तोहिं सुता नृप अपनी दीन्ही ❋ हेतु बिवाह करण चित लीन्ही ॥
सुनत पार्थ यह बचन सुनावा ❋ मैं दुहिता सम जानि पढ़ावा ॥
बात कहत तोहि लाज न आई ❋ मिथ्या बचन कह्यो इत आई ॥
मो सुतको दुहिता यह दीजै ❋ आनंद सों यह कारज कीजै ॥
यह कहि पार्थ दूत पलटाई ❋ तेहि बिराट सों कह्यो बुझाई ॥
सो सुनिकै भूपति सुखपायो ❋ बूझि मुहूरत मंगल गायो ॥
गावत आनंद सों नर नारी ❋ भूप युधिष्ठिर को दै गारी ॥
नमिष बासिन अवधि बिताये ❋ ताही समय धौम्य ऋषि आये ॥
करि प्रणाम पाण्डव सब भाई ❋ पकरे चरण द्रौपदी धाई ॥
समाचार कहि भूप सुनाये ❋ सुनत धौम्य ऋषिअति सुखपाये ॥

दोहा—दूत द्वारका नगर को, पठवहु अतिसुख पाय ।
बार न लागो बाटमें, कही कृष्णसों जाय ॥

दीनानाथ दयाल गुसांई ❋ कह्यो प्रणाम भूप सब भाई ॥
कृपासिन्धु कृत दास सहाई ❋ द्रुपदसुता को लाज बचाई ॥
करी आश प्रह्लाद पुकारे ❋ हरी त्रास हरणाकुश मारे ॥
कही भूप यह त्रिभुवन राई ❋ सदा रहत तुम मोर सहाई ॥
तुम्हरी कृपा बिपति सै दूरी ❋ ह्वै दयाल कीन्हों सुख भूरी ॥
अभिमनु ब्याह रचो है राजा ❋ आइय यहाँ समेत समाजा ॥
अभिमनु मातुसहित यदुराया ❋ बोलेउ भूप चलिय करि दाया ॥
ह्वै दयाल कीन्हों सुख भारो ❋ करी दूरि प्रभु बिपति हमारो ॥

दोहा—करि आयेहौ करतहौ, करिहौ सदा सहाइ ।
सहितमातुअभिमन्युलै, आपुहि पहुँचोआइ ॥
गयेकृष्णभगिनीसहित, लैअभिमनुकहँसाथ ।
उठे देखि सुख पायकै धर्मसुवन नरनाथ ॥
मिलिकै शार्ङ्गपाणिको, लैआये निज गेह ।
अस्तुतिबन्धुनयुतकरत, मनबचक्रमकरिनेह ॥

द्वौ कर जोरि कृष्ण के आगे ❋ करन बिनय कुन्तीसुत लागे ॥
श्री यदुनन्दन मुनिजनबन्दन ❋ कल्मषहर सब दुष्टनिकन्दन ॥
जगतारण खलबदन बिदारण ❋ दुखतारण गजराज उधारण ॥
जगपावन सन्तन मनभावन ❋ ब्रजछावन गिरिवरनखलावन ॥
जनमन रञ्जन भवभय भञ्जन ❋ दनुज निमर्दन भवधनु गञ्जन ॥
कंसबिनाशन प्रभु गरुड़ासन ❋ यदुबंशी अवतंस प्रकाशन ॥
असुरनिवारण मुनिजनपारण ❋ कुञ्जबिहारण गणिका तारण ॥
जगधर नगधर पीताम्बरधर ❋ हरि दामोदर हलधर सोदर ॥
सिन्धु सुतावर श्री राधावर ❋ सर्ब निवारण सर्ब देवपर ॥

जनकसुता भूषण भवभूषण ❀ सुररिपुदूषण तलतल पूषण ॥
भक्तन हितकर हरनिशिचारी ❀ शुभगतिकारी भवभयहारी ॥

दोहा–करिअस्तुतिश्रीकृष्णकी, भपतिअतिसुखपाय।
नगर काम्पिला द्रुपद गण, दीन्हों दूत पठाय ॥

सुनि सन्देश फूलि हिय गयऊ ❀ द्रुपद नरेश पयानहिं कियऊ ॥
गजरथ साहन तुरी तुषारा ❀ सब दल युत बाहन भण्डारा ॥
पञ्चाली सुत पांचो साथा ❀ पहुँचो पुर बिराट नरनाथा ॥
बिदुर गेह ते कुन्ता आई ❀ मिली सुतन अति आनँद पाई ॥
द्रुपद सुता ताके पद बन्दे ❀ सब मिलिकै सब जन आनन्दे ॥
बनते बली युरुक्का आये ❀ निज माता कहँ संग लगाये ॥
नगरराज गिरिते चलिआयो ❀ काशिराज भूपति मनभायो ॥
जरासन्ध पटना को राजा ❀ आयो सुतन समेत समाजा ॥
शूरसेन कहँ दूत पठाये ❀ सुनत सँदेश बेगि तहँ आये ॥
धर्मपुत्र सब राज समाना ❀ बिबिधअनुजसबबुद्धि निधाना ॥

दोहा–शुभघटिकाशुभलगनगनि, शुभबाराहिंसोपाइ ।
रच्यो ब्याह अभिमन्युको, मंगलचारकराइ ॥
भाँवरि पारथ देखि कृत, पांचौं भाय हुलास ।
करयोब्याहबिधिवतसकल, धौम्यसहितऋषिब्यास।
दोऊ कुलकी रीति सों, करिबिवाहसुखदानि ।
बाजी गजरथ हेममणि, दीन्हों नृपसुखखानि ॥

भाट चले बिरदावलि गावत ❀ सिन्धुर बाजि घने नगपावत ॥
नृत्यत गुणी राग बहु साजत ❀ ताल पखाउझ आऊझ बाजत ॥
को बरणै सब आनँद संयुत ❀ बासरहूनिशि कौतुक अद्भुत ॥
भाँवरि परतीं बेदन उच्चरि ❀ दोऊ कुलकी रीति सबै करि ॥
तेहि औसर बिराट नर नाथा ❀ दयो राखि कुश कन्या हाथा ॥

ब्यास आदि वेदध्वनि कीन्हों ❀ स्वस्ति बोलि अर्जुनसुत लीन्हों ॥
बिबिधभाँति बाजाध्वनि माची ❀ जहँ तहँ बारमुखी बहु नाची ॥

दोहा—अभिमन्युकहँदीन्हीसुता, हरषे भूप बिराट ।
धर्मपुत्र सुख पायकै, लसत अनन्दितपाट ॥
बोलि मयासुर को रच्यो, सुन्दर सदन बनाय ॥
नृपति युधिष्ठिरयोंकही, अर्जुन निकटबुलाय ॥

सो०—सुनिअर्जुनगुणग्राम, मयदानव बोलो तुरत ।
धवलसँवारोधाम, खचिखचिरचिरचिजन्मानेज ॥

मयदानव कहँ पार्थ बुलायो ❀ रचहु धाम यह कहि समुझायो ॥
रचहु भवन यहि भाँति बनाई ❀ चित्र बिचित्र बरणि नहिं जाई ॥
रङ्ग रङ्ग रचि सदन बनाये ❀ हरित पीत मणि श्वेत सुहाये ॥
दोसत उज्ज्वल श्वेत अटारी ❀ नीलत कमल घटाजनु कारी ॥
भूमित कतहुँ प्रसाद सतुङ्गा ❀ खचित अरुण मणि रचित उतङ्गा ॥
को कबि उपमा तासु बखाने ❀ देखत कौतुक देव भुलाने ॥
पञ्चमणिन रचि जाल बनाये ❀ भूप रहन हित भवन सुहाये ॥
मयदानव यह रचना ठानी ❀ जहँ जहँ थलह तहां तहँ पानी ॥
लखिय द्वार मनमानि प्रतीती ❀ करत प्रवेश मिलत तहँ भीती ॥
देखिय तहां उतङ्ग देवाला ❀ रच्यो तहां शुभद्वार बिशाला ॥
बैठत नित्य सभा जहँ राजा ❀ तेहि देखत ऐरावत लाजा ॥
पुर अन्तर बिरच्यो शुचिधामा ❀ तहँ रनिवास केर बिश्रामा ॥
बहुत भीर युत नृप दरबारा ❀ को कहि तासु बखानै पारा ॥
हय हिंसत सिन्धुर बहु गाजत ❀ निशबासर दुन्दुभि तहँ बाजत ॥
बैठे नृप तहँ साज बनाई ❀ कहत बन्दिजन बिरद सुनाई ॥

दोहा—भीम पार्थ सहदेव नकुल, बैठे कृष्ण सुजान ।
पण्डितगण मण्डितरहत, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेअभिमन्युबिवाहवर्णनोद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

दोहा—सोम बंश नृप धर्म सुत, शोभितशक्रसमान ।
चारिबन्धु सरि देवकी, दुष्टदलन बलवान ॥

अञ्जलि जोरि जोरि युग पानी ❋ कृष्णदेव ते बिनय बखानी ॥
जहँ तहँ परी बिपति जब भारी ❋ करि सुधि हरी तुरत बनवारी ॥
दयासिन्धु सोइ करिय बिचारा ❋ मिलै बेगि जेहि देश हमारा ॥
अह हरि हरहु अशेष कलेशा ❋ करहु दूरि प्रभु मोर अँदेशा ॥
अन्धपुत्र कीन्हों अपकारा ❋ कपट द्यूत करि मोहिं निकारा ॥
धाम ग्राम गज बाजि छिनाई ❋ लहि सम्पदा सबै कुरुराई ॥
खैंचो चीर दुशासन आनी ❋ कीन्हि न कानि बिकल भैरानी ॥
दीनबन्धु कहि द्रुपद कुमारी ❋ राखु राखु बहु बार पुकारी ॥
हम सब बैठि रहे शिरनाई ❋ करि सहाय तुम लाज बचाई ॥

दोहा—करि आयेहौ करत हौ, सेवक सदा सहाय ।
करी बन्दना कृष्ण की, धर्मपुत्र भुवराय ॥

द्वौ कर जोरि भूप अनुरागे ❋ करत बिनय कमलापति आगे ॥
कच्छप बपु धरि सागर थाहन ❋ मत्स्यरूप शंखासुर दाहन ॥
बन्दन मुनिजन सनक सनन्दन ❋ जय जय जय तुम जय यदुनन्दन ॥
शूकररूप रदन धरणी धर ❋ खलहिरण्याक्षहि पतितप्राणहर ॥
भूतल खल दल दुष्ट निकन्दन ❋ जयजय जय तुम जय यदुनन्दन ॥
नरहित तनु प्रहलाद उबारण ❋ हिरण्यकशिपुनखउदर बिदारण ॥
सेवक कष्ट हरण जग बन्दन ❋ जय जय जय तुम जय यदुनन्दन ॥
छलिबलिबाँधि पताल पठावन ❋ बामन बपुधरि भूतल आवन ॥
काटत सब माया दुखद्वन्दन ❋ जयजय जयतुम जय यदुनन्दन ॥
परशुपाणि क्षत्री मद नाशन ❋ रघुकुल कमल दिनेश प्रकाशन ॥
रामचन्द्र दशरथ कुलनन्दन ❋ जय जय जय तुम जय यदुनन्दन ॥
कंस कुटिल असुरन भयकारी ❋ केशी मर्दन अजिर बिहारी ॥
पीत बसन तन चर्चित चन्दन ❋ जय जय जय तुम जय यदुनन्दन

बोध रूप धरणी पर धरिहौ ❋ कलकी ह्वै दुष्टन संहरिहौ ॥
यह कहि नृपति कीन्ह पद बन्दन ❋ जय जय जय तुम जय यदुनन्दन ॥

दोहा—बिनय मानिकै करि कृपा, दुर्योधन पहँ जाव ।
समुझायोबहुबिधि उन्हैं, बचैगोतन को घाव॥

बिहँसि कृष्ण तबहूं उठि धाये ❋ नगर हस्तिनापुर चलिआये ॥
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठाये ❋ सभा मध्य लै कृष्णहिं आये ॥
कह नरेश कित चरण चलायो ❋ बिहँसि कृष्णतब बचन सुनायो ॥
धर्मराज तुम पास पठाये ❋ गोत बिरोधन मेटन आये ॥
भूपति जग में यह यश लीजै ❋ आधो देश बाँटिकै दीजै ॥
आपन कुलहि कलङ्क लगावहु ❋ कलह गोत को भूप बचावहु ॥
दुर्योधन बोल्यो अकुलाई ❋ कैसे सकहुँ कलेश बचाई ॥
देश बांटि जो उनको देहैं ❋ यागी ह्वै कपाल हम लेहैं ॥
भूप बांटि कत मोपै पावैं ❋ जो वे नभभूतल फिरिआवैं ॥
कृष्ण कह्यो सुनि मोर निहोरा ❋ मानहु बचन होहि यश तोरा ॥
और भूमि जनि भूपति देहू ❋ पाँच ग्राम दीजै करि नेहू ॥

दोहा—अरकस्थल बरकस्थली, एक चक्र पानि देहु ।
नगरबरुण अरु हास्तिपुर, और देश तुम लेहु ॥
सुई अग्र जितनी उठी सोकाहि कबहुँ न देहुँ ।
पुनि पीछे भुवभावकरि, प्रथम युद्ध करिलेहुँ ॥

तुमहिं कहत यह कैसो आवत ❋ जियत मोहिं धरणी को पावत ॥
सुनि हरिबचन जरत सबगाता ❋ जियत सुनी यह अद्भुत बाता ॥
दुर्योधन मुख बचन बिलोका ❋ सुनि बोल्यो यादवकुलटीका ॥
ऐसो बात कहौ जनि सपने ❋ कुरुपतिब्याधिलेत शिरअपने ॥
पाण्डव से तुम नहि बरिऐहौ ❋ फिरि नरेश पाछे पछितैहौ ॥
भूपति देखु हिये महँ बूझी ❋ तुम कहँ अबहि परत नाहिसूझी ॥
मिटि जैहै तुम्हार यह तेहौ ❋ भूप भूमि देहौ तुम देहौ ॥

लेइहि कोपि गदा जब पानी ❋ गाजिहि भीमसेन रण आनी ॥
हाँक सुनत कुरुदल भहराई ❋ जिमि बिग देखि भेड़ समुदाई ॥
अर्जुन कोपि धनुष जब धरिहैं ❋ कौरव मारिप्रलय करिडरिहैं ॥
पार्थ बाण सहि सकै न कोई ❋ नर किन देव दैत्य जिनहोई ॥
लैकर खड्ग नकुल बलधामा ❋ अवगाहहिं सागर संग्रामा ॥
सहदेव युद्ध जुरे करि क्रोधा ❋ तुव दल रोंकि सकै को योधा ॥
कुलको कलह न त्यागिहि कोही ❋ ऐसो भाव तजै अब तोहीं ॥
छांड़त मान न बात अनैसी ❋ है तुम्हरे मनमहँ नृप कैसी ॥

दोहा—पार्थ ध्वजापर बैठिकै, गरजै पवन कुमार ।
धर्मराज के धर्म ते, होइहि नाश तुम्हार ॥
कृष्णउठेयहबचनकहि, तिनको यहसमुझाय ।
भावी सो कैसे मिटै, को करि सकै बचाय ॥
नगर हास्तिना पुर तबै, कुन्ती पहुँची जाय ।
समाचार श्रीकृष्णजू, सकल कह्यो समुझाय ॥
दुर्योधन मति परिहरी, देत न पाँचौ ग्राम ।
देबे को कहु का चली, श्रवणसुनत नहिंनाम ॥

दुर्योधन उर बाढ़ो गर्बा ❋ कहत जीतिहों भारत सर्बा ॥
सो सुनि कुन्ती अति दुखपावा ❋ हरिदिशिदेखि नयनजल छावा ॥
मो सम जगत दुखी नहि कोई ❋ भयो न है आगे नहिं होई ॥
कुन्ती दुखित देखि यदुराई ❋ कहि हरिचन्द्र कथा समुझाई ॥
भे हरिचन्द्र अवध रजधानी ❋ धर्मरूप मदनावति रानी ॥
रोहिताश्व सुत भयो कुमारा ❋ जनु ऋतुराज लीन्ह अवतारा ॥
एक छत्र बसुधा नृप केरी ❋ ऋधिसिध रहैं भवन जिमिचेरी ॥
निन्नानबे यज्ञ नृप कीन्हा ❋ सवई करण हेत चित दीन्हा ॥
यह नरेश मन मनसा आई ❋ करि शत यज्ञ होहुँ सुरराई ॥

सो सुधि सुनासीर कहुँ पाई ❀ भै शङ्का मुखगा कुम्हिलाई ॥
उर न चैन अति भया अँदेशा ❀ गाधिसुवन पहँ गयो सुरेशा ॥

दोहा—बिश्वामित्रहि सों कहा, सुरपति बिपति सुनाय।
राखोचहोजोइन्द्रपद, तौ कछु करौ उपाय ॥

करै जो यज्ञ सिद्धि हरिचन्दा ❀ लेउ इन्द्र पद सुनहु मुनिन्दा ॥
करिय उपाय महामुनि सोई ❀ जाते यज्ञ सिद्धि नहिं होई ॥
क्रतु अवधेश उपद्रव दाता ❀ जो मुनीश तुम चहो बचावा ॥
सत्य हीन हरिचन्द्र नरेशा ❀ करहु मोर तब मिटै अँदेशा ॥
सो सुनि गाधिसुवन सुखपायो ❀ हंसि सुरेशते बचनसुनायो ॥
यदपि न हमहिं उचित सुनु राजा ❀ करिय अकारण पर अपकाजा ॥
तुम आगमन परो म्वहि भारा ❀ करब शक्र हम काज तुम्हारा ॥
सो उपाय हम करब सुरेशा ❀ जाते नशै तुम्हार कलेशा ॥

दोहा—सत्यहीनहरिचन्द्रकरि, करौं तुम्हारो काज ।
इन्द्रपुरी का अवध को, तुरत छड़ावों राज ॥

यहि प्रकार शक्रहि मुनि बोधा ❀ बिदा कीन्ह बहुभाँति प्रबोधा ॥
पुनि बराह बपु आपु बनाये ❀ कौशिक अवधपुरी चलिआये ॥
गयो बराह नृपति फुलवारी ❀ दल फल मूल अशनकृतभारी ॥
दशन घात सब वृक्ष ढहाये ❀ सरवर पैठि जलज सब खाये ॥
पुरइनि तोार मिलायो कीचा ❀ अतिरव करि गर्जा सवीचा ॥
मालाकार भूप सन जोई ❀ समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
महाराज यक आव बराहू ❀ मूरतिवन्त सोह जनु राहू ॥
त्यहिं सब उपवन कीन्ह उजारी ❀ खनितड़ाग कांदव करिडारी ॥
सुनि महीप पुनि रिस उपजाई ❀ चल्यो तुरगचढि दलअधिकाई ॥
लै नरेश संग सुभट अनेका ❀ चहुँदिशि जाय वाटिका छेंका ॥
तब नरेश कह भुजा उठाई ❀ सुनहु श्रवण दैभट समुदाई ॥
ज्यहिदिशिजाइनिकरि बाराहा ❀ त्यहि जारों तनु तेज कराहा ॥

पुनि बराह मन बिस्मय आई ❀ निकस्यो निकटभूप के जाई ॥

दोहा—जाकी दिशि ह्वै मैं कढ़ौं, करै भूप तेहि दाह ।
यह बिचारिकै नृपनिकट, निकरो आइबराह ॥

मारन चल्यो भूप शर साजी ❀ चल्यो बराहे मरुतगति भाजी ॥
तब नरेश करि चपल तुरङ्गा ❀ गयो अकेल न दूसर सङ्गा ॥
परम गहन द्विज रूप बनाई ❀ दीन्ह अशीष मुनीश्वर आई ॥
नृपति बिलोकि अचम्भव माना ❀ करि प्रणाम यह बचनबखाना ॥
पूरण मोरि भाग्य मुनिराया ❀ दीन्हों दरश कीन बड़िदाया ॥
यह सुनि मुनि बोल्यो मुसक्याता ❀ आयोंतुमहिंश्रवण सुनि दाता ॥
पूरण करहु मनोरथ मोरा ❀ बाढ़ै सुयश जगत नृप तोरा ॥
कह नृप अस भाषौ जनि भोरे ❀ तुमकहँ कछु अदेय नहिंमोरे ॥
बार बार मुनि बचन दृढ़ाई ❀ नृपसन बिष्णु शपथ करवाई ॥
मांगो राज पाट भण्डारा ❀ तापर और कनक सौभारा ॥
देन कह्यो नृप पुर जब आये ❀ गाधिराज सुत संग लगाये ॥

दोहा—दीन्ह नरेश मुनीशि कहँ, राज्य पाट भण्डार ।
बिहँसिगाधिसुत तबकही, स्वर्णदेहु सौ भार ॥

जो नहिं राय देहु तुम मोरा ❀ नाशै सकल सत्य नृप तोरा ॥
कह नरेश मैं सर्वसु दयऊ ❀ रानी तयन मोर तन रह्यऊ ॥
कह हरिचन्द्र बचन छलहानो ❀ लीजै बेंचि मुनीश्वर ज्ञानी ॥
गाधिसुवन सुनि अति सुखपाये ❀ लै निज संग बनारस आये ॥
तासु दिवस मग अन्न न पानी ❀ कीन्हों नृप न नेक अरु रानी ॥
अठयें दिवस गङ्ग के तीरा ❀ चहत पानजल बिकल शरीरा ॥
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई ❀ बिना कनक जो तू जल खाई ॥
होइहि सत्य धर्म तुव छारा ❀ फिर न प्रतिग्रह करब तुम्हारा ॥
सुनि नरेश मन अति दुखपाये ❀ बैठि गङ्ग तट शीश नवाये ॥

दोहा—रोहिताश्वअति तृषितह्वै, तबथरहरो शरीर।
मूर्च्छिपरेतनुबिकल अति, जन्हुसुता के तीर।

करतबिलाप बिकलअति रानी ❀ अञ्चल बोरि लैआई पानी ॥
तब द्विज इमि रानी ते बोल्यो ❀ जाना सत्य धर्म तुव डोल्यो ॥
स्वर्णदिये बिन जल मुख डारा ❀ कुँवर बदन गा धर्म तुम्हारा ॥
सुनि रानी मन अतिदुखब्यापा ❀ बैठि गङ्ग तट करत बिलापा ॥
रबि आकर्ष जप्यो मुनि राई ❀ बारह कला तपै रबि आई ॥
भयो तेज कछु बरणि न जाई ❀ रानी नृपति गिरेउ मुरछाई ॥
बिनय कीन्ह नृप बारहिंबारा ❀ तुम ते प्रकट्यो बंश हमारा ॥
सो तुम दया छाँड़ि प्रभु दयऊ ❀ सुनि नरेश प्रभु शीतल भयऊ ॥
कृपादृष्टि देख्यो नृप रानी ❀ सहित कुँवर तनुताप बुझानी ॥
रबिप्रसाद तनु अतिबल भयऊ ❀ क्षुधा पियास त्रास मिटि गयऊ ।
तब मुनि संग नरेश लवाई ❀ बैठि राज मारग महँ आई ॥
बोलि सबन ते बचन सुनाये ❀ बिक्रय हेतु मनुज हम लाये ॥

दोहा—सबहिंसुनायमुनीशपुनि, कहिइमिबारहिबार।
तीनिमनुजको मोलहम, स्वर्णलेहिं सौभार ॥

रानिहि निरखि रूप अधिकाई ❀ सुनि माता बेश्या तहँ आई ॥
मोल करन को कीन्ह प्रचारा ❀ कह ऋषि कनक अर्द्ध सौभारा ॥
भार पचास स्वर्ण म्वहिं दीजै ❀ बालक सहित बाम यह लीजै ॥
दीन्ह हिरराय अर्द्ध सौ भारा ❀ रानि सहित लै चली कुमारा ॥
बेश्या ते कर जोरि सयानो ❀ बोली बचन दीन ह्वै रानी ॥
लीन्ह मोल तुम जीव हमारा ❀ कौन काज हम करब तुम्हारा ॥
गणिकै कह्यो रानि ते बानी ❀ कारज सुनहु हमार सयानी ॥
नाचि गाय जग पुरुष रिझाई ❀ दान पाइ जीविका चलाई ॥

दोहा—परपुरुषन ते प्रीति करि, द्रब्य लाइये धाम।
हावभावकरि मन हरिय, कीन दोय बश काम ॥

सुनि रानी मन भयो अँदेशा ❋ मनमा सुमिरेउ देव दिनेशा ॥
तुव कुलकी कुलबधू कहाई ❋ गई लाज मैं जगत हँसाई ॥
रहै धर्म स्वइ करिय उपाई ❋ ह्वै दयाल प्रभु करिय सहाई ॥
रवि मगडल ते बहु कपि आये ❋ बारमुखिन कहँ त्रास देखाये ॥
गणिकन बिकल बिप्रसन जाई ❋ कथा अलौकिक सकल सुनाई ॥
त्यागो जो लिय द्रब्य हमारा ❋ तुम यह लेहु पुत्र अरु दारा ॥
बारमुखी इमि बचन सुनाये ❋ सत्यकेतु द्विज तहँ चलि आये ॥
तिन तब बूझेउ सकल प्रसङ्गा ❋ सुनि दुखलह्यो महा मुनिअङ्गा ॥
कनक मँगोय दीन्ह मुनिज्ञानी ❋ बेश्यन ते लीन्हीं सुत रानी ॥

दोहा—कन्या करि राखी भवन, करि सनेह मुनिराय ।
द्विजपत्नीकहँप्रीतिकरि, अधिकअधिकसरसाय ।

नृप कहँ लीन्हीं मोल चँडारा ❋ दीन्हों कनक अर्द्ध सो भारा ॥
कालसेन रह त्यहिका नाऊँ ❋ लै हरिचन्द्रहि गा निज ठाऊँ ॥
कही दानवो सकल कहानी ❋ सौंप्यों नृपकहँ घाट मशानी ॥
तहाँ मृतक जो नर लैआवै ❋ बिना दगड कृति करन न पावै ॥
मुद्रा पञ्च बसन युग देई ❋ करन देइ कृति जब लैलेई ॥
मिलै दगड सो लै नृप धीरा ❋ घटभरि लेइ गङ्ग को नीरा ॥
नित प्रति कालसेन के आगे ❋ धरैं जाय नृप अति अनुरागे ॥
कह्यो नाम नपसन त्यहि बागा ❋ सुनि सुमहीपति पाँयन लागा ॥
सुनु स्वामी हरि याम मनाऊँ ❋ मोरे कतहुँ गांव नहिं ठाऊं ॥
यहि बिधि ताहि भूप समुझाई ❋ पहुँचो प्रात घाट सो आई ॥

दोहा—याहि बिधिबीते कछुदिवस, मुनिह्वैसर्पकराल ।
डस्योआनिपुनिनृपतनय, प्राणतजेततकाल ॥
सत्यकेतु सामिधाहित, बन कहँ कीन्ह पयान ।
द्विज तरुणी तात्क्षण गई, करन गङ्ग असनान ॥

रानी निरखि शोच उपजावा ❀ करत बिलाप दुसह दुखपावा ॥
अर्द्ध बसन ते कुंवर ओढ़ाये ❀ अर्द्ध बसन निज देह छिपाये ॥
लैगइ तुरत गङ्ग के तीरा ❀ रुदन करत अतिबिकल शरीरा ॥
चाहत जल डारैं त्यहि काला ❀ आयो भूप रूप चण्डाला ॥
लखि मृतकुँवर नयनजल मोचे ❀ भयो दुसह दुख नृप अतिशोचे ॥
स्वामि भक्ति सुधि भूपहि आई ❀ तब रानी कहँ रह्यो रिसाई ॥

दोहा—निठुरबचन बोल्यो तबहिं, रानी सों नरनाह ।
दण्डदियेबिनुजनिमृतक, कीजै सरित प्रबाह ॥

कह रानी गे भूलि भुवारा ❀ रोहिताश्व यह तनय तुम्हारा ॥
असकहि कौन बिलाप कलापा ❀ बोल्यो नृपति सहित परितापा ॥
मैं हौं कालसेन को दासा ❀ छांड़ि देहु मन ते यह आसा ॥
मुद्रा पञ्च बसन बिनु लीन्हे ❀ मानों मैं न कोटि बिधि कीन्हे ॥
बिप्र पाणि तुम बेंचि बहाई ❀ अब नृप द्रब्य कहाँ हम पाई ॥
बसन कुँवर को लेहु उतारी ❀ लेहु बेंचि मम आमिष मारी ॥
सुनि नरेशकहं क्रोध न थम्भा ❀ पकरि केश बांध्यो लै खम्भा ॥
मारन चल्यो खङ्ग गहि पाणी ❀ तब यह भई गगन महं बाणी ॥

दोहा—सुत राख्यो तन कष्टसहि, बीति गये दिनमन्द ।
केश तजौ धीरज धरौ, धन्य धन्य हरिचन्द ॥

असकहि प्रकट भयो भगवाना ❀ मांगु भूप अस बचन बखाना ॥
परे चरण नृप कण्ठ लगाये ❀ रानी के बन्धन छुटवाये ॥
ह्वै प्रसन्न तब श्रीभगवाना ❀ भूपति कहँ दीन्हों बरदाना ॥
अब नृप करहु अवधपुर बासा ❀ अन्तकाल आयहु मम पासा ॥
करी कृपा हरि कुँवर जियाई ❀ अन्तर आप भये सुरराई ॥
प्रभुको कृपा नगर निज आये ❀ अचलराज्य माता उन पाये ॥
नहिं उनके दुखको कछु छोरा ❀ तिन देखत केतिक दुख तोरा ॥
शिव प्रसाद मिटि जैहै सोई ❀ धीरज धरहु नीक अब होई ॥

यहि प्रकार कुन्ती समुझाई ❀ बिदुर भवन गे संग लवाई ॥
करि भोजन तहँ शारँग पानी ❀ कीन्ह शयन सब राति सेनारी ॥

दोहा—प्रात होत श्रीकृष्णजू, दुर्योधन के पास ।
गये फेरि हितसों सुबुधि, कीन्हें बचन प्रकास॥
कहो हमारो कीजिये, पांच ग्राम दै देहु ।
बन्धु एकसों पांचसों, निशिदिन बढ़ै सनेहु ॥
दुर्योधन नृप कृष्ण के, बचनसुने तेहिकाल ।
प्रति उत्तर हरिसों कह्यो, भये बिलोचन लाल ॥
नितहरिशालैशालहरि, कितहिशलावतआनि।
करौंअपाण्डवभूमिसब, धरौं न कुलकी कानि ॥

सो सुनि बचन कृष्ण नहिं भाये ❀ है सक्रोध यहि भाँति सुनाये ॥
कोपि भीम रणमें दल गाजहिं ❀ सुनत नाद कौरव दल भाजहिं ॥
देखि गदायुत पवन कुमारा ❀ को तापर डारै हथियारा ॥
सहदेव नकुल पाण्डु कुमारा ❀ तासम सकल कौन संसारा ॥
जब कोपहिं लै पाणि पिनाका ❀ धीर न रहै सुनत रण हाँका ॥
समुझत नहीं बचन सुनि मूढ़ा ❀ परत सूझि नहिं गर्व अरूढ़ा ॥
अबहिं न आवत चेत अभागे ❀ समुझहि नीच मूढ़महँ लागे ॥

दोहा—बोले शकुनि सरोष ह्वै, कही नृपति सों जाय ।
कौनि कानि याकी करौं, बांधि लेहु सुखपाय ॥
दुखपायो भीषम बिदुर, बिकल भये सब गात ।
चहतावियोअपमानसब, बनै नहीं कछु बात ॥

भीषम बिदुर बिकल प्रभु जानी ❀ बदन पसारेउ शारँग पानी ॥
मुख भीतर देख्यो ब्रह्मण्डा ❀ सम्भ्रम छायो चित्त अखण्डा ॥

देख्यो गगन सूर्य शशि तारा ❀ देख्यो भूमि अकाश पतारा ॥
भूधर सरित सिन्धु अरु कानन ❀ देख्यो सुर सुरेश सहसानन ॥
देख्यो शम्भु बिरञ्चि मुनीशा ❀ दानव दनुज सृष्टि सब दीशा ॥
कुरु पाण्डव देखे सँग्रामा ❀ जहँ तहँ मरे परे बलधामा ॥
कृप कृतवर्मा अश्वत्थामा ❀ कुरुदल मध्य बची यह सामा ॥
सात्यकि पञ्चबन्धु सुरत्राता ❀ पाण्डव मध्य बचे ये साता ॥
यहि बिधि चरित कृष्ण दरशाये ❀ भीषम बिदुर चरण शिरनाये ॥

दोहा—यहि बिधि दरशायो चरित, भीषमको जगदीश।
बचन प्रकाश्यो बिदुरसों, हरिपद नायो शीश ॥

खल दुर्योधन मर्म न जानत ❀ शिषत्रिभुवनपतिकीनहिं मानत ॥
भूल्यो मूरुख नृपता गर्बा ❀ कुल के धर्म तजे यहि सर्बा ॥
ह्वै है साइ जो लिख करतारा ❀ कह भीषम यह बारहिं बारा ॥
कह मुनि सुनहु मुकुट बरधारी ❀ शोच हरण सन्तन हितकारी ॥
चले कृष्ण नृपको समुझाई ❀ पहुँच्यो धर्मपुत्र पहँ आई ॥
पञ्च बन्धु पद शीश नवाये ❀ बैठि कृष्ण यह बचन सुनाये ॥
सूच्ममहि तुमको नहिं देता ❀ उद्यम कीन्हों भारत हेता ॥
बिना युद्ध महि कबहुँ न देहैं ❀ जो जीतै सोई सब लेहैं ॥
बार बार कह बात कन्हाई ❀ बिना युद्ध कौने महि पाई ॥

दोहा—बीर भोग ह्वै जीति रण, क्रूर तजैं कदराय ।
अस्त्र गहौ भारत रचौ, लीजै सबै बचाय ॥
कृष्ण कही सबके मत, मन मानी यह बात ।
धर्मराज बन्धुन सहित, भये प्रसान्नित गात ॥

इति श्रीमहाभारते विराटपर्वत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति विराटपर्व समाप्तम् ॥

भार्गव पुस्तकालय
गायघाट बनारस सिटी

महाभारत

उद्योगपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत
रामायणकी रीति पर दोहा-चौपाई में
सरलता से वर्णित है।

जिसमें

कौरव-पाण्डवों का महाभारत करने के लिये अपने-अपने
इष्ट-मित्रों को न्योता भेजकर बुलाने तथा युद्ध
करने के विचार आदि की कथाएँ वर्णित हैं।

काशी

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा—
भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी में मुद्रित।

श्रीगणेशाय नमः

अथ महाभारत भाषा

उद्योग पर्व

दोहा—बिधिहरिहरगणपतिगिरा, सुरमुखपायनियोग।
सबलसिंह चौहान कहि, भाणत पर्व उद्योग॥

कह ऋषिराइ सुनहु कुरुकेतू ❀ कथा सुभग मुद मङ्गल हेतू॥
जब हरि धर्मराज पहँ आये ❀ मिलत हृदय अति आनँद छाये॥
गहे चरण भीमादिक भाई ❀ बैठे अति प्रसन्न यदुराई॥
तब सुधि पाइ बिराट भुवारा ❀ आये सभा सहित परिवारा॥
उत्तर शंख कुँवर दोउ साथा ❀ आइ चरण परशे यदुनाथा॥
उठे भूप मिलि भये सुखारे ❀ गहि भुज निज समीप बैठारे॥
सुतन समेत द्रुपद महराजा ❀ धृष्टकेतु त्यहि सभा बिराजा॥

दोहा—काशिराज बैठे सभा, शूरसेन नरनाह।
जरासन्धसुत सात्यकी, नृपसबसहित उछाह॥

पांचाली सुत पांचो बीरा ❀ घटोत्कच अभिमन्यु रणधीरा॥
हरि समीप बैठे नरनाथा ❀ अर्जुन भीम जमलयुग साथा॥
प्रद्युम्न अरु अनिरुद्ध कुमारा ❀ जाम्बवतीसुत साम्ब जुझारा॥
बैठ यादव द्वादश जाती ❀ सब परिवार पुत्र अरु नाती॥
बैठ सब नृप सखा सुखारी ❀ भोज बृष्णि अन्धकगणभारी॥
हरि समीप हल मूसरवारे ❀ आसव पिये नयन रतनारे॥

नील निचोल अभूषण साजे ❀ प्रभु के दक्षिण ओर बिराजे ॥
जा कहँ शेष कहै संसारा ❀ सो बलभद्र सहै जगभारा ॥
औरौ देश देश के राजा ❀ जुरे आनि तहँ सकलसमाजा ॥

दोहा—भूपबामादिशि द्रौपदी, भूषण बसन उदोत ।
मनहुँ प्रभाकरकी सभा, जगर मगर द्युति होत ॥

केहरि कटि मृगशावकनयनी ❀ बोलाबिहँसि बचन पिकबयनी ॥
दुर्योधन गृह भूप पठाये ❀ कारज सकल नाथ करि आये ॥
कह हरि वह एको नहिं मानहिं ❀ तृणसमान तिहुँलोकहि जानहिं ॥
कहे बचन हँसि शारँगपानी ❀ बिना युद्ध महिमिलिहिन रानी ॥
सो सुनि धर्मराज दुख पायउ ❀ बासुदेव ते बिनय सुनायउ ॥
मानत सो न कुमारगगामी ❀ अब उपाय कीजै का स्वामी ॥
कही बिहँसि तब शारँगपानी ❀ सुनहु नरेश प्रेम सज्ञाना ॥
बैठे द्रुपद बिराट भुवारा ❀ पूछि मन्त्र तस करहु प्रचारा ॥
जस कछु मतो कहैं सबलोगा ❀ कहेउकृष्ण तस करिय नियोगा ॥

दोहा—बुद्धिबिक्रम बृद्ध शुचि, ज्ञानवान पश्चाल ॥
धर्मशीलबल नृप कहे, करिय यतन ततकाल ।

श्रेष्ठ बरिष्ठ भूप सबलायक ❀ पितु समान तुम्हरे हितदायक ॥
इनहिं पूछि करिहौ जो काजा ❀ होइहि सकल मनोरथ राजा ॥
पूछौ बैठि बिराट भुवारा ❀ इनते को हित चहत तुम्हारा ॥
द्रुपद बिराट कही यह बाता ❀ सब जानत प्रभु अन्तर्याता ॥
अब प्रभु और न करहु विचारा ❀ आयुध बाँधि होहु असवारा ॥
कोटिन बिधि प्रभु यतन बिचारे ❀ मिलै न महि कौरव बिन मारे ॥
सुनि यह बचन सात्यकी बोला ❀ कहे नाथ इन बचन अमोला ॥
मत हमार सुनि पावन वारी ❀ जले जियत कुरुपति अपकारी ॥

दोहा—तबलग कुशलनपाण्डुसुत, सुनियदीनदयाल।
जब लग दुर्योधन जियत, ग्रसत न वाकहँकाल॥

आदि कथा हरि भाषन लागे ❋ सुनिये भारत परम सभागे ॥
जब हम जठर देवकी जाये ❋ देव दैत्य सब जगमहँ आये ॥

दोहा—क्षत्री होइ जगमें सबै, मम लीला के काज ।
कुरुपति कालिको अंश है, धर्म युधिष्ठिरराज ॥

सुरगण सब पाण्डव हितकारी ❋ कुरुपति असुरनको अधिकारी ॥
ब्रह्मा कही चन्द्र सुनि लीजे ❋ बुध सुत देहु जन्म जग कीजे ॥
बिधि सों विनय सुधाकर कह्यो ❋ इहई पुत्र मोर घर अह्यो ॥
जौलगि सुतहि जन्म जग करिहौं ❋ काहि देखि धीरज मन धरिहौं ॥
हँसि बिधि कही निशापति आगे ❋ पन्द्रह वर्ष देहु म्वहिं मांगे ॥
जन्म सहोद्रा गर्भहि लैहै ❋ भारत मां बहुतै यश पैहै ॥
पन्द्रह वर्ष लागि हम मांगे ❋ एको दिन नहिं रहिहै आगे ॥
जो यहि बीच आव नहिं पैहै ❋ दोउ दल मारि तोर सुत ऐहै ॥
तुम ते कही सुनो हो पारथ ❋ शोच न कीजे आपु अकारथ ॥

दोहा—अर्जुन को परबोध कै, लै आए प्रभु ऐन ।
शोक मिटातन क्रोध भो, कहो कृष्ण सों बैन ॥

काल्हि युद्ध जयदर्थहि मारों ❋ नातरु देह अग्नि मों जारों ॥
यह प्रण में कीन्हा अपने मन ❋ बधों शत्रु की देहुँ अपन तन ॥
प्रण सुनि श्रीहरि कहिबे लीन्हे ❋ जयद्रथ कहँ शंकर बर दीन्हे ॥
ताते अजय भयो है पारथ ❋ केहि बिधि तुम करिहौ पुरुषारथ ॥
हम तुम मिलि कीजे अब गवना ❋ चलु जाई शंकर के भवना ॥
नर नारायण सङ्ग सिधाये ❋ क्षणमहँ गिरि कैलासहि आये ॥
चहुँदिशि बनसपती सब फूले ❋ मत्त मधुप गुञ्जत रस भूले ॥
बटतर बैठे हैं गङ्गाधर ❋ उमासहित हरिनाम जपत हर ॥
अङ्ग बिभूति बसन मृगछाला ❋ चन्द्र ललाट गरे शिरमाला ॥
शीश जटा महँ गङ्ग बिराजत ❋ लोचन तीनि मनोहर छाजत ॥

सुनि श्रीहरि आये इन बातन ❀ सुनहु प्रषदसुत कथा पुरातन ॥
भागीरथी ब्याहि सुख पाये ❀ करि करार भवनहिं नृप लाये ॥
बालक सप्त प्रथम उपजाये ❀ तेइ नृप लै प्रवाह पहुँचाये ॥
भीषम जन्म जगत जब लीन्हा ❀ बालबिलोकि मोह नृप कीन्हा ॥
कहेउ भूप गङ्गा सुनि लीजै ❀ अबकी सुत मांगे मोहिं दीजै ॥
कह सुरसरि नृप कीन्ह करारा ❀ पहुँचावों बालक तुव धारा ॥
तुमहिं भूप अब सुत प्रिय लागे ❀ यह करार कीन्हों मैं आगे ॥
अब तुम पुत्रलोभ जिय आना ❀ निज प्रवाह हम करब पयाना ॥
अपनो पुत्र प्रीति करि लीजै ❀ जाहुँ भूप मोहि आज्ञा दीजै ॥
करहु नृपति अब तजि संदेहा ❀ राखहु हमहिं कि बालक येहा ॥
कहनरेश मोहिं शिशु प्रियलागत ❀ जोरिपाणि तुमते यह माँगत ॥
सुरसरि सुनि महीप मुखबानी ❀ निज प्रवाह ततकाल समानी ॥
नारि बिरह दुख भूपहि ब्यापा ❀ बिकल रैनिदिन कीन्हविलापा ॥
राज्ययोग बीते कछु काला ❀ भयो कुँवर दुख तजे भुवाला ॥
परशुराम धनु बिद्या दीन्हों ❀ आपु समान महारथ कीन्हों ॥
करहि गङ्गसुत राज्य प्रचारा ❀ भूप द्योसप्रति रमत शिकारा ॥

दोहा—भ्रमत भूप अखण्ड बन, गयउ नदी के तीर ।
देखि तहां कन्या नवल, पहिरे भूषण चीर ॥
कीधौं रति सम मैनका, रम्भारूप समान ।
बिज्जुलतासी देखि छबि, संभ्रमभूप भुलान ॥

ठाढ़ नरेश नदी के तीरा ❀ कामबिवश अतिबिकल शरीरा ॥
हांकि अश्व चलिगे नृप आगे ❀ पूछन बचन प्रेम सों लागे ॥
केहि सुकृती की सुता सोहाई ❀ कारण कवन नदी तट आई ॥
तुम्हहिं देखि लोभेउ मन मोरा ❀ को तुव पिता नाम का तोरा ॥
सुता निषादराज की राजा ❀ निशिदिन मोर नदीतट काजा ॥

मीन राज ब्योहार हमारा ❀ मत्स्योदरी नाम द्विज सारा ॥
आवत मम तन कठिन कुबासा ❀ देखि लोग दाबैं निज नासा ॥
यहि प्रकार कछु दिवस बिताये ❀ यहि मग ऋषय पराशर आये ॥

दोहा–सरित तीर ठाढ़े भये, तपोमूर्त्ति अभिराम ।
मोहिंबिलोक्योतरणिपर, बिकलभयोबशकाम ॥

म्वहिं बिलोकि ऋषिप्रेम अधीरा ❀ भयो कामवश बिकलशरीरा ॥
मांगी रति मुनि करि बहु ईड़ा ❀ बोलो मैन भूपवश ब्रीड़ा ॥
कह मुनि हमहिं देव ऋतुदाना ❀ लेहु शाप की बज्र समाना ॥
क्रोधवन्त ऋषि को जब देखा ❀ प्रति उत्तर मैं दीन्ह विशेखा ॥
मैं तुम्हारि पुत्री ऋषिराई ❀ मलिनरूप अरु देह गँवाई ॥
नीचजाति कृत अशन कुभोगा ❀ नाहिं न नाथ तुम्हारे योगा ॥
बरै पुरुष पितु शिष बिन जोई ❀ कुलटा नाम कहावै सोई ॥
मैं मुनीश तुव हाथ बिकानी ❀ छोड़्यां लोकलाज कुलकानी ॥
तुमहिं विलोकि राजअनुकूला ❀ देखहु नाथ लोग दोउकूला ॥
अतिकलङ्क लागी मुनि हमको ❀ दिनरतिनाथउचित नहिं तुमको ॥

दोहा–ह्वैप्रसन्नतबऋषिकहेउ, त्यागहुतरुणिबिषाद ।
तुव तन गन्ध कपूर की, होइहि मार प्रसाद ॥

ऋषिआशिष प्रसन्नचित भयऊ ❀ छुटि बिषाद शोक सब गयऊ ॥
शशि समान तन भयो प्रकाशा ❀ योजनभरि पूरेउ पुनि बासा ॥
योजनभरि तन बहेउ सुगन्धा ❀ कह्यो नाम पुनि योजनगन्धा ॥
सत्यचरित भाषेउ निज श्यामा ❀ ताते सत्यवती तुव नामा ॥
यहकरि कीन्हे ऋषय चरित्रा ❀ भयउ दिवसमहँ रात्रि विचित्रा ॥
परेउ कुहिर दिनकर द्युतिनासा ❀ रमितभयो मुनि सहित हुलासा ॥
योजन भरि पूरयो पुनि बासा ❀ तन सुगन्ध दुर्गन्ध बिनासा ॥
निशिते सरिस भयो अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा ॥

होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हों ❀ कन्यारूप सदा तेहि कीन्हों ॥
यहि प्रकार मोहिं दै बरदाना ❀ ह्वै प्रसन्न मुनि कीन्ह पयाना ॥
जब ऋषीश निज मारग गयऊ ❀ भये प्रकाश कुहिर मिटि गयऊ ॥
तिनते भये ब्यास भगवाना ❀ प्रगटत बनको कीन्ह पयाना ॥

दोहा—सत्यवती भूपाल ते, कह निजकथा प्रमान ।
भणित पर्व उद्योग यह, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंह चौहानभाषाकृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

काम बिबश नृप बचन उचारे ❀ सत्यवती चलु भवन हमारे ॥
सब प्रकार तुव मम सुखदानी ❀ तुम कहँ लै करिहौं पटरानी ॥
करहु कवल नृप चलहुँ तुम्हारे ❀ होइ महीपति पुत्र हमारे ॥
तुव करार आवै केहि काजा ❀ करहि कवल भीषम सुनु राजा ॥
सुनि नरेश बहु दूत पठाये ❀ गङ्गासुतहि बोलि लै आये ॥
सत्यवती सुनि सकल प्रसंगा ❀ कीन प्रणाम प्रसन्नित अंगा ॥
चलहु पिता संग मातु व दारा ❀ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा ॥
सत्यवती सुनि आयसु दयऊ ❀ धनि पितुभक्त जगततुमभयऊ ॥
करहु कवल हमते युवराजा ❀ तनय हमार करै तब राजा ॥
चलौ भवन तब तुव पितु संगा ❀ देहु बीच जग पावनि गंगा ॥

दोहा—धर्म धुरन्धर धीर धर, देवअंश अवतार ।
तुमसम सत्य प्रतिज्ञ जग, भये न होनेहार ॥

बचन पालि तुम राज्य न लेहो ❀ निश्चय मम पुत्रन को देहो ॥
तुम्हरे बंश प्रबल सुत होई ❀ लेइ छिनाइ राज्य पुनि सोई ॥
तब शंतनु भीषम प्रति बोले ❀ हे सुत लेन नारि यह बोले ॥
कीन्हे बिन उपकार तुम्हारे ❀ नहिं चलिहै पुनि भवन हमारे ॥
यहि बिन मैं न जियउंसुनु शावक ❀ जारत मोहिं मदन बिनपावक ॥
शंतनु बचन शोक मम खोले ❀ सुनतहि तब गंगासुत बोले ॥
सुनहु पिता तुम मोर करारा ❀ निरखहुं मैं न नयन भरिदारा ॥

किमि ह्वै हैं सन्तन की साजा ❋ करिहौं सत्यवती सुत राजा ॥
मात पिता श्रीहरि गुरु आना ❋ सत्यवती सुनु बचन प्रमाना ॥
जैसे हम गङ्गा कहँ जानब ❋ त्यहितेसरिस मातु तुहिं मानब ॥
करि करार शुभ यान चढ़ाये ❋ नगर हस्तिनापुर लै आये ॥
सब प्रकार निज लायक जानी ❋ शंतनु नृप कीन्हेउ पटरानी ॥
चित्राङ्गद बिचित्र सुत जाके ❋ भये द्वै सरिवर नहिं ताके ॥
तन तजि नृप सुरपुर जब गयऊ ❋ चित्राङ्गदहि राज्य पुनि भयऊ ॥
गिरिकन्दरमहँ फिरत शिकारा ❋ प्रबल सिंह ताको बन मारा ॥
भये दुखित भीषम सुनि बाता ❋ अतिशयबिकल भई पुनि माता ॥
सहित धरा धन सेन समाजू ❋ दीन्ह बिचित्र बीर्य कहँ राजू ॥

दोहा—आज्ञा लीन्ही मातुकी, भीषम अति हरषाय।
काशिराजकी लै सुता, भ्राता ब्याहिनि आय ॥

याते राज्य न भीषम लीन्हा ❋ राज्य बिचित्र बीर्य कहँ दीन्हा ॥
रानिन बिबश भयउ नरनाहा ❋ रमित रैनि दिन सहित उछाहा ॥
राज काज नृप को सब भूला ❋ प्रतिदिन रहै नारि अनुकूला ॥
द्वादश बर्ष भवन ते राजा ❋ कढ़ेउ न जान्यो दूसर काजा ॥
गंगासुत कृत राज्य प्रचारा ❋ भूप दिवस निशि रमितबिहारा ॥
बल न रहेउ तन नारि प्रसंगा ❋ भयउ राज्ययक्ष्मा नृप अंगा ॥
त्यागेउ प्राण राज तेहि रोगा ❋ भये बिकल जन त्यहिके शोगा ॥
सत्यवती अति कीन्ह बिलापा ❋ भीषम उर उपज्यो परितापा ॥

दोहा—धरि धीरज बैठे भवन, दुखित नयन जलरोकि।
माता सों कीन्हों मतो, बंश बिहीन बिलोकि ॥

माता सुनहु ब्यास जो आवें ❋ कह भीषम वे बंश चलावें ॥
सुमिरत तुरत ब्यास मुनि आये ❋ अक्षमाल तन भस्म चढ़ाये ॥
जटा कलाप बार अति भूरे ❋ शोभित नयन अरुण पुनि रूरे ॥

उठि भीषम चरणन शिरनाये ❀ सत्यवती पुनि कराठ लगाये ॥
सादर सिंहासन बैठारे ❀ बिनय कीन्ह दुख हरो हमारे ॥
बंश बिहीन बन्धु तुम भयऊ ❀ भयो राजयक्ष्मा मरिगयऊ ॥
अबकरिकृपा ऋषि अवतंशा ❀ करिय प्रकट रानिन ते बंशा ॥
ब्यास मातु की आज्ञा मानी ❀ अन्तःपुर बैठे सुख मानी ॥
कालिहिहि कहेउ अम्बिका बोली ❀ मुनिशय्या तुम जाहु अमोली ॥
इनते सुत प्रकटो तुम जाई ❀ बाढ़ै बंश राज्य अधिकाई ॥

दोहा—कही अम्बिका मातु यह, बात न मोते होय ।
कुलटा कहिहैं लोग जग, जाय धर्म सब खोय ॥

पै है ब्यास बिष्णु अवतारा ❀ ब्यापि रहो सगरे संसारा ॥
तासु परस कीन्हे नहिं पापा ❀ अस मन समुझि तजो परितापा ॥
सत्यवती की आज्ञा मानी ❀ ऋषि ढिग गई अम्बिका रानी ॥
ब्यास तेज ते तन थहराई ❀ बैठि सकुच बश शीश नवाई ॥
जिमि हिमगत कमली कुम्हिलानी ❀ थके बचन मुख आव न बानी ॥
भयवश अङ्ग अङ्ग सब कांपी ❀ सुरत करत मुख लीन्हें झांपी ॥
गये ब्यास माता के पासा ❀ निकट बैठि यह बचन प्रकासा ॥

दोहा—सहि न सकीममतेजत्रिय, लिये ढांकि दृगबार ।
ह्वैहै याके मातु सुनु, अक्षबिहीन कुमार ॥

सत्यवती सुनि अतिदुख लहेऊ ❀ पुनि पुनि बचन पुत्रसों कहेऊ ॥
नयन बिना राजा अधिकारी ❀ होत नहीं सुत देखु बिचारी ॥
करहु प्रकट अम्बा ते बालक ❀ सो कुरुबंश होय प्रति पालक ॥
ब्यास मातु की आज्ञा मानो ❀ अन्तःपुर बैठे पुनि आनो ॥
कह अम्बा ते योजनगन्धा ❀ होइ अम्बिका के सुत अन्धा ॥
मुनिशय्या कहँ अब तुम जाहू ❀ उपजे पुत्र होइ नरनाहू ॥
आयसु मांगि गई मुनि तीरा ❀ देखि तेज भयो पीत शरीरा ॥
तब मुनीश आलिङ्गन कीन्हा ❀ होय भूपसुत आशिष दीन्हा ॥

यह कहि सत्यवती पहँ आये ❀ समाचार सब कहि समुझाये ॥

दोहा—सकल सुलक्षण होय सुत, महाराज के योग ।
पीतभई त्रिय देखि मोहिं, होय पीत तनरोग ॥

यह कहि बचन मातु के आगे ❀ सुमिरण करन ब्रह्म की लागे ॥
कह्यो मातु अब सुत सुनिलीजै ❀ अपने मन बिचार यह कीजै ॥
यहिते अधिक न दूसर शोगा ❀ अन्ध एक सुत यक युत रोगा ॥
देहु एक सुत अबकी बारा ❀ विष्णु भक्त जानै संसारा ॥
कहेउ व्यास माता सुनि लीजै ❀ शय्या पठै अम्बिका दीजै ॥
सत्यवती सुनि ताहि बोलाई ❀ सुनत अम्बिका शीश डोलाई ॥

दोहा—एक बार माता करौं, बचन तुम्हार प्रमान ।
बारमुखी समसो त्रिया, बार बार ऋतुदान ॥

सत्यवती कहि बालक काजा ❀ तुम ऋतु करौ छोड़िकै लाजा ॥
सासुहि निकट भली कहि आई ❀ मुनि समीप परिचरी पठाई ॥
भये रमित जानेउ मुनि रानी ❀ निलज देखि दासी पहिंचानी ॥
आये मुनि माता के आगे ❀ कथा समस्त कहन पुनि लागे ॥
याते होइहि प्रकट कुमारा ❀ परम भक्त जानहिं संसारा ॥
माता सत्य कहौं मैं तोहीं ❀ पुनि छलकीन्ह अम्बिका मोहीं ॥
मोहिं बिलोकि परम भयपाई ❀ पठई ओर आप नहिं आई ॥
निपट निलज्ज देख मैं सोई ❀ काशिराज की सुता न होई ॥

दोहा—माता सों यह कहि चले, मुनि बनको सुखपाइ ।
भये आम्बिका के तनय, धृतराष्ट्र्क तनआइ ॥

भे अम्बा के पाण्डुकुमारा ❀ बंश बिभूषणजग प्रतिपारा ॥
दासी योनि बिदुर अवतारा ❀ विष्णु भक्त अरु परम उदारा ॥
प्रथम अम्बिका के सुत भयऊ ❀ अन्ध जानिकै राज्य न दयऊ ॥
भीषम बाहुलीक मत कीन्हा ❀ अम्बा सुतहि राज्य नहिं दीन्हा ॥

पाण्डुहि सिंहासन बैठायो ❀ तिलक कियो शिर छत्र धरायो ॥
राज्ययोग पुनि राजकुमारा ❀ नाहिंन भ्रात जात अधिकारा ॥
यहि प्रकार हरि कहि समुझावा ❀ द्रुपद नरेश सुनत सुखपावा ॥
सुनि बलदेव कही यह बानी ❀ सुनहु बात यह शारँगपानी ॥
भीषम द्रोण करण धनुधारी ❀ दुर्योधन के आज्ञाकारी ॥
बिना युद्ध देइहि महि नाहीं ❀ जीति को सकै कृष्ण उनपाहीं ॥
करण समान बली संसारा ❀ नाहिंन प्रकट कौन करतारा ॥
हम अपने मन में करि बूझा ❀ को हरि करिहि करणते जूझा ॥
सुनतहि बचन नयन रतनारे ❀ भये क्रोध नहिं रहत सँभारे ॥

दोहा—बोले हरि बलदेव ते, भ्राता कराहिं बिचार ।
धर्मराज के अंशको, कौन छुँड़ावनहार ॥
करौं नाश कौरव सकल, जो न देइ नृप अंश ।
हतौंद्रोण भीषम करण, बाहुलीक युत बंश ॥

तदपि बली कुरु युध संसारा ❀ मोते रण नहिं तासु उबारा ॥
चक्रपाणि गहि मस्तक फारौं ❀ राज युधिष्ठिर को बैठारौं ॥
यह करतूति न करि दिखरावों ❀ नहिं बसुदेव को तनय कहावों ॥
मिटै न अंश धर्म नृप केरा ❀ गावै अयश जगत सब मेरा ॥
का बल देखि सुनो बलभाई ❀ करत करण की आपु बड़ाई ॥
अर्जुन भीमसेन बलदाई ❀ नहिं त्रिभुवन इनकी समताई ॥
अतिहठ हनूमान ते कीन्हा ❀ सकेन जीतिसखा करि लीन्हा ॥
ह्वै किरात गिरि पर रणकीता ❀ बनोबास जिन शंकर जीता ॥
असुर सेवन्त कवच बलवाना ❀ जाके रण सुरपति भय माना ॥
सो अर्जुन पलमहँ संहार्यो ❀ इन्द्रहि इन्द्रासन बैठार्यो ॥
जिन बाँधे शर सों सोपाना ❀ ऐरावत धरणी जिन आना ॥

दोहा—बाणन कीन्हा बाट नभ, हाथी लियो उतारि ।
कुन्ती सो पूजन कियो, सजल भई गन्धारि ॥

धनपति छांड़ो दण्डलै, जीते सब भूपाल ।
पारथ सो बलवान जग, भयहु न कवने काल ॥

जब बिराटपुर कौरव घेरा ❋ बेढ़ी गाय अहीरन टेरा ॥
भीषम द्रोण करण सब आये ❋ अर्जुन एक सबन बिचलाये ॥
एक एक सब मिलिमिलि लरेऊ ❋ तब उन पारथ को का करेऊ ॥
बाण न मारि सकल बिचलाये ❋ फेरी धेनु नगर फिरि लाये ॥
देव दैत्य दानव बलभारी ❋ जहँ लगि रचे सृष्टि बिधिझारी ॥
तीनों लोक अस्त्र गहि आवै ❋ पारथ सों रण जय नहि पावै ॥
सहदेव दक्षिण की जय कीन्हा ❋ लङ्का दण्ड बिभीषण लीन्हा ॥
नकुल बारुणी दिशि बलभारी ❋ जीत्यो सिन्धु तटी लघुझारी ॥
भीमसेन सब पूरब ओरा ❋ निजभुजबल जीत्यो बरजोरा ॥
यकचक नाग बकासुर मारा ❋ जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा ॥
मारि हिडम्ब हिडम्बी ब्याही ❋ बन्धु कोजीति सकै रण माही ॥
जिन मारो कीचक सो भाई ❋ सकै बन्धु को अंश छुड़ाई ॥
धमराज सरि को संसारा ❋ तजेउ न धर्म सहेउ दुख भारा ॥

दोहा—भीमपार्थ कीन्हों सकल, कौरवकुल संहार ।
धर्मराज के शत्रुको, मरत न लागी बार ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वसबलसिहचौहानभाषाकृते द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दोहा—प्रश्न बहुरि कुरुबंशमणि, दीन्हीपदाशिरनाइ ।
कहऋषिजनमेजयसुनौ, कथाश्रवणमनलाइ ॥

बल दिशि देखि बहुरि हरि बोले ❋ भ्राता सुनो कहत मैं खोले ॥
अनहित चहत धर्मसुत करा ❋ जान्यहु परम शत्रु सो मेरा ॥
कह बलदेव सुनहु हरि भ्राता ❋ रचिराख्यो यह कहल बिधाता ॥
तुम कहँ धर्मराज प्रिय जैसे ❋ मम प्रिय दुर्योधन नृप तैसे ॥
जो सात्यकी बीर बर होई ❋ मम संग्राम करै शठ सोई ॥

है यह बात मतेकी भाई ❀ कुरु पाण्डव की प्रीति निकाई ॥
कहि यह बचन विदा पुनि भयऊ ❀ बल चलि नगर द्वारकै गयऊ ॥
तब नृप कह्यउ सुनहु बनवारी ❀ कहेउ राम मत नीक बिचारी ॥
करत युद्ध कटिहै परिवारा ❀ मोकहँ जग कहिहै धिरकारा ॥
जैहैं बन्धु बन्धु सन मारे ❀ कहल नीक नहिं मन्त्र हमारे ॥
मिलै भूमि अरु मिटै लड़ाई ❀ सोई अब कीजै यदुराई ॥
कहेउ बिहँसि तब बाल कन्हाई ❀ अरि पर दया परम कदराई ॥
बैठि सबै सबको मत लीजै ❀ मिलै भूप महि सो अब कीजै ॥
कहेउ नकुल यह मन्त्र हमारा ❀ सुनहु सकल मिलिकरहु बिचारा ॥
सत्य बचन नृप सुनु हम पाहीं ❀ बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं ॥
भीमसेन अर्जुन मन भायउ ❀ कहेउ बन्धु भलमन्त्र दिखायउ ॥
द्रुपद बिराट कहे मत नीका ❀ तब बोलेउ यादव कुल टीका ॥

दोहा—कही कृष्ण भूपाल ते, सुनिये मन्त्र हमार ।
बिनदलसों कछुबल नहीं, बिदित सकलसंसार ॥
जहँलग तुम्हरे अंशके, भूमि भूप भुवराइ ।
साजिनिजदलआवैंसकल, दीजै पत्र पठाइ ॥

कह मुनि सुनहु बचन कुरुराई ❀ कथा बिचित्र श्रवण मनलाई ॥
सुनि हरि बचन नृपति मन भायो ❀ देश देश कहँ पत्र पठायो ॥
पुनि हरि द्वारावती सिधायो ❀ द्रुपदसेन हित निजपुर आयो ॥
सजि दल देश देशके राजा ❀ नृप बिराट पुर जुरो समाजा ॥
नगर चँदेरी के भूपाला ❀ धृष्टकेतु आये तेहि काला ॥
अक्षौहिणी चमू यक सङ्गा ❀ हय गज रथ पदचर बहुरङ्गा ॥
सब कवची खड्गी धनुधारी ❀ सबै शूर महाबल भारी ॥
उत्तर पुर बिराट नृप केरा ❀ कीन्हे धर्मराय कहि डेरा ॥
अक्षौहिणी धर्म नृप केरी ❀ भई नृपन की भीर घनेरी ॥
ताही समय द्रुपद नृप आये ❀ अक्षौहिणी सङ्ग निज लाये ॥

धृष्टद्युम्न पुत्र रण रंगी ❀ चौंसठि नृपति द्रुपद के संगी ॥
दूसर नृपति शिखण्डी आये ❀ भीषम बधहित बिधि उपजाये ॥
चारि बन्धु षट सुत दश नाती ❀ आयो अयुत द्रुपद के जाती ॥
सर्वे महारथी बल भारी ❀ सन्नाही खड्गी धनुधारी ॥

दोहा–शूरसेन आये तब, लै निजसेन गँभीर ।
कवची खड्गी कुण्डली, धनुधारी सब बीर ॥

जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ ❀ सेन सहित आये नृप तेऊ ॥
अक्षौहिणी एक सँग लीन्हे ❀ धर्मराज हित रण मन दीन्हे ॥
काशिराज की सेना आई ❀ अरु आये नृपगण समुदाई ॥
बाहर निकसि बिराट भुवारा ❀ उतरे शंख सहित परिवारा ॥
अक्षौहिणी संग निज लीन्हे ❀ डेरा धर्मराज ढिग कीन्हे ॥
गजरथ औ असवार पदाता ❀ अक्षौहिणी जुरेउ दल साता ॥
घटोत्कच निज साथ सिधायो ❀ पाँच कोटि राक्षस सँग लायो ॥
भूप पञ्चनद के जे बासी ❀ आये सेन सहित बलरासी ॥
भृङ्गी सिन्धु कच्छ के राई ❀ आये सकल समेत सहाई ॥
चालिस सहस जुरे तहँ राजा ❀ को बरणै नृप सेन समाजा ॥

दोहा–बन्धुन युत बैठे सभा, धर्मराज के रूप ।
जुरे आइ त्याहिथलसबै, देश देश के भूप ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा–जनमेजय मुनिते कह्यो, कहौ कथा मनलाइ ।
सुधि पाई कुरुनाथ जब, तबकसकीन्ह उपाइ ॥

चरवरमुख कुरुपति सुधि पाई ❀ जोर्यो कटक युधिष्ठिर राई ॥
तब नरेश मन शङ्का आई ❀ शकुनिकरण कहँ लीन्ह बोलाई ॥
द्रोणी और दुशासन आये ❀ बैठि सकल मिलि मन्त्र दृढ़ाये ॥
दुर्योधन कहि श्रवण सुनाई ❀ दूत वचन मुखपहँ सुधि पाई ॥

सुनत अजात शत्रु दल जोरा ❋ अक्षौहिणी सप्त घनघोरा ॥
सुनहु सचिव कीजै केहि भाँती ❋ भयबश परी नींद नहिं राती ॥
सुनि यह उतर करण तब दीन्हा ❋ नृप तुम शोच अकारथ कीन्हा ॥
पञ्च बन्धु सात्यकि यदुराई ❋ अरु नरेश सब शत्रु सहाई ॥
द्रुपद बिराट सेन सजि आवै ❋ मारौं सकल जान नहिं पावै ॥

दोहा–यम कुबेर बरुणेन्द्र मैं, जीति सकौं दिगपाल ।
मानुष मोते को जुरै, अभय होहु भूपाल ॥

सुनि यह बचन भूप सुख पायो ❋ साधु साधु करि हृदय लगायो ॥
कर्ण समान धर्म व्रतधारी ❋ नहिं त्रिभुवन हमार हितकारी ॥
तन मन बचन न जानै आना ❋ मम कारज नहिं दुर्लभ प्राना ॥
मिलै न हित दायक जग तोसे ❋ रहत सदा मैं करण भरोसे ॥
जा दिन युद्ध परै कठिनाई ❋ मित्र मित्रसुत करहिं सहाई ॥
पाण्डव निधन करण के लायक ❋ बन्धु सरिस मेरे हितदायक ॥
जब यहि भांति प्रशंस्यो ताहीं ❋ बोल्यो करि बिचार मनमाहीं ॥

दोहा–कियो रङ्क ते राउ तुम, राखत मान हमार ।
तिलतिलतनकटिकटिगिरहिं, ताकेप्रतिउपकार ॥

स्वामि काज लगि शीश समर्प्यो ❋ जुरे कालरण ताहि न डर्प्यो ॥
जुरे युद्ध करणी नृप मेरी ❋ देख्यो कहौं कहा बहुतेरी ॥
करि अतिक्रोध शिलीमुख जोरों ❋ शर सागर पाण्डव दल बोरों ॥
भूप न करिय शोक कछु जीमा ❋ सकैं जीति नहिं अर्जुन भीमा ॥
रणमहँ बाँधि युधिष्ठिर राई ❋ जयति पत्र देहौं लिखवाई ॥
मेरे बल समान नहिं पारथ ❋ सकै न जीति थकै पुरुषारथ ॥
सुनत तबै द्रोणी रिस बाढ़ो ❋ तीक्ष्ण बचन बदनते काढ़ो ॥
पारथ की सरि भट संसारा ❋ भयो जगत नहिं होनेउहारा ॥

दोहा–कह्यो द्रोणसुत भूप सुनु, ऐसो को संसार ।
पारथ शर अतिकठिन है, सहै युद्ध को भार ॥

सुनहु भूप अब कथा पुरानी ❀ पार्थ चरित मैं कहब बखानी ॥
प्रथम द्रोण अरु द्रुपद मिताई ❀ सो प्रसंग नृप सुनु चितलाई ॥
जब बिराट गणनाथ छिनावा ❀ हारि समर नृप कानन आवा ॥
मिले पिता नृप जमुना तीरा ❀ देखि युगल दृग भयो सनीरा ॥
गहिपद नृप प्रणाम तब कीन्हेउ ❀ होहुअभय मुनि आशिषदीन्हेउ ॥
भरद्वाज अरु प्रषद मिताई ❀ अतिशय नहीं सुनहु कुरुराई ॥
द्रोण द्रुपद खेलैं यक सङ्गा ❀ बढ़ी परस्पर प्रीति अभङ्ग ॥
कथा समस्त द्रपद जब कह्यऊ ❀ भये क्रोध सुनि द्रोण न सह्यऊ ॥

दोह—कहेउ द्रोण सुनुपै द्रुपद, बधिबिराटगणआजु ।
सकल देश पञ्चाल को, तुमहिं करावोंराजु ॥

बधि बिराट तोहिं राज करावों ❀ द्रोण नाम तब बिप्र कहावों ॥
हतौं शत्रु मैं एकै बाना ❀ तौ म्वहिं परशुराम की आना ॥
जे न मित्र दुख होहिं दुखारी ❀ ते अघमूल परहिं गे भारी ॥
अस कहि लीन्ह शरासनबाना ❀ द्रपद संग लै कीन्ह पयाना ॥
कहेउ भूप यह चलती बारा ❀ करौ निधन जो शत्रु हमारा ॥
आधो राज बिप्र सुनु तोरा ❀ पुनि मानब भरि जन्म निहोरा ॥
अस कहि नगरनिकट चलिआये ❀ पाणि शिलीमुख धनुष चढ़ाये ॥
सो सुनि सकल शत्रुगण धाये ❀ ब्रह्म अस्त्र ते द्रोण जराये ॥
द्रुपदहि सिंहासन बैठारा ❀ काढ़ेउ तिलक छत्र शिरधारा ॥
द्वादश बर्ष द्रोण सुनु राई ❀ बसे कम्पिला सुख अधिकाई ॥
हमरे हेतु धेनु मुनि यांची ❀ दयो नृपति करि बुद्धि पिशाची ॥
मित्र जानिकर शाप न दीन्हा ❀ करेउ न निधन नगर तजिदीन्हा ॥

दोहा—गजपुर को तब द्रोणमुनि, कीन्हों तुरतपयान ।
पहुँचे बासर सात महँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंहचौहान भाषाकृते चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दोहा—गेंद खेल खेलत सबै, जुरे बालकन साथ ॥
तुम फेंकेउ तब रोंकेऊ, भीम ओड़िकै हाथ ॥

छूँड़ेउ गेंद कूप में गयऊ ❀ तुमसबमिलि बिस्मय बशभयऊ ॥
ताही समय द्रोण तहँ आयेउ ❀ बालक रुदत देखि चुपकायेउ ॥
सींक धनुष शर द्रोण सँधानी ❀ गेंद काढ़ि दीन्हे तू आनी ॥
लिये तुरत भीषम पहँ आये ❀ सकल चरित बालकन सुनाये ॥
देखि पितामह मन अनुमानेउ ❀ आये द्रोण सत्य जिय जानेउ ॥
चलिकै मिले गङ्गसुत आई ❀ सभा मध्य लै गयो लेवाई ॥
अर्घपाद्य सिहासन दीन्हा ❀ चरण धोय चरणादक लीन्हा ॥
लक्ष धेनु पुनि दीन्ह बिप्राऊ ❀ दीन्हेउ बहुरि पञ्चशत गाऊ ॥

दोहा—जोरिपाणि कीन्ही बिनय, भीषमपद शिरनाय।
बालक सौंपे बोलि सबै, कीजै निपुण पढ़ाय॥

अस्त्रसिखाय निपुण जब कीन्हा ❀ तुम सबमिलि गुरुदक्षिणा दीन्हा ॥
अर्जुन दीन्हेउ जीति बदाऊ ❀ सहस एक दश संयुत गाऊ ॥
पद गहि बचन कह्यो यह सांचो ❀ आयसु करा चहौ जो यांचो ॥
कह अर्जुन आयसु जो दीजै ❀ आज्ञा होइ नाथ सो कीजै ॥
कह गुरु द्रब्य लेउँ नहिं तोरा ❀ कीजै सफल मनोरथ मोरा ॥
द्रुपद मित्र कीन्हो अपमाना ❀ ताते मांगत हैं यह दाना ॥
बांधि चरण तर दाबौ आई ❀ चुकेउ तात अभिमत मैं पाई ॥
कुरु पाराडव की मिली सहाई ❀ घेऱ्यो नगर कम्पिला गाई ॥
सुनेउ द्रुपद अरि सेना आई ❀ निकरेउ तुरत निशान बजाई ॥

दोहा—चारिचमू द्वै मिलिगई, भयो घोर संग्राम ।
हयगजरथ लाखन परे, सुभट कटे बहु नाम ॥

द्रुपद कर्ण ते सरस लड़ाई ❀ महा युद्ध कीन्हेउ प्रभुताई ॥
शोणित नाथ द्रुपद उर लागा ❀ क्रोध अनल उर अन्तर जागा ॥

हन्यो कर्ण के चारिउ घोरा ❋ असि निकारि सारथि शिरफोरा ॥
बिरथ देखि तब गे कुरुनायक ❋ धनुष तानि छाँड़े बहुशायक ॥
देखत युद्ध द्रुपद शर छाँड़त ❋ करते धनुष भूप तब डारत ॥
करिअति क्रोध बिशिख बहु त्याग्यो ❋ भई बिकल सेना सब भाग्यो ॥
भीमसेन लज्जा जिय आयो ❋ अर्जुन ते यह बचन सुनायो ॥
करि प्रण देन कहेउ तुम दाना ❋ अब कर गुरुहित पन्थ मशाना ॥
भा पारथ उर क्रोध कराला ❋ रिसबश भये बिलोचन लाला ॥
अर्जुन कहन सूतते लागे ❋ लै चलु हाँकि बेगि रथ आगे ॥
सुनि सारथी हांकि रथ दीन्हा ❋ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हा ॥
गांडिव धनुष बहुरि टंकोरा ❋ चौदह भुवन भयो खघोरा ॥
पुनि पारथ दीन्ह्यो शर जाला ❋ लीन्ह बाँधि रण द्रुपद बिहाला ॥
पकरि द्रोण चरणन पर डारा ❋ मित्र जानि मुनि नाहिंन मारा ॥
दीन्ह छुड़ाय द्रोण पांचाला ❋ सुनु अर्जुन करणी भूपाला ॥

दोहा—शरसों बारिधि बांधि जिन, जीतेउ पवनकुमार।
भयो न होनेहार कोउ, अर्जुन सरि संसार ॥

पारथ कीन्ह अमानुष करणी ❋ चितदै सुनहु कहब हम बरणी ॥
इन्द्रकील गिरि पर तपहेतू ❋ गयो मन्त्र साधन बृषकेतू ॥
तेहिथल धनुष बाण धरि दीन्हा ❋ करि आचमन देहुशुचि कीन्हा ॥
धरि उर ध्यान पार्थ तपसाधत ❋ करि ब्रतमौन शम्भु आराधत ॥
एक चरण द्वै भुजा उठाये ❋ शिव शिव रटत परम हितलाये ॥
तप साधत बीते बहुकाला ❋ भयउचरित यक सुनहु भुवाला ॥
प्रथमहिं भीम बकासुर मारा ❋ तासु बन्धु अतिशय बरिआरा ॥
पूर्व के बैर रोष बढ़ि आवा ❋ धरि बराह तन मारन धावा ॥
जब पारथ समीप नियराना ❋ सो चरित्र शंकर सब जाना ॥
गङ्गाधर पिनाकधर आये ❋ गणगणपति सब संग लगाये ॥

दोहा—धरि किरात तन हर चले, लिये हाथ हथियार।
रक्षा हित हरिमित्र की, करन असुर संहार ॥

अर्जुन ढिग शूकर नियराना ❀ शिव शर जोरि शरासनताना ॥
करि अति क्रोध अधमतम मारा ❀ आधो निकसि रहो शरपारा ॥
घुर घुरात पुनि पारथ ओरा ❀ चला असुर मारन करि शोरा ॥
परेउ श्रवण शूकर बर बोला ❀ सुनि खड्ग किरीटशिर खोला ॥
आवत यक बराह अति तीछे ❀ आयसु धृत किरात गण पीछे ॥
होइ सरोष लीन्हों तब चापा ❀ शरसंधान कीन्ह करि दापा ॥
यहि बिधि अर्जुन बाण प्रहारेउ ❀ निज प्रवेश हरशरहि निकारेउ ॥
कह शङ्कर यह मोर शिकारा ❀ मारेउ अधम न कीन्ह बिचारा ॥

दोहा—अरुण नयन भृकुटी कुटिल, बोलेपार्थ रिसात ।
समुझि कहत तुव बातनहिं, रे रे अधम किरात॥

नीचजाति अति अधम किराता ❀ मूरख समुझि न बोलत बाता ॥
मोते बचन कहत कटुबानी ❀ अब तुव मृत्यु आइ नियरानी ॥
अति बलहीन न बल तनमाहीं ❀ मानत अधम निहोरा नाहीं ॥
यह सुन गण क्रोधित होइ धाये ❀ बाणन मारि पार्थ बिचलाये ॥
परामुख द्विरद बदन नहिं जीते ❀ चले पराइ सकल भयभीते ॥
बिकल सकल तनु शुण्डिहलावत ❀ भागतशिव दिशि बचनसुनावत ॥
भागे सब किरातगण भारी ❀ बिन किरातपति भगे न हारी ॥
सुनि यह बचन शम्भु हँसि दीन्हा ❀ गहि पिनाक शायक करलीन्हा ॥
धूरजटी बहु बाण पँवारे ❀ अर्जुन काटि काटि महिडारे ॥
पारथ शर काटैं शूलीधर ❀ भयो युद्ध अति बिकल परस्पर ॥
बिजय बृहन्नल के संग्रामा ❀ लरत न करत शम्भु बिश्रामा ॥
तब चरित्र गौरीपति कीन्हों ❀ अक्षयतूण के शर हरि लीन्हों ॥
गांडिवधनुष बिजय तब लीन्हा ❀ करि अतिरोष प्रहारण कीन्हा ॥
गङ्गाधर कीन्हे हुंकारा ❀ फाटो धनुष भयो दुई फारा ॥

दोहा—तबै किरीट क्रोध करि, कीन्हेउ खड्ग प्रहार ।
तिलभरिकट्योनशम्भुतन, बिफलभयोअसिधार॥

अर्जुन मही डारि तरवारी ❋ मल्लयुद्ध पुनि कीन्ह प्रचारी ॥
लरि बिलगाहिं बहुरि पुनि लरहीं ❋ नाना भाँति दांव दोउ करहीं ॥
अर्जुन पद कहँ हाथ चलावा ❋ चहत उमापति भूमि गिरावा ॥
चरण परस कीन्हे जब हाथा ❋ बर ब्रूहि बोल्यो गिरनाथा ॥
अबमोहिं अति प्रसन्न जिय जानू ❋ मांगु तात अभिमत बरदानू ॥
असकहि शिव निजरूप देखावा ❋ पञ्चबदन शशिअर्द्ध सोहावा ॥
जटा कलाप शीश पुनि गङ्गा ❋ चढ़ी सकल तन भस्म अभङ्गा ॥
हृदय कपाल माल बिकराला ❋ उठत त्रिपञ्च नयनमहँ ज्वाला ॥
अहि हैं भूषण दिग्पट धारी ❋ अर्द्ध अङ्ग गिरिराजकुमारी ॥
अभय एक कर यक बरदाना ❋ एक पाणिमहँ शूल महाना ॥

दोहा—एक पाणि डमरू लिये, नीलकण्ठ भगवान ।
बार बार कह पार्थ ते, मांगु मांगु बरदान ॥

जीते बिना युद्ध गिरिजापति ❋ मैं बरदान न तुमने माँगति ॥
बिन जीते रण मौलि मयङ्का ❋ बर मांगों बड़ कुलहि कलङ्का ॥
प्रथमहि बिजयपत्र लिखिदीजे ❋ पुनि बर देहु कृपा प्रभु कीजे ॥
तुव पद सप्तकोटि हरि आना ❋ ऐसे नहिं मांगो बरदाना ॥
हम हारे सुत संग तुम्हारे ❋ होइहो बिजय प्रसाद हमारे ॥
सुनि यह बचन पार्थ अनुरागे ❋ अस्तुति करन जोरि कर लागे ॥
जय गिरिजापति जय कामारी ❋ चतुर बदन सेवति भुजचारी ॥
शारद शेष चरित तुव गावत ❋ निगम नेति कहि पारन पावत ॥
बारहिंबार शक्रसुत भाखा ❋ निजप्रण टारि मोर प्रण राखा ॥
अस कहि परे चरण अकुलाई ❋ पाहि पाहि प्रभु जन सुखदाई ॥
गङ्गाधर त्रिशूलधर शंकर ❋ दुष्टदलन पालन निज किंकर ॥
नीलकण्ठ सितकण्ठ शम्भु हर ❋ महाकाल कंकाल कृपाकर ॥

दोहा—शृंगी शूली धूरजटि, कुण्डलीश त्रिपुरारि ।
बृषाकपर्दी मानहर, मृत्युञ्जय कामारि ॥

जयति सदाशिव सबगुणरासी ❀ काशीपति कैलास निवासी ॥
सुनि यह गिरा मग न हर भयऊ ❀ पारथ को याबिधि बर दयऊ ॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❀ नाश होयँ सब शत्रु तुम्हारे ॥
होइहैं सुफल सकल जे काजू ❀ मिलिहैं तुमहिं अकराटक राजू ॥
यह कहि हर सब अस्त्र सिखायो ❀ पुनि पशुपतिको भेद बतायो ॥
परै पार्थ जन कठिन मशाना ❀ तादिन शर कीजै संधाना ॥
छूटत प्रलय शत्रु दल होई ❀ त्रिभुवन रोंकिसकै नहिं कोई ॥
यहि बिधि अर्जुन को बरदयऊ ❀ अन्तर्द्धान उमापति भयऊ ॥
यक बलिष्ठ पुनि शिव बरदाना ❀ कहहु भूप को पार्थ समाना ॥
कहेउ बचन इमि द्रोण कुमारा ❀ समुझाये बहु भांति भुवारा ॥

दोहा—गुरुबांधवमुख बचनसुनि, मौन भयोमहिपाल ।
पुनिशकुनी बोलउबहुरि, सबलसिंह उत्ताल ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंहचौहान भाषाकृते पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दोहा—मन्त्रहमारबिचारकरि, सुनुमणिसमुझिभुवार ।
सबलशत्रु तुव धर्मसुत, जोरेउ सेन अपार ॥

जोरेउ धर्मराज निज पच्छी ❀ तुम दलहीन बात नहिं अच्छी ॥
अबलग भूप चेत नहिं कीन्हा ❀ देश काल कछु परत न चीन्हा ॥
पठवो पत्र करहु चित चेता ❀ आवहिं नृप सब सेन समेता ॥
तुम जानत हो भीम सुभाऊ ❀ अवसर परे न चूकत दाऊ ॥
अरि दलयुक्त आपु दल हीना ❀ करि बैठे कछु कर्म अलीना ॥
सुनहु सकल मैं कहत पुकारे ❀ फिरि सँभरिहि नहिं नाथसँभारे ॥
बोलहु सकल भूप अब राई ❀ अब बिलम्ब महँ कौन उपाई ॥
वरपर चढ़े खेल महँ भीमा ❀ डारउ अवनि क्रोधकरि जीमा ॥
राखत सदा बैर जिय माने ❀ लखि प्रताप तुव रहत डराने ॥
जो बलहीन भीम करि पावै ❀ भूप तुमहि यमलोक पठावै ॥

दोहा—निजकरणीनरपालतुम, देखहु चितहि बिचारि।
कसेहु जँजीरन सकलतन, दियो गङ्गमहँ डारि॥

सो सुधि भूप हिये महँ भूली ❋ अजहुं उठत हिये महँ शूली ॥
पठवहु पत्र न करहु बिलम्बा ❋ क्षिति पति आवैं सहित कुटुम्बा॥
है जेहिके जितनी नृप सामा ❋ आवैं साजि करन संग्रामा ॥
खोलि पत्र सबको लिखिदीजै ❋ अब कछु भूप बिलम्ब न कीजै ॥
सुनत नरेश परम सुख पाये ❋ देश देश कहँ पत्र पठाये ॥
श्री पत्रिका दीन्ह सहिदानी ❋ चलेउ राज कर आयसु मानी ॥
सुनिकै निदेश पुहुमिपति राजा ❋ आये सकल समेत समाजा ॥
आये मगहराज भगदत्ता ❋ असी लक्ष जाके मदमत्ता ॥
रथनपती अरु बाजि अनेका ❋ अक्षौहिणी संग दल एका ॥
गदा चर्म असि तूण सोहाये ❋ महापिनाक रूप दरशाये ॥
रङ्ग रङ्ग के सङ्ग पताका ❋ अति उतङ्ग जनु चुम्बतिनाका ॥
बाजत बाजन बिबिध प्रकारा ❋ पणव धेनुमुख शंख नगारा ॥

दोहा—ऐरावत गज को सुत, दीन्हो तेहि सुरपाल॥
मन्दर ते उन्नत कछुक, देह बिशाल कराल ॥

चारिउ चरण स्रवत मद धारा ❋ जनु झरना जल बहत पहारा ॥
दन्त बिशाल श्वेत सुर भङ्गा ❋ मानहुँ रजत शैलके शृङ्गा ॥
कञ्चन मणिमय रुचिर अँबारी ❋ गजमुक्ता झालरि शुभकारी ॥
तापर मगहराज असवारी ❋ देखि स्वरूप शत्रु भयकारी ॥
निन्नानबे संग लै राजा ❋ चलेउ साजि निजसेन समाजा ॥
युद्ध हेत सब साज बनाये ❋ यहि प्रकार गजपुर कहँ आये ॥
पुनि आयो कलिङ्ग दल साजी ❋ अगणित रथ पदाति अरु बाजी ॥
सौ बान्धव अतिशय बलभारे ❋ द्विरद लक्ष बहु सँग मतवारे ॥
द्वादश नृपति संग बलदाई ❋ सेन बिचित्र बरणि नहिं जाई ॥
टोप सनाह पाणि दस्ताना ❋ असी लक्ष लीन्हे धनुबाना ॥

दोहा—पटह भेरि करि शंखधुनि, घुमंत लाल निशान ।
आयोसाजिगजपुरकटक, नृपकालिङ्ग बलवान ॥

नगर हस्तिनापुरी समीपा ❀ निजनिजरुचिकृत शिबिरमहीपा ॥
आयो यमनराज त्यहि काला ❀ एकबिंश लीन्हे महिपाला ॥
महाबली सब तेज तुरंगा ❀ अक्षौहिणी अनी यक संगा ॥
बड़े धनुष अरु कवच बिशाला ❀ नील बसन तन वेष कराला ॥
हैं सब एक जाति के काछी ❀ अस्त्र शस्त्र धृत सेना आछी ॥
नील रङ्ग के श्याम पताके ❀ पवन लगे निर्तत नभ बांके ॥
बाजत बिपुल अरंबी बाजा ❀ चढ़ि आयो लै सेन समाजा ॥

दोहा—अक्षौहिणी कलिङ्ग की, परी गङ्ग के तीर ।
तासु निकट कीन्हे शिबिर, यमनाधिप रणधीर ॥

सुनि आयो तहँ सुरथकुमारा ❀ सिन्धु नरेश बीर बरिआरा ॥
बड़े धनुर्द्धर अति बलखानी ❀ नाम जयद्रथ शिव बरदानी ॥
त्रिभुवन विदित जान सब कोई ❀ नृप दुर्योधन कर बहनोई ॥
गजरथ बाजि पदाति अपारा ❀ बाजत गोमुख शंख नगारा ॥
जाके दलहि ध्वजा पँचरङ्गा ❀ अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा ॥
कुण्डि बर्म तूणी धनु बाणा ❀ धरे बीर सब चर्म कृपाणा ॥
हस्ती रथ कोउ तुरँग सवारी ❀ सप्त सहस्र भूप बल भारी ॥
नगर हस्तिनापुर चलि आये ❀ कियेशिबिर निज निजमनभाये ॥

दोहा—निज निजरुचि डेराकरत, प्रमुदित हियेभुवार ।
दुर्योधन आदर किये, कियेबिबिधसतकार ॥

सजि सजि सेन नरेश अनेका ❀ आये शूर एक ते एका ॥
यहि प्रकार आये सब भूपा ❀ कीन्हशिबिरसब निज अनुरूपा ॥
प्रथम दूत कुरुखेत पठाये ❀ सुनिसुधि दनुजराज चलिआये ॥
नाम अलम्बुष बीर अभङ्गा ❀ सात कोटि दानवदल सङ्गा ॥

नाना बाहन आयुध धारी ❀ मेचक बरण घटा जनु कारी ॥
नाना बिधि माया सब जाने ❀ तृणसमान तिहुँलोकहि माने ॥
दानव राज द्विरद असवारी ❀ गर्जत पुनिपुनि अतिबल भारी ॥
पितुकरम धुज बिदित जग जासू ❀ बलिसुत बानि पितामह तासू ॥
निजभुजबल सुरगण सब जीते ❀ रहत सुरेश जासु भय भीते ॥
कह मुनि सुनहु कथा कुरुराई ❀ दल न होइ जनु पावस आई ॥
श्यामघटा मस निशिचर धारी ❀ बिज्जुछटा असिपाणि उधारी ॥
सघन घटा बिच पाँति बलाकी ❀ गर्जत रव सोहात अतिबाँकी ॥

दोहा—गजघण्टा भेरी पटह, गरजतअतिमनुजाद ।
नग रहास्तिनापुरनिकट, भयो भयंकर नाद ॥

कौतुक हेत बिबुध गण आये ❀ देखनको बिमान नभ छाये ॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सुधि पाई ❀ बाहर मिलेउ नगर के आई ॥
कीन्हेउ युगल परस्पर भेंटा ❀ कुशल पूछि मन संशय मेटा ॥
करि सन्मान अलम्बुष केरा ❀ पुनि महीप करवायो डेरा ॥
सभामध्य फिरि गयउ कुमारा ❀ भइ बड़ि भोर राज्य दरबारा ॥
ताही समय शल्य नृप आये ❀ अक्षौहिणी सँग यक लाये ॥
सभामध्य कुरुपति सुधि पाई ❀ कीन्ह मन्त्र सब सचिव बोलाई ॥
बोलेउ शकुनि भरत कुल टीका ❀ मोते सुनिय मन्त्र यह नीका ॥

दोहा—मिलिय सपदिआगेनिसरि, करिबहुआदरभाय।
देइ निमन्त्रण युद्ध को, शल्यलेब अपनाय ॥

सब मिलि यहै मन्त्र दृढ़ कीन्हा ❀ आगे चलि कौरवपति लीन्हा ॥
मिलतउभय अभिबादन कीन्ह्यो ❀ तब कुरुनाथ निमन्त्रण दीन्ह्यो ॥
मातुल चलहु हमारे धामा ❀ आये लेन हेत संग्रामा ॥
उन के कृष्ण सहायक ऐहैं ❀ ताको सरि हम काह लगै हैं ॥
मातुल सुनु प्रसाद बिन तोरे ❀ होइँ न सकल मनोरथ मोरे ॥

सुनिकै शल्य कही मृदुबानी ❀ सुनहु नरेश परम सज्ञानी ॥
धर्मराज नहिं मोहिं बोलाये ❀ हम सुधि पाइ आपुते आये ॥
तुम चलि प्रथम निमन्त्रण दीन्हा ❀ मोहिं महीप अपन करि लीन्हा ॥
हम छाँड़ो भैनेन कर संगा ❀ सबते लरब भूप तुव संगा ॥

दोहा—भीम पार्थ सहदेव पुनि, नकुल सबन कर मोह ।
त्यागे तुम्हरे हेत नृप, धर्मराज ते छोह ॥

तजि नाते को नेह बिचारा ❀ अब दीन्हे हम संग तुम्हारा ॥
अब नृप धर्मराज पहँ जाइब ❀ आतुर भेंटि सपदि पुनि आइब ॥
यहाँ राखि सब सेन समाजा ❀ आवहु देखि युधिष्ठिर राजा ॥
गजपुर राखि सेन सब बाँकी ❀ चला भूप चढ़ि यान यकाकी ॥
घुरघुरात रथ चक्र कराला ❀ मृदुरव करत किंकिणी जाला ॥
श्वेत संग फहरात पताके ❀ पवन लगे मिलत नभ बाँके ॥
मिले न बर्ष त्रयोदश बीती ❀ दरश लालसा की अति प्रीती ॥
पुलकित गात नयन जलछाये ❀ यहि प्रकार बिराटपुर आये ॥

दोहा—दरश लालसा उर अधिक, को कवि सकै बखान ।
यहि बिधि आयो शल्यनृप, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्व सबलसिंह चौहान भाषाकृते षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

धर्मनरेश सभा सुधि पाई ❀ द्वारपाल इमि जाइ जनाई ॥
शल्य आगमन सुनि सुख पाये ❀ लेन हेत नृप भीम पठाये ॥
द्वार जाय अभिबादन कीन्हों ❀ मातुल निरखि आशिषहि दीन्हों ॥
रथ तजि चले प्रथम अनुरागे ❀ भेंटउ भीमसेन बढ़ि आगे ॥
पुलकित गात नयन जल छाये ❀ कुशल पूछि तन ताप बुझाये ॥
युगल प्रसन्न भये मिल जीमा ❀ आये सभा शल्य अरु भीमा ॥
आवत निकट धर्मसुत देखी ❀ मिले प्रेमयुत हर्ष बिशेखी ॥
कुशल पूछि तन आनँद छाये ❀ पुलकित नयन सजल ह्वै आये ॥
करत प्रणाम नकुल सहदेऊ ❀ मिलेउ बहोरि सजलदृग तेऊ ॥

तेहि अवसर पारथ तहँ आये ❋ मातुल देखि चषन जलछाये ॥
कीन्ह प्रणाम निकटभये ठाढ़े ❋ मिले बहुरि अतिआनँद बाढ़े ॥
अभिबादन तब करत नराटा ❋ मिले पार्थसुत द्रुपद बिराटा ॥
पुनि आयो द्रौपदी कुमारा ❋ भेंटत पुनि पुनि करत जुहारा ॥

दोहा—सभामध्य नृप शल्य कहँ, तब लैगयो भुवार ।
बहुप्रकार आदर कियो, खान पान अधिकार ॥

शल्य नरेश कुशल बहु भांती ❋ पूछत नृपहिं जुड़ावत छाती ॥
अहहतात बिधिगति बलवाना ❋ बनबसि सहेउ दुसहदुखआना ॥
तेरह बर्ष बिपिन महँ बीती ❋ कुरुनन्दन यह कीन्ह अनीती ॥
तात कीन्ह छल सभा बुलाई ❋ कपट द्यूत करि भूमि छुड़ाई ॥
वह अति कीन्ह शकुनछलकारी ❋ धर्म नरेश धर्म ब्रतधारी ॥
जब ते तुम कहँ देश छुड़ावा ❋ तबते हम दारुण दुखपावा ॥
तुम्हरे बिरह दिवस अरु राती ❋ तलफतरह्यों जरत नित छाती ॥
गत तेरह संबत सुधि पाई ❋ तुम्हैं देखि गये नयन जुड़ाई ॥

दोहा—आयोतुम्हरे मिलनको, छन कीन्हे कुरुनाथ ।
दयोनिमन्त्रण युद्धको, करिलीन्होंनिजहाथ ॥

या महँ धर्म अधर्म बिचारी ❋ कहौ करौं सिखमानि तुम्हारी ॥
वहां गये बिन धर्म नशाई ❋ छांड़त तुमहिं परम कठिनाई ॥
तुमते नहिं दूसर संसारा ❋ जाननहार धर्म ब्यवहारा ॥
तज्यो न धर्म सकल तजि दीन्हा ❋ त्यागेउ ना बचनै मग लीन्हा ॥
तुम भगिनी सुत पांचो भाई ❋ मोरे प्राणन ते अधिकाई ॥
कहो बिचारि करौं अब सोई ❋ जाते धर्म लोप नहिं होई ॥
सुनतहि धर्मराज हँसि बोले ❋ मातुल सुनहु कहत मैं खोले ॥
क्षत्रीधर्म कठिन नृप एहा ❋ ताते त्यागहु तुम सन्देहा ॥

दोहा—दियोनिमन्त्रण युद्ध को, उन लीन्हों अपनाय ।
कीन्हेंऔर बिचार अब, क्षत्रीधर्म नशाय ॥

तुम अब दुर्योधन के ओका ❋ मातुल जाउ तज्यो सब शोका ॥
तुम कौरव की कीन्ह गोहारी ❋ अर्जुन कर्ण बैर है भारी ॥
समरभूमि दोनों बलधामो ❋ जब जुरि करहिं कठिन संग्रामा ॥
आपु कर्ण की निन्दा कीजै ❋ मांगत हौं मांगे यह दीजै ॥
कहेउ शल्य सुनिये भुवराई ❋ कारण सकल कहो समुझाई ॥
निन्दा किये कर्ण की राजा ❋ यामें सुफल बनत तुव काजा ॥
सो सुनि धर्मराज हँसि दीन्हा ❋ ते उत्तर मातुल कहँ दीन्हा ॥
निज निन्दा सुनि शत्रु प्रशंसा ❋ घटिहै शल्य कर्ण को अंशा ॥

दोहा—निजहीनी अरु शत्रुकी, सुनत बड़ाई कान ।
रिसबशह्वैकै कर्ण तब, सूधे लगिहै बान ॥

यह कहि धर्मराज समुझाये ❋ एवमस्तु कहि शल्य सिधाये ॥
बाहर नगर भीम पहुँचाये ❋ बिदाभये पुनि शीश नवाये ॥
दै अशीश नृप शल्य सुजाना ❋ पुनि मतङ्गपुर गत बलवाना ॥
दुर्योधन आदर करिलीन्हा ❋ प्रीतिसहित अभिबादन कीन्हा ॥
उत्तम सदन शिबिर करवाये ❋ सुनहु भूप अब चरित सुहाये ॥
नगर कौशिली को महिपाला ❋ बृहदबली आयो तिहिकाला ॥
अति दल चलत धरा पुनि हाली ❋ सूर्यबंश की धरे प्रणाली ॥
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठायो ❋ आदर ते सब शिबिर करायो ॥

दोहा—बहु प्रकार सतकार करि, खानपान सन्मान ।
मिलतशिबिरानितप्रातिअधिक, सबलसिंहचौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंहचौहान भाषाकृते सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

दोहा—हरिपद पङ्कज ध्यानधरि, ऋषयनयन जलपूरि ।
कहमुनिजनमेजयसुनहु, कथाअमियरसभूरि ॥

नगर अवन्ती ते चलिआयो ❋ भूप बिन्द अनुबिन्द सुहायो ॥
लीन्हें संग चमू चतुरङ्गा ❋ रथ पदाति गज बाजि अभङ्गा ॥

युधामन्यु अरु बीर तमोजा ❀ आये सेन सहित काम्बोजा ॥
राजा राजपुत्र बलवाना ❀ आये अमितकटक बिधि नाना ॥
सेनासहित उलूक नरेशा ❀ पुनि गजपुर महँ कीन्ह प्रवेशा ॥
जुरेउ हस्तिनापुरी समाजा ❀ साठि सहस्र छत्रधर राजा ॥
इहां युधिष्ठिर पार्थ बुलाये ❀ भ्राता सुनहु कृष्ण नहिं आये ॥
ताते तुम लै आवहु जाई ❀ दरश पाइ गत बिपति बुझाई ॥
अर्जुन नृप की आज्ञा पाई ❀ चले तुरन्त चरण शिरनाई ॥
बेगवन्त जोते रथ बाजी ❀ लायहु तुरत सारथी साजी ॥
चले किरीटी अति हरषाई ❀ चले जोवत मग वार न लाई ॥
सतयें दिवस गोमती तीरा ❀ उतरि अन्हाये निर्मल नीरा ॥

दोहा—जल निर्मल गम्भीर अति, बनज बिपुल बहुरंग।
मधुप मत्त गुञ्जत भ्रमत, कलरव करत बिहंग॥

आगे चलि द्वारावति देखी ❀ मनमें भवन बिचित्र बिशेखी ॥
कनकरचित मणि खचित देवाला ❀ अष्टद्वार पुर त्राण बिशाला ॥
अति गँभीर जलयुत षद्वाना ❀ उठत तरङ्ग पयोधि समाना ॥
श्वेत रक्त मणि हरित बँधावा ❀ परम अनुप रुचि रूप सुहावा ॥
दक्षिण ओर समुद्र विराजा ❀ पश्चिम दिशि रैवत गिरिराजा ॥
कोटिन पुर महँ उड़त पतङ्गा ❀ हंस मयूर कपोत बिहङ्गा ॥
निर्त्तत कोटिन केतु पताका ❀ अति उतङ्ग जनु चुम्बत नाका ॥
कोटिन गज कुन्तल लै आवैं ❀ सरित घाट महँ नीर पियावैं ॥
करत बिहार द्विरद मतवारे ❀ गिरिसम बपुष जूल ते कारे ॥
कोटिन बाज साहनी आवैं ❀ नीर पियाइ नदी अन्हवावैं ॥

दोहा—अति उतङ्ग पुरद्वार शुभ, मणिमय मञ्जुकेवार।
कोटिन दरबानी खड़े, लिये हाथ हथियार ॥

कोटिन मणिमय रुचिर कँगूरा ❀ अतिउतङ्ग नभ परसत जूरा ॥

जम्बूनद मणिगणयुत आना ❋ शोभित सुभग सुरेश समाना ॥
रङ्ग रङ्ग रत्नन की भाशा ❋ रविकर परसत करत प्रकाशा ॥
पुर शोभा कुन्ती सुत देखत ❋ जीवन जन्म सुफल करि लेखत ॥
यहि बिधि पवँरि द्वार चलि आये ❋ दरबानिन लखि शीश नवाये ॥
कहे बचन सुधि करत तुम्हारी ❋ संध्या समय रहे बनवारी ॥
रुक्मिणी मन्दिर ते कढ़िआई ❋ सात्यकि सों इमि बचन सुनाई ॥
बीते युगल मास सुनु भाई ❋ अर्जुन की कछु सुधि नहिं पाई ॥
ताते बेगि बिलम्ब न कीजै ❋ लोचन लाहु निरखि चलिलीजै ॥
अस कहि शयन भवन मन दीन्हा ❋ अर्जुन सुनत हर्ष मन कीन्हा ॥
तेहि अवसर दुर्योधन आये ❋ शयन किये यदुनन्दन पाये ॥
ताके हृदय गर्ब नहिं थोरा ❋ बैठेउ जाइ शिरहने ओरा ॥
गये पार्थ सोवत यदुनाथा ❋ ठाढ़भये सन्मुख करि माथा ॥

दोहा—परसि चरण ठाढ़े भये, हरि पायन की ओर ।
हिये प्रीति अति मन बिमल, श्रीसुरराजकिशोर ॥

ताही समय जक्तपति जागे ❋ देखेउ पारथ पांयन आगे ॥
उठे सप्रेम देखि बनवारी ❋ मिलन हेतु द्वौ भुजा पसारी ॥
अर्जुन गहे चरण लपटाई ❋ भुज गहि हरि लीन्हे उरलाई ॥
कुशल प्रश्न पूछेउ बहु भांती ❋ पुनिपुनि मिलत जुड़ावत छाती ॥
तेहि अवसर कुरुनन्दन आये ❋ अभिबादन कहि आप जनाये ॥
यदुपति कुरुनाथहि पहिंचाना ❋ मिले बहुत बिधि करि सन्माना ॥
गहि भुज लै समीप बैठाये ❋ पूछेहु नृप केहि कारण आये ॥
हँसि बोले दुर्योधन राजा ❋ सुनहु कृष्ण आयहुँ जेहिकाजा ॥

दोहा—करो सहाय हमार तुम, जो कीन्हो बहु बोध ।
बहुत कहा तुमते कहैं, जानत बंश बिरोध ॥

ताते तजि अब पाण्डव सङ्गा ❋ तुम हरि होहु हमारे अंगा ॥

क्षत्री धर्म सुनहु यदुराई ❀ जाके भवन प्रथम जो जाई ॥
सो ताही को होइ सहायक ❀ करहु बिचारे होहु जो लायक ॥
आयउँ भवन प्रथम मैं तुम्हरे ❀ हे हरि होहु सहायक हमरे ॥
सुनि यदुपति बोले मुसक्याई ❀ दल बल हीन युधिष्ठिरराई ॥
निजआगम कह आपु बिशेखा ❀ हम प्रथमहि पारथ को देखा ॥
बचन हमार भूप सुनि लीजै ❀ करहु बिचार बेगि सो कीजै ॥
यह कहिकै हरि माया प्रेरी ❀ बरबस जाय तासु मति फेरी ॥

दोहा—चारि लक्ष गोपालगण, बाहन अश्व समेत ।
एकबार हम शस्त्र बिन, कहो भूप को लेत ॥

होत प्रथम छोटे को ऊरा ❀ पाछे लेइ जेठ को पूरा ॥
यह कहि बिहँसे शारङ्ग पानी ❀ मुख देखत माया लपटानी ॥
ज्ञान भङ्ग दुर्योधन भयऊ ❀ हरिमुखनिरखिबचन यह कह्यऊ ॥
हे हरि नटवर बेष तुम्हारा ❀ ढाचत गावत लै परदारा ॥
गजपुर सजि आये सब राजा ❀ तिनमहं कौन तुम्हारो काजा ॥
ताते हरि सेना हम लीन्हेउ ❀ तुमकहँ हम अर्जुन को दीन्हेउ ॥

दोहा—कह्यो किरीटी बिहँसि तब सुनिये यादवराइ ।
आपु हमारे पग धरिय, दल कोऊ लैजाइ ॥

सुनि हरिगण गोपाल बोलाये ❀ मणिमयकुण्डल मुकुट सोहाये ॥
मणिमय भूषण हार बिराजत ❀ जटितबसन तन शोभा छाजत ॥
मणिमय कवच बड़े धनुधारी ❀ शोभित मनहुँ बरात सुधारी ॥
कञ्चन मणिमय स्यन्दन भारी ❀ गजमुक्ता झालरि छबिभारी ॥
सो दल दुर्योधन कहँ दीन्हा ❀ करिसनमानबिदा प्रभु कीन्हा ॥
भयो प्रसन्न हिये महिपाला ❀ चलेउ संग लै गणगोपाला ॥
गयो बहोरि जहाँ बलदेवा ❀ चरण परसि बिनयी बहुसेवा ॥
अर्जुन साथ जात यदुनाथा ❀ चलहु संग म्वहिंकरहु सनाथा ॥
उन पाण्डवको कीन्ह सहारा ❀ सब प्रकार मैं दास तुम्हारा ॥

दोहा—भये युधिष्ठर ओर हरि, सो जानत सबभव ।
मनसा बाचा कर्मणा, मैं तुम्हार बलदेव ॥
असकहि परेउ चरण कुरुनायक ❋ नाथ कृपा करि होहु सहायक ॥
राखत सदा भरोस तम्हारा ❋ तुम बिन कौन मोर रखवारा ॥
हलधर सुनेउ भूप की बानी ❋ बोले बचन दीन अति जानी ॥
हम इत हरि उत बात न नीकी ❋ सनहु कहौं तुम्हरे हित हीकी ॥
लेहु सेन सङ्ग मन्त्र हमारा ❋ होइ सोइ जो लिख करतारा ॥
असकहि लक्ष दीन सङ्ग योधा ❋ बिदा कीन्ह बहुभाँति प्रबोधा ॥
दुर्योधन लै सङ्ग सिधाये ❋ कृतवर्मा के मन्दिर आये ॥
देखत कृत नृप आसन दीन्हा ❋ बहु प्रकार ते आदर कीन्हा ॥

दोहा—बैठारे आसन विमल, करिबहुविधिसतकार ।
कुशलप्रश्न पूछत नृपहि, अतिहित बारहिंबार ॥
अहो भूप कछु आज्ञा दीजै ❋ करि अनुकंप काज सोइ कीजै ॥
अतिशय कृपा करी कुरुनाथा ❋ तुव आगम मैं भयों सनाथा ॥
सुनि दुर्योधन बचन सुनाये ❋ सुनहु भूप जेहि कारण आये ॥
सो जानी सब बात तुम्हारी ❋ पाण्डव हमैं बैर है भारी ॥
उनके साथ आपु बनवारी ❋ तुम नृप करहु सहाय हमारी ॥
सो सुनि कृतबर्मा तब बोले ❋ धीर बीर अरु समर अडोले ॥
भूप तुम्हार साथ हम दीन्हा ❋ यह प्रण मैं निश्चय करिकीन्हा ॥
यह सुनिकै सेना हँकराई ❋ भयउ अरूढ़ निशान बजाई ॥
लीन्हे साथ चमू चतुरङ्गा ❋ अक्षौहिणी एक नृप सङ्गा ॥
कीन्ह हस्तिनापुरी प्रवेशा ❋ करवायो तेहि शिविर नरेशा ॥
सेन बिचित्र देखि सुख माना ❋ जीते युद्ध शकुनि मन जाना ॥
कर्ण दुशासन बहुत अनन्दे ❋ पुनि पुनि कुरुनन्दनपद बन्दे ॥
यह सुधि धृतराष्ट्रक सुनि पाई ❋ बहु अनन्द नहिं हृदय समाई ॥
यहाँ कृष्ण अर्जुन संग लीन्हें ❋ अन्तःपुर प्रवेश प्रभु कीन्हे ॥

रुक्मिणि सतभामादिक नारी ❋ आई सुनि अर्जुन कहँ भारी ॥
बैठे पार्थ सहित बनवारी ❋ सतभामा तब चरण पखारी ॥
जाम्बवती जल भाजन लाई ❋ पान दान लक्ष्मणा लै आई ॥
रुक्मिणि अतरदान कर लीन्हे ❋ सतभामा भोजनहित कीन्हे ॥
यहि प्रकार आठौ पटरानी ❋ अतिहित करतकृष्ण प्रियजानी ॥

दोहा—हरि समेत भोजन किये, दियो रुक्मणीपान ।
सतभामादिक नारि सब, करत बिबिध सन्मान ॥
कुशल प्रश्न पूछो सबन, अति हित बारम्बार ।
है अभिमनु नीके तहाँ, सबके प्राण अधार ॥

सो सुधि पाइ देवकी आई ❋ देखि युगलतन आनँद छाई ॥
हरि अर्जुन उठि कीन्ह प्रणामा ❋ दीन्ह अशीश होइ मनकामा ॥
माता पुनि पुनि कण्ठ लगाई ❋ बोली बचन नयन जल छाई ॥
तुम बिन रहेउ हिये अति शोका ❋ तेरह बर्ष बादि अवलोका ॥
सुनहु कृष्ण जो मन्त्र हमारा ❋ प्राणहु ते मोहिं अधिक पियारा ॥
तुमहिं त्यागि कहिं और न जाना ❋ रक्षा तुम कीजै भगवाना ॥
कहि अस बचन देवकी रानी ❋ अर्जुन कहँ सौंप्यो गहि पानी ॥
हरि उठि अर्जुन बार नलाये ❋ बसुदेवहि के मंदिर चलिआये ॥

दोहा—करि प्रणाम अर्जुन सहित, कहेउ कृष्णसबभेव ।
दै अशीश आनन्द सों, बिदा किये बसुदेव ॥

निकरि पवँरि ते बाहर आयो ❋ तब श्रीहरि सात्यकी बुलाया ॥
होहु तयार सेन सजि भाई ❋ हेरत बाट युधिष्ठिर राई ॥
सुनि सात्यकि निज सेनहँकारी ❋ आयुध बांधि लीन्ह असवारी ॥
दारुक नाम सारथी साजी ❋ स्यन्दनभानु जानु लखि लाजी ॥
सुग्रीवादिक हय मनिआई ❋ भे अरूढ़ हरि शंख बजाई ॥
भुज गहि अर्जुन सँग चढ़ाये ❋ पवन बेग रथ हाँकि चलाये ॥
गमनी संग चमू चतुरङ्गा ❋ उठी धूरि छपि गयउ पतङ्गा ॥

पारथ पूछत बिबिध कहानी ❋ कहत जात मग शारँगपानी ॥

दोहा—पारथ पुछेउ जोरि कर, कहिये श्रीभगवान ।
शत्रुबिजयअरुमोरहित, सबलसिंह चौहान ॥

इति उद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृतेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कहेउ कृष्ण अब सुनु मत मोरा ❋ यामों है अर्जुन हित तोरा ॥
होइहै सकलशत्रु की नासा ❋ मिलिहिराज्यतोहिंबिनहिंप्रयासा ॥
जाके अंश मोर अवतारा ❋ पालत सृजत हरत संसारा ॥
शुमिरण करत शक्ति तुम सोई ❋ पूरण सकल मनोरथ होई ॥
सुमिरण कीन्ह शक्र फल पावा ❋ जेहि प्रसाद शुरनाथ कहावा ॥
बिधि कर्ता अरु हर संहर्ता ❋ जाशु प्रसाद विष्णु जगभर्ता ॥
पारथ करत ताशु को ध्याना ❋ सब प्रकार होइहि कल्याना ॥
सो जानहु सब मोर स्वरूपा ❋ प्रकृति पुरुष है एक स्वरूपा ॥
करहिं भेद जे नर अज्ञाना ❋ परहिं नरक पावहिं दुख नाना ॥

दोहा—भयउ बोध अर्जुन कहेउ, कहिये श्रीभगवान ।
जेहि प्रकार ते कीजये, परमशक्तिको ध्यान ॥

प्रेमातुर जानेहु भगवाना ❋ लागे कहन शक्ति को ध्याना ॥
दिशा बसन अरु शक्तिकराला ❋ पहिरे उर मुण्डन के माला ॥
अङ्ग अङ्ग अहिभूषण नाना ❋ शिवारूढ़ अरु बसत मशाना ॥
मुक्तकेश अरु बदन पसारे ❋ जिह्वाललन दशन भयकारे ॥
निकसत अरुण नयन त्रैज्वाला ❋ अष्टबाहु तन श्याम तमाला ॥
घुरघुर शब्द सहित घनघोरा ❋ शिवानाद पूरित चहुँ ओरा ॥
मुण्ड एक कर एक कृपाना ❋ यक कर अभय एक कर दाना ॥
एक पाणि मदिरा कर भाजन ❋ एक पाणि शृंगीहितु बाजन ॥

दोहा—एक हाथ में खड्ग धर, यक शूली बर धार ।
उठन प्रभा नभ तेजको, रवि शत कोटि अपार ॥

यहि प्रकार हरि भेद बताया ❀ अर्जुन नयन मूंदि तब ध्यायो ॥
कीन्ह ध्यान तण एक बहोरी ❀ अस्तुति करत दोउ करजोरी ॥
यज गिरिजा जयप्रणत पालिका ❀ अशुरराज मृगयुद्ध जालिका ॥
महिष मर्दिनी मातु कालिका ❀ नितभक्तनको बिपतिघालिका ॥
जय जय जय महिषासुरमर्दिनि ❀ अजा कुजा जय मातु कर्पादनि ॥
शिवा शम्भुघरणी शिवदूती ❀ जेहिसुमिरे जग सकल बिभूती ॥
चराड मुराडदलनी अरु चराडी ❀ ललितालिलितरूप खलखराडी ॥
धूमावती सती तुव सीता ❀ होहिं काम सबअरिगण जीता ॥
रिपुखराडन तुव नाम पुनीता ❀ शीशहि जटा कराठ शुभ गीता ॥
तारा तरणि तारनी गंगा ❀ त्रैपुर की त्रैताप विभंगा ॥
कुला कुरू कुरु कुल महरानी ❀ गिरा हरा जय जय श्रीबानी ॥

दोहा—छिन्ना तू बगलामुखी, बाराही जगमाय।
चरणशरण जगदम्बिका, कीजै बेगिसहाय ॥
करौ राज्य राज्येश्वरी, मातंगी दुखहानि।
दण्ड दै दुष्ट निपातिकै, राखिलहु जन जानि ॥

साचीं दुखदलनीं जय बाला ❀ करहु कृपा अब होहु दयाला ॥
प्रकट्यो एक गगनथल ज्वाला ❀ अस्तुति करैं देव दिगपाला ॥
ब्योम गिरा यह भयो महाना ❀ मांगु मांगु अर्जुन बरदाना ॥
गगन गिरा सुनि मन हर्षाई ❀ बोलेउ पार्थ चरण शिरनाई ॥
शत्रु बिजय अरु नृप कल्याना ❀ मांगत मान देहु बरदाना ॥
ह्वै प्रसन्न सुनि अर्जुन बानी ❀ एवमस्तु कहि गई भवानी ॥
तब दारुक हय हांकि चलायो ❀ चले मरुत गति बारन लायो ॥
सात्यकि चले कृष्ण रथ सङ्गा ❀ लीन्हें साथ चमू चतुरङ्गा ॥
गयउ युधिष्ठिर कटक समीपा ❀ किये शिबरतब सकल महीपा ॥
जहँ जहँ कोटिन तनिनबिताना ❀ जहँ तहँ बाजैं नौबतिखाना ॥
गर्जत गज हिंसत बहु घोरा ❀ हाहाकार शब्द चहुँ ओरा ॥

पुर बिराट दल जुरेउ अपारा ❀ नहिं कोउ काहू जाननहारा ॥
होत नाद घरियार घनेरा ❀ धुवां देखि परखिय नृप डेरा ॥

दोहा-अन्ध धुन्ध दल नृपनके, परत न कतहूँ जानि ।
रंग रंग झण्डा गड़े, भूपन की पहिचान ॥

तब दारुक हरि रथहि चलावा ❀ पँवरि अजातशत्रु की लावा ॥
द्वारपाल तब जाइ जनाये ❀ महाराज हरि अर्जुन आये ॥
बहुत अनन्द भूप मन कीन्हों ❀ बाहर निकसि पँवरिते लीन्हों ॥
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा ❀ रथते उतरि मिलेउ यदुनाथा ॥
अर्जुन मिलेउ चरण गहि धाई ❀ दीन्ह अशीश युधिष्ठिर राई ॥
कृष्णसमेत सभा पुनि आई ❀ बैठे अति प्रसन्न सुख पाई ॥
प्रभु कहँ सिंहासन बैठारा ❀ बहुविधि नृप कीन्हे सतकारा ॥
चरण धोइ चरणोदक लीन्हा ❀ पावन भवन सींचि जलकीन्हा ॥
तेहि अवसर भीमादिक भाई ❀ परसे चरण कृष्ण के आई ॥

दोहा-प्रीतिसहितयदुवंशमणि, भेंटे हृदय लगाय ।
बैठारे सनमान करि, हर्षसहित सुख पाय ॥

दुइ कर जोरि कृष्ण के आगे ❀ बिनती करन धर्मसुत लागे ॥
हे प्रभु तुव करतूति महाना ❀ थके चारिश्रुति अन्त न जाना ॥
महिमा अमित बेद जो गावत ❀ नेतिनेति कहिनेति सुनावत ॥
सहस बदन सो शेष बखानत ❀ पुनि सोउ कहतपार नहिं जानत ॥
शारद सनकादिक सुर नाना ❀ बिधि नारद केहु पार न जाना ॥
शिव सामर्थ्य जानि सब पावा ❀ बहु प्रकार कहि नेति सुनावा ॥
यद्यपि निर्गुण वेद बखाना ❀ जनहित सगुण होत भगवाना ॥
मत्स्यरूप धरि वेद उधार्‌यो ❀ हे प्रभु तुम शङ्खासुर मार्‌यो ॥

दोहा-हाटकदृग धरणी हरी, सो लै गयो पताल ।
कीन्हांबिनयसुरद्यौसानिशि, भयोप्रकटततकाल ॥

धरि बराह बपु श्रीभगवानो ❋ पैठि सिन्धु महँ धरे विषाना ॥
अधम कनकलोचन तुम मारा ❋ कीन्हेउ बहुरि धरणि बिस्तारा ॥
ब्याकुलजन प्रहलादहि जानी ❋ होइ नरहरि मार्‍यो अभिमानी ॥
हरणाकुश निज लोक पठावा ❋ हरी बिपति हरिदास बचावा ॥
कमठरूप धरि मन्दर लीन्हों ❋ मथ्यो पयोधिसुरन सुखदीन्हों ॥
मधु दै नाथ असुर बौरायो ❋ किये असुरसुर सुधा पिआयो ॥
ह्वै बामन अमरेश बचायो ❋ बलिछलि बांधि पताल पठायो ॥
पुनि प्रभु परशुराम बपु धारेउ ❋ अधम नरेश नाश करिडारेउ ॥
सकल भूमि को भार उतारा ❋ कीन्हो बहुरि धर्म बिस्तारा ॥

दोहा—देखि देखि महादेव दुख, धरणि बिलोकि अनाथ।
कीन्ह दया प्रभु अवधपुर, प्रगट भये रघुनाथ ॥

रावण कुम्भकरण खल मारा ❋ करि सनाथ महिभार उतारा ॥
कृष्ण रूप अब मम हित कारण ❋ कीन्हेउ नाथ धरणिपर धारण ॥
जय मधुमुर अघनरक बिनाशन ❋ चक्रपाणि जय श्रीगरुड़ासन ॥
केशी कंस हने चाणूरा ❋ मुष्टिक असुर शकट अघकूरा ॥
जय बृन्दाबन बिपिन बिहारी ❋ महिमा अगम अपार तुम्हारी ॥
होतहि प्रकट पूतना मारो ❋ हरी ताप यशुदा की भारी ॥
तृणावर्त्त बौंडर ह्वै आवा ❋ कराठ चापि प्रभु मारि गिरावा ॥
मारेउ अधम भूप शिशुपाला ❋ काटेउ सकल भूमि को शाला ॥
बिप्र शुदामा दारिद नाशा ❋ पूजी सब प्रकार प्रभु आशा ॥
जहँ तहँ परे दास तुव गाढ़े ❋ करि सहाय संकट ते काढ़े ॥
गहेउ ग्राह गज कीन्ह पुकारा ❋ आवत नाथ न लागी बारा ॥
ग्राह मारि निज कीन्ह पुकारा ❋ मिटीबिपतिगज बिनय सुनावा ॥
परी बिपति प्रहलाद पुकारा ❋ पबि ते प्रकट न लागी बारा ॥
असुर मारि पठयो निज लोका ❋ निजसेवक कहँ कोन बिशोका ॥
दशमुख हति बैकुराठ पठायो ❋ भयबिशोक सुर मुनि सुख पायो ॥
तैसेहि कृपादृष्टि अवलोकी ❋ हरहुबिपतिम्वहिंकरहु बिशोकी ॥

दोहा—अस कहि भूपति पद गहे, पाहि पाहि यादौन ।
काटहु संकट बिकट अब, हे दयाल दुखदौन ॥
ह्वै प्रसन्न यदुबंशमणि, तब बोले हरषाय ।
गई बिपति धीरज धरहु, धर्मपुत्र भुवराय ॥
शरणागतपालक बिरद, बिदित भार संसार ।
ताते अब तन मन बचन, करब सहाय तुम्हार ॥

इति उद्योगपर्वभाषासबलसिंहचौहानबिरचितेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अस नृप सुनहु कथा मनलाई ❀ हरि सुधि पाइ द्रौपदी आई ॥
परशे चरण प्रेमयुत आनी ❀ नयननीर मुख कहत न बानी ॥
हरिहि देखिकै रोवन लागी ❀ बिह्वल बचन शोक ते पागी ॥
हे प्रभु जब तुम यज्ञ कराई ❀ द्वारावती गये यदुराई ॥
तब जो भई अवस्था मेरी ❀ सो अब सुनहु जानि निज चेरी ॥
बिभव देखि कुरुपतिहि न भावा ❀ होइ उदास निज मन्दिर आवा ॥
शकुनी करण दुशासन आये ❀ बैठि सबन मिलि मन्त्र दृढ़ाये ॥
दल बटोरि करि युद्ध दरेरा ❀ लीजै राज्य पाण्डवन केरा ॥
करि मत बुद्धिचक्षु यह आई ❀ सकल कथा तिनकहिसमुझाई ॥

दोहा—बिन समझे अज्ञानते, तुम मानत मन रोष ।
अबसुतकरहुबिरोधजानि, उनकरकछुनहिंदोष ॥

उनते युद्ध न तुम बरिऐहो ❀ बिना काज कत बैर बढ़ैहो ॥
कह्यो भूप तुम कहत बिलौकी ❀ हमरे मते मन्त्र नहिं नीकी ॥
उनकहँ दीन बिभव करतारा ❀ तुमहिं उचितनहिं करब बिगारा ॥
बोले शकुनि तेज छलकारी ❀ सुनहु भूप यह बात हमारी ॥
युद्ध करहु जनि नृप अज्ञानी ❀ हारिजीति कछु परत न जानी ॥
मोहिं अक्ष बिद्या निपुणाई ❀ लेइय जीति खेलि प्रभुताई ॥

जीते ख्याल बिरोध न होई ❋ काढ़िय द्रव्य हीन करि सोई ॥
सुनि मत धृतराष्ट्रक मन भाये ❋ द्यूत हेत उन नृपति बोलाये ॥
गये नरेश सहित परिवारा ❋ सभय द्यूत को बर्णों पारा ॥
धरत दांव शकुनी यह भाखै ❋ जीतौं जीति लेउ नृप राखै ॥
जीतौं राज्य पाट भंडारा ❋ हयगज रथ समेत परिवारा ॥
नहिं कछु भूपति धर्म बिचारो ❋ चारिउ बन्धु अपनपौ हारो ॥
कह्यो शकुनि अब जो कछु होई ❋ धरहु भूप हम जीतैं सोई ॥
कह नृप धरहु द्रौपदी रानी ❋ जीतब तेह कही यह बानी ॥
यह कहि शकुनी पांसा डारे ❋ जीतेउ कुरू धर्मसुत हारे ॥

दोहा—भये दुखित भीषम विदुर द्रोण रहे शिरनाय ।
गये सभा ते उठि तुरत, बाह्लीक अकुलाय ।

शकुनी कर्ण बहुत हरषाना ❋ अतिशय सुख दुर्योधन माना ॥
कहेउ प्रात कामी ते बोली ❋ मैं जीती नृपनारि अमोली ॥
द्रुपद सुता पाराडव की रानी ❋ ताकहँ मोहिं मिलावहु आनी ॥
कहेउ सँदेश धर्मसुत हारी ❋ अब तुम दासी भइउ हमारी ॥
मैं अभिमत रूपहि पर तोरे ❋ बैठहु आनि जङ्घ पर मोरे ॥
सकल नरेश आनि त्यहि कहेऊ ❋ पाराडवनाथ क्रोध उर दहेऊ ॥
रिस करि कहेउ धीर धरि गाढ़ा ❋ ये रे अधम दूरि रहु ठाढ़ा ॥
हम कौरवपति के रिपु तोहू ❋ नीच सँभारि न बोलत तोहू ॥
तू शठ मोर प्रभाव न जाना ❋ बोलत बचन सहित अभिमाना ॥
यह सुनि भानमती रिसवाई ❋ जानत नीच मृत्यु तव आई ॥
सुनि अस बचन बहुत भय पावा ❋ सूत बहुरि कुरुपतिपहँ आवा ॥
सुनत सँदेश बहुत दुख मानी ❋ नहिं आवत कौरवपतिरानी ॥

दोहा—दुश्शासन ते बोलके, कहेउ भूप रिसवाय ।
गहिकै केश घसीटकै, तुम लै आवहु जाय ॥

यहिकी बात सकल मैं जानी ❋ लावा सो न भीम भयमानी ॥

सुनत बचन दुश्शासन आवा ❀ चलहु बेगि तोहिं भूप बोलावा ॥
यहि बिधि बचन दुश्शासनकीन्हा ❀ सुनु यदुनाथ उतरु हम दीन्हा ॥
पूछति सत्य दुशासन चौंको ❀ हारे प्रथम भूप की मोकों ॥
जो नृप प्रथम अपनपौ हारा ❀ भये दास नहिं नात हमारा ॥
हारो होय प्रथम मोहिं राजा ❀ दासी होत न मोको लाजा ॥
सुनत दुशासन अति रिसमानी ❀ गहिकै केश सभामहँ आनी ॥
तब यदुनाथ मोहिं रिस लागी ❀ कहेउ छोड़ मम केश अभागी ॥
रजस्वला मैं यक पट धारी ❀ मुञ्च मुञ्च रे शठ अपकारी ॥

दोहा—सभामध्य बैठे सबै, कौरव कुल सरदार ।
लियेजातमोकहँनिलज, करत अधम अपकार ॥

कसरिस करत पतिन तोरिहारी ❀ अब तुम दासी भई हमारी ॥
चेरिन केरि कवन बड़ि लाजा ❀ चलु बोलत दुर्योधन राजा ॥
मम गति देखि सकल रनिवासू ❀ करत बिलाप ढरत दृग आंसू ॥
सो सुधि गन्धारी सुनि पाई ❀ करि बिलाप पाछे उठि धाई ॥
छूटे बार न चीर सँभारा ❀ हा पुत्री कहि करत पुकारा ॥
जब लग काढ़ि भवनते रानी ❀ तब लग नीच सभामहँ आनी ॥
भीषम बिदुर नाइ शिर लीन्हा ❀ कृप अरु द्रोण शोच जिय कीन्हा ॥
शकुनी कर्ण बहुत सुख पावा ❀ दुर्योधन यहि भाँति सुनावा ॥

दोहा—दुश्शासन ते तब कह्यो, दुर्योधन मुसक्याय ।
बस्त्रहीन करि जघ पर, बैठारो त्रिय आय ॥

सुनियहबचन शकुनि हँसि दीन्हा ❀ बिकरण देखि क्रोध जिय कीन्हा ॥
उचित न तोहिं कौरवकुल राजा ❀ कहत बिलोकि बचन तजिलाजा ॥
जेठ बन्धु त्रिय मातु समाना ❀ बरणत आगम निगम पुराना ॥
नाथ मानि अब बिनय हमारी ❀ छोड़ि देहु अब द्रुपद कुमारी ॥
तुव कीरति जग पूर्ण मयङ्का ❀ जनि लावहु नृपकुलहि कलङ्का ॥
जब बिकर्ण यहि भाँति बखाना ❀ सुनत बचन तब कर्ण रिसाना ॥

अबहिं न बैस तोरि मतलायक ❀ जाहु भवन खेलहु धनुशायक ॥
सुनि यह बचन भवन ह्वै रहेऊ ❀ दुश्शासन ते तब नृप कहेऊ ॥

दोहा—नागिनिकरौतुमद्रौपदी, निजकर बसनउतारि ।
बैठारौ लै जंघ पर, यह रुचि बन्धु हमारि ॥

भीषम द्रोण रहे चुप साधी ❀ पकरेसि बसन अधम अपराधी ॥
लागेउ खैंचन चीर अभागी ❀ भई बिकल मैं रोवन लागी ॥
मम गति देखि पतिन दुख पावा ❀ अश्रुपात करि महि शिरनावा ॥
टूटी आस भयउ दुख भारी ❀ दीनबन्धु मैं तुम्हैं पुकारी ॥
हा यादवपति हा दामोदर ❀ हे माधव हे हलधर सोदर ॥
हे गोबिन्द गिरिधर बनवारी ❀ कृष्ण कृष्ण कहि शरण पुकारी ॥
हे मुरलीधर राधानायक ❀ बासुदेव अब होहु सहायक ॥
खैंचत बसन कुमारगगामी ❀ राखहु लाज दया करि स्वामी ॥
नाथ बसन महँ आपु समाने ❀ रही लाज कौरव खिसियाने ॥
खैंचत बस्त्र दुशासन हारा ❀ अम्बर के लागे अम्बारा ॥
यह चरित्र देखा सब काहू ❀ हाली धरा भयो दिग्दाहू ॥
बिन घन आसमान घहराना ❀ कौरवसभा सबहि भयमाना ॥
भूप यज्ञशाला महँ आई ❀ शिवा शब्द कीन्हो अधिकाई ॥
बोलत रासभ श्वान कुमारा ❀ गगन दुष्ट पक्षी गण त्तारा ॥
खैंचत थकेउ दुशासन बासन ❀ बसन छोड़ि बैठ्यो निज आसन ॥
शीश नाय नृप बैठ उदासा ❀ छकितभये सब देखि तमासा ॥

दोहा—अम्बरहीनाबिलोकिनृप, बोलिसकेउनहिंबयन ।
रक्षा कीन्हो करि कृपा, तुव प्रभु पङ्कजनयन ॥
तर्जोलाजअर्जुननकुल, धर्मराज भय मानि ।
सहादेव बोले कछुक, भीमसेन बल खानि ॥

कहत द्रौपदी करि करि रोसा ❀ मोहिंन कुन्तिहि सुतन भरोसा ॥

इन पतितन कछु पति न हमारी ❋ तुम रक्षा कीन्ही बनवारी ॥
पूछेउ धृतराष्ट्रक संजय सों ❋ होत कहा कहिये सो मोसों ॥
अक्षिहीन कछु परत न जानी ❋ सुनि संजय कछु कथा बखानी ॥
दुश्शासनहिं दीन्ह दुरिआई ❋ करिप्रबोधभ्रहिं निकट बोलाई ॥
कीन्ह कुत्तिमैं नहिं कछु जाना ❋ मांगु मांगु पुत्री बरदाना ॥
बुद्धिचक्षु करि क्रोध अपारा ❋ बार बार पुत्रन धिक्कारा ॥
तेहि अवसर गन्धारी आई ❋ देखि अनीति सुतन रिसवाई ॥
कहेउ बिलोक कर्म भ्रम त्यागो ❋ परिहौ नरक असाधु अभागी ॥

दोहा–धृतराष्टक अति प्रीति ते, कहेउ मांगु बरदान ।
दासभाव निज पाण्डुसुत, मैं माँगौ भगवान ॥

बाहन अस्त्र पतिन के देहू ❋ बिदाकरिय अबकरि नृप नेहू ॥
कहो भूप दीन्हों मैं तोहीं ❋ प्राणसमान सुता तुव मोहीं ॥
बुद्धिहीन इन कीन्ह कुकर्मा ❋ छांड़िनि लोकलाज कुलधर्मा ॥
धर्मराइ दुर्योधन पोचन ❋ कहत सत्य मोरे द्वै लोचन ॥
यह सकोच जानौ जिय भोरे ❋ प्राणन अतिशय हैं प्रिय मोरे ॥
द्रुपदसुता मम बचन प्रमाना ❋ अब तुम मांगिलेहु बरदाना ॥
अब न मनोरथ पूजा आशा ❋ यहि अन्तरपुनि बचन प्रकाशा ॥
अभिमत मिलौ कृपा भय तोरे ❋ तव प्रसाद होइहि सब मोरे ॥
क्षत्री लेइ तीन बरदाना ❋ बिप्र चारि मांगै नहि आना ॥
दुइ बैश्यस्य शूद्र कहि एका ❋ मांगै और होइ अविवेका ॥

दोहा–बाहन अस्त्र देवाइकै, बिदा कीन्ह महिपाल ।
परसिचरणनिजचढिरथन, चलेभवनतेहिकाल ॥

सौबल नाम शकुनि को भाई ❋ मिल्यो पन्थ महँ गयउलेवाई ॥
प्रीति समेत सभा बैठायहु ❋ बहुरि सार पांसा मँगवायहु ॥
बरजत रहेउ सकल परिवारा ❋ मिटै न जो प्रभु होनेहारा ॥
लीन्हो अक्ष बदी यह बाजू ❋ द्वादश बर्ष तजै सो राजू ॥

बिपिन बास करि बर्ष बिताई ❋ करै न अन्न अशन फलखाई ॥
वर्ष दिवस करि पुर अज्ञाता ❋ करै निवास जानि नहिं जाता ॥
लीन्हे खोज बहुरि बन जावै ❋ काल बिताइराज पुनि पावै ॥
रहेउ न कछुक भूप हरि ज्ञाना ❋ धरो दांव कहि बचन प्रमाना ॥
लीन्हों अक्ष शकुनि छलकारी ❋ दीन्हों डारि गये नृप हारी ॥

दोहा—होइउदासभूपालतब, बनकहँ कीन्ह पयान ।
कीन्ह प्रतिज्ञा क्रोधकरि, भीमसेन बलवान ॥

निन्दा कीन्ह अधम तैं मोरी ❋ आई मीचु दुशासन तोरी ॥
जेहि कर केश गहे अभिमानी ❋ गहे बसन नँगिआवन रानी ॥
सभा मांझ खल कानि न मानी ❋ सो उखारि डारों तुव पानी ॥
बहुरि जङ्घ ठोंकी कुरुनाथा ❋ तोरों जङ्घ गदा गहि हाथा ॥
सुनहु सकल निजकाल बिताई ❋ कृष्ण शपथ करिहौं सब आई ॥
सत्य बचन हरि सत्य हमारा ❋ करिहौं सब कौरव संहारा ॥
अर्जुन कही कर्ण के आगे ❋ हँस्यो मोहिं सबते भ्रम त्यागे ॥
शरन मारि जरजर तन तोरा ❋ करिहौं कृष्ण सत्य प्रण मोरा ॥
सहदेवहु शकुनी तब बोले ❋ बिषधर मनहुँ बिषै रस खोले ॥

दोहा—द्यूत हराये नीच तोहिं, करि छलको अधिकार ।
होइहि मोरे कारनते, शकुनी मरण तुम्हार ॥

बधौं तोहिं नहिं अवधि बिताई ❋ मोहिं युधिष्ठिर भूप दोहाई ॥
येही भाँति नकुल बनवारी ❋ सभा मध्य कीन्हों प्रण भारी ॥
सहदेव कह्यो शकुनि तू जैसे ❋ कह्यो शल्य ते राजा तैसे ॥
हँसेउ मोहिं कछु कानि न मानी ❋ करि बहुबार कितव अभिमानी ॥
बीते काल न तोकहँ मारौं ❋ तौ नहिं धनुष बाण कर धारौं ॥
मोरे उर उपजा अति रोसा ❋ प्रण कीन्हों कहि नाथ भरोसा ॥
करि अस्नान रुधिर तुव धारा ❋ बाँधौ तब दुश्शासन बारा ॥
तुव बल प्रण ठानउँ यदुराई ❋ उचित होइ तस करिय उपाई ॥

पुनि हम पञ्च पाराडुसुत रानो ❀ श्रीमुख भगिनी कहत बखानो ॥
तेइ तुम साक्षात भगवाना ❀ पाराडव हैं अतिशय बलवाना ॥
तिनहिं अछत यह हाल हमारा ❀ यथा अनाथ नाथ बिन दारा ॥
तेरह बर्ष न बांधे केशा ❀ फिरत अजहुँ बिधवाके भेशा ॥

दोहा—सुन्यो द्रौपदी के बचन, लोचल मोचत बारि ।
कहो प्रतिज्ञा कीन्ह सो, होइहि सत्य तुम्हारि ॥
सबलसिंह चौहान कहि, भक्तिबश्य भगवान ।
बैठारो पुनि द्रौपदी, करिबहुबिधिसनमान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वे सबलसिंह चौहान भाषाकृतेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

पूछेउ सुनि जनमेजय राई ❀ कथा बिचित्र कहो मुनि गाई ॥
सुनत श्रवण नहिं तृप्त हमारा ❀ कहिये नाथ सहित बिस्तारा ॥
भयो प्रसन्न सुनत नृपबानी ❀ लागे कहन कथा मुनि ज्ञानी ॥
तेहि अवसर आये सब राजा ❀ कृष्ण सहित जहँ भूपतिराजा ॥
नाइ नाइ शिर हरिहि जो हारा ❀ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा ॥
ताहो समय द्रुपद नृप आये ❀ सुतन सहित हरि पद शिरनाये ॥
देखि नृपहिं बसुदेव कुमारा ❀ मिले बहुरि आसन बैठारा ॥
परसे चरण बिराट भुवाला ❀ सनमाने तब दीनदयाला ॥
कह्यो भूप सुनिये यदुराई ❀ अब करिये प्रभु कौन उपाई ॥
हे हरि यतन बतावहु सोई ❀ जामहँ मोहिं परम हित होई ॥
मोसम को जग और सभागी ❀ अति दुखसह्यो बन्धुजेहिलागी ॥
मोसम दुखी सुनहु भगवाना ❀ भयो न भूपर भूपति आना ॥
जान्यो कृष्ण भूप दुख पावा ❀ कहि सुरराज कथा समुझावा ॥

दोहा—वृत्रासुर को बधन करि, भये मुदित सुरराज ।
घेर्यो हत्या आनि तब, छूट्यो राजसमाज ॥

बिप्र बंश ताको अवतारा ❀ सुनत कथा दुख मिटा अपारा ॥

भाग्यो अमरनाथ दुख पाई ❋ कमलनाल महँ रह्यो छिपाई ॥
फिरि शतयज्ञ नहुष महिपाला ❋ लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला ॥
सेवहिं सब सुर सहित समाजा ❋ सिंहासन बैठे नहुराजा ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा ❋ सेवहिं मनुज देव मुनि सर्वा ॥
रम्भादिक सुरतिय सब आवैं ❋ करैं गान अरु नृत्य दिखावैं ॥
आवैं सुरतिय करि शृङ्गारा ❋ रमित रहैं नृप करत बिहारा ॥

दोहा—यहिबिधि राजसमाजते, बीति गये कछुकाल ।
अति प्रमोद ते नृप सुनहु, कथा कहौं भूपाल ॥

सो सुधि पाइ सभीत परानी ❋ गुरु गृह गईं भागि इन्द्रानी ॥
मार्ग जीव यह बिपति सुनाई ❋ मैं प्रभु चरण शरण अब आई ॥
बहुप्रकार मुनि धीरज दीन्हा ❋ कीन्ही कृपा अभय पुनि कीन्हा ॥
तब सुरगण सब सकल बोलाये ❋ बाँटिलेहु अघ कहि समुझाये ॥
सब पर छिटिकि जाइ सब पापू ❋ मिटै सुरेश केर परितापू ॥
कीन्ही सब मिलि अङ्गीकारा ❋ सब पर गयो पाप को भारा ॥
ऊसर भयो धरा जो लयऊ ❋ प्रथम ज्वाल हुतभुक महँ भयऊ ॥
लीन्ह्यो बरुण भई जल काई ❋ यहि प्रकार सब सुर समुदाई ॥

दोहा—भयो पाप बिन पाकरी, पूरि रह्यो सुख भूरि ।
पठये ढूँढ़न पायकहि, गयो बिलोकत दूरि ।

पायक ढूँढ़ि फिरे सब देशा ❋ मिले इन्द्र नहिं भयो अँदेशा ॥
सर्बकथा सुरगुरुहि सुनाई ❋ मिलैं कतहुँ तब शची पठाई ॥
ढूँढ़त फिरत बिकल इन्द्रानी ❋ मगमहँ मिले देवऋषि आनी ॥
कीन्ह दया तब दीन्ह बताई ❋ कमलनाल महँ रह्यो छिपाई ॥
इन्द्र भाग गिरिपर भय माने ❋ मान सरोवर इन्द्र छिपाने ॥
सुनि नारद के बचन प्रमाना ❋ गई शची तहँ रोदन ठाना ॥
कीन्ह बिलाप ताप तन भारी ❋ बार बार कहि नाम पुकारी ॥

सुनि सुरेश मन दुख अधिकाई ❀ निकरि कमलते दीन देखाई ॥
तुमपर गुरु कीन्हों अनुरागा ❀ दीन्ह शाप करि सुरन बिभागा ॥
रह्यो न तव शिर अघलवलेशा ❀ बोले सुरगुरु चलिय सुरेशा ॥

दोहा—मोकहँ पठयो देवगुरु, लावहु बेगि बोलाइ ।
बचनमानिफुरगुरुबचन, गये इन्द्र हरषाइ ॥

गुरुहि प्रणाम कीन्ह सुरराई ❀ भे प्रसन्न मन आशिष पाई ॥
बैठि इन्द्र पद नहुष नरेशा ❀ मिलै राज तब मिटै अँदेशा ॥
मिलि राजा कहि गुरु सनमाने ❀ दिवस पञ्चदश रहे छिपाने ॥
धर्महीन करि नहुषहि राजा ❀ तब पावहु तुम राज समाजा ॥
यहि प्रकार सुरपति समुझाये ❀ करि प्रबोध निज भवन छिपाये ॥
कह्यो कृष्ण अब सुनहु भुवाला ❀ भयो कामबश नहुमहिपाला ॥
पठये दूत बोलावहु जाई ❀ बड़ अभिमान शची नहिं आई ॥
कह्यो जाइ नृप बोल्यो रानी ❀ सुनत उतर दीन्हो इन्द्राणी ॥

दोहा—जब चाहत सुरराज मोहिं, बाहन चढ़त नवीन ।
जाइ लवाइ सो मानते, होइ मोर आधीन ॥

तेहि गद्दी नहु आइ बिराजा ❀ जाइ लवाइ जहाँ सुरराजा ॥
दूत जाय यह बचन उचारा ❀ नहु नरेश मन करत बिचारा ॥
कहि नवीन चढ़ि यान सिधावहु ❀ शची बोलाइ भवनकहँ लावहु ॥
तब देवन शारदा बोलाई ❀ बैठि जीभ मति भूप भ्रमाई ॥
शिबिका पकरि बिप्रगण लाये ❀ ह्वै अरूढ़ तब भूप सिधाये ॥
द्विजन शाप दीन्हों करि शोका ❀ परइ धरणि खलतजि सुरलोका ॥
पुरायक्षीण होइ नहुमहिपाला ❀ पर्‍यो धरापर सो ततकाला ॥
अमरनाथ निज पायउ राजा ❀ भयउ बरिस सब साजसमाजा ॥
तैसे तुम पैहौ महिपाला ❀ धरहु धीर बीते कछु काला ॥

दोहा—सबलसिंह धीरजदियो, करि प्रबोध महिपाल ।
लीन्हे बोलि नरेश तब, मन्त्र हेतु त्यहिकाल ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वे सबलसिंहचौहानभाषाकृते एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

कहेउ भूप अब सकल नरेशा ❋ निजनिजमत कीजिय उपदेशा ॥
नृपबिराट कह यह मत मोरा ❋ जबलग जिये शत्रु जग तोरा ॥
मिलिहि राज्य नहिं कोटि उपाई ❋ करिय भूप जस तुमहिं सोहाई ॥
सुनत बचन कह द्रुपद कुमारा ❋ सुनहु सकल मिलि मन्त्र हमारा ॥
पहुँचत दूत तुरत अब कोई ❋ समुझावै कुरुपति नृप सोई ॥
सुनत बचन हरि के मन भावा ❋ द्रुपद पुरोहित बोलि पठावा ॥
अब तुम दुर्योधन पहँ जाई ❋ नाना भाँति कहेउ समुझाई ॥
करि उपाय कीजै बुधि सोई ❋ जामहँ बिप्र भूप हित होई ॥
पृथक् पृथक् कहि सबन सँदेशा ❋ बिदा कीन्ह करि हरि उपदेशा ॥

दोहा—अतिप्रसन्नद्विजराजमन, ह्वैशिबिका असवार।
नगर हस्तिनापुर तबै, जात न लागी बार ॥

पहुचे बिप्र भूप के द्वारे ❋ बोले बचन बोलि प्रतिहारे ॥
धर्मराज हरि मोहिं पठायो ❋ कहन सँदेश भूप ते आयो ॥
वेतपाणि सुनि जाइ जनावा ❋ बुद्धिचक्षु तब बोलि पठावा ॥
गयो सभा महँ द्रुपद पुरोधा ❋ त्रिकालज्ञ पूरण बुधि बोधा ॥
कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा ❋ बैठारो निज बोलि समीपा ॥
आशिर्बाद बिप्र तब दीन्हा ❋ नृपसनमान बिबिध बिधिकीन्हा ॥
द्रोण कर्ण सब बैठि समाजा ❋ भीषम बाहुलीक महराजा ॥
कृपरु शल्य जयदर्थ महीपा ❋ बैठे जहँ कौरव कुलदीपा ॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सौ भाई ❋ बैठे सभा सुवेष बनाई ॥
सोमदत्त नृप बैठ सुजाना ❋ द्रोणपुत्र गुण ज्ञान निधाना ॥

दोहा—भूरिश्रवा कलिंग अरु, मकरध्वजौ महान।
बैठिसोबालकुमार तहँ, अरुउलूक बलवान ॥

बिप्र सुनाइ कहा सब आगे ❋ कहन सँदेश भूपते लागे ॥
मोहि पठायो धर्मनरेशा ❋ चितदै सुनहु महीप सँदेशा ॥
निकट बोलाइ धर्म सुत हमको ❋ प्रथम कहेउ अभिवादन तुमको ॥

कहेउ बहोरि कृपा नृप कीजै ❀ बोती अवधि राज्य अब दीजै ॥
किङ्कर जानि करिय अब दाया ❀ हम तुम्हरे छांड़ौ मति माया ॥
तेरह बर्ष सहे दुख नाना ❀ सो हरि किहेउ बिपति अवसाना ॥
दुर्योधन कीन्ही अनरीतो ❀ तुम्हरी कृपा बिपति अब बोती ॥
मिटै कलह सो करिय उपाई ❀ तेहि बिधि कही युधिष्ठिर राई ॥
चलती बार पार्थ मोहिं जाना ❀ कहेउ प्रणाम नरेश सुजाना ॥

दोहा—मोते कहेउ सँदेश जा, सो सुनिये दै कान ।
मेटो कुलको कहलअब, तुम्हरे सब बुधिमान ॥

कह्यो भीम मोहिं चलती बारा ❀ कहों जोआयसु होइ तुम्हारा ॥
कही बात जो राखौं गोई ❀ ताते पाप अधिकई होई ॥
कहे न होइ दूत शिर दोषा ❀ ताते सुनिय भूप तजि रोषा ॥
हम तुम्हार अपराध न कीन्हा ❀ करि छल तुम दारुणदुखदीन्हा ॥
बीते कछु दिन तुम फल पैहो ❀ समुझत अब नहिं मन पछितैहो ॥
लैकै गदा युद्ध जब करिहौं ❀ सो बान्धव दुर्योधन मरिहौं ॥
कटैं बन्धु जब बिधवा भेशा ❀ तब करिहो चितचेत नरेशा ॥
करहुँ निपात सेन तुव काटी ❀ देहुँ मिलाइ मांस अरु माटी ॥
रक्त नदो तब बहहिं महाना ❀ करणआदि कटिहैं भटनाना ॥
उठै कबन्ध गिद्ध पल खैहैं ❀ तब नरेश आधो हम पैहैं ॥

दोहा—अबते चेतहु भूप तुम, सुनिकै बचन हमार ।
समुझावै दुर्योधनहिं, बचन सबै परिवार ॥

नकुल सँदेश सुनहु दै काना ❀ बुद्धिचक्षु तुम अतिअज्ञाना ॥
अंश हमार समुझि नृप दीजै ❀ अपने जियत कलङ्क न लोजै ॥
जो न देउ नृप अंश हमारा ❀ होइहि युद्ध न लागो बारा ॥
चलती बार भूप सहदेवा ❀ करि प्रणाम बिनयी बहुसेवा ॥
छांड़ो पिता हमारो मोहा ❀ करि बहु दुर्योधनपर छोहा ॥
अब [illegible] समुझि परी मन माहीं ❀ उनके दुर्योधन हम नाहीं ॥

मरे बालपन पाराडु न देखे ❋ तुम पितु हते हमारे लेखे ॥
तुम्हरे ईत्तत हम दुखपावा ❋ करिछल शकुनी देश छुड़ावा ॥

दोहा—परीबिपति बनबन फिरे, सहे अशेष कलेश ।
समुझावहु दुर्योधनाहि, मेटहु सकल नरेश ॥

मोहिं बोलि बसुदेव कुमारा ❋ तुमते कहेउ नरेश जोहारा ॥
जो कछु दीनबन्धु भगवाना ❋ कहेउ सँदेश सुनियदै काना ॥
तुमते कोह कहिय बहुतेरा ❋ दीजै अंश युधिष्ठिर केरा ॥
प्रथमहिं बहुप्रकार समुझावा ❋ दुर्योधन के मनहिं न आवा ॥
मानत सो न बहुत अभिमाना ❋ कालबिबश सबज्ञान भुलाना ॥
तज्यो बिबेक पाप प्रिय लागा ❋ उपज्यो हंसबंस जिमि कागा ॥
लीन्हे अयश सकल यश खोई ❋ बाँस बंश महँ भयो घमोई ॥
कौरव कुल यश पूर्ण मयङ्का ❋ भा दुर्योधन तिनहिं कलङ्का ॥

दोहा—समुझावततुम अबहिं नहिं, सब जानत सज्ञान ।
बहुरि कह्यो संदेश सब, सुनहु भूप दै कान ॥

चलत बार कह द्रुपद सँदेशा ❋ सुनत कृपा करि कहत नरेशा ॥
अपने जियत कलङ्क न लावहु ❋ कलह गोत्र को भूप बचावहु ॥
धृष्टद्युम्न मम सुत अरिखराडी ❋ अबलगु राखो बर्जि शिखराडी ॥
कीजै संधि मिटै उतपाता ❋ बढ़ै भूप की कीरति दाता ॥
मैं सिख देत जानि समबन्धी ❋ चक्षुहीन कछु बुद्धि न अन्धी ॥
बेगि उपाय करहु नृप सोई ❋ संधि होइ जेहि कलह न होई ॥
दुर्योधन अरु पाराडु कुमारा ❋ जानहु हेतु समान हमारा ॥
हम चाहत हैं तुम्हरे हित की ❋ करहु बिचार होइ जो नीकी ॥

दोहा—चलति बिलोकि बोलाइ मोहिं, कह्यो बिराट सँदेश ।
सावधान होइ लाइ मन, सो अब सुनहु नरेश ॥

दुर्योधन कीन्हो अपकारा ❋ धर्मराज कहँ देश निकारा ॥

तुम्हरे योग न बात अलीका ❀ देखहु समुझि भरतकुलटीका ॥
करहु होइ जो नीक बिचारा ❀ यह नृप कहेउ बिराट भुआरा ॥
बिप्र बचन सुनि भा उरदाहू ❀ बिहँसि बचन बोला नरनाहू ॥
बहुत बिप्र कत बाद बढ़ावहु ❀ पाण्डु सुतनकी कुशल सुनावहु ॥
प्राण समान परमप्रिय जीके ❀ हैं सब भ्रात जान मम नीके ॥
दुर्योधन उनते छल कीन्हा ❀ द्यूत खेलाइ राज्य हरिलीन्हा ॥
करि कुबुद्धि यहि दीन निकारी ❀ बनबसि सहेउ बिपति अतिभारी ॥
द्रुपदसुता अतिशय सुकुमारी ❀ देखे रूप न इन्दु तमारी ॥
बन बसि फिरी लाज सब त्यागी ❀ कीन कुमति मम पुत्र अभागी ॥

दोहा–अबहूँ तजत कुचालनहिं, कालबिबशकुरुनाथ।
आक्षिहीन अरु ज्येष्ठतन, मैं तन भयों अनाथ॥

सुनत बिप्र नहिं मोर सिखावन ❀ भयो पुलस्त्यबंश जिमि रावन ॥
जैसे उग्रसेन सुत कंसू ❀ प्रकट्यो कालनेमि कर अंसू ॥
पितहि पकरि कारागृह डारे ❀ तैसे यहु कछु बश न हमारे ॥
जब ते धर्मराज बन गयऊ ❀ तबते हमहिं दुसह दुख भयऊ ॥
उनके बिरह दिवस अरु राती ❀ तलफत रहत जरत नित छाती ॥
दुर्योधनहि बहुत समुझावत ❀ पै वाके कछु मनहिं न आवत ॥
अब हौं बहुत भाँति समुझैहौं ❀ अपने चलत मिलाप करैहौं ॥
अस कहि बुधिचक्षु समुझाये ❀ द्विज प्रबोधि अन्तःपुर आये ॥
संजय संग पाणि पकराई ❀ भूप भवन कहँ गयउ लवाई ॥

दोहा–बैठारे पुनि सेज पर, गन्धारी दै पान।
सबलसिंहचौहानकहि, करतबिबिधसनमान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंहचौहानभाषाकृते द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

भीषम और हरि द्विज रह्यऊ ❀ कह्यो प्रणाम धर्मसुत कह्यऊ ॥
अब तुमते कछु कह्यउ सँदेशा ❀ सुनहु पितामह तजहु अँदेशा ॥
कुरुनन्दन कीनो अपकारा ❀ सुनि सकुनी सिख देशनिकारा ॥

रहे बिपिन बसि जाय उदासी ❀ तुम्हरी कृपा बिपात सब नासी ॥
मुये पाराडु हम सबते बालक ❀ तब तुमहीं कीन्हों प्रतिपालक ॥
रहत सदा तुव चख अनुकूले ❀ भलेहि नाथ हमरो सुधिभूले ॥
हैं हम नाथ कृपा अभिलाखी ❀ अनुचर जानि न फेरिय आँखी ॥
सुनत बचन छाये जल कोये ❀ करि सुधि बिकल पितामह रोये ॥

दोहा—पुलकि गात गदगदगिरा, भरि आये जल नैन ।
हैं नीके सब पाण्डुसुत, तब बोलेउ द्विजबैन ॥

तुम्हरी कृपा सहित परिवारा ❀ कुशल अबहि लग पाराडु कुमारा ॥
सुनि भीषम यह बचन उचारा ❀ उनहीं कुल राखै करतारा ॥
धर्मराज निज राज्यहि पै हैं ❀ निश्चय सब कौरव मिटिजै हैं ॥
दुर्योधनहि गर्ब अति भारी ❀ धर्म नरेश धर्म ब्रतधारी ॥
सदा बिश्वम्भर गर्ब प्रहारी ❀ धर्म क्षेमकर श्री बनवारी ॥
पाराडव क्षेम मानु बिश्वाशू ❀ द्विज जानहु कौरवकुलनाशू ॥
यहि बिधि बचन बिप्रते खोले ❀ गङ्गासुत कुरुपति से बोले ॥
मानि बचन मन कलह बहावहु ❀ करहु संधि सब मिलि सुखपावहु ॥
सुने बचन लागे जिमि शायक ❀ है सक्रोध बोले कुरुनायक ॥
तुमहि न उचित पितामह ऐसी ❀ कही सभा सत बात अनैसी ॥

दोहा—तुमहिं त्यागि मल बचन कहि, हम नहिं जानैं और ।
उचित न कटु बाणी कहत, कौरवकुलशिरमौर ॥

अस कहि दुर्योधन दुख माना ❀ उठि अपने गृह कीन पयाना ॥
अपने भवन पितामह आयो ❀ बिप्र द्रोण ते बचन सुनायो ॥
कहे प्रणाम तुमहिं गुरु भूपा ❀ कीन बिनय कछु मति अनुरूपा ॥
चतुर वेद [illegible] वेद निधाना ❀ आचारज नहिं तुमहिं समाना ॥
[illegible] समर्थ [illegible] सबहि प्रकारा ❀ शापदेन अरु बाण प्रहारा ॥
[illegible] [illegible] [illegible]त भय मानत ❀ अव तप तेज सकल उर आनत ॥
[illegible] [illegible] दिशन प्रकाशा ❀ कुरु पाराडव तुम्हरे सब दाशा ॥

सब प्रकार जानत बुधि बोधन ❋ तुम नहिं समुझावत दुर्योधन ॥

दोहा—तपबलबुधिबलअस्त्रबल, बिद्याबल बलबाह ।
कर्म धर्म अरु ब्रह्मबल, बिदितजगतसबकाह ॥

तुव बलको भरोस उर मोरे ❋ की हरि और न जानत भोरे ॥
यह सँदेश अरु पुनि पदबन्दन ❋ तुमते कहेउ पाण्डु के नन्दन ॥
सुनत बचन भे द्रोण सशोके ❋ कमलनयनजल रहत न रोके ॥
पुलकित गात कृपा अधिकाई ❋ बिबिध भाँति पूछी कुशलाई ॥
शिष्य बर्ग हैं सकल हमारे ❋ द्विजद्रोणिहु ते अधिक पियारे ॥
धर्मशील निधि पाँचो भाई ❋ मोरे प्राणन ते अधिकाई ॥
ताते उनकी कुशल बतावहु ❋ मोरे जिय की ताप बुतावहु ॥
कह द्विज हैं पाण्डव सब नीके ❋ नाथ तुम्हार दास जगतीके ॥

दोहा—दुर्योधन काढ़ेउ बिपिन, देखरायो अतित्रास ।
रहतपाण्डुसुतकुशलहैं, तवचरणनकीआस ॥
मनसा बाचा कर्मणा, नाथ तुम्हारो दास ।
मानत ज्योंहरिकोतुमहिं, धर्मसाहि विश्वास ॥

कहि यह बचन मौन द्विज भयऊ ❋ उठि गुरुद्रोण भवनते गयऊ ॥
बिप्र संग ले अश्वत्थामा ❋ करवाया गृह निज बिश्रामा ॥
बहु बिधि खान पान करवाई ❋ शयन हेत शय्या बिछवाई ॥
कीन्ह द्रोणसुत प्रीति घनेरी ❋ पूछो कुशल पाण्डवन केरी ॥
अर्जुन भीम नकुल हैं नीके ❋ प्राण अधार बन्धु मम हीके ॥
अभिमन्युसहित सकल परिवारा ❋ अरु आयो द्रौपदी कुमारा ॥
सबकी मोकहँ कुशल बतावहु ❋ भिन्नभिन्नकरि बरणि सुनावहु ॥
उन हम को कछु कहेउ सँदेशा ❋ सो द्विजकह नृप सहित कलेशा ॥

दोहा—बड़ी बिपति तेरह बरष, सही भूप कुन्तेव ।
सो बीती हरि की कृपा, हैं नीके सहदेव ॥

यह कहि भूप नयन जल छाये ❋ गदगद कराठ बचन नहिं आये ॥
देखी बहुत प्रीति अधिकाई ❋ कुशल प्रश्न कहि बिप्र सुनाई ॥
पाराडव सकल सहित सुतदारा ❋ कुशल आजुलग सब परिवारा ॥
करहु यत्न कछु कहत पुकारे ❋ यथो कुशल अब हाथ तुम्हारे ॥
अबते तुम भूपहि समुझावहु ❋ कलह मेटिकै संधि करावहु ॥
कहेउ प्रणाम तुमहि कुन्तेवा ❋ सुनत सँदेश कहो महिदेवा ॥
हम जानत जिमि अर्जुन भीमा ❋ तैसे तुमहिं आजुलग जीमा ॥
इन भ्रातन बर बिपति बँटाई ❋ गुरु बान्धव तुम सुधि बिसराई ॥
जानत सो कौरव जो कीन्हा ❋ तुमहि न उचितकृपातजि दीन्हा ॥
कहेउ द्रोण सुत द्विज सुनिलीजै ❋ अपने मन बिचार तुम कीजै ॥

दोहा—खान पान सनमान दै, सब प्रकार कुरुनाथ ।
दास भाव मोते रहत, करिलीन्हो निजहाथ ॥

चित महँ उनसन प्रीति घनेरी ❋ परवश भयो लाग नहिं मेरी ॥
अनभल चहत पाराडवन केरा ❋ कौरव बश मम फिरत न फेरा ॥
अस कहि शयन करन द्वउलागे ❋ अब नृप सुनहु चरित जसआगे ॥
यहाँ भूप मन शोच अपरा ❋ कह संजय ते बारहिं बारा ॥
देखि परत मोहिं बात न नीका ❋ दुर्योधन की चली अलीका ॥
सुनत श्रवण नहिं कछु उतपाती ❋ परी न नींद शोकबश राती ॥
भीमस्वभाव बिदित सबकाहू ❋ अस कहि बिकल भयो नरनाहू ॥
तब नृप कहा सुनहु गन्धारी ❋ समुझावहु निजसुत अपकारी ॥
सुनि संजय पुनि तुरत पठाये ❋ दुर्योधनहिं बोलि लै आये ॥
रावण कुम्भकरण जिन मारा ❋ सुरबिजयी जानत संसारा ॥
है हयराज प्रचारि प्रचारी ❋ काटेउ सहसबाहु बलभारी ॥

दोहा—केशी कंस अघा बका, मुष्टिक औ चाणूर ।
धेनुक हति वृष पूतना, तृणावर्त्त खल कूर ॥

मार्‍यो बालि बतसुर नीचा ❋ सुभट ताड़का अरु मारीचा ॥

खरदूषण त्रिशिरादि कबन्धा ❋ बिपिन बिराध असुर कृतवन्धा ॥
शंखचूड़ भस्मासुर मारा ❋ राख्यो शम्भु बिदित संसारा ॥
ते पाण्डव के भयो सहायक ❋ जीति को सकै तात रघुनायक ॥
तिनते बैर किये भल नाहीं ❋ संधि नीकि समुझो मनमाहीं ॥
पुनि तुम्हारे हैं बन्धु नजोकी ❋ दीजै अंश बात यह नीकी ॥
तुव पितु के लघुबन्धु भुआरा ❋ भये पाण्डु जानत संसारा ॥
धर्मराज कछु पाप न कीन्हा ❋ छलकरि राज ताततुम लीन्हा ॥

दोहा—उननहिंकीन्हबिरोधसुत,ना कछुलियो तुम्हार।
छल करि अक्ष खेलाइकै, तैं कीन्हों अपकार ॥

अजहू कहा हमारो कीजै ❋ मिटै बिरोध अंश दैदीजै ॥
अतिहित गन्धारी की बानी ❋ सुनी न श्रवण नेकु अभिमानी ॥
धृतराष्ट्र हु बहुबिधि समुझावा ❋ काल बिबस कछु मनहिं नआवा॥
मातु पिता कर बचन न माना ❋ जस भावी तस उपज्यो ज्ञाना ॥
भावीबश जानहु सब लोगा ❋ भावीबश न होइ सब योगा ॥
भावी सुमति कुमति उपराजै ❋ हानि लाभ अरु बिजय पराजै ॥
कह बैशम्पायन सुनहू राजा ❋ सुनि कुरुनाथ क्रोध उपराजा ॥
हरि कहि परशुराम जग जाये ❋ जीति पितामह बनहिं पठाये ॥
दानव देव मनुज बलभारी ❋ भीषम पद कोऊ नहिं टारी ॥
जीति सकल रण बन्धु बिवाही ❋ बानर ऋक्ष बिदित सबकाही ॥
गुरु द्रोण दशहू दिशि जीते ❋ सुर अरु असुर जासु भयभीते ॥
जो हठि कर्ण करै संग्रामा ❋ करिनहिं सकैं बिजयघनश्यामा ॥

दोहा—कह्यो मातु ते जोरिकर,चुपकरिरहु अरगाइ।
तिलभरिदेउँनाजियतमहि,सकैको टेक छुड़ाइ॥

अस कहि अपने भवन भुवाला ❋ जात भयो राजा ततकाला॥
होतहि प्रात सभामहँ आयो ❋ बुद्धि चक्षु द्विज बोलि पठायो ॥
स्वर्ण पञ्चशत दीन्ह्यो दाना ❋ कीन्ह दान नृप करि सनमाना ॥

आजु कालिह महँ संजय ऐहैं ❀ सत्य सँदेश यहाँ को लैहैं ॥
करि बहुयतन सुतन समुझाई ❀ देहौं तात मिलाप कराई ॥
कहि द्विजते यहि भाति सँदेशा ❀ कोन्ह बिदा यहि भांति नरेशा ॥
कहत प्रात संजय को आवन ❀ तिनके हाथ सँदेश पठावन ॥

दोहा—धृतराष्ट्र आशिष कह्यो, लै पाण्डव को नाम ।
नृपमण्डली जोहारकरि, हरिको कह्यो प्रणाम ॥

यहि प्रकार कहि द्विजबरबाणी ❀ भूपसहित सुनि शारँगपाणी ॥
गूढ़ गिरा समुझत मनमाहीं ❀ और विचार कही कछु नाहीं ॥
उन सगरी संजय पर राखी ❀ हरिते कहत धर्मसुत भाखी ॥
तब हरि कहत चुपौ दिनचारी ❀ आवैं जो न करिय पुनि रारी ॥
बुद्धिमान पञ्चाल पुरोहित ❀ इनते को चाहत तुम्हरो हित ॥
येऊ गये न कछु करिआये ❀ कारज रह्यो सँदेश न लाये ॥
इनते को जाई अब ज्ञानी ❀ बिहँसि बिहँसि कह शारँगपानी ॥
सुनत बचन नृप द्रुपद लजाने ❀ करी कृपा श्रीहरि सनमाने ॥

दोहा—हरिपदपंकजनाइशिर, निजनिजशिबिरभुवाल ।
गयेसकलप्रमुदितअधिक, हिये राखि गोपाल ॥

इहां प्रात मतिदृग जब जागे ❀ संजय बोलि कहन अस लागे ॥
धर्मराज हरि पहँ तुम जाई ❀ कह्यो बचन निजमति निपुणाई ॥
कलह घटै ज्यहि सम्मति होई ❀ बुद्धि बिचारि कह्यो तुम सोई ॥
मम दिशिते पूछेउ कुशलाता ❀ प्रीति समेत मनोहर बाता ॥
बुद्धिमान कह तुमहिं सिखैये ❀ करहु गहरु जनि तुम अब जैये ॥
सुनि संजय नायो पद शीशा ❀ बिदा कीन्ह नृप दीन्ह अशीशा ॥
रथ अरूढ़ ह्वै तुरत सिधाये ❀ प्रमुदित धर्मराज पहँ आये ॥
देखि पाण्डुसुत सैन महाना ❀ सुरपति सरिस अचंभौ माना ॥
घण्टानाद मनुज रव नाना ❀ होत कुलाहल सिन्धु समाना ॥
पँवरि द्वार संजय चलि आये ❀ शयन किये हरि अर्जुन पाये ॥

दोहा—द्वारपाल भीतर भवन, देखि सरोरुह नैन ।
कनकपलँगअर्जुनसहित,करतकृपानिधिशैन ॥

दोऊ कर पुनि दोऊ पानी ❀ चापत चरण द्रौपदी रानी ॥
संजय को आगमन सुनावा ❀ द्रुपद सुता हँसि बोलि पठावा ॥
सुनि सँदेश अन्तःपुर आये ❀ प्रीति सहित पुनि पद शिरनाये ॥
हरुये चरण धरहु कह रानी ❀ परैं जागि जनि शारँगपानी ॥
चाप पाय प्रभु नयन उनींदे ❀ अर्जुन सहित उठे रबिनींदे ॥
जोवनबन्धु को रङ्ग लजाये ❀ दृग बिलोकि संजय भयपाये ॥
उग्ररूप देखत घनश्यामा ❀ कम्पिततन पुनि करत प्रणामा ॥
संजय दिशि देखा यदुबीरा ❀ बोले घनइव गिरा गँभीरा ॥

दोहा—कह संजय दुर्योधनहिं,समुझावत तुमनाहिं ।
मरोचहतसबमिलिशठहि,समुझिपरीमनमाहिं॥

धर्मराज को देत न हींसा ❀ अपने बिभव करत बल खींसा ॥
मस्तक काटि सहित परिवारा ❀ लेहौं अंश बाँटि दुइ फारा ॥
भूलो अधम करण बल पाई ❀ वहि पापी सब कुमति सिखाई ॥
सकै न जीति पार्थ के आगे ❀ मरिहै नीच एक शर लागे ॥
जो कदापि अर्जुन कदराई ❀ हनहुँ चक्र गहि शम्भु दोहाई ॥
सुनत बचन संजय भयमाना ❀ करि प्रबोध अर्जुन सनमाना ॥
हे यदुनाथ कृपा अब कीजै ❀ अभयदान संजय कहँ दीजै ॥
पारथ बचन मानि भगवाना ❀ निज सेवक संजय कहँ जाना ॥
प्रीति समेत लीन्ह बैठारी ❀ बोले मधुर गिरा बनवारी ॥

दोहा—हरि अर्जुन संजय सहित, चले युधिष्ठिर पास ।
सबलसिंह हित सों करत, मगमें बागबिलास ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वसबलसिंहचौहानभाषाकृते त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

कह मुनि जनमेजय सुनि लीजै ❀ कथा अमिय सम पानहिं कीजै ॥
धर्म सभा हरि पारथ आये ❀ संजय सहित मोद मन छाये ॥

धर्मराज आगे चलि लीन्हा ❋ हरिहि समेत दगडवत कीन्हा ॥
अर्जुन धर्मराज पर बन्दे ❋ बैठि सभा हरिसहित अनन्दे ॥
तेहि अवसर संजय तहँ आये ❋ करि बिनती बहु पद शिर नाये ॥
धर्मराज निज निकट बोलाई ❋ बूझत कुशल सनेह बढ़ाई ॥
कुशल प्रश्न कहि कहत सँदेशा ❋ ज्यहि प्रकार कहिदीन नरेशा ॥
मानत अबहिं नाहिं दुर्योधन ❋ समुझैहों करिकै बुधि बोधन ॥
तुम सुत चुपकि रहो दिन चारी ❋ होई मनभावती तुम्हारी ॥
होइ न कलह मिलाप कराई ❋ देब तात तुव अंश देवाई ॥
आशिष कहो कुशल पुनि बूझी ❋ है नृपकी हति तुमहिं अबूझी ॥
जबते तुम कीन्हों बनबासा ❋ उर न चैन नृप रहत उदासा ॥
नित प्रति दुर्योधन की निन्दा ❋ करत कहत यहु है मतिमन्दा ॥
तुमते कृपा रहत अधिकाई ❋ चलत कहेउ निज निकट बोलाई ॥
आवहु तात देखि निज आंखिन ❋ मानत मैं न औरहीं साखिन ॥

दोहा–भ्रात जान मम प्राण सम, जानत सब संसार ।
सुनिशकुनीसिखनीचयहि, काढ़ो बिन अपकार ॥
दुर्योधन मति परिहरि, बैठि अलीकन बीच ॥
दृगबिहीन मैं जरठ तन, मानत बात न नीच ॥

यदपि न मानत बश कुटिलाई ❋ करवैहों मिलाप बरिआई ॥
गन्धारी आशिष कहि दीन्हा ❋ कहिहो सुतन कृपा पुनि कीन्हा ॥
बिन कलङ्क नहिं दोष तुम्हारा ❋ करि कुबुद्धिवहि बिपिन निकारा ॥
तुम पर कृपा करत बनवारी ❋ सकै तात को बात बिगारी ॥
सब बिधि सुत तुम्हार कल्याना ❋ करिहैं कृपासिन्धु भगवाना ॥
गन्धारी आशिष सुनि काना ❋ कीन्ह प्रणाम भूप सुखमाना ॥
पतिब्रता पुनि मातु हमारी ❋ गन्धारी जानत श्रुतिचारी ॥
आशिष दीन्ह कृपा करि भारी ❋ सब प्रकार बिधि बात सुधारी ॥

दोहा—गन्धारी आशिष दियो, बिबिध भाँति सनमान ।
सुनु संजय कह धर्मसुत, होइ हमार कल्यान ॥

पूछो भीमसेन सञ्जयसे ❋ कहेउ सँदेश पिता कछु हमसे ॥
पाप बुद्धि देखत को सीधे ❋ सुतन नेह ममता महँ बोधे ॥
बिधिवत नृप जानत सब साधू ❋ लीजै मौन न कछु अपराधू ॥
तैसे मौन रहत दिन राती ❋ है पुनि अन्ध सकल कुलघाती ॥
सिखै कुचालि बचन मृदुभाखी ❋ पापमूल बिधि दीन्ह न आंखी ॥
है अति क्रूर सुभाव प्रपञ्चो ❋ भुलवत तुमहि भूप अब बञ्ची ॥
आँधर आपु अन्त बिन जाना ❋ बहु पापी अब सकल जहाना ॥
क्रूर बचन सुनि भूपति लरजे ❋ रहउ चुपाई भीम कहँ बरजे ॥
हीन न कहिय बड़ेन कहं भीमा ❋ पातक बढ़त बिचारहु जीमा ॥
पिता समान पिता को भाई ❋ कहउ न कछु तुम रहउ चुपाई ॥
उन कहँ पुत्र लोभ अति जीते ❋ मोह हमार तज्यो कबहीते ॥
भूप बचन सुनि भीम चुपाने ❋ बोले नकुल बीररस साने ॥

दोहा—सुनु सञ्जय वह शठ अजहुँ, देत न अंश हमार।
दुर्योधन होइ काल बश, करत क्रूर अपकार॥

नहिं कछु कोउ वाकहँ समुझावत ❋ नाहक सब मिलि बैर बढ़ावत ॥
फिरि पाछे सब तुम पछितैहो ❋ मेरे युद्ध ते फेरि न लहिहो ॥
भीषम बिदित सत्य ब्रत धारी ❋ त्यागेउ राज्य लोभ अरुनारी ॥
बिदुर भक्त बिज्ञान निधाना ❋ गतबिलोकि कहै सकल जहाना॥
सोमदत्त गङ्गाधर दोऊ ❋ सब लायक जानत सब कोऊ ॥
भूरि श्रवा बीरता माते ❋ सकैं न युद्ध जीति सुर ताते ॥
बाहुलीक की बड़ि प्रभुताई ❋ जीति धरा जिन बाँह पुजाई ॥
सभा माँझ शठ द्रुपद कुमारी ❋ केश पकरि चह कीन्ह उघारी ॥
दुर्योधन की बिभव बिलोकी ❋ कुरुपाण्डव कोउ सक्यो न रोकी॥
कृप अरु द्रोण बड़े बलधामा ❋ रहे चुपके तहँ अश्वत्थामा ॥

समुझिपरी सम्मित सबहीकी ❀ करणहु कही बात नहिं नीको ॥
एक एक जीतहिं संसारा ❀ उनहिं निदरि पावत को पारा ॥
एको कोऊ भये न सङ्गी ❀ समुझिपरे सब पाप प्रसङ्गी ॥
जस उनके तस सकल हमारे ❀ पापबुद्धि करि केहु न निवारे ॥
सुनि सहदेव कहत सुन भ्राता ❀ हैं हमरे रक्षक सुरत्राता ॥

दोहा—नग्न करन हित द्रौपदी, कीन्हों सबन उपाय ।
रही लाज पट ना घट्यो, कृतसहाय यदुराय ॥

हैं यदुनाथ हमार सहायक ❀ कहौ कवन उत इनके लायक ॥
सुनि सहदेव ओर प्रभु हेरी ❀ कह सञ्जय ते नयन तरेरी ॥
नीचन के बल खल बौराना ❀ धर्मराज कहँ तृणसम जाना ॥
याही भूल मीचु शठ केरी ❀ सञ्जय सत्य प्रतिज्ञा मेरी ॥
पाण्डु सुतन को काज सुधरिहौं ❀ बंश नाथ कौरव को करिहौं ॥
जो नहिं देइ युधिष्ठिर अँशू ❀ रहै न धृतराष्ट्रक को बंशू ॥
ताते तुम सञ्जय समुझावहु ❀ धर्मराज को अँश देवावहु ॥
सुनि सञ्जय बिनवै करजोरी ❀ सुनहु नाथ यक बिनती मोरी ॥

दोहा—अरुणनयनभृकुटीकुटिल, लखिहाररूपकराल ।
सँजय शोच सकोच बश, बिनवत श्रीगोपाल ॥

दूत कर्म ते बचन बखाना ❀ मैं तुम्हार अनुचर भगवाना ॥
लै संदेश नरेश पठायो ❀ सत्यबचन बलि तुमहि सुनायो ॥
अब जस कहब करौं तस जाई ❀ दोष हमार कवन यदुराई ॥
करब न करब भूप के हाथा ❀ अस कहि प्रभुपद नायो माथा ॥
परम चतुर सञ्जय कहँ जाना ❀ बिहँसे कृपासिन्धु भगवाना ॥
बुद्धि सराहि करी अतिदाया ❀ प्रीतिसहितनिर्जनिकट बोलाया ॥
मोर संदेश तात कहि दीजो ❀ निज नरेशने भय मति लीजो ॥
राज्य युधिष्ठिर को तुम देहू ❀ तजि अभिमानकलह किनलेहू ॥
जो न सुनहु यह बचन हमारा ❀ करहु निपात सकल परिवारा ॥

दोहा–अंश युधिष्ठिर को तजहु, मानहु वचन हमार।
अनहित होइ न तोर नृप, बचै सकल परिवार॥

अस कहि पुनि राजीव बिलोचन ❋ रहे चुपाइ दास दुखमोचन॥
भीमसेन सञ्जय के आगे ❋ कहन सँदेश क्रोध करि लागे॥
बैठि सभामहँ मारि चपेटा ❋ फारौं गाल बिदारौं पेटा॥
दुर्योधन क्षणमहँ संहारौं ❋ दुश्शासन के भुजा उखारौं॥
कौरव जियत जान नहिं देहौं ❋ एकौ युद्ध भूमि जब ऐहौं॥
अबहीं नीक अंश मम दीन्हें ❋ तबलग कुशल गदाकर लीन्हें॥
कह्यो पार्थ मत यहै हमारा ❋ भीमसेन जो बचन उचारा॥
दीन्ह अंश मिटै सब रारी ❋ समुझो दिशिते कहेउ हमारी॥

दोहा–समुझावहु निजतनयअब, देइ अंश नरनाह।
तात तुमहि हित होइगो, अनहिततजुमनमाह॥

यह संदेश कह्यो तुम मोरा ❋ यामें भूप होत हित तोरा॥
भ्रात तात अरु तनय तुम्हारे ❋ जे हैं भूप उभयदिशि मारे॥
ताते तात सो करिय उपाई ❋ होइ संधि जेहि मिटै लड़ाई॥
धर्मराज कहि दीन्ह सँदेशा ❋ भल जानेहु तस करेहु नरेशा॥
देउ भूमि तब मिटै लड़ाई ❋ बाढ़ै भूप कीर्त्ति सुखदाई॥
अस कहि संजय फेरि पठाई ❋ रहो कृष्ण पद शीश नवाई॥
धर्मराज ते बिदा कराये ❋ तब अरूढ़ होइ गजपुर आये॥
अन्तःपुर जहँ बैठ नरेशा ❋ गालवगण तहँ कीन्ह प्रवेशा॥
करि प्रणाम पुनि आप जनाये ❋ सुनि महीप निजनिकट बुलाये॥
कुशलप्रश्नम्वहिं सकल बतावहु ❋ जो उन कह्यो सँदेश सुनावहु॥

दोहा–गात कम्प गद्गर भये, कहि न सकत कछु बैन।
जो कछु कह्यो सँदेश नृप, पीतम पङ्कज नैन॥

धरि धीरज सञ्जय अस भाखत ❋ सुनहु भूप कछु गोइ न राखत॥

अब उनके नृप सेन अपारा ❀ गजरथ अरु पदाति असवारा ॥
चालिस सहस भूप जिन जोरा ❀ अक्षौहिणी सब घनघोरा ॥
नृपति बिराट द्रब्य समुदाई ❀ दीन्हो द्रुपद राज्य यदुराई ॥
बिभव बिलोकि धनेश लजाहीं ❀ केहि पटतर दीजै कोउ नाहीं ॥
है अब सरिस इन्द्र प्रभुताई ❀ देखे बनै न बरणि सिराई ॥
दीन्हो एक द्विरद भगवन्ता ❀ शङ्ख बरण सुन्दर चौदन्ता ॥
तापर भूप करत असवारी ❀ मन्दर से उन्नत है भारी ॥
गन्धर्बन जे दीन्ह तुरङ्गा ❀ चित्र बिचित्र मनोहर अङ्गा ॥
ते तुरङ्ग नाकुल के घोरे ❀ धावल चपल चलत शिर मोरे ॥
अरुण बाजि सहदेव सोहाये ❀ जीवबन्धु को रङ्ग लजाये ॥

दोहा—भीमसेन के हय सुनहु, चञ्चल चपल तुरङ्ग ।
बायुबेग मग अति चपल, हरित सुआ के रङ्ग ॥

श्वेत बरण अर्जुन हय राजत ❀ उच्च श्रवहु देखि मन लाजत ॥
मुकुट समेत अमोलिक माला ❀ करि अतिकृपा दीन सुरपाला ॥
अदिति श्रवण के कुण्डल दोई ❀ पहिराये जेहि मृत्यु न होई ॥
अछै तूण दीन्हों जल नायक ❀ घटइ न शर साधे जेहि शायक ॥
तस पँचकर्म धनुष गाण्डीवा ❀ दीन्हों अनल जगत की सीवा ॥
देवदत्त दीन्हे भगवाना ❀ शंख अनूपम सब जग जाना ॥
जासु महारव घोर प्रचण्डा ❀ पूरित शब्द भेद ब्रह्मण्डा ॥
बृषपर्वा को गदा बिशाला ❀ दीन्ह्यो भीम कही नँदलाला ॥
नकुलहि की बरणत तरवारी ❀ दीन्हो अति प्रचण्ड बनवारी ॥
शङ्कर नन्दिघोष रथ दीन्हा ❀ अर्जुन कहँ निर्भय पुनि कीन्हा ॥

दोहा—धर्मराज अब इन्द्रसम, बिभवको सकै बखानि ।
सुनहु भूप सन्देह नहिं, जहँ श्रीपति सुखदानि ।

अर्जुन कीन सखा हनुमाना ❀ लङ्का बिजय सकल जग जाना ॥
सावधान होइ सुनहु नरेशा ❀ अब पाण्डवको सुनो सँदेशा ॥

छलकरि दीन्ह्यो बिपिन निकारी ❀ दीजै अंश न कीजै रारी ॥
दुइमा भूप भली जो जानौ ❀ अब न बिलम्ब बेगि सो ठानौ ॥
याही भांति कह्यो यदुराई ❀ तजहु अंश नहिं रचहु लराई ॥
रण महँ पकरि सुदर्शन पानी ❀ कौरव कुल की घालों छानी ॥
करत अनीति करण बलसेती ❀ तेहिकी बात नीच कहु केती ॥
क्षणमहँ सब कौरव दल मरिहौं ❀ राज्य युधिष्ठिर को बैठरिहौं ॥
उनको अंश छाँड़ि तुम देहू ❀ तजि अभिमान अभयपद लेहू ॥

दोहा–सत्य सत्य तुमते कहौं, मैं उनकर सन्देश ।
सुनि उपदेश जो चितचहै, सो अबकरहु नरेश ॥

सञ्जय बचन सुनत उर दहेऊ ❀ बिकल बिशेषि भूप अस कहेउ ॥
मात पिता को करि अपमाना ❀ कालबिबशसिखसुन तन काना ॥
सञ्जय मैं उठाय नहिं राखी ❀ समुझावहु सबबिधि तुम साखी ॥
बल बिहीन ते जरठ न आँखी ❀ सुनत न बचनपाप अभिलाखी ॥
तृण समान मोको शठ जानत ❀ सुनत श्रवण एको नहिं मानत ॥
सुनि सञ्जय बोले मुसुकाई ❀ सत्य नाथ कहि पद शिरनाई ॥
सब जानत तुम ज्ञान अरूढ़ा ❀ पुनि कहिगयो गिरा यहगूढ़ा ॥
हमहूँ नाथ तुम्हार सिखाये ❀ सब प्रकार कहि भेद बताये ॥
भयो द्यूत तब तुमहिं न जाना ❀ लक्षभवन बिनवत निर्माना ॥

दोहा–तजि मनकी अवरेव अब, समुझावहुकुरुनाथ ।
रहत रैनि दिन मैं सदा, नाथ तुम्हारे साथ ॥

मेटहु कलह भूप सज्ञाना ❀ जग भल कहै लहै कल्याना ॥
होइ सुयश कीरति उजियारी ❀ मिटै कलङ्क होइ सुख भारी ॥
होइ प्रसन्न त्यागि नृप रञ्जय ❀ असकहि भवनगये पुनि सञ्जय ॥
धृतराष्ट्रक सबही के आगे ❀ सुतकी करन धर्षणा लागे ॥
कपट द्यूत रचि नीच निकारा ❀ करण सोखते करि अपकारा ॥
सौबल शकुनि कुमन्त्र सिखावा ❀ उन यह बन्धु बिरोध करावा ॥

सञ्जय बचन कहत हैं सांचो ❀ सम प्रिय पुत्र एकसौ पाँचो ॥
जो सब सम कत बैर करावत ❀ संधि कराई न कलह बढ़ावत ॥
यह सम्भव तन बात अरूठो ❀ तात न समुझि परतकछुझूठो ॥
दीन्ह धरा धन साज समाजा ❀ तुम कीन्हे दुर्योधन राजा ॥
भीषम बिदुर तुम्हारइ अङ्गा ❀ कृप अरु बाहुलीक तुव सङ्गा ॥
द्रोणी द्रोण तुम्हार सहायक ❀ त्रिभुवनबिजयकरनके लायक ॥
धरि कारागृह देहु बँधाई ❀ दुर्योधनहिं निगड़ पहिराई ॥
निन्नानबे पुत्र बल भारी ❀ तेइ नरेश तुव आज्ञाकारी ॥
औरे सुतहि राज्य नृप दीजै ❀ फिरि मन चहै बात सो कीजै ॥
सुनि निष्ठुर सँजय मुख भासा ❀ गयो जानि नृप भयो उदासा ॥

दोहा–सबलसिंह चौहान कह, बाक्य बिलासबनाइ।
बोलेउ बिहँसि नरेश तब, संजय को बहलाइ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंह चौहान भाषाकृते चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

जनमेजय सुनि मन अनुरागे ❀ पूछै बहुरि ऋषै सों लागे ॥
कथा अमृत रस मोहिं सुनाई ❀ होत न तृप्ति श्रवण मुनिराई ॥
अब प्रभु कहो सहित बिस्तारा ❀ मिटै नाथ संदेह हमारा ॥
कह मुनि समुझि परै भ्रम त्यागे ❀ चित्र बिचित्र चरित अस आगे ॥
धृतराष्ट्र मन अति संदेहा ❀ कहत बचन संजय से एहा ॥
उरअतिदाह नींद नहिं आवत ❀ कलहदेखि मन शोच जनावत ॥
पाण्डुतनय मम सुत अपकारी ❀ कुलमहँ होत मिटत नहिं रारी ॥
चुपकै दैन मिलै नहिं शीशा ❀ यह नहिं देन कहत अवनीशा ॥
अस बिचारि असमंजस मोही ❀ दुर्योधन खल अतिकुलद्रोही ॥

दो०–संजय ते बोले बिलखि, करि चितचेत भुआर।
भ्रात जनावत तनै इत, बाढ़्यो कलह अपार॥

यामें उभय प्रकार बिगारा ❀ तासे मन कछु थिर न हमारा ॥
तुम सुत जाहु बिलम्ब न लावहु ❀ बिदुर बोलाइ इहाँ लै आवहु ॥

सुनि संजय उठि तुरत सिधाये ❋ पलमहँ बिदुर भवन कहँ आये ॥
कुशआसन पर ज्ञान अरूढ़ा ❋ साधत योग बैठि गतिगूढ़ा ॥
कुण्डलनी तजि मूल उठाये ❋ निरखत परम ज्योति सुखपाये ॥
सहस पत्र को कमल जो फूला ❋ तापर पुनि हरिध्यान अमूला ॥
इड़ा पिङ्गला दूनों श्वासा ❋ साधत करत सुषुमना वासा ॥
नासा ऊपर करि अनुरूपा ❋ निरखत निर्गुण ब्रह्मस्वरूपा ॥
रसना उलटि कण्ठ अवरोधी ❋ सूधो कीन्ह कमल तन शोधी ॥
मेरु दण्ड सम आसन लीन्हे ❋ पुनि षटचक्र बिदारण कीन्हे ॥

दो०—पापिनिसाँपिनिदुःखगति, करि रसनापुनिरोक।
पिअतसुधारसयतनयुत, जेहितनरहतबिशोक॥

अञ्जन सहित योगगति साधी ❋ करत ध्यान पुनि लाइ समाधी ॥
तब संजय करि यतन जगावा ❋ चलहु बेगि अब भूप बोलावा ॥
अर्द्ध निशा सुनि आयसु पाये ❋ बिदुर बेगि पुनि मन्दिर आये ॥
गन्धारी अरु भूप अकन्ता ❋ अभिबादन पुनि कीन्ह तुरन्ता ॥
कहेउ नरेश बिदुर इत आवहु ❋ मम समीप चिततपनि बुतावहु ॥
संजय कह्यो सँदेशो जबते ❋ मोकहँ नींद न आवत तबते ॥
अब उपाय कहिये कछु भाई ❋ बुधि बिचारि ज्यहि बचै लराई ॥
संजय सो सँदेश नृप पायउ ❋ सो नरेश सब बरणि सुनायउ ॥

दो०—कहेउ बिदुर तब भूपते, तुवसुतबशअभिमान।
जोसिखवतमनमानिहित, करत नसो कछुकान॥
देइअमियकोउप्रीतिकरि, त्यागि करत बिषपान।
दुर्योधन मति परिहरी, बिधिगतिअतिबलवान॥

कृत नरेश को सब परिवारा ❋ करहि नाश यह तोर कुमारा ॥
देखहु शठ हठशील अभागी ❋ प्रकटो यथा दारू ते आगी ॥
हस्तीकुलहि न लागी बारा ❋ एकहि साथ करहि सब छारा ॥

शत कुमार गन्धारी जाये ❀ बेश्या पुनि युयुत्सु उपजाये ॥
जब भये तनय एकशतएका ❀ गर्दभ शब्द भयो अरु एका ॥
श्वान शृगाल भयंकर बोला ❀ कररत काग धरा गइ डोला ॥
भूप यज्ञ थल आनि शृगाली ❀ करत फेकार क्रूर भयवाली ॥
सुरज्ञानिन इमि बचन उचारा ❀ कुलनाशक नृपतनय तुम्हारा ॥
उपजेउ कहो हमारो कीजै ❀ गढ़ा खोदाय गाड़ि अब दीजै ॥

दो०—पुत्रलोभते नहिं सुनेउ, तब सब रहेउ चुपाइ ।
होनी होइ सो होइ नृप, को करिसकै मिटाइ ॥

कुलघालक नृप तनय तुम्हारा ❀ जगमहँ प्रकट कीन्ह करतारा ॥
बरजत बात करत चतुराई ❀ अन्तर भूप अनीति सिखाई ॥
कपट निपुण अरु परसन्तापी ❀ हौ तुम नाथ जन्म के पापी ॥
तुम्हरे मन की जाननहारा ❀ है नरेश सब दास तुम्हारा ॥
तुव भल चहत कहत अस बानी ❀ म्वहि नरेश कछुलाभ न हानी ॥
बिन पूछे मैं यहहू कहहूँ ❀ सहिदुखदुसहचुप्प पुनि रहहूँ ॥

दो०—जो पूछा तो करो अब, तजि मन की अवरेव ॥
अंश युधिष्ठिर को तजहु, करि करुणा नरदेव॥

जानेउ राव मर्म सब जाना ❀ बिदुर भक्त बिज्ञान निधाना ॥
सो बहराइ कहत अस राजा ❀ भ्राता सुनहु हिये जस भ्राजा ॥
अब उपाय कछु बन्धु बतावत ❀ शोचबिबश कछुनींद न आवत ॥
पाराडुतनय ममतनय कुचाली ❀ करत बिरोध सुनहु गुणशाली ॥
सो मेटहु कछु यतन बिचारी ❀ सुनत बिदुर मृदुगिरा उचारी ॥
पाराडुसुतन की कछु न अनीती ❀ उन अपने बल जो महि जीती ॥
सोऊ देत न तनय तुम्हारा ❀ मिटै कलह क्यहिभाँति भुवारा ॥
पितृ पितामह अंश न देहू ❀ जीति देहु करिये नृप नेहू ॥

दो०—लेहु सुयश मेटहु कलह, करि करुणा तुमराइ ।
ऐसे होने पाण्डुसुत, जो वै रहैं चुपाइ ॥

वै नहिं कालहु को भय मानत ❋ तृणसमान तुव पुत्र न जानत ॥
हैं सहाय यदुनायक जाके ❋ कस न होइँ निर्भय मन ताके ॥
कृष्ण भरोस मानि मन माहीं ❋ जीतत समर डरत कछु नाहीं ॥
अब लग मोह निशा तुम शोचते ❋ मनजानत उनकहँ हम प्रभुते ॥
बरजत प्रभू युधिष्ठिर भाई ❋ त्यहि कारण नृप रची लराई ॥
जब जब भीमसेन मन माखत ❋ तब तब बरजि बरजिनृपराखत ॥
दुर्योधन कहँ नृप समुझाई ❋ मिटै कलह सो करहु उपाई ॥
हे महिपाल बात यह नीकी ❋ तुम्हरे कहत परम हितहीकी ॥

दोहा—मनसा बाचा कर्मणा, करि चित चेत भुवार ।
समुझावहु दुर्योधनहिं, अनहित बचै तुम्हार ॥

जबलगि भीमसेन बलदाई ❋ रचत युद्ध नहिं तलहिं भलाई ॥
क्रूर कर्म अति कुटिल सुभाऊ ❋ है साहसो विदित सबकाऊ ॥
कालहु की भय नेक न मानत ❋ सो नरेश नीके तुम जानत ॥
यक्षराज अर्जुन ते हारे ❋ सो जाने सब भेद तुम्हारे ॥
लङ्कापुर दौंड़ेउ सहदेऊ ❋ सो तुम्हार जाना है भेऊ ॥
शंकर शत्रु धनंजय जीते ❋ देव अदेव जासु भयभीते ॥
सकै जीति नहिं पवनकुमारा ❋ कीन्हे सखा विदित संसारा ॥
त्रिभुवनपति बैकुण्ठ बिहारी ❋ हैं तिनके सहाय गिरिधारी ॥
है अनन्य हरिभक्त अतीवा ❋ जीते को पाण्डव बलसीवा ॥
पश्चिम देश नकुल सब भारी ❋ जीते यमन जाल बल भारी ॥
ते सब धर्मराज अनुगामी ❋ दीजै अंश बात सुनु स्वामी ॥
कह भूपाल सत्य सुनु भाई ❋ देत मीच नहिं मोरि देवाई ॥
यह सुनि बिदुर उतरपुनि दीन्हा ❋ बरजत रह्यो भूप जब कीन्हा ॥
तब रुख लखि मैं रह्यउँ चुपाई ❋ कह्यउँ नाथ तुम सबै सुनाई ॥
दुर्योधन कह तुम दुखदाई ❋ सुनहु नाथ नहिं मोरि सिखाई ॥
राज्ययोग नहिं लक्षण चीन्हा ❋ मन्त्री कर्म त्यागि हम दीन्हो ॥

दोहा–राजछोड़ि नरनाह सुन, कबहुँ न होइ उछाहु।
करहिं अवज्ञा पुत्र जब, तब नितनित पछिताहु॥
राज दियो दुर्योधनहिं, पुत्र प्रीति ह्वै लीन।
तुम्हरो भोजनपान अब, नृप उनके आधीन॥

दुर्योधन कहँ कीन्ह्यउ नाथा ❀ सर्बस भूप तज्यउ निज हाथा॥
अब शोचत नहिं प्रथम सँभारे ❀ असकहि बिदुर नयनजलढारे॥
सुनो भूप बिधि रेख लिलारा ❀ लिखी ताहि को मेटनहारा॥
दासीयोनि जन्म जहँ पावा ❀ ताते तात न बनै बनावा॥
हमहुँ बिचित्रबीर्य के बेटा ❀ मगमहँ चलत भई नहिं भेटा॥
धनुबिद्या भीषम जो दयऊ ❀ सो मोहिं नाथ बिसरिनहिंगयऊ॥
तुम अरु पाराडव सखा हमारे ❀ पातक होइ दोउ के मारे॥
पाराडुपुत्र तुव पुत्र अभागे ❀ कलह बिलोकि अस्त्र हम त्यागे॥
करि नहिं सकै और कोऊकी ❀ समगति हम न भूप दोऊकी॥

दोहा–दुर्योधन अति मानते, श्रवण सुनत नहिं बात।
परमचतुर गुणनिधिबिदुर, समुझिसमुझिपछितात॥

अहोदेव तुम मति हरिलीन्ही ❀ अति कबुद्धिकुरुनाथहि दीन्ही॥
हानि लाभ तुव बश मैं जाने ❀ अस कहि बिदुर बहुत पछिताने॥
धृत्तराष्ट्र मन शोच अपारा ❀ कहत बिदुर ते बारहिं बारा॥
दुर्योधन अति कीन अनीती ❀ सो मैं भली भाँति सब चीती॥
संजय गिरा मानि बिश्वाशू ❀ जानेउ बन्धु भरत कुलनाशू॥
धन मदमत्त अधम अपकारी ❀ कीन नगिनि शठ द्रुपदकुमारी॥
सोसुधि उनहिं बिसरि किमि जैहै ❀ दुर्योधन के आगे ऐहै॥
अबहुँ न शठ समुझत समुझावा ❀ बिन कारण को बैर बढ़ावा॥
अबम्वहिं समुझि परत मन माहीं ❀ बाढ्यो कलह बार कछु नाहीं॥

दोहा—दुर्योधन के मन बढ़ेउ, सुनहु बिदुर अभिमान।
सिखवत मैं बिधि कोटि ते, सो कछु करत न कान॥

बीतिगई यामिनि युग यामा ❋ आवत नींद न मन बिश्रामा॥
करहु बिचार यतन अब सोई ❋ जाते बन्धु बोध मन होई॥
भये बिकल लखि मन दुख पावा ❋ कीन बोध पुनि पद शिरनावा॥
आवाहन करि बिदुर बोलाये ❋ सनकादिक विधिसुत चलिआये॥
नृप प्रबोधि मन मोद बढ़ाये ❋ पुनि मुनि सत्यलोक कहँ आये॥
संजय पठवो बोलि सुयोधन ❋ लागे भूप करन सब बोधन॥
गन्धारी अरु बिदुर बुझावा ❋ कालबिबश कछु मनहिं न आवा॥
सबकहँ प्रीति उतरु पुनि दीन्हा ❋ गयोभवन सिखकान न कीन्हा॥

दोहा—भानुमती तब हँसि कह्यो, काहिये नाथ हवाल।
गये बेगि पितु भवनते, आये बहुरि भुवाल॥

अन्ध बधिर हठशील अनामी ❋ क्रूर कुबुद्धि कृपण अरु कामी॥
मत्त प्रमत्त जरठ बश ओरे ❋ नीचप्रसङ्गी अरु मति भोरे॥
ऐसे पितुको कहा न कीजै ❋ पकरि ताहि कराग्रह दीजै॥
नीच प्रसङ्गी पिता हमारा ❋ दासी सुतहि दीन्ह अधिकारा॥
कहत भूप जो बिदुर सिखावत ❋ ताते कछु मो मन नहिं आवत॥
द्वै करजोरि कहत तब रानी ❋ करि करुणा करिये मम बानी॥
देखहु समुझि भरत कुलटीका ❋ पितु निदेश परिहरब न नीका॥
सो सुनि अधम बहुत रिसवाई ❋ कहि कटु बचनन दीन्ह दुराई॥
भइ मन त्रासग्रसित तब रानी ❋ गई पराइ भवन भय मानी॥
प्रातहिं यहाँ धर्मसुत जागे ❋ हरिहि समोद जगावन लागे॥

दोहा—अस्ताचल हरनो रुचिर, सृङ्ग सृङ्ग उतमङ्ग।
खजुआवत सुखते सुखी, चूं चूं करत बिहङ्ग॥
करत प्रकट पुनिप्रातरबि, बालकसहित उछाहु।
कूक कपोतन की मनहुँ, प्राचीदिशि कोराहु॥

अरुणाचूड़ बर बोलन लागे ❀ फूले कमल भ्रमर अनुरागे ॥
चहत पक्षिगण तजन बसेरा ❀ करत मधुरस्वर नाद घनेरा ॥
चरन मानसर हंस सिधाये ❀ उड़त हलावत परन सोहाये ॥
सकुचे कुमुद उलूक निवासा ❀ अन्ध कूप लीन्हे मन त्रासा ॥
यथा अनीति सुराज नशाने ❀ बञ्चक चोर सभीत छिपाने ॥
शशिद्युति रह्योचरण गिरि आधी ❀ जिमि निर्बल नृप बिगत उपाधी ॥
रबि भयमानि शरण तकि आवा ❀ मनहुँ प्रतीची शशिहि छिपावा ॥
तरुबर बास शिखण्डिन त्यागे ❀ करि मृदुरव निर्त्तत सुख पागे ॥

दोहा—भयो प्रात अब करि कृपा, जागे राजिवनैन ।
उचकि उठे सुनि श्रवणपुट, धर्मराज के बैन ॥

तेहि अवसर बन्दीगण बागे ❀ पुनि यदुबंश प्रशंसन लागे ॥
धर्मराय हरिपद शिरनाये ❀ पुलकिगात नयनन जल छाये ॥
परमानन्द प्रेम उर आवा ❀ प्रभु छबि देखि निमेष न लावा ॥
श्याम सजल घन सरिस शरीरा ❀ दृग राजीव हरण जन पीरा ॥
आनन इन्दु सहित मृदु हासा ❀ लोल कपोल मनोहर नासा ॥
खुलत दशन अति द्युति दरशाई ❀ तड़ित प्रभा जेहि देखि लजाई ॥
उन्नत भाल भृकुटि श्रुति कुण्डल ❀ जनुयुगरबिग्रहिगहिशशिमण्डल ॥
करत बिचार सुयश यह लीजै ❀ अमि अँचवाइ अमरपद दीजै ॥
रबि रथ बन्धन कहि करगाये ❀ प्रति उपकार करण जनु लाये ॥
बृषभ कन्ध अरु कम्बुक ग्रीवा ❀ अति बिचित्र शोभा की सीवा ॥
क्रीट मुकुट शिर सोह बिशाला ❀ नव तुलसीदल गजमणि माला ॥

दोहा—भुजप्रलम्ब पुनि कर कमल, मुखउदार के यूर ।
उर बिशाल रेखा उदर, रिपुमर्दन जनशूर ॥

कटि केहरी उदर त्रयरेखा ❀ कहि न सकैं छबि कबिशतशेखा ॥
नाभि गँभीर देखि मति घुमरी ❀ मानहुँ तरणि तनयजल कुमरी ॥
पीत बसन शोभित शुचि फेटा ❀ सजल जलद जनु जटित लपेटा ॥

जङ्घ पीड़नी नयन निहारे ❀ उपमा कहि न सकत कबिहारे ॥
हरिपद ते प्रकटी पुनि गङ्गा ❀ धरी शीश पर बैरि अनङ्गा ॥
तापद की उपमा का दीजे ❀ जो कछु कहिय सो अल्पगनीजे ॥
शाप शिला गौतम की नारी ❀ जे पद परशि पलक में तारी ॥
जे पदपद्म पखारि निषादू ❀ भयो बिदित जग बिदित बिषादू ॥
जे पदपद्म चारि श्रुति गाये ❀ चापत सिन्धु सुता उरलाये ॥
ते पद निरखि युधिष्ठिर राई ❀ अति आनन्द न हृदय समाई ॥
अस्तुति करत भरत जल लोचन ❀ जय रुक्मणी रमण अघमोचन ॥

दोहा—जय जय श्रीबृन्दाबिपिन, बासी नाशी पाप ।
अबिनाशी गति देत तुम, दास न देव दुराय ॥

चरण शरण कहि नाम पुकारत ❀ ताके नहिं गुण दोष बिचारत ॥
चरण शरण कहि द्विरद सुनायो ❀ त्याग्यो गरुड़ गगनपथ धायो ॥
कहुँ पट पात गिरी कहुँ माला ❀ हरी बिपति पुनि दीनदयाला ॥
ग्राह निधन करि शुभगति दीन्ही ❀ तहँ गजराज बिनय बहु कीन्ही ॥
शाप कथा कहि दोष मिटावा ❀ पुनि गजेन्द्र निजलोक पठावा ॥
शबरी नाम अपावन नारी ❀ परी चरण कहि शरण पुकारी ॥
कृपा दृष्टि देखी बनवारी ❀ चढ़ि बिमान बैकुण्ठ सिधारी ॥
कृपा निषादराज पर कीन्हा ❀ भालुकीशनिजसमकरि लीन्हा ॥
रावण बन्धु बिभीषण नामा ❀ कीन्ह कृतारथ श्रीसुख धामा ॥
करि करुणा हरि लीन्ह बिषादा ❀ भक्तशिरोमणि भे प्रहलादा ॥
अगजगनाथ अनुग्रह कीन्हा ❀ अबिचलपदवी ध्रुव कहँ दीन्हा ॥

दोहा—केशी हर कल्याण कर, कृपासिन्धु भगवान ।
क्रूर कपतन को सुगति, कवन देय बिन कान ॥
बालमीकि उलटा जपे, कह्यो आधही नाम ।
सबलसिंह चौहान कहि, दीन्ह्यो अबिचलठाम ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहान भाषाकृते पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

गणिका गीध अजामिलतारण ❋ गोपीपति गोत्रास निवारण ॥
श्रीकमला कुच कुंकुममण्डन ❋ जनकसुता दुखदुसह बिखण्डन ॥
हरिजनहृदय पयोधि मराला ❋ रहत बिहार करत सब काला ॥
गिरिवरधारी नाथ छबीला ❋ नारायण श्रीकन्त रँगीला ॥
माखनचोर चतुर्भुज स्वामी ❋ पद्म गदाधर अन्तरयामी ॥
ताते बिनय मानि प्रभु मोरी ❋ दुर्योधन गृह जाहु बहोरी ॥
मानहि सो न बिबश अभिमाना ❋ पुनरागमन करिय भगवाना ॥
करि बहुयतन ताहि समुझावहु ❋ अपनी दिशिते चूक न लावहु ॥

दोहा—समुझावहुप्रभुबिबिधबिधि, जाइयअबतीबार ।
होइहि होनेहार पुनि, जोबिधिलिखालिलार ॥

सुनि यह बचन कृष्णहँसिदीन्हा ❋ नीक बिचार भूप तुम कीन्हा ॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेऊ ❋ बोलिय सकल भूप अब तेऊ ॥
सब मिलि करहिं मन्त्र उपदेशा ❋ कहेउ कृष्ण तस करिय नरेशा ॥
सुनि नरेश सोइ बेगि बोलाये ❋ भीमादिक भ्राता चलिआये ॥
द्रुपद बिराट और सब राजा ❋ धर्मराज पहँ जुरेउ समाजा ॥
पुत्रन सहित द्रौपदी रानी ❋ चलि आई जहँ शारँगपानी ॥
कह हरि सुनहु सकल मनलाई ❋ पठवत हमहिं युधिष्ठिरराई ॥
सन्धि हेतु दुर्योधन भवनहिं ❋ कहिये मन्त्र रहौ जनि मौनहिं ॥
निजनिजमति जनि राखौगोई ❋ सबमिलिकहौ करिय अब सोई ॥

दोहा—धर्मराज सुनि हरिबचन, कही सबनते बात ।
कहियमन्त्र बिचारिकै, कृष्णदेव उत जात ॥

बुद्धि बिचारि सकल मिलि भाखौ ❋ अबनिजमन्त्र गोइ नहिं राखौ ॥
करिय मिलाप कि कीजिय रारी ❋ तौन बात अब कहौ बिचारी ॥
कहेउ भीम वहिं कीन्ह कुकर्मा ❋ त्यागेउ लोकलाज कुलधर्मा ॥
केशपाणि धरि द्रुपद कुमारी ❋ सभामध्य चह कीन्ह उघारी ॥
सुमिरण तुमहिं दीन ह्वै कीन्हो ❋ दीनदयाल राखि तब लीन्हो ॥

लक्षसदन चलि हमहिं पठायो ❀ अर्द्ध राति महँ अनल लगायो ॥
लीन्हेउ राखि तहाँ ते बाचे ❀ हरिकी कृपा अल्प नहिं आँचे ॥
विषमोदक वहि नीच खवायो ❀ रह्यउ न चेत जँजीर मँगायो ॥

दोहा—कसेउ लोहगुण सकलतन, डारिदियो ततकाल।
परेउँ गङ्ग की धार महँ, ततक्षण गयों पताल ॥

गयो भूमितल कछु सुधि नाहीं ❀ छहरिगयो विष सब तनमाहीं ॥
सर्प लोक पहुँचे यदुराई ❀ सुनि सुधि नागसुता तहँ आई ॥
असिनि आइकरि मोहिं तमासा ❀ नाना भाँति करैं परिहासा ॥
बिषतन भरे खुलत नहिं नयना ❀ कछु कछु सुनौंश्रवण पुटबयना ॥
अस्तुति करै मोहिं लखि मोही ❀ नागकुमारि कामबश भोही ॥
आप सहित मम सुन्दरताई ❀ बर्णत प्रीति करत अधिकाई ॥
करै कष्ट तन हरि हर ध्यावै ❀ बड़े भाग ऐसे पति पावै ॥
देवसुता जाको ललचाहीं ❀ नर नारी क्यहि लेखे माहीं ॥
कर्कोटक तनया सुनि बाता ❀ आई मम समीप हरषाता ॥
अमिय सींचि मुखमोहिं जियायउ ❀ जानि बिषयतन ताप बुझायउ ॥

दोहा—सहरावत पद पाणि गहि, करतप्रीतिअधिकारि।
अमितदेखि मोतनकरत, बारहिंबार बयारि ॥
मृगनयनी हिमकरबदनि, पहिरे भूषण चीर ॥
तननवीनकटिखीनअति, व्याप्योकामशरीर ॥

म्वहिं बिलोकि तन दशा बिसारी ❀ चित्रपुत्रिका की अनुहारी ॥
मम गति लीन्ह बढ़ो अनुरागा ❀ त्यागे लाज मनोभव जागा ॥
देख्यो नागसुता गति लोगन ❀ जाइ जनायो तिन पुनि भोगन ॥
नागसुता मानुष तन राँची ❀ भये सक्रोध बात सुनि साँची ॥
गुणमञ्जरी मनुज पति लीन्हो ❀ केहुँ कर्कोटक से कहिदीन्हो ॥
समुझि हिये यह बात अयोगी ❀ चला सकोपि अरुणदृग भोगी ॥

यहाँ कामबश छाँड़ि बिचारा ❋ बरहु मोहिं कह बारहिंबारा ॥
मैं समुझाय कही वहि पाहीं ❋ गुण मञ्जरी उचित अस नाहीं ॥
सुनि यह तोहिं निन्द सबलोगा ❋ नागसुता नहिं मानुष यागा ॥

दोहा—योगमनुजवर तुमहिं नहिं, देवयोनिमहँब्याल ।
काम बिबश बरबस हिये, पहिरायो जयमाल ॥

क्रोधित ब्यथा सर्प समुदाई ❋ ग्रसन मोहिं तेहि थलमहँ आई ॥
कोउ फण एक उभय त्रयचारी ❋ चपल जिह्व चष अतिरतनारी ॥
पञ्च सप्त षट फण को सर्पा ❋ कोउ फण अष्ट करत अतिदर्पा ॥
दश फण नाग पञ्चदश सोऊ ❋ कोउ फण बीस तीस हैं कोऊ ॥
चालिस कोउ पचास फणयोगी ❋ सत्तरि साठि असी फण भोगी ॥
शतफण एक पञ्चशत एका ❋ नाना बिधि फण सर्प अनेका ॥
उगिलत बिष अरु दृगरतनारे ❋ आशीबिष भारे तन कारे ॥
धूमर लाल श्वेत रँग नागा ❋ हरितपीतअरुबिबिध बिभागा ॥
ग्रसिनि आइ मोहि रिसकरि भारी ❋ देखि बिकल भै नागकुमारी ॥
त्यहि अवसर कर्कोटक आये ❋ चञ्चल जिह्व बदन फैलाये ॥

दोहा—श्यामबर्ण जनुजलदसम, रसनाचलतनिहारि ।
खुलेदशन अवलोकिपुनि, उपमाकहतबिचारि ॥

चपल जिह्व मुखबिच अभिरामिनि ❋ चमकत थिरतरहतजिमिदामिनि ॥
श्यामबर्ण सित दशन बिभाँती ❋ सघनघटा महँ जनु बगपाँती ॥
डरी मनहि मन नागकुमारी ❋ बिनय कहै बिधि बिष्णुपुरारी ॥
उमा रमा हे शारद माता ❋ बिनय करत राख्यो अहिवाता ॥
तब सुमिरेउ भयहरण कृपाला ❋ आयो गरुड़ सर्प कुलकाला ॥
ताहि देखि सब उरग पराने ❋ जहँ तहँ गये जात नहिं जाने ॥
कर्कोटक खगनाथ निहारी ❋ बलभा थकित करत मनुहारी ॥
प्राण दान दै प्रथम बचाये ❋ अबसक्रोध क्यहि कारण आये ॥

दोहा—पक्षिराज बोले बिहँसि, सुनहु सर्प शिरताज।
पाण्डव के सन्देह नहिं, रक्षक श्री ब्रजराज ॥
सो यदुनाथ चराचर स्वामी ❀ जगत बिदित मैं त्यहिअनुगामी ॥
जो कुलकुशल चहौ अहिराई ❀ मिलि पाराडव कहँ बैर बिहाई ॥
बचन हमार मानि तुम लेहू ❀ दुहिता भीमसेन कहँ देहू ॥
गरुड़ बचन सुनि तजि सन्देहू ❀ सुता बिवाहि दीन्ह करि नेहू ॥
गुण मञ्जरी सहित भगवन्ता ❀ रह्यो शेष पुनि बर्ष प्रयन्ता ॥
सर्प दया करि तहँ पहुँचाये ❀ गजपुर धर्मराज पहँ आये
समाचार सुनि परम अनन्दा ❀ रक्षा तुम कीन्ही ब्रजचन्दा ॥
मन्त्र हमार सुनिय यदुनायक ❀ कुरुपति निधन करनके लायक ॥
दोहा—बिनकारण काढ़बिपिन, कीन्हेसिशठअपकार।
ताते कीजियअवशिरण, यह मत नाथ हमार ॥
भीम बचन सुनि पुनि सहदेवा ❀ कही नाथ सुनिये जगदेवा ॥
उन हमार कीन्हो अपमाना ❀ नाथ तुम्हार भेद सब जाना ॥
केशाकर्षण शठ अपकारी ❀ सभा मध्य करि द्रुपदकुमारी ॥
भीषम द्रोण कर्ण के आगे ❀ रञ्चक कानि न कीन्ह अभागे ॥
सो सुधि यदुनन्दन नहिं भूलत ❀ सुमिरि सुमिरि अजहूँ उरशूलत ॥
भूप बचन गजपुर कहँ जैये ❀ हे हरि युद्ध अवशि ठहरैये ॥
सोवत जागत शरण तुम्हारी ❀ बनै सो करिय उचित बनवारी ॥
श्रुति कीरति सो धाम सतायो ❀ सन्तानिकमिलि बचन सुनायो ॥
युत प्रतिबिम्ब कृष्णा के आगे ❀ क्रोधित बचन कहन सब लागे ॥
द्रुपद सुता कह खल अभिमानी ❀ नाथ तुम्हारि बात सब जानी ॥
ताते और बिचार न करहू ❀ अब प्रभु दुर्योधन ते लरहू ॥
द्रुपद नरेश यहै मत राख्यो ❀ सहितबिराट शिखराडी भाख्यो ॥
सात्यकि धृष्टद्युम्न बलवाना ❀ अभिमन्यु काशिराज मनमाना ॥
दोहा—धृष्टकेतु पटनेश मिलि, सबन करो मत ठीक।
शूरसेन यहि बिधि कह्यो, और बिचार न नीक॥

मैं हरि कहत आपने जीकी ❋ है बिनु युद्ध बात नहिं नीकी ॥
धर्मराज वहि शठ अपमाने ❋ तुम समेत निर्बल करि जाने ॥
और बात सब तजि घनश्यामा ❋ ताते करिय अवशि संग्रामा ॥
कहत नाइ शिर बचन घटूका ❋ सुनिये नाथ क्षमाकरि चूका ॥
पाण्डव सहित अछत गोपाला ❋ द्रुपद सुता पुनि फिरत बिहाला ॥

दोहा—छलकरि दुर्योधन अधम, काढ़ेसि हमहिंबिदेश।
बांधे अजहुँ न द्रौपदी, गहे दुशासन केश ॥

तेरह बर्ष गई हरि बीती ❋ सुधि न लई केहु निपट अनीती॥
पाण्डव सबल जान संसारा ❋ तुम ईश्वर बसुदेव कुमारा ॥
तिनते कछु निसरेउ नहिं काजा ❋ मैं बड़िलाज सुनहु ब्रजराजा ॥
अब प्रभु दुर्योधन कहँ मारौ ❋ द्रुपद सुता को शोक निवारौ ॥
कोटिहु यतन रहौ जनि बरजे ❋ गरजत देखि चराचर लरजे ॥
धर्मराज तब क्रोध निवारो ❋ कहि प्रिय बचन निकट बैठारो ॥
सबलायक तुमको हम जानत ❋ है बड़ पाप गोतके मारत ॥
हे हरि सम्मत कहत पुकारे ❋ होइ नाथ भल मन्त्र हमारे ॥

दोहा—सुने बचन नरपाल के, द्रुपदसुता अकुलाइ।
बोली हरिसों जोरि कर, चरणकमल शिरनाइ॥

क्रूर शूर नहिं भूप हमारा ❋ जानत तुम यदुवंश कुमारा ॥
गहिके केश सभा शठ आनी ❋ मानत सो न कछुक गिलानी ॥
इन ते होत भली सो नारी ❋ रोदन करत पुकारि पुकारी ॥
तौ कछु बोध हिये हरि होई ❋ सभामध्य वहि खल निदरोई ॥
पुरुषाकार पाण्डु सुत नारी ❋ इनके बल रोंपत महिरारी ॥
अभिमन्यु आदि सप्त सुत मोरे ❋ करिहैं बिजय दास प्रभु तोरे ॥
ममगति देखि लाज पञ्चालहिं ❋ डरैं न कछु निडरैं रणकालहिं ॥
बान्धव धृष्टद्युम्न बल भारे ❋ भये कुण्ड ते संग हमारे ॥
रण महँ लरैं टरैं नहिं टारे ❋ करिहैं बिजय प्रसाद तुम्हारे ॥

युधामन्यु मम बन्धु तमोजा ❋ नाम शिखराडी नयन सरोजा ॥

दोहा—ममगति देखि सलज्ज सब, करिहैं काठिनमशान।
असकहिकै पुनि द्रौपदी, सबलसिंहचौहान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंह चौहान भाषाकृते
युधिष्ठिरश्रीकृष्णसंवादोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

कहेउ धनञ्जय सुनिये श्रीहरि ❋ काढ़ेसि धर्मराज हीने करि ॥
सब प्रकार जानत जगबन्दन ❋ बली व छली अधम कुरुनन्दन ॥
कपट तत्त्व शकुनी निर्मायो ❋ करि छल कीन्हें जूप हरायो ॥
औरो छल कीन्ह्यसि भगवाना ❋ सो चरित्र सुनिये दै काना ॥
कुरु पाराडव बालक सब भीरा ❋ खेलत रहे गङ्ग के तीरा ॥
बिषमोदक भीमहिं तहँ दीन्हो ❋ तबते हम प्रतीति तजि दीन्हो ॥
धर्मराज बन गयउ शिकारा ❋ श्वान संग युत तुरँग सवारा ॥
परम अकिंचन बिप्र बोलायो ❋ बिषमोदक तेहि हाथ पठायो ॥
स्वर्ण सप्तदश दीन अकोरा ❋ पठयहु करहु परमहित तोरा ॥
मोदक धर्मराज कहँ दीजै ❋ पठये हैं कुन्ती कहि दीजै ॥

दोहा—अशन करायो यतनकरि, कह्यो न नाम हमार।
करि बिनती पठयो द्विजहिं, जहँ नृप फिरत शिकार॥

जान्यो भेद न द्विज तहँ आयो ❋ धर्मराजते आनि सुनायो ॥
पठयउ मोहिं पाराडु सुत रानी ❋ मोदक तुमहिं दियो निजपानी ॥
क्षुधित जानिकै मोहिं पठायो ❋ करहु अशन असकहिसमुझायो ॥
परम गहन बांधेउ नृप घोरा ❋ बैठे बिटप छाँह घन घोरा ॥
क्षुधित तृषाते बिकल शरीरा ❋ जानि निवास जलाश्रय तीरा ॥
भोजन तुरत करन नृप लागा ❋ बिषगा छहरि देखिद्विज भागा ॥
त्राहि त्राहि करि हृदय डराना ❋ छल कीन्हेसि शठ मैं नहिं जाना ॥
तृषावन्त नृप विष की पीरा ❋ परे मूर्छि नहिं चेत शरीरा ॥
बिकल बिलोकि कृपा प्रभुकीन्हो ❋ उदक पिआइ त्रास हरिलीन्हो ॥

दोहा—निकासि ततक्षण भूमिते, जल भाजनयुत हाथ।
पान करायो हरि तृषा, करी कृपा यदुनाथ ॥

जल पिआइ फेरे तन पानी ❋ मिटी तृषा तन ताप बुझानी ॥
छलकरणी मैं तुमहिं सुनाई ❋ बनकी सुनहु बात यदुराई ॥
बन काढेसि शठ करि अपकारा ❋ निधनहेत नित करै विचारा ॥
दूत आय यह बात जनाई ❋ बनमहँ निकट युधिष्ठिरराई ॥
परम दीन द्विज बेष बनाई ❋ बसहिं बिपिन पर्णशालाछाई ॥
भोजन कबहुँ मिलै कहुँ नाहीं ❋ बसन मलिन जीरण तनमाहीं ॥
तेजहीन तन बिकल बिशेखी ❋ आयों नाथ आजु मैं देखी ॥
दूतबचन सुनि अति सुखपाये ❋ बिहँसि सचिव सबनिकटबोलाये ॥

दोहा—चरबर आयो सुनु सचिव, धर्मराज कहँ देखि।
कह्यो सेन ह्वैकै चलो, भोजनहीनाबिशेखि॥
कबहुँ खातहैं मूल फल, कबहुँक अँचवतनीर॥
निर्बल भयो शरीर सब, टूटो पर्णकुटीर ॥

सबमिलिचलो सेनसजिजाइय ❋ मान भङ्ग उनको करि आइय ॥
असकहि चलेउ तुरत कुरुनायक ❋ सेन साजि कर्णादि सहायक ॥
पर्णकुटी ढिग खल चलि आयो ❋ सुनत चित्ररथ इन्द्र पठायो ॥
देखि अनीति सुरेश रिसाना ❋ चलेउ चित्र तब साजि बिमाना ॥
शरनमारि दलब्याकुलकीन्ह्यासि ❋ दुर्योधनहिंबाँधि पुनि लीन्ह्यसि ॥
करि निबन्ध लैगयो अकासा ❋ आरत शब्द करत मन त्रासा ॥
नृपति धनञ्जय आनि छुड़ायो ❋ शरन मारि गन्धर्ब भजायो ॥
दीन्ह पठाइ बहुरि रजधानी ❋ बलकी बात नाथ सब जानी ॥

दोहा—सहिनसकतप्रभु एकक्षण, रोवतद्रुपदकुमारि।
हनौ नाथ कुरुनाथ कहँ, बाणशरासन धारि॥

अस कहि भयो बिलोचन राते ❋ मोचत खुलत मनहु मदमाते ॥

जीभनिकारि अधर पुनि चाटत ❋ फरकत जात दशनते काटत ॥
मुखअतिअरुण कुटिल भइभौंहें ❋ श्वासलेत जिमि ब्याल रिसौ हैं ॥
क्रोध बिवश अर्जुन कहँ जानी ❋ बरजत भूप कहत मृदुबानी ॥
अपनी दिशिते चूक न करहू ❋ मानै जब न बन्धु तब लरहू ॥
ताते अब श्रीकृष्ण पठाई ❋ जाय उनहिं देवैं समुझाई ॥
जो वह देइँ गाउँ दुइ चारा ❋ रहउ चुपाइ नीकि नहिं रारी ॥
सुनत बचन द्रौपदी रिसानी ❋ हे नृप फेरि कही यह बानी ॥
मम गति देखि न आवत लाजा ❋ निपट अनीत सुनहु ब्रजराजा ॥

दोहा—बिकल बिलोक्यो द्रौपदी, करि प्रबोध यदुराय।
जो तुम्हरे मन भावना, सो हम करब उपाय॥

यहि विधि कहि यदुनाथ बुझाई ❋ करि प्रबोध पुनि भवन पठाई ॥
नृपसन बिदा माँगि भगवाना ❋ सात्यकि सहित चले चढ़ियाना ॥
पठवन चले नकुल हरि साथा ❋ स्यन्दनकी पटिका गहि हाथा ॥
बिनय करतनिजबिपति सुनावत ❋ पुनिपुनि चरणकमलशिरनावत ॥
फिरेउ तात हरिमुख सुनि बानी ❋ बोले नकुल ढरत दृगपानी ॥
गदगद कण्ठ गरे भरि आवा ❋ ऊर्ध्वश्वास लै बचन सुनावा ॥
कौरवपति अति कीन्ह अनीती ❋ बर्ष त्रयोदश बनमहँ बीती ॥
केश पकरिकै शठ अभिमानी ❋ द्रुपदसुता मन्दिर ते आनी ॥
मारन कह्यो भीम मन रूठी ❋ हे हरि भई प्रतिज्ञा झूठी ॥

दोहा—क्षत्री ह्वै प्रण भाषई, फिरि न करै ब्रजराज ।
बिदित सकलसंसारमहँ, याते अधिक न लाज ॥

सभामध्य सुनिये भगवाना ❋ करि रिस द्रुपदसुता प्रण ठाना ॥
दुश्शासन के रक्त नहाई ❋ बाँधब कच तब कृष्ण दोहाई ॥
मृषा न प्रण करिहैं निज रानी ❋ सो दुख समुझि सुदर्शनपानी ॥
रहत नाथ मन मोर मलीना ❋ धर्मराज पुनि राज बिहीना ॥
तेहि दुखते दुख अति भगवाना ❋ सो अब कहौं सुनिय दै काना ॥

बृद्ध मातु परघर प्रतिपालक ❋ यथा अनाथ होत बिन बालक ॥
पञ्च पुत्र जेहि सब परिवारा ❋ भ्रातजात तुम हरि अवतारा ॥
सो कुन्ती ऐसो दुख पावत ❋ हे हरि नेकु लाज नहिं आवत ॥
अर्जुन कहेउ कर्ण कहँ मारण ❋ तेहि प्रण के रक्षक जगतारण ॥
मन्त्र हमार सुनिय यदुराई ❋ मिटै कलङ्क सो करिय उपाई ॥

दोहा—हम देखत शठ द्रौपदी, आनी सभा निशङ्क ।
खण्डियअरिरणमण्डकोर, तबयहमिटैकलङ्क ॥

अस कहि नकुल चरण शिरनावा ❋ करि प्रबोध हरि कण्ठ लगावा ॥
बिहँसि बचन भाष्यो बनवारी ❋ पूजी मन कामना तुम्हारी ॥
मिटिहैं सब सामर्थ कलेशा ❋ धरहु धीर तजि सकल अँदेशा ॥
धर्मशील को कबहुँ अकाजा ❋ होय न नकुल कहत ब्रजराजा ॥
पापिन को सुख स्वप्न समाना ❋ जानहु तात न ठीक ठिकाना ॥
वो अनीतिरत नीति न जानत ❋ तृणसमान त्रैलोकहि मानत ॥
धर्मशील है भूप तुम्हारा ❋ गति अलीक जानत संसारा ॥
नीतिनिपुण मम भक्त प्रबीना ❋ सुर महिसुर गुरुपद मतिलीना ॥
ऐसेन को नहिं होत अकाजा ❋ यहिबिधि करिप्रबोध ब्रजराजा ॥
अब बिलम्ब नहिं दिन दश बीते ❋ करिहौं काज तात मन चीते ॥
भये मुदित सुनि श्रीपति बानी ❋ प्रीति प्रतीति न जाय बखानी ॥

दोहा—भयोबिदामन हर्षअति, पद गहि गोकुलचन्द ।
करि प्रबोध फेरे नकुल, सबलसिंह नँदनन्द ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंहचौहानभाषाकृते सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

फिरे नकुल प्रभु आयसु पाई ❋ सात्यकि सहित चले यदुराई ॥
नगर बारणावर्त्त बसेरा ❋ कीन्हजाइ हरि जाइ अबेरा ॥
हरि सुधि पाइ सकल पुरबासी ❋ आये मिलन ज्ञानगुणरासी ॥
बिबिधप्रकार कीन्ह सतकारा ❋ जोरिजोरिकर हरिहि जोहारा ॥
बहुत भाँति कीन्हे पहुनाई ❋ अति आनन्द न हृदय समाई ॥

तेहि निशितहाँ शीलगुणधामा ❀ सात्यकि सहित कीन्ह बिश्रामा ॥
अरुणचूड़ अरुणोदय बोले ❀ कमल बिलोचन लोचन खोले ॥
तब श्रीहरि सात्यकी जगायो ❀ दारुक बाजि साजि रथ लायो ॥
पुरजनसकल बिदा हरि कीन्हो ❀ भोर भये पुनि मारग लीन्हो ॥
नाना भाँति कहत इतिहासा ❀ चलेजात मग सहित हुलासा ॥

दोहा—पूछेउ सात्यकि जोरिकर, सनहु रुक्मिणीरौन ।
भारत पद कुरुबंश को, कहौ सो कारण कौन ॥

बोले बिहँसि बचन यदुराई ❀ पूरब कथा सुनहु तुम भाई ॥
यहि कुल भयो भूप दुष्येतू ❀ शील सनेह सत्यनिधि सेतू ॥
सो शकुन्तला बिदित न काही ❀ भूप बिपिन महँ ताहि बिवाही ॥
भरत नाम तिन सुत उपजायो ❀ भारत सब शशिबंश कहायो ॥
हँसि बोले सैनेश कुमारा ❀ कहिये नाथ सहित बिस्तारा ॥
स्वल्प कहे मन बोध न होई ❀ गुप्त कथा जनि राखौ गोई ॥
तब हरि चित्र बिचित्र कहानी ❀ लगे कहन सुनि सात्यकिबानी ॥
सावधान मन थिर करि भाई ❀ अब तुम सुनहु कथा सुखदाई ॥

दोहा—चन्द्रबंश महँ आइ नृप, प्रकट भयो दुष्यन्त ।
तिनके गुणवर्ण न करत, कविपण्डितशुचिसन्त ॥

जनु रचना निज बिश्व सँवारी ❀ रचि बिरञ्चि तेहि दै करतारी ॥
कामकला अबला मन जानहि ❀ काल समान शत्रु को मानहि ॥
प्रजा जानि मन पूरण लाहू ❀ सदा उछाह करत सबकाहू ॥
द्विजगण धर्म केर अवतारा ❀ जानहिं हृदय अनन्द अपारा ॥
कुल के वृद्ध स्वल्प सुजाने ❀ सेवक सेवहिं नृपहिं डराने ॥
जाके राज्य अनीति न होई ❀ प्रजा प्रसन्न जान सब [illegible] ॥
साम दाम पुनि दण्ड बिभेदा ❀ करैं भूप जिमि बरणो [illegible] ॥
अतिथि क्षुधारत की सुधि [illegible] ❀ यथायोग याचक कहँ दे[illegible] ॥
सु[illegible]सुगंध [illegible]क जिमिहंसा ❀ सुर सिरात करि भूप प्रशंसा ॥

दोहा—कल्पबृक्षसमदानकहँ,कीरति शशि अवदात।
भानुसमानप्रतापजग,अधिकअधिकसरसात॥

राज सूय आदिक बिधिनाना ❋ कीन्हे भूप दये बहु दाना॥
करे अमित जिन यज्ञ अरम्भन ❋ पूरि रहे पुहुमी महँ खम्भन॥
तासु तेज रवि उदय बिलोके ❋ नृप किरीट सबकुमुद सशोके॥
रहत मौन कछु कहत सो नाहीं ❋ तन समीप जिमि तनपरछाहीं॥
बञ्चक चोर उलूक समाना ❋ हेरत मिले न ठीक ठिकाना॥
सुजन कमल फूले बहुभांती ❋ खल मलीन जिमि उडुगणपांती॥
भये कोकनद बनिक बिशोका ❋ सुर पूरण बिलसहिं निजलोका॥
जीव बन्धु सम मित्र सुखारे ❋ फूलि रहे जहँ तहँ रतनारे॥

दोहा—नृप कीरति पारद किधौं, शारद मुक्ताहार।
हिमगिरिकी कैलासकी, किधौं देवसरि धार॥
शरद चन्द्र की चन्द्रिका,मानहुँकरतप्रकास।
धवलध्वजासी देवपुरि, ऊपर करत बिलास॥

कुन्द कलासी कुमुद कलासी ❋ हाटकसी बगपांति भलीसी॥
नीर फेनु सी गङ्ग रेनुसी ❋ बासुकिसी सुरपति कि धेनुसी॥
कामधेनुसी फटिक शिलासी ❋ बेलासी करपूर बिलासी॥
गणपतिसी हरमी गिरिजासी ❋ कीरति बिशद नदी बिरजासी॥
शांति सत्यसी संतबसनसी ❋ उदधि उदधसी द्विरददसनसी॥
की तुषार की तरणि तरङ्गा ❋ किधौं बिष्णुतन बिशद कुरङ्गा॥
नृपति कीर्ति जनु श्वेत बिताना ❋ भरत खराड मराडल महँ ताना॥
दान ज्ञान द्वोखंभ बिभागे ❋ नाना सुत सिरमाकसि लागे॥
बुधि कनात हरिभक्त चँदोवा ❋ हिंसायुत परदा तहँ जोवा॥
युद्ध शूर नृप बुद्धि उदारा ❋ गुण अनेक को बरणै पारा॥
अपर कथा अब कहौं बुझाई ❋ चितदै सुनहु श्रवण सुखदाई॥

दोहा–कथा भए दुष्यन्त की, भाषी चित्र बिचित्र ।
ज्यहि बिधि भई शकुंतला, सो अब सुनहु चरित्र ॥

बिश्वामित्र महामुनि आये ❋ करत बिपिन तप ध्यान लगाये ॥
तहँ मेनका रूप गुण रासी ❋ जात गगनपथ देव बिलासी ॥
भूषण बसन बिभूषित अङ्गन ❋ गावत राग बसन्त तरङ्गन ॥
बीण बजावत ताल अभङ्गन ❋ निर्त्तत गति संगीत उमङ्गन ॥
फूलन को गजरा जु तरङ्गन ❋ उठत सुगन्ध समीर प्रसङ्गन ॥
मुखते मोल कपूर लवङ्गन ❋ अलि गुञ्जत सँग अरग प्रसंगन ॥
मुनि समीप उतरी सो आई ❋ करी कजान समाधि जगाई ॥
देखि मेनकहि बिकल शरीरा ❋ मुनि मन भयो मनोभव पीरा ॥
बहुत बार लगि रह्यो निहारी ❋ सुधि न रही तन सुरति बिसारी ॥
बीण बजाइ मधुर स्वर गावत ❋ खेलत फाग गुलाल उड़ावत ॥

दोहा–मुनि त्रिय कहँ पीतिय गांधे सुत, निरखत बारहि बार ।
बिकल युगल तन काम बश, भूलो सब आचार ॥

बिश्वामित्र मनोभव जीता ❋ बर्ष एक सम बासर बीता ॥
भई निशा सो मुनि ढिग आनो ❋ करि ढिठाइ तन महँ लपटानो ॥
जङ्घ जङ्घ सों कटि कटि जोरी ❋ उरसे उर मुनि मति भई थोरी ॥
अधराधर ऊपर रद दीन्हा ❋ करि चुम्बन आलिङ्गन कीन्हा ॥
करि बिपरीत सुरति बहुभाँती ❋ द्वादश मास गये जनुराती ॥
भये बिकल तब मन सुधि आई ❋ खोयो तप बहु कीन भोगाई ॥
रति करिकै मुनिबर पछिताने ❋ त्यहि बनते कहुँ अनतहि राने ॥
भई सुता बीते नौ मासा ❋ गई डारि सो सुर पति पासा ॥
एक बार नहिं छीर पियाये ❋ रोदन करत क्षुधा तन छाये ॥
दीन शब्द सुनि मुनिबर आई ❋ तृणशाला लै जाइ जियाई ॥
मुनि उतंग कीन्हो प्रतिपाला ❋ भई तरुणि बीते कछु काला ॥

दोहा—सबलसिंह चौहान कह, हृदय परम आनन्द ।
दिनदिनद्युतिबाढ़ीअधिक,जिमिद्वितियाकोचन्द ।

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

तनसे निकसि ज्योतिद्युति भारी ❋ फैलिरही चहुँ दिशि उजियारी ।
लाज सहित चष अरुण नुकीली ❋ करुणामय सब भाँति छबीली ॥
अञ्जन दै दृग रञ्जित कीन्हे ❋ खञ्जन की उपमा हरि लीन्हे ॥
मृग निजदृगपटतर नहिं जाने ❋ लाजमानिमन बिपिन छिपाने ॥
त्रियदृग करत कमल करि कोऊ ❋ मम मनमें भासित नहिं सोऊ ॥
कमलज फूल तज्यो तन ताहू ❋ ऐसि ज्योति मोहत सब काहू ॥
नासा सुभग अनूप सज्याती ❋ जगमगात नथबेसरि मोती ॥
नाक समीप मोद अधिकाई ❋ गुरु कवि मन्त्र करत मनलाई ॥
आनन सुभग चन्द्र मदहारी ❋ अधर प्रबाल लाल सुखकारी ॥
भृकुटी बाम श्याम अहिछौना ❋ शशि समीप जनु रचे खिलौना॥
कच मेचक तल श्रुति ताटङ्का ❋ घनघमराड दामिनी दमङ्का ॥
अधर बीच द्युति दशन बिभांती ❋ जनु बिद्रुम मुक्ताहल पांती ॥
करि न सकतकबिकराठ लुनाई ❋ फिरिनरच्योबिधिकरि निपुणाई ॥
भुज मृणाल भूषण सब अङ्गा ❋ देखि अनङ्गनारि मन भङ्गा ॥
अति उन्नत कठोर बक्षोजा ❋ गेंद खेल जनु रच्यो मनोजा ॥
कटि सूक्षम कच अँगुली परना ❋ नखअति अरुणलालद्युतिहरना ॥

दोहा—अतिसूक्षममृदु उदरपुनि,पुनिअमोलआभराम।
उपमा कहत बिचारि जनु,रच्योदुलीची काम॥
जंघथम्भ सम कदलिके, उन्नत सुभग नितम्ब।
अतिसुन्दर पिंडुरा लखे. करत मदन आलम्ब॥

अम्बुज सम कर पद अरुणा ❋ थिर न बुद्धि मोरवान निहारे ॥
तन मन काम सरिस उजियारा ❋ मनहुँ दीप ते दीपक बारा ॥
एक समय दुष्यन्त नरेशा ❋ देखि चकित भे अद्भुत भेशा ॥

मृगया फिरत बिलोकत राजा ❀ बिहरत बिपिन करततन साजा ॥
भयो काम बश ताहि बिलोकी ❀ चितवतचकितनयन जलरोकी ॥
देखि स्वरूप नराधिप फूले ❀ जनु मनमथहि डोल कढ़ि भूले ॥
प्रेम सो डोरि डोलावत खींचे ❀ कबहुँ उरध मन कबहूँ नीचे ॥
करत बिचार नरेश सुजाना ❀ प्रियबश भयो हरे विधि ज्ञाना ॥
रम्य अरम्य जानि नहिं जाई ❀ समुझिसमुझि नृपमन पछिताई ॥
द्विजकुमारि की भूप किशोरी ❀ मनमथ बिबश करी मति भोरी ॥
बिप्रसुता तव बात अयोगा। ❀ सुनि परन्तु हँसिहैं सब लोगा ॥

दोहा—भूप सुता जो होइ तव, बनिआई सब बात।
होइअगम्यतबनाकिनाहिं,समुझिसमुझिपछिताता॥

बिस्मय हर्ष बिबश नरनाहू ❀ धरि धीरज मन करत उछाहू ॥
मैं अपने मन की गति जानत ❀ कबहुँअसतपथपदनाहिं आनत ॥
इत बिधि रच्यउ मोर संयोगा ❀ योग त्यागि नहिं होइ अयोगा॥
मन्मथ बिबश भूप कहँ जानी ❀ तब यह भई गगनपथ बानी ॥
बिश्वामित्र मेनका नारी ❀ भा बिहार भइ प्रकट कुमारी ॥
सो शकुन्तला सब गुण खानी ❀ तुम नरेश होई यह रानी ॥
गाधिसुवन क्षत्रीकुल माहीं ❀ जानत सब अयोग कछु नाहीं ॥
मुनि उतङ्ग कीन्हा प्रतिपाला ❀ गगनगिरा सुनि मगन भुवाला॥
निकट गये नृप बिबश अनङ्गा ❀ प्रेम सहित करि चपल तरङ्गा ॥

दोहा—पूछेउ नृप कित बन फिरत, का पुनिनामतुम्हार।
सुता अलौकिक कौनकी, मनबशकरे हमार ॥
बोली बिहँसि शकुन्तला,सुनिये भूप प्रसंग ।
तुम क्षत्री हम विप्र की, सुता मनोहर अंग ॥

मुनि उत्तंग बिदित सुखरासी ❀ तासु सुता मैं बिपिन बिलासी ॥
अगम सदा क्षत्रीकुल माहीं ❀ बात अयोग उचित नृप नाहीं ॥
तासु गिरा सुनि कह्यउ नरेशा ❀ जनि बोलहु असबचन भदेशा ॥

बिधि सुत अत्रि बिदित संसारा ❀ भयो चन्द्र सुत बुद्धि उदारा ॥
शशिसुत बुध बुधसुत जग जाना ❀ इला पुरूरव नाम बखाना ॥
त्यहि कुल भयो मोर अवतारा ❀ सम संयोग हमार तुम्हारा ॥
जिमि रति काम शचीसुरनायक ❀ जलदयथादामिनि सुख दायक ॥
तिमि संयोग हमार तुम्हारा ❀ बुद्धि बिचार रचेउ करतारा ॥
तव स्वरूप सुन्दर जलरासी ❀ मगन होत कुरुपार बिलासी ॥

दोहा—तुमहिं बिलोकत कुसुमधनु, लिये कुसुमशर हाथ ॥
तिलातिल तन जर्जर करेउ, ह्वै सकोप रतिनाथ ॥

तव त्रिय रूप ठगोरी डारी ❀ मन्दहास जनु फाँस पँवारी ॥
असिपुत्रिका कटाक्ष अमोला ❀ करषत प्राण मन्त्र मिठबोला ॥
बिषमोदक कपोल युग तोरे ❀ निरखत छहरिगयो तन मोरे ॥
अधर सुधारस मोहिं पियावउ ❀ करि करुणा अब बेगिजियावउ ॥
तुम बिन मैं न जियउँ घटिकाहू ❀ समुझत अब न बहुरिपछिताहू ॥
मूरि बिशल्य करन कुच तोरे ❀ परसत मिटै बिथा तब मोरे ॥
संजीवनी तोर सम्भोगा ❀ रहै न काम जो नितमहँ भोगा ॥
है यह योग अवर कोउ नाहीं ❀ ताते बिनय करत तुम पाहीं ॥

दोहा—नयन बयन तन मिलि रहो, रहो मिलन कहँ देह ॥
सो मिलाइ असनेह ते, त्यागहु सब सन्देह ॥

कहेउ उतङ्ग सुता सुनु राजा ❀ धीरज धरे सरै सब काजा ॥
पितुआयसु बिन यह बड़ि हाँसी ❀ रहो चुपाइ जानि निजदासी ॥
कह नृप और बिचार नकीजै ❀ अङ्गदान हितकरि मोहिं दीजै ॥
नैन बैन मिलि मिलेउ सनेहा ❀ यह अभिलाष मिलै सब देहा ॥
सुनि सालज्ज उतङ्ग किशोरी ❀ बोली मधुर गिरा करजोरी ॥
तन इत मन तुम्हरे मन साथा ❀ करि सङ्कल्प रहत नरनाथा ॥
कछु दिन में करिहैं जयमाला ❀ बोलि पिता मुनिदेव भुवाला ॥
डारब सुमनमाल तव ग्रीवा ❀ होइ बिवाह रहै श्रुति सीवा ॥
तुमकहँ देह देइ हम राखी ❀ तजो शोच नृप सब सुर साखी ॥

दोहा—रचेउ बिरञ्चि बिचारिकै, मोर तुम्हार बिवाह ।
तुमताजि करहुँ न आन पति, धरहु धीर नरनाह ॥
श्रीहरि हरगिरिजापति आना ❀ बरहुँ तुमहिं की त्यागहुँ प्राना ॥
भजों न आन पुरुष तन छूटै ❀ पितु निदेश तजि पी कलकूटै ॥
बूड़ों बारि अनल तन जारो ❀ बरों तुमहिं की रहों कुमारी ॥
सुनि प्रियबचन तुरँग तजि दीन्हा ❀ तहँ गन्धर्बब्याह करिलीन्हा ॥
काम बिबश नृप ज्ञान भुलाना ❀ आलिङ्गन कीन्हों बिधिनाना ॥
शकुन्तला निज नाम बतावा ❀ पुनिनृपगमनि भवन कहँआवा ॥
तब शकुन्तला मन्दिर आई ❀ दोहद भयो शोच अधिकाई ॥
सो चरित्र मुनिनायक जाना ❀ जो कछु भयो सकल धरिध्याना ॥
पूँछेउ ऋषै सबै कहि दीन्हा ❀ जिमि गन्धर्ब ब्याह नृप कीन्हा ॥

दोहा—धीरजदियो शकुन्तलै, उत्तम कुल नरनाह ।
यामें सुता कलङ्क नहिं, करिलीन्हों तुम ब्याह ॥
ताके भयो भरत महिपाला ❀ धर्मशील बलबुद्धि बिशाला ॥
षोड़श वर्ष भयो नरपालक ❀ खेलहि बिपिन ब्याल सँगबालक ॥
महिष शृङ्ग धरि कबहुँ उखारैं ❀ कबहूँ अंगुलि ब्यालमुखडारैं ॥
सिंह लूम धरि कबहुँ भ्रमावैं ❀ द्विरदमतङ्ग गहि दशननलावैं ॥
अदिति कुमार पुरन्दर जैसे ❀ सुत शकुन्तला जायो तैसे ॥
अनसूया के यथा निशाकर ❀ कश्यपके जिमि भये प्रभाकर ॥
रबि के मनु मनुतनय प्रियब्रत ❀ तिमि शकुन्तलातनय धर्मब्रत ॥
तरणि समान तेज तन माहीं ❀ बल पटतरिय बली कोउ नाहीं ॥
धनुर्बेद मुनि ज्ञान पढ़ाई ❀ अस्त्रशस्त्रसिखि करि निपुणाई ॥
राज्यनीति बहुभांति पढ़ायो ❀ हयगयरथहि सो युद्धसिखायो ॥

दोहा—पढ़ौ कि पुनिचटसारमहँ, खेलन जाइ शिकार ॥
सबलसिंह चौहान कहि, सुनि मनमोद अपार ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते ऊनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

राज्य योग सब लक्षण जानी ❀ निकटबोलाय कहतमुनिज्ञानी ॥
पितु तुम्हारशशिबंश नरेशा ❀ नृप दुष्यन्त सब जानत देशा ॥
अतिबलिष्ठ दुहिता सुत मोरा ❀ सकल धरा मण्डल है तोरा ॥
भूपति रहै कृपा अभिलाखे ❀ रहै सुरेश जासु रुख राखे ॥
तुम पितुसभा अलौकिकलीला ❀ बसै दिगीशनकेर उकीला ॥
सोमबंश महँ जन्म तुम्हारा ❀ अत्रि गोत्र जानै संसारा ॥
इला पुरूरव पितामह नामा ❀ तेज निधान शूर बलधामा ॥
पितु गृह चलहु करहु निजराजू ❀ सहित धरा धन सेन समाजू ॥
पुनि बहिक्रम भूप बुढ़ाना ❀ औरन सुततुमकहँ नहिं जाना ॥
चिन्ता बिबश भयो नृप अङ्गा ❀ प्रातहि तात चलहु मम सङ्गा ॥
तुमहिं बिलोकि भूप सुख पाइहि ❀ राज्य देइ पुनि कानन जाइहि ॥
तपचर्या की करत बिचारा ❀ सुतहित बिपिन न जाइँ भुवारा ॥
तुमहिं बिलोकि त्यागि सबशूला ❀ नृप तपकरहिं सहित अनुकूला ॥

दोहा–प्रातहि सहित शकुन्तला, चलहु हमारे साथ।
सुखी करहु दुष्यन्तकहँ, होहु पुत्र नरनाथ ॥

अस कहि पुनि मुनि सेवनलागे ❀ उदित होत उदयकर जागे ॥
सुत शकुन्तला सहित पयाना ❀ कीन्ह कहा मुनि ज्ञाननिधाना ॥
आये चन्द्रबंश रजधानी ❀ दरशन दीन्ह सभामहँ आनी ॥
देखि महीपति कीन्ह प्रणामा ❀ दीन्ह अशीश मुनीश अकामा ॥
अर्घ देत आसन बैठारे ❀ ह्वै प्रसन्न तब बचन उचारे ॥
सुनहु भूप यहु भरत कुमारा ❀ तनय तुम्हार बिदित संसारा ॥
असकहि पुनि प्रणाम करवावा ❀ प्रीतिसहित निजढिग बैठावा ॥
देखत भूप भरत की ओरा ❀ अतिसुन्दरतन बयसकिशोरा ॥

दोहा–बृषभकन्ध दीरघभुजा, दीरघ बक्ष बिशाल।
चन्द्रबदन कटि केहरी, कमलाबिलोचनलाल ॥

कछु शिशुता कछु तन तरुणाई ❀ सहित बीरता कढ़त लोनाई ॥

तब शकुन्तला सभा मँझारी ❀ आई तुरत दिशा तम हारी ॥
नृपहि देखि मनहीं मन माहीं ❀ कीन्ह प्रणाम प्रकट कछु नाहीं ॥
देखत चकित सभा सब कोई ❀ शची किधौं रम्भा रति होई ॥
मञ्जुघोष मेनका घृताली ❀ विश्वमोहनी कुलकी राली ॥
प्रभा सरस शोभा तन जाके ❀ नहिं तिलोक पटतरमहँ ताके ॥
जातनकी सुन्दरता ताकी ❀ सलज होत उरबशी बराकी ॥
की रोहिणी किधौं अनुसैया ❀ अरुन्धती की उदित जोन्हैया ॥

दोहा—रहे मौन नहिं कहत कछु, शोभा बिपुल निहारि।
देखी भूप शकुन्तला, पहिंचानी निज नारि ॥

कह नृप कौन कहाँ ते आई ❀ बोली मधुर गिरा शिरनाई ॥
करत हँसी की बिन पहिंचाने ❀ पूछत नाथ कि हमहिं भुलाने ॥
भूली सुरति भई मति भोरी ❀ मैं शकुन्तला अनुचरि तोरी ॥
दृग नीचे करि कहत सलाजा ❀ बनमहँ मिली समुझमन राजा ॥
जहाँ उतङ्ग केर पर्णशाला ❀ परमगहन सुधि करहु भुवाला ॥
नदी पुनोति तरणितनया तट ❀ सुन्दर सुखद छाँह शीतलबट ॥
नाम बताय भवन तुम आयो ❀ करि प्रबोध मोहिं भवन पठायो ॥
भरत जन्म की कथा सुनाई ❀ तुम्हरे दरशहेत इत आई ॥
यह लालसा न दूसर काजा ❀ छांड़ी बिपिन भूल सुधि राजा ॥

दोहा—देखी सुनी न मैं कछू, बिहँसि कही महिपाल।
सुनहु सभासद मिलि सकल, मृषा कहत यह बाल ॥

यह त्रिय रत पुरुष के लोभा ❀ मानत मोहिं चहत निजशोभा ॥
बारबधू की गति पहिंचानी ❀ है कुलटा मन में मैं जानी ॥
सुनि शकुन्तला कह मनमाखी ❀ तब नरेश दीन्हों सुरसाखी ॥
पतिव्रत जो छांड़ों मैं नाथा ❀ तो तुम करो खराड शतमाथा ॥
अस कहि पतिव्रता रिसवाई ❀ कहत सुरनते भुजा उठाई ॥
सुनत श्रवण तुम देत न साखी ❀ ह्वै है तेज हीन बिन आँखी ॥

सुनि यह पतिव्रता भय माना ❀ भई गगन सुर गिरा प्रमाना ॥
सम संयोग कलङ्क बिहीना ❀ अति पुनीति नृप नारि प्रबीना ॥
भरत नाम यह तनय तुम्हारा ❀ करहु भूप तुम अङ्गीकारा ॥

दोहा—सुनहु नरेश शकुन्तला, सब बिधि समसंयोग।
भइसुरागिरा प्रमाणनभ, सुनि हर्षे सब लोग ॥

सकल सभासद निकट बोलाई ❀ अति आनन्द न हृदय समाई ॥
कहत सुनाइ सबन ते राजा ❀ गगनगिरा सब सुनहु समाजा ॥
है शकुन्तला मम पटरानी ❀ निश्चय भरत पुत्र सुखदानी ॥
लोक वेद ते नारि कुमारा ❀ कीन्ह प्रथम नहिं अङ्गीकारा ॥
हँसिहैं लोग नरेश लोभाने ❀ तरुण त्रिया अरु सुत बिनजाने ॥
राख्यो गृह बड़ि कीन्ह ढिठाई ❀ अस बिचारि सुरगिरा सुनाई ॥
प्रथमहिं भई बिपिन नभ बानी ❀ करि बिवाह तब कीन्ही रानी ॥

दोहा—असकहिभूपशकुन्तला, दीन्ही भवन पठाइ ।
बैठारे पुनि मोदते, भरत समीप बोलाइ ॥

कह नरेश तब सुनहु उतङ्का ❀ कहिये नाथ मिटै आशङ्का ॥
देवन सम संयोग बखाना ❀ क्यहि प्रकार ते मैं नहिं जाना ॥
मुनि उतङ्ग मोदक अधिकाई ❀ कथा प्रथम मुनि बरणि सुनाई ॥
तुम शकुन्तलहि मुनिबर भाखी ❀ सुनहु भूप बिधि ते षटसाखी ॥
एकै भांति प्रकट भय दोऊ ❀ कथा बिचित्र सुनहु नृप सोऊ ॥
बिधि युत कुश जानत संसारा ❀ प्रकट करे कुश नाम कुमारा ॥
तिनकै गाधिराज बलखानी ❀ अङ्गदेश कीन्हीं रजधानी ॥
कौशिक तनय कौशिकी नामा ❀ तनया बिदित शीलगुण धामा ॥
कोम बिपिन तप कीन्ह महाना ❀ भई पुनीत नदी जग जाना ॥
कौशिक मुनि तन जनित अनङ्गा ❀ भई सुता मेनका प्रसङ्गा ॥

दोहा—सोजगबिदितशकुन्तला, सबबिधिसमसंयोग ।
भये तुम्हारे भूप अब, अरधसिंहासनयोग ॥

सुनहु कथा चित लाइ नरेशा ❀ निजकुलकी सब त्यागि अँदेशा ॥
कीन्ह बिरञ्चि अत्रि सुत नामा ❀ तप मूरति मुनिबर गुणधामा ॥
भे जग बिदित चन्द्र सुत ताके ❀ निशितम रहत कराठतर जाके ॥
अमियमयी अरु सुरपति भीता ❀ धरो शोश शिवजानि पुनीता ॥
सप्तबिंश त्रिय जग उजियारी ❀ अति प्रिय तिनहिं रोहिणीनारी ॥
तिनके सुत बुध बुद्धि निधाना ❀ भये सौम्यग्रह सब जग जाना ॥
इला पुरुरवा भय बुध बालक ❀ अतिबलिष्ठ श्रुतिपथ प्रतिपालक ॥
भयो कामवश चेत न आवा ❀ बिपिन फिरत उरबशी भ्रमावा ॥
देखि स्वरूप ज्ञान सब गयऊ ❀ बिसरी देह कामबश भयऊ ॥
हँसि दरशाइ बिलोचन तीछे ❀ चली पराइ चला नृप पीछे ॥
नगिन शरीर नगिन तरवारी ❀ हा उरबशी पुकारि पुकारी ॥

दोहा–प्रकटहोइकहुँ निकट होइ, कबहुँजाइँद्रुमओट।
कबहुँ दिखावत हास मृदु, कबहुँकरतदृगचोट॥

कबहुँक प्रकट होत त्रिय आगे ❀ चले जात नृप पाछे लागे ॥
निकट बिलोकि गगन उड़िजाई ❀ दूरि देखि पुनि देइ दिखाई ॥
कबहुँ बाम दक्षिण दिशि पूरा ❀ राग अलाप बजाइ तँबूरा ॥
यहि बिधि गगन बीच लै जाई ❀ अमितनिहारि प्रीति अधिकाई ॥
निज बश जानि दया अति बाढ़ी ❀ भूप समीप जाइ भइ ठाढ़ी ॥
करि बिनती नृप भवन लवाये ❀ करि प्रसंग तुमको उपजाये ॥
यथा पुरुष तुम तिमि वह दारा ❀ सब बिधि सम संयोग तुम्हारा ॥
कहि यहि बिधि मुनिबर उत्तङ्गा ❀ गये मराडली मेटि असङ्गा ॥

दोहा–बानप्रस्थ बिचारि अब, बिपिन गये ततकाल।
लै निज हाथ शकुन्तला, भरत भये महिपाल॥

जिनको सुयश पयोनिधि पारा ❀ गये उलङ्घि पहाड़ अपारा ॥
तिन पुरु नाम तनय उपराजा ❀ भयो सकल पुहुमीपति राजा ॥
नहुष नृपति तिनके बलदाई ❀ लीन्ह इन्द्र पद इन्द्र भगाई ॥

तिनके सुत पुनि भयो ययाती ❋ तेज प्रताप बिदित सब भाँती ॥
अरजा पुनि दूसरी कनिष्ठा ❋ नृपकी नारि नाम शरमिष्ठा ॥
शुक्र सुता ज्येष्ठी देवयन्या ❋ लघु त्रिय बृष पर्बा की कन्या ॥
युग पत्नी दश सुत उपजाये ❋ तिनके भारत सकल कहाये ॥
कथा बिचित्र सुनत सुख पावा ❋ पुनि सात्यकि हरिपद शिरनावा ॥
आगे चलि हस्तिनपुर देखी ❋ चित्रित चित्र बिचित्र बिशेखी ॥
अति उतङ्ग सोहत पुर फाटक ❋ रचित केवार द्वारमणि हाटक ॥
बसत लसतपुर द्युति अधिकाई ❋ जनु सुरनगर बास तहँ आई ॥
बसत तहाँ दुर्योधन पोचा ❋ कहत इन्द्रसन मन संकोचा ॥

दोहा—पुरजन देवी देव से, पाण्डव गयें बिदेश ।
करतनहुपजनुइन्द्रपथ, भोगि निकारि सुरेश ॥

नन्दन बन निन्दित बन बागा ❋ रुचिर बापिका कूप तड़ागा ॥
मन्दाकिनि सम सोहत गङ्गा ❋ उपमा उठत अनूप तरङ्गा ॥
बरण बरण पत्ती रव शोरा ❋ बेद पढ़त जनु सुर दुहुँ ओरा ॥
शङ्कर गिरि जनु रुचिर अटारी ❋ चातुर चारु सहित गच ढारी ॥
रङ्ग रङ्ग ध्वजपांति बिभाती ❋ मनहुँ सपत्त शैल उतपाती ॥
सोहत जहँ तहँ रुचिर कँगूरा ❋ त्रिय नगरी शिर सुन्दर जूरा ॥
खुले द्वार सोहत सुखरासी ❋ सुर पुर सरिस करत जनु हासी ॥
कोटिन गुड़ि उड़िउड़ि रँगराची ❋ नगर नगारन की धुनि माची ॥

दोहा—पुरशोभा हरषत निरखि, गये निकट भगवान ।
सबलसिंह चौहान कहि, को करिसकै बखान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व सबलसिंह चौहान भाषाकृतेविंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

दोहा—दारुक हाँक्यो अश्व रथ, सुमिरि महेश गणेश ।
नगर हस्तिनापुर तबै, कीन्हो तुरत प्रवेश ॥

बनित मनोहर रूप बिलोके ❋ यकटक लखैं नयनपल रोके ॥
हरि शोभा सागर सुखसारा ❋ त्रियलोचन झखकरत बिहारा ॥

गली बजार छतीसौ कोमा ❀ निरखत मुखचकोर जिमिसोमा ॥
सात्यकि सहित अलौकिक बेखा ❀ चले जात पुरवासिन देखा ॥
तरणि तमीशकितरणिकि शोरा ❀ की मन्मुमदन मनोहर जोरा ॥
हरि हर कहि बरणत हैं कोऊ ❀ नर नारायण हैं की दोऊ ॥
सात्यकि सहित सोह भगवन्ता ❀ इन्द्र सहित जनु जात जयन्ता ॥
मारग महँ शोभा अधिकाई ❀ मनहुँ राम लछमण दोउ भाई ॥

दोहा—पीतबसन सुन्दर ललित, कलितबिभूषणगात ।
फलित मनोरथ सबनके, निरखत सुखसरसात ॥

प्रभु शोभा बरणत नर नारी ❀ निरखिनिरखितनदशा बिसारी ॥
छबि अभिराम कामशत कोटी ❀ हरि पटतरिय बात यह छोटी ॥
प्रभु शोभा सागर अवगाहा ❀ सुर नर मुनि कोउ पावनथाहा ॥
इकटक चितै परस्पर कहई ❀ इनको सरि येई जग अहई ॥
उपमा काहि देइ को योगा ❀ कहत परस्पर सब पुरलोगा ॥
हरिसात्यकि करि उभय बिभागा ❀ कोऊ कहत ज्ञान वैरागा ॥
तहँ प्रभु मोहनतन देखरायउ ❀ मोहे सब तन सुधि बिसरायउ ॥
प्रभुशोभा निरखत कोउ ठाढ़े ❀ बर्णत कोउ नयन जल बाढ़े ॥

दोहा—मनहारिबश सरबस सहित, बिसरिगई सुधिदेह ।
प्रभु तनद्युति वर्णन करत, पुरजन सहितसनेह ॥

कमलनयन कुण्डल दै कानन ❀ अति कमनीयकलानिधिआनन ॥
भृकुटी कुटिल नासिका कीरा ❀ उर बनमाल मनोहर हीरा ॥
कीट मुकुट शिर ऊपर धारे ❀ दाड़िमदशन अधर अरुणारे ॥
उन्नतभाल सुजन मन भावन ❀ सुन्दर लोल कपोल सुहावन ॥
वृषस्कन्ध अरु दीरघ बाहू ❀ बक्ष बिशाल सुखद सबकाहू ॥
प[illegible]ठि उर भृगुपद रेखा ❀ कटिकेहरी उदर त्रय रेखा ॥
पी[illegible]र तापर कसि बांधे ❀ श्याम जलद तन यज्ञपकांधे ॥
पद[illegible] पद पदम अनूपा ❀ अतिबिशाल दोउ यदुकुल भूपा ॥

हरिहि बिलोकि नागपुर नारी ❀ कामबिबश तनदशा बिसारी ॥
भूषण हीन न चीर सँभारा ❀ निरखैं आइ लाज तजि दारा ॥

दोहा—दधि दूर्बा अक्षत अमल, एलादिकझरिलाय।
करैंसुमङ्गल बिबिधबिधि, मोहनराग सुनाय ॥

जात राज मारग प्रभु सोहे ❀ पुरनर नारि देखि छबि मोहे ॥
तिन मोहनी रूप प्रभु देखा ❀ कहिन सकैं कबि शारद शेखा ॥
शारद शम्भु गणेश षड़ानन ❀ बर्णत बृद्ध भये चतुरानन ॥
नारदादि केहुँ पार न पाये ❀ बिबिध भाँतिकहि नेति सुनाये ॥
सुर सुरेश कहि पार न पावा ❀ अब नृपसुनहु ब्यासजस गावा ॥
प्रभु छबिवारिधि कोटि महाना ❀ सोकरसम त्रिभुवन छबि नाना ॥
तदपि तासु उपमा सम नाहीं ❀ तुमते कहत सुनी गुरुपाहीं ॥
सुनिये गिरा अमियरस बोरी ❀ कीन प्रश्न पुनि नृप करजोरी ॥
सुनत श्रवण नहिं कथा अघाई ❀ कहिय कृपा करि अब ऋषिराई ॥
सुनि नृप बचन प्रीतिरस पागे ❀ कथा बिचित्र कहन मुनि लागे ॥

दोहा—दोषहरणिसबसुखकरणि, भारत कथा रसाल।
जनमेजय चित दै सुनहु, मिटैमोह जगजाल ॥

भीषम बिदुर सुनी यह बाता ❀ नगर प्रबेश कीन्ह जनत्राता ॥
कृप अरु द्रोण सहित अनुरागे ❀ करत प्रणाम लीन्ह चलि आगे ॥
भीषम द्रोण देखि हरि आये ❀ पुरजन सहित प्रेम उर छाये ॥
उतरे कृपासिन्धु भगवाना ❀ मिले बहुत कीन्हे सनमाना ॥
भेंटत कृपहिं प्रीति अधिकाई ❀ कुशल प्रश्न पूछत यदुराई ॥
नाथ कुशल देखत अब तुमको ❀ हृदय लाय भेंटेव प्रभु हमको ॥
पतित उधारण बिरद सँभारा ❀ भयो सकल अघ दूरि हमारा ॥
ताही समय बिदुर चलि आये ❀ परे चरण गहि उठत उठाये ॥
गहि भुज कृपासिन्धु भगवाना ❀ लीन्ह लाय उर करि सनमाना ॥
सुनहु बिदुर तुम अति बिज्ञानी ❀ जिनका मुख देखत अघहानी ॥

ज्ञान बिराग योग गति आनत ❀ धर्मस्वरूप भक्तिरस जानत ॥
जीतेउ काम क्रोध मद लोभा ❀ करि न सकै माया मन छोभा ॥
हरि सेवक प्रहलाद समाना ❀ बिधिसम बुद्धि बिबेक निधाना ॥
रबि नन्दन सम नीति बिचारा ❀ योगिन महँ जिमि सनत कुमारा ॥
भक्त अनन्य यथा हनुमन्ता ❀ अम्बरीष नृप सम शुचिसन्ता ॥
करि सन्मान कृष्ण बहु भाँती ❀ पुनि पुनि मिलत लगावत छाती ॥
बोलेउ बिदुर अकिञ्चन मीता ❀ नाम तुम्हार बिदित जन हीता ॥
बिरद तुम्हार निगम कहि गाई ❀ निज दासन कहँ देत बड़ाई ॥

दोहा—मोते को संसार महँ, महाअधम यदुबीर ।
अधम उधारण नाम तुव, सुनत होत उरधीर ॥
भक्त बछल तुव नामसुनि, तब मन बड़ो डराय ।
सुने पतितपावन बिरद, हर्ष न हृदय समाय ॥

पूरब नाथ पाप हम कीन्हा ❀ दासी योनि जन्म बिधि दीन्हा ॥
अघ भाजन नहिं भजन तुम्हारा ❀ कहि बिधि नाथ मोर निस्तारा ॥
परम अधीन बिरद मुख बानी ❀ सुनि श्रीकृष्ण भक्ति रससानी ॥
कीन्ह प्रबोध नाथ बिधि नाना ❀ हृदय लाय कीन्हों सनमाना ॥
तुम हौ बिदुर धर्म अवतारा ❀ परम भक्त अरु ज्ञान उदारा ॥
पुरबासिन अभिबन्दन कीन्हा ❀ सौम्यरूप प्रभु दर्शन दीन्हा ॥
श्वेत कमल लीन्हें गोपाला ❀ पहिरे श्वेत द्विरद मणिमाला ॥
अङ्ग अङ्ग महँ भूषण भूरी ❀ मृदु मुसुक्यानि बिलोकनिरूरी ॥
पीत बसन कल कुण्डल कानन ❀ अतिकमनीय सुधाधरआनन ॥
सात्विक रूप लखे बनवारी ❀ निरखि निरखि छबिहोतसुखारी ॥
भीषम द्रोण सहित यदुराई ❀ भूप भवन कहँ चलेउ लवाई ॥

दोहा—सुनी श्रवण आयो निकट, पँवारि द्वार यदुराय ।
लेन हेत कुरुनाथ तब, दीन्हें अनुज पठाय ॥

बिकरण दुश्शासन बलधामा ❋ दुर्मुख दुमुत द्विरद पुनि नामा ॥
निपट निकट जब आनि निहारा ❋ मद समेत तिन कीन्ह जोहारा ॥
दुर्योधन के बान्धव आये ❋ तहँ प्रभु उग्ररूप दरशाये ॥
चक्र एक कर शारँग पाणी ❋ एक पाणि महँ निशित कृपाणी ॥
जैसे प्रलय काल महँ शंकर ❋ अरुण नयन अरु बेष भयंकर ॥
रूप त्रिबिक्रम समर महाना ❋ कुरुगण देखि अचम्भव माना ॥
डरपे दुर्योधन के भाई ❋ हरिहि देखि मुख गे कुम्हिलाई ॥
तमगुण उनहिं कृष्ण देखरावा ❋ भूप भेद केहुँ जानि न पावा ॥
मोहन रूप देखि नर नारी ❋ लोक लाज तजि चलीं पछारी ॥
सात्विक रूप बिदुर तहँ देखा ❋ कहत नाइ मन हर्ष बिशेषा ॥
राजा देखि प्रजा सुख पाये ❋ भये मुदित निज निज गृह आये ॥
यह चरित्र कीन्हों भगवाना ❋ और को भेद और नहिं जाना ॥

दोहा—जैसी जाकी भावना, तेहि तैसो भगवान ।
पल महँ दरशायो चरित, मर्म न काहू जान ॥

पँवरि दुआर गये यदुनाथा ❋ भीषम द्रोण बिदुर कृपसाथा ॥
द्विरद दुमत्त दुशासन सङ्गा ❋ दुर्मुख बिकरण बीर अभङ्गा ॥
दुर्योधन को बिभव निहारा ❋ इन्द्र सरिस को बरणै पारा ॥
प्रथम पँवरि कोटिन धनुधारी ❋ रक्षक तरुणपुरुष बलभारी ॥
दूसर दुर्योधन कर चेला ❋ उमड़ेउ मनहुँ सिन्धु तजि बेला ॥
ते सब शक्ति भुशुण्डी लीन्हें ❋ रक्षहिं द्वार सजग चित दीन्हें ॥
तिसरे द्वार करहिं बहु हूहा ❋ कुन्तपाणि तहँ मनुज समूहा ॥
गये कृष्ण चलि चौथी कक्षा ❋ रक्षक महामल्ल बहु दक्षा ॥
मुद्गर भिण्डिपाल कोउ सांगी ❋ गहे सचेत खड्ग कोउ नांगी ॥
पञ्चम पँवरि द्वार हरि आये ❋ बिबिध भाँति तहँ यन्त्र लगाये ॥
[illegible] लक्ष भट मत्त शराबी ❋ लीन्हे पाणि ज्वलित मस्ताबी ॥

[illegible]—द्रोण करण सम [illegible], अयत बीर बरियार ।
[illegible] गजिगदा गहि [illegible], ठाढ़ छठयें द्वार ॥

सप्तम द्वार खड़े बहु खोजा ❋ केहरि से किरात काम्बोजा ॥
नाना भाँति अस्त्र करमाहीं ❋ जिनहिं देखिसुर असुर सकाहीं ॥
बरणत विरद बन्दिजन जूहा ❋ बेतपाणि दरबानि समूहा ॥
बेतपाणि तहँ जाय जनाये ❋ मिलन हेत यदुनन्दन आये ॥
लावहु कहि नृप आयसु दीन्हा ❋ तेहि अवसर हरि दर्शन दीन्हा ॥
प्रभुहिबिलोकि उठ्यो कुरुनाथा ❋ सौबल शकुनी कर्ण लै साथा ॥
ताके हृदय गर्ब अति भारी ❋ गयोनिकट चलिहरिहि जोहारी ॥
धनमद अन्ध अधमअभिमानी ❋ ज्ञानहीन कछु कानि न मानी ॥

दोहा—उत्पति थिति नाशन करण, बिश्वभरणभगवान।
नरकरि जानत ताहिखल, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारते उद्योग पर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

कृष्ण समेत चला कुरुराजा ❋ धृत्तराष्ट्र यह सकल समाजा ॥
भीषम द्रोण कर्ण संग लीन्हे ❋ बान्धव सब परिवारित कीन्हे ॥
गयउ भूप पहँ बिदुर अगारी ❋ कह्यो जाय आवत बनवारी ॥
कहत भूप कोउ मोहिं उठावहु ❋ चलहु बेगि लै हरिहि मिलावहु ॥
सञ्जय गहि कर नृपहि उठायो ❋ कृष्ण समीप तुरत पहुँचायो ॥
भेटें कृपासिन्धु उरलाई ❋ नृप आनँद अति उर न समाई ॥
कुशल प्रश्न पूँछत ब्रजराजहिं ❋ गयो भूप लै सहित समाजहिं ॥
निज समीप हरि कहँ बैठारा ❋ बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा ॥

दोहा—बाहुलीक भीषम करण, द्रोणी द्रोण समेत।
सोमदत्त सैन्धव शकुनि, बैठे सभा निकेत॥

कृप अरु शल्य जान सब कोऊ ❋ भूरिश्रवा हलम्बुष दोऊ ॥
पुत्र पौत्र भूपति के जेते ❋ बैठे दुर्योधन ढिग तेते ॥
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा ❋ मगहराज तेहि सभा बिराजा ॥
भूप कलिङ्ग और कृतबर्मा ❋ नृपति बृहद्बल सहित सुशर्मा ॥
जयनराज शशिबेद नरेशा ❋ नृपति सुलूक बनाइ सुबेशा ॥

औरौ देश देश के नायक ❋ दुर्योधन के सकल सहायक ॥
हरिआगमन सुनत सजि साजा ❋ धृतराष्ट्रक गृह जुरो समाजा ॥
यथायोग्य बैठे नृप भारी ❋ बिदुरसभा बिधिवत बैठारी ॥
बैठे भूप सहित बनवारी ❋ सञ्जय नृप के बैठ पछारी ॥

दोहा—अस्थित अति आनन्द ते, नृपसमीप घनश्याम ।
हरिदक्षिणदिशि सात्यकी, लखै बिलोक निबाम ॥

यदुनन्दन दिशि बारहिंबारा ❋ निरखतबिदुर अनन्द अपारा ॥
परत निमेष न यकटक ठाढ़े ❋ मानहुँ चित्रमाँझ लिखि काढ़े ॥
हरि छबि देखत चष अनुकूली ❋ जनित सनेह देह सुधि भूली ॥
क्षणक्षण प्रभुपद मञ्जुकपोला ❋ भ्रमत बिदुरचित प्रेमहिं डोला ॥
देखत होत न मन संतोखा ❋ यथा अडोल खेल को धोखा ॥
बिदुर दशा जब कृष्ण निहारी ❋ करणहिं निकट लीन्ह बैठारी ॥
कृप अरु द्रोण बिदुर दिशि दोऊ ❋ देखि सप्रेम सराहत सोऊ ॥
धन्य बिदुर बिज्ञाननिधाना ❋ नरतन पाइ भक्तिरस जाना ॥
काम क्रोध तजि सब संसारी ❋ भजत सदा अघहरण मुरारी ॥

दोहा—विषरसइव त्यागी विषय, चरणकमललौलाय ।
रहत शरण यदुनाथकी, नाते नेह बिहाय ॥

कृपादृष्टि प्रभु बिदुर बिलोकी ❋ भरे मोद मन कहेउ बिशोकी ॥
हरि की देखि प्रीति अधिकाई ❋ अति अनन्द नहिं हिये समाई ॥
गालवगण मन मोद अपारा ❋ पुलकावली नयन जलधारा ॥
देखत रूप चक्षु पल रोके ❋ सुरसिहात तेहि भाग विलोके ॥
कह मुनीश यह कथा सुहाई ❋ तुव हित हेत भूप मैं गाई ॥
अब मैं कहब बिचित्र कहानी ❋ सावधान सुनु नृप सज्ञानी ॥
सुनत रहत नहिं अघलवलेशा ❋ शोक मोह भ्रम मिटे नरेशा ॥
धृतराष्ट्र अति आदर कीन्हा ❋ भोजन हेत उतर हरि दीन्हा ॥

दोहा—प्रीति न रंचक तुम विषय, नहिं हमरे आपांति।
कौन हेत कीजे अज्ञान, सुनहु भूपतापांति ॥

कहेउ भूप सुनिये जगतारण ❋ तुम तापांति कहौ केहिकारण ॥
सुनि नृप बचन कहत हँसिकेशो ❋ सुनहु भूप तब मिटै अँदेशो ॥
हस्ती नाम भरत कुल जायो ❋ नगर हस्तिना पुरी बसायो ॥
तरणि सुता ते भयउ बिवाहू ❋ तापत नाम बिदित सब काहू ॥
तिन यह कौरव बंश चलायो ❋ ताते तुम तापती कहायो ॥
सुनि हरि बचन भेद सब जाना ❋ धृत्तराष्ट्र मनमहँ सुख माना ॥
कथा अपर तब श्री मुख गाई ❋ सुनि सुख लहौ सभा समुदाई ॥
अमृत सरस कृष्ण मुख बानी ❋ भीषम बिदुर सुनत सुखमानी ॥
कह बैशम्पायन सुनु राई ❋ कथा बिचित्र श्रवण सुखदाई ॥

दोहा—बुद्धिचक्षु बोले बिहँसि, कहिये दीनदयाल।
केहि बिधिते तपतीबरी, सुनिहस्तीमहिपाल॥

केहि बिधिते भा भूप मिलापू ❋ किमिउतपति कहिये अब आपू ॥
सुनि नृप बचन कृष्ण अनुरागे ❋ कथा बिचित्र कहन अस लागे ॥
रबिमण्डल होइ जात बराकी ❋ भये दिनेश कामबश ताकी ॥
काम बाण ताहू के लागा ❋ रबिदिशि देखि भयो अनुरागा ॥
सो चरित्र सुरनायक जाना ❋ दीन्हो शाप क्रोध उर आना ॥
धरि मानुषतन ह्वै ब्यभिचारिणि ❋ वर्ष प्रयंत रहो अपकारिणि ॥
ह्वै मानुषी रूप सोइ दारा ❋ रबिमण्डल महँ करत बिहारा ॥
मोच्यो शाप काल जब बीता ❋ तहौं गर्भ पुनि सुरपति मीता ॥
भई सुता कर्दम ऋषि जानी ❋ सो उठाय निज आश्रम आनी ॥
गई सुरश भवन पुनि बाला ❋ कीन्हो मुनिकन्या प्रतिपाला ॥
शशिसमबढ़त कढ़त द्युति तनकी ❋ जगरमगर जिमिदामिनिघनकी ॥
थिरनरहतलखि मतिमुनि जनकी ❋ होतलाजबशनारि यतन की ॥

दोहा—तरणिप्रभातनशशिबदनि, मृगनयनीकटिखीन।
पीन पयोधर मधु अधर, षोड़श वर्ष नवीन॥

तेहि पटतर रम्भादिक नाहीं ❋ सुरी किन्नरी देखि लजाहीं॥
तप्त स्वर्ण आभा तन जानी ❋ तपती नाम धरो मुनि ज्ञानी॥
हस्ती भूपति फिरत शिकारा ❋ रविनन्दनिगइ बिपिन बिहारा॥
औचक मिले पंथ महँ सोऊ ❋ देखि परस्पर बरबस दोऊ॥
राज कुंवर रबिजा अवलोकी ❋ देखत रूप दृगञ्चल रोकी॥
तरुण बहिक्रम तरणि किशोरी ❋ दामिनि बर्ण देह अतिगोरी॥
पहिरे तन शुचि बसन सुरङ्गा ❋ मणिगणखचित बिभूषण अङ्गा॥
इन्दु बदनि मृगशावक नयनी ❋ भृकुटीकुटिल बिलोकि प्रबीनी॥
लोल कपोल हंसनि मृदु बङ्का ❋ दमकत श्रवण तड़ित ताटङ्का॥
अधर प्रबाल लाल अरुणारे ❋ अहि उपमा लम्बित कच कारे॥
दाड़िम दशन नासिका नीकी ❋ देखत कीर तुण्ड मति फीकी॥
कम्बु कण्ठ अरु बाहु मृणाला ❋ कोमल कलित कमलकरलाला॥
श्रीफल से कठोर बक्षोजा ❋ गेंदखेल जनु रच्यउ मनोजा॥
सूक्षम कटि अरु रूप अपारा ❋ लचकत पुनिपुनि कचबुंधुवारा॥
शुभनितम्ब पुनि नाभि गंभीरा ❋ देखि भूपमन मनसिज पीरा॥
मनो मनोज कुसुम शर लीन्हा ❋ बाणन मारि लक्षि लखिकीन्हा॥

दोहा—सूघर पेंडुरि पद कमल, सूक्षम अँगुली बीश।
कदलिपत्रसमपीठि पुनि, जनुबिरची जगदीश।
बीस अंगुली कमलकर, लसत बीस नखलाल॥
बीसकला जनुभौमधरि, करतप्रकाश विशाल।

राजकुँवर तन शोभा भारी ❋ देखि कामबश तरणिकुमारी॥
बय किशोर तन सुन्दरताई ❋ बरणि न जाइ देखि मनभाई॥
कीट मुकुट शिर ऊपर धारा ❋ जगमगातमणिगण उजियारा॥

आनन मनहुँ शरदशशिमण्डल ❀ झलझलातकानन दोउ कुण्डल ॥
भृकुटी कुटिल लसत यहिताका ❀ त्रिनगुणमनहुं मनोज पिनाका ॥
नासा की उपमा कवि गावत ❀ अतिबिचित्रशुकतुण्ड लजावत ॥
दृग कछुश्याम कछुक अरुणारे ❀ सोहत जनु बन्धुक अतिकारे ॥
सोहत कच मेचक मुख नेरे ❀ अतिहिहेतु जनु शशि अहिघेरे ॥
बृषम कन्ध युगबाहु बिशाला ❀ कम्बुक कण्ठ द्विरदमणिमाला ॥
बक्ष बिशाल नाभि गम्भीरा ❀ कटि केहरि जङ्घा बिस्तीरा ॥
अरुण चरण करअरुण सोहाये ❀ अमल कमल शोभा दर्शाये ॥

दोहा—मनसिज सरिस महीपसुत, रूपशीलगुणगेह।
नखशिख देखिअशेष छबि, तपती भई बिदेह॥

देखि भूपसुत तरणिकिशोरी ❀ जनित सनेह देह भै भोरी ॥
शीशफूल कानन ताटङ्का ❀ अतिप्रकाश जनु बिज्जु दमङ्का ॥
मुक्तमाल उर मणिगण हारा ❀ जनु कर निकर निशेषपमारा ॥
अङ्गनजटित ललित करभूषण ❀ करत प्रकाशकमलपर पूरण ॥
दशो अंगुलिन महँ दश मुद्रा ❀ चलत हलत बाजत कटिक्षुद्रा ॥
आस पास बिछिया टोरवारे ❀ पायँ पैजनी नेवर न्यारे ॥
बसन बिभूषण बैस नवेली ❀ पूछत भूप बिलोकि अकेली ॥
की तुम राजसुता सुरकन्या ❀ कवनहेतु केहि फिरत अरन्या ॥
तुव बश भयो प्राण अब मेरा ❀ कवनिउं यतनफिरत नहिं फेरा ॥
ताते कहो हमारो कीजै ❀ अब गन्धर्ब ब्याह करि लीजै ॥
तुमहिं बिलोकि मदन धनु लीन्हा ❀ शरनमारि जर्जर तनु कीन्हो ॥
मूरि बिशल्य करन तुम देही ❀ परसत मिटै ब्यथा तन येही ॥

दोहा—सुन्दर सरलशरीर तव, जिमिमनसिजकीपास।
फँसो जाइ ताबीच मन, देखि मनोहर हास ॥

तरणिसुता नृप सुत बश कीन्हा ❀ नृप किशोरतेहिचितहरि लीन्हा ॥
निजबश रहो न कछु ताहू का ❀ फेरे फिरत न मन वाहू का ॥

दुनौं तन मनोज बश भयऊ ❋ तहँ गन्धर्ब ब्याह करि लयऊ ॥
यह करतब कर्दमऋषि जानी ❋ दीन्ही सौंपि नृपहि गहिपानी ॥
हर्षि भूप तेहि निज गृह आनी ❋ ढोल बजाइ कीन्ह पटरानी ॥

दोहा—हस्ती नृपके तनय कुरु, पतिनी ते उपतीय ।
तिनके सुत शन्तनु नृपति, तेहिते तुम तपनीय ॥

शन्तनु सागर को अवतारा ❋ भयो बड़ो तेजसी भुवारा ॥
गङ्गासागर को भा सङ्गम ❋ तेहिते भीषम अबिचल जङ्गम ॥
पीछे नृप मत्स्योदरि आनी ❋ जब सुरसरि निजधार समानी ॥
ताकी सत्यवती अस नामा ❋ चित्राङ्गद सुत बल के धामा ॥
चित्रबीर्य पुनि दूसर बेटा ❋ भयो भूप संग्राम अपेटा ॥

दोहा—चित्रबीर्य के पाण्डु नृप, चित्राङ्गद के आप ।
हौ एकै कछु भेद नाहिं, तातें करहु मिलाप ॥

बिग्रह आपुस की नहिं नीका ❋ छांड़डु अब सब बात अलीका ॥
कलह तुम्हार न काहुहि भावत ❋ ताते बार बार हम आवत ॥
हरिमुख हेरि कहत दुर्योधन ❋ तुम आये इत कवन प्रयोजन ॥
कह हरि हमैं युधिष्ठिर राजा ❋ पठयनि तुम्हरे ढिग यहि काजा ॥
कहिनि कि हम कहँ जुआ हरायो ❋ छलबल करिकै बनहिं पठायो ॥
ते गे बर्ष त्रयोदश बीती ❋ अबहूँ तौ तजि देहिं अनीती ॥
सो अब कहा हमारो कीजै ❋ आधी भूमि बाँटि नृप दीजै ॥
उन बन बसि बहु सके कलेशू ❋ तेहिते तुमकहँ उचित नरेशू ॥
यहो जो नाहिं तुमहिं समिआई ❋ तौ हम कहैं करौ तुम राई ॥
पञ्च ग्राम पाण्डव कहँ देहू ❋ कलह निवारण होइ सनेहू ॥
इन्द्र प्रस्थ तिलप्रस्थ बरुणागर ❋ बाराणसि हस्ती पुर आगर ॥
इनके दिये मिटत है रारी ❋ नातरु होइहि अनरथ भारी ॥
सुनि दुर्योधन राउ रिसाना ❋ नारायण मैं कौरव जाना ॥
तेरे कहे देइ सब देशू ❋ हम जो कहैं करिय सो भेशू ॥

सुई अग्र महि उठो जो जेती ❀ बिना युद्ध हौं देउँ न तेती ॥
ग्वाल बंश हौं जाति के नीचा ❀ परत आय राजन के बीचा ॥
यह कहि कह्यो दुशासन भाई ❀ कर गहि याहि देहु दुरिआई ॥
कितौ पकरि कारागृह दीजै ❀ मिटै प्रपञ्च बात यह कीजै ॥
वे हमते सरवरि कब करते ❀ जो पै उनपर पत्त न धरते ॥
इनहीं के बल वे बरिआरा ❀ यहु अहीर है बड़ा गँवारा ॥
नृप रुख लखि हरि अन्तर्यामी ❀ भे अति उग्र उरगअरिगामी ॥
उठे तुरत तब शारंग पानी ❀ कहि तव मृत्यु आइ नियरानी ॥

दोहा—हरिसँग भारद्वाज सुत, गङ्गासुत गाङ्गेय ।
बाह्लीक बिकरणकरण, चले संग डाठितेय ॥
करत बतकही सबन ते, चले जात घनश्याम ।
राखि लोग सब द्वार पर, गयो बिदुर के धाम ॥
श्वेत केश शिर शोभिये, ओढ़े श्वेत दुकूल ।
देखो कुन्ती जाय हरि, सादर के समतूल ॥

पिता स्वसा कहँ कीन्ह प्रणामा ❀ आशिष दियो होय मन कामा ॥
हरिहि बिलोकि नयन जल छाये ❀ माथ सूंघि हरि कण्ठ लगाये ॥
कुशल रहे बसुदेव कुमारा ❀ मैं अनाथ के प्राण अधारा ॥
बोले कमल नयन यह बाता ❀ तुम्हरी कृपा परम कुशलाता ॥
धर्म नरेश समेत कुटुम्बा ❀ कह्यहु प्रणाम सुनहु अब अम्बा ॥
सुनि यह बचन भयो परितापा ❀ लागी कुन्ती करन बिलापा ॥
उर दुख दुसह बरत ज्वर होली ❀ पुनि कुन्ती श्रीपति सों बोली ॥
सबकोउ कहत पञ्च सुत शूरा ❀ हमें जान भये अब क्रूरा ॥
लाज तजी सुत काम न आये ❀ बिदुर अन्न दै हमहिं जिआये ॥
अब तुमते कहियत बनवारी ❀ तुमहूं छांड़ी सुरति हमारी ॥
पालन योग्य तिहूंपुर दारा ❀ बाल पिता तरुणी भरतारा ॥

दोहा—बृद्ध बैस सुत चाहिये, करहि मातु प्रतिपाल ।
अपनो काटो कृष्ण हम, बिदुर अन्नते काल ॥

धर्मराज छांड़ी सब शर्महि ❋ त्याग कीन्ह क्षत्रिन के धर्महि ॥
नृप बिराट की करि सेवकाई ❋ राज तजी अरु लाज बिहाई ॥
उदर पालि सुत दिवस बितावहिं ❋ दुर्योधन भय मानि न आवहिं ॥
सुनहु कथा यक कहत बखाना ❋ यद्यपि सब जानत भगवाना ॥
बिन्दुल नाम एक क्षत्रानी ❋ राजा शक्तिकेतु की रानी ॥
सोहति नगर अवन्ती बासी ❋ सब चरित्र हम कहत प्रकासी ॥
माहिषमती भूप बलधामा ❋ ताको चन्द्रसेन अस नामा ॥
निज दल साजि निशान बजाई ❋ घेरो नगर अवन्ती आई ॥
सत्य केतु निसरे भूपाला ❋ भयो युद्ध जूझे तेहि काला ॥
लूट्यो नगर लगायो आगी ❋ गर्भवती बिन्दुल उठि भागी ॥
चली पराइ दुखित अधिकाई ❋ धारा नाम नगर चलि आई ॥
ब्रह्म दत्त तहँ रह्यो भुवाला ❋ सब प्रकार कीन्हो प्रतिपाला ॥

दोहा—यद्यपि जानत सकल तुम, तदपि कहौं गोपाल ।
नृपतरुणी कहँ त्याहि नगर, बीतगये कछु काल ॥

उपजे ताके सुत अभिरामा ❋ ताको कृष्ण युद्ध जित नामा ॥
प्रौढ़ बिलोकि मातु सुख पावा ❋ शशि सम बढ़त बार नहिं लावा ॥
दिन प्रति नगर बालकन सङ्गा ❋ खेलत रहत बिहंग पतङ्गा ॥
मातु पढ़ायो पुनि धनुबेदा ❋ समरथ देखि तज्यो मनखेदा ॥
सुतहि बोलाइ मातु उपदेशा ❋ तुम पितु रह्यो उजैन नरेशा ॥
माहिष मती भूप बध कीन्हा ❋ राज तुम्हार छीनि तेहि लीन्हा ॥
अब सुत और न बाद बिचारहु ❋ लेहु भूमि निज अरिका मारहु ॥
जब लगि मरत न तुव पितु घाती ❋ तब लगि पुत्र जुड़ात न छाती ॥
शत्रु तुम्हार जियत संसारा ❋ नाहक क्षत्रि वंश अवतारा ॥

दोहा—कह्यउ भूपसुत मातुते, सुनिये बचन प्रमान ।
मैं दलबल अरु द्रब्यबिन, अरिसँग सेन महान॥

तासु मातु हरि कहत रिसानी ❋ बालक ते बोली मृदु बानी ॥
जानत सुनत क्षत्रिकुल धर्मा ❋ ताते मन मानत तुम भर्मा ॥
लड़े अकेल न मन भ्रम आने ❋ कीट समान कोटिदल माने ॥
ताते तात तजो सब शोका ❋ जीते सुयश मरे सुरलोका ॥
मातु वचन ते उठि रण कीन्हा ❋ करिअरिनिधनराज्यनिजलीन्हा॥
करि साहस सोइ भयउ भुवाला ❋ और कथा सुनु दीन दयाला ॥
जैसे धर्मराज अवतारा ❋ सो हरि सुनहु सकल ब्यवहारा ॥
भयो हमार भूप नरनाहू ❋ दीन्हो दण्ड धरा सब काहू ॥

दोहा—शशिसमकीरतिलखिरही, भानुसमान प्रताप।
देव बिटप सम दान कहँ, बल सुरेशजनु आप ॥

राज करहिं नृप सुख अधिकाई ❋ बुद्धिचक्षु की फिरी दोहाई ॥
सचिव बिदुर अति भयउ सुजाना ❋ धर्मशील बिज्ञान निधाना ॥
बाहुलीक गङ्गा सुत दोऊ ❋ अरिघालक जानै सब कोऊ ॥
आज्ञाभङ्ग जवनि दिशि होई ❋ आनै बाँधि हाई किन कोई ॥
एकदिवस निज सहित समाजा ❋ सभामध्य नृप पाण्डु बिराजा ॥
भीषम ते तब बचन उचारा ❋ सुनहु मनोरथ सुभग हमारा ॥
महिपर्यटन होत मन मोरा ❋ होइपिता जो आयसु तोरा ॥

दोहा—हँसि बोले गाङ्गेय तब, जो इच्छा मनमाह ।
सेन लेहु चतुराङ्गनी, शुभ कीजै नरनाह ॥

भीषम की आज्ञा जब पाई ❋ चल्यो भूपसँग दलसमुदाई ॥
माद्री संग सहित न्वहिं लीन्हा ❋ पटह बजाइ गमन पुनि कीन्हा ॥
पूरब दक्षिण पश्चिम देशा ❋ जीति जीति लिय दण्ड नरेशा ॥
जो कछु बस्तु जीति नृप पायो ❋ बुद्धिचक्षु कहँ सकल पठायो ॥

सेन समेत बजाइ निशाना ❋ उत्तरदिशि नृप कीन्ह पयाना ॥
लै लै दगड भूप सब आये ❋ द्वैपायन के शीश नवाये ॥
यथा योग्य सब ते नृप लीन्हा ❋ तिनकहँ अभयदान पुनिदीन्हा ॥
लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा ❋ चढ्यो भूमि गिरिशृङ्ग उतङ्गा ॥
करि दर्शन नारायण केरा ❋ शैल हिमालय कीन्हे डेरा ॥
तहँ सब नृप परबतिया आये ❋ दोऊ पायन शीश नवाये ॥

दोहा—जलसुन्दरअरु फल सुभग, फूले कुसुमसुबास।
गिरिपर देखिसुपास अति, कीन्ह नरेश निवास॥

एक दिवस मृगया कहँ राजा ❋ गयो भूपसँग सुभट समाजा ॥
तहँ ऋषि परम गहन एक रहई ❋ कामबिबशनिजतियसन कहई ॥
ज्ञान ध्यान तन सकल भुलाना ❋ बासर महँ मांग्यो रतिदाना ॥
सुनि द्विज बचन कहत तिय सोई ❋ रति दिन नाथ पशुन की होई ॥
कह द्विज नारि मृगातन लीजै ❋ हम मृग होइ तुमते रति कीजै ॥
काम बाण तुम्हरे उर लागा ❋ ज्ञान बिबेक सकल तुम त्यागा॥
अस कहि तुरत मृगीतन धारा ❋ ह्वै मृग तब द्विज करत बिहारा ॥
पतिको बचन तजै जो नारी ❋ परइ नरक पावइ दुखभारी ॥

दोहा—यह बिचार द्विजत्रियकियो, पियकोबचनप्रमान।
गयो पाण्डु ततक्षण तहाँ, र बलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंह चौहान भाषाकृते द्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥

दोहा—कह कुन्ती गोपाल ते, सुनिये दीनदयाल ।
मृग बिलोकि भूपालतब, तज्योबाणततकाल ॥

लागत बाण बिकल ह्वै घूमी ❋ मानुषरूप पर्‍यो द्विज भूमी ॥
गिरतहि तुरत प्राण तजि दीन्हा ❋ ऋषितरुणी अति रोदन कीन्हा ॥
कह्यो बचन करि क्रोध अपारा ❋ लै मम शाप भूप चगडारा ॥
मो रति करत मर्‍या पति जैसे ❋ तजौ नरेश प्राण तुम तैसे ॥

आयो शिबिर मानि गिलानी ❀ करै न सुरति भूप भयमानी ॥
ज्यहि बिधि शाप बिप्रतिय दीन्हा ❀ सो नरेश मोते कहि दीन्हा ॥
भयो भूपउर नाथ बियोगा ❀ बिदाकिये घरकहँ सबलोगा ॥
दोउ तिय सङ्ग भये बनबासी ❀ उदासीन जिमि फिरै उदासी ॥
परम गहन गिरि देखत फिरहीं ❀ जप तप योग नेम ब्रत करहीं ॥

दोहा—चन्द्रभाग पर्बत गयो, लै युवती युग साथ।
बिरची पर्णकुटी तहां, कीन्ह बास नरनाथ ॥

पावन मानसरोवर तीरा ❀ करहिं महातप सुनु यदुबीरा ॥
मास नन्दिनी करि असनाना ❀ ऋषिसमाज नित सुनहिं पुराना ॥
श्रुतिपथ सतमारग आचरहीं ❀ होत अस्त रबि अशन न करहीं ॥
एक दिवस पर्णशालहि आये ❀ मोहिं बिलोकि नयनजल छाये ॥
मैं पूछा क्यहि हेतु उदासा ❀ तब नरेश इमि बचन प्रकासा ॥
संतति होन हवों मैं रानी ❀ करहुँ न रतिहि शाप भयमानी ॥
तब श्रीपति मैं धीरज कीन्ह्यों ❀ सिखये मन्त्र ऋषय कहिदीन्ह्यों ॥
सुर आकर्षणबिद्या जानी ❀ सुनत नरेश धीर तब आनी ॥
आज्ञा दीन्ह करो सुर जापू ❀ तब मैं कह्यो भूप यह पापू ॥
पतिब्रता परपति मन देई ❀ सुकृत जाइ जग अपयश लेई ॥
बेद पुराण बिदित कह राजा ❀ होइ दोष नहिं सन्तति काजा ॥
तनसुख हेतु नारि जो करही ❀ सुकृत नशाइ नरक सो परही ॥

दोहा—सुरआकर्षण जपहु तुम, मम अनुशासन मानि।
करहु बंश उद्धार अब, तजि मनकी गिलानि ॥

पति निदेश मेटो नहिं जाता ❀ धर्माऽऽकर्ष जप्यो सुरत्राता ॥
आवत धर्म न लागी बारा ❀ दोहद भयो बिदित संसारा ॥
जादिन जन्म युधिष्ठिर लीन्हो ❀ अतिउतसाह पाण्डुनृप कीन्हो ॥
छाये नभ पथ गगन बिमाना ❀ सुरसुन्दरी करहिं कलगाना ॥
शंख बजाइ दुन्दुभी दीन्हो ❀ पुहुपमयी बसुधा सब कीन्हो ॥

तब यह भई गगनमहँ बानी ❋ तुव सुत भयो भागवत रानी ॥
धर्म स्वरूप भूप अति भारी ❋ एक छत्र बसुधा अधिकारी ॥
होई बालक बलिसम दानी ❋ नारद सम होई बिज्ञानी ॥
हरि सेवक प्रहलाद समाना ❋ सुरपति सम होई बलवाना ॥

दोहा—रबिसुत सम जगनाथ कह, तेज तरणि को रूप ।
जाके सम तिहुँलोक महँ, होइ न औरो भूप ॥

धर्मशील अति कुल उजियारा ❋ होइ अजातशत्रु संसारा ॥
याके राज अकाज न होइहि ❋ होइनिश्चिन्तप्रजासुख भोगिहि ॥
कहि मृदुगिरा बोधकरि मोका ❋ गये बिबुध सब निजनिजलोका ॥
जूप व्यसन करि कर्म अलीना ❋ भये धर्मसुत राज बिहीना ॥
यह हरि अद्भुत बात अनूठी ❋ होइ गइ गिरा सुरन की झूठी ॥
यहिप्रकार बहुकाल बितायो ❋ नृप समोद प्रणशालहि आयो ॥
मोते बिहँसि कही नरपालक ❋ अब तुम प्रकट करहु यक बालक ॥
बिना सहायक राज न होई ❋ ताते चहिय भूप सुत दोई ॥
ज्येष्ठ कनिष्ट उभय जग भाषा ❋ पूरण करहु मोरि अभिलाषा ॥
यहिबिधि नृपसंभाषण कीन्हा ❋ सुनिय नाथ उत्तर मैं दीन्हा ॥

दोहा—मैं नहिं आज्ञा कारमकौं, मानत हौं मन भीति ।
उचित सिखावन नाथ तुम, यहकुलटनकीरीति ॥

सुनि नरेश बोल्यो तब आपू ❋ देवपरस कीन्हे नहिं पापू ॥
देवाकर्षण सब तुम जानहु ❋ करि जप तप देवनको आनहु ॥
पवनमन्त्र मैं सुमिरण कीन्हा ❋ आइ प्रभञ्जन दर्शन दीन्हा ॥
भये रमित आनँद अति जोमा ❋ दोहद भयउ प्रकट भय भीमा ॥
भयो गगन सुरगिरा प्रमाना ❋ होइहि बालक अतिबलवाना ॥
महाबीर जानिहि संसारा ❋ याते सब अरिकुल संहारा ॥
कौरवसहित कुशल ना उनके ❋ हरि भे बचन झूठ देवनके ॥
यहि बिधि बर्षबीति यक गयऊ ❋ तादिन नाथ चरित यह भयऊ ॥

पराणकुटी ते उठेउ समोदा ❋ लीन्हों भीमसेन कहँ गोदा ॥

दोहा—जाइबिलोक्यउँरुचिरयक, चन्द्रभाग को शृङ्ग ।
तापर भई अरूढ़ मैं, बालकलियो उछंग ॥

तहँ बालधी सिंह फटकारे ❋ गर्जत सम्मुख चला हमारे ॥
मैं सभीत तन सुधि बिसराई ❋ परा भीम गिरि गोद बिहाई ॥
होइ सरोष केहरि की ओरा ❋ चला निशङ्क करत रवघोरा ॥
हाली धरा शिला गे फूटी ❋ जहँ तहँ परे बृक्ष बहु टूटी ॥
गर्जत भीम भयउ अति शोरा ❋ गिरेउ सिंह महि रहेउ न जोरा ॥
देखि समीप बार नहिं लाग्यो ❋ अतिसभीतपुनि सो उठिभाग्यो ॥
लक्ष भवन महँ खंभ उपारा ❋ जरत बचाइलीन परिवारा ॥
एक चक्र बकबदन बिदारा ❋ दैत्यहि एक बिपिनमहँ मारा ॥
तासु सुता कीन्हेउ निज दारा ❋ अस बल बिदित भीम संसारा ॥
सो सुधि भीमसेन कहँ भूली ❋ की हरि भई बाँह युग लूली ॥
अब सुनि अतिकीचक सो भाई ❋ मारेउ भीम बार नहिं लाई ॥
जरासन्ध कीन्हो दुइ फारा ❋ अति बलवान न लागी बारा ॥

दोहा—अतिनिलज्जभे पाण्डसुत, भई टेक की हानि ।
अब आवत नाहिं युद्धकहँ, दुर्योधन भय मानि ॥

पकरेउ केश दुशासन आनी ❋ भई बिकल पाण्डव की रानी ॥
सकेउ न देखि भयो मन माषा ❋ तादिन भीमसेन प्रण भाषा ॥
तुव शोणित अस्नान करावों ❋ तादिन सुनु त्रियकेश बँधावों ॥
क्षत्री करै न प्रण प्रतिपाला ❋ कही निलज त्यहि दीनदयाला ॥
जियत दुशासन अरु कुरुराजा ❋ वहुअति अधम न आवतलाजा ॥
अबलगि सुनत रही सत शूरा ❋ बसुधा मध्य शब्द बहु पूरा ॥
अब सनियत अक्रूर अमानी ❋ पूरि रही जगमहँ यह बानी ॥
त्याग्यो प्रण मन लाज न आई ❋ भई कान्ह अब जगत हँसाई ॥

दोहा—यद्यपि जानत नाथ तुम, तीनि कालव्यवहार ।
तदपिकहतजेहिबिधिभयो, पारथ को अवतार ॥

मोते कही भूप यह बानी ❋ बचन हमार सुनहु सुखदानी ॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ भयो सुत दोई ❋ अब सो करिय मध्यसुत होई ॥
सुनि नृपगिरा शीशधरिलीन्हा ❋ सुनासीर आकर्षण कीन्हा ॥
आवत शक्र न लागी बारा ❋ दोहद भयो बिदित संसारा ॥
शुभदिनशुभ घटिका जब भयऊ ❋ तादिन जन्म पार्थ जग लयऊ ॥
सुरन सहित सुरनायक आयो ❋ देखनको बिमान नभछायो ॥
बिश्वाबसु षट्सुत गन्धर्बा ❋ गावत बिबिध राग सुर सर्बा ॥
मञ्जुघोष मेनका घृताची ❋ तोरहिं ताल तानगति नाची ॥
बाजहिं पटह शङ्ख करनाला ❋ बर्षहिं बिबुध कल्पतरुमाला ॥

दोहा—बिबुध नटी आईं सकल, करत सुमङ्गल गान ।
परिरहो आनन्द जग, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्बणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

यहिबिधिबीति याम यक गयऊ ❋ मधुर गिरा नभमण्डल भयऊ ॥
होइहि बालक अति धनुधारी ❋ परम धर्म श्रीहरि हितकारी ॥
ब्रजमहँ होइ कृष्ण अवतारा ❋ सो याको होइहै रखवारा ॥
हम सब देवन के तारायण ❋ ते दोऊ हैं नर नारायण ॥
नर अर्जुन नारायण यदुपति ❋ ये दोऊ जानौ एकै गति ॥
कह्यो करण शूली यह नामा ❋ गये अमर सब निज निज धामा ॥
तुव बललीनजगत महँ पारथ ❋ यह मेरोतन और अकारथ ॥
भयो न अमर बचन कछु सांचा ❋ मरेउ न कर्ण आजु लग बाँचा ॥
दियो काढ़ि दुर्योधन राई ❋ बन बन फिरत लाज नहिंआई ॥
ऐसी सहै होइ जो हीना ❋ है बलिष्ठ अरु अस्त्र प्रबीना ॥

दोहा—गर्ब कियो हनुमान से, बांध्यो सागर बारि ।
बाण न कीन्हो बाट नभ, हाथी लियो उतारि ॥

असुर निव्रातकवचबध कीन्हा ❋ धनपति जीति दण्ड लै लीन्हा ॥
फूंके बन खाण्डीव गरेरा ❋ नाश्यो गर्ब पुरन्दर केरा ॥
द्रुपद नरेश स्वयम्बर मांही ❋ भेदि मत्स्य द्रौपदी बिवाही ॥
इन्द्रकील रण शम्भु रिझायो ❋ ह्वै प्रसन्न तब अस्त्र सिखायो ॥
सकलधरा निजबलबश कीन्हा ❋ द्रुपद जीति गुरुदत्तिण दीन्हा ॥
देव दत्य मानव बल भारी ❋ तुव प्रसाद जीते बनवारी ॥
गये साजि कौरव दल भारी ❋ भीषम द्रोण करण बलभारी ॥
ते अर्जुन बिराट पुर जीते ❋ अब क्यहि काज होत भय भीते॥
क्यहि कारण अब बार लगाई ❋ मिलि रणभूमि करे कदराई ॥
कह कुन्ती सुनिये यदुराई ❋ पारथ ते कहिये समुझाई ॥
दुर्योधन भय मनहिं न आवत ❋ अपने कुलहि कलङ्क लगावत ॥
सिंहबंश महँ भयो सियारा ❋ देखत तमहिं नग्न भै दारा ॥
त्तत्रि धर्म दीन्हो सब खोई ❋ बाँस बंश महँ भयो घमोई ॥
तुम अति निलज लाज सबत्यागा ❋ उपजे हंस बंस जिमि कागा ॥
शत्रु तुम्हार शीश पर गाजत ❋ देखत नयन नेक नहिं लाजत ॥
की तुम मरहु सकल बिष खाई ❋ की आयुध धरि लेहु लराई ॥
हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा ❋ तुम अति निलज न आवतलाजा॥

दोहा—की यदुनायक जाय तुम, उनहिं कहो समुझाय।
करैं युद्ध नत नाथ मैं, मरौं हलाहल खाय ॥
याहि प्रकार कहि कृष्णते, हृदय बहुत संताप ।
सुधिकरि कुन्ती सुतनकी, लागी करनाबिलाप॥

कह्यो कृष्ण माता सुनि लीजै ❋ दिन दश पांच धीर मन कीजै ॥
बन्धुन सहित धर्म नरपालक ❋ आवत हैं कौरव कुल घालक ॥
करिहैं युद्ध बिजय सबहीते ❋ होइ हैं काज सकल मन चीते ॥
सुनि हरि बचन धीर मन आनी ❋ लगी कहन निज प्रथम कहानी ॥
मम सुत देखि हृदय अकुलाई ❋ माद्री निकट भूप के आई ॥

सुत न भये दारुण दुख ब्यापा ❋ नृप समीप अति कीन्ह बिलापा ॥
कारण पूछि भूप दुख पावा ❋ निकट बोलि म्वहिं बचनसुनावा ॥
बिप्र बधू की शाप सयानी ❋ तुम कह कह्यो बात सब जानी ॥
मोते कछु निसरी नहिं काजा ❋ असकहि भये सकल दिगराजा ॥
करहु उपाय तोरि यह दासी ❋ उपजै सुत पावै सुखरासी ॥
तब हरि दुखित भये मैं जाना ❋ धीरज दीन कीन सनमाना ॥
आवाहन करि अश्विनी कुमारा ❋ आये धरणि न लागी बारा ॥
बिबुध बयद मिलिब्योम सिधायो ❋ भयो गर्भ माद्री सुख पायो ॥

दोहा—भे अनन्द भूपाल मन, सुनहु देवके देव ।
अतिबिचित्र तब माद्रिसुत, भये नकुलसहदेव॥

यक दिन भयो चरित भगवाना ❋ मुनि समाज नृप सुने पुराना ॥
भोजन को मैं साज बनावा ❋ रह्यो शेष दिन भूप न आवा ॥
गह्वर भई नाथ मोहीते ❋ करत न अशन भूप दिन बीते ॥
माद्री करि शृँगार गिरि ठाढ़ी ❋ तनते निकसि ज्योति अतिबाढ़ी ॥
लखि स्वरूप दिन नायक मोहे ❋ भये न अस्त यान पर सोहे ॥
भोजन कीन्ह भूप सुख पाई ❋ मद्रसुता प्रण शालहि आई ॥
होतहि अस्त ओट रबि भयऊ ❋ दीख नरेश शयन निशि गयऊ ॥
कारण हमहिं महीपति पूछा ❋ मैं कहि दीन्ह सकल छलछूछा ॥

दोहा—भावी कोनिउ यतन ते, मिटि न सकै यदुबीर ।
काम बिबश नरनाह ह्वै, सके न मन धरिधीर॥

मोते कहेउ भूप बहु बेरा ❋ माद्री बिबश भयो मन मेरा ॥
शाप सुरति मैं नाथ दिवाई ❋ सुनी श्रवण कछु मन नहिं आई॥
मद्रसुता ते करि अनुरागा ❋ परसत देह भूप तन त्यागा ॥
माद्री सहित मोहिं दुख ब्यापा ❋ उच्च स्वर करि कीन्ह बिलापा ॥
रोदन सुनत महामुनि आये ❋ कोल किरात भील सब धाये ॥
रोवहिं कहि नृप कीरति रूरी ❋ आरत शब्द रहा तहँ पूरी ॥

जे मुनि नृप के मरम सनेहीं ❀ ज्ञान कथा कहि धीरज देहीं ॥
म्वहि प्रबोध करि चेत बहोरी ❀ चिता बनायसि काठ बटोरी ॥

दोहा—जरन चली मैं भूप सँग, पाछिलि प्रीति दृढ़ाय ।
मद्रसुता तब बिकल ह्वै, गहे चरन लपटाय ॥

हमरे हेत भूप तन त्यागा ❀ भा कलङ्क अरु पातक लागा ॥
तुम्हरे पञ्च सुतन सम प्रीती ❀ तसि हमरे नहिं निपट अनीती ॥
जो तुम रहौ करौ प्रतिपालक ❀ जौ लगि पुष्ट होयँ सब बालक ॥
म्वहिं प्रबोधि लैकर नृपअङ्गा ❀ चढ़ी चिता लै शीश उछङ्गा ॥
त्यहिछण धन्य भूप की भामिनि ❀ पियके संग भई सहगामिनि ॥
चढ़ि बिमान पतिसंग सुरलोका ❀ गई भई सो परमबिशोका ॥
जीवत रहिउ छाँड़ि निजनेता ❀ हम तजि लाज दुसहदुख हेता ॥
सुतन लागि कृत जन्म खुवारी ❀ तिन हरि तजी वृद्ध महतारी ॥
धर्मराज ते कह्यो संदेशा ❀ करत युद्ध नहिं मानि अँदेशा ॥
चत्रोधर्म दूरि है याते ❀ बिरद सँभारि लरौ सुत ताते ॥
नाहिन हीन बंश अवतारा ❀ भे कादर सुत मनहिं बिचारा ॥
कुरुबंशिन कर अनुचर होई ❀ अबलग युद्ध सकात न सोई ॥
तुम शन्तनु नृप के कुलभाहीं ❀ जासु युद्ध सुर असुर सकाहीं ॥
मातुपच्छ नहिं हीन तुम्हारा ❀ है यदुबंश बिदित संसारा ॥
शूरसेन के हौ तुम नाती ❀ तिनको सुयश बिदित सबभाँती ॥
पुहुमी के राजा बहु जोते ❀ बचे रहत अजहूँ भय भीते ॥

दोहा—मातुपक्ष पितुपक्ष अब, बिदित सकल संसार ।
शूरबीर अरु धीरधर, तुम सुत भयो लेड़ार ॥
कहा कृष्णसमुझायतुम, यह सिख मानिहमार ।
करहु राज्य तुम आपना, अब निज बैरिन मार ॥

जो चुपरहौ साधि निजमौनहि ❀ मिलहि न राज्यकर हुवनगमनहि ॥
अस्त्र सनाह त्याग करि देहू ❀ भिक्षा करहु कमण्डलु लेहू ॥

कितौ करहु तुम मोरि सिखाई ❀ मारहु शत्रु सरो मनुसाई ॥
जो न लरहु कौरवसन आई ❀ तौ मैं मरहुँ हलाहल खाई ॥
भीमहिं कहेउ सँदेश हमारा ❀ कस कादर भा जीव तुम्हारा ॥
शूरवीर तुम्हरी जगलीका ❀ लरत न सुत तुम करत न नीका ॥
सबते मोहिं भरोस तुम्हारा ❀ बलपौरुष कित गयउ तुम्हारा ॥
तुम बिराटपुर बैठि लुकाने ❀ मिलिहि भूमि नहिं पुत्र डेराने ॥

दोहा—करत तपस्या चारियुग, सब नरेश जेहि लागि ।
दूरिबैठि सुतनारि इव, राज्य दियो तुमत्यागि ॥

रहे बैठि चुप लाज अकाजन ❀ सिखी धनुषबिद्या केहि काजन ॥
गदायुद्ध केहि काजन सीखा ❀ सो प्रभाव कछु नयन न दीखा ॥
कहेउ सँदेश भूप के आगे ❀ करहू युद्ध आनि भ्रम त्यागे ॥
जो नहिं लरहु मानि डर हारेहु ❀ नारिबचनकरि बनहिं सिधारेउ ॥
हम नहिं जियब पुत्र यहि लाजा ❀ हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा ॥
पुर बिराट हारेउ कुरुनायक ❀ अबसुत निफल भये तुवशायक ॥
कीन्ह प्रथम प्रण सो बिसरावा ❀ भूली बृद्ध मातु रण दावा ॥
सबते बहुत तुम्हारी आसा ❀ आवत सो न मानि अरित्रासा ॥
देव दैत्य गंध्रब बलभारी ❀ तुव शर सहि न सकैं धनुधारी ॥
यक्षराज निज युद्ध हरायो ❀ करि मद भङ्ग दण्ड लै आयो ॥
दुर्योधनहि तुम्हारी सरिके ❀ करहु युद्ध निजप्रणसुधि करिके ॥

दोहा—सो पौरुष भूलेउ नहीं, करत युद्ध नहिं आय ।
क्षत्रिधर्म खोयो सकल, दुर्योधन भय पाय ॥

जो नहिं लरत देखि दुख मोरा ❀ अर्जुन धनुष बाण धिक तोरा ॥
जीवन आश पुत्र कदराने ❀ कर्णबाण भय मानि छपाने ॥
अरितियहँसहिं श्रवण सुनि बाता ❀ मरै लाज बश कायर माता ॥
क्षत्री धर्म नहीं तन माहीं ❀ तुम अतिनिलज लाजमन नाहीं ॥
कह्यो सँदेश नकुल सन जाई ❀ जीरण मातु तात बिष खाई ॥

तुम ते सुत न और बरजोरा ❀ जीत्यउ नृप सब पश्चिमओरा ॥
बल पौरुष तव नाहिन जानत ❀ तुमहूँ दुर्योधन भय मानत ॥
धनु पकरे धरती थहराई ❀ लाज तजो अरु भूमि गँवाई ॥
धर्मशील अतिशय बलदाई ❀ सो तुम बृद्ध मातु बिसराई ॥
मोकहँ हरि अतिप्रिय सहदेऊ ❀ भूले हमहिं बिपति महँ तेऊ ॥
तुम हरि कह्यो हमार सँदेशा ❀ करहु युद्ध तजि सकल अँदेशा॥
मिलि है राज्य सत्य मत येहा ❀ ह्वै है बिजय न कछु संदेहा ॥

दोहा—बहु अधर्म तुम धर्मरत, गत बिलोक मदमान ।
ह्वै है जय संशय नहीं, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिचतुर्विंशो ऽध्यायः ॥ २४ ॥

यह तुम कह्यो द्रौपदी ते हरि ❀ कछु दिन रहो हिये धीरज धरि ॥
पैहौ राज्य साज तुम येहू ❀ प्रभु की कृपा न कछु संदेहू ॥
तुम प्रभु धर्मराज समुझाई ❀ करहु यतन ज्यहि होइ लड़ाई ॥
सब जग कहत सुनत कहँ खोटो ❀ है बिन युद्ध बात अब छोटी ॥
अस कहि कुन्ती रोदन कीन्हा ❀ कृपासिन्धु तबधीरज दीन्हा ॥
दिन दश धीर धरो मन अम्बा ❀ मरिहैं कुरुपति सहित कुटुम्बा ॥
असकहि कृष्ण बिदा पुनिकीन्हा ❀ करत प्रणाम आशिषा दीन्हा ॥
दै अशीश कुन्ती सुख पाये ❀ बाहर भवन दयानिधि आये ॥

दोहा—पँवरि द्वार भे आयकै, रथ अरूढ़ यदुनाथ ।
पुरबाहर लग लोग सब, गये पठावन साथ ॥

भीषम द्रोण बिदा हरि कीन्हे ❀ करि प्रणाम निजगृहमग लीन्हे ॥
बाहुलीक बिकरन पुरलोगा ❀ फिरे सकल हरि दीन्ह नियोगा ॥
करत प्रणाम करण कहँ जानी ❀ रथ बैठारि लीन्ह गहि पानी ॥
हँसिकै कृष्ण कहो यह भासा ❀ सुनहु करण पूरब इतिहासा ॥
शूरसेन नृप अतिबल भारे ❀ भये पितामह बिदित हमारे ॥
कुन्ती नाम सुता उपजाई ❀ सो तप हेत नदी तट आई ॥
तहँवां दुर्बासा ऋषि आये ❀ देव अकर्षण मन्त्र सिखाये ॥

एक दिवस सुखता अधिकाई ❀ मन्त्र परीक्षा की मति आई ॥

दोहा—बालभाव के ब्याजते, नहिं कामना बिचारि ।
जपेउ अकर्षणमन्त्र तब, दीन्ह्यउ दरश तमारि ॥

सहस किरणि तनतेज अपारा ❀ भइ बिकल नहिं रह्यो सँभारा ॥
मूँद्यो नैन बैन नहिं आवा ❀ कीन्ह प्रभाकर निजमनभावा ॥
मूर्च्छा बिगत नैन जब खोली ❀ तब कुन्ती लज्जित होइ बोली ॥
यह सुर कीन्ह नीकि नहिं बाता ❀ भा कलङ्क यहि अब पितु माता ॥
रहहि गुप्त जानहि नहिं कोई ❀ याते तुमहिं कलङ्क न होई ॥
अङ्ग भङ्ग नहिं होइ तुम्हारा ❀ ले तिय आशिर्बाद हमारा ॥
भये दिवाकर अन्तरधाना ❀ यह चरित्र काहू नहिं जाना ॥
चढ़ि बिमान रबि गगन सिधाये ❀ दोहद भयउ गर्भ तुम आये ॥
लज्जित मातु पिता भय मानी ❀ भवन कोन महँ रही लुकानी ॥
चोरवत तुम कहँ कुंती जायो ❀ डारि मंजूषा सहित बहायो ॥

दोहा—प्रकट भये तुम गर्भ ते, तन द्युति पुञ्ज अपार ।
धनुषबाण कुण्डलकवच, सहितलीन्हअवतार ॥

देखि तरणि सम तेज अपारा ❀ दीन्ह बहाइ सरित की धारा ॥
बहत नदी तनतेज बिराजा ❀ जलते प्रकट मनहुँ दिन राजा ॥
तहँ कुरुनाथ सारथी आवा ❀ बहत प्रवाह देखि तेहिं पावा ॥
ताकी तरुणि रही बिनु बालक ❀ लैगा भवन कीन्ह प्रतिपालक ॥
तुम हो धर्मराज के भाई ❀ तजहु शत्रु सँग करहु सहाई ॥
बचन हमार समुझि मन अपने ❀ और बिचार करहु जनि सपने ॥
सुनेउ श्रवण श्रीपतिमुख बाता ❀ बोले बचन करण मुसक्याता ॥
सुनी श्रवण तमते जब बानी ❀ निश्चय मातु प्रथम हम जानी ॥
जानेउ धर्मराज हम भाई ❀ भयो बहुत सुख कहा न जाई ॥
क्षत्री धर्म नाथ यह नाई ❀ कौरव तजि पाण्डवपहँ जाई ॥
सहित बिवेक कहो हरि जोई ❀ तुव शिष मानि करब हम सोई ॥

चहो नाथ जो सत्य छुड़ाई ❀ सो हम करब न कोटि उपाई ॥
यह कहि करण मौन गहि रह्यऊ ❀ तब यदुनाथबिहँसि इमि कह्यऊ ॥
राज्य पाट तुम लेहु घनेरा ❀ षष्ठम अंश द्रौपदी केरा ॥

दोहा—पाँच बन्धु सेवा करहिं, तुम्हरी सहित समाज ।
चलहु करणजहँधर्मसुत, अब हूजियमहराज ॥

सुनिहरिबचनकरण हँसिदीन्हा ❀ नीक बिचार नाथ तुम कीन्हा ॥
जानहिं मोहिं युधिष्ठिर भाई ❀ करैं राज्य नहिं धर्म बिहाई ॥
वै हमको देहैं सब जबहीं ❀ हम देइब कुरुपतिकहँ तबहीं ॥
यामें होइहि परम अकाजू ❀ रहेउ न नाथ पाण्डु कुलराजू ॥
और बिचार करो जनि स्वामी ❀ रहे चुपाइ जानि अनुगामी ॥
कह हरि कहेउ परमहित तोरा ❀ चलहु करण सुनि मोर निहोरा ॥
तुम कुन्ती के जेठ बालक ❀ करहुराज्यअरु कुल प्रतिपालक ॥
तुम हरि कही सांचु सब सोई ❀ ऐसे समय उचित नहिं होई ॥
कुरु पाण्डवन बैर है भारी ❀ मोरे बल रोपी उन रारी ॥
मोहिं कुरुनाथ बन्धुकरि भाखा ❀ अशन बसन कछु बीच न राखा ॥
सहित धरा धन सेन समाजा ❀ कीन्हेउ अङ्ग कोष को राजा ॥

दोहा—पाल्यो उन लघु पुत्र ज्यों, माने करि गुरुदेह ।
शीश समर्पण स्वामि सँग, पूरब मानि सनेह ॥

औरो कृष्ण सुनो मत मोरा ❀ सो अब करिय दास मैं तोरा ॥
लक्ष भूप दोउ ओर प्रतापी ❀ तिन महँ पुण्यवान को पापी ॥
समर कराय करिय प्रभु सोई ❀ सुख गति पावे सब कोई ॥
अब तुम जाहु बिलम्बन लावहु ❀ पाण्डव कटक साजि लै आवहु ॥
श्रीहरि और न करहु बिचारा ❀ अब रण होय हमार तुम्हारा ॥
अस कहि कर्ण बिदा पुनि माँगी ❀ प्रभुपद परसि चलेउ अनुरागी ॥
तन उत चल मन हरिके साथा ❀ पहुँचे करण जहां कुरुनाथा ॥
साम दाम भय भेद दिखाई ❀ कही कर्ण के मनहिं न आई ॥

दोहा—दारुक हाँके अश्व पुनि, चले बेगि भगवान ।
जाय युधिष्ठिर कटक महँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहान भाषाकृते श्रीकृष्णागमनंनामपञ्चविंशोऽध्यायः ॥२५॥

कथा सकल मुनि बरणि सुनायो ❀ जनमेजय नृप सुनि सुखपायो ॥
पाछे बहुरि सहित अनुरागा ❀ लगे कहन इमि सकल बिभागा ॥
कटक समीप कृष्ण जब आये ❀ धर्मराज सुनि आतुर धाये ॥
सब बन्धुन मिलि कीन्ह प्रणामा ❀ लइगे जहाँ भूप बिश्रामा ॥
अरघ देत आसन बैठारे ❀ शीतल जल लै चरण पखारे ॥
पूछेउ भूप कहा करि आये ❀ बासुदेव हँसि बचन सुनाये ॥
कह हरि तेहि एको नहिं मानी ❀ देन न कहत भूप अभिमानी ॥
मिलिहि न और यतन ते राजा ❀ करहु युद्ध कीजै दल साजा ॥

दोहा—सुनत श्रवण नाहिं बातकछु, देबेकी नाहिं चाह ।
बिना युद्ध नाहिं माहि मिलै, कोटियतननरनाह ॥

मन्त्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ साजो सेन बिलम्ब न कीजै ॥
होइ निशङ्क अब करहु तयारी ❀ ह्वै है बिजय कहत गिरिधारी ॥
समुझत कृष्ण बचन कछु हीमा ❀ लरहु नरेश कही यह भीमा ॥
अर्जुन कही भूप सुनि लीजै ❀ सजि निज कटक दुन्दुभी दीजै ॥
करहु युद्ध यह मन्त्र हमारा ❀ होई सो जो लिखो करतारा ॥
बोले बचन नकुल मुसकाता ❀ अब नृप लरो न दूसरि बाता ॥
जानत हमहिं दीन प्रति पच्छी ❀ रहा चुपाय बात नहिं अच्छी ॥
अब जनि लरिय डरिय नर देवा ❀ बोले बचन नकुल सहदेवा ॥

दोहा—नाहिं मानत हरिके कहे, भले देखि समाज ।
लरहु न करहु बिलम्ब अब, कहीद्रुपद महराज ॥

कही सात्यकी सुन्दरि बानी ❀ बिन संग्राम क्षत्रियन हानी ॥
ता ते अवशि युद्ध अब कीजै ❀ रिपु रण जीति देश सब लीजै ॥

धृष्टद्युम्न यही मत राख्यो ❋ सहित बिराट शिखराडी भाख्यो ॥
धर्मराज हरि मिलि ठहरावा ❋ करब युद्ध यह मन्त्र दृढ़ावा ॥
तेहि अवसर निज साज बनाये ❋ भीष्मकपुत्र रुक्म तहँ आये ॥
कुरिडन पुर नरेश बरिआरा ❋ सो नृप बासुदेव को सारा ॥
है लघु बंधु रुक्मिणी केरा ❋ लीन्हे साथ कटक बहुतेरा
गजरथ पदचर बिपुल तुरङ्गा ❋ अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा ॥

दोहा–तेहि अवसर प्रापत भयो, भूपति सभा मँझार ।
बैठारे पारथ निकट, सबहिं जोहारि जोहार ॥

देखेउ धर्मराज की ओरा ❋ बोले बचन गुमान न थोरा ॥
जो आरत ह्वै राखो मोहीं ❋ भूप अशत्रु करौं मैं तोहीं ॥
बुद्धिचक्षु को नाम मिटावों ❋ एक छत्र महिराज करावों ॥
हमते होउ भूप आधीना ❋ करौं भूमि सब शत्रु बिहीना ॥
सुनत बचन मन भीम न भाया ❋ ह्वै सरोष यहि भाँति सुनायो ॥
रहत सदा हम कान्ह भरोसे ❋ कीट समान गनैं नर तोसे ॥
फिरि ऐसी जो बात बिचारी ❋ तो डारौं पुनि जीभ निकारी ॥
मारौं तोहि न अधम अभिमानी ❋ मानत कृष्णदेव की कानी ॥
औ रुक्मिणिकी कानि न थोरी ❋ ताते बची मृत्यु सुनु तोरी ॥
जस तैं बचन भूप ते बागे ❋ अस जो कहत हमारे आगे ॥
रुक्मिणि बन्धु न जो तुम होते ❋ मारि तुरत यमलोक पठाते ॥
छाँड़त कृष्णदेव के नाते ❋ मुँह मसिलाय जाउ उठि ताते ॥
अस कहि भीमसेन रिसवाई ❋ भुजा पकरिकै दीन्ह उठाई ॥
चला तुरत जिय लज्जा पायो ❋ दुर्योधन के भवन सिधायो ॥

दोहा–गये हस्तिनापुर सबै, निज सेना लै साथ ।
अतिआदरते उठिमिले, बैठारे कुरुनाथ ॥

बैठतही इमि बचन बखाने ❋ जो कुरुपति तम होउ डराने ॥
तौ हम होई तुम्हारे सङ्गा ❋ पाराडव रण जीतौं रणरङ्गा ॥

जो तुम होउ अधीन हमारे ❀ करौं काज कुरुनाथ तुम्हारे ॥
सुनि कुरुनाथ क्रोध अधिकाई ❀ कहि कटु बचन दीन्ह दुरिआई ॥
द्रोणो कर्ण सहायक मोरे ❀ जीतिसकै जगमहँ अस कोरे ॥
गुरू द्रोण जो अस्त्र संभारै ❀ देव अदेव सकल रण हारै ॥
बृद्ध पितामह बिदित हमारे ❀ जिनसे परशुराम रण हारे ॥
ते भृगुनाथ बिष्णु अवतारा ❀ और को जीति सकै संसारा ॥
मोरा बल कोउ थाह न पावत ❀ ताहि मूढ़ तै भरम देखावत ॥
बल तुम्हार हमरो सब जाना ❀ जादिन कृष्ण बांधिकै आना ॥
शीश मुण्डि कीन्हे अपमाना ❀ बलि छुड़ाइ दीन्हे जियदाना ।
हरि पाण्डव के भयउ सहायक ❀ तेऊ नहिं मोरे रण लायक ॥

दोहा—होइ सक्रोध कुरुनाथ तब, दीन्हेउ ताहि उठाइ ।
अतिलज्जितहोइनाइशिर, गयोभवनसकुचाइ ॥

होइ प्रसन्न बोले मुनिराई ❀ अब नृप सुनहु कथा मनलाई ॥
गये कृष्ण पाण्डव घर जबते ❀ भाअतिबिकल कुरूपति तबते ॥
तेजहीन मन अति दुचिताई ❀ शोचबिबशनिशि नींद न आई ॥
प्रातहि होत द्रोण गृह आये ❀ करि प्रणाम इमि बचन सुनाये ॥
पाण्डव हमहिं बैरु सरसाना ❀ शरण तुम्हार भरोस न आना ॥
होइय आपु सहायक मोरे ❀ अब मैं चरण शरण गुरु तोरे ॥
अस कहि नयननीर भरि लीन्हा ❀ सुनिकै द्रोण उतरु तेहि दीन्हा ॥
भरत बंश में जन्म तुम्हारा ❀ सुयश तुम्हार बिदित संसारा ॥
राज्यनीति महँ बहुत प्रवीना ❀ करत भूप तुम कर्म मलीना ॥
कपट यूप कछु सत्य न हारे ❀ तुम पाण्डव केहि हेत निकारे ॥
शकुनी मन्त्र मानि छल कीन्हा ❀ आप कृष्ण कहे अंश न दीन्हा ॥

दोहा—आपु बली हैं पाण्डुसुत, अरु सहाय भगवान ।
करहुभूपाबिधिकोटितुम, जीतिनसकहुमशान ॥

उनका कछुअनदोषनृप, तुमअतिकीन्हअनीति।
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति॥

बासुदेव हैं हरि अवतारा ❀ उनहिं को जीतिसकै संसारा॥
ते दयालु पाण्डव के जानो ❀ ह्वै है बिजय सत्य करि मानो॥
भीषम आदि सकल रणधीरा ❀ रण तीरथ महँ तजैं शरीरा॥
जानो सब कौरव संहारे ❀ हमहूँ करण जाब रण मारे॥
होइहि सुनि सबको मदभङ्गा ❀ हम नृप करब तुम्हारो सङ्गा॥
हम मानत मनमें नहिं त्रासा ❀ भये बृद्ध नहिं जीवन आसा॥
होइ निश्चिन्त बैठु अब राजा ❀ हम तन तजब तुम्हारे काजा॥
छोड़त तुम्हें बहुत कठिनाई ❀ जुरे काल तौ करौं लराई॥

दोहा—यद्ध जुरे पाण्डव सहित, मैं रोकौंघनश्याम।
कोटि शपथ भृगुराम की, करौं घोर संग्राम॥

धीरज दीन्ह द्रोण गहि बाहा ❀ अब तुम अभय होहु नरनाहा॥
द्रौणी कही बन्धु सुनिलीजै ❀ भय त्यागहु मन धीरज कीजै॥
तीन्यों लोक अस्त्र गहि आवै ❀ मारौं सकल जान नहिं पावै॥
हम मन बच क्रम तोर सहाई ❀ अब तुम अभय होहु कुरुराई॥
भीषम भवन गयउ तब राजा ❀ द्रोण कर्ण लै सकल समाजा॥
जाइ भूप जब दरशन कीन्हा ❀ गङ्गा सुत आदर करि लीन्हा॥
करि प्रणाम कौरव कुलदीपा ❀ सतिब्रत कै बैठे सामीपा॥
कह भीषम केहि कारण आये ❀ सुनि महीप तब बचन सुनाये॥
बन्धु बैर शालत उर मोरे ❀ आयों शरण पितामह तोरे॥

दोहा—एक सबल तौ पाण्डुसुत, औ सहाय भगवान।
कहेउ भूप भीषम सुनहु, तुम जानत बुधिवान॥

अब उनके दल जुरे अपारा ❀ शूर एक ते एक जुझारा॥
नृप को बचन श्रवण सुनि लीन्हा ❀ हँसि गांगेय उतरु तब दीन्हा॥

उन न करेव अपराध हमारा ❀ तुम छलकरि परदेश निसारा ॥
शकुनी करण कुबुद्धि सिखाई ❀ खोयहु तुमहिं सुनहु कुरुराई ॥
पुनि यदुनाथ बसीठी आये ❀ मांगे पाँच ग्राम नहिं पाये ॥
हम सब तुमहिं रहे समुझाई ❀ सुनत नहीं धों कुमति सिखाई ॥
करण भरोस मानि मन राजा ❀ करत अनीति नशावत काजा ॥
कहा हमार श्रवण सुनि कीजै ❀ नीच जाति को मन्त्र न लीजै ॥
यह है करण जाति को हीना ❀ तुमहिं सिखावत मन्त्र अलीना ॥
जाति अहीर अधम अभिमानी ❀ सुनि कुरुनाथ रहे चुपमानी ॥
उचित न कछु उत्तर पुनि जानी ❀ उठिगा भवनमानि

दोहा—होइ सक्रोध बोले करण, सुनहु बात कुरुनाथ ।
जियत पितामह जबलगे, तौ न छुवों धनु हाथ ॥

यह कहि बचन करण उठि गयऊ ❀ दुर्योधन मन बिस्मय भयऊ ॥
मुख मलीन कुरुनायक चीन्हा ❀ देखि पितामह धीरज दीन्हा ॥
पाण्डवसहित आपु घनश्यामा ❀ जीति न सकहिं भूप संग्रामा ॥
करि मन कोप धनुष कर धारौं ❀ सकल क्षितीश धरणि के मारौं ॥
को नरेश मोरे रण लायक ❀ करौं निपात साधि धनुशायक ॥
चौबिसदिन भृगुपतिरण कीन्हा ❀ तिनते जयतिपत्र मैं लीन्हा ॥
काशी नृपति स्वयम्बर ठाना ❀ आये भूप भूमि के नाना ॥
देव दैत्य नर तनु धरि आये ❀ जीति युद्ध में सकल हराये ॥

दोहा—धीर धरो चिन्ता तजौ, कीजै मन बिश्राम ।
अभय होउ भूपाल अब, को जीतै संग्राम ॥
राउ तुम्हारी ओर जो, देखै नयन उघारि ।
शत्रुभावकरि ताहि की, डारौं आंखि निकारि ॥

सुनि यह बचन धीरता आनी ❀ कृपके भवन चला अभिमानी ॥
कृपाचार्य पद परशन कीन्हा ❀ होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हा ॥

पूछेउ मुनि केहि कारण आये ❀ समाचार कहि भूप सुनाये ॥
कुरु पाण्डव को कलह महाना ❀ सो चरित्र तुम्हरो सब जाना ॥
हम उनपर साजी अवधारी ❀ भये सहायक श्री बनवारी ॥
बूझि परत नहिं मोहिं उबारा ❀ अब मुनि एक भरोस तुम्हारा ॥
अस कहि लोचन बारि बिमोचे ❀ सुनत बचन मुनिमनमहँ शोचे ॥
बचन हमार भूप सुनि लीजै ❀ शोकत्यागि करि धीरज कीजै ॥
तजब देह भारत रण एहा ❀ तजब न तुमहिं तजो संदेहा ॥

दोहा—यहि प्रकार सनमान करि, कीन्हे बिदा भुवार ।
सबलसिंह चौहान कह, गये करण के द्वार ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणि सबलसिंह चौहान भाषाकृते
दुर्योधनभीष्मसंवादोनामषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

दोहा—करण कुरूपति केर मत, बर्णत बरहि बिभाग ।
कहमुनि जनमेजयसुनहु, कथासहितअनुराग॥

पँवरि दुवार भूप जब आये ❀ समाचार प्रतिहार सुनाये ॥
सुनत करण मन अति अनुरागू ❀ करतप्रणाम लीन्ह चलिआगू ॥
देउ उपायन भवन लै आये ❀ अति अनूप आसन बैठाये ॥
जोरि पाणि पुनि आयसु मांगा ❀ बोलेउ राउ सहित अनुरागा ॥
अनल सहाय पवन कब यांचे ❀ करैं सहाय सखा ये सांचे ॥
तुम ते और मित्र को मेरे ❀ मैं रण रच्यउ बाँहबल तोरे ॥
जानत तुम गाँगेय रुठाने ❀ तासु बचन सुनि मित्र रिसाने ॥
बालक जरठ बचन पर तीती ❀ तात न करिय कहतअसि नीती ॥
बालापन महँ बहु बुधि होई ❀ जरा जनित डारैं सब खोई ॥
ताते मित्र क्रोध तजि दीजै ❀ उठिकै युद्ध शत्र ते कीजै ॥

दोहा—लरहु शत्रुसन क्रोधकरि, लेहु धनुष शर हाथ ।
तुव बलते मैं रचेउँ रण, बिहँसि कही कुरुनाथ॥

सुनिके करण चित्त सुखमाना ❀ बार बार यह बचन बखाना ॥

भूपति सत्य कहौं प्रण कीन्हे ❀ तुमते उऋण न प्राणहुँ दीन्हे ॥
अब निशङ्क होइय भूपाला ❀ तव हित मैं करिहौं शरजाला ॥
बरुण कुबेर इन्द्र यम आवैं ❀ ते मोते जयपत्र न पावैं ॥
द्रुपद बिराट भूप बहुतेरे ❀ पाण्डव नहिं हमरी सरिकेरे ॥
उन कहँ कृष्णदेव उपजावा ❀ चहत बराबर युद्ध करावा ॥
जबते भवन कूबरी डारी ❀ बुद्धि बिहीन भये बनवारी ॥
मम बल जानत भूप कन्हाई ❀ गई भूलि सुधि कुमति सिखाई ॥

दोहा—नाथ पठाइय दूत कोउ, धर्मराज पहँ जाइ ।
करैं युद्ध की जाइँ बन, उनहिं कहै समुझाइ ॥

करणबचन सुनि नृप सुख पाये ❀ बोलि उलूक उकील पठाये ॥
पृथक पृथक कहि सबन सँदेशा ❀ करहु युद्ध की छांड़हु देशा ॥
सुनत संदेश जो तुम नहिं आये ❀ अब नहिं बचो जीव दबराये ॥
की अब बेगि आनि तुम लरहू ❀ की बन जाहु अस्त्र परिहरहू ॥
जो तुम मान भये भय पावत ❀ तौ अबहम बिराटपुर आवत ॥
लै सँदेश उलूक सिधाये ❀ धर्मराज की सेनहि आये ॥
पँवरि दुवार बेगि लै आये ❀ द्वारपाल तब जाइ जनाये ॥
नृप कुरुनाथ उकील पठाये ❀ कहन सँदेश स्वामि पहँ आये ॥
तब उलूक इमि बचन सुनावा ❀ धर्मराज सुनि निकट बोलावा ॥
कहत सँदेश भूप को यांचो ❀ सो अब सुनहु बात सब सांचो ॥
दूतन केरि रीति असि होई ❀ कहैं सँदेश सत्य सब सोई ॥
अब नृप और बिचार न कीजै ❀ की उठिलड़हु कि बन मग लीजै ॥

दोहा—करण भूप संदेश तुम, सुनहु भूप दै कान ।
कौरव पाण्डव भूमि सब, छाइ दशो दिशि बान॥

पाहि पुकारि शरण जब ऐहो ❀ तौ तुम जीव दान नृप पैहो ॥
जो भूलत हौ कृष्ण भरोसे ❀ तुम न बचहु दुर्योधन रोसे ॥
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई ❀ त्यहि त्यागहु जो चहहु भलाई ॥

जो उठि लड़हु बात नहिं मानहु ❀ कृष्ण समेत मरे सब जानहु ॥
सो सुनि भीमहि पै रिस ब्यापी ❀ कहत सँभारि बचन नहिं पापो ॥
भे दृगअरुण खड्ग कर लीन्हा ❀ बरजेउ कृष्ण पाणि गहिलीन्हा ॥
अब जय विजय सुनो सब बाता ❀ करइ न भूप दूत कर घाता ॥
यदपि कहै कटु बचन उकीला ❀ करै न क्रोध नरेश सुशीला ॥
बरजेउ भीमहिं शारँगपानी ❀ गयो उलूक भागि भय मानी ॥

दोहा—बोलि निकट नृप धर्मसुत, कह्यो बचन समुझाइ।
दुर्योधन ते यह कहौ, अब हम पहुँचे आइ ॥

अब तुम मृषा न जानहु बाता ❀ कृष्ण शपथ ऐहों सुनु भ्राता ॥
निजपौरुष तुम करहु सँभारा ❀ कोटि यतन नहिं होइ उबारा ॥
अस कहि पठयो फेरि उलूका ❀ चला हृदय उपजी अतिहूका ॥
रथ अरूढ़ होइ तुरत सिधाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये ॥
पँवरि दुवार तज्यो असवारी ❀ गा दुर्योधन सभा मँझारी ॥
भीष्म द्रोण कर्ण सब राजा ❀ सभामध्य कुरुनाथ बिराजा ॥
देखी राज मण्डली भारी ❀ बैठेउ सबहिं जोहारि जोहारी ॥
कह नृप कहन सँदेश पठाये ❀ समाचार उनके कछु लाये ॥
हँसि बोले तब बचन उलूका ❀ कही युधिष्ठिर नृप दुइ टूका ॥
हम आवत तुम होहु तयारा ❀ करहु युद्ध नहिं और बिचारा ॥
सकल सभामहँ तुमहिं सुनावत ❀ होहु सचेत धर्मसुत आवत ॥

दोहा—शपथ कीन्ह भगवानकी, यह उन कह्यो सँदेश।
प्रात होत अब आइहैं, अब न बिलम्ब नरेश ॥

सुनहु सँदेश न राखो गोई ❀ करौ भूप अब जो रुचि होई ॥
बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई ❀ कहे बचन पुनि सबहि सुनाई ॥
अब नृप धर्मराज मम नेरे ❀ आवत कठिन काल के प्रेरे ॥
रण सन्मुख हरि अर्जुन पावों ❀ मारि सकल यमलोक पठावों ॥
शर पिंजर करि भीम दबावों ❀ मारि सकल पाण्डव बिचलावों ॥

बाँधि युधिष्ठिर करि मनुसाई ❀ जयति पत्र देहौं लिखवाई ॥
सहि न सकै पाराडव मम शायक ❀ अब तुम अभय होहु नरनायक ॥
कौरव चरित कहेउँ मैं गाई ❀ अब सुनु अपर कथा कुरुराई ॥

दोहा—होत प्रात उठि धर्मसुत, गये जहाँ यदुराय ।
करहिं वन्दना जोरिकर, चरणकमलशिरनाय ॥

कही युधिष्ठिर अब बनवारी ❀ साजि कटक अब करहु तयारी ॥
चलत उलूक सुनहु भगवाना ❀ प्रात होत कहि दीन पयाना ॥
कृष्ण तुम्हारि शपथ हम खाई ❀ अब बिलम्ब महँ अति कठिनाई ॥
पठै दिये चरवर बनवारी ❀ कहेउ नृपन सन करहु तयारी ॥
निज निज सेन नरेशन साजी ❀ उठे निशान दुन्दुभी बाजी ॥
पलट नितान लदायो चारू ❀ और लदायो सकल बजारू ॥
अगणित ऊँट बृषभ शकटादी ❀ खच्चर महिष चले लै लादी ॥
सकल बस्तु कारीगर नाना ❀ लै लै लादि चले निज बाना ॥
गजरथ बाजि साजि शिबिकाली ❀ भये अरूढ़ मेदिनी हाली ॥

दोहा—सहनाई अरु पणव घन, ढोल ठोंकि झनकार ।
पटह भेरि अरु धेनुमुख, बाजे बिबिध प्रकार ।
बन्दी गण बोले बिरद, रही शंख ध्वनि पूरि ।
द्विरद घण्ट बाजत घने, भयो शब्द तहँ पूरि ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्व गिसबलसिंहचौहान भाषाकृते सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

द्रुपद नरेश साजि सब याना ❀ भयो अरूढ़ बजाय निशाना ॥
धृष्टद्युम्न शिखराडो आवत ❀ रथ अरूढ़ ह्वै शंख बजावत ॥
युद्धमान सेना सब साजे ❀ पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे ॥
द्विरद अरूढ़ बीर बरियारा ❀ चल्यो तमोजा द्रुपद कुमारा ॥
पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे ❀ भे असवार नृपति दल गाजे ॥
पुनि रथ साजि सात्य की आयो ❀ सेन संग निज शंख बजायो ॥

सुतन समेत बिराट भुवारा ❀ लै निज कटक चले सरदारा ॥
काशि राज सेना सँग लीन्ही ❀ रथ अरूढ़ ह्वै दुन्दुभि दीन्ही ॥
शूर सेन अपनो दल साजे ❀ पहिरि सनाह सिंहसम गाजे ॥
जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ ❀ लै निज कटक चलो पुनि तेऊ ॥
चालिस सहस छत्र धर राज ❀ भे अरूढ़ बाजे पुनि बाजा ॥

दोहा—साजे सकल नरेश पुनि, गजरथ तुरँग पदात ।
रथी महारथ गजरथी, कटक क्षौहिणी सात ॥

मिलि जुरि पँवरि द्वार जब आवा ❀ धर्मराज निज द्विरद मँगावा ॥
कुन्तल सजि लायो मयमत्ता ❀ शंख बर्ण सुन्दर चौदन्ता ॥
देखत रूप परम बिकरारा ❀ चारिउ चरण बहत मदधारा ॥
कनक रचित मणि खचित अँबारी ❀ गजमुक्ता झालरि छबिकारी ॥
धर्मराज हरि पद शिर नाई ❀ भे अरूढ़ प्रभु आयसु पाई ॥
बाजत दुन्दुभि शंख घनेरे ❀ करि अति नाद नकीबन टेरे ॥
भयो शोर बहु दिग्गज डोले ❀ करि उदबाद बन्दिजन बोले ॥
गोमुख भेरि शब्द अतिभारे ❀ जहँ तहँ बिपुल नकीब पुकारे ॥
होत महारव भयो अतङ्का ❀ बाजि उठे दल में बहु डङ्का ॥
भीमसेन अपनो रथ साजे ❀ भये अरूढ़ बार बहु गाजे ॥
पुनि पांचो द्रौपदी कुमारा ❀ शंख बजाय भये असवारा ॥

दोहा—मणिमय चित्रबिचित्र रथ, भये नकुल असवार ।
पांचकोट यकसठ लिये, साज्यो भीम कुमार ॥

तब सह देव कीन असवारी ❀ अर्जुन लै साजे बनवारी ॥
लै शंकर सनाह पहिरायो ❀ इन्द्र दत्त शिर मुकुट बँधायो ॥
अदिति श्रवण के कुण्डल दोई ❀ पहिरायो जेहि मृत्यु न होई ॥
अक्षय तूण बरुण जो दीन्हा ❀ सोई लै हरि पढ़ि ढिग कीन्हा ॥
हुतभुक दीन्हेउ धनुष महाना ❀ गाण्डिवनाम सकलजग जाना ॥
सब पञ्च लागी हैं जामें ❀ बिद्युत्कोटि प्रभा है तामें ॥

सो लै हरि अर्जुन कहँ दीन्हों ❀ धरिशिरहाथ अभयपुनिकीन्हो ॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे ❀ रण महँ शत्रु जाय तुम मारे ॥
पुनि दीन्हो प्रभु आशिष येहा ❀ निश्चय बिजय न कछु संदेहा ॥
अस कहि नन्दिघोष रथ आना ❀ सारथि रूप धरेउ भगवाना ॥
श्वेत बरण लै चारो घोरे ❀ ते हरि आनि यानमहँ जोरे ॥
करि अतिकृपा बार नहिं लायऊ ❀ पाणि पकरि हरि पार्थ चढ़ायऊ॥
करि सारथी बेष बनवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
शीशमुकुट जनु तरणि अभङ्गा ❀ चन्दन ते चर्चित सब अङ्गा ॥
पीतवसन तनु श्याम सोहावन ❀ मणियुत पोत बिराजत पावन ॥
कौस्तुभ कण्ठ रुचिर बनमाला ❀ अङ्गद युत दो बाहु बिशाला ॥

दोहा—कमलनयनकुण्डलकलित,ललितमधुरमुसकान।
कच कारे काटे केहरी, कोटि काम हरमान ॥
पाणिकल्पतरु पदकमल, कमलबदन कमनीय।
केशो कंस कलेश हर, कीन्ह कृपाकरि जीय ॥
करयो सारथी बेप जब,रथ हाँक्यो भगवान।
पार्थ ध्वजापर बैठके, तब गर्ज्यो हनुमान ॥

ह्वै प्रसन्न बोले भगवाना ❀ सुनहु युधिष्ठिर बचन प्रमाना ॥
मन्त्र हमार भूप सुनि लीजै ❀ व्यूह बनाय गमग पुनि कीजै ॥
बिरचि पिपीलव्यूह भगवाना ❀ कीन्ह बजाय निशान पयाना ॥
अर्जुन रथ हांकेउ बनवारी ❀ सकल सेनके भयो अगारी ॥
युद्धमान पुनि दक्षिण ओरा ❀ चले संग लै दल घन घोरा ॥
सेन सहित दिशि बाम तमोजा ❀ रथ अरूढ़ मनो अपर मनोजा ॥
धृष्टद्युम्न अति बल धनुधारी ❀ अर्जुन रथके चलेउ पछारी ॥
नाना बस्तु लादि लै चारू ❀ ता पीछे सब लोग बजारू ॥
ताके दक्षिण भाग शिखण्डी ❀ लिये साथ निजसेन अखण्डी ॥

दल चतुरङ्ग सङ्ग पुनि साजे ❋ धृष्टकेतु दिशि बाम बिराजे ॥
लिये धनुष कर शायक तीछे ❋ सेन समेत सात्यको पीछे ॥

दोहा—चलत कटक हाली धरा, लागी रेणु अकास ।
चले नकुल सहदेव संग, लिये सङ्ग रनिवास ॥

दक्षिण दिशि द्रौपदी कुमारा ❋ चले सङ्ग लै कटक अपारा ॥
घटउत्कच दल लै दिशि बामा ❋ पांच कोटि राक्षस बलधामा ॥
अभिमन्यु रथ पाछे पुनि आवत ❋ लिये धनुष कर बाण फिरावत ॥
अभिमन्यु सङ्ग बीर बरियारा ❋ उत्तर शंख बिराट कुमारा ॥
लीन्हे साथ सेन समुदाई ❋ कीन्ह पयान निशान बजाई ॥
धर्मराज पुनि कीन्ह पयाना ❋ बाजे दल गहगहे निशाना ॥
पणव धेनुमुख भेरि समूहा ❋ बाजे शंख चले दल जूहा ॥
चालिस सहस छत्रधर राजा ❋ चले सङ्ग लै सेन समाजा ॥
द्रुपद नरेश चलेउ दल साजी ❋ भयउ अरूढ़ दुन्दुभी बाजी ॥
उठी धूरि गो छाय अकाशा ❋ रवि अलोप पूरी सब आशा ॥
लैकर धनुष चले पुनि गाजत ❋ नृप के दक्षिण भाग बिराजत ।
बायें ओर बिराट भुवारा ❋ कीन्ह पयान बजाय नगारा ॥
काशिराज नृप गज के पाछे ❋ सेन समेत बिराजत आछे ॥

दोहा—रथ अरूढ़ कर धनुपधरि, शूरसेन महराज ।
नृपगज के आगे चले, लै निजसाज समाज ॥

पीछे अनी बृकोदर आवत ❋ करत घोररव गदा फिरावत ॥
बाम पाणि लीन्हे करवालो ❋ भीमहिं चलत धरा सब हालो ॥
क्षोभित सिन्धु धराधर डोले ❋ कमलनाल अहिदिग्गज बोले ॥
कौतुक देखि चकित सुर डीठी ❋ परेउ भार कच्छप की पीठी ॥
कद रव भीम बार बहु गाजे ❋ रबि तुरंग तजि मारग भाजे ॥
सुरपुर भेदि भीम की हांका ❋ परी जाय भुवनोक्प हांका ॥
चलोजात मग सेन अपारा ❋ बाजत शंख मृदंग नगारा ॥

भाट भरत कल बिरद बखानत ❋ सुनि सुनि शब्द शत्रु भयमानत ॥
दल बिलोकि मग होत अतङ्का ❋ रघुबर प्रथम गये जिमि लङ्का ॥

दोहा--गोमुख शंख निशान रव, भेरि भूरि करनाल।
गजघण्टा गाजत सुभट, सुरपुर शब्द कराल ॥

कम्पत शेष बिकल भुजगेशा ❋ उठी धूलि छपिगयो दिनेशा ॥
सुर बिमान नभ ऊपर छायउ ❋ सुमन बर्षि शुभ सगुन जनायउ ॥
कह नृप तुम हरि अन्तरयामी ❋ बिजयउपाय कहौ अब स्वामी ॥
बोले बिहँसि बचन भगवाना ❋ करहु नरेश शक्तिको ध्याना ॥
तासु प्रसाद विजय नृप होई ❋ यह तजि और उपाय न कोई ॥
सुनि हरि बचन भूप अनुरागे ❋ करन ध्यान अम्बा को लागे ॥
करि आचमन मूँदि दृग लीन्हें ❋ प्राणायाम बेदबिधि कीन्हें ॥
करि अष्टाङ्ग सकल सुर साधी ❋ करत ध्यान नृप लागि समाधी ॥

दोहा—मुक्तकेश कर खड्गधर, मुण्ड मालदृग लाल ।
को सहाय मेरी करै, बिन काली यहि काल ॥
उरगाकिंकिणी कटिलसै, शवारूढ भुज चारि ।
हरन हमारे दुसहदुख, हे त्रिपुरारि पियारि ॥

यहिबिधि बिनय भूप जब कीन्हा ❋ ह्वै प्रसन्न तब दर्शन दीन्हा ॥
सानुकूल तब भई भवानी ❋ बरंब्रूहि बोली हँसि बानी ॥
हे नरेश तुव हरिहि पियारे ❋ माँगहु जो अभिलाष तुम्हारे ॥
सुनि प्रियगिरा अमियहरसानी ❋ बोलेउ राउ जोरि युग पानी ॥
मिटे कलेश सुनी तव भाषा ❋ दरश देखि पूजी अभिलाषा ॥
जानहु मातु मनोरथ मोरा ❋ मैं का कहौं दास मैं तोरा ॥
तब यह कही अनुग्रह मोरे ❋ ह्वैहैं सफल मनोरथ तोरे ॥
धर्मराज कहँ दे बरदाना ❋ भई शक्ति पुनि अन्तर्द्धाना ॥
हरि नरेश मन सुख अधिकाई ❋ कीन्ह पयान निशान बजाई ॥

मग सर सरित सूखिगा पानी ❀ पङ्क रेणु ह्वै गगन उड़ानी ॥

दोहा—चलेजात मग धर्मसुत, लीन्हे दल निज साथ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्री ब्रजनाथ ॥

करत शिबिर पुनि करत पयाना ❀ तब कुरुदेश आय नियराना ॥
बीच बीच मग करत बसेरा ❀ कबहुँ पतान होय कहुँ डेरा ॥
नगर बारुणावर्त्त समीपा ❀ कीन्ह्योशिबिर पाण्डु कुलदीपा ॥
जागे सकल निशा अवसाना ❀ प्रातहोत पुनि कीन्ह पयाना ॥
सुमिरि गौरि हर कृष्ण गणेशा ❀ गज अरूढ़ ह्वै चले नरेशा ॥
कुरुक्षेत्र के पश्चिम ओरा ❀ कीन्हे धर्मराज तहँ डेरा ॥
अमल अमोल बितान तनाये ❀ पटल कनात सहित छबि छाये ॥
बाजत दल घरियार घनेरे ❀ जहँ तहँ परे नृपन के डेरे ॥
परो धर्मसुत सेन अखण्डा ❀ परखहिंशिबिरदेखिनिज झण्डा ॥

दोहा—धर्मराज की पाइ सुधि, कुन्ती पहुँची आय ।
देखि पुत्रअरुपुत्रतिय, आनँदउर न समाय ॥

धर्मराज पदबन्दन कीन्हा ❀ होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हा ॥
बन्दत चरण नकुल सहदेऊ ❀ पाइ अशीष मुदितमन भयऊ ॥
अर्जुन भीम आइ पद बन्दे ❀ अभिमन्यु आशिषपाइ अनन्दे ॥
परसे चरण द्रौपदी रानी ❀ उर लपटाइ लीन्ह गहि पानी ॥
प्रीति सहित यदुनन्दन भेटी ❀ भीतर पलटि गई दुख मेटी ॥
सुनि सब पुत्रबधू उठि धाई ❀ परी चरण अतिआनँद छाई ॥
कुशल पूछिकै कण्ठ लगाई ❀ दीन्ह अशीष निकट बैठाई ॥
अभिमन्यु आदिपरे पग नाती ❀ हृदय लगाइ जुड़ावत छाती ॥

दोहा—कुन्ती गोद समोद तब, बैठारे सुत नन्द ।
सबलसिंह चौहान कह, पूरिरह्यो आनन्द ॥

इति श्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृते अष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

कह ऋषि सुनु जनमेजयराई ❀ कथा बिचित्र श्रवण सुखदाई ॥
यह सुधि दुर्योधन नृप पाई ❀ भयउ अरूढ़ निशान बजाई ॥
भीषम करण द्रोण धनुधारी ❀ साजी सेन भयङ्कर भारी ॥
कृपाचार्य द्रोणी रण रङ्गा ❀ लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा ॥
बाह्लीक लै कटक अपारा ❀ भये अरूढ़ बजाइ नगारा ॥
सोमदत्त सँग दल समुदाई ❀ बाजत पटह शंख सहनाई ॥
भूरि श्रवा सेन सब साजे ❀ गङ्गाधर कम्बोज बिराजे ॥
रथन अरूढ़ बजाइ निशाना ❀ दुर्योधन सँग कीन्ह पयाना ॥
शल्य नरेश हलम्बुष साजे ❀ पवन निशान शंख बहु बाजे ॥
साज्यो पुनि कलिङ्ग नरनाथा ❀ लै नवलाख द्विरद पुनि साथा ॥

दोहा—रथ तुरङ्ग बहु रंग के, सेना साथ अनन्त ।
असी लक्ष गज लै चले, महाराज भगदन्त ॥

सिन्धु नरेश जयद्रथ नामा ❀ अति रणधीर बीर बलधामा ॥
लै कर धनुष बजाइ नगारा ❀ कौरव संग भयो असवारा ॥
शकुनी औ बिकरण रणरङ्गा ❀ द्विरद दुमत्त दुशासन सङ्गा ॥
सौ बान्धव दुर्योधन केरे ❀ भ्रातजात अरु तनय घनेरे ॥
निज निज रथन भये असवारा ❀ बाजत गोमुख शंख नगारा ॥
सेन समेत त्यागि सब धर्मा ❀ द्विरद अरूढ़ चल्यउ कृतवर्मा ॥
नृप उलूक बृषसेन भुवाला ❀ चले सङ्ग लै कटक बिशाला ॥
नृप शशिबिन्दु चले दल साजे ❀ तुरँग अरूढ़ दमामे बाजे ॥
बिन्दु निबिन्दु अवन्ती राजा ❀ चले साथ लै सेन समाजा ॥
अस्त्र निपुण अरु अति बलदाई ❀ ज्येष्ठ मित्र बिन्दा के भाई ॥
कह हरि कथा भूप तुव जानी ❀ अति प्रिय कृष्ण देवकी रानी ॥
तासु बन्धु द्वौ अति बलदाई ❀ दुर्योधन के भये सहाई ॥

दोहा—साठि सहस नृप छत्रधर, दै गह गहे निशान ।
निज निज दल सँग लै चले, गर्द लोपिगे भान ॥

एकादश चौहिणि दल साथा ❀ करत अकूत चल्यो कुरुनाथा ॥
बाजे बाजन भाँति अनेका ❀ उठी धूरि रवि मराडल छेका ॥
भा अँधियार जानि निशि घोरा ❀ बिछुरे चक्रवाक के जोरा ॥
बाजत बिपुल नृपन के डङ्का ❀ हाली धरा परम आतङ्का ॥
दलके भार धराधर डोले ❀ बिरदावली भाट बहु बोले ॥
सुनि सुनि नाद नकीबन केरा ❀ खग मृग त्यागो भागि बसेरा ॥
गजत बिपुल सुभट मग जाहीं ❀ अति आतङ्क होत दलमाहीं ॥
पीत ध्वजा रथ पीत बिराजे ❀ पीत धनुष पीते गुण साजे ॥
पीत बरण चारो हैं घोरे ❀ बसन बिचित्र पोत रँग बोरे ॥
धनुष चिन्ह ध्वज ऊपर राजत ❀ पीत बर्ण दल कर्ण बिराजत ॥

दोहा—श्वेतबर्ण तन बसन पुनि, श्वेत धनुष अरु बान।
श्वेतकेश रथ बाजि हैं, श्वेतध्वजा फहरान ॥

ताल चिन्ह ध्वज शोभा पावत ❀ लै दल श्वेत पितामह आवत ॥
श्याम बर्ण रथ अधिक सोहावत ❀ श्याम बर्ण घोड़े छबि पावत ॥
नील कञ्ज रित धनु कर लीन्हे ❀ नील बर्ण तामें गुण दीन्हे ॥
नील रङ्ग फहरात पताका ❀ गङ्ग चिन्ह तामें अति बाँका ॥
नील निचोल बिभूषण साजे ❀ नील बर्ण दल द्रोण बिराजे ॥
अरुण बर्ण दल साजि सुशर्मा ❀ अरुण बर्ण शोभित धनु कर्मा ॥
अरुण चमर शोभित रथकेतू ❀ चलेउ साजि कुरुपति जय हेतू ॥
सिन्धुराज के तुरे हरेवा ❀ अति लाघव गति मनहुँ परेवा॥
हरित केतु सोहत रथ ऊपर ❀ हरित बसन छायो दल भूपर ॥
कौरव सब कुरुनायक सङ्गा ❀ तिनके रथन ध्वजा पचरङ्गा ॥
द्विरद चिन्ह नृप स्यन्दन सोहत ❀ अति बिचित्र रणको मन मोहत ॥

दोहा—निज निज रथन अरूढ़ नृप, सोह ध्वजा बहुरंग।
हरित पीत कोउ श्यामसित, राजत सुघर सुरंग॥

यहि प्रकार कौरव पति सैना ❀ चली जात उपमा कछु हैना ॥

अति अगाध कछु अन्त न जाना ❀ प्रलय सिन्धु कहि ब्यासबखाना ॥
कुरुक्षेत्र के पूरब ओरा ❀ कौरव कटक टिका घनघोरा ॥
तनवायो वहँ बिपुल बिताना ❀ बजत घोर रव नौबत खाना ॥
गड़े केतु दल नाना कारा ❀ बाजत पँवरि पँवरि घरियारा ॥
शिबिर शिबिरप्रति सब बलधामा ❀ कीन्हेउ खान पान बिश्रामा ॥
दोउ नरेश बहु खनक पठायउ ❀ ऊँच नीच महि सुढब बनायउ ॥
करि सब भूमि गये यहि ताका ❀ अटकै जहां न स्यन्दन चाका ॥

दोहा-ऊँचनीच खनि खनकगन, कीन्हीं भूमि समान ।
सबलसिंह चौहान कहि, योजन सप्त प्रमान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहान भाषाकृते एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२६॥

जनमेजय पूछत अनुरागे ❀ पुनि मुनि कथा कहन सो लागे ॥
करन हेतु कुलको सम्बोधन ❀ आये ब्यास जहाँ दुर्योधन ॥
उठि प्रणाम कीन्हो तब राजा ❀ आशिष दीन्ह रहै नृपलाजा ॥
क्षत्री धर्म बढ़ै तन भारी ❀ जीवत छुटै न बानि तुम्हारी ॥
असकहि ब्यास बहुत समुझावा ❀ बंशबैर क्यहि काज बढ़ावा ॥
सो अब भूप त्यागि करि दीजै ❀ कलह नीक नहिं सम्मत कीजै ॥
देहु अंश सुनि शीष हमारी ❀ पाण्डव सबल होइ बड़ि रारी ॥
बिनकारण कीन्हो अपकारा ❀ लै कलङ्क तुम बिपिन निकारा ॥
समुझि परस्पर करहु मिताई ❀ देहु अंश नृप मिटै लड़ाई ॥
ब्यास कही कछु चित्त न आनी ❀ सुनत बिहँसि बोला अभिमानी ॥

दोहा-द्रोण कर्ण भीषम प्रबल, मो हित ये धनुधारि ।
देहुँ न भूमि मुनीश मैं, करौं भयंकर रारि ॥

जो कोटिन पाण्डव दल आवैं ❀ सब गुरुद्रोण मारि बिचलावैं ॥
लरै पितामह जो करि क्रोधा ❀ सकै रोकि रण को जग योधा ॥
चलहिं सरोष करण धनु तानो ❀ को रण बचहि महामुनिज्ञानी ॥
सुनि नृपबचन जानि अभिमानी ❀ कही ब्यासमुनि प्रथम कहानी ॥

पुर कम्पिला देश पञ्चाला ❀ प्रषद नाम तहँ भया भुवाला ॥
बल प्रताप करि राज्य बढ़ावा ❀ द्रुपदनाम त्यहि सुत उपजावा ॥
बिद्या कारण भूप पठाये ❀ अग्नि बेष के आश्रम आये ॥
ऋषि के भवन बड़ी चटशारा ❀ द्विजकुमार अरु राजकुमारा ॥
प्राकृत देव बचन को भाखा ❀ ताते दूरिकिये नहिं राखा ॥
भरद्वाज ऋषिकेर कुमारा ❀ पढ़हि द्रोण तहँ बुद्धि उदारा ॥
प्रषद पुत्र ते परी मिताई ❀ एकहि संग पढ़े मन लाई ॥
रह्यउ न बीच प्रीति अतिबाढ़ो ❀ नृप सुत कीन्ह प्रतिज्ञा गाढ़ी ॥
जब पाइब हम साज समाजू ❀ आधा बाँटि देहुँ तोहि राजू ॥
यहि प्रकार बीते कछु काला ❀ मरे प्रषद भे द्रुपद भुवाला ॥
बिद्या सकल द्रोण पढ़ि लीन्हा ❀ जाइ महाबन पुनि तप कीन्हा ॥
गोतम सुता द्रोण पुनि ब्याहो ❀ कृपभगिनी जानत जग ताही ॥
ताके सुत में अश्वत्थामा ❀ जगतबिदित गुणसब अभिरामा ॥

दोहा—द्रोण द्रुपद भूपालते, सुत हित माँगी गाइ ।
नहिंदीन्हों अपमानकरि, दियोतुरतदुरिआइ ॥
जानत जग समरथ हते, मुनिबर उभय प्रकार ।
दियो शापनहिंक्रोधकरि, कियो न अस्त्रप्रहार ॥

लज्जा भई द्रोण दुख पाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलिआये ॥
गेंद काढ़ि बालकन देखावा ❀ सुनिभीषमनिज निकट बोलावा ॥
चरण परस कीन्हे सनमाना ❀ दीन्हे धेनु धरा मणि नाना ॥
सौंपे पुनि कौरव कुल केतू ❀ बालक सब धनु बिद्या हेतू ॥
अर्जुन ते मानत अति प्रीती ❀ अस्त्र सिखाये अद्भुत रीती ॥
अस्त्र सिखाय निपुणपुनि कीन्हे ❀ भीषम जाय परीक्षा लीन्हे ॥
तुंग बिशाल एक बट भूपर ❀ कृतमा भार धरा ता ऊपर ॥
पक्षि रूप करि लक्ष बनायो ❀ भेद हेत सब शिष्य बोलायो ॥

दोहा—गुरु अनुशासन मानि तब, जुरे सबै यक साथ।
कटि निषंग करबाल कसि, चले धनुष धरि हाथ॥

भीषम द्रोण बिदुर तहँ ठाढे ❋ द्रोण समीप मोद मन बाढे॥
जाय प्रणाम सबनमिलि कीन्हा ❋ चिरञ्जीव कहि आशिष दीन्हा॥
पंगति बाँधि ठाढ़ गुरु कीन्हा ❋ हनहु लक्ष यह आशिष दीन्हा॥
कह्यो द्रोण दुर्योधन भूपहि ❋ देखत पुत्र पक्षि के रूपहि॥
देखत वृक्ष माँह की नाहीं ❋ सुनि यह बचन कह्यो गुरुपाहीं॥
सब देखत बोले कुरुराजा ❋ कहिऋषितुमतेसरहि न काजा॥
पुनि मुनि धर्मराज ते पूछा ❋ उन कहि दीन सकल छल छूछा॥
सब देखत हों सुनि यह बानी ❋ सरिहि न काम महामुनि ज्ञानी॥
सकल शिष्य पूछे यहि भांती ❋ कहो बात नहि गुरुहि सोहाती॥
पुनि पूछो मुनि अर्जुन पाहीं ❋ देखत हमहिं कहेउ उनयाहीं॥
पक्षि वृक्ष हम कछुहि न लेखत ❋ दृष्टि लगाय तुराड कहँ देखत॥

दोहा—पार्थबचन सुनि द्रोणगुरु, बोले गिरा प्रमान।
तुमते निसरीकाज सुत, करहु बिशिख सन्धान॥

सुनि अर्जुन छांड़े तब बाना ❋ कटी तुराड सबहो सुख माना॥
अति अनन्द भीषम उर छायो ❋ साधु साधु कहि कराठ लगायो॥
तुमसब मिलि गुरु दक्षिणा दीन्हेउ ❋ अर्जुन द्रब्य द्रोण नहिं लीन्हेउ॥
द्रुपद मित्र कीन्हेउ अपमाना ❋ लावहु बाँधि देहु यह दाना॥
गुरुशासन अपने शिर धारा ❋ नृपहि जीति चरणन तर डारा॥
देखि द्रोण तब दीन छुड़ाई ❋ गयो नरेश भवन खिसिआई॥
श्रीहत भयो तेज तन नाहीं ❋ नृप प्रण कीन्हो यह मनमाहीं॥
मोते बैर द्रोण उपजावा ❋ शिष्य हाथ अपमान करावा॥
करि उत्पत्ति पुत्र बलवाना ❋ करवावों ताको अपमाना॥
बोलि लीन बहु बिप्र समाजा ❋ कीन अरम्भ यज्ञकर राजा॥
वेद ऋचा पढ़ि बिप्र अनन्ता ❋ कीच यज्ञ पुनि बर्ष प्रयन्ता॥

ह्वै प्रसन्न सुरनायक आये ❀ सिद्ध काज कहि भवन सिधाये ॥

दोहा—प्रथम प्रकट भइ द्रौपदी, उपमा कहत बनै न ।
धृष्टद्युम्न पुनि कुण्डते, कढ़ो पुत्र जनु मैन ॥
शीशमुकुटकुण्डलकवच, लिये धनुष शर हाथ ।
द्रोण निधनहितनिर्भयो, कमलयोनिकुरुनाथ ॥

भीषम निधन हेत संसारा ❀ भयो शिखराडी को अवतारा ॥
काशिराज त्रैसुता सयानी ❀ भीषम जीति स्वयम्बर आनी ॥
नाम अम्बिका सब गुणरासी ❀ अम्बा नाम रूप कमलासी ॥
युगल बिचित्रबीर्य कहँ ब्याहो ❀ अम्बालिका न ब्याह्यो ताही ॥
नयन सनीर गरे भरि आवा ❀ बोली बचन शोच उपजावा ॥
गङ्गा सुत तुमहीं हरि आनी ❀ मोको अब लीजै गहि पानी ॥
सुनि भीषम बोले यह बानी ❀ राज सुता तुव बात न जानी ॥
मात पिता सन कीन करारा ❀ देखों मैं न नयन भरि दारा ॥
परशुराम जहँ पुरुष अनादी ❀ भा मन शोक गई फिरियादी ॥
कही कथा पुनि रोदन कीन्हा ❀ ह्वै दयाल तिन धीरज दीन्हा ॥

दोहा—आज्ञा भंग न करिसकै, भीषम शिष्य हमार ।
तोको सौंपौं पानि गहि, यह मुनि कीन करार ॥

प्रात होत मन परम अनन्दन ❀ लैनृप सुता चले भृगुनन्दन ॥
पुरी हस्तिना को चलि आये ❀ भीषम देखि चरण शिरनाये ॥
आदर ते पुनि भवन लवाये ❀ अति पुनीत आसन बैठाये ॥
आवतही इमि बचन सुनायो ❀ सुनहु पुत्र जा कारण आयो ॥
की याको लीजै गहि पानी ❀ की रण रचिय कही यह बानी ॥
मो सम कौन भयो जग अत्री ❀ इकइस बार हने सब क्षत्री ॥
कोउ कोउ बचे नारिके बोले ❀ सुनि सक्रोध गङ्गासुत बोले ॥
क्षत्री बंश बैर भरि लेहौं ❀ समर हराय जान तब देहौं ॥

अस्त्र शस्त्र लै रथ चढ़ि आई ❋ कुरुक्षेत्र दोउ रचेउ लड़ाई ॥

दोहा—द्वन्द्व युद्ध तहँ अति भयो, शर छूटे पुनि बाम।
गुरू शिष्य सम्मित करो, तेइस दिन संग्राम ॥

तब भीषम करि क्रोध अपारा ❋ कठिन बाण धनु तानि प्रहारा ॥
बाम पार्श्व लागेउ जब शायक ❋ रथते बिकल गिरेउ भृगुनायक ।
उठे संभारि कीन संधाना ❋ भीषम के मारे बहु बाना ॥
दक्षिण पार्श्व शक्ति पुनि मारी ❋ परेउ गङ्ग सुत भूमि दुखारी ॥
शक्ति घात लागी अति पीरा ❋ सुधि न रही कछु बिकलशरीरा ॥
ताही समय सकल बसु आये ❋ पाणि पकरि गाङ्गेय उठाये ॥
हौ अष्टम बसु को अवतारा ❋ तुम पीड़ित नहिं करहु सँभारा ॥
अस कहि गयो सप्तबसु जबहीं ❋ रथ अरूढ़ गङ्गासुत तबहीं ॥

दोहा—ब्रह्म अस्त्र संधानि करि, कीन्हो तुरत प्रहार ।
छिटकीज्योतिअकाश महँ, चले करत हुङ्कार ॥

भृगुनन्दन ब्रह्मास्त्र प्रहारा ❋ चलेउ अकाश भयो उजियारा ॥
भये शिथिल आयो द्वौ धरणी ❋ युद्ध कियो करि अद्भुत करणी ॥
जामदग्नि निज शक्ति प्रहारी ❋ भयो अघातशब्द अतिभारी ॥
छिटकी ज्योति चलो नभ कैसे ❋ ग्रीषम के प्रचण्ड रबि जैसे ॥
लागी हृदय परत नहिं सूझी ❋ महि गिरिपरो सारथी जूझी ॥
जोती छूटि स्वबश होइ बाजी ❋ चले पलटि स्यन्दन लै भाजी ॥
रथ अरूढ़ ह्वै रूप करि गंगा ❋ गही बांह लै फिरे तुरंगा ॥
होइहि बिजय पुत्र सुनि लीजै ❋ होइ निश्चिन्त युद्ध अब कीजै ॥
यह कहिकै स्यन्दन पलटाई ❋ भृगुनन्दन के सम्मुख लाई ॥
चतुर्बिंश दिन युद्ध महाना ❋ अब नृप कहौं सुनौ दै काना ॥
देव अस्त्र दोउ करैं प्रहारा ❋ करहिंनिवारण बिबिध प्रकारा ॥
नारायण शर भीषम लीन्हा ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा ॥

दोहा—तब सकोप भृगुराम होइ, लीन्हो पशुपतिवान ।
अतिलाघवदृगअरुणकरि, कीन्होधनुषसंधान ॥

छिटकी ज्योति भयो उजियारा ❀ नभपथ चले करत सुसकारा ॥
अस्त्र शस्त्रते भयो निवारण ❀ तब लागेउ तीक्ष्ण शर मारण ॥
नील बाण भीषम फटकारा ❀ भृगुपति के मस्तक महँ मारा ॥
रहेउ न धीर भई अतिपीरा ❀ गिरे भूमि नहिं चेत शरीरा ॥
भीषम देखि बहुत पछिताने ❀ धाये उतरि छत्र शिरताने ॥
कहत न बनै नयन जल बाढ़े ❀ मुखपर छत्र छाँह किय ठाढ़े ॥
उठहु नाथ गंगसुत बोले ❀ सुनि भृगुराम युगल दृग खोले ॥
देखि भयो भृगुकुल अवतंसा ❀ भीषम कहँ बहु बार प्रशंसा ॥
तुमसन कोउ गुरुभक्त न आना ❀ अब सुत माँगि लेहु वरदाना ॥
माँगत हौं माँगे यह दीजे ❀ रथचढ़ि लड़हु कृपा पुनि कीजे ॥

दोहा—परशुराम अरु गङ्गसुत, चढ़े रथन पर जाइ ।
धनुषबाणपुनिकर गहे, निजनिज शंखबजाइ ॥

त्यहि अवसर मरीचि ऋषि आये ❀ गहि कर परशुराम समुझाये ॥
अब तुम तात तजो यह काजे ❀ शिष्य पुत्र ते नीक पराजे ॥
भीषम ते बोले ऋषिराजा ❀ गुरु ते रण जीते बड़िलाजा ॥
ताते युद्ध त्याग करिदीजे ❀ है मत नीक भवनमग लीजे ॥
सुनि शुभ गिरा गंगसुत बोले ❀ कहे नाथ तुम बचन अमोले ॥
क्षत्री समर बिमुख होजाई ❀ लोक अयश परलोक नशाई ॥
ताते मैं प्रभु प्रथम न जैहौं ❀ अपने कुलहि कलङ्क न लैहौं ॥
परशुराम हैं हरि अवतारा ❀ जीते भूमि भूप बहु बारा ॥
अर्जुन भुज गहि पानि कुठारा ❀ काटे सुयश बिदित संसारा ॥
यकइस बार भूप बिन कीन्ही ❀ धरा सकल बिप्रन कहँ दीन्ही ॥

दोहा—ताते प्रथमहिं नाथ तुम, उनहिं देउ पलटाय ।
तबलगि मैं नाहिं रण तजौं, कीन्हे कोटि उपाय ॥

अस कहि भवन गङ्गसुत भयऊ ❀ पुनि मुनि परशुरामहँ गयऊ ॥
गहि जोती कर बाजि फिरायो ❀ बहु बुझाय स्यन्दन पलटायो ॥
चले निरखि भृगुनन्दन जाना ❀ हर्षि गङ्गसुत कीन्ह पयाना ॥
विनय बचन बहुभाँति सुनाये ❀ करि प्रणाम अपने थल आये ॥
ह्वै निराश तब राजकिशोरी ❀ चिता बनायो काठ बटोरी ॥
सुरसरि निकट मांगि बर लीन्हा ❀ भीषम निधन हेतु प्रण कीन्हा ॥
जरी नारि करि बुद्धि प्रचण्डी ❀ द्रुपदपुत्र तेहि भयो शिखण्डी ॥
कर्ण निधनहित सुनहु भुवारा ❀ है जग पारथ को अवतारा ॥
तुम्हरी मीचु भीम के हाथा ❀ है निश्चय जानहु कुरुनाथा ॥

दोहा—मृषा होय नहिं तुव बचन, जानिपरी अब सोय।
भावी कौन्यउ यतनते, मेटि सकै नहिं कोय ॥
तुम जानत भवितव्यता, कह नृप बारहिंबार।
करब युद्ध होइहि सोई, जो बिधि लिखा लिलार॥

सुनत व्यास उठि कीन्ह पयाना ❀ भावी चित्त प्रबल हम जाना ॥
सुमिरत मन हरि ध्यान लगाये ❀ नगर हस्तिनापुर चलि आये ॥
धृतराष्ट्र आदर करि लीन्हा ❀ दण्डप्रणाम बार बहु कीन्हा ॥
गहि पद भूप व्यासते बूझा ❀ होइहि सम्मति की अब जूझा ॥
कह मुनि होइहि बिकट लराई ❀ बोल्यो राउ बहुरि शिर नाई ॥
मैं जानौं जेहि सब संग्रामा ❀ करि उपाय सोइ सेव्य अकामा ॥
दिव्यदृष्टि सञ्जय कहँ दीन्हा ❀ ये कहि हैं तुम ते रण चीन्हा ॥
जो होई संग्राम तमासा ❀ असकहिगये बिपिनऋषिव्यासा ॥

दोहा—वैशम्पायनकर चरित, समझायो सब भूप ।
सबलसिंह चौहान कह, निजबलके अनुरूप॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणि सबलसिंह चौहान भाषाकृतेत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

दोहा—कह मुनि जनमजय सुनहु, निजकुलके गुणगाथ।
बोलि सकल मन्त्री निकट, करत मन्त्र कुरुनाथ॥

कहहु सचिव का करिय बिचारा ❀ बैरी धर्म राज बरियारा॥
लागत हमैं सकल मत फीका ❀ शकुनी कह्यो मन्त्र अब नीका॥
ईहै मन्त्र करण पुनि दीन्हा ❀ चहिये शत्रु संग रण कीन्हा॥
भूरिश्रवा द्रोणि मन भायउ ❀ सबन बैठि दृढ़ मन्त्र ठहायउ॥
इहां कृष्ण लै सकल समाजा ❀ अर्जुन भीम धर्म सुत राजा॥
द्रुपद बिराट आदि भट भारी ❀ पूछत सबहिं मन्त्र बनवारी॥
बुद्धिमान हो तुम सब भूपा ❀ कहो मन्त्र निज निज अनुरूपा॥
तब इमि कहेउ बिराट भुवारा ❀ सुनहु मन्त्र बसुदेव कुमारा॥
और बिचार कौन यहि माहीं ❀ बिना युद्ध मिलिहै महि नाहीं॥

दोहा—कही द्रुपद नरनाह तब, सुनिये श्रीब्रजराज।
और बिचार न कीजिये, करहु युद्ध कर साज॥

कही सात्यकी सुनिये सोमति ❀ मिलिहि न भूमि युद्ध बिनु यदुपति॥
ताते कीजै अवशि लराई ❀ शत्रु जीति महि लेब छुड़ाई॥
नीक मन्त्र सात्यकी बिचारा ❀ कह्यो नकुल यह बारहिं बारा॥
कुन्ती कह्यो मन्त्र सुनि लीजै ❀ करि अरि निधन राज निज कीजै॥
हैं यदुनाथ सहायक तोरे ❀ ह्वै हैं विजय पुत्र मत मोरे॥
सहदेव दीन्हां मत येहा ❀ कीजै रण त्यागो संदेहा॥
धर्मराज कीन्हे रण करणी ❀ जीतो शत्रु मिलै निज धरणी॥
दुर्योधन कीन्हो अभिमाना ❀ समुझाया हरि बात न माना॥
बिना युद्ध कैसे महि देहै ❀ अब नृप त्याग करा संदेहै॥

दोहा—भीमसेन यहि बिधि कहेउ, बिहँसि कृष्ण तब बैन।
बिना युद्ध नहिं महि मिलै, पीतम पङ्कज नैन॥

अब देखो पुरुषारथ मोरा ❀ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा॥

सम्मुख दुर्योधन सन लरऊँ ❋ रुण्डमुण्डमय मेदिनि करऊँ ॥
सुनहु भूप कौरव बिन मारे ❋ नहिं आइहि सन्तोष हमारे ॥
दुर्योधन जीतौ रण माहीं ❋ कृष्ण कृपा कछु निजबलनाहीं ॥
ताते और बिचार न करहू ❋ अब भय त्यागि भूप तुमलरहू ॥
कह्यउ शिखण्डी सुनहु नरेशा ❋ करहु युद्ध सब छांड़ि अँदेशा ॥
भीषम युद्ध भयउ शिर हमरे ❋ करिहौंनिधन बिजय हिततुम्हरे ॥
धृष्टद्युम्न बोले त्यहि काला ❋ करहु युद्ध जनि डरहु भुवाला ॥
मैं आड़ौं अब द्रोण लड़ाई ❋ मारौं करौं महा प्रभुताई ॥
काशिराज दीन्हे मत येहा ❋ लड़हु नरेश तजहु संदेहा ॥
भये सहायक श्रीबनवारी ❋ निश्चयबिजय न हारितुम्हारी ॥

दोहा—धर्मराज बोले बिहँसि, सुनिये दीनदयाल ।
जाके शिर तुव कर कमल, ताहि न जीतै काल॥

दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्मा ❋ छांड़े लोकलाज अरु धर्मा ॥
तृण समान तिहुँ लोकहि जानी ❋ कीन्हेसि नग्न द्रौपदी रानी ॥
बढ़हि पाप मारे रण भाई ❋ मत मोरे नहिं नीक लड़ाई ॥
मन्त्र हमार नाथ सुनि लीजै ❋ कीजै संधि युद्ध जनि कीजै ॥
करहु न निधन यदपि अपराधी ❋ जो वहु बांटि देय महि आधी ॥
फरकत अधर द्रौपदी बोली ❋ हे हरि धर्मराज मति डोली ॥
क्षत्रि धर्म सब दीन्ह गँवाई ❋ हे नृप निलज लाज नहिं आई ॥
कहिबे को हमरे पति पांचा ❋ पति न रही सुनिये प्रभु सांचा ॥
बिधवा भली बिना पति नारी ❋ पतिन जिअत गइ लाज हमारी ॥
येइ पति पतित रहे शिर नाई ❋ पकरेउ केश दुशासन धाई ॥
बार बार तुव नाम पुकारी ❋ बसन बैठि प्रभु लाज उबारी ॥
अस कहि तुरत द्रौपदी रानी ❋ बहेउ नोर दृग अति अकुलानी ॥

दोहा—बोले पारथ रोष करि, तुव प्रसाद कुरुनाथ ।
करौं अकौरव भूमि नाहिं, तौ न छुवौं धनु हाथ॥

प्रभु पद शपथ धनुष जब धरिहौं ❋ कीर समान कर्ण कहँ मरिहौं ॥
सुनिकै बचन धीरता आनी ❋ रही चुपाय द्रौपदी रानी ॥
तब हरि धर्मराज सन बोले ❋ मधुर हास श्रुति कुण्डल डोले ॥
मैं सहाय प्रभु धीर न आनत ❋ अजहूँ दुर्योधन भय मानत ॥
तजहु नृपति सब संशय शोका ❋ हो रण अजय को जीतै तोका ॥
है नरेश कादर मन तोरा ❋ होत न धीर बचन सुनु मोरा ॥
कुरुदल देखत चित्त डराने ❋ तो कत प्रथम युद्ध तुम ठाने ॥
करहु चित्त दृढ़ रहहु पोढ़ाने ❋ मिलहि न भूमि भूप कदराने ॥
मांगे भीख धरा जो पावहि ❋ तो दीनहु भूपाल कहावहि ॥
अब होइ निडर अस्त्र कर लीजै ❋ करि अरिनाश राज नृप कीजै ॥

दोहा—क्षत्री समर सकाइ तौ, जगत हँसाई होइ ।
ह्वै निशङ्क अरिते लड़ै, शूर कहावै सोइ ॥

क्षत्री समर पराभव पावै ❋ लोक अयश परलोक नशावै ॥
सन्मुख लड़हु छांड़ि सब लोभा ❋ तन परिहरे होत कुल शोभा ॥
तुम नृप क्षत्री धर्म न जानत ❋ ताते युद्ध करत भय मानत ॥
भोगी बीर धरा को नामा ❋ करहि भोग जे नृप बलधामा ॥
जे नृप क्रूर तजहिं कदराई ❋ मिलहि न महि तेहि आनउपाई ॥
ताते नृपति त्यागि संदेहू ❋ होइ निशङ्क कर आयुध लेहू ॥
सन्मुख दुर्योधन सन लरहू ❋ क्षत्री धर्म प्रकट अब करहू ॥
पुनि हँसि कह्यो द्रौपदी रानी ❋ हे नृप सुनहु कृष्ण की बानी ॥
भय छांड़हु अब रचहु लड़ाई ❋ सुनि मम बचन तजहु कदराई ॥
भरत बंश भये भूप अनेका ❋ शूर समर्थ एक ते एका ॥

दोहा—होइ जो मेरु समान अरि, तृण अवलोकित दीठि ।
महाबीर अरु धीर धर, कालहु देत न पीठि ॥

की अब बुद्धि भ्रष्ट तुव भयऊ ❋ को वह बिजय पलट होइगयऊ ॥
जो न करहु तुम युद्ध नरेशा ❋ आयुध छोड़ि धरहु त्रिय भेशा ॥

धर्मराज पुनि लज्जा पायो ❀ अरुण नयन करि बचन सुनायो ॥
बोलत नारि न बचन सँभारे ❀ लड़हुँ शत्रु मन टरहुँ न टारे ॥
मेरे श्रीब्रजराज सहायक ❀ सके न जीति युद्ध कुरुनायक ॥
धीरज धरहु आजु निशिबीते ❀ करिहौं युद्ध नारि सबहीते ॥
अपनो करो नीच फल पैहै ❀ है पापी कौरव मरि जैहै ॥
कृष्ण देव की सीख न मानी ❀ उनकी मृत्यु आइ नियरानी ॥

दोहा—दुर्योधन के उर बढ़उ, द्रुपद सुता अभिमान।
गर्व प्रहारी हरि बिदित, मरे सकल अरिजान ॥

प्रभु की कृपा परिश्रम थोरे ❀ होइहि निधन सकल रिपु मोरे ॥
कहत असत्य बचन नहि तोसे ❀ सदा रहत मैं कृष्ण भरोसे ॥
हरि की कृपा सुफल सब काजा ❀ अस कहि भयो मवन मुखराजा ॥
हँसत बचन बोल्यउ बनवारी ❀ सुनहु बात भूपाल हमारी ॥
अब नरेश छांड़हु संदेहा ❀ कीजै युद्ध सत्य मत येहा ॥
बचन हमार मृषा जनि मानहु ❀ होइहै बिजय सत्य नृप जानहु ॥
करिहौं मैं होई यश तोरा ❀ शरणागत पालक प्रण मोरा ॥
हौ नरेश अब शरण हमारे ❀ करहुँ सुफल सब काज तुम्हारे ॥

दोहा—मनसा बाचा कर्मणा, करहुँ तुम्हारो काज ।
अभयहोहुनरनाहअब, तुमहिं देहुँ सबराज ॥
उचित सकलसामर्थकह, शरणागत प्रतिपाल।
तदपि मोरिबाणी बिदित, धर्म राजातिहुँकाल ॥
करौं अकौरव भूमि सब, छत्र धरौंतब शीश।
बचै न खलजीवितजगत, शपथशिवाअजईश॥
भयो मुदितमन धर्मसुत, सुनिहरिगिराप्रमान।
भाषित पर्व उद्योग इमि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेउद्योगपर्वणिसबलसिंहचौहानभाषाकृते एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥
इति उद्योगपर्व समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा ।

भीष्मपर्व ।

गुरु गोविंद के चरण मनैये ❋ ज्यहि प्रसाद उत्तम गति पैये ॥
कै प्रणाम रघुपति के पायन ❋ चारि बेद जाके गुण गायन ॥
अवधनाथ सीतापति सुन्दर ❋ दीनबन्धु रघुबंश पुरन्दर ॥
शिव सनकादिक अन्त न पावैं ❋ नरमुखते केहिबिधि यश गावैं ॥
शुक शारद नारद से पाठक ❋ हनूमान गावैं गुण माटक ॥
बालमीकि रामायण करता ❋ राम चरित्र पाप को हरता ॥
अष्टादश पुराण श्री भारथ ❋ भाष्यो ब्यास ज्ञान पुरुषारथ ॥

दोहा—पाराशरते जन्म है, ब्यासदेव ऋषिराज ।
यामुखभारतप्रकटभो, करिकुलको सिरताज ॥

गुरु गणेश शारद के पायन ❋ करौं प्रणाम होहु सुखदायन ॥
महिमा निगम कहत नहिं आवै ❋ शेष सहस मुखते गुण गावै ॥
संबत सत्रह से अट्ठारहि ❋ पुनिवा तिथि मंगल के बारहि ॥
माघ मास में कथा बिचारी ❋ औरंगशाह दिलीपति भारी ॥
सब पुराण पारायण भारथ ❋ यामहँ कुरुपाण्डव पुरुषारथ ॥
ब्यासदेव भुवभार निवारण ❋ भारत रचा जगत के तारण ॥

दोहा—योगयुद्ध रस मंत्रणा, भारत मों है सर्ब ।
सबलसिंहचौहान कह, भाषा भीषमपर्ब ॥

नृपति युधिष्ठिर कृष्ण पठाये ❋ पञ्च ग्राम माँगन प्रभु आये ॥
दुर्योधन सुनिकै हठ गहेऊ ❋ सूची अग्र देन नहिं कहेऊ ॥
कहि हरि चले छीनि सब लेहैं ❋ अर्जुन भीम शाक तब देहैं ॥

गयो आपु जहँ धर्म नरेशव ❀ इतकी कथा कही सब केशव ॥
माँगे पाँच ग्राम नहिं पाये ❀ गर्ब बचन कुरुनाथ सुनाये ॥
हित की बात छांड़ि सब दीजे ❀ पहिरि सनाह युद्ध अब कीजे ॥
सुनेउ युधिष्ठिर विग्रह मान्यो ❀ विग्रह भयो उचित मैं जान्यो ॥
अहो कृष्ण सन्तन सुखदायक ❀ हम नहिं युद्ध करन के लायक ॥

दोहा—भीषम द्रोण करणकृप, लक्ष छत्र धर साथ ।
तासों युद्ध खेत चढ़ि, किमि जीतहिं यदुनाथ ॥

कह्यो कृष्ण पाण्डवसुत आगे ❀ अपनो राज देत को मांगे ॥
साहस कै रण को मन लैये ❀ मारिहि रिपुहि देश तब पैये ॥
द्रुपद बिराट आदि क्षत्रीगन ❀ हम सारथि पारथ के स्यन्दन ॥
अर्जुन भीम देहु रण को मन ❀ जीतहु युद्ध कही जगबन्दन ॥
अर्जुन कही युधिष्ठिर राजहि ❀ अब बिलम्बकीजै केहि काजहि ॥
भीमसेन यहि भाँति बखानेउ ❀ कृष्ण कही मेर मन मानेउ ॥
कीजै युद्ध भयानक भारथ ❀ अब देखो मेरा पुरुषारथ ॥
दुर्योधन सो बंधु सँहारौं ❀ भीषम करण खेत चढ़ि मारौं ॥
आपु सहाय जगत के तारण ❀ शोच नरेश करौ केहि कारण ॥

दोहा—सभा मध्य रक्षा करयो, द्रुपदसुता की लाज ।
कौरव दल तृण सम गनौं, जो सहाय ब्रजराज ॥

नृपति युधिष्ठिर आनन्दितमन ❀ साजहु सैन कहेउ माधवसन ॥
नृप को आज्ञा श्रीहरि पायो ❀ साजत सैन बिलम्ब न लायो ॥
द्रुपद बिराट शंख रथ साजे ❀ पहिरि सनाह सिंहसम गाजे ॥
धृष्टद्युम्न रथ पर चढ़ि आयो ❀ जाके शिर हरिमुकुट बँधायो ॥
कञ्चन रथ सहदेव सुहाये ❀ तेज तुरङ्ग नकुल चढ़ि आये ॥
लोह चक्र जो हरि निर्मायो ❀ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो ॥
पहिरि सनाह खड्ग कटि बाँधे ❀ गदा लिये कर शारङ्ग काँधे ॥
कालरूप सम भीम भयंकर ❀ प्रलयकाल महँ जैसे शंकर ॥

चढ़े सात्यकी उत्तम स्यन्दन ❀ अभिमनु चढ़े सहोद्रानन्दन ॥
शूरसेन चढ़ि नृपति छत्रधर ❀ जरासन्धसुत चल्यो धनुर्द्धर ॥
धृष्टकेतु कीन्हों असवारी ❀ काशीराज महा बलभारी ॥
पञ्च कुमार द्रौपदी जाये ❀ हर्षित चले सुबेष बनाये ॥
चले शिखण्डी रण के शूरा ❀ साजे सैन महाबल पूरा ॥

दोहा—हीरा मणि चामर लगे, श्वेत बरण गजराज ।
दण्डछत्रधरि शीशपर, कियो युधिष्ठिरसाज ॥

कञ्चन मणिमय बनी अमारी ❀ तेहिपर नृपति कीन्ह असवारी ॥
पारथ कहँ यदुनाथ बनायो ❀ निज कर लै सनाह पहिरायो ॥
मणिमय कुण्डल मुकुट बिराजत ❀ बाँधे अस्त्र मनोहर छाजत ॥
कर गहि धनुष बाण बहु साजैं ❀ अक्षय त्रोण देखि रिपु भाजैं ॥
नन्दिघोषरथ कीन्हेउ मण्डित ❀ शोभानिरखिहोतरिपु खण्डित ॥
औ अनेक कुञ्जर हैं माते ❀ दन्त बिशाल क्रोध ते ताते ॥
तिनके नयन परीं अँधियारी ❀ ठाढ़े जो हालत बल भारी ॥
लीला चारि तुरङ्ग लगायो ❀ जाको बेग पवन नहिं पायो ॥
हनूमान ध्वज ऊपर आयो ❀ ज्यहि बल से सब लङ्क छुड़ायो ॥
कृष्ण चरण कीन्हेउ तब बन्दन ❀ पारथ जाइ चढ़े निज स्यन्दन ॥
श्रीहरि निरखि बहुत सुख पायो ❀ आपु सारथी बेष बनायो ॥

दोहा—आपु कृष्ण जोती गहेउ, अर्जुन पुलकित गात ।
हाँकत हय हिय हर्ष ते, पीताम्बर फहरात ॥

पांचौ बन्धु करी असवारी ❀ कुन्ती तब आरती उतारी ॥
भांति अनेक शकुन शुभ कीन्हेउ ❀ सुतन सौंपि हरिके कर दीन्हेउ ॥
मम अनाथ के पांचौ बालक ❀ प्रभु रणमें कीन्हेउ प्रतिपालक ॥
कही कृष्ण तुम भवन सिधारहु ❀ जय होइहि जिय शोच निवारहु ॥
यह कहि गमन आपु हरि कीन्हो ❀ आनन्दित शंख ध्वनि कीन्हो ॥
गजपर सरस दमामें बोलत ❀ शब्द अघात शेष शिर डोलत ॥

ढाक ढोल औ भेरो बाजत ❋ सहनाई में मारू राजत ॥
करके बम्ब चले तब राजन ❋ अरु अघात बाजे बहु बाजन ॥
सप्त चौहिणी फौज सँवारी ❋ चालिस सहस छत्र के धारी ॥
तीन कोटि कुञ्जर मतवारे ❋ पञ्च कोटि रथ सरस सँवारे ॥
बीस कोटि असवार महाबल ❋ तीस कोटि सब लेखो पैदल ॥

दोहा—कुरु क्षेत्र आये सकल, जहाँ युद्ध को ठाट ।
बिप्रबेदध्वनि पढ़त हैं, बोलत मागध भाट ॥

अब यह कथा चली शुभ आगे ❋ कुरुपति साज करन दल लागे ॥
भीषम द्रोण करण कृप आये ❋ भूरि श्रवा बृषसेन सुहाये ॥
सोमदत्त कृतबर्मा अत्री ❋ बाहुलीक अशुथामा चत्री ॥
है भगदत्त नृपति को साथी ❋ योजन पांच तासु को हाथी ॥
चले अलम्बुष दानव राजन ❋ शकुनी शल्य कियो रणकोमन ॥
औ शशिबिन्दु नरेश महाबल ❋ चले कलिङ्ग लिये कुञ्जरदल ॥
हैं नवलाख महाबल हाथी ❋ सौ बान्धव कलिङ्ग के साथी ॥
आये मगन महावल भारी ❋ तेज तुरंग करी असवारी ॥
तब सारथि नृप रथ लै आये ❋ कञ्चन के चाके निर्माये ॥
गजमुक्ता की झालरि सोहै ❋ मानुष कह शंकर मन मोहै ॥
लाल प्रबाल जड़ित बहुमणी ❋ जगमगात हीरन की कणी ॥
आनि तुरंग तेज रथ जोरे ❋ पवन बेग दुइ चारिउ घोरे ॥
चढ़े साजि दुर्योधन नीके ❋ संपति देखि इन्द्र मन फीके ॥

दोहा—दुश्शासन रथ साजियो, सौ भाइन लै साथ ।
साठि सहस नृप छत्रधर, चढ़े साजि कुरुनाथ ॥

औ अनेक कुञ्जर हैं माते ❋ दन्त बिशाल क्रोध ते ताते ॥
तिनके नयन परी अँधियारी ❋ ठाढ़े जो हालत बल भारी ॥
कञ्चन रथ अति दिब्य अनूपा ❋ जाहि देखि मोहत सुर भूपा ॥
दिब्य अनूपम झालरि सोहै ❋ गजमुक्ता देखत मन मोहै ॥

उन्नत ध्वजा अनूपम सुन्दर ❋ देखत शोचन लाग पुरन्दर ॥
रथ को ठाट भूमि सब मण्डित ❋ हय पदाति धाये रण पण्डित ॥
कुरु सागर के ब्यास बखानेउ ❋ अति अघात कोउ अन्तनजानेउ ॥
भानुमती आरति लै आयो ❋ कियो शकुन शुभमङ्गल गायो ॥
भयो बम्ब बैरख फहराने ❋ प्रलय काल जनु घन घहराने ॥
धूरि धुंधि महँ रबि नहिं सूझै ❋ ध्वजघनसघन पवन आरूझै ॥
डोलो अनी शेष शिर थाकेउ ❋ भूमि चली पर्वत सब काँपेउ ॥

दोहा—दशन बराहन दृढ़रहे, दबी कमठ की पीठि ।
दिग्गजकरहिंचिकारसब, दिगपातचक्रितदीठि ॥

कुरुक्षेत्र कौरवपति आये ❋ तब भीषम कछु बचन सुनाये ॥
द्रोण आपु शारंग कर गहिये ❋ सावधान होइ रण में रहिये ॥
भीषम द्रोण युधिष्ठिर देखेउ ❋ सब आगे अचरज करि लेखेउ ॥
नृप मन महँ तब मन्त्र बिचारी ❋ तुरत तजी गज की असवारी ॥
आपु पयादे चले नरेशू ❋ अर्जुन कह देखिय हृषिकेशू ॥
शत्रुसेन मों कीन्हेउ गमनहिं ❋ आनन्दित जैसे चल भवनहिं ॥
जो कुरुनाथ बाँधिकै राखै ❋ कीजै कहा भीम यह भाखै ॥
जौन बुद्धि कै पाँसा खेले ❋ वहै बुद्धि कै चले अकेले ॥
किनु आज्ञा कैसे सँग जैये ❋ बिना गये पाछे पछितैये ॥
कही कृष्ण अब चुपकरि रहिये ❋ नृपकी कठिनकथा नहिं कहिये ॥
धर्मराज धर्मै हित जानत ❋ शत्रु मित्र समता करि मानत ॥
यामों यहै मन्त्र को कारण ❋ कही आपु यह त्रासनिवारण ॥
सब सेना मिलि थिर ह्वै रहिये ❋ देखहु खड़े कछु नहिं कहिये ॥

दोहा—कुरुदल सब चाकित भये, कहैं परस्पर बैन ।
मिलो बिचारो दीन ह्वै देखि भयानकसैन ॥

आपु युधिष्ठिर भीषम दरशो ❋ छाँड़ो रथ गङ्गासुत हरषो ॥
आतुर चरण बन्द तब कीन्हो ❋ हँसि भीषम अंकमभरि लीन्हो ॥

सदा होहि कल्याण तुम्हारो ❋ जीतहु युद्ध शत्रु संहारो ॥
धर्मराज यहि भाँति बखानत ❋ हम तो तुमहिं पाण्डु के मानत ॥
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक ❋ तब तुमहीं कीन्हो प्रतिपालक ॥
कपटपाँस करि बनहिं पठाये ❋ तेरह बर्ष महादुख पाये ॥
राज लियो दुर्योधन भाई ❋ पञ्चग्राम माँगे नहिं पाई ॥
आपु युद्ध करिबे चित दीन्हों ❋ तो सब ठाट बृथा हम कीन्हों ॥
तुमते परशुराम रण हारे ❋ तेहि समान हम कहा बिचारे ॥
एक भरोसो मन में आयो ❋ जय होइहै तुव आशिष पायो ॥
हँसि गाङ्गेय कहन अस लागे ❋ बड़े साधु तुम परम सभागे ॥
जहाँ धर्म तहँ कृष्ण बिराजै ❋ जहाँ कृष्ण तहँई जय छाजै ॥

दोहा—धर्म भरोसो धर्म बल, धर्म भोगियो राज ।
सबलसिंहचौहान कहि, धर्मैं हित शुभकाज ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वं भाषाकृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

आइ द्रोण पद परशन कीन्हो ❋ आनन्दित होइ आशिष दीन्हो ॥
नृपति होइ कल्याण तुम्हारो ❋ अपनो शत्रु खेत मों मारो ॥
नृपति युधिष्ठिर आपु बखानो ❋ तुम गुरुद्रोण जगत सब जानो ॥
जो आपन शारँग कर धरिये ❋ तीन लोक क्षण में बश करिये ॥
जो तुम युद्ध बिषे मन लाउब ❋ तब कैसे कै हम जय पाउब ॥
हँसि कह द्रोण युधिष्ठिर आगे ❋ मधुर बचन कहिबे कछु लागे ॥
अहो नृपति सन्तन हितकारी ❋ तेरे सदा सहाय मुरारी ॥
कोटिन द्रोण अस्त्र गहि आवै ❋ चक्रपाणि सों जय नहिं पावै ॥
जाके सदा सहायक केशव ❋ ताके जयको कौन अँदेशव ॥

दोहा—जय होइहै तवसर्बदा, सुनहु पाण्डु के नन्द ।
जाके पारथ से रथी, औ सारथि जगबन्द ॥

कृपाचार्य पद बन्दन कीन्हों ❋ जयतिपत्र को आशिष दीन्हो ॥
भीषम द्रोण कही यह बानी ❋ जीते युद्ध युधिष्ठिर जानी ॥

कीन्ह प्रणाम चले पुनि आगे ❀ धर्म पुकार पुकारन लागे ॥
यहि दल में जेहि जीवन भावे ❀ तुरत कृष्ण शरणागत आवे ॥
सुनि युयुत्सु चलि आयो आगे ❀ नृपसों बचन कहन अस लागे ॥
अहो धर्मसुत शरण तुम्हारी ❀ चलो जाइ दरशों बनवारी ॥
नृप युयुत्सु रथ चढ़िकै लीन्हो ❀ तुरत आपनो दल शुभ कीन्हो ॥
गयो युयुत्सु पाण्डुसुत सङ्गहि ❀ सुनि कुरुनाथ भयो मन भङ्गहि ॥
रथते उतरि तुरत चलि आयो ❀ भीषम ते यहि भाँति सुनायो ॥
हौ सेनापति सब के रक्षक ❀ गयो युयुत्सु तुम्हें परतक्षक ॥

दोहा—धर्मपुत्र इत आइकै, कीन्हों कहा विचार ।
लक्ष सैन सँग लै गयो, तुम दल के सरदार ॥

भीषम कह्यो सुनहु हो राजन ❀ आये हमहिं बन्दिबे काजन ॥
कादर है युयुत्सु शरणागत ❀ हम मारेउ नहिं देखत भागत ॥
अब यह शोच चित्त नहिं कीजे ❀ सावधान रण को मन दीजे ॥
भृगुपति सप्त दिवस रण कीन्हों ❀ तिनते जयतिपत्र हम लीन्हों ॥
सुर अरु असुर नृपति रणमार्यो ❀ जीति स्वयम्बर बन्धु बिवाह्यो ॥
पाण्डव सुत के कृष्ण सहायक ❀ तेऊ नहिं मेरे रण लायक ॥
प्रण राखों हरिको प्रण टारों ❀ नितक्रम दशसहस्र रथ मारों ॥
सुनि दुर्योधन आनन्दित मन ❀ हरषि बचन भाष्यो भीषमसन ॥
अष्टादश चौहिणि दल दोऊ ❀ एकै रथ चढ़ि जीतै कोऊ ॥
कह भीषम जो तेज सँभारों ❀ एक दिवस दोऊ दल मारों ॥
द्रोण कोपि जो शर संधानै ❀ तीनि दिवस में करै निदानै ॥
कर्ण पांच दिन जो रण रचै ❀ दोउ दल में कोउ न बचै ॥

दोहा—द्रोणी तीनै दण्ड में, दोउ दल करै निदान ।
पल लागत अर्जुन बधै, छुवै न दूजो बान ॥

दुर्योधन सुनि मौनहि गहेऊ ❀ बिस्मय भयो मान नहिं रहेऊ ॥
जो तुम अर्जुन जानत ऐसे ❀ रण में जय तुम करिहौ कैसे ॥

भीषम कह कौरव दल नाथहि ❋ दश दिनकेर भार मम माथहि ॥
अपनो कटक करों सब रक्षक ❋ पाण्डव दल मारों परतक्षक ॥
सुनि दुर्योधन आनँद पायो ❋ अपने दलहि युधिष्ठिर आयो ॥
ले युयुत्सु हरि पांयन डारे ❋ अहो कृष्ण यह शरण तुम्हारे ॥
जैसे हम हैं पांचो भाई ❋ तेहि समान जानो यदुराई ॥
कहो कृष्ण शुभ होहि तुम्हारो ❋ सावधान ह्वै युद्ध बिचारो ॥
धर्मराज कीन्हो असवारी ❋ श्वेत गयन्द महाबल भारी ॥

दोहा—सिंहनाद बीरन करचो, भयो भयानक शोर ।
दिशा दशौ पूरित भई, ज्यों घमेर घन घोर ॥

पारथ कही सुनहु जग बन्दन ❋ द्वै दल मध्य राखिये स्यन्दन ॥
सुनिकै कृष्ण हाँकि रथ दीन्हो ❋ मध्य भूमि लै ठाढ़ो कीन्हो ॥
पारथ आनि सबहि दिशि देखेउ ❋ सब के अग्र पितामह लेखेउ ॥
श्वेत बरण रथ सरस सुहायो ❋ श्वेत बरण तन शोभा पायो ॥
श्वेत धनुष श्वेतै गुण जोरे ❋ श्वेत बरण हैं चारिउ घोरे ॥
गुरू द्रोण रथ श्याम सुहायो ❋ श्याम बरण घोड़े छबि पायो ॥
कृपाचार्य को अर्जुन देख्यो ❋ मनमहँ अति बिस्मयकरि लेख्यो ॥
देख्यो दुर्योधन सौ भाई ❋ धवल छत्र शिर शोभा पाई ॥
सिन्धुराज देख्यो बहनोई ❋ मामा शल्य जान सब कोई ॥

दोहा—गुरू पितामह बन्धु सुत, देख्यो सब परिवार ।
इन्हैं मारि जय का करै, दीन्हों धनु शर डार ।

कही कृष्ण पारथ सुनि लीजै ❋ क्षत्री धर्म त्याग नहिं कीजै ॥
रण देखे क्षत्री जो डरहीं ❋ अन्तकाल सो नरकहि परहीं ॥
प्रथम क्रोध करि रण में आयहु ❋ अब यह ज्ञान कहांते पायहु ॥
गहहु अस्त्र कर युद्ध सँवारहु ❋ छांड़हु शोच शत्रु संहारहु ॥
बालक युवा वृद्धता आवै ❋ अन्त मृत्यु सब प्राणी पावै ॥
यामें कोउ नहिं काहुहि मारहि ❋ जो सिरजै सोई संहारहि ॥

काल बश्य है सब संसारा ❀ यामें कछु नहिं दोष तुम्हारा ॥
क्षत्री के साहस ते कामहिं ❀ कीजै युद्ध होइ यश जामहिं ॥

दोहा–दान मरण रण शूरता, क्षत्री धर्म प्रमान ।
पारथ अस्त्रहि गहौ कहि, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व भाषाकृतेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अर्जुन कहेउ सुनहु जगतारण ❀ गोत्र बद्ध कीजै केहि कारण ॥
बाढ़ै पाप पुराय सब नाशहि ❀ पावों अन्त अधोगति बासहि ॥
गुरुपरिवार बधों केहि काजहि ❀ जैहों बनहिं छोड़िकै राजहि ॥
अर्जुन को माधव समुझायो ❀ चारि बेद को सार सुनायो ॥
मात पिता सुत बन्धु कहावैं ❀ अन्तकाल नहिं साथ सिधावैं ॥
अपनो धर्म कर्म पै साथी ❀ सुखसम्पति झूठो सब साथी ॥
जो बन जाय तपस्या करिहो ❀ अन्त भये जग में अवतरिहो ॥
दान अनेक यज्ञ जो करहीं ❀ स्वर्ग भोग करिमहि अवतरहीं ॥
ताते जन्म मरण नहिं छूटै ❀ अचल न होहिं कोटिशत कूटै ॥
पुराय पाप दोऊ जब नाशहिं ❀ तब पावहिं मेरे पुर बासहिं ॥

दोहा–पुण्य पाप बाँधो जगत, को काटन समरत्थ ।
निर्मल ज्ञान बिबकता, कै मन अपने हत्थ ।

मन भो भुक्ति मुक्ति नर पावै ❀ मन के चले कर्म गति आवै ॥
सब इन्द्रिन मों है मन नायक ❀ बन्धन मुक्ति देन के लायक ॥
जाके हृदय दया के बासहि ❀ ताके धर्म सदा परकासहिं ॥
जहँ लगि जीव जगत में अहई ❀ सबके हृदय बास मम रहई ॥
नदिन मध्य गङ्गा कहँ जानहु ❀ तरुन मध्य अश्वत्थ बखानहु ॥
ब्रह्मऋषिन में नारद जानहु ❀ कपिलदेव सिद्धन मों मानहु ॥
गजन माहिं ऐरावत देखो ❀ उच्चैःश्रव हय मध्य बिशेखो ॥
सामबेद बेदन महँ गनई ❀ साधुन मं शंकर सब भनई ॥
नरन माहिं राजा कै राखित ❀ देवन माहि इन्द्र मम भाखित ॥

सर्पन मध्य बासुकी कहिये ❀ नागन महँ अनन्त मों रहिये ॥

दोहा—ग्रहन माहि रबि हम अहैं, तेज अग्निमों जान ।
नारिन महँ रम्भा अहैं, गुण सात्विकी प्रमान ॥

चारिबरण महँ जो अवतरिहो ❀ जो कुलधर्म सोई सब करिहो ॥
ताते कर्म लागि सब करिये ❀ केवल नाम हमारे धरिये ॥
कहा कहां लगि ज्ञान बुझावैं ❀ मृतकसैन सब नैन दिखावैं ॥
पारथ कहो सुनहु हो केशव ❀ नयन लखौं तौ मिटै अँदेशव ॥
दिब्य दृष्टि अर्जुन तब पायउ ❀ मुख में सब ब्रह्माण्ड दिखायउ ॥
मेघाबरण शीश आकोशहि ❀ रबि शशिनयन किये परकाशहि ॥
मुख भो अग्नि शारदा रसना ❀ कन्ध रुद्र तारागण दसना ॥
इन्द्रबाहु ब्रह्मा हिय सोहेउ ❀ नाभी सिन्धु देखि मन मोहेउ ॥
पृष्ट अष्ट बसु शोभा पायउ ❀ जङ्घ दशो दिशिपाल सुहायउ ॥
चरण बिष्णु रोमावलि तरुगन ❀ अस्थि पहार बेदश्रुति है मन ॥
धरणी मांस नदी नख लेखेउ ❀ महाबिराटरूप यह देखेउ ॥

दोहा—मुख बिस्तारेउ कृष्ण तब, पारथ देखेउ नैन ।
जूझे सब सैना मृतक, रणमें कीन्हें शैन ॥

सर्ब मृतक पारथ जब देखेउ ❀ अपने जिय अचरज करि लेखेउ ॥
त्रसित भयो तन कम्प जनायो ❀ मूँदेउ नैन बचन नहिं आयो ॥
अर्जुनकाहिं त्रसित करिजाना ❀ कठिनरूप छांड़ेउ भगवाना ॥
अर्जुन अब युग नैन उघारो ❀ सखारूप मम त्रास निवारो ॥
तब पारथ देखेउ बनवारी ❀ जोतो गहे पिताम्बर धारी ॥
अर्जुन तब कमलापति आगे ❀ अस्तुति करन जोरि कर लागे ॥
तुम प्रभु तीनि लोक के करता ❀ दाता जन्म प्राण के हरता ॥
अब संशय प्रभु मिटो हमारो ❀ करिहौं युद्ध सुनहु गिरिधारी ॥
यहे कहि धनुषहाथ करि लीन्हेउ ❀ देवदत्त शंखध्वनि कीन्हेउ ॥
दोउ दल सिंहनाद करिआयो ❀ युद्ध भूमि में शोभा पायो ॥

दोहा-दोऊ दल बाजन बजे, गर्जैं सिंह समान ।
क्षत्री गण रण हाँक दै, साधे शारँग बान ॥

भयो कुलाहल दल में भारी ❀ आगे भये महाधनुधारी ॥
भीष्म द्रोण कर्ण नृप आये ❀ शंखध्वनि करि नाद सुनाये ॥
सुनिकै भीमसेन तब धायउ ❀ मानहु काल देह धरि आयउ ॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन रण करिये ❀ भीषम के सन्मुख ह्वै लरिये ॥
तबहिं धनंजय धनु कर गहेऊ ❀ आगे ह्वै भीषम सन कहेऊ ॥
करि प्रणाम शायक दश छण्डेउ ❀ गङ्गासुत बीचहि शर खण्डेउ ॥
भीषम कहेउ सुनहु जगतारण ❀ सारथि भयो भक्त के कारण ॥
पाण्डव धन्य धन्य ये पारथ ❀ जाके रथ पर श्रीपति सारथ ॥
यह कहिकै रण को मन लायो ❀ महारथी सब युद्ध मचायो ॥
भीमसेन दुश्शासन क्षत्री ❀ दोऊ जुरे महाबल अत्री ॥
धृष्ट द्युम्न द्रोण के आगे ❀ क्रोधित बाण चलावन लागे ॥
नकुल और जयदर्थ सुहावैं ❀ क्रोधवन्त दोउ युद्ध मचावैं ॥

दोहा-शकुनी अरु सहदेव रण, भिरे प्रचारि प्रचारि ।
नृपति युधिष्ठिर शल्यसों, कियो भयंकर मारि ॥

भूरिश्रवा सात्यकी सङ्गहि ❀ कृतबर्मा बिराट रण रङ्गहि ॥
भगदत्तहि क्रोधित जब जान्यो ❀ द्रुपद नरेश आपुर ण ठान्यो ॥
सोमदत्त उतरा रण मण्ड्यो ❀ बाणन ते रिपुसेन बिहण्ड्यो ॥
कृपाचार्य सन्मुख ह्वै धाये ❀ तिनसों काशिराज रण पाये ॥
घटउत्कच कीन्ह्यो संधानहिं ❀ जुरे अलम्बु तेज रणधामहिं ॥
नृप शशिबिन्दु शंख संग्रामहिं ❀ क्रोधित लगे चलावन बाणहिं ॥
तब द्रोणी निजकर धनुशरगहि ❀ जुरे शिखण्डी ते रण रङ्गहि ॥
कुरुदल में बृषसेन सुहाये ❀ तिनते चेति करण रण लाये ॥
जुरे बीर सब लै शारँश शर ❀ होन लगी अति मारु परस्पर ॥
दोऊ दल कीन्हेउ संधानहिं ❀ क्रोधित लगे चलावन बानहिं ॥

शतते सहस सहस ते लाखन ❀ बरषैं बाण सकै को भाखन ॥

दोहा—दोउ दल बीरन रण रचे, जलद बुन्दसम बान।
महाभयानक युद्ध कह, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्व भाषा कृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अर्जुन सों भीषम पुरुषारथ ❀ कीन्ह्यो प्रलय भयानक भारथ ॥
क्रुद्धित चले चलावत बानहिं ❀ बिंशतिशर मार्‍यो हनुमानहिं ॥
महाबीर रण दोउ समानहिं ❀ कृष्ण शरीर हन्यो दश बानहिं ॥
सहस बाण भीषम कर लीन्ह्यो ❀ ताते मारु पारथहि दीन्ह्यो ॥
अष्ट बिशिख क्रुद्धित ह्वै जोरे ❀ घायल किय रथ चारिउ घोरे ॥
और लक्ष शर क्रोधित मारा ❀ बहै प्रबाह रुधिरकै धारा ॥
सप्त बाण ते ध्वजा निशानहिं ❀ बाणन ते सैना घमसानहिं ॥
कृष्ण अङ्ग दश बिशिखसुमार्‍यो ❀ तब अर्जुन शर धनुष सुधार्‍यो ॥
षष्टि बाण भीषम उर मारा ❀ मानहुँ बज्रपात फटकारा ॥
सप्त बाण हनि ध्वजानिशानहिं ❀ सारथि उर मार्‍यो दश बानहिं ॥
चञ्चल अश्व रहे रथ जोरे ❀ घायल भे रथ चारिउ घोरे ॥
अर्जुन बाण चमू पर मार्‍यो ❀ हय गज रथ पदाति संहार्‍यो ॥

दोहा—क्रोधवन्त अर्जुन भयो, कीन्ह्यो लघुसंधान।
जलथल भारत भूमिसब, शरछायो असमान॥

एकै शर पारथ संधानहिं ❀ गुणमें धरत होहि दश बानहिं ॥
चलत होहिं शत लगे सहस्रन ❀ यहि प्रकार कियो सैननिकन्दन ॥
जब पारथ बहु कटक सँहार्‍यो ❀ भीषम अपनो तेज सँभार्‍यो ॥
लघु संधान लगे शर बर्षन ❀ जूझे सैन सहस्र सहस्रन ॥
दोउ सुभट अति समर जुझारा ❀ बरषहिं बाण मनो जलधारा ॥
भीषम अग्नि बाण संधार्‍यो ❀ लखि पाण्डव दल शङ्का मान्यो ॥
प्रगटो अग्नि बाण ते ऐसो ❀ प्रलयकाल बड़वानल जैसो ॥
प्रकटी शिखा सहस्र सहस्रन ❀ पाण्डव दल लागे जारन तन ॥

जब पाण्डव सैना अकुलान्यो ❋ बरुण बाण अर्जुन संधान्यो ॥
बरुण बिशिखते बरष्यो पानी ❋ निमिष एक महँ अगिन बुतानी ॥
रणमें मेघ घुमरिकै आयो ❋ महा बृष्टि बरषा झरिलायो ॥
बसन सनाह भीजि तन लागे ❋ पर भीजे शर चलत न आगे ॥

दोहा—पवन अस्त्र भीषम गह्यो, सूख्यो नीर तुरन्त ।
हय पदाति रथ उड़त हैं, मतवार मैमन्त ॥

ऐसो तेज समीर चलाई ❋ मानहु घरी प्रलय की आई ॥
नाग बिशिख तब फल्गु प्रहारा ❋ सर्पन कीन्ह्यो पवन अहारा ॥
फन काढ़े अजगर सब धावहिं ❋ लीलहिं सैन बिलम्ब न लावहिं ॥
बिषके तेज कटक ब्याकुल अति ❋ भीषम शर संधान्यो खगपति ॥
गरुड़ देखि सब सर्प पराने ❋ भये अलोप जात नहि जाने ॥
तीक्षण पञ्चबाण कर लीन्ह्यो ❋ ते शरचोट शीशपर दीन्ह्यो ॥
अर्जुन इमि अतिबिशिख चलायो ❋ शरसों भीषम को रथ छायो ॥
गङ्गतनय हँसि बिशिख पँवारे ❋ पारथ. शर बीचहि कर डारे ॥
कृष्ण देव रथ हाँकि चलायो ❋ भीषम के सम्मुख पहुँचायो ॥

दोहा—अर्जुन रथ आयो निकट, भीषम देखेउ नैन ।
क्रोधवन्त शर साधिकै, कह्यो कृष्णसों बैन ॥

दीनबन्धु सन्तन सुखदायक ❋ पारथ नहिं मेरे रण लायक ॥
पाण्डु बंश के रक्षा कारण ❋ सारथि आप जगत के तारण ॥
आपु सो दृढ़ जोती कर गहिये ❋ मारतहौं तीक्षण शर सहिये ॥
ऐसो शर भीषम संधान्यो ❋ देवलोक सब शङ्का मान्यो ॥
कम्पत है पाण्डव दल ऐसो ❋ कदलीपात मरुतलगि जैसो ॥
दिगपालन देखत भय मानी ❋ बसुधा शायक निरखि सकानी ॥
जो शर परशुराम ते पायो ❋ क्रुद्धित ह्वै सोइ बाण चलायो ॥
छूटत बाण शब्द भयो भारो ❋ दशदिशिअतिकीन्ही उजियारो ॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❋ सावधान रण को मन दीजै ॥

जब पारथ सुरपुर पगुधार्‌यो ❋ देवकाज सब दैत्य सँहार्‌यो ॥
तब सुरपति शिरमुकुट बँधायो ❋ तहाँ किरीटी नव शर पायो ॥

दोहा—ऐसे दीन्हो सुरनाथ तब, पारथ लीजै बान ।
महाकष्ट रणमहँ परै, तब कीन्ह्यो संधान ॥

सोइ शरपाणि बिजयनर लीन्ह्यो ❋ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो ॥
जिष्णुक्रुद्धहोइ बिशिख चलायो ❋ आवत बाण सो काटि खसायो ॥
काट्योशर श्रीपति सुखमान्या ❋ तब अर्जुन बहु भाँति बखान्यो ॥
अहो पितामह धनु दृढ़ धरिये ❋ सावधान मोते रण करिये ॥
दोऊ सरस रच्यो पुरुषारथ ❋ कीन्ह्यो महाभयानक भारथ ॥
पाण्डव दल भीषम बहु मार्‌यो ❋ भीमसेन तब आप सँभार्‌यो ॥
रथते उतरि गदा गहि धायो ❋ कौरव दल में युद्ध मचायो ॥
गदा घाव गजको शिर फोर्‌यो ❋ सहित भुशुण्ड दशनसबतोर्‌यो ॥
कोपि गदा रथ ऊपर मारे ❋ सहित रथी सारथी सँहारे ॥
हय पदाति आगे जो पावै ❋ भीमसेन तेहि मारि गिरावै ॥
रथहि पकरि रथ ऊपर मारे ❋ गहि गयन्द गज ऊपर डारे ॥
आरत लगे जात लोटत गज ❋ लागे धुका उताइल गत सज ॥

दोहा—कौरव दल त्रासित भयो, धरै न कोऊ धीर ।
सहसा कै रण में जुरे, एक बार शतबीर ॥

दै करि हांक कियो दृढ़ ठानहिं ❋ सबै रथिन मिलि मारे बानहिं ॥
काल समान तेज रण छूटे ❋ बज्र शरीर लागि सब टूटे ॥
भीमसेन क्रुद्धित होइ धाये ❋ मारि सबै यमलोक पठाये ॥
काहुहि गहि मुष्ठिक सों मारे ❋ जे अभिरे ते सकल पछारे ॥
कौरव दलहि प्राणभय कीन्ह्यो ❋ क्रोधित द्रोण हाँक तब दीन्ह्यो ॥
रहु रहु अरे बृकोदर ठाढ़ो ❋ सेना बधि तेरो मन बाढ़ो ॥
यह कहि धनुनराच दृढ़धार्‌यो ❋ भीमअङ्ग दश बिशिख प्रहार्‌यो ॥
गुरुद्रोण अगणित शर मार्‌यो ❋ तब निजरथहि भीमपगुधार्‌यो ॥

भीषम ते अर्जुन संग्रामहिं ❀ दोऊ जुरे खेत जयकामहिं ॥
पारथ जब लगि भीम निहार्यो ❀ दशसहस्र रथ भीष्महि मार्यो ॥
तब भीषम जय शंख बजायो ❀ संध्यालखि निजरथहि घुमायो ॥
फिरिकै सुभटकियो जबगवनहिं ❀ पाण्डव गये आपने भवनहिं ॥
दुर्योधन हर्षित होइ कह्यो ❀ रणमों भीषम को प्रण रह्यो ॥
दश सहस्र मार्यो रथ नीके ❀ पाण्डव गये युद्ध में फीके ॥
सेन सकल कीन्हेउ बिश्रामहिं ❀ धर्मराज आये निज धामहिं ॥

दोहा—अस्त्र खोलि धरणी धर्यो, टोप सनाह उतारि ।
श्रमनाइयो असनान करि, जेवैं सहित मुरारि ॥

द्रुपद सुता यह कथा चलाई ❀ आजु युद्ध केहि की प्रभुताई ॥
कही कृष्ण भीषम रण मण्ड्यो ❀ दशसहस्र रथ क्षणमें खण्ड्यो ॥
प्रात शंख कीजे सेनापति ❀ कुरुदल अर्जुन संहारहु अति ॥
कही द्रौपदी सुनिये केशव ❀ मेरे मन यह बड़ो अँदेशव ॥
जो पै शंख भीष्मते लरिहैं ❀ अर्जुन भीमसेन का करिहैं ॥
कही कृष्ण यामों है कारण ❀ शत्रु सेन कीजै संहारण ॥
प्रात होत दोऊ दल साजहिं ❀ शब्द अघात दमामे बाजहिं ॥
श्रीहरि कह बिराट सुनु भूपति ❀ शंखहि कीजै आजु चमूपति ॥
सुनि बिराट कह आनन्दितमन ❀ जो आज्ञा कीजै जगवन्दन ॥
मैं कुल में सपुत्र सुत जायो ❀ भारत सेनापती कहायो ॥
धर्म राज श्रीपति के आगे ❀ बांधन मुकुट शंख शिर लागे ॥

दोहा—कह्यो शंख करजोरिकै, सुनिलीजै सुखधाम ।
तुम समान सारथिभये, भीषम ते संग्राम ॥

पारथ रथी आपु प्रभु सारथ ❀ भीषम कियो सरस पुरुषारथ ॥
मेरे रथ नहिं सारथि ऐसो ❀ समता युद्ध होइ रण कैसो ॥
जो श्रीपति सम सारथि पावों ❀ मारि सबै कौरव बिचलावों ॥
कही कृष्ण सात्यकि सुनि लीजै ❀ आज आप सारथि प्रण कीजै ॥

बैठि शंख रथ जोती धरिये ❀ भीषम के सन्मुख रण करिये ॥
प्रभु आज्ञा सात्यकि जब पायो ❀ आपु सारथी बेष बनायो ॥
चारि तुरंग आनि रथ जोरे ❀ घूंघटसहित चलत मुख मोरे ॥
बाँध्यो मुकुट शंख मन हर्षहि ❀ राजयुधिष्ठिर के पुनि पदगहि ॥
तब बिराट के पद सोइ लाग्यो ❀ कृष्णाचरण परस्यो अनुराग्यो ॥
कियो सात्यकी को पग बन्दन ❀ चढ़्यो जाइ रथ परमानन्दन ॥
नन्दिघोष अर्जुन असवारी ❀ जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
भीम सहित सेना सब साज्यो ❀ सिंहनाद करि रण में गाज्यो ॥

दोहा—सबके आगे शंख रथ, साधे कर धनु बान ।
सबलसिंह चौहानकह, भारत के रणथान ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वभाषाकृते चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

कुरुदल साज करन सब लागे ❀ राजा कहेउ पितामह आगे ॥
आजु अस्त्र यहि बिधि ते धरिये ❀ कृष्ण सहित अर्जुन बध करिये ॥
भीष्म कही युद्ध को चलिये ❀ शोच कहा ह्वै है सब भलिये ॥
महागँभीर कियो दलसाजन ❀ बाजन लगे युद्ध के बाजन ॥
कुरुक्षेत्र आयो कौरव दल ❀ देखत हाँक दियो दोऊ दल ॥
भीषम अतिअचरज करि लेख्यो ❀ बाँध्यो मुकुट शंख शिर देख्यो ॥
तब सात्यकि रथहाँकि चलायो ❀ भीषम के सन्मुख पहुँचायो ॥
शंख प्रथम दश बाण चलायो ❀ ते शर भीषम काटि गिरायो ॥
हँसि भीषम दश शायक जोरे ❀ ते शर शंख बीचही तोरे ॥
कोपि कुँवर शतबाण प्रहार्‍यो ❀ भीषम के उरमध्य सो मार्‍यो ॥
शर लागत भीषम रिस बाढ्यो ❀ शोणितशर तूणीरते काढ्यो ॥
काल समान बाण सब छूटैं ❀ भेदि सनाह अंगमें फूटैं ॥

दोहा—क्रोधवन्त भीषम भये, कीन्हो लघु संधान ।
सर सरिता सात्यकि भये, कुँवर अङ्ग बहुबान ॥

नृप बिराट सुत तेज संभार्‍यो ❀ षष्टिबाण भीषम उर मार्‍यो ॥

भीषम शंख लरे रण अर्ज्जुन ❀ दोऊदल बहु कियो निकन्दन ॥
गजसों गज चौदन्त लराई ❀ रथी रथी सों मारु मचाई ॥
जुरे आइ असवार महाबल ❀ लगे पदाति पदातिन करिबल ॥
महारथी रथ हाँकि चलायो ❀ कौरवकटक मध्य तब आयो ॥
तब अर्जुन को दण्ड सुधार्‍यो ❀ क्रुद्धित ह्वै बहुबिशिख प्रहार्‍यो ॥
जो जो सैन्य दृष्टि में आयो ❀ चण में अर्जुन मारि गिरायो ॥
रुण्ड मुण्ड बसुधा में तोप्यो ❀ सूझि न पर्‍यो मांसमहि रोप्यो ॥

दोहा—घोर युद्धकपिध्वजाकियो, सेनाबध्यो अनन्त ।
गज रथ हय पदचरागरे, कहूँ शीश कहुँदन्त ॥

अर्जुन बध्यो सेन यहि रूपहि ❀ देखि क्रोध उपज्यो तब भूपहि ॥
दुर्योधन क्रोधित ह्वै धायो ❀ छत्र छाँह रबि दृष्टि छपायो ॥
नन्दिघोष रथ राजन घेर्‍यो ❀ मारु मारु दुर्योधन टेर्‍यो ॥
दुश्शासन सबराजन लीन्हे ❀ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हे ॥
चहूँ ओर बर्षत शर कैसे ❀ भादों बुन्द सघन घन जैसे ॥
नन्दिघोष रथ शरते छायो ❀ अर्जुन कृष्ण दृष्टिनहिं आयो ॥
पारथ इन्द्र अस्त्र गुण जोरे ❀ अन्तरिच्च ही सब शर तोरे ॥
अरु सहस्त्र राजा बध कीन्हो ❀ शंखध्वनि अर्जुन तब दीन्हो ॥
मणि मय मुकुट जरायन जरे ❀ शीश सहित बसुधा में परे ॥
जहां जहां अर्जुन रण ताक्यो ❀ तहां तहां माधव रथ हांक्यो ॥
और अनेक निशित शर मार्‍यो ❀ युत चोरासी तुरग महि पार्‍यो ॥
कीन्ह धनंजय सेन सुखण्डित ❀ नर के शीश मेदिनी मण्डित ॥

दोहा—यहि बिधि पारथ रण रच्यो, काहेनसकैकाबैन ।
रथ हांकत हैं हांक दै, प्रीतम पंकज नैन ॥

सिंहनाद दुश्शासन कीन्ह्यो ❀ क्रुद्धित धनुषफोंक शर दीन्ह्यो ॥
सप्त बाण पारथ उर मार्‍यो ❀ एक बाण यहि भांति प्रहार्‍यो ॥
सारथि शीशकाटि महि डार्‍यो ❀ कृष्ण अंग दशबाण प्रहार्‍यो ॥

रथ ते दुश्शासन महि आयो ❋ देखि बिरथ दुर्योधन धायो ॥
तब कुरुनाथ धनुश शर लीन्ह्यो ❋ महा मारु कपि ध्वजपर दीन्ह्यो॥
सुनिकै शोर बृकोदर धायो ❋ द्रोण जाय बीचहि अटकायो ॥
भीषम कही द्रोण रण रङ्गहि ❋ जुरे धनंजय कुरुपति सङ्गहि ॥
आप शंख सन समर जो कीजै ❋ हम पारथ पर शायक दीजै ॥
जाह्नवि सुत यह कहि लघु धायो ❋ शर बर्षा पारथ पर लायो ॥
दुर्योधन को पाछे घाल्यो ❋ आगे रथ गङ्गासुत चाल्यो ॥
सिहनाद करि हांक जनायो ❋ रहु अर्जुन भीषम अब आयो ॥

दोहा—अबलौं जो सेना बध्यो, हौं न रह्यों यहि ठौर ।
तौ पारथ बल जानिबो, जो दल बधिहौ और ॥

कोटिन अर्जुन करहुँ सँहारण ❋ कृष्ण सहाय बचौ त्यहि कारण ॥
अर्जुन सुनि क्रुद्धित परिजन्यऊ ❋ दृढ़ होइ धनुष बाण कर धन्यऊ ॥
पारथ क्रोधवन्त ह्वै टेर्‍यो ❋ जब तुम सब बिराटपुर घेर्‍यो ॥
तादिन मैं सबको बल जान्यो ❋ गोधन सबै फेरि गृह आन्यो ॥
बड़े अहहु बड़ बचन न कहहू ❋ दृढ़ ह्वै धनुष बाण कर गहहू ॥
यह कहिकै लागे शर बर्षन ❋ शतते सहस सहस्त्र सहस्त्रन ॥
अपर चरित्र सुनहु मनलाई ❋ शंख द्रोण जहँ करत लड़ाई ॥
एकहि एक क्रोध ते मारत ❋ आवत बाण बाण ते टारत ॥
अमित युद्ध दुर्योधन देख्यो ❋ अपने जिय अचरज करिलेख्यो ॥
शंख कुँवर अति बिशिख पँवार्‍यो ❋ रथके चारिउ अश्व सँहार्‍यो ॥
कियो सारथी को शिर खण्डित ❋ पुत्र बिराट महारण मण्डित ॥

दोहा—द्रोण अपर रथपर चढ़्यो, कछुलज्जा कछुक्रोध ।
महारथी देखत सकल, बालक पर अनुरोध ॥

जब लग द्रोण आपु संभार्‍यो ❋ तनय बिराट सैन्य बहु मार्‍यो ॥
कौरव दल बहु शंख निपातो ❋ गुरु तब भयो क्रोधते तातो ॥
रहु रे शंख ठाढ़ रण रङ्गहि ❋ एकै शर कृत जीवन भङ्गहि ॥

दूजो बाण करों संधानहि ❀ तौम्बहि परशुरामकी आनहि ॥
यह कहि ब्रह्म अस्त्र कर लीन्ह्यो ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो ॥
शरको तेज अकाशहि व्याप्यो ❀ सुर नर नाग देखिकै कांप्यो ॥
छिटक्यो किरणि बाण ते कैसे ❀ ग्रीषम ऋतु प्रचण्ड रवि जैसे ॥
देखि त्रास सात्यकि जिय बाढ़ो ❀ द्रोण त्रोण ते जब शर काढ़ो ॥
कहहु कुँवर तव रथहि फिरावों ❀ अर्जुन के पीछे पहुँचावों ॥
शंख कह्यो अस्थिर ह्वै रहिये ❀ क्षत्रि धर्म किमि जिय नहिं गहिये ॥

दोहा—बांध्यो मुकुट ज कृष्ण कर, भारत के रणखेत ।
द्विजसों प्राण दिखायकै, तनु राखौं केहि हेत ॥

कार्मुक द्रोण श्रवण लगि तान्यो ❀ छूटत बाण शब्द घहरान्यो ॥
बाण प्रताप अग्नि बहु बाढ्यो ❀ बड़वानल मनोदधिते काढ्यो ॥
सप्त ताल भयो अग्नि ऊँचाई ❀ चौदह ताल रह्यो चकलाई ॥
देखेउ ब्रह्म अस्त्र ढिग आवत ❀ सात्यकि बहुरि कुँवर समुझावत ॥
फेरों रथ सुनु बचन बावरो ❀ काह मरत बिन काज रावरो ॥
रथ समेत यहि बिधि जरि जैहो ❀ खोजत कतहुँ अस्थि नहिं पैहो ॥
जो मेरो रथ फेरहु भाई ❀ कृष्ण चरण युग कोटि दुहाई ॥
गुरुहति द्विजहति पाप सुपावहु ❀ जो सात्यकि रथ फेरि चलावहु ॥
जन्म भये ते मृत्यु न छूटै ❀ सो सपूत जग में यश लूटै ॥
रणते भागि भवन जब जैबो ❀ क्षत्रिनमों किमि बदन दिखैबो ॥
कुँवर लग्यो जल बाण चलावन ❀ ब्रह्म अग्नि को सकै बचावन ॥
रण में द्रोण अधर्म बिचार्यो ❀ त्राहि त्राहि सब देव पुकार्यो ॥

दोहा—सुरगण सब यहि बिधि कहैं, द्रोण अधर्म बिचार ।
बालक ते रण ठानिकै, ब्रह्म सो अस्त्र प्रहार ॥

अस्त्र तेज सब अङ्गहि व्याप्यो ❀ सहित तुरङ्ग सात्यकी कांप्यो ॥
तब सात्यकि रथ फेरि चलायो ❀ कुँवर कूदि धरणी पर आयो ॥
सन्मुख रह्यो नेकु नहिं मुरो ❀ ब्रह्म अस्त्र मों ठाढ़ जरो ॥

दोऊ दल देखत हैं नयनहिं ❋ साधु शंख भाष्यो सब बयनहिं ॥
भस्म भयो मन नेकु न मोरो ❋ भाजो सात्यकि लै सब घोरो ॥
देखत दू दल शंख जरायो ❋ फिरिकै द्रोण त्रोण शर आयो ॥
द्रोण आपु जय शंख बजायो ❋ सुनिकै धृष्टद्युम्न मन लायो ॥
रे गुरु द्रोण ज्ञान कर हीनो ❋ करि अधर्म खोयो पन तीनों ॥
ह्वैकै बिप्र अस्त्र जै बांध्यो ❋ बालक पर ब्रह्मास्त्रै साध्यो ॥
अब मोते संग्राम बिचारहु ❋ अहो बिप्र पहिले शर मारहु ॥
सुनि गुरु द्रोण क्रोध ते जाग्यो ❋ तीक्षण बाण चलावन लाग्यो ॥
कुँवर सबै वे बाण सँभार्यो ❋ द्रोण ललाट तीनि शर मार्यो ॥

दोहा—ब्रह्महि अस्त्र उदोत मय, पारथ देख्यो नैन ।
तौलगि भीषम बँधि गये, दशसहस्त्र रथ सैन ॥

भीषम शँख दयो जय हेतू ❋ सुनिकै शब्द फिर्यो कुरुकेतू ॥
सब मिलि गये आपने धामहिं ❋ दोऊदल कीन्ह्यो बिश्रामहिं ॥
अब यह कथा चली जो आगे ❋ भोजन पान करन सब लागे ॥
बोलि बाढ़ि धर बाढ़ि धरायो ❋ कोउ शायकमहँ सान करायो ॥
कोउ निषङ्गमहँ शायक पोखत ❋ चाराचारु तबल कोउ देखत ॥
कोउ स्यन्दन महँ साज लगावत ❋ कोऊ शक्ति सनाह बनावत ॥
धर्मराज माधव सँग लीन्हे ❋ गमन बिराट भवन शुभकीन्हे ॥
अहोनृपति मन शोच निवारहु ❋ क्षत्रिधर्म निज हृदय बिचारहु ॥
कह्यो बिराट सुनहु नृपनायक ❋ जूझे पुत्र मोहिं सुखदायक ॥
धर्मराज के काजहि आयो ❋ शोच कहा बहुतै सुख पायो ॥

दोहा—धर्मराज बन्धुन सहित, साथ लिये घनश्याम ।
भोजन को बैठे सकल, द्रुपदसुता के धाम ॥

षटरस भोजन आनि बनाये ❋ जेंवत भीम महासुख पाये ॥
द्रुपद सुता कछु बचन उचार्यो ❋ आजु युद्ध केहिभांति सँवार्यो ॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन बल भारी ❋ मारे सहस छत्र के धारी ॥

द्रोण अधर्म युद्ध मन लायो ❀ ब्रह्म अस्त्र ते शंख जरायो ॥
धर्मराज कह सुनहु मुरारी ❀ ममउर यह संशय अतिभारी ॥
दशसहस्र रथ नित क्रम जूझै ❀ भीषम ते जय मोहि न सूझै ॥
कहेउ द्रौपदी नृप नहिं डरिये ❀ बनकी कथा आपु सुधि करिये ॥
दुर्बासा कुरुनाथ पठाया ❀ अर्द्ध रात्रि पर्णशाला आयो ॥
सप्त सहस्र शिष्य सँग लागे ❀ भोजन आय द्वार ह्वै मांगे ॥
क्षुधावन्त हम भोजन दीजै ❀ नाहित ब्रह्मशाप अब लीजै ॥

दोहा—भोजन दीजैकवन विधि, एक अन्न नाहिंभौन।
ब्रह्म शाप के त्रास ते, सबै रहे ह्वै मौन ॥

तब मैं कह्यो ऋषिय सुनि लीजै ❀ आप जाय अस्नाननहिं कीजै ॥
मैं भोजन कर साज बनावों ❀ आवहु तुरत सबन बैठावों ॥
छलकरि मैं ऋषिको छिन टारो ❀ बहुत त्रास जियमध्य विचारो ॥
प्रभु यहि समय दया अब करिये ❀ नाहित ब्रह्मशाप मों जरिये ॥
सब मिलि कृष्ण चरण युगध्याये ❀ सुमिरतही तुरन्त प्रभु आये ॥
करि प्रणाम बहुतै सुख पायो ❀ क्षुधा क्षुधा यदुनाथ सुनायो ॥
तब मैं कह्यों अन्न नहिं लेशव ❀ भोजन काह दीजिये केशव ॥
रन्धन को भोजन प्रभु देख्यो ❀ तामें शाक कना यक पेख्यो ॥
तब घनश्याम शाक वह खायो ❀ मुनिगण केर उदरभरि आयो ॥
कोउ उदर निज पाणि भ्रमावहि ❀ कोऊ पत्रन्ह सेज बनावहिं ॥
काहुको दूध घीव तब आवहिं ❀ मन्त्र अगस्त्य कोऊ मन लावहिं ॥
भीमसेन तब जाय बुलायहु ❀ द्विजगणचलहुगहरुकिमिलायहु ॥

दोहा—दुर्बासा याहिबिधि कह्यो, नाहिंन भक्त विनाश।
सबलसिंह चौहन कह, चरण कमलकी आश ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वभाषाकृते पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

आये कृष्ण साधुसुखदायक ❀ पाण्डुबंश के सदा सहायक ॥
दुर्बासा कह सुनहु बृकोदर ❀ ब्याप्यो कृष्ण सबनके ओदर ॥

जैसो हम याचना लायो ❀ अपनो कियो आपुते पायो ॥
यह कहिके सब द्विजगण भागे ❀ आये भोम कृष्ण के आगे ॥
हँसि प्रभु द्वारावति पगु धार्यो ❀ वे चरित्र नृप चित्त बिसार्यो ॥
यह सुधि सब बिसरी केहिकारण ❀ कहाँ शोच जहँ त्रासनिवारण ॥
द्रुपद सुता यहि भाँति बखान्यो ❀ सुनियदुपतिअनिशयसुखमान्यो ॥
कौरव कटक समर महँ आये ❀ धनु कर शर निषङ्ग कटि लाये ॥
होत प्रभात सजे कुरुकेतू ❀ बजे निशान युद्ध के हेतू ॥
सिंहनाद करि शब्द सुनायो ❀ पाण्डव सकल अजिररणआयो ॥
दोउ अनी सन्मुख तब भयऊ ❀ बीरन धनुष फोंक शर दयऊ ॥

दोहा—रथगज पदचर नृपति सब, करनलगे रणघोर ।
महारथी सेनापती, भिरे जोरसें जोर ॥

आँदू खोलि दये अँधियारी ❀ धाये गज पर्वत से भारी ॥
भादों घटा बरै जनु आयो ❀ गजन युद्ध चौदन्त मचायो ॥
बाणबुन्दझरि रथिकर बलके ❀ शायक खड्ग दामिनी दमके ॥
करिके नाद भीम तब धायो ❀ भयो शब्द जनु घन घहरायो ॥
शक्ती शेल्ह उपर सब टूटहिं ❀ बज्रपात अर्जुन शर छूटहिं ॥
बिषमखड्ग बाज्यो शरखण्डित ❀ भीषम रथ हांक्यो परचण्डित ॥
नन्दिघोष के सन्मुख आयो ❀ बाणवृष्टि अर्जुन पर लायो ॥
पारथ ते शर काटि निवार्यो ❀ पञ्चबिशिख भीषम उर मार्यो ॥
लागत बिशिख क्रोधउरबाढ्यो ❀ तीक्षण शर निषङ्ग ते काढ्यो ॥
हन्यो ताकि कपि ध्वज के हियमों ❀ गङ्गा सुत क्रुद्धित ह्वै जियमों ॥

दोहा—भीषम अर्जुन रण रच्यो, भयो युद्ध अतिघोर ।
धृष्टद्युम्न अरु द्रोणते, परचोआनिअतिजोर ॥

क्रुद्धित ह्वै बहु बिशिख चलायो ❀ धारी ब्योम महाशर छायो ॥
गुरु द्रोण बहु शायक छाँड्यो ❀ धृष्टद्युम्न क्रुद्धित ह्वै खाँड्यो ॥
भरद्वाज सुत बाण चलायो ❀ कुँवर उत्तरा खड्ग लै धायो ॥

झपटै बाज चर्मपर जैसे ❀ पहुँचो आय द्रोण ढिग तैसे ॥
निकट जानिकै गुरू सँभाऱ्यो ❀ लघुसंधान बाण तब माऱ्यो ॥
बरषहिं बाण घात नहिं पायो ❀ कुँवर पेलि अपने दल आयो ॥
लै को दण्ड लग्यो शर मारन ❀ छाँड्यो बाण सहस्र अपारन ॥
कृपाचार्य किय शर संधानहिं ❀ भिरे नकुल तिनत जयकामहि ॥
मन्त्री शकुनी रण सहदेवहि ❀ पण्डित दोऊ युद्ध के भेवहि ॥
हाँक्यो जबहिं अलम्बू स्यन्दन ❀ तिनते भिऱ्यो हिडम्बोनन्दन ॥
शल्य नरेश सात्यकी लरई ❀ कृतबर्मा बिराट रण कहई ॥
युद्ध देखि भगदत्त रिसानो ❀ चढ़ि गयन्दपर कियो पयानो ॥

दोहा–ऐरावत को सुत अहै, ताहि दियो सुरराज ।
तापर चढ़िभगदत्तनृप, कियो युद्ध को साज ॥

मन्दर सों देखत नर डरई ❀ योजन ऊपर पाँव सो धरई ॥
दन्तबिशाल कहत नहिं आवै ❀ मनहुँ शृङ्ग कैलास सुहावै ॥
कालरूप सम कुञ्जर धायो ❀ पाण्डव के दल ऊपर आयो ॥
कटक अमित पांयन सों माऱ्यो ❀ शुण्ड लपेटि रथी फटकाऱ्यो ॥
अपनो दल डोलत अनुमान्यो ❀ भीम अग्र ह्वै हांक सुठान्यो ॥
क्रुद्धित शर को दण्ड सुधाऱ्यो ❀ कुञ्जरशीश बिशिखशतमाऱ्यो ॥
शायक अमित हते गजमत्तहि ❀ षष्ठिबाण माऱ्या भगदत्तहि ॥
तब भगदत्त क्रोध उर कीन्ह्यो ❀ पंचबिंश शरफोंक सो दीन्ह्यो ॥
भीमसेन, उर मध्य प्रहारा ❀ बहै प्रबाह रुधिर की धारा ॥

दोहा–तबगयन्द अतिक्रोधकरि, गह्यो भीम रथ आय ।
फेंक दिया रथ भूमि में, परो कोस पर जाय ।

कहूं तुरंग कहूं रथ टूट्यो ❀ कहूं सारथी कर शिर फूट्यो ॥
भीमसेन तब लज्जा पायो ❀ रहु भगदत्त बृकोदर आयो ॥
हांक मारि यहि भांति जनायो ❀ लैकर गदा क्रोध करि धायो ॥
एकहि गदा शीश पर दयऊ ❀ चारि पैग पाछे गज गयऊ ॥

गदा घाव गजराज सँभान्यो ❋ झारि शीश आगे पग धान्यो ॥
तब भगदत्त क्रोध जिय कीन्ह्यो ❋ हांकि शेल उर मध्य सो दीन्ह्यो ॥
शेल घाव ते मोह जनायो ❋ धका मारि गजराज गिरायो ॥
गिन्यो भीम धरणी महँ कैसे ❋ भूधर परतः भूमितल जैसे ॥
द्रुपद नरेश देखि कर धायो ❋ उतरा काशिराज सँग आयो ॥
जुन्या शिखराडी अति रण धीरा ❋ चारिउ बीर महाबल बीरा ॥
सहस सहस शर सबन चलायो ❋ शीश गयन्द बाण ते छायो ॥
गज पर शर बर्षंत तब कैसे ❋ गिरि पर बृष्टि नीर घन जैसे ॥

दोहा—नृपभगदत्त क्रोध ह्वै, लीन्हेउ शर कोदण्ड।
चारिउभट मोहित किये, भारत रण बरबण्ड ॥

चारिउ बीर बिमोहित कीन्ह्यो ❋ पेलि गयन्द कटक पर दीन्ह्यो ॥
संमुख आइ शूर शर जोरहिं ❋ झपटि गयन्द सबन शिरतोरहिं॥
ठोकर अपर पखोरते मारहिं ❋ काहुहि छेदि दराड ते डारहिं ॥
बिडरी अनी ब्यूह सब फूटे ❋ बिपुल सङ्ग निज सङ्गते छूटे ॥
भयो शोर दल बैरख डोल्यो ❋ क्रुद्धित धर्मराज तब बोल्यो ॥
अहो मद्द भागत केहि कामहिं ❋ संमुख युद्ध करहु रणधामहिं ॥
प्राण गये उत्तम गति पैहहु ❋ चढ़ि बिमान सुरलोक सिधैहहु ॥
क्षत्री बंश जन्म जो पावै ❋ सो सुपुत्र रण प्राण गँवावै ॥
धर्मराज यहि बिधि ते कह्यऊ ❋ फिरिकै अस्त्र सबन कर गह्यऊ ॥
शर अरु शक्ति शेल ते मारहिं ❋ तोमर फरसा कोऊ प्रहारहिं ॥
शायक क्रोधवन्त ह्वै धाये ❋ तूणिन माहँ खांड़ अजमाये ॥

दोहा—साहस करि क्षत्री सकल, करहिं सुअस्त्र प्रहार।
महा भयंकर देवगज, होत घाव नाहिं बार ॥

तब भगदत्त निकर शर डान्यो ❋ क्षत्री बिपुल समरमहि मान्यो ॥
रथ अनेक गज गहि फटकारै ❋ ऊपर शर भगदत्त जो मारै ॥
ब्याकुल सैन्य त्रसित होइ भागे ❋ दबे ते सकल परे यम आगे ॥

शत नरेश तेहि ठहर जूझे ❀ चले न लाज पंक आरूझे ॥
गजरथ अरु असवार सहस्रन ❀ धर्मराज हित मृत्यु भये रन ॥
कायर सकल जीव ले भाजे ❀ तब भगदत्त समरमहि गाजे ॥
सिंहनाद करि हाँक सुनायो ❀ है कोउ सुभट जो संमुख आयो ॥
पाण्डु बंश सब मारि गिरावों ❀ एक छत्र कुरुनाथ करावों ॥
तब अपनो पुरुषारथ लेखो ❀ अर्जुन कृष्ण नयन जब देखो ॥
धर्मराज के संमुख आयो ❀ अर्जुन को माधव समुझायो ॥

दोहा—अर्जुन अब देखत कहा, धर्मराज पर भीर ।
चलहु जाइ उतरण करिय, रथ हाँको यदुबीर ॥

सकल सैन्य धीरज मन धरेऊ ❀ जबहीं दृष्टि कपिध्वज परेऊ ॥
करि टङ्कोर धनुष कर लीन्ह्यो ❀ अर्जुन आइ हाँक रण दीन्ह्यो ॥
गज के जोर सैन्य सब मारे ❀ परेहु आय अब घात हमारे ॥
अब छांड़हु जीवनकी आशहि ❀ गज समेत जैहो यमपासहि ॥
तब भगदत्त क्रोध करि कह्यो ❀ अर्जुन मैं खोजत तहिं रह्यो ॥
भली भई विधि कीन्ही भेटहि ❀ जै हो आजु काल के पेटहि ॥
सुनि अर्जुन धनु शायक लायो ❀ क्रोधित ह्वै अतिबाण चलायो ॥
कुण्डकेश असि बिशिख चलाये ❀ गज समेत भगदत्तहि छाये ॥
तब भगदत्त बाण सब काटे ❀ क्रुद्धित ह्वै सब शायक पाटे ॥
षष्टि बाण मारेउ अर्जुन तन ❀ असी नराचहन्यो श्यामहिघन ॥
सहस बाण मार्‍यो हनुमानहिं ❀ पंचबाण ते ध्वजा निशानहिं ॥
अष्ट बिशिख अश्वन उर लागे ❀ थकित भयो रथ चलत न आगे ॥
तब शर बिंशति बिजयन मार्‍यो ❀ नृप को चाप खण्डिके डार्‍यो ॥
पुनि पारथ कीन्ह्यो संधानहिं ❀ शक्ति बीच मार्‍यो दश बानहिं ॥
निष्फल भयो शक्ति जब जान्यो ❀ लेकर चाप बिशिख संधान्यो ॥
क्रुद्धित नृप मार्‍यो तीक्षण शर ❀ घायल भये आपु धरणीधर ॥
गजहि पेलि अर्जुन पर आयो ❀ ऊपर ते बहु शर झरि लायो ॥
गज समेटि कै फेंक्यो स्यन्दन ❀ अर्जुन कहीं कहीं जगबन्दन ॥

तीक्षण बाण घाव उर दीन्ह्यो ❀ अर्जुनकृष्ण विमोहित कीन्ह्यो ॥
गिरत आपु भाष्यो गिरिधारी ❀ हनूमान रथ रक्षाकारी ॥

दोहा—हम पारथ अरु रथ सहित, तुम रक्षक हनुमान।
यह कहिकै मोहित भये, भक्त हेतु भगवान ॥

अर्जुन कृष्ण मोह जब पायो ❀ तब भगदत्त क्रोधकरि धायो ॥
गज के पांयन ते रथ तोरों ❀ ठोकर ते अर्जुन शिर फोरों ॥
हनूमान हँसि बचन सुनायो ❀ नृप यह मन्त्र अकारथलायो ॥
मोकहँ रथ सौंप्यो रघुनायक ❀ ऐरावत नहिं तूरन लायक ॥
यम अरु इन्द्र बरुण जो आवहिं ❀ तेऊ नहिं रथ देखन पावहिं ॥
बेष्टि लँगूर सब रथ दीन्ह्यो ❀ धायो मत्तहस्ति रिस कीन्ह्यो ॥
क्रुद्धित ह्वै नृप धनुष सँभार्‍यो ❀ लक्षबाण हनुमानहिं मार्‍यो ॥
प्रबल तेज सानित शर छूट्यो ❀ बज्र शरीर लागि सब टूट्यो ॥
दोउ दंत गहि पेलेउ बलकै ❀ कछुकढील दीन्ह्यों कपिछलकै ॥
द्वौ सघनीच दंत जब धर्‍यो ❀ तब हनुमान लँगूरहि कर्‍यो ॥
पेंच लँगूर दशन दोउ टूटे ❀ तब गज महाकष्ट ते छूटे ॥
उखरे दशन चकित सब काऊ ❀ शोणित बहै रदनकर दोऊ ॥

दोहा—हरि जागे अर्जुन उठे, हाथ धनुष लै बान।
पेंच लँगूर समेटिकै, रथ छाँड्यो हनुमान ॥

सुनु भगदत्त कह्यो यह पारथ ❀ तुम कीन्ह्यो अतिशय पुरुषारथ ॥
अब मेरो प्रण नृप सुनि लीजै ❀ एक बाण कुञ्जर बध कीजै ॥
दूजो शर सधान जो करऊं ❀ नहिं कोदण्ड बहुरि कर धरऊं ॥
जो यह बाण गजहि सम्भार्‍यो ❀ क्षत्री धर्म आजु ते हार्‍यो ॥
तब भगदत्त कह्यो यह कारन ❀ मैं यह प्रण कीन्ह्यो अपने मन ॥
जो यह शर गजराज गिरावै ❀ मेरो अयश सकल जग गावै ॥
कृष्ण कहो अर्जुन सुनि लीजै ❀ अब अपनो प्रण रक्षा कीजै ॥
पारथ ब्रह्मबाण संधान्यो ❀ श्रवण प्रयंत शरासन तान्यो ॥

कुंभस्थल तकि मारत भयऊ ❀ भेदिशोश शर निकसि सो गयऊ ॥
छूट्यउ प्राण गिरन गज चह्यो ❀ तब भगदत्त जङ्घ सों गह्यो ॥
राख्यो साधि झुकन नहिं पायो ❀ बाण वृष्टि अर्जुन पर लायो ॥
गजहि देखि जिय शोच बिचार्यो ❀ पारथ धनुष हाथ ते डार्यो ॥

दोहा—कहेउ कृष्ण पारथ सुनहु, प्राण तज्यो गजराज।
राख्यो है भगदत्त गहि, अस्त्रतजो केहिकाज ॥

सुनत बिजय नरधनुशर लीन्ह्यो ❀ क्रुद्धित ह्वै संधान सो कीन्ह्यो ॥
अर्द्धचन्द्र शर अर्जुन छराड्यो ❀ नृपका शीश कंध ते खराड्यो ॥
मृतक गयंद सहित नृप परेऊ ❀ झलकत मुकुट जरायनजरेऊ ॥
अर्जुन रण कीन्ह्यो यह करणी ❀ योजन तीनिपर्यो गज धरणी ॥
हर्षित भये देखि जगतारण ❀ धरि यह देह भक्त के कारण ॥
पाराडव सेन देखि सुख पायो ❀ फिरिकै सकल समर महि आयो ॥
हर्षित बचन युधिष्ठिर भाख्यो ❀ अर्जुन रण अपनो प्रण राख्यो ॥
रुराडमुराड बसुधा अब छायो ❀ रण में रुधिरनदी बहिआयो ॥
भूत पिशाच योगिनी गावहि ❀ बिकटरूप भैरवगण धावहिं ॥
श्रीहरि कहो चलो अब पारथ ❀ भीषमसों कीजे पुरुषारथ ॥
कृष्ण देव रथ हांकि चलायो ❀ तब भीषम जय शंख बजायो ॥

दोहा—दशसहस्र रथ मारिकै, चले आपने धाम ।
सबलसिंह चौहानकहि, भारत के संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्व भाषाकृतेषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

पांचो बन्धु कृष्ण संग लीन्ह्यो ❀ सेन समेत गमन गृह कीन्ह्यो ॥
तब कुरुराज भवन निज आयो ❀ सकल सेन बिश्राम करायो ॥
आप गमन अन्तःपुर कीन्ह्यो ❀ भानुमती आदर करि लीन्ह्यो ॥
चमर छत्र सब लिये सहेली ❀ मणिमय भूषण रूप गहेली ॥
नृपहि सिंहासन लै बैठार्यो ❀ रानी तब आरती उतार्यो ॥
उत्तम नीर सुगन्ध सँवार्यो ❀ सखिन आय तब चरण पखार्यो ॥

तेल सुगन्ध राज तन लायो ❋ कनककलश अस्नान करायो ॥
भूषण बसन अङ्ग पहिरायो ❋ अमृत भोजन सरिस ज्यँवायो ॥
कञ्चन मणिमय भवन सँवारी ❋ हीरा रत्न करत उजियारो ॥
ताबिच गजमणि झालरि जोरे ❋ देखत धनद कहहिं हम थोरे ॥
बहुत भाँतिके सेज सँवारी ❋ पय फेना सम आनँदकारी ॥
शयन करन भूपति पगुधार्‍यो ❋ नृत्यनि मङ्गल गान उचार्‍यो ॥
आगिलि कथा कहन मन लायो ❋ यदुपतिसहित सकल गृहआयो ॥

दोहा—अशन करन बैठे सकल द्रुपदसुता के जाय ।
धर्मराज पूछत भय, बचन सुनहु यदुराय ॥

हनूमान रथ आपु सँभार्‍यो ❋ तब पारथ भगदत्तहि मार्‍यो ॥
दश सहस्र रथ भीषम मारै ❋ नितक्रमसों नहिं एक उबारै ॥
भीषम रहत कुशल नहिं देख्यो ❋ बन्धुबिरोध कठिन करि लेख्यो ॥
द्रुपदसुता कह सुनहु नरेशो ❋ केहिकारण जियकरहु अँदेशो ॥
जो हरिचरण कमल मन लावै ❋ सो जगमें क्लेश नहिं पावै ॥
सदा भक्त की रक्षा कारण ❋ दीनबन्धु कीन्ह्यो तन धारण ॥
जब प्रहलाद खम्भ में कह्यो ❋ नरहरिरूप तहाँ प्रभु गह्यो ॥
असुर फारि यमलोय पठायो ❋ भक्त शीश पर छत्र धरायो ॥
ते प्रभु सदा रहत तुम सङ्गहि ❋ कारण कौन करहु मन भङ्गहि ॥
करि भोजन शयनहि मनलायो ❋ प्रात होत रण साज बनायो ॥

दोहा—दल चतुरङ्ग सुसङ्ग लै, सब नृप तेज निधान ।
भीमसेन आगे भयो, किये हृदय अभिमान ॥

कौरव साजि समरमहि आये ❋ हूह मारि दोऊ दल धाये ॥
शर अनेक बर्षन रण लागे ❋ धावहि बीर क्रोध ते पागे ॥
शायक घाव करत अति चांड़े ❋ उछरहिं गिरहिं तर्कियत खांड़े ॥
असवारहि असवार प्रहारहिं ❋ पकरहि सुभट शीशअसिझारहिं ॥
रथी रथी सों कीन्ह्यो जोरहि ❋ दन्ती सो दन्ती रणघोरहि ॥

सन्मुख जुरे समर अति पण्डित ❋ दोउ दल मारु मारु धुनिमण्डित ॥
सन्मुख आइ जुरे रणधीरा ❋ घाल्यो घाव महाबल भीरा ॥
क्षत्री अतिपौरुष निजकरिकर ❋ कीन्ह्यो भारत प्रलय भयंकर ॥
बासुदेव स्यन्दनहि चलायो ❋ गङ्गातनय के सन्मुख आयो ॥
दोऊ सुभट मिले अतियुद्धहि ❋ शर छाँड़नलाग्यो अतिक्रुद्धहि ॥
कर कोदण्ड वृकोदर लीन्ह्यो ❋ बाणबृष्टि अरि ऊपर कीन्ह्यो ॥
यहि प्रकार बहु बिशिख पँवारे ❋ सहसन बीर समरमहि पारे ॥
कुरुपति कह्यो सुशर्मा धावहु ❋ पांडव सेनहिं मारि गिरावहु ॥

दोहा—दशसहस्र रथ संग लै, कीन्ह्यो तुरत पयान ।
सिंहनादकियसमरमहि, साधेउ शारँग बान ॥

क्रोधवन्त ह्वै लगे प्रहारण ❋ पाण्डव दल कृत बहु संहारण ॥
गिरा गँभीर सो भीम सुनायो ❋ स्यन्दनत्यागि गदा गहिधायो ॥
तबहिं सुशर्मा शर धनु लीन्ह्यो ❋ भीमअङ्ग शत शर क्षत कीन्ह्यो ॥
दश सहस्र स्यन्दन रथ आयो ❋ दश दश शर तिन सबन चलायो ॥
लक्ष बिशिख बेधे जब तनमें ❋ तबहिं वृकोदर क्रुद्धेउ मनमें ॥
गदाघाव यहि बिधिते मार्‍यो ❋ दुइसै रथ चूरण करिडार्‍यो ॥
सहित रथी सारथी न देखत ❋ मांस मृत्तिका समुझे लेखत ॥
अरु बहुस्यन्दन पदनते तोर्‍यो ❋ करत लहति बहुमौलि सोफोर्‍यो ॥
गहि बहु भीम चलायो स्यन्दन ❋ यहि प्रकार किय सेननिकन्दन ॥
भीमसेन बहु कटक सँहार्‍यो ❋ नृपति सुशर्मा आपु सँभार्‍यो ॥

दोहा—क्रोधित भये नरेश अति, कीन्ह्यो शरसंधान ।
हृदय बृकोदर के हन्यो, एकबार दशबान ॥

घायल भयो सह्यो सब बानहिं ❋ क्रुधित गदागहि कियोपयानहिं ॥
करिकै नाद सुगदा प्रहार्‍यो ❋ कूदि सुशर्मा आपु सँभार्‍यो ॥
भाज्यो तुरत तज्यो रणरङ्गहि ❋ सारथि सहित कियो रथभङ्गहि ॥
कह्यो भीम भागत केहि कामहि ❋ सन्मुख जुरो करो संग्रामहिं ॥

भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❀ सिंहनाद करि हाँक सुनायो ॥
भीमसेन अस्थिर होइ रहिये ❀ मारतहीं तोक्षण शर सहिये ॥
तब सारथि लै रथ पहुँचायो ❀ भीमसेन चढ़ि शोभा पायो ॥
भूरिश्रवा बाण दश डार्यो ❀ ते शर भीम सो काटि निवार्यो ॥
दोउ बीर सन्धान्यो धनुकर ❀ क्रुद्धित लगे चलावन बहुशर ॥
धृष्ट द्युम्न द्रोण गुरु सङ्गहि ❀ दोउ भट मार्यो महारणरङ्गहि ॥
शल्य नरेश सात्यकी योधहि ❀ कृतवर्मा बिराट रण क्रोधहि ॥

दोहा—द्रोणी अरु अभिमन्युरण, कठिन बजायो मार।
बाण बुन्द वर्षत सघन, जिमिश्रवणजलधार ॥

नृप जयद्रथरु नकुल कृत मारहि ❀ कठिन अस्त्र दोउ सुभट सँभारहिं॥
घट उत्कच क्रुद्धित ह्वै धायो ❀ सप्तताल बहु बृक्ष चलायो ॥
लै पषाण शिर ऊपर डारहि ❀ यहि बिधि बहुत कटक संहारहि ॥
सकल पदाति पकरिकै खायो ❀ गजहि समेटि पेट पहुँचायो ॥
कुरुपति कह्यो अलम्बू धावहु ❀ दैत्य दैत्य तुम युद्ध मचावहु ॥
सप्त कोटि राक्षस लै सङ्गहि ❀ धायो धनु कर धरि रण रङ्गहि ॥
दनुज राज शत बिशिख चलायो ❀ शर सों भीमपुत्र रथ छायो ॥
मुद्गर लयो तज्यो तब स्यन्दन ❀ धायो उतरि हिडम्बी नन्दन ॥
लयो गदा कर दानव राजहि ❀ सन्मुख जुर्यो युद्ध के काजहि ॥
मुद्गर गदा सु दोऊ प्रहारहि ❀ एकहि यक क्रुद्धित ह्वै मारहि ॥

दोहा—नृपति अलम्बू भीमसुत, भयो सुघोर बिरुद्ध ।
बिकट भयंकर रूप धरि, कियो युद्ध अतिक्रुद्ध ॥

गदा घाव जब तनमों लागत ❀ शब्द अघात महारण छाजत ॥
अस्त्र डारि दोऊ लपटाने ❀ अटके मल्लयुद्ध अरुझाने ॥
दन्त दन्त नख नखन प्रहारहि ❀ गहे केश मुष्टिक सों मारहि ॥
मेघ घटा सम अङ्ग सोहाये ❀ क्रुद्धित दशन बिज्जु चमकाये ॥
अरुण नयन सोहत हैं कैसे ❀ प्रातहि उदय दिवाकर जैसे ॥

रथके खम्भ शीश पर मारहिं ❀ पकरि शुण्ड कुम्भस्थल फारहिं ॥
महायुद्ध अति अद्भुत करणी ❀ कियो महाभय भारत धरणी ॥
भीम तनय तब तेज सँभाऱ्यो ❀ दनुजराज गहि केश पछाऱ्यो ॥
तब दनुजेश धरणि पर गिऱ्यो ❀ महा अचल मानहुँ महि पऱ्यो ॥
तासु हृदय पुनि चरण प्रहारा ❀ मुख ते चलो रुधिर की धारा ॥

दोहा—प्रबलसिंह चौहान कहि, असुरन्ह कीन्हो खेत।
भैरव भूत पिशाच गण, नाचत योगिनि प्रेत ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्म पर्व भाषाकृते सप्तमो ऽध्यायः ॥ ७ ॥

तब भीषम शारँग कर लीन्हो ❀ बाण बृष्टि अर्जुन पर कीन्हो ॥
कृष्ण शरीर बिशिख दश बेध्यो ❀ हनूमान बिंशति तन शोध्यो ॥
पारथ के शर शोणित छूट्यो ❀ काटि सनाह भीष्म उर फूट्यो ॥
पांच बाण मन मोहन माऱ्यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टाऱ्यो ॥
भीषम कह्यो सुनहु जगनायक ❀ अर्जुन यहि पुरुषारथ लायक ॥
अब अपनो रथ रक्षा कीजे ❀ कमल नयन जोतो कर लीजे ॥
यह कहिके तीक्षण शर माऱ्यो ❀ रथको पैग तीनि शत टाऱ्यो ॥
नन्दि घोष रथ श्रीजगबन्दन ❀ पारथ सहित पवन के नन्दन ॥
लग्यो बाण रथ पीछे आयो ❀ साधु बचन यदुनाथ सुनायो ॥
जीवन सफल गङ्गसुत तेरो ❀ बाण घात रथ डोल्यो मेरो ॥

दोहा—श्रीहरि तुरँग सँभारिके, ले आयो तेहि ठौर।
तौ लागि भीषम बधि गये, दशसहस्र रथ और ॥

हर्षित ह्वै जय शंख बजायो ❀ तब सारथि रथ फेरि चलायो ॥
सकल सुभट निजधाम सिधाये ❀ किये जाय बिश्राम सुहाये ॥
धर्मराज सँग लिये सब भाई ❀ सहित गोविन्द भवन निजजाई ॥
अमृत भोजन सरस बनाये ❀ जेंवत भीम बहुत सचुपाये ॥
नृपति युधिष्ठिर यदुपति आगे ❀ कोमल बचन कहन कछु लागे ॥
भीषम सरिस रच्यो पुरुषारथ ❀ केहि बिधि युद्ध जीतिये भारथ ॥

धर्मराज तब भये दुखारे ❁ तब कुन्ती कछु बचन उचारे ॥
सब संसार कहत परतच्छक ❁ पाण्डु बंश के माधव रच्छक ॥
जब तुम सकल रहे यक भवनहिं ❁ खेलनको बालक सब गवनहिं ॥
भीम और दुर्योधन सङ्गहि ❁ सदा बिषाद करत मन भङ्गहि ॥
बुद्धिचक्षु तब हमहिं बुलायो ❁ मधुर बचन कहिकै समझायो ॥

दोहा—दुर्योधन अरु भीमसों, बनत नहीं यक ठौर ।
तातें बसिये अनत ह्वै, रचि देहौं गृह और ॥

दुर्योधन अरु करण बुलायो ❁ शकुनी सहित मन्त्र ठहरायो ॥
थवइ बोलाय दयो धनदानहिं ❁ लाखभवन करिये निर्मानहिं ॥
नगर बारुणा महल उठायो ❁ लाख साज मन्दिर सब लायो ॥
लाख कोट सब ईट सँवार्‌यो ❁ दैकरि लच्छ सघन बैठार्‌यो ॥
बुद्धिचक्षु कह बिदुर सिधावहु ❁ अपने नयन देखि तुम आवहु ॥
नृप आज्ञा माथे करि लीन्ह्यो ❁ चढ़िबरबाजिगमन शुभ कीन्ह्यो ॥
आइ उतरि देख्यो सब धामहिं ❁ लाग्यो सकल लाहको कामहिं ॥
थवइन ते तब पूछन लागे ❁ यह बृत्तान्त कहहु मम आगे ॥
यह सुनि थवई कहत सुभयऊ ❁ दुर्योधन मोहि आयसु दयऊ ॥
लाख भवन कीजो निर्मानहिं ❁ गुप्तरूप पाण्डव नहिं जानहिं ॥
बिदुर बात मन में अनुमानत ❁ पापी दुर्योधन जग जानत ॥

दोहा—देख्यों सुन्यों न जगत में, लक्ष भवन निर्मान ।
दुर्योधन रचना रची, पाण्डव मुये निदान ॥

चुपकरि रहों पाण्डु सुत मरेऊ ❁ हत्या करन बीर नृप चहेऊ ॥
रत्न मुद्रिका करते लीन्ह्यो ❁ थवई बोलि हस्त करि दीन्ह्यो ॥
अब यक सुरँग करहु निर्मानहि ❁ जैसे दुर्योधन नहिं जानहिं ॥
सुनिकै बढ़ई द्वार बनायो ❁ ता ऊपर यक खम्भ लगायो ॥
बिदुर गयो धृतराष्ट्र के आगे ❁ उत्तम भवन कहन अस लागे ॥
द्विज बोलाय शुभ दिवस धरायो ❁ गृहप्रवेश हम सब मन लायो ॥

भीषम द्रोण साथ करि दीन्हे ❀ यज्ञ होम बहु बिधि ते कीन्हे ॥
सन्ध्या जानि किये सब गवनहिं ❀ सुतन समेत रहे हम भवनहिं ॥
ब्याधा एक पारडु तेहि नामहिं ❀ सदा भ्रमै मृगया के कामहिं ॥
मृगन मारि कानन ते ल्यावै ❀ बिक्रयमांस सों सुतन जियावै ॥
एक दिवस आहेर सिधायो ❀ देखन एक जन्तु नहिं पायो ॥
शोच बढ़ो जिय भयो निराशहि ❀ बालकसबबिधि परे उपासहि ॥

दोहा—मृगी एक देखी तबहिं, गर्भ सों दिनन प्रमाण ।
हर्षित होइ ब्याधा चल्यो, साध्यो शारँग बाण ॥

पश्चिमदिशा जाल दै आयो ❀ उत्तरदिशिसो अनल लगायो ॥
पूरबदिशा श्वान दृढ़ कीन्ह्यो ❀ दक्षिण दिशा फोंकशर दीन्ह्यो ॥
चहुँ दिशि मृगी देखिकै आयो ❀ कौनिउ दिशि निर्बाह न पायो ॥
पश्चिम गये जाल में परिये ❀ उत्तर गये अग्नि में जरिये ॥
पूरब गमने श्वान पछारै ❀ दक्षिण गये बधिक मोहिं मारै ॥
प्रसव काल स्वइ निकटहि आयो ❀ उदरमध्य स्वइ ब्यथा जनायो ॥
करुणा करै मृगी यह भाखै ❀ दीनबन्धु बिनु को म्वहिं राखै ॥
तृण बन चरों करों जल पाना ❀ अपनो मांस बैर सब जाना ॥
अहो कृष्ण सन्तन सुख कारी ❀ दयासिन्धु मैं शरण तुम्हारी ॥
अब तुम दया करहु जगनायक ❀ यहि अवसर प्रभु होहु सहायक ॥

दोहा—घूमत है मन भँवर में, सुखकी नदी अथाह ।
चहूँ ओर संकट परयो, हरिके हाथ निबाह ॥

जब यहि भांति मृगी अकुलानी ❀ दीनबन्धु यह रचना ठानी ॥
बन में मेघ घुमरि करि आयो ❀ बरषि नीर तब अनल बुतायो ॥
पवन तेज सब जाल उड़ायो ❀ श्वानहि झपटि ब्याघ्र लैखायो ॥
तड़प्यो बज्र ब्याध शिर पर्यो ❀ चहूँ ओर प्रभु रक्षा कर्यो ॥
दीन दयाल राखि तेहि लीन्ह्यो ❀ सुखते मृगी प्रसव तब कीन्ह्यो ॥
बधिक जबै आयो नहिं भवनहिं ❀ सुतसमेत नारी कियो गवनहिं ॥

द्विज भोजन तब सुनिकै धाये ❀ मोते तब याचन्ना लाये ॥
पञ्च पुत्र तब देख्यो नयनहिं ❀ शबरी ते तब पूछेहु बयनहिं ॥
कहा नाम तुम मोहिं सुनावहु ❀ क्यहिउद्यम तुम दिवसगँवावहु ॥
कुंती नाम मोहिं द्विज राख्यो ❀ स्वामीनाम पाराडु नितभाख्यो ॥
सुतको नाम युधिष्ठिर अहई ❀ दूजो भीमसेन यह कहई ॥
तीजो अर्जुन सरिस सोहायो ❀ नकुल और सहदेव कहायो ॥

दोहा—तब मैं हर्षित भई बहु, बैस सखी सुनु बात ।
पतिसुत एकै नाम है, हम तुम भयो सँघात ॥

उत्तम भोजन सरिस जेंवायो ❀ सुतन समेत सेज बैठायो ॥
शकुनीसुत उलका तेहि नामहि ❀ दुर्योधन ऐसे यहि कामहि ॥
मध्य द्वार में अनल लगायो ❀ दृढ़ करि बज्रकपाट दिवायो ॥
पसरी अग्नि लच्च मिहलाने ❀ बाढ्यो धूम सकल अकुलाने ॥
चुइकै लाख देइ मो परई ❀ उधिरै त्वचा बह्नि सब जरई ॥
कृष्ण कृष्ण हम सबन पुकारी ❀ दीनबन्धु हम शरण तुम्हारी ॥
कही भीम क्रुद्धित सहदेवहि ❀ तैं नीके जानत है भेवहि ॥
हँसि सहदेव कह्यो यह बानी ❀ भले ठौर पूछेहु सज्ञानी ॥
भीम कीजिये कहा हमारो ❀ बलते यह गहि खम्भ उखारो ॥
बिदुर सुरँग कीन्ह्यो निर्मानहिं ❀ धर्मशरीर नीति सब जानहिं ॥
भीमसेन गहि खम्भ उखारो ❀ देख्यो उत्तम पन्थ सँवारो ॥

दोहा—वहिमारगसबमिलिधसे, आतुर कीन्ह्यो गौन ।
गदा भूलि आये तहां, भीम गयो फिरि भौन ॥

लै कर गदा चलन जब ताक्यो ❀ धरिकै देह अग्नि तब हांक्यो ॥
सप्तजिह्व देखत भय पायो ❀ भीमसेन तब बिनय सुनायो ॥
आपु समान तीनिसौ दैहौं ❀ भाषत सत्य समय जब पैहौं ॥
द्वारावति महँ रह बनवारी ❀ सुखशय्या सँग रुक्मिणिप्यारी ॥
ताति समीर अङ्ग में लागी ❀ भीष्मकसुता नींद सों जागी ॥

अहो नाथ यह कारण कहिये ❀ शय्या अग्निआँचते दहिये ॥
हँसि प्रभु कह्यो मौन ह्वै रहिये ❀ गुप्तबात काहुहि नहिं कहिये ॥
लाखभवन कुरुनाथ सँवाऱ्यो ❀ पाण्डुतनय हम जरत उबाऱ्यो ॥
अनलआँच अपने तनु लीन्ह्यो ❀ उन सबको निबाह करदीन्ह्यो ॥
कृष्ण सहायक चितमें धरहू ❀ हे सुत शोच काज क्यहि करहू ॥

दोहा-जरतउबारयो वान्हि ते, सदा भक्त की लाज ।
सबलसिंह चौहानकह, शोचकरहुक्यहिकाज ।

करि भोजन शयनहिमनदीन्ह्यो ❀ प्रात होत रणउद्यम कीन्ह्यो ॥
पहिरि सनाह खड्ग कटिबांध्यो ❀ हर्षित बदन चल्यो शर सांध्यो ॥
दोऊ दल रण भूमिहि आये ❀ हांक मारि पायक गण धाये ॥
रहुरहुकहि कृपाण तब खोलहिं ❀ मारत हांक पदादि सुडोलहिं ॥
बजे निशान भयो आघाता ❀ कोउ नहिं सुन केहूकरि बाता ॥
पेलि गयन्द महाउत आये ❀ पर्वत मनहुँ भूपि पर धाये ॥
असवारहि असवार संभारहि ❀ सम्मुख जुरे खड्ग शिरझारहिं ॥
रथी रथी सों युद्ध लगायो ❀ क्रुद्धित ह्वै बहु बाण चलायो ॥
क्षत्री सकल करहिं संग्रामहिं ❀ जूझहिं स्वामिधर्म के कामहिं ॥
कुरुक्षेत्र में प्राण गँवावहिं ❀ चढ़ि बिमानसुरलोकसिधावहिं ॥
नन्दिघोष श्रीपति रथ चाल्यो ❀ डोली धरणि शेष शिरहाल्यो ॥

दोहा-भीषम सों अर्जुन जुरे, कीन्ह्यो धनु टंकोर ।
दोऊ दल चक्रित भये, जनुघुमरो घनघोर ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व भाषाकृतेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

भीषमसों अर्जुन यह भाख्यो ❀ चारिदिवस अपनो प्रण राख्यो ॥
दशसहस्र नित क्रम रथ माऱ्यो ❀ दै कर शंख भवन पग धाऱ्यो ॥
यहिविधि करौं धनुष कर धारण ❀ सकहु न आजु सेन संहारण ॥
भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ ❀ कीजै जो सो है पुरुषारथ ॥
साखी आपु अहैं यदुनन्दन ❀ दशसहस्र रथ करौं निकन्दन ॥
यह कहि धनुष हाथ दृढ़ ठान्यो ❀ पञ्च बिशिख शायक संधान्यो ॥

निशित बिशिख गङ्गासुतमार्‍यो ❀ अर्जुन ते शर काटि निवार्‍यो ॥
शायक बिंश बिजय नर जोर्‍यो ❀ शन्तनुसुत बीचहि शर तोर्‍यो ॥
दोउ बज्र अति बिशिख प्रहारहिं ❀ जिमि जलधर बरषतजलधारहिं ॥
बहुत युद्ध रण समता जान्यो ❀ पारथ अग्निबाण संधान्यो ॥

दोहा—प्रकटि अग्निबारन चली, झपटत लपट कराल।
गजरथ हयपदचर जरत, कौरव कटक बिहाल॥

भीषम बरुण बाण कर लीन्ह्यो ❀ ताते अग्नि निवारण कीन्ह्यो ॥
पाण्डव दल बूड़त सब जान्यो ❀ अर्जुन पवन बाण संधान्यो ॥
पवन तेज सब नीर सुखायो ❀ ध्वजा टूटि धरणी पर आयो ॥
भीषम तज्यो सर्प के बानहिं ❀ नागन मरुत कियो तब पानहिं ॥
धाय डसैं सब बिषधर कारे ❀ यहि बिधि बहुत सैन्य संहारे ॥
अर्जुन बरही बाण चलाये ❀ मोरन पकरि सर्प सब खाये ॥
भीषम अन्धकार शर छाजे ❀ देखत सकल पक्षिगण भाजे ॥
अन्धकार भो कछु न सूझै ❀ अपनो पर कोऊ नहिं बूझै ॥
हित अहे अहित देखि महि पावहि ❀ हाँक मारिकर आपु जनावहिं ॥
गजरथ हय पदाति सब धावहिं ❀ अभिरहिं गिरहि पन्थनहिंपावहिं ॥
पाण्डव सैन्य देखि नहि पायो ❀ तब पारथ रबि बाण चलायो ॥
भानु तेज कीन्ह्यो तम नाशहि ❀ पाण्डव दल पायो परकाशहि ॥

दोहा—मार्तण्ड मण्डल उयो, देखत अतिहि प्रचण्ड।
तब अर्जुन यहिबिधिदियो, भीषमबाहुकोदण्ड॥

गङ्गा सुत क्रुद्धित भयो मनमें ❀ शर मार्‍यो पारथ उर रनमें ॥
अष्ट बाण तब यहि बिधि जोरे ❀ घायल किय रथ चारिउ घोरे ॥
सप्त बिशिख मार्‍यो हनुमन्तहि ❀ सत्तरि शर बेध्यो भगवन्तहि ॥
बिंशति शर रथ ऊपर मार्‍यो ❀ चाके चारि धरणि मों डार्‍यो ॥
लै ताजन्ह प्रभु अश्वहि मार्‍यो ❀ महा कष्ट ते रथहि निकार्‍यो ॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय बाढ्यो ❀ तीक्ष्ण शर निषङ्ग ते काढ्यो ॥

भीषम के उर मध्य प्रहारा ❋ बहै प्रवाह रुधिर को धारा ॥
चारि बाण छूटे अति पायल ❋ ताते भये अश्व रथ घायल ॥
तीनि बाण सारथि पर लायो ❋ एक बाण ते ध्वजा गिरायो ॥
पारथ यह पुरुषारथ कीन्ह्यो ❋ भीषम कोपि हाँकि रथ दीन्ह्यो ॥

दोहा—अर्जुन रण अस्थिर रहो, रक्षा कीजै सैन ।
आपु सदृढ़ जोती गहो, पीतम पङ्कज नैन ॥

यह कहि तीक्षण बाण चलायो ❋ शर सों नन्दि घोष रथ छायो ॥
पाण्डु तनय अस बिशिख पँवार्‍यो ❋ आवत शायक काटि निवार्‍यो ॥
भीषम के शर मारि गिरायो ❋ तब अर्जुन शत बाण चलायो ॥
मारत शर शर सों शर खण्डित ❋ दोऊ जुरे सरस रणपण्डित ॥
भीषम पर्वत शर संधार्‍यो ❋ देखि देव सब शङ्का मान्यो ॥
चलैं पहार सकै को भाषन ❋ शतसे सहस सहस ते लाखन ॥
लक्ष पहार गगन में धायो ❋ भादों मेघ उमहि जनु आयो ॥
शब्द अघात होत हैं कैसे ❋ सागर मथत कुलाहल जैसे ॥
पाण्डव दल त्रासित होइ भागे ❋ हाहा शब्द पुकारन लागे ॥
नन्दिघोष राख्ये जगबन्दन ❋ भीमरु रहे सुभद्रानन्दन ॥
तीन महारथि रण महँ गाजैं ❋ सहित नरेश सकल भट भाजैं ॥
अन्धकार यहि बिधि ते छायो ❋ अर्जुन कृष्ण दृष्टि नहि आयो ॥

दोहा—सुरगण हा हा शब्द कृत, भयो घोर संग्राम ।
पारथ शर शारँग गहहु, कहे आपु सुखधाम ॥

साधि बाग राख्यो हरि घोड़े ❋ अर्जुन बज्रबाण गुण जोड़े ॥
गिरिते भयो बज्र तब दूनो ❋ फोरि पहार कियो तब चूनो ॥
ऐसे बज्र बाण तब छूट्यो ❋ लक्ष पहार क्षार सम फूट्यो ॥
बिबुध लोग देखत सुख पायो ❋ सेना सकल समरमहि आयो ॥
पुष्पमाल सुर कन्या डारहिं ❋ नन्दिघोषरथ सरस सँवारहिं ॥
जयजय शब्द गगनमहँ बोलत ❋ चढ़े बिमान अनन्दित डोलत ॥

भीषम निरखि क्रोध उर छायो ❋ पारथ सों कछु बचन सुनायो ॥
अब अपनो दल रक्षा करिये ❋ सावधान कोदण्डहि धरिये ॥
लघु संधान बिपुल शर त्याग्यो ❋ सहस सहस शर छूटन लाग्यो ॥
गङ्गा तनय तेज संभार्‌यो ❋ अर्जुन काटि भूमि महँ पार्‌यो ॥
भीषम चहहिं सैन्य संहारण ❋ पारथ प्रण रक्षा के कारण ॥
नयन पलक लागन नहिं पावहिं ❋ श्रमजल टूटि नयन पर आवहिं ॥
शर संधान घात नहिं पायो ❋ धनुष खींचि पोंछन मन लायो ॥
गङ्गासुत तब अवसर पायो ❋ बाणन बृष्टि महा झरिलायो ॥
दश हस्त कृत खण्डित स्यन्दन ❋ कियो शँखध्वनि शन्तनुनन्दन ॥
पारथ कह्यो सुनहु यदुराई ❋ भीषम किमि यह शंख बजाई ॥
बध्यो सैन्य माधव यह भाख्यो ❋ गङ्गासुत अपनो प्रण राख्यो ॥
गजरथ हय पदाति सब जूझे ❋ रुण्डमुण्ड कछु जात न बूझे ॥
अर्जुनलखि अचरज करि मान्यो ❋ महाबीर भीषम कहँ जान्यो ॥
संध्या जानि रथहि पलटायो ❋ कौरवदल सब भवनहिं आयो ॥

दोहा—नन्दिघोष रथ फेरकै, पारथ कीन्ह्यो गौन ।
सबलसिंह चौहान कह, सहित राधिकारौन ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेनवमो ऽध्यायः ॥ ९ ॥

सकल सैन्य बिश्राम सो कर्‌यो ❋ खान पान कर्महि अनुसर्‌यो ॥
दुर्योधन भीषम पहँ आये ❋ बैठि बचन यहि भांति सुनाये ॥
पांच दिवस कीन्है संग्रामहिं ❋ पाण्डव कुशलगये निजधामहिं ॥
तव बल नाथ जगत सब जानत ❋ देव दनुज गन्धर्ब बखानत ॥
क्षणमों पाण्डव सकहु सँहारण ❋ आप दया कीजै क्यहि कारण ॥
तब भीषम कह बचन सहो अति ❋ पूर्बकथा अब सुनहु महीपति ॥
नन्द भवन जब रहे मुरारी ❋ धेनु चरावत अतिहित कारी ॥
सुरपति यज्ञ गोप सब कीन्ह्यो ❋ सो हरि मेटि शैलकहँ दीन्ह्यो ॥
यह सुनि देवराज दुख पाये ❋ प्रलय काल के मेघ बोलाये ॥
उठी घटा बारिद घहराने ❋ देखत ब्रजबासी अकुलाने ॥

कृष्ण कृष्ण कहि सबन पुकारी ❀ अहो नाथ हम शरण तुम्हारी ॥
तब हरि गोबर्द्धन नहिं निहार्‍यो ❀ भुजबल पकरि पहार उपार्‍यो ॥
बायें कर पर राख्यो मंदर ❀ यहि बिधिनाश्यो गर्ब पुरंदर ॥

दोहा—सप्त दिवस झरिलाइकै, बर्षा घोर अपार ।
ग्राम गोप रक्षा कियो, करसों धर्‍यो पहार ॥

ते प्रभु हैं पारथ रथ सारथ ❀ कहो कहा कीजै पुरुषारथ ॥
बधों काल्हि पाण्डव परतक्षक ❀ जो नहिं होइँ कृष्ण रणरक्षक ॥
होत प्रभात दोउ दल सज्जित ❀ शब्द अघात दमाम सुबज्जित ॥
भांति भांति बैरख फहराने ❀ राजहंस जिमि गगन उड़ाने ॥
सिंहनाद करि हाँक सुनाये ❀ क्षत्री सकल क्रोध करि धाये ॥
महारथी सब बड़े धनुर्द्धर ❀ सन्मुख जुरे गहे कर धनुशर ॥
ऐसे बिशिख बृष्टि शर कियऊ ❀ शरके छांह भानु छिपिगयऊ ॥
कोउ भट शेल शूल परिहारहिं ❀ कोऊ खङ्ग शीशपर मारहिं ॥
गदा अपर मुद्गर कर लीन्ह्यो ❀ ताते मारु भयंकर कीन्ह्यो ॥
कोउ भूप गहि खञ्जन चोखे ❀ बाहत जहां रहत नहिं मोखे ॥
तब सहदेव खङ्ग निजकर धरि ❀ धर्मराजहित हतत सैन्यअरि ॥
छत्र समेत बीर सुतअन्धहि ❀ भृकुटी सहित काटगज कन्धहि ॥

दोहा—यहिबिधितै सहदेव रण, कीन्हेउ गीधमशान ।
धायो शकुनी नाद करि, साधे कर धनुबान ॥

लघु संधान बिशिख त्रय मार्‍यो ❀ ते सहदेव फेरि परतार्‍यो ॥
तब पारथ कीन्ह्यो असवारी ❀ लागे करन युद्ध अति भारी ॥
सप्त नराच निशित कर लीन्हेउ ❀ ते शर बिद्धि मौलिपर कीन्हेउ ॥
जयद्रथ नृपरु नकुल ते भारथ ❀ द्वौ भट करत महा पुरुषारथ ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो ❀ तिनसों धृष्टद्युम्न रण लायो ॥
द्विभट सरस लागे शर मारन ❀ जूझे सैन्य सहस्र अपारन ॥
द्रोण आप रथ हांकि चलायो ❀ श्याम ध्वजा रण शोभा पायो ॥

बर्षहिं बाण सकै को भाखन ❋ पाण्डव दल जूझै तब लाखन ॥
यहि बिधि कृतबहुसैन्यनिकन्दन ❋ आगे भये सुभद्रा नन्दन ॥
गुरु के चरण प्रणाम जनायो ❋ एक बार शत बाण चलायो ॥
सहस बिशिख औरौ कर लीन्हे ❋ ताते निकर सैन्य बध कीन्हे ॥

दोहा—अभिमनुरणयहिबिधिकियो,सेनाबध्योअनन्त।
मारेउ तीक्षण बाण ते, मतवारे मयमन्त ॥

द्रोणसुगुरु निज तेज सँभार्यो ❋ अभिमन्युउर बिंशतिशर मार्यो ॥
अर्जुन सुत कृत शरसंधानहि ❋ द्रोणललाट हन्यो दशबानहिं ॥
यहिबिधिकरत समर अतिकरणी ❋ अङ्ग भेदि शर फूटत धरणी ॥
महारथी सब अपने घातहि ❋ क्रोधित करनलगे शरपातहि ॥
भीषम पर अर्जुन शर जोड़े ❋ हांक देत हरि हाँकत घोड़े ॥
सुन्दर श्याम शरीर सुहावा ❋ पीत बसन तन शोभा पावा ॥
नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ ❋ भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ ॥
बासर पञ्च किये संग्रामहि ❋ सबमिलिकुशलगये तुम धामहिं ॥
होइहै आजु महाबल भारथ ❋ पारथ समुझि करौ पुरुषारथ ॥
कृष्ण देव रण को चित्त दीजै ❋ पाण्डुबंश की रक्षा कोजै ॥

दोहा—यह कहि भीषम क्रुद्ध ह्वै,छांड़्यो तीक्षणबान।
अर्जुन हरि घायल भये, सहितबाजिहनुमान ॥

चारि बिशिख यहि भाँति पँवार्यो ❋ नन्दिघोष हयघोष सुकार्यो ॥
कुद्धि बिजयनर धनुकरलीन्ह्यो ❋ बाणबृष्टि भीषम पर कीन्ह्यो ॥
असी बाण उर मध्य सुबेध्यो ❋ अष्टबिशिखअश्वनतन शोध्यो ॥
दश शर सारथि के उर दयऊ ❋ शायक पञ्च केतुध्वज हयऊ ॥
कोटि बिशिख सेना पर छोड़ेउ ❋ हयगज गिरे अमित रथ तोरेउ ॥
गङ्गा सुत शर बर्षत कोप्यो ❋ पाण्डव चमू शरन सों तोप्यो ॥
जूझे सुभट गिरे रण ओकहि ❋ चढ़े बिमान चले सुरलोकहि ॥
जयमाला सुरकन्या डारहिं ❋ उत्तम रूप सुबेष सँवारहिं ॥

यहि बिधि गिरे बीर सब जेते ❀ स्वर्ग भोग सुख पायो तेते ॥
भीषम कीन्ह्यो सेन निकन्दन ❀ क्रुद्धित भयो पाण्डु को नन्दन ॥

दोहा—अर्जुनकर कोदण्ड गह, रणमें यहि व्यवहार ।
कुरुसेना मारिमारि पर्यो, छर छांड़्योसंसार ॥

महायुद्ध करि सकै न बरणी ❀ लक्षण सुभट खसे हति धरणी ॥
उठहिं कबन्ध शीश बिनु धावहिं ❀ खड्ग पाणिगहि मारण आवहिं ॥
यहि बिधि कीन्ह्यो समर भयंकर ❀ मुण्डमाल बहु लीन्ह्यो शंकर ॥
भीषम कह्यो धनंजय सुनहू ❀ अब मेरो पुरुषारथ गुनहू ॥
यह कहि नारायण शर लीन्ह्यो ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्ह्यो ॥
बिद्युत इवशर कियो प्रकाशहि ❀ कोटिनरविजिमिउयो अकाशहि ॥
देव लोक सब देखि डरान्यो ❀ पाण्डव दल देखत भय मान्यो ॥
बाण उदोत भयो अति कहिबिधि ❀ प्रलयकाल बड़वानलजेहिबिधि ॥
कुपित गङ्गसुत बिशिखचलायो ❀ डाटिहांक यहि भाँति सुनायो ॥
पाण्डव बंश न एक उबारों ❀ सेना सहित सबै भट मारों ॥
छूटत बाण शब्द भयो भारी ❀ पारथ सों भाष्यो बनवारी ॥

दोहा—सब मिलिकैअस्त्रहितजौ, तब पावहुजियदान ।
तीनि लोक नाशिय सकै, यह नारायण बान ॥

अर्जुन तुमहिं हमारी आनहिं ❀ त्यागकीजिये अब धनु बानहिं ॥
यहि बिधिते माधव जब टेर्यो ❀ अर्जुन धनुष डारि मुख फेर्यो ॥
श्रीहरि आपु कहन अस लागे ❀ पाण्डवदल सब सुनहु सभागे ॥
डारहु अस्त्र गहरु जनि लावहु ❀ बदन फेरि मुख पृष्ठि देखावहु ॥
आपु कृष्ण यहि भाँति पुकार्यो ❀ सहित नरेश अस्त्र सब डार्यो ॥
बिन अस्त्रन क्षत्री नहिं मारहिं ❀ बिमुख भये शर नहिं संहारहिं ॥
रणमें सबहि देखि शर आयो ❀ अस्त्र हाथ काहुहि नहिं पायो ॥
भीमअस्त्र त्यागन नहिं कीन्हे ❀ सन्मुख रह्यो गदाकर लीन्हे ॥
श्रीपति कह्यो भीम के आगे ❀ यह हठ तजो हमारे मांगे ॥

कह्यो भीम सुनिये जगतारण ❋ कादर बचन कहिय क्यहि कारण ॥
भारत में इतनो यश लेहौं ❋ प्राण देउँ पै पीठि न देहौं ॥
अस्त्र गहे भीमहि तकि पायो ❋ प्रबल बाण संहारण आयो ॥
बाण तेज महिमण्डल छायो ❋ नन्दिघोष हरि तजिकै धायो ॥

दोहा—पूछिनदीन्हेउपाण्डुसुत, जान्यो निपटनिदान।
भीमहि राख्यो पेटतर, शरलीन्हो भगवान ॥

अपनो तेज आपु प्रभु लीन्ह्यो ❋ यहि बिधिबाण निवारण कीन्ह्यो ॥
ज्यहिबिधि धेनु बत्स पर धावै ❋ प्रीति पाइकै जठर लगावै ॥
त्यहिबिधिते भीमहि प्रभुराख्यो ❋ जयजयशब्द बिबुधगण भाख्यो ॥
पाण्डवदल देखत सुख मान्यो ❋ तब भीषम यहि भाँति बखान्यो ॥
साधु साधु श्रीपति गिरधारी ❋ पाण्डु बंश के रक्षाकारी ॥
कुन्ती सुदिन बालकन जायो ❋ हरि से हितू जगत में पायो ॥
भीषम बचन सुनत सुख पाये ❋ तब हरि नन्दिघोष पर आये ॥
धनुष बाण अर्जुन कर लीन्हे ❋ बाण बृष्टि हरि ऊपर कीन्हे ॥
पञ्च बिशिख भीषम कर लीन्हे ❋ ने शर चोट शीश पर दीन्हे ॥
करगहि पारथ शरहि निकारै ❋ दश सहस्र रथ भीषम मारै ॥

दोहा—शंख शब्द करिकै चले, सबै आपने धाम ।
सबलसिंह चौहान कह, उभय सेन बिश्राम ॥

इति श्रीमहाभारते भीषम पर्व भाषाकृते दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

धर्मराज कछु कहन सुलागे ❋ मधुर बचन मोहन के आगे ॥
भीषम कीन्ह्यो सेन सँहारण ❋ केहिबिधियुद्ध करिय जगतारण ॥
नारायण शर भीषम मार्‍यो ❋ मरत भीम प्रभु आप उबार्‍यो ॥
बरु बन जाय तपस्या करिये ❋ भीषम के सन्मुख नहिं लरिये ॥
अर्जुन कह्यो नृपति सुनि लीजै ❋ नितहिं शोच क्यहिकारण कीजै ॥
सब दिन प्रभु मेरो प्रण राख्यो ❋ कथा पुरातन पारथ भाख्यो ॥
पारि जात सति भामहि दीन्ह्यो ❋ रुक्मिणि सुनत गहरु मन कीन्ह्यो ॥

वाते सरिस पुष्प जब पावौं ❀ तब निज नाथहि बदन देखावौं ॥
कह्यो कृष्ण अर्जुन सुनिलीजै ❀ आपु गमन कदली बन कीजै ॥
पुष्प सुगन्ध राज लै आवहु ❀ धावहु तुरत गहरु जनि लावहु ॥

दोहा—कसि निषङ्ग कोदण्डगहि, कीन्ह्योतुरतपयान ।
कदली बन पहुँचे तबै, उदित होतहो भान ॥

पुष्प सुगन्ध देखि जब पायो ❀ तब पारथ तोड़न मन लायो ॥
बानर चारि रहे तहँ रक्षक ❀ धाय कह्यो हनुमत परतक्षक ॥
मनुज एक लीन्हे धनु बानहिं ❀ तोरत पुष्प मनो नहिं मानहिं ॥
यह सुनि हनूमान चलि आयो ❀ क्रुद्धित तासों बचन सुनायो ॥
अरे किरात चोर अपकारी ❀ यम पुर की इच्छा तैं धारी ॥
नित क्रम हम पूजा मनलावहिं ❀ श्रीरघुबीर के शीश चढ़ावहिं ॥
अर्जुन सुनत क्रोध जिय कीन्ह्यो ❀ यहि बिधि ते प्रति उत्तर दीन्ह्यो ॥
तरु शाखा शाखा पर डोलत ❀ मर्कट झूठ समुझि नहिं बोलत ॥
जे रघुनाथ इष्ट करि मानत ❀ तिनका मैं नोका करि जानत ॥
किये रहे शारँग कर धारण ❀ कपि पषाण ढोये क्यहि कारण ॥

दोहा—शरते शारँग बाँधिके, जाइ सके नहिं पार ।
करत बड़ाई रामकी, कहिये कौन बिचार ॥

हनूमान यहि भाँति बखानत ❀ अधम किरात रामनहिं जानत ॥
जिन मारेउ रावण दशकन्धर ❀ कुम्भकरण जिन बध्यो धनुर्द्धर ॥
बालि मारि सुग्रीव नेवाजा ❀ लङ्का कियो बिभीषण राजा ॥
बांधेउ उदधि न बांधन ऐसे ❀ दलको भार सही शर कैसे ॥
अर्जुन कह निज तेज सँभारौं ❀ सब संसारहि पार उतारौं ॥
बांध बांधिके मोहिं देखावहु ❀ तोपै प्राणदान तुम पावहु ॥
पवन तनय इमि बचन सुनाये ❀ दोऊ बीर सिन्धु तट आये ॥
जैसे मधुमाखी गण छाये ❀ यहि बिधि पारथ बाण चलाये ॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर छांड्यो ❀ शत योजन बाणनते पाट्यो ॥

हनूमान मन बिस्मय मान्यो ❋ नहिं किरात अपने उर आन्यो ॥
है कोई यह बीर महाबल ❋ कपटरूप कीन्ह्यो मोते छल ॥

दोहा—मोरे मारते शर चलैं, तो त्वाहिं बधौं निदान ।
भार रहै दृढ़ सिन्धु में, करि निज सखा प्रमान ॥

अर्जुन कहा बाँध जो टूटै ❋ तौ मेरी परतिज्ञा छूटै ॥
छणक रहो यहि भांति जनायो ❋ हनूमान उत्तर दिशि धायो ॥
रोम रोम में शैल सुबांधे ❋ कछुक अग्र कछु लीन्हो कांधे ॥
यहि बिधि रूप भयंकर कीन्ह्यो ❋ धरणि अकाश परत नहिं चीन्ह्यो ॥
रबि छपिगयो भई अँधियारी ❋ योजन सहस्र देह बिस्तारी ॥
अर्जुन अन्धकार जब देख्यो ❋ अपने जिय अचरज करि लेख्यो ॥
धुंधि मिट्यो तन देखन पायो ❋ रबि मण्डल में शीश लगायो ॥
रूप भयंकर देखि डेरान्यो ❋ सूखे प्राण बिकल अकुलान्यो ॥
कान कुबुद्धि मोहि बिधि दीन्ह्यो ❋ हनूमान ते सरबरि कीन्ह्यो ॥
परम भक्त जग में बल भारी ❋ जाके प्रभु रघुपति धनुधारी ॥
जिमि पिपीलिकहि पर ह्वै आवै ❋ परे दीप महँ प्राणगँवावै ॥

दोहा—पारथ अब आतुर भयो, देखि भयानक कीश ।
सुमिरणकीन्हेउ ज्ञानकरि, तुमराखहु जगदीश ॥

दीनबन्धु सन्तन सुखदायक ❋ यहि अवसर प्रभु होहु सहायक ॥
श्रीहरि तब अपने मन जान्यो ❋ परम भक्त दोऊ अरुझान्यो ॥
हनूभार बसुधा नहिं सहई ❋ शरको बाँध कहो किमि रहई ॥
जो हनुमान जीतिकरि पावहिं ❋ पारथ को यमलोक पठावहिं ॥
कृपासिन्धु यह रच्यो उपाई ❋ जाते रहै दोऊ सरसाई ॥
कमठ रूप जल भीतर कीन्ह्यो ❋ शरके हेठ पृष्ठ प्रभु दीन्ह्यो ॥
अरे शबर सुनु बचन हमारो ❋ धरत चरण अब बाँध सँभारो ॥
अर्जुन तब सहसा करि भाख्यो ❋ जाहु निशङ्क बाँध मैं राख्यो ॥
सुनि हनुमत अतिक्रुद्धित भयऊ ❋ आय पाँव शर ऊपर दयऊ ॥

दबी पृष्ठ हरि कपि के भारहि ❋ मुखते चली रुधिर की धारहि ॥

दोहा—अरुणबर्ण सागर निरखि, कीन्हो हनू बिचार ।
ऐसो को संसार मों, सहै मोर जो भार ॥

ज्ञान दृष्टि धरि ध्यान लगायो ❋ शर के तरे देखि प्रभु पायो ॥
कूदि हनू तट कियो पयानो ❋ त्राहि त्राहि यह भेद न जानो ॥
मैं पशु मूढ़ अकर्महि कीन्ह्यो ❋ हरिके शीश चरण निजदीन्ह्यो ॥
कामरूप छाँड्यो बनवारी ❋ आपु भये तब शारँगधारी ॥
हनुमत सोँ प्रभु कहन सो लागे ❋ दोऊ भक्त तुम परम सभागे ॥
प्रीति बिचारहु छाँड़हु रोषहि ❋ क्षमा करहु पारथ के दोषहि ॥
यहिबिधि हरि मिलाप करिदीन्ह्यो ❋ आपु गमन द्वारावति कीन्ह्यो ॥
हम लै आयो सुमन घनेरो ❋ सब दिन प्रभु राख्यो प्रण मेरो ॥
अर्जुन कह्यो युधिष्ठिर राजहिं ❋ आपु शोच कीजैकेहि काजहिं ॥
दृढ़ ह्वै कै रण को मन लैये ❋ मारि शत्रु यमलोक पठैये ॥

दोहा—मनबचक्रमजो हरि भजैं, तजैं और की आश ।
सबलसिंह चौहान कह, नाहिंन भक्तबिनाश ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषाकृतेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

प्रात होत कीन्ह्यों असवारी ❋ साजे सैन्य महाबल भारी ॥
दोउ कटक बहु बाजन बाजत ❋ गहे अस्त्र क्षत्री गलगाजत ॥
सिंहनाद करि हाँक सुनाये ❋ मारु मारु करि सन्मुख आये ॥
चतुरङ्गिणि सेना रण जूट्यो ❋ क्रुद्धितअमितबिशिखसब छूट्यो ॥
शेलत्रिशूल अरुशक्तिन मारहिं ❋ मुद्गर गदा शीश पर डारहिं ॥
कोउ तहँ भये कटारिन मारहिं ❋ गिरत अन्त महिगिरे करारहिं ॥
शर धारा गजदन्तहि लागे ❋ चिनगी उठि बहु पावक जागे ॥
पायक हाथ खड्ग लै फेरत ❋ मारत मारु मारु धुनि टेरत ॥
दोऊ कटक लगे संग्रामहि ❋ कुरुपति धर्म राज के कामहि ॥
मूशल घाव मारि शिर फोरहिं ❋ जूझि परे मुख नेकु न मोरहिं ॥

दोहा—सेनासब यहिबिधि लरै, करै भयंकर मारि ।
महारथी रण हाँकदै, भिरे प्रचारि प्रचारि ॥

महावीर अतिबल शर शोधहिं ❋ हृदय खण्डि धरणी शरबेधहिं ॥
भीमसेन बहु विशिख पँवार्यो ❋ छादित शर भारत महिकार्यो ॥
लखि कलिङ्ग क्रोधितहो धायो ❋ महामत्त गज लक्षण आयो ॥
सो बान्धव कलिङ्ग के साथी ❋ औ नवलाख महाबल हाथी ॥
भीमहिं घेरि सकल शर मारहिं ❋ शक्ति शेल तोमरन प्रहारहिं ॥
लागत क्षत अति कोप बढ़ायो ❋ रथते उतरि गदा गहि धायो ॥
गदा घाव गज मस्तक फोर्यो ❋ पाँयन ते अनेक रथ तोर्यो ॥
नृपकलिङ्ग कीन्ह्यों दृढ़ ठानहिं ❋ भीम अङ्ग मारेउ दश बानहिं ॥
अपरबिशिखत्रय अति बल कीन्ह्यों ❋ ते शर बिद्धशीश पर दीन्ह्यों ॥
भीमसेन परतिज्ञा भाखत ❋ रे कलिङ्ग अबको तोहिं राखत ॥
गदा पवन ते सबहिं उड़ायो ❋ सेन सहित सब नभ पहुँचायो ॥
हैं नव लक्ष संग तव हाथी ❋ सकल करौं तारागण साथी ॥

दोहा—भीमसेन है नाम मम, जग परतज्ञ प्रमान ।
यहमिथ्या नहिं जानिबो, कोटिआनभगवान ॥

अपनो तेज कृष्ण तब दयऊ ❋ भीम अंग प्रबिशत सो भयऊ ॥
अरु बनबास पवनगण छाये ❋ गदा बैठि निज भाव जनाये ॥
धाये भीम गदा कर फेरत ❋ उड़ैं गयन्द महौ तड़ गेरत ॥
पवन को तेज अकाश समाने ❋ ज्यों बब्बूर के पत्र उड़ाने ॥
कुञ्जर सबै गगन मों लागे ❋ कौतुक छोड़ि देव सब भागे ॥
योजन एक सेन जो खायो ❋ गदा पवन ते सेन उड़ायो ॥
कौरवदल देखत दुख मान्यो ❋ काल समान भीम को जान्यो ॥
पकरि शुण्ड गज मत्त चलाये ❋ ते कुञ्जर लङ्का पहुंचाये ॥
अभिरे कनक कोटि शिर फूट्यो ❋ सहित भुशुण्ड दशन सबटूट्यो ॥
बहुतक परे सिन्धु के धारहिं ❋ पकरि मत्स्य सब करहिंअहारहिं ॥

रबिमण्डल मो जो पहुँचायो ❀ अजहूँ फिरत गिरन नहिंपायो ॥

दोहा—भीम भयंकरगज घने, फेंके याहि व्यवहार ।
भारत के संग्राम में, कियो सिन्धु के पार ॥

देखत द्रोण क्रोध तब कीन्ह्यो ❀ रहुरहु भीम हाँक तब दीन्ह्यो ॥
सहस बाण उर मध्य सोमार्‍यो ❀ शरते तन जर्जर करि डार्‍यो ॥
शायक छूटे जात न जाने ❀ कवच भेदि शर अङ्ग समाने ॥
लघु संधान द्रोण शर मार्‍यो ❀ अपने रथहि भीम पगुधार्‍यो ॥
लैकरि धनु दश साधेउ शायक ❀ द्रोण शरीर हनेउ बलशायक ॥
नकुलहि और जयद्रथ भारथ ❀ दोऊ रच्यो सरस पुरुषारथ ॥
शकुनी अरु सहदेव लराई ❀ महायुद्ध कीन्ह्यो प्रभुताई ॥
द्रोणपुत्र अभिमन्यु संग्रामहिं ❀ सरसबिशिख छाँड़तरण धामहि ॥
ऐसे शर कुद्धित ह्वै जोरहिं ❀ मनुज कहा पर्वत कहँ फोरहि ॥

दोहा—षाष्टिबाण अभिमनुहते, कीन्ह्यो स्यन्दनभङ्ग ।
ध्वजा सहित वैसारथी, मारे चारि तुरङ्ग ॥

कीन्ह्यो अपर रथहि असवारी ❀ सहस बाण जोरे धनुधारी ॥
अर्जुन तनय बिशिख असजोर्‍यो ❀ द्रोणीशर निजशरनते तोर्‍यो ॥
भूरिश्रवा द्रुपद संग्रामहि ❀ जुरे बीर अपने जयकामहिं ॥
बासुदेव रथ कियो पयानो ❀ भीषम के सन्मुख लै ठानो ॥
दोऊ बीर महा धनुधारी ❀ लागे करन भयानक भारी ॥
दिब्य बाण अर्जुन तब मार्‍यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टार्‍यो ॥
भीषम कह्यो धनञ्जय सुनिये ❀ अब मेरो पुरुषारथ गुनिये ॥

दोहा—श्रवणमलआकर्षिधनु, हन्योबिशिखसमरत्थ ।
तीनिपैग पाछे कियो, नन्दिघोष सो रत्थ ॥

तीनि पैग पाछे रथ आयो ❀ साधु बचन यदुनाथ सुनायो ॥
अर्जुन कह सुनिये गिरधारी ❀ मम उर यह संशय है भारी ॥

ममयहि बिधिनिजबिशिखचलायो ❀ सहसपैग रथ को बिचलायो ॥
तीनि पैग मेरो रथ आयो ❀ सत्रु बचन केहि काजसुनायो ॥
हँसि भाष्यो तब शार्ङ्गपानी ❀ पारथ तुम यह चरित न जानी ॥
ज्यों सब बिबुध गगनमो अहहीं ❀ ते सब नन्दिघोष महँ रहहीं ॥
मेरु समान भार हनुमानहि ❀ जगन्नाथ करि मोहिं बखानहि ॥
ऐसो रथ शर टार्‌यो पारथ ❀ भीषम धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
अर्जुन सुनत सत्य करि जान्यो ❀ महाक्रुद्ध ह्वै कार्मुक तान्यो ॥
धाये बाण तेज अति पायल ❀ ताते भे गङ्गासुत घायल ॥
अष्ट बाण ते हत्यो तुरङ्गहिं ❀ पुनित्रय बिशिख सारथीअङ्गहिं ॥

दोहा–कोटि बाण अर्जुनतज्यो, कीन्हो लघुसंधान ।
चारिलक्ष. चतुरङ्गदल, जूझेउ लागत बान ॥

अर्जुन यहिबिधि अतिबलकर्‌यो ❀ भीषम कोपि धनुष कर धर्‌यो ॥
असी बाण अर्जुन उर मार्‌यो ❀ गजरथ हय पदाति संहार्‌यो ॥
यहिबिधि करहि युद्ध की करणी ❀ जूझहिं बीर परहिं रणधरणी ॥
भीषम कियो सरिस प्रभुताई ❀ नरके शीश मेदिनी छाई ॥
एकबिशिख यहि बिधिते जोर्‌यो ❀ ताते पारथ को गुण तोर्‌यो ॥
तब कपिध्वजनिज धनुगुणदीन्ह्यो ❀ पारथ हर्षि धनुष करलीन्ह्यो ॥
गङ्गा सुत तब समय बिचार्‌यो ❀ दश सहस्र स्यन्दन तब मार्‌यो ॥

दोहा–शंखध्वनि करिकै चले, सकल आपने धाम ।
सबलसिंह चौहान कह, भारत के संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व भाषाकृते द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अपने भवन सबै मिलि आये ❀ दुर्योधन तब भीष्म बोलाये ॥
सुनहु पितामह बचन कहौं बर ❀ तुमते कोउ नहिं बड़ो धनुर्द्धर ॥
सप्त दिवस रण कृत जयहित यह ❀ पाण्डव क्षेम सहित गये निजगृह ॥
यह कलङ्क नहिं मिटै तुम्हारो ❀ जो न प्रात दल पाण्डव मारो ॥
सुनत क्रोध तन भीषम बाढ्यो ❀ तीक्ष्ण शर निषङ्ग ते काढ्यो ॥

महाकाल शर नाम कहावै ❋ इन्द्र बज्र नहिं पटतर पावै ॥
यहि शर ते पाण्डव दल मारो ❋ तब अपने भवनहिं पगु धारो ॥
दुर्योधन सुनिकै सुख मान्यो ❋ जीत्यों युद्ध चित्त में जान्यो ॥
तम्बू एक खड़ो कर दीन्ह्यो ❋ तामहँ बास पितामहँ कीन्ह्यो ॥
धर्मराज बन्धुन सँग गयऊ ❋ युत कमलापति निजगृह गयऊ ।

दोहा—सभामध्य बैठे सकल, द्रुपद बिराट नरेश ।
मधुर बचन सहदेवते, कहेउ आपु हृषिकेश ॥

प्रात युद्ध होइहै केहि रूपहि ❋ मन्त्री कहहु भेद सब भूपहि ॥
हँसि सहदेव कही सुनु स्वामी ❋ तुम जानत सब अन्तर्यामी ॥
महाकाल शर भीषम राख्यो ❋ पाण्डव बद्ध प्रतिज्ञा भाख्यो ॥
द्वारहि बस्यो गयो नहिं धामहिं ❋ समुझि कीजिये श्रीहरिकामहिं ॥
सुनत युधिष्ठिर बिस्मय मान्यो ❋ बन्धुन सहित मुये यह जान्यो ॥
कह्यो कृष्ण नृप शोच न करिये ❋ मेरो मन्त्र चित्त निज धरिये ॥
अर्जुन को मेरे सँग दीजै ❋ छलकरि महाकाल शर लीजै ॥
तब नृप कह यह बड़ो अँदेशो ❋ किमि तुम वह शर पैहो केशो ॥
कमल नयन नृपको समझायो ❋ जब तुम सब बनवास सिधायो ॥
काम्यकबन पर्ण शाला छाये ❋ दूत आनि कुरुनाथ जनाये ॥

दोहा—पाण्डव बनमों हैं निकट, बचन सुनो कुरुनाथ ।
सकल कटकसँगलैचलो, भीष्मद्रोणनिजसाथ ॥

गोधन धन देखन मन लायो ❋ यहै आगमन सबहिं सुनायो ॥
सुरगण सब जान्यो यह कारण ❋ कुरुपति जात पाण्डवन मारण ॥
सुरपति कह्यो चित्ररथ धावहु ❋ दुर्योधनहि बांधि लै आवहु ॥
आज्ञा लै चढ़ि चलो बिमानहिं ❋ कटि निषङ्ग लीन्हे धनुबानहिं ॥
गन्ध्रब राय आइ तब हांक्यो ❋ चकित सबहिं गगनमुख ताक्यो ॥
यहि बिधि बाण बुन्द झरिलायो ❋ मारि सबै सेना बिचलायो ॥
अति तीक्ष्ण गन्ध्रब शर लाग्यो ❋ धनुगुण कट्यो करण तब भाग्यो ॥

नाग फांश शर यहि बिधि साध्यो ❀ बलते गहि दुर्योधन बाँध्यो ॥

दोहा—अपने रथ करि लै चल्यो, गगन पन्थ मो गौन ।
त्राहि त्राहि टेरचो बिकल, सुन्यो युधिष्ठिरबैन ॥

यह तो है दुर्योधन भ्राता ❀ अपकारी गन्ध्रब लिये जाता ॥
अर्जुन कर को दण्डहि धरिये ❀ बन्धन मुक्त बन्धुको करिये ॥
भीम कही नृप चुप कर रहिये ❀ भूलि बात क्यहि कारण कहिये ॥
गन्ध्रब कियो हमारहि कामहिं ❀ चलहु राज कीजै सुख धामहिं ॥
धर्मराज कह सुनिये पारथ ❀ आज्ञा मानि करहु पुरुषारथ ॥
यह सुनि अर्जुन धनु कर लीन्हो ❀ शायक बृष्टि अकाशहि कीन्हो ॥
शरते रथ रोक्यों दिबि धामहि ❀ गन्ध्रब उर मार्यो दश बानहि ॥
मनहिं बिचार चित्ररथ कीन्हो ❀ दुर्योधनहिं डारि तब दीन्हो ॥
पारथ तब इमि शायक साँध्यो ❀ भूमि अकाश बाणते बाँध्यो ॥
दुर्योधन शरपर चलि आयो ❀ धर्मराज को दर्शन पायो ॥

दोहा—लज्जित ह्वै यहिबिधिकह्यो, अर्जुन राख्यो प्रान ।
जो इच्छा सो माँगिये, कहतसुबचनप्रमान ॥

पारथ कही सत्य दृढ़ कीजै ❀ समय परे माँगे बर दीजै ॥
कुरुपति कह आजुइ बरलीजै ❀ अर्जुन को मेरे सँग दीजै ॥
हरि अर्जुन कीन्हों तब गवनहिं ❀ आये दुर्योधन के भवनहिं ॥
कह्यो कृष्ण हम बाहर रहिये ❀ सुनहु किरीटी यह मत कहिये ॥
मुकुट माँगि नृपसों लै आवहु ❀ तब भीषम पहँ आपु सिधावहु ॥
तब अर्जुन आयो नृप द्वारे ❀ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ॥
दुर्योधन सुनि तुरत बोलायो ❀ अन्तःपुर महँ कपिध्वज आयो ॥
आदर करि आसन बैठारे ❀ कहहु बन्धु क्यहि कामसिधारे ॥
अर्जुन कह कुरुपति के आगे ❀ पावहुँ आजु पूब बर माँगे ॥
मुकुटदान मणि भूपति दीजै ❀ अपनी सत्य पालनो कीजै ॥
मन गोबिन्द सुनत सुख पायो ❀ दीन्हो मुकुट गहरु नहिंलायो ॥

दोहा-मुकुट बांधि पारथ चले, भीषम के अस्थान ।
देखत उठि आदर कियो, दुर्योधन के जान ॥

भीषम कह्यो जानि कुरुराजहि ❀ आपुगमन कीन्ह्योक्यहिकाजहि ॥
माँगे महाकाल शर दीजै ❀ निजकर हम पाण्डव बधकीजै ॥
हँसि भीषम दीन्ह्यो तब बानहिं ❀ प्रात युद्ध कीन्ह्यो संधानहिं ॥
हर्षवन्त ह्वै अर्जुन लयऊ ❀ यहि अवसर प्रगटत प्रभु भयऊ ॥
कृष्णहि देखि भयो छल जान्यो ❀ गङ्गासुत यहि भाँति बखान्यो ॥
हे प्रभु तुम पाण्डव के स्वारथ ❀ मेरो प्रण किमि कियोअकारथ ॥
भारत में यश नेक न पायो ❀ नितप्रति तुमपारथहि बचायो ॥
शिवसनकादिकअंत न जान्यो ❀ तुम पाण्डव के हाथ बिकान्यो ॥
भक्ति हेतु केशव मन भायो ❀ बिना भक्ति प्रभुको नहिं पायो ॥
कह्यो कृष्ण भीषम के आगे ❀ यश पैहो रण सरस सभागे ॥

दोहा-अपनो प्रण मैं टारकै, तवप्रणकरौंनिदान ।
भक्तिबिबशलखिप्रकटकह, सबलासिंहचौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वभाषाकृतेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

भीषम सुनि जियमें सुख पायो ❀ पारथ धर्मराज पहँ आयो ॥
जिमि चातक मुख स्वाती बरष्यो ❀ बाण देखि पाण्डव दल हरष्यो ॥
दुयोधन सुनिकै दुख मान्यो ❀ प्रात होत रण कियो पयान्यो ॥
हर्षित होइ पाण्डव दल साजहिं ❀ भेरि दुन्दुभी मारू बाजहिं ॥
दल चतुरङ्ग साजिकै आयो ❀ युद्धभूमि में शोभा पायो ॥
प्रथम पेलिदीन्ह्यो गजमत्तहिं ❀ गज रिपुदंति भयो चोदन्तहिं ॥
पदचर धाये बहुधा दमकै ❀ फेरत फरी खङ्ग कर चमकै ॥
चढ़े तुरङ्ग शेल कर लीन्ह्यो ❀ महा मारु असवारन कीन्ह्यो ॥
मारत शूल सजोवा टूटहिं ❀ बाहत घाव खंग शिरफूटहिं ॥
मुरैं न लरैं खेत मो ठाढ़े ❀ महाशूर सब जिय के गाढ़े ॥
रथी रथी करिवे रण लागे ❀ चलत न एक एक के आगे ॥

दोहा—महारथी रण हांकदै, करहिं युद्ध यहि रूप।
जोर जोर अरुझे सबै, भिरे भूपसों भूप ॥

सहस लाख कोटिन शर छूट्यो ❋ बाणन बाण बीचही टूट्यो ॥
यहि बिधि युद्ध करैं रण सरसैं ❋ बहुबिधि बाण बुन्दसम बरसैं ॥
कादहिं धनुष क्रोध कै रण में ❋ बाहे शेल हांक दै रण में ॥
रथ ते उतरि गदा लै धावहिं ❋ आगे परहि सो मारि गिरावहिं ॥
तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं ❋ शक्ति शेल मुद्गर कर भारहि ॥
जूझि गिरे भारत रण धावहिं ❋ आनन्दित चढ़िचले बिमानहिं ॥
अर्जुन रथ हाँक्यो कंसारी ❋ जोतो गहे पिताम्बर धारी ॥
श्याम शरीर कमल दल लोचन ❋ सदा भक्तकर शोचबिमोचन ॥
नन्दिघोष रथ आगे आयो ❋ तब भीषम यहिभाँति जनायो ॥
मुकुट बाँधि कीन्हो मोसों छल ❋ आजु जानिबो पारथ को बल ॥
जो हरि के कर अस्त्र गहावों ❋ तो शंतनुसुत जगत कहावों ॥

दोहा—धर्मराज कुरुपति सुन्यो, भीषम भाष्यो बैन ।
आजु गहावों अस्त्र हरि, देखत दूनों सैन ॥

गङ्गा गर्भ जन्म जो लीन्ह्यों ❋ तो यह प्रण भारतमें कीन्ह्यो ॥
प्रभु को प्रण टारों परतक्षक ❋ आजु करों अपनो प्रणरक्षक ॥
यहिबिधि बाणबुन्द झरिलायो ❋ शोणित नदी अथाह बहायो ॥
कृष्ण हाथ नहिं अस्त्र गहावों ❋ तो मैं बास अधोगति पावों ॥
कठिन बाण शारंगगुण जोर्‍यो ❋ शरसागर पाण्डवदल बोर्‍यो ॥
भीषम याहि प्रतिज्ञा ठान्यो ❋ द्वौदलअतिअचरजकरि मान्यो ॥
यह सुनि देवलोक सब धाये ❋ कौतुक को बिमान सब छाये ॥
प्रथम कियो है प्रण जगतारण ❋ हम नहिं करें धनुष कर धारण ॥
प्रभु पारथ को सारथि अहई ❋ भीषम अस्त्र गहावन कहई ॥
यहि चरित्र देखत सब मुनिगण ❋ रणमों आजरहै काको प्रण ॥

दोहा—भीषमतब यहिबिधिकह्यो, करिहौंयुद्ध अनन्त ।
पारथ रण अस्थिर रहौ, सारथि श्रीभगवन्त ॥

यह काहि लगे चलावन शायक ❀ दोऊ भट रणमहँ सब लायक ॥
अर्जुन बाण हाथ ते छूटहिं ❀ मानहु बज्र गगन ते टूटहिं ॥
लघु संधान कियो तब पारथ ❀ निजशायक छायो सब भारथ ॥
दशदिशि सब बाणनमय सूझै ❀ निज पर नाहिन कोऊ बूझै ॥
यहिबिधि शर अकाश में छायो ❀ रबिमण्डल देखन नहिं पायो ॥
देखि युद्ध भीषम रिस बाढ्यो ❀ तीक्ष्ण शर निषंग ते काढ्यो ॥
ऐसे सबल बाण गुण जोरे ❀ क्षण महँ अर्जुन के शर तोरे ॥
लाखन अर्ब खर्ब शर कोप्यो ❀ पाण्डवदल बाणन ते तोप्यो ॥
बीर सकल शर छाँह समाने ❀ दृष्टि न परत जात नहिं जाने ॥
क्रुद्धित यहि बिधि कृतसंधानहिं ❀ जलथल सूझिपरत सब बानहिं ॥

दोहा—महाघोर संग्राम मों, अर्जुन धनु सन्धान ।
सबशरकाटेनिमिषमों, तमखण्ड्योजिमिभान ॥

अर्जुन पाणि निशित शर छूटत ❀ भेद सनाह बपुष महँ फूटत ॥
सारथि उर शत शायक मारे ❀ बिंशति बिशिख केतुध्वजपारे ॥
अश्वनतनु यहिबिधि शरलागे ❀ थकितभये पगचलत न आगे ॥
लक्ष नराच कटक पर डार्यो ❀ ते शर चोटि मौलि अनुसार्यो ॥
तब भीषम निजतेज सँभार्यो ❀ सहस बाण अर्जुन उरमार्यो ॥
कोटि बिशिख लाग्यो हनुमानहिं ❀ षष्ठि नराच हन्यो भगवानहिं ॥
गङ्गतनय शर अमर सुजोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे ॥
शर अनेक सेना पर प्रेरा ❀ पाण्डव कटक हत्यो बहुतेरा ॥

दोहा—सहस एकराजा गिरयो, सेनसुबध्यो अनन्त ।
अरुणबरणसबदेखिये, खेलत मनहुँ बसन्त ॥

भीषम अमित तेज महि सार्यो ❀ रुण्ड मुण्ड महि भारत मार्यो ॥

महाशूर रण जूझत घायल ❋ मनहुँ नाद मोहे करसायल ॥
यहिबिधि कृत अतिरण भयकारी ❋ अर्जुन सों तब कह्यो मुरारी ॥
अब अपनो दल रक्षन कीजै ❋ दृढ़ ह्वै शर कोदण्डहि लीजै ॥
सुनि पारथ लीन्ह्यो करधनुशर ❋ प्रात समय जनु उदय दिवाकर ॥
अति क्रुद्धित ह्वै कृत संधानहिं ❋ हृदय ताकि मार्‍यो बहुबानहिं ॥
भेदि सनाह अङ्ग में लाग्यो ❋ क्रोधअनल उर अन्तर जाग्यो ॥
भीषम बिशिख निशितअति छूट्यो ❋ अर्जुन बपुष भेदिकै फूट्यो ॥
घायल भयो सह्यो सब बानहिं ❋ ब्रह्म अस्त्र तब कृत संधानहिं ॥
बाण उदोत तेज महि छायो ❋ देवलोक लखि अतिभयपायो ॥

दोहा—पारथ अतिशयबलकियो, कृष्णअस्त्रसन्धान ।
चलत तेज अतिउदितकृत, मनहुँदूसरोभान ॥

कौरव दल अति देखि सकान्यो ❋ भीषम ब्रह्म अत्र संधान्यो ॥
अस्त्र अस्त्र सों भयो निवारण ❋ तब लाग्यो तीक्षण शर मारण ॥
अयुत बाण हनुमन्तहि मार्‍यो ❋ गरुड़ध्वज तनुसहस प्रहार्‍यो ॥
अर्जुन अङ्ग बाण बहु मार्‍यो ❋ शरते तनु झांझर करि डार्‍यो ॥
सहित बाजि स्यन्दन करि घायल ❋ थकितभये पदचलत न पायल ॥
भीषम बाण बृष्टि अति लायो ❋ नन्दिघोष रथ शर ते छायो ॥
तीक्षणबाण श्याम उर मार्‍यो ❋ पोत बसन रंग अरुण सँवार्‍यो ॥
क्रुद्धित जलज नयन रतनारे ❋ चक्र पाणि कर चक्र सँवारे ॥
रथ ते उतरि चले नारायन ❋ धाये आप उघारे पांयन ॥
सजल श्यामघन अङ्ग सुहायो ❋ मर्कतमणि पट्ट तर नहिं पायो ॥
मकराकृत कुण्डल मन मोहे ❋ डोलत झलक कपोलन सोहैं ॥

दोहा—गहे चक्रधर चक्र कर, चकृत चाहत खेत ।
चंचलधावानिबरण की, भीषम के प्रण हेत ॥

कर में चक्र सुदर्शन राजत ❋ कोटि भानु द्युतिसरिसबिराजत ॥
श्रमजल रुधिर चलत यक सङ्गहि ❋ शोभित अङ्ग अनूपम रङ्गहि ॥

बिश्वम्भर क्रुद्धित ह्वै धायो ❀ भूमि चलो फण शेश उठायो ॥
यहि बिधिप्रभुआतुरकियगवनहिं ❀ फहरत पीत बस्त्र लगि पवनहिं ॥
गिऱ्यो छूटि ऊपर रण धरणी ❀ कबि पै छबि कछु जात न बरणी ॥
कौरव दल देखत सब डरप्यो ❀ मानहुँ बाज बिहँग पर फरक्यो ॥
तब अर्जुन छाड्यो निज स्यन्दन ❀ धाइ जाई पकऱ्यो जगबन्दन ॥
अहो नाथ अस्थिर ह्वै रहिये ❀ आपु अस्त्र क्यहि कारण गहिये ॥
मोते अघ कह भयो जगतारण ❀ कर गहि चक्र चल्यो तुम मारण॥
यहई अयश जगत में पायो ❀ प्रभु कर भीषम अस्त्र गहायो ॥

दोहा—प्रभु अपनो प्रण टारिकै, कियो मोर अपमान।
भीषम प्रण स्वारथ कियो, भक्तबश्य भगवान॥

चरण कमल गहि पारथ फेऱ्यो ❀ देखि पृष्ठ गङ्गासुत टेऱ्यो ॥
साधु साधु श्रीपति बनवारी ❀ सदा भक्त प्रण रक्षाकारी ॥
धनुष डारि कर कियो प्रणामहिं ❀ अस्तुति करन लगेघनश्यामहिं ॥
तब भीषम यहि बिधिते भाख्यो ❀ दीनबन्धु मेरा प्रण राख्यो ॥
बिप्र सुदामा दारिद भञ्जन ❀ भक्त बश्य गोपिन मन रञ्जन॥
गणिका ब्याध गीध जगतारण ❀ गोरक्षक गोबर्द्धन धारण ॥
ध्रुवको अचल कियो परतक्षक ❀ द्रुपद सुता को लज्जा रक्षक ॥
महाकष्ट प्रहलाद उबाऱ्यो ❀ निकसि खम्भ दनुजेशहिमाऱ्यो ॥
रावण कुल समेत बध कीन्ह्यो ❀ लङ्का राज्य बिभीषण दीन्ह्यो ॥
शाप शिला गौतम की नारी ❀ परसत चरण अहल्या तारी ॥

दोहा—ब्रह्मा शंकर देव मुनि, करत चरण निजध्यान।
सबलसिंह चौहान कह, भीषम कियो बखान॥

इति श्रीमहाभारतेभीषमपर्व भाषाकृते चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

जय बृन्दा बन बिपिन बिहारी ❀ श्रीपति श्रीधर श्रीबनवारी ॥
चढ़े आइ हरि पारथ स्यन्दन ❀ जोती गहे आपु जगबन्दन ॥
अर्जुन कोपि धनुष कर लीन्ह्यो ❀ इन्द्र अस्त्र संधानहिं कीन्ह्यो ॥

कौरव दल सम्मुख जो पायो ❀ त्तण में अर्जुन मारि गिरायो ॥
महायुद्ध कीन्ह्यो नररूपहि ❀ मार्‍यो समर पंचशत भूपहि ॥
सोहत मुकुटन अति मणिपूरी ❀ लोटत धरणि शोश ते भूरी ॥
लागत उर अर्जुन के बानहिं ❀ कुरुदल रणमारि खसो निदानहिं ॥
गङ्गासुत धनु क्रुद्धित लयऊ ❀ गुड़ाकेशपर शरझरि कियऊ ॥
यहिविधि लगे हननशर तोत्तण ❀ पाण्डवदल सहसनगिरे महिरण ॥
दश सहस्त्र रथ भीष्म निखराञ्यो ❀ भवन चलत शंख ध्वनिमराञ्यो ॥

दोहा—कुरु पाण्डव फिरिकै चले, आये अपने धाम ।
धर्मराज बन्धुन सहित, संगलिये घनश्याम॥

भोजन को सबही मन लायो ❀ द्रुपद सुता यहिभाँति ज्यँवायो ॥
धर्मराज दुर्योधन भूपहि ❀ आजु युद्ध कीन्ह्यो त्र्यहिरूपहि ॥
तब पारथ यहि भाँति बखानहिं ❀ हरि मेरो कीन्ह्यो अपमानहि ॥
रण में भीषम को प्रण रह्यो ❀ दीनबन्धु रण अस्त्रहि गह्यो ॥
द्रुपद सुता यहि भाँति बखान्यो ❀ पारथ तुम यह भेद न जान्यो॥
सदा भक्त प्रभु रत्ता कारण ❀ ब्रह्मरूप कीन्ह्यो प्रभु धारण ॥
शिव सनकादिक अन्त न पायो ❀ शबरी के जूठे फल खायो ॥
महिमा अगम अगोचर मोहन ❀ डोलत सदा भक्त के गोहन ॥
बलिराजा हनुमान सयाने ❀ चरण कमल मन मधुप लोभाने॥
कह्यो द्रोपदी सुनिये पारथ ❀ भीषम जन्म भक्तमय स्वारथ ॥

दोहा—धन्य धन्य ते साधु तनु, भजत साँवरे अङ्ग ।
सुखदुखसम्पति बिपतिमें, होत नहीं चितभङ्ग॥

सुनि माधवअतिशय सुख पायो ❀ करि भोजन शयनहिं मनलायो ॥
होत प्रभात सजैं द्वौ अनी ❀ बजत दमाम भई ध्वनि घनी ॥
बीर सकल रणधरणिहिं आये ❀ बंधे अस्त्र कर धनु शर लाये ॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये ❀ महाशूर सन्मुख ह्वै आये ॥
लै कर धनुशर कृत संधानहिं ❀ क्रुद्धित लगे पँवारन बानहिं ॥

कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो ❀ आगे परे ताहि यम लीन्ह्यो ॥
महाबीर सब बिरद सुबाँधे ❀ अरुझे ठाँव ठाँव रण काँधे ॥
दल चतुरङ्ग करत रण घोरहि ❀ मराडे समर जोरसों जोरहि ॥
तेज तुरंग नकुल त्यहि राज्यो ❀ अति भयदायक संगर साज्यो ॥
महारथी बहु शर हत कर्हीं ❀ सहस सहस भट रणमहि परहीं ॥
भीषम पर अर्जुन रण साजी ❀ हाँक देत हरि हाँकत बाजी ॥
जोती गहे पतित के पावन ❀ बर्षत शर मानहुँ जल सावन ॥

दोहा—पारथ कर कोदण्ड गहि, छायो बिशिखअपार ।
मत्तदन्ति रथ हय गिरे, पदचर बिबिध प्रकार ॥

तब भीषम निजकर धनुलायो ❀ अतिशय सरिस नराच चलायो ॥
तीक्षण बाण प्रहारन करई ❀ पाण्डव दल बहु भट संहरई ॥
भीषम उर निज तेज सुधार्यो ❀ सहस नरेश युद्धमहि मार्यो ॥
बीर सबै लागे शर मारन ❀ तब आये कोते हथियारन ॥
शूल गदा मुद्गरन प्रहारहिं ❀ सन्मुख आय खड्ग शिरझारहिं ॥
अभिरहिं सुभटकटारिन मारहिं ❀ पकरि केश रणत्रपरि पछारहिं ॥
द्रोण करण कुरुपति के सार्थहिं ❀ यहि बिधिलरैं अस्त्रगहिहाथहिं ॥
इतते तबहि बृकोदर धायो ❀ गदा घाव बहु मारि गिरायो ॥
बहुतक मीजि पाँव ते डार्यो ❀ बहुतक गहि अवनीपर डार्यो ॥
अरु बहुस्यन्दन चूरण कीन्हेउ ❀ हयगज फेंकि व्योमपथ दीन्हेउ ॥

दोहा—घोरयुद्ध यहिबिधि कियो, भीम भयंकर रूप ।
सहित सेन रणमें बधेउ, प्रबल तीनि शतभूप ॥

नन्दिघोष हांकत जग बन्दन ❀ अर्जुन कीन्हेउ सेन निकन्दन ॥
तीक्षण बाण क्रुद्ध कै मार्यो ❀ तीनि सहस्र नृपति संहार्यो ॥
मरि भट पर्यो धरणि सब छायो ❀ रणमें रुधिर नदी बहि आयो ॥
शोणितनदी जाति नहिं बरणी ❀ मन अथाह हमका बैतरणी ॥
भीमसेन गजराज संहारे ❀ परे समर सब भये करारे ॥

धवल छत्र चमकत हैं कैसे ❋ बाढ़त नदी फेन जल जैसे ॥
शक्ती झलक मीन सम चमकैं ❋ कठिन ढाल कच्छपसम दमकैं ॥
केश स्यवार सरिस अरुझाने ❋ मृतक तुरंग ग्राह सम जाने ॥
कटे भुशुण्डि सरिस छबि पाई ❋ मनहुँ भूमि जल में उतराई ॥
रुधिर नदी यहि रूप भयंकर ❋ नाचत महा मगन ह्वै शङ्कर ॥

दोहा—भैरव भूत पिशाचगण, योगिनि मङ्गलचार ।
अन्त्र लपेटहिं कण्ठमें, सरिस बिराजत हार ॥

कोऊ गजमुक्ता लै आवहिं ❋ एक एक के श्रुति पहिरावहिं ॥
नृत्यत भूत पिशाच सयाने ❋ रुधिर मांस सब खाइ अघाने ॥
जम्बुक गण आनन्दित धावहिं ❋ मांस खाइ मनमें सचुपावहिं ॥
गगन उड़हिं पक्षीगण जेते ❋ रणमें भये तृप्त मन तेते ॥
घायल मगन सुभये रुधिरसरि ❋ उठेसँभरि पुनि शोकसिन्धुपरि ॥
शूरन शीशकुण्डि लै आवहिं ❋ पीवहि रुधिर योगिनी गावहिं ॥
उठि कबन्धधावहिं पुनि माथहि ❋ मारन आव खड्ग गहि हाथहि ॥
भीषम सों अर्जुन बलभारी ❋ कीन्हेउ अतिभारत भयकारी ॥
अरुणबदन देखत दिन भूल्यउ ❋ जिमि बसन्तकिंशुकतरु फूल्यउ ॥
भूत पिशाच सुब्याह बिचारहिं ❋ धरहिं टोप शिर मौर सँवारहिं ॥

दोहा—सबलसिंह चौहान कह, अर्जुन कृत रणखेत ।
गावत चौंसठि योगिनी, नाचत हैं सब प्रेत ॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्वभाषाकृते पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

गोधन मण्डल मण्डप छायो ❋ जम्बुक सकल बराती आयो ॥
यहिबिधि करत कोलाहल भारी ❋ भैरव सहित देहिं करतारी ॥
तब पारथ संधान्यउ धनु शर ❋ गङ्गासुत मारेउ उर शत शर ॥
अरुअति निशितअमितशर डार्यो ❋ रथको ध्वजा पताका कार्यो ॥
तब भीषम दृढ़ कर धृत धनुशर ❋ होनलग्यो अतियुद्ध परस्पर ॥
दश शायक अर्जुनतन साध्यो ❋ सप्तबिशिख यदुपति अवराध्यो ॥

अष्ट नराच अपर गुण नाध्यो ❀ नन्दिघोष यह रथ छत साध्यो ॥
लागयउ षष्ठिबिशिख हनुमन्तहि ❀ दशसहस्र रथ तब हतवन्तहि ॥
दै जय शंख चल्यो गंगासुत ❀ पाण्डवदल सब चले भवन उत ॥
दुर्योधन सब सेना लीन्हे ❀ अपने भवन गवन तब कीन्हे ॥

दोहा—धर्मराज फिरिकै चल्यो, आगे कमलाकन्त ।
सबलसिंह चौहान कह, महिमा अगम अनन्त ॥

करि बिश्राम अस्त्र सब खोले ❀ नृपति युधिष्ठिर माधव बोले ॥
चले सकल भोजन के कामहिं ❀ बैठे द्रुपदसुता के धामहिं ॥
धर्मराज अति बचन सुनाये ❀ कंस निकन्दन प्रभुहि जनाये ॥
नव दिन भयो महाबल भारथ ❀ भीषम खेत सरिस पुरुषारथ ॥
दश सहस्र रथ नितक्रम मारहिं ❀ अरु अनेक सेना संहारहिं ॥
कह्यो कृष्ण अब कीजै गवना ❀ चलिजैये भीषम के भवना ॥
हम तुम अरु पारथ संग लीजै ❀ गङ्गासुत के दरशन कीजै ॥
पूछहिं जाइ मृत्यु को कारण ❀ यहिबिधि कहत भये जगतारण ॥
अर्जुन सहित चले तब केशो ❀ निशाकाल उठि चले नरेशो ॥
आये तुरत गङ्गसुत द्वारहि ❀ धाय कह्यो यहिबिधि प्रतिहारहि ॥

दोहा—गङ्गासुत चितदै सुनौ, कह्यो जोरि युग हाथ ।
धर्मराज द्वारे खड़े, हरि अर्जुन हैं साथ ॥

सुनि भीषम आतुर होइ धाये ❀ कृष्ण दरश आनन्दित पाये ॥
धर्मराज अभिबन्दन कीन्हा ❀ हँसि भीषम अङ्कम भरिलीन्हा ॥
होय पाण्डुसुत कुशल तुम्हारो ❀ जीतहु युद्ध शत्रु संहारो ॥
पुलक सहित हरिके पद परश्यो ❀ बदन चन्द्र आनन्दित दरश्यो ॥
आदर करि आसन बैठार्यो ❀ शीतलजल सों चरणपखार्यो ॥
भीषम कह्यो युधिष्ठिर राजहि ❀ आपु गमन कीन्ह्यो केहि काजहि ॥
धर्मराज यहि भाँति जनायो ❀ बन बन फिरत महादुख पायो ॥
कै बसीठ यदुनाथ पठायो ❀ पांच ग्राम मांगे नहिं पायो ॥

तब हरि रच्यो युद्ध यह भारथ ❋ नवदिन किये आपु पुरुषारथ ॥
दश सहस्र रथ नितक्रम मार्यो ❋ सेन अनेक समर संहार्यो ॥

दोहा—आपुयुद्धयहिबिधिकरचो तौ हम छाँड़ीआस।
पंचबन्धु सँग द्रौपदी, फिरि जैबो बनबास ॥

सुनि भीषम यहि भाँति बखान्यो ❋ धर्मराज यह बात न जान्यो ॥
जाके सदा सहायक हरि हैं ❋ सो रण मों निश्चयजय करिहैं ॥
जहाँ धर्म तहँ कृष्ण सो आवैं ❋ जहाँ कृष्ण तहँई जय पावैं ॥
यह सुनि कह पाण्डव दल केतू ❋ आपु युद्ध कीजै केहि हेतू ॥
जो हमको जय दीन्हो चहिये ❋ अपनी मृत्यु आपु ते कहिये ॥
तब गंगासुत हँसिकै कहई ❋ जबलगि अस्त्र गहे हम रहई ॥
इन्द्र आदि जो रण मों आवहिं ❋ म्वहिते जयतिपत्र नहिं पावहिं ॥
तुम ते कहौं सुनो वह कारण ❋ सन्मुख अर्जुन सकै न मारण ॥
होत प्रात यहि बिधिते लरिये ❋ आगे आनि शिखण्डी करिये ॥
द्रुपद कुमार अग्र जब ऐहहि ❋ धनुष डारि हम बदन दुरैहहि ॥

दोहा—कन्यातेभयो पुरुषतन, जानत है सबलोग।
ताते बदन न देखिहौं, प्रथम तज्यो तियभोग॥

सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❋ जब हम अस्त्र डारिकै रहिये ॥
और बोर के शर नहिं फूटहिं ❋ परसत अंग समर शर टूटहिं ॥
अर्जुन किये शिखण्डी ओटहिं ❋ मेरे उर करिहैं शर चोटहिं ॥
यहि बिधिते भीषम समझायो ❋ सुनिकै धर्मराज सुख पायो ॥
कीन प्रणाम चलन जब चह्यो ❋ तब भीषम माधवसन कह्यो ॥
दीनबन्धु पारथ के स्वारथ ❋ मेरो बल तुम करत अकारथ ॥
हे प्रभु तीनिलोक के स्वामी ❋ सब जीवन के अन्तर्यामी ॥
अर्जुन धन्य जगत यश छायो ❋ हरिसे सखा सहजही पायो ॥
यह कहिकै तब कीन्ह्यो गवना ❋ धर्मराज आये निज भवना ॥
भीषम कह्यो मृत्युको कारण ❋ सुनिहरषित भयोअधम उधारण ॥

दोहा—धर्मराज पारथ सहित, हरषित पङ्कज नैन ।
अमृतभोजनसरिसकरि,सबमिलिकीन्ह्योशैन ॥

प्रात होत कीन्हे असवारी ❀ साजे सेन महाबल भारी ॥
दोऊ दल अतिक्रुद्धित साजहिं ❀ शब्द अघात दमामे बाजहिं ॥
ठोकठोक अपनी गति बोलहिं ❀ मारत हांक पदाति सुडोलहिं ॥
कोटिन गज साजे मतवारे ❀ बाजत घराटा चमर सँवारे ॥
चले सुभट सब अस्त्रन धारे ❀ क्रुद्धित भये सैन्य ते न्यारे ॥
रणमों करहिं शत्रुको अन्तहि ❀ छनता देखि देहि भुवदन्तहि ॥
सारथि रथ जोते हय चोखे ❀ इन्द्र विमान परत हैं धोखे ॥
ध्वजा तुरंग सहस फहराने ❀ चलत तेज बांके घहराने ॥
तेज तुरंग बीर सब चढ्यो ❀ मानहुँ बिधिअपने कर गढ्यो ॥
पांवर लगे सरिस छबि राजत ❀ तबल अपर गजगाह बिराजत ॥
पदचर करत कोलाहल धाये ❀ खड्ग हस्त लै शोभा पाये ॥
समर भूमि केहरि सम गाजे ❀ युद्ध भूमि में सरिस बिराजे ॥

दोहा—कुरु पाण्डव चतुरङ्गदल, जुरे आनि कुरुखेत ।
क्षत्रीगण सब हांकदै, शारँग गह्यो सचेत ॥

सेन गँभीर कहत नहिं आवै ❀ कहै जो कबि सो अपयश पावै ॥
क्रुद्धित बीर लगे शर बर्षन ❀ शतते सहस सहसते कर्षन ॥
कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो ❀ महामारु मयमन्तहि कीन्ह्यो ॥
जस ऐसे क्रोधित गज धावहिं ❀ आगे परहिं सो मारि गिरावहिं ॥
महारथी सब मारहिं अत्री ❀ ध्वजा पताका काटहिं क्षत्री ॥
बरषत बाण कहत को बैनहिं ❀ लक्षण बीर समरकृत सैनहिं ॥
दोऊ दल कीन्ह्यो रण घोरहि ❀ परे भीम दुश्शासन जोरहि ॥
बिंशति शर दुश्शासन लीन्ह्यो ❀ भीम अङ्ग शर भेदन कीन्ह्यो ॥
क्रुद्धित भयो पवन के नन्दन ❀ धायो उतरि छांड़िके स्यन्दन ॥
लैकर गदा कोप करि धायो ❀ हांक मारि दुश्शासन आयो ॥

दोहा—दोऊभट यहिबिधि भिरचो, भारतभूमिप्रमान।
कौतुक देखत देवगण, हरषित चढ़े बिमान ॥

मारत गदा कोप करि तनमें ❀ लागत घाव शब्द जिमि घनमें ॥
शोभित रुधिर अङ्ग में कैसे ❀ ऋतु बसन्त किंशुक तरु जैसे ॥
भीमसेन तब तेज सँभाऱ्यो ❀ हांकि गदा उर मध्य सो माऱ्यो ॥
दुश्शासन तन मोह जनायो ❀ अपने रथहि बृकोदर आयो ॥
देखि द्रोण गुरु शर संधाऱ्यो ❀ भीम अङ्ग शायक ठहराऱ्यो ॥
तीक्षण बाण षष्ठि गुण जोरे ❀ घायल किये सारथी घोरे ॥
पञ्च बाण ते तोऱ्यो स्यन्दन ❀ आगे भयो सुभद्रा नन्दन ॥
अभिमन्यु हाथ तेज शर छुट्यो ❀ भेदि सनाह अङ्ग में फूट्यो ॥
एक बार सारथि शिर खण्ड्यो ❀ चारि बिशिखहयहतिरणमण्ड्यो ॥
कीन्ह्यो बिरथ द्रोण से क्षत्री ❀ अर्जुन पुत्र महाबल अत्री ॥

दोहा—द्रोण अपरस्यन्दनचढ़्यो, लीन्ह्योचापसँभारि।
सबलसिंह चौहान कह, भई भयानक मारि॥

इति श्रीमहाभारते भीष्मपर्व भाषा कृते षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

भीषम देव कहन यह लागे ❀ सारथि रथहि चलावहु आगे ॥
अर्जुन बीर कृष्ण से सारथ ❀ तिनते रण कीजै पुरुषारथ ॥
यह कहिकै हाँक्यो रथ जबहीं ❀ असगुन भये बहुत बिधि तबहीं ॥
बोलत काक भयंकर बानी ❀ बिना मेघ बर्षत है पानी ॥
गीध निकर कर ऊपर छायो ❀ जम्बुक अपनो भाव देखायो ॥
उगिलहिं खड्ग छांड़िकै खापहिं ❀ रथके खम्भ पवन बिनु कांपहिं ॥
यह असगुन जब देख्यो नैनहिं ❀ कुरुदल कहन लगे सब बैनहिं ॥
नवदिन युद्ध भयानक पेख्यो ❀ यहि बिधिते कबहूं नहिं देख्यो ॥
सारथि कहै गंगसुत आगे ❀ असगुन होन बहुत बिधिलागे ॥
भीषम बिहँसि कही यह बानी ❀ अहो मूढ़ यह बात न जानी ॥

दोहा—पारथ के सारथि अहैं, निरखहु श्रीभगवन्त ।
असगुन कछु नाहि करि सकै, सन्मुख कमलाकन्त ॥

यह कहि भीषम रथहि चलायो ❋ डोली धरणि शेष शिर नायो ॥
सिंहनाद करि हांक सुनायो ❋ मानहुँ जलद घटा घहरायो ॥
क्रोधित ह्वै शारँग कर गह्यो ❋ नमित बचन नर हरिते कह्यो ॥
सावधान हरि जोती गहिये ❋ पारथ की रक्षामहँ रहिये ॥
यह कहि बाण सहस्र प्रहार्‌यो ❋ अर्जुन के उर मध्य सो मार्‌यो ॥
दश शर श्याम अङ्ग हत कीन्ह्यो ❋ विंशतिशर हनुमन्तहि दीन्ह्यो ॥
अपर चारिशर धनुगुण दृढ़किय ❋ धाये नन्दिघोष तुरगन दिय ॥
तब अर्जुन लीन्ह्यो कर धनुशर ❋ युद्ध परस्पर होत भयंकर ॥
दोऊ भट अरुझे रणधरणी ❋ क्रुद्धित शर छाँड़त अतिकरणी ॥

दोहा—यहिविधिते अर्जुन जुटे, गङ्गतनय के युद्ध ।
जलथलभारतभूमिनभ, शरपूरित कृतयुद्ध ॥

बाण तजतअतिशययहि करणो ❋ जिमिजलधरजलबृष्टि सुबरणी ॥
सहस बाण पारथ गुण मोखे ❋ तुरगन हरि हाँकत अति चोखे ॥
तीक्षण बाण पाण्डुसुत डार्‌यो ❋ भीषम अन्तरिक्ष हति पार्‌यो ॥
अपर षष्टि शर कार्मुक धार्‌यो ❋ ते सब अश्वन के तन मार्‌यो ॥
लगे असी शर कपि के अंगन ❋ सत्तरि शर मार्‌यो यदुनन्दन ॥
श्यामअंगशोणित छबि छाजत ❋ पीतबरण रँग अरुण विराजत ॥
जोती गह्यो धन्य अति चापल ❋ बर्षतशर श्रावण जिमि घनजल ॥
यहिविधि ते शर बरषा कियो ❋ शरके छाँह भानु छपिगयो ॥
नन्दिघोष रथ माधव सारथ ❋ बाण बृष्टि ते छायो भारथ ॥
भीषम यहि प्रकार बल कीन्ह्यो ❋ तब अर्जुन धनु कर दृढ़लीन्ह्यो ॥
श्रीहरि कह्यो सुनहु हो पारथ ❋ सहि न जाइ भीषम को भारथ ॥

दोहा—हांके पग नाहिं चलत हय, शर छाये सब अंग ।
भीषम के संग्राम ते, रणमें अचल तुरंग ॥

अर्जुन जिय बिस्मयकरि मान्यो ❋ महाक्रुद्ध होइ निजधनु तान्यो ॥
देव अस्त्र पारथ तन डार्यो ❋ गंगासुत बीचहि ते कार्यो ॥
अपर बिशिखतीक्षण कर धार्यो ❋ ते शर पारथ के शिर मार्यो ॥
अर्जुन सहित भये घायल हरि ❋ तुरँग थके न चलत लघुगतिकरि॥
बरषत बाण बरणि को कहई ❋ पाण्डव दल लक्षणगति लहई ॥
श्रीपति कह्यो सुनहु हो पारथ ❋ रचहु उपाय तजो पुरुषारथ ॥
यह कहिकै हरि शंख बजायो ❋ सुनिकै नाम शिखण्डी आयो ॥
अर्जुनसों हरि कहन सो लागे ❋ रणमें करहु शिखण्डी आगे ॥
पाछे होइ शारँग कर धरिये ❋ यहिबिधि ते भीषमबध करिये ॥
अर्जुन कह्यो सुनहु बृषकेतू ❋ कपट युद्ध कीजिय केहि हेतू ॥
जबहिं शिखण्डी आगे आयो ❋ भीषम धनुष डारि शिर नायो ॥

दोहा–बिनाअस्त्र लज्जित बदन, हेरत नीचे नैन ।
अस्थिर ह्वै रथपररह्यो, कह्यो कृष्णसों बैन ॥

दीनबन्धु पाण्डव हित कारण ❋ कपट युद्ध करि चाहहु मारण ॥
अर्जुन किये शिखण्डी ओटहि ❋ भीषम उर कीन्ह्यो शर चोटहि ॥
पारथ बाण कुलिश सम छूटहिं ❋ कवचभेदि भीषमतन फूटहिं ॥
गङ्गासुत यहि बिधिते कह्यो ❋ पै शर नहीं शिखण्डी गह्यो ॥
शर मारत अर्जुन मम हिये ❋ यह बिचार कीन्ह्यो चित दिये ॥
घायल भे काँपत तनु कैसे ❋ शिशिर काल में गोधन जैसे ॥
तब पारथ कृत पुनि संधानहिं ❋ हृदय ताकिकरि मार्यो बानहिं ॥
चरण कमल मन कीन्ह्यो ध्यानहिं ❋ रसना रटत कृष्ण के नामहिं ॥
रोम रोम यहि बिधि शर मारा ❋ बहै प्रबाह रुधिर की धारा ॥
तीक्षण अपर बिशिख कर धर्यो ❋ ते शर कठिन मौलिपर पर्यो ॥

दोहा–भीषमको बल थकितभो, मारत अर्जुन तीर ।
तिलभरि देह न देखिये, झाँझरभयो शरीर ॥

रथते गिरे गङ्गसुत धरणी ❋ जगमहँ रही सदा यह करणी ॥

देखत सब कौरव गण धाये ❀ हाहा शब्दाघात सुनाये ॥
द्रोण करण दुश्शासन अत्री ❀ धनुष डारि रोवहि सब क्षत्री ॥
करुणा करत कहत यह बैनहिं ❀ अहो पितामह राखहु सैनहिं ॥
कुरुपति तब छांड्यो निजस्यन्दन ❀ आये जहँ गंगा के नन्दन ॥
सेनापति ह्वै मुकुट बँधायो ❀ आपु कृष्णकर अस्त्र गहायो ॥
जीति स्वयम्बर कन्या लीन्ह्यो ❀ दोऊ बन्धु ब्याह करि दीन्ह्यो ॥
परशुराम ते युद्ध बिचार्यो ❀ उठिकै बाण धनुष कर धार्यो ॥
रोदन करि यहिभांति बखानत ❀ बिधि चरित्र कोऊ नहिं जानत ॥
मोरे जिय यह बड़ो अँदेशो ❀ पाण्डव सहित जीतिहों केशो ॥
तुम पायो क्षत्री के धर्महि ❀ यह सब दोष हमारे कर्महि ॥

दोहा—भीषम घेरे खेतमा, रोवत सबै नरेश ।
सबलसिंहचौहानकह, चल्योआपुहृषिकेश ॥

इति श्रीमहाभारतेभीष्मपर्व भाषाकृतेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

धर्मराज माधव सँग लीन्ह्यो ❀ रथते उतरि गमन तब कीन्ह्यो ॥
अर्जुन और भीम सब राजा ❀ चले पितामह देखन काजा ॥
यहि अवसर गंगासुत बोले ❀ सुन्दर अधर मनोहर डोले ॥
शरशय्या सब अंग बिराजै ❀ लटकत शीश भूमिपर राजै ॥
कुरुपति कहो हमारो कीजै ❀ उत्तम भाँति शिरहनो दीजै ॥
कोमल तूल पटम्बर भर्यऊ ❀ आनि तुरत शिरहानो धर्यऊ ॥
तब भीषम भाष्यो यह बानी ❀ दुर्योधन तुम बात न जानी ॥
अर्जुन समय बिचारहु मन में ❀ उचित शिरहनो दीजै तन में ॥
सुनि अर्जुन शारँग कर लीन्ह्यो ❀ तीनि बाण संधारण कीन्ह्यो ॥
सन्मुख ह्वै ललाट महँ मार्यो ❀ भेदि शीशशर निकरि सो पार्यो ॥

दोहा—फोंक बोधि शर पार होइ, गड़्यो भूमिमेंआन ।
यहिबिधिशरशय्यादियो, भारत के परधान ॥

धर्मराज बहु रोदन कीन्हो ❀ भीषमसों कछु कहबे लीन्हा ॥
केवल दुर्योधन के पापहि ❀ परशुराम दीन्हो रण शापहि ॥
ताते भयो मृत्यु को कारण ❀ सन्मुख दरश करहु जगतारण ॥
हँसि भीषम यहि भाँति बखानी ❀ साधु नरेश परम सज्ञानी ॥

दक्षिणायन रवि घातक कहिये ❀ ताते शरशय्या मों रहिये ॥
उतरायण रवि होइ हैं जबहीं ❀ करिहौं देहत्याग निज तबहीं ॥
तबलगि क्षत्रिनको बल पेखहिं ❀ भारतयुद्ध नयन निजदेखहिं ॥
दुर्योधन अरु धर्म नरेशहिं ❀ भीषम कछु भाष्यो उपदेशहिं ॥
अजहुँ कीजिये कहा हमारो ❀ कुरुपाण्डव मिलिप्रीति बिचारो ॥
बाँटि राज्य लीजै दोउ भाई ❀ बसुधा भोग करहु सुख पाई ॥

दोहा-बिग्रह कुलको अन्तहै, अजहुँ, कीजिये प्रीति ।
जहाँधर्म तहँकृष्णहैं, जहाँ कृष्ण तहँ जीति ॥

जाके सखा आपु जगतारण ❀ तासों युद्ध करहु क्यहि कारण ॥
सुनिकै दुर्योधन यह कह्यो ❀ यह प्रण मैं अपने मन गह्यो ॥
सुई अग्र महि देब न औरहि ❀ करौं युद्ध भारत रण ठौरहि ॥
यह सुनिकै भीषम यह कही ❀ हरिकी शरण जाइये सही ॥
जो रण को कुरुपति मन लावहु ❀ करणबीरशिर मुकुट बँधावहु ॥
द्रोण करण सेना अधिकारी ❀ अर्जुन के समान धनुधारी ॥
पारथ नहिं जातहिं अपने बल ❀ जानहिं कृष्ण करहिं रणमें छल ॥
जहँ भीषम शरशय्या लीन्ह्यो ❀ तम्बू एक खड़ो करि दीन्ह्यो ॥
गंगासुत कीन्हो जब भवनहिं ❀ धर्मराज आये तब भवनहिं ॥

दोहा-पाण्डवदल आनन्द मन, जीति चले मैदान ।
अर्जुन के रथ सारथी, सुन्दर श्रीभगवान ॥

धेनु सहस्र दिये जो दानहिं ❀ जो फल सबतीरथ अस्नानहिं ॥
जो फल होइ साधु के दरशे ❀ जो फल शम्भुनाथ के परशे ॥
जो फल ब्रत एकादशि कीन्हे ❀ जो फल होइ भूमि के दीन्हे ॥
जो फल रण में प्राण गँवाये ❀ जो फल होइ ब्रह्म के ध्याये ॥
जो फल कोटिन बिप्र जेवाँये ❀ सो फल भारत सुने सुनाये ॥
व्यासदेव भारत के कर्त्ता ❀ आदि पुण्य पापके हर्त्ता ॥

दोहा-रामसिंह गोबिन्द हरि, कीजै सदा बखान ।
भाषा भीषमपर्ब कह, सबलसिंह चौहान ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वभाषासबलसिंहचौहानविरचितेभीष्मार्जुनयुद्धवर्णननामाष्टादशोऽध्यायः॥१८॥

इति भीष्मपर्व समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा ।

द्रोणपर्व ।

श्रीगुरुचरण दण्डवत करिये ❀ जेहि प्रसाद भवसागर तरिये ॥
बन्दौं रामचरण रघुनन्दन ❀ महाबीर दशकन्ध निकन्दन ॥
दीरघबाहु कमल दल लोचन ❀ गणिका ब्याध अहल्या मोचन ॥
ब्यासदेव कलियुग अघहरता ❀ चारि बेद श्रीभारत करता ॥
श्रोता जनमेजय गुण सागर ❀ महाबीर कुरुबंश उजागर ॥
बैशम्पायन ऋषिबर ज्ञानी ❀ बक्ता महा सुधारस बानी ॥
सत्रह शत सत्ताइस जाने ❀ गनि सम्बत यहि भाँति बखाने ॥
पुनि बुधवार घरी शुभ जाने ❀ जादिन लङ्का राम पयाने ॥
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❀ दशमी तिथिकरि ग्रन्थ प्रकाशा ॥
उत्तम नगर सुरचना छाजा ❀ भूपति मित्रसेन तहँ राजा ॥

दोहा—रघुपति चरण मनाइकै, ब्यासदेव धरि ध्यान ।
द्रोणपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

जब भीषम शरशय्या लीन्हेउ ❀ दुर्योधन मन बहुदुख कीन्हेउ ॥
अब काको सेनापति कीजै ❀ जाके बल भारत करि लीजै ॥
कही करण राजा सुनि लीजै ❀ जो मोकहँ सेनापति काजै ॥
अर्जुन भीम खेत महँ मारौं ❀ सेना सहित न एक उबारौं ॥
सो सुनि द्रोणपुत्र मन डोला ❀ नृपसों क्रोधवन्त ह्वै बोला ॥
सूर्यपुत्र सेनापति करिहौ ❀ ताके बल पाण्डव सों लरिहौ ॥
मोरे शिर जो मुकुट बँधैये ❀ अबहीं जयतिपत्र नृप पैये ॥
सो सुनि करण क्रोध युत भयऊ ❀ कम्पित अधर कहन कछु लयऊ ॥

क्षणमहँ तो कहँ सकौं सँहारण ❋ हो गुरुपुत्र सहौं तेहि कारण ॥
यह सुनि नयन अरुण होइ आयउ ❋ लैकर खड्ग कहन मन लायउ ॥

दोहा—अरध रथी भीषम गनो, कुल हीनो जग जान।
सेनापति तोकहँ किये, क्षत्रिन को अपमान॥

क्रोधित करण खड्ग लै धायउ ❋ पकरि बांह राजा समुझायउ ॥
अहो मित्र अब समय बिचारो ❋ तजिके कलह शत्रु संहारो ॥
सब मिलि यहै मन्त्र ठहरैये ❋ कहो जाइ तेहि मुकुट बँधैये ॥
कह्यो करण राजा सुनि लीजै ❋ सेनापति गुरु द्रोणहिं कीजै ॥
महारथी अरु अस्त्रहि जानत ❋ कुरु पाण्डव दोऊ दल मानत ॥
सुनि शकुनी के मनमों भायउ ❋ साधु करण हित बात सुनायउ ॥
जयद्रथ कृपरु शल्य ते भाखो ❋ दल कर भार द्रोण शिर राखो ॥
जब जानी सबके मन माने ❋ दुर्योधन सुनि आपु बखाने ॥
गुरू होहु सेनाकर रक्षक ❋ भारत युद्ध करो परतक्षक ॥
यह कहि आनि मुकुट शिरदीन्हेउ ❋ बहु बिधिबिप्र बेद धुनि कीन्हेउ ॥

दोहा—कहो द्रोण राजा सुनो, कोटि आनि प्रशुराम।
पांच दिवस भारत रचौं, करौं घोर संग्राम ॥

जो कोटिन पाण्डव दल आवैं ❋ मारों सबहिं जान नहिं पावैं ॥
जो अर्जुनहिं जुदा करि पावौं ❋ बांधि युधिष्ठिर नृप लै आवौं ॥
जब गुरु द्रोण कहे अस लीन्हेउ ❋ दुर्योधन प्रति उत्तर दीन्हेउ ॥
जो आपुहि रणको मन लाये ❋ कोटिन अर्जुन मारि गिराये ॥
तुमसों सबहिं सीखिये शायक ❋ पारथ कहा भये यहि लायक ॥
हँसिके द्रोण कही यह बानी ❋ राजा तुम यह बात न जानी ॥
महारथी जगमों है पारथ ❋ नन्दि घोषरथ श्रीपति सारथ ॥
धनु गाण्डीव अगिनिजेहि दीन्हे ❋ अक्षय त्रोण बरुण सों लीन्हे ॥
सात बर्ष सुरपुरहि सिधाये ❋ देव अस्त्र सब सिखिके आये ॥
पुर बिराट रण कियो भयङ्कर ❋ बनोबास महँ जीतो शङ्कर ॥

दोहा—शरसों सागर बाँधिकै, जीति लियो हनुमान ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, नहिं पारथहिं समान ॥

ताते यह उपाय चित धरिये ❋ पारथ बिलग कटकते करिये ॥
कही सुशर्मा गुरु सुनि लीजै ❋ यहि कामहिं आज्ञा मोहिं दीजै ॥
परन करत पारथ संग्रामा ❋ लै जैहौं निश्चय निजधामा ॥
चौदह सहस रथी धनुधारी ❋ बंश प्रकाशन के अधिकारी ॥
जो अर्जुन कहँ पीठि दिखावैं ❋ हमसब बास अधोगति पावैं ॥
यह सुनि दुर्योधन सुख मान्यो ❋ अपने परम हितूकै जान्यो ॥
उठ्यो सुशर्मा आयो तहँवाँ ❋ पाण्डव दलमहँ पारथ जहँवाँ ॥
हरि अर्जुन बैठे यक सङ्गा ❋ कहत कथा भीषम रणरङ्गा ॥
यहि अन्तर इन दर्शन दीन्ह्यो ❋ पारथ उठि सम्भाषण कीन्ह्यो ॥
आदर कै आसन बैठायो ❋ भूप सुशर्मा बचन सुनायो ॥

दोहा—परन करत पारथ तुम्हें, युद्ध करन के हेत ।
करहु और जो चित्त महँ, शपथ कृष्णकोदेत ॥

पारथ कोपवन्त तब कह्यो ❋ हाँकत मोहिं कहसि धनु गह्यो ॥
मानो परन कालिह रण करिहो ❋ ह्वै पतंग दीपक महँ परिहो ॥
यह सुनि भूप सुशर्मा आये ❋ कुरुपति सों सब बात जनाये ॥
प्रात होत दोऊ दल साजे ❋ शब्द अघात दमामे बाजे ॥
गज काले पर्बत से भारी ❋ पाँव जँजीर नयन अँधियारी ॥
रथ पर रथी सरिस छबि बनी ❋ जगमगात हीरन की कनी ॥
अरु अनेक असवार महाबल ❋ उदधि समान पियादन के दल ॥
दुर्योधन अस कहिबे लागे ❋ सेनापति द्रोणहि के आगे ॥
सब मिलि एकमतो ह्वै लरिये ❋ बलसों बाँधि युधिष्ठिर धरिये ॥
पाण्डव दल आये मैदाना ❋ तब पारथ यहिभाँति बखाना ॥

दोहा—आयसु हमरो सुनिय सब, अबहमकरहिंपयान ।
सावधान क्षत्री सबै, लरहु द्रोण मैदान ॥

धर्मराय सुनिये कहि पारथ ❋ रणमो द्रोणसरिस पुरुषारथ ॥
तीनिलोक जो अस्त्रहि धरई ❋ गुरू द्रोण सबको बस करई ॥
धनुबिद्या भृगुपति जेहि दीन्ह्यो ❋ आपु समान महारथि कीन्ह्यो ॥
भये द्रोण गुरु सेनारक्षक ❋ महा युद्ध होई परतक्षक ॥
भीमादिक क्षत्री तेहि कहिये ❋ सावधान नृप के सँग रहिये ॥
शूरसेन है बड़ो धनुर्द्धर ❋ जौलों रहै गहे शारँग शर ॥
तौलगि नृप रण को मन दीजै ❋ नातरु गवन भवन को कीजै ॥
हम अब जाहिं युद्ध के कारण ❋ शिशपकागण करहिं सँहारण ॥

दोहा—अस कहिकै पारथ चले, सारथि श्रीभगवान ।
दश योजन दक्षिण दिशा, समर केर मैदान ॥

नन्दिघोष रथ देखन आये ❋ सेना सहित सुशर्मा धाये ॥
चौदह सहस रथी सँग लीन्हे ❋ बाण बृष्टि पारथ पर कीन्हे ॥
तब अर्जुन मारे तीक्ष्ण शर ❋ होन लगी अतिमारु परस्पर ॥
शिशपकागण के शर छूटहिं ❋ मानहु बज्र गगन ते टूटहिं ॥
अर्जुन सों लोहा उत बाजो ❋ इतहि द्रोण गुरु सेना साजो ॥
पहिरि सनाह खङ्ग कटि बांधे ❋ युगल तुणीर बिराजत कांधे ॥
शीश टोप हाथन दस्ताने ❋ जनु बानरगण सों अनुमाने ॥
बख्तर झलकैं जोशन राजैं ❋ जिरह मेखला सरिस बिराजैं ॥
चौसा चारु आनि कै दीन्हे ❋ गदा लयो साजहि दृढ़ कीन्हे ॥
भूरिश्रवा करण सम क्षत्री ❋ कृतबर्मा अश्वथामा अत्री ॥

दोहा—कोऊ काञ्चन रथ चढ़े, कोऊ चपल तुरंग ।
दुर्योधन रथ साजिकै, शतभाइन लै संग ॥

श्याम तुरङ्ग द्रोण रथ जोरे ❋ पवन बेग वे चारिउ घोरे ॥
जानत हैं सारथि के मनकी ❋ बढ़त चलत तकि छायसुतनकी ॥
पाखर करी समे छबि छाजे ❋ हंस ग्रीष्म उल्लास बिराजे ॥
चारिउ चरण नालकी चमकनि ❋ ज्यों घनमें दामिनि सी दमकनि ॥

आगे कुञ्जर शोभा पाये ❀ प्राबृट मेघ भूमि पर आये ॥
चमर ढरत चौरासी बाजत ❀ श्वेतदशन अति सरिसबिराजत ॥
फेरत फरी खड्ग कर चमकत ❀ पग के भार मेदिनी धमकत ॥
ता पाछे असवारन को दल ❀ शेल सांग कर लिये महाबल ॥
कोटिन रथी महाबल भारी ❀ क्षत्री शूर बड़े धनुधारी ॥

दोहा—महारथी सब साथ लै, कीन्हो द्रोण पयान ।
दुर्योधन राजा चले, गरद लोपिगे भान ॥

पाण्डव दल आये मैदानहिं ❀ आगे भीम गहे धनुबानहिं ॥
कुञ्जर सों कुञ्जर लै जोरहिं ❀ दशनघाव मुख नेकु न मोरहिं ॥
ठोकर अरु बृषोरसों मारहिं ❀ गहिकर शुण्डरथहि फटकारहिं ॥
पैदर सों पैदर अरुझाने ❀ महाबीर सब बांधे बाने ॥
असवारहि असवार प्रचारहि ❀ सन्मुख जुरत खड्ग शिरझारहिं ॥
लै कर धनुष रथी रण मण्डे ❀ बाणन ते अरिसैन्य बिहण्डे ॥
आगे द्रोण पेलि रथ आये ❀ कृपा करण क्रोधित ह्वै धाये ॥
भूरिश्रवा अलम्बुष क्षत्री ❀ जान्यो कृतबर्मा से अत्री ॥
भीमसेन औ द्रोणहि भारथ ❀ महायुद्ध कीन्हो पुरुषारथ ॥
भूरिश्रवा सात्यकिहि दोऊ ❀ लड़त हारि मानत नहिं कोऊ ॥

दोहा—करणसाथअभिमन्युभिर, कीन्हेउशरसंधान ।
द्रुपद राउ जयदर्थ सों, महाभूरि मैदान ॥

कृपसों नकुल करहिं संग्रामा ❀ दोऊ बीर युद्ध जय कामा ॥
भूप बिराट सुशर्मा क्षत्री ❀ उतर कुमार अलम्बुष अत्री ॥
धृष्टद्युम्न कृतबर्मा सङ्गा ❀ शकुनी सहदेवहि रणरङ्गा ॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❀ जुरे शिखण्डि गहे शारंगशर ॥
घटउत्कच कीन्हो रण ठाना ❀ शल्य नरेश संग मैदाना ॥
काशिराज जम्भन को भारथ ❀ कीन्हो खेत महापुरुषारथ ॥
पांच कुमार द्रौपदिहि जाये ❀ ते शशिबिन्दु युद्ध अरुझाये ॥

जोर जोर अरुझे सब जबहीं ❋ धायो कोपि द्रोण गुरु तबहीं ॥
अतिप्रचण्ड धनु शर कर लीन्हे ❋ तीक्षण बाण फोंक शर दीन्हे ॥

दोहा—पेलिफौज आये तहां, जहां धर्म सों राज ।
सबलसिंह चौहान कहँ, द्रोण कियोयहकाज ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाकृते द्रोणपर्व प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सेना सहित द्रोण जब आये ❋ धर्मराज कहँ देखन पाये ॥
परी भीर राजा पर जाने ❋ शूरसेन तब शारंग ताने ॥
धर्मराय कहँ पाछे घाल्यो ❋ क्रोधवन्त आगे रथ चाल्यो ॥
बहुविधि बाणबुन्द झरिलायो ❋ तीन सहस रथ मारि गिरायो ॥
बहुरि अनेक चलाये साँगी ❋ कुञ्जर गिरे सहित चौरांगी ॥
हय पैदल जो आगे पाये ❋ शूरसेन सब मार गिराये ॥
अटकी अनी देखि जब पाये ❋ तब गुरु द्रोण क्रोधकै धाये ॥
आठ बाण तीक्षण कर लीन्हे ❋ ते शर चोट शीशपर कीन्हे ॥
शूरसेन शर सबहि सँभारे ❋ बाण पचीस द्रोण उर मारे ॥
महाबीर दोउ बड़े धनुर्द्धर ❋ होनलागि तब मारु परस्पर ॥

दोहा—शूरसेन नृप द्रोणसों, भयो जोर मैदान ।
जलथलभारतभूमिसब, शर छायो असमान ॥

क्रोधित द्रोण सहस शर मारे ❋ रथ के चारि अश्व संहारे ॥
सारथि युद्धखेत महँ आये ❋ रथते उतरि शैल लै धाये ॥
तबहिं शैल नृप करते छूट्यो ❋ लाग्यो बाण बीचते टूट्यो ॥
शूरसेन तब खड्ग प्रहारे ❋ क्रुद्धित द्रोण तीक्ष्ण शर मारे ॥
टूटि शीश धरणी पर पर्‌यो ❋ झलकत मुकुट जरायन जर्‌यो ॥
शूरसेन जूझे मैदाना ❋ धर्मराय लीन्हो धनु बाना ॥
दश शर भूप क्रोध करि छांटे ❋ ते गुरु द्रोण बीचही काटे ॥
लगे द्रोणगुरु मनहिं बिचारन ❋ धर्मराय बधिये केहि कारन ॥
रुधिर परे बसुधा सब जरई ❋ अर्जुन सुनै प्रलय पुनि करई ॥
ताते गहि बन्धन अब कीजै ❋ दुर्योधन आगे करिदीजै ॥

दोहा—अस गुनि धाये द्रोण गुरु, नागपाश लै हाथ ।
धर्मराय रथ तजि भजे, रहा न कोऊ साथ ॥

देखि द्रोण राजा कहँ लीन्हे ❁ डारहि पाश चित्त महँ कीन्हे ॥
अब यह कथा तहां चलि आई ❁ पारथ सों जहँ होत लड़ाई ॥
जब तिन कीन्हो शर संधाना ❁ तब श्रीहरि यह बात बखाना ॥
अर्जुन मेरो जिय गहवर्‌यो ❁ धर्मराज पर संकट पर्‌यो ॥
मारहु बाण गहरु केहि काजा ❁ बाँधत द्रोण युधिष्ठिर राजा ॥
अर्जुन नयन अरुण ह्वै आये ❁ मनब्यापक शर तुरत चलाये ॥
धावहु बाण बिलम्ब न लावहु ❁ संकट ते धर्मजहि छुटावहु ॥
द्रोण गुरू कर पाश उठाये ❁ तेहि अन्तर पारथ शर आये ॥
बाण उदोत होत हैं कैसे ❁ प्रलयकाल बड़वानल जैसे ॥
दोऊ कर भेदन शर कर्‌यो ❁ नागपाश धरणी गिरिपर्‌यो ॥

दोहा—दश शर लाग्यो द्रोणउर, भेदन कीन्हो अङ्ग ।
रथ सारथि चूरण किये, जूझे चारि तुरङ्ग ॥

अर्जुन बाण द्रोण जब लेखो ❁ गरुड़ वज्र शर माथे पेखो ॥
कनक फोंक लागे बहु दामा ❁ अङ्कित है पारथ को नामा ॥
देखत बाण जानि गुरु मनमों ❁ पारथ फिरि आयो यहि रनमों ॥
तबहिं द्रोण फिरि कीन्हों गवना ❁ धर्मराज पहुँचे निज भवना ॥
कौरव दल जो खेतहि पाये ❁ चल्यो चल्यो करि अर्जुन आये ॥
फिरे द्रोण लीन्हे सब सैना ❁ कुरुपति निरखि कह्यो तब बैना ॥
धर्मराय कहँ बांधन धाये ❁ काह गुरू फिरिकै तुम आये ॥
सुनि तब द्रोण कहै मनलाये ❁ असे हने अर्जुन शर आये ॥
अर्जुन शर ते चेत न धर्‌यो ❁ करते पाश भूमि गिरिपर्‌यो ॥
सन्ध्या जानि किये तब गवना ❁ कुरु पाण्डव आये फिरि भवना ॥

दोहा—उभय सैन कुरु पाण्डव, सब आये निजधाम ।
अर्जुन सावकाश नाहिं, राति दिवस संग्राम ॥

कुरुपति तबहिं द्रोण पहँ आये ❀ बैठि बात यहि भांति जनाये ॥
सबके गुरु तुम बीर महाबल ❀ पाण्डव नाश कहा करिये छल॥
जो आपुहि रणको मन दीजै ❀ क्षणहिं पांच पाण्डवबध कीजै ॥
कीजै कहा कहतु यह बातन ❀ राजा सुनिये कथा पुरातन ॥
जो कीन्ही है अर्जुन करणी ❀ ऐसो बीर न दूसर धरणी ॥
द्रुपद नरेश स्वयम्बर ठानो ❀ लक्ष नरेश बरण कै आनो ॥
हम सब गये हुते तव साथा ❀ हलधर हते सहित यदुनाथा ॥
यहि बिधि राजा यन्त्र बनाये ❀ नभ महँ काञ्चन मीन लगाये ॥
नयन बनी हीरन की कनी ❀ कोइ क्षत्रिन की रही न मनी ॥
द्रुपद नरेश आपु उठि भाष्यो ❀ बीरहु कहां गये बल भाष्यो ॥

दोहा—जो कोऊ भेदन करै, मीन नयन महँ बान ।
यह कन्या सोई बरै, कहत बचन परमान ॥

सब क्षत्री सुनि मौनहिं गह्यो ❀ पारथ बीर सभा महँ रह्यो ॥
है द्विजरूप कोऊ नहिं चीन्ह्यो ❀ शर अरु धनुष करणसों लीन्ह्यो ॥
धरिकै पांव खड्ग गहि बाना ❀ खैंचि धनुष तब किय संधाना ॥
तुम सब मिलि मिथ्याकै भाख्यो ❀ दीन बन्धु पारथ प्रण राख्यो ॥
करण धनुष बल कोउ न पूजो ❀ सुरपति धनुष दियो तब दूजो ॥
बहुरि धनुष लै शर संधाना ❀ मार्‍यो मीन नयन तकि बाना ॥
गिरेहु कराह अनत नहिं गया ❀ तब सबके प्रतीति जिय भयो ॥
भूषण बसन बिचित्र सँवारे ❀ द्रुपद सुता जयमालहि डारे ॥
कन्या निरखि लोभ चित आये ❀ तुम शकुनी कहँ दूत पठाये ॥

दोहा—धन अनेक द्विज लीजिये, बिप्रबंश कुरुब्याह।
द्रुपदसुता कन्या रतन, कुरुपति कीन्हि चाह॥

क्रोधवन्त होइ पारथ भाख्यो ❀ शकुनी बधउँ कवन तोहिं राख्यो॥
भानुमती रानी म्वहिं दीजै ❀ सम्पति सब कुबेर की लीजै ॥
सो सुनि भूप क्रोध तुम कीन्हो ❀ करण आदि कहँ आज्ञा दीन्हो ॥

पुनि सुनिकै क्षत्री सब धाये ❀ पारथ एक सबै बिचलाये ॥
जरासन्ध होते बल माहीं ❀ कोऊ छुइ न सको है छाहीं ॥
हमसब मिलिकै अरुझहि गह्यो ❀ पै काहू सन खेत न रह्यो ॥
क्षत्री सब गये बीरज खोई ❀ बानावरि नहि पूज्यो कोई ॥
दुर्योधन तब कहिबे लीन्हों ❀ गुरुसन बिनय जोरिकर कीन्हों ॥
आपुहि इहां काज चित दीजे ❀ पाण्डव सबहिं मारि यश लीजे ॥
कह्यो द्रोण राजा सों बचना ❀ कालिह प्रात कीजै यह रचना ॥

दोहा-चक्रव्यूह निर्माण करि, करहु युद्ध यह रूप ।
बिन पारथ यह जगत मों, भेद न जानहिं भूप ॥

निशा मध्य महँ गढ़ निर्मावा ❀ जाको अन्त कोउ नहि पावा ॥
सात खेल देखत मन भाये ❀ चक्राङ्कित बहु ब्यूह बनाये ॥
सात द्वार तामहँ निर्मावा ❀ दल बल सहित भूप सुखपावा ॥
प्रथम द्रोण जयद्रथकहँ राखो ❀ सेन अनेक जातनहिं भाखो ॥
दूजो द्वार द्रोण सम अत्री ❀ साथ अनेक महाबल क्षत्री ॥
तीजो घोर करण दृढ़ कीन्ह्यो ❀ रथी समूह साथ महँ लीन्ह्यो ॥
चौथे कृपा लिये बहु सङ्गा ❀ पँचवे द्रोणपुत्र रण रङ्गा ॥
छठवें घोर बीर बहु अहई ❀ भूरिश्रवा आपु तहँ रहई ॥
सतयें घोर कुरुपतिहि साजो ❀ शतबान्धव नृपसङ्ग बिराजो ॥
तीनि सहस राजा नृप साथा ❀ सावधान अत्री गहि हाथा ॥

दोहा-सातद्वार को दृढ़ कियो, चक्रव्यूह करि साज ।
कुरुपति पठये दूत तब, जहाँ धर्म सों राज ॥

दूत जाइ ठाढ़ो भो द्वारा ❀ जाइ जनावहु कहि प्रतिहारा ॥
द्वारपाल जब जाय जनाये ❀ धर्मराय तेहि निकट बुलाये ॥
आय दूत नावा तब माथा ❀ लाग्यो कहन जोरिकै हाथा ॥
चक्रब्यूह रचि द्रोण बनाये ❀ ता कारण नृप मोहिं पठाये ॥
उठिकै ब्यूह भेद नृप कीजै ❀ नातरु जयतिपत्र लिखि दीजै ॥

जो नहिं लरो रहो गहि मवना ❀ हारो युद्ध करो बन गवना ॥
यह कहि दूत तुरत चलिआये ❀ धर्मराज सब बीर बुलाये ॥
सबसों नृप यहि भाँति बखानो ❀ चक्रब्यूह रण तुम कोउ जानो ॥
जो कोई जानत तो कहिये ❀ ब्यूहभेद अब कीन्हो चहिये ॥
जो नहिं भेद ब्यूह को जानो ❀ युद्ध हारि गृह करो पयानो ॥

दोहा—यह सुनिकै सब मिलि कही, धर्मराय सों बैन।
चक्रब्यूह रण नाहिं सुनो, काहु न देखो नैन॥

जब बीरन यहि भांति जनाये ❀ सुनिकै धर्मराज दुख पाये ॥
हरि रचना यह कीन्ह्यो भारथ ❀ सब उद्यम अब भयो अकारथ ॥
चारि बन्धु सेना सब सङ्गा ❀ पारथ बिना भयो रण भङ्गा ॥
भाष्यो भूप देखि सहदेवा ❀ जानत कोउ ब्यूह का भेवा ॥
सो सुनिकै सहदेव बखानो ❀ तीनि बिना चाथो नहिं जानो ॥
जानत द्रोण कि अर्जुन भाई ❀ की प्रद्युम्न यह जान लराई ॥
भूप युधिष्ठिर कहिबे लोन्हे ❀ शिशपका गण मोहिं दुखदीन्हे ॥
भूप सुशर्मा द्रोण पठाये ❀ छलकै अर्जुन को अटकाये ॥
जब राजा हिय शोक जनाये ❀ सभामध्य अभिमनु तब आये ॥
दोउ करजोरि कहा तब राजहिं ❀ आपु शोच कीजै केहि काजहिं ॥

दोहा—चक्रब्यूह रचि द्रोण गुरु, कियो चहत संग्राम।
आजु दिवस पारथ नहीं, भयो बिधाता बाम॥

अभिमनु कही सुनो तुम राजा ❀ अब बिलम्ब कीजै केहि काजा ॥
ब्यूह भेद मैं जानत अहऊँ ❀ सो बृतान्त आपुते कहऊँ ॥
छहों द्वार भेदन कर ज्ञाना ❀ सतवां द्वार भेद नहिं जाना ॥
यम अरु इन्द्र बरुण जो रक्षक ❀ छहौ द्वार तोरौं परतक्षक ॥
सतवां द्वार भेद नहिं जाना ❀ सुनि राजा यहि भाँति बखाना ॥
भीमादिक कोउ भेद न पाये ❀ ब्यूह युद्ध केहि तुमहिं सिखाये ॥
अभिमनु कही भूप के पासा ❀ कीन्हे जबहिं गर्भ हम बासा ॥

प्रसव काल माता दुख पाई ❋ तबहिं पिता यह व्यूह सुनाई ॥
पारथ कही सुभद्रा आगे ❋ गर्भ माँझ सुनिबे हम लागे ॥
छठौ द्वार को भेद बखाना ❋ सो हम सब अपने जिय जाना ॥

दोहा—सातों द्वारके कहतही, हम लीन्हें अवतार ।
गीत नाद आनन्दते, मगन भये परिवार ॥

ताते अपर भेद नहिं पाये ❋ सत्य बचन नृप तुम्हैं सुनाये ॥
तुम्हैं कवन बिधि आज्ञा दीजै ❋ व्यूह युद्ध बीरन ते कीजै ॥
पन्द्रह वर्ष बीर सुकुमारा ❋ तुम हमसबके प्राण अधारा ॥
सुनिअभिमनुयहि भांति बखाना ❋ नृप हम कहँ बालककरि जाना ॥
अर्जुन पुत्र सहोद्रा नन्दन ❋ आजु करौं नृपसेन निकन्दन ॥
द्रोण कर्ण सब बीर घनेरे ❋ आजु देखिहहु भुजबल मेरे ॥
मारि सबै सरदार गिरावों ❋ तब अर्जुन को पुत्र कहावों ॥
बाधौं भुजबल बली पुरन्दर ❋ सेना उदधि होइ किमि मन्दर ॥
यहिबिधि बाणबुन्द झरिलैहों ❋ शोणित नदी अथाह बहैहों ॥
शोच करत नृप आपु अकारथ ❋ अब देखो मेरो पुरुषारथ ॥

दोहा—भीमसेन ऐसी कही, राजा सुनहु बिचार ।
छहौं द्वार भेदन कहेउ, सतवां मो शिर भार ॥

क्षत्री सबहि अस्त्र गहि हाथा ❋ पेलि जाहिं अभिमनु के साथा ॥
सतवां द्वार पलक महँ मोरौं ❋ गदा घाव सों पर्वत फोरौं ॥
भीमसेन यहि भाँति बखाने ❋ सो सुनि धर्मराय मनमाने ॥
साजेउ सेन दमामा बाजे ❋ बांधे अस्त्र बीरगण गाजे ॥
भांति भांति बैरख फहराने ❋ सुर बिमान को खोज उड़ाने ॥
आगे कुञ्जर शोभा पाये ❋ सावन मेघ उनै जनु आये ॥
चारो पाट बहत मदधारा ❋ जिमि झरना जल बहै पहारा ॥
श्वेत दशन कबि किये बिचारा ❋ कज्जल गिरि जनु गंग किधारा ॥
अंकुशलगे चलत गज ठनकत ❋ ठाकर पाँव लगत हय हनकत ॥

नयनन मों दीन्हीं अँधियारी ❀ देखत रूप शत्रु भयकारी ॥

दोहा--तुङ्गस्थल अतिक्रोध में, राजत ऊर्ध्व भुशुण्ड ।
भूमि भ्रमै पर्वत मनहुँ, भये झुण्ड के झुण्ड ॥

तेहि पीछे पैदल दल राजै ❀ बिविध अस्त्र करमाहँ विराजै ॥
चले अश्व असवार फँदावत ❀ नृत्यकरत मानहुँ नट आवत ॥
चले सारथी सब रथ हांकत ❀ युद्ध हेत क्षत्री रण डांकत ॥
सैन सहित योजित रथ आये ❀ चक्रब्यूह जहँ द्रोण बनाये ॥
देखत सबहिं अचम्भौ मानो ❀ कहां द्वार कछु जात न जानो ॥
व्यूह अन्त कछु जानि न पैये ❀ कैसे कै रणमो मन लैये ॥
अटकी अनी देखि जब जाने ❀ तब अभिमनु यहिभाँति बखाने ॥
हम ह्वबै सबही के आगे ❀ तुम सब आवहु पाछे लागे ॥
यह कहिकै हांकन रथ चह्यो ❀ तब करजोरि सारथी कह्यो ॥
तुम बालक कैसे रण करिहो ❀ द्रोणी द्रोण करण सो लरिहो ॥

दोहा--सुनतबचनअभिमनुकही, सुनुसारथिमतिहीन ।
कपिगणसँग रघुनाथ के, कुश एकै बश कीन ॥

बालक करि मोकहँ मति जानहु ❀ हांकहु रथहि कहा मम मानहु ॥
अस सुनिकै सारथि रथ हाँक्यो ❀ डोली धरणि शेष शिर कांप्यो ॥
भीमादिक रणभूमिहि आयो ❀ सिन्धुराज बहु बाण चलायो ॥
इतते सब क्षत्रिन शर मारे ❀ जय के हेत बीर संहारे ॥
अभिमनु कोपि लगे शर मारन ❀ शतते सहस सहस्र हजारन ॥
तब जयदर्थ कीन्हि प्रभुताई ❀ जल थल सबहिं रहे शर छाई ॥
अभिमनु महामारु जब जाने ❀ तीक्षण बाण कोपि संधाने ॥
विद्युतसम शशि गण परकाशे ❀ चमकत दृष्टि नयन को नाशे ॥

दोहा--पलक परत सब बीरको, रथ हाँको रथवान ।
सबलसिंह चौहान कह, चक्रब्यूह मैदान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाकृते द्रोणपर्व द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अभिमनु व्यूह भितर जब आये ❀ तब जयदर्थ सबहिं अटकाये ॥
रथते उतरि भीम तब धाये ❀ पै जयदर्थ मारि बिचलाये ॥
द्रुपद बिराट क्रोध कै धाये ❀ धर्मपुत्र सात्यकि सब आये ॥
नकुल बीर सहदेव रिसाने ❀ धृष्टद्युम्न रण को अरुझाने ॥
इत सब बीर क्रोध रणमराञ्यो ❀ सिन्धुराजरार सबहि बिहराञ्यो ॥
गदा हाथ गहि भीम भयंकर ❀ प्रलयकालमहँ मानहु शङ्कर ॥
दैकरि हाँक क्रोधकरि धाये ❀ मनहु घटा घनमहँ घहराये ॥
तब जयदर्थ कीन्ह संधाना ❀ भीम अङ्ग मारे शत बाना ॥
बाण लग्यो तब मोह जनायो ❀ तब सारथि रथ फेरि चलायो ॥
दशशर धर्मराज उर मार्‍यो ❀ नकुल हृदय बहु बाण प्रहार्‍यो ॥

दोहा—नृपति जयद्रथ क्रोध करि, मारे तीक्षण बान ।
सबै बीर मोहित भये, भारत के मैदान ॥

धर्म राज मूर्च्छा तजि जागे ❀ तब सहदेवहि बूझन लागे ॥
यह कछु भेद जानि नहिं पाये ❀ नृप जयदर्थ सबहिं अटकाये ॥
आदि कथा सहदेव सुनाये ❀ जेहि बिधि शङ्कर सों बर पाये ॥
तब दुर्योधन ताहि पठाये ❀ जब हम सब बनबास सिधाये ॥
लै द्रौपदिहि तबहिं हाँको रथ ❀ बिधिबशमिलो पन्थमहँ पारथ ॥
क्रोधवन्त पारथ शर सांध्यो ❀ नागपाश जयदर्थहि बांध्यो ॥
शीसमुण्डि अपमानहिं कीन्हो ❀ भारत जीवदान तब दीन्हो ॥
लज्जा पाइ भवन नहिं गयऊ ❀ शङ्कर की पूजा मन लयऊ ॥
ह्वै प्रसन्न यह कह गङ्गाधर ❀ जो इच्छा मनमहँ माँगहु बर ॥
पाँच पाण्डवन जीतैं रन में ❀ यह इच्छा है मोरे मन में ॥

दोहा—यह सुनिकै शंकर कहेउ, दीन्हेउ बर जयदर्थ ।
चारि बन्धु तुम जीतिहौ, पारथ अजय समर्थ ॥

यहि बिधि शङ्कर ते बर पायो ❀ ता कारण सबको बिचलायो ॥
दुजे द्वार अभिमनु जब गयऊ ❀ तहाँ द्रोण ते दर्शन भयऊ ॥

सब क्षत्रिन सों द्रोण सुनायो ❀ अभिमनु ब्यूह भेदिकै आयो ॥
क्षत्री सबहिं लगे शर मारन ❀ यह अकेल उत बीर हजारन ॥
अभिमनु ऐसो बाण चलायो ❀ शरते भरद्वाज सुत छायो ॥
और साठि शर छाँड़े पायल ❀ ताते भये बिप्र रण घायल ॥
कोपि द्रोण योतिक शर जोरे ❀ अर्जुन सुत बीचहिं धरि तोरे ॥
तब गुरु द्रोण क्रोध मन भयो ❀ तीक्षण बाण चलावन लयो ॥

दोहा—बहु पुरुषारथ गुरु किया, रोकि रह्यो रणरत्थ ।
सबहिंपेलि भीतर गयो, अभिमनु बड़े समर्थ ॥

तीजो द्वार करण है रक्षक ❀ अभिमनु आइ जुरे परतक्षक ॥
सुनु अभिमनु पारथ नहिं आयो ❀ ब्यूह भेद कहँ तुमहिं पठायो ॥
अभिमनु सुनि प्रतिउत्तर दीन्ह्यो ❀ बालक करि तुम हम कहँ चीन्ह्यो ॥
दृढ़ कै गहहु ब्यूह द्वारो थल ❀ बूझि देखिहौ बालक को बल ॥
ब्यूह द्वार जब रथ पहुँचायो ❀ कोपि करण तब बाण चलायो ॥
सहस बाण अर्जुन सुत छाँड्यो ❀ सब शर अन्तरिक्ष महँ काट्यो ॥
तासे कीन्हो सेन निकन्दन ❀ क्रोधित भये देव रबि नन्दन ॥
तीक्षण बाण करण गुण जोरे ❀ सो अभिमनु सब बीचहिं तोरे ॥
दिब्य बाण अभिमन्यु चलायो ❀ भूमि अकाश दशहु दिशि छायो ॥
देखि अनीक सबहिं भ्रम भयऊ ❀ तौ लगि ब्यूह भेदिकै गयऊ ॥

दोहा—पेलि द्वार भीतर गयो, जात न लागी बार ।
पहुँचे चौथे द्वार जहँ, कृपाचार्य सरदार ॥

आये अभिमनु सबहिं पुकारे ❀ कृपाचार्य तब धनुष सँभारे ॥
महायुद्ध कीन्ह्यो पुरुषारथ ❀ तेहि क्षण भयो अनेकन भारथ ॥
पुनि अनेक सेना बध कीन्ह्यो ❀ रुण्डमुण्डकछु जात न चीन्ह्यो ॥
कृपाचाय क्रोधित शर जोरे ❀ ते अभिमनु बीचहिं सब तोरे ॥
अपर पाँच शर मार्‌यो लै जब ❀ चेत न रह्यो भयो घायल तब ॥
पेलि द्वार अभिमनु जब आयो ❀ द्रोण पुत्र तब देखन पायो ॥

कर धनुशर गहिकै कत आवत ❋ मारु मारु कहि हाँक सुनावत ॥
अश्वत्थामा लीन्हेउ शर कर ❋ जलधरसम लागेउ बर्षहिं शर ॥
क्रोधित होइ सहोद्रा नन्दन ❋ चाणमहँ कीन्हो सेननिकन्दन ॥

दोहा—अर्जुनसुत अरु द्रोणसुत, परो आनि जबजोर।
रण करकश दोऊ सरस, भयो युद्ध अतिघोर ॥

तब अभिमन्यु कीन्ह संधाना ❋ हृदय ताकि मार्‍यो दश बाना ॥
एक बाण याबिधि ते छूट्यो ❋ काटो धनुष सहित गुण टूट्यो ॥
औरो साठि सहस शर मारे ❋ तिन बाणन सब सेन सँहारे ॥
जबलगि द्रोणी धनुष चढ़ाये ❋ पेलि द्वार अभिमनु तब आये ॥
पँचवाँ द्वार पेलि जब गयऊ ❋ छठयें द्वार उपस्थित भयऊ ॥
अभिमनु जब आगे हांको रथ ❋ भूरिश्रवा आइ रोंकउ पथ ॥
या बिधि बाण बुन्द झरिलायो ❋ रथ समेत अभिमन्यु छिपायो ॥
इन्द्र अस्त्र अभिमनु तब छांड्यो ❋ सब शर निमिष एक महँ काट्यो॥
बाण काटि शर किये प्रकाशा। ❋ जिमि प्रचण्ड रबिउयो अकाशा ॥

दोहा—सहस बाणयहिबिधिहनो, रह्यो न तनु में चेत।
पेलि द्वार भीतर गयो, जीति नरेशन खेत ॥

सतयें द्वार आइ अरुझान्यो ❋ जासु प्रबेश भेद नहिं जान्यो ॥
दुर्योधन सेना सँग भारी ❋ तीस सहस नृप छत्र के धारी ॥
ते सब बीर आनि कै घेरे ❋ मारु मारु दुर्योधन टेरे ॥
रथ पर शर बर्षत हैं कैसे ❋ मन्दर शीश बृष्टि जल जैसे ॥
महारथी सब मेघ समाना ❋ बर्षत बाण बुन्द अनुमाना ॥
धनु टंकोर मेघ की गर्जनि ❋ खड्ग छटा दामिनि की तर्जनि ॥
शक्ति शूल बीरन कर छूटत ❋ मानहु बज्र गगन ते टूटत ॥
महा मारु क्षत्रिन जब कियऊ ❋ तब अभिमन्यु क्रोधतनु भयऊ ॥
जा शर अर्जुन आपु सिखाये ❋ तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये ॥

दोहा—सब शर काटे निमिष महँ, सेन बधेउ रिसहेत।
जिमि दाहो पावक सघन, कानन सखासमेत॥
सन्मुख सेन दृष्टि जो आई ❋ तण महँ अभिमनु मारि गिराई ॥
फौज मध्य अभिमनु है कैसे ❋ मृगदल महाकेशरी जैसे ॥
हय गज रथ पैदरहु संहारे ❋ भूप अनेक खेत महँ मारे ॥
सुनिकै शोर द्रोण कृप धाये ❋ कर्ण समेत बीर सब आये ॥
सब मिलि घेरि लगे शर मारन ❋ एक बीर इत उतै हजारन ॥
सारथि कही कुँवर सों बचना ❋ युद्ध अधर्म द्रोण की रचना ॥
एक एक ते उचित लड़ाई ❋ यह अनीति हम देखी भाई ॥
इत अभिमन्यु है एक जुझारा ❋ उत आये लाखन सरदारा ॥
चहुँदिशिबाण बुन्द झरि लावहिं ❋ कहो कवनिदिशिरथहि चलावहिं॥
सुनि अभिमनु भाष्यउ यह बानी ❋ सारथि तुम यह बात न जानी॥
दोहा—चक्रब्यूह भीतर परे, शत्रुहि कीजै नाश।
आनि परी शिर आपने, छांडु बिरानी आश॥
सुनु सारथि अब शोच न करिये ❋ सन्मुख सब योधन सों लरिये ॥
चाक कृत्य तुम रथहि घुमैये ❋ चहूँ ओर हम बाण चलैये ॥
सारथि रथ हाँको तब बाँको ❋ जैसे चलत कुम्हार को चाको ॥
द्रोण कर्ण जेतिक हैं आगे ❋ शत शत बाण सबन के लागे ॥
सारथि तनु दश दश शर मारे ❋ द्वै द्वै शर आसन परिहारे ॥
पाँच पाँच शर हस्ति बिदारे ❋ एक एक शर पैदल मारे ॥
अर्जुन सुत याबिधि शर खाँचो ❋ घायल सबहि एक नहिं बाँचो ॥
क्रोधवन्त होउ कुरुपति धाये ❋ सब बीरन सों बचन सुनाये ॥
बालक एक करत संग्रामा ❋ तुम सबको पाल्यों केहि कामा ॥
दोहा—सब मिलि मारौ घेरि रथ, गहरु करहु केहि काज।
शिशु होइ सेना बधत है, आवत तुम्हैं न लाज॥
सुनिकै द्रोण कहन अस लागे ❋ दुर्योधन भूपति के आगे ॥

यह अर्जुन सुत बड़ो धनुर्द्धर ❋ जब लगि धनुष रहै याके कर ॥
महारथी जो कोटिन आवैं ❋ यहि ते जयति पत्र नहिं पावैं ॥
अर्जुन सम अभिमनु धनुधारी ❋ प्रलय समय जैसे त्रिपुरारी ॥
कहा द्रोण दुर्योधन राजहि ❋ पत्ती युद्ध जीति किमि बाजहि ॥
गज अनेक जो मारन आवैं ❋ एक सिंह की सरि नहिं पावैं ॥
जो वाको धनु काटत कोई ❋ तौ रण में अभिमनु बध होई ॥
अस सुनिकै मंत्री सब धाये ❋ करणादिक आगे चलि आये ॥
सेन मध्य अभिमनु है कैसे ❋ क्षीरसिन्धु महँ मन्दर जैसे ॥

दोहा—अर्जुन सुत अति क्रोधकै, छाँड़े तीक्षण बान।
या बिधि सेना बध किये, जिमि लङ्का हनुमान॥

सब मिलि एक मतो ह्वै धाये ❋ रथहि घेरि चहुँ दिशि ते आये ॥
बहुतक कोपि बाण सों मारे ❋ ❋ शेल शूल मुद्गर परिहारे ॥
जो शर कृष्णराय सों पाये ❋ तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये ॥
ताते अस्त्र भये क्षय कैसे ❋ तिमिर जाइ देखत रबि जैसे ॥
जूझि गिरे कुञ्जर मतवारे ❋ रथ सारथि अश्वन संहारे ॥
अभिमनु कीन्ही है यह करणी ❋ रुण्डमुण्ड तोपी सब धरणी ॥
देखत कर्ण क्रोध जिय कीन्हे ❋ दै कर हाँक धनुष कर लीन्हे ॥
अग्नि बाण कीन्हे परिहारा ❋ अभिमनु जारि करेउ धरिछारा ॥
बरत अग्नि चलिभा तब जारन ❋ प्रकटीं शिखा हजार हजारन ॥
तब अभिमनु जल बाण चलाये ❋ क्षण भीतर स[illegible] अग्नि बुझाये ॥

दोहा—अग्नि बुझायो नीरसों, बाढ़ी जल की धार।
कौरव दल बूड़न लगे, चहुँ दिशि परी पुकार ॥

रबिसुत मारुत बाण चलायो ❋ पवन तेज सब नीर सुखायो ॥
अभिमनु तज्यो सर्पकर बाना ❋ नागन कियो पवन सब पाना ॥
डसि धाये तब बिषधर कारे ❋ याबिधि बहुत सेन संहारे ॥
बरहि बाण तब करण चलाये ❋ मारन पकरि सर्प सब खाये ॥

अभिमनु क्रोधवन्त होइ रन में ❀ मारे बाण कर्ण के तन में ॥
अपर साठि शर छांड़े पायल ❀ ताते भये द्रोण गुरु घायल ॥
कृपके हृदय बाण दश मारे ❀ असी बाण द्रोणहि परिहारे ॥
अपर पाँच शर भालुक छूटे ❀ भूरिश्रवा हृदय महँ टूटे ॥
ताते धनुष पन्थ सुत अत्री ❀ मोहित भे दुश्शासन छात्री ॥
मारे बाण काल के आगे ❀ काटे रथ के ध्वजा पताके ॥

दोहा—सात लक्ष चतुरंग दल, जूझि गिरे मैदान ।
जिमिबर्षतजलधर जलहि, इमि बर्षत ते बान ॥

अभिमनु कीन्हो सेन निकन्दन ❀ क्रोधितभये आपु रबिनन्दन ॥
पाँच बाण तीक्षण कर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर दीन्हे ॥
घाव लाग अभिमनु रिस बाढ़े ❀ तीक्षण शर निषङ्ग ते काढ़े ॥
दै गुण फोंक बाण परिहारे ❀ चारिउ तुरँग सारथी मारे ॥
बिरथ भये कर्णहिं जब जाने ❀ तब गुरु द्रोण शरासन ताने ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धाये ❀ अश्वत्थाम कृपा तब आये ॥
दुश्शासन सब बन्धुन लीन्हे ❀ महामारु अभिमनु सों कीन्हे ॥
रथी महारथि पैदल हाथी ❀ अभिमनु एक न दूजो साथी ॥
कर्ण बीर रथ पर चढ़ि आये ❀ सब मिलि बाण वृष्टिझरिलाये ॥

दोहा—उत सेना सरदार सब, इत अर्जुनसुत एक ।
सबै बीर घायल किये, अभिमनु राखी टेक ॥

कुरुपति तबहि क्रोधअति कीन्हे ❀ मारु मारु कै आज्ञा दीन्हे ॥
सुनिकै कर्ण बाण कर लीन्हे ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे ॥
जो शर परशुराम ते पाये ❀ क्रोधित ह्वै सो बाण चलाये ॥
दै कै हांक बाण तब छाँटे ❀ करते धनुष कुँवर को काटे ॥
टूटो धनुष कुँवर तब डारे ❀ करगहि शक्ति तबहिं परिहारे ॥
तब अभिमनु अस कहा बुझाई ❀ देखि तुम्हारि अधर्म लराई ॥
तुम हम ऊपर बाणहिं छांटे ❀ बीचहि कर्ण धनुष मम काटे ॥

यहि कहि कुँवर शक्ति परिहारे ❋ कर्णहिं हृदय ताकिकै मारे ॥
मूर्च्छित किये कर्ण ते क्षात्री ❋ अर्जुनपुत्र महाबल अत्री ॥
बिनु धनुपाणि कुँवर को पाये ❋ घेरि बीर सब निकटहि आये ॥

दोहा—अभिमनु घेरे आय सब, मारत अस्त्र अनेक ।
जिमि मृगगण के यूथ महँ, डरत न केहरि एक ॥

लैके शूल कियो परिहारा ❋ बीर अनेक खेत महँ मारा ॥
जूझी अनी भभरि कै भागे ❋ हँसिकै द्रोण कहन अस लागे ॥
धन्य धन्य अभिमनु गुणसागर ❋ सब क्षात्रिन महँ बड़ो उजागर ॥
धन्य सहोद्रा जग में जाई ❋ ऐसे बीर जठर जनमाई ॥
धन्य धन्य जग में पितु पारथ ❋ अभिमनु धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
एक बीर लाखन दल मारे ❋ अरु अनेक राजा संहारे ॥
धनु काटे शङ्का नहि मनमों ❋ रुधिर प्रबाह चलत सब तनमों ॥
यहि अन्तर बोले कुरुराजा ❋ धनुष नाहिंभाजत केहिकाजा ॥
एक बीर को सबै डरत हैं ❋ घेरि क्यों न रथ धाइधरत हैं ॥
बालक देखु करी यह करणी ❋ सेना जूझि परी सबधरणी ॥

दोहा—दुर्योधन या बिधि कह्यो, कर्ण द्रोण सों बैन ।
बालक सब सेना बधी, तुम सब देखत नैन ॥

यह कहिकै दुर्योधन आये ❋ शब्द बीर आगे ह्वै धाये ॥
क्षत्री घेरो अभिमनु रणमों ❋ मानहुँ रबि आच्छादित घनमों ॥
लैकै खड्ग फरी गहि हाथा ❋ काट्यो बहु क्षात्रिन को माथा ॥
अभिमनु धाइ खड्ग परिहारा ❋ सम्मुख ज्यहि पावै त्यहि मारा ॥
भूरिश्रवा बाण दश छाँटे ❋ कुँवर हाथ को खड्गहि काटे ॥
तीनि बाण सारथि उर मारे ❋ आठ बाण ते अश्व सँहारे ॥
सारथि जूझि गिरे मैदाना ❋ अभिमनु बीर चित्त अनुमाना ॥
यहि अन्तर सेना सब धाये ❋ मारु मारु कै मारन आये ॥
रथको खैंचि कुँवर कर लीन्हे ❋ ताते मारु भयानक कीन्हे ॥

अभिमनु कोपि खम्भ परिहारे ❀ यक यक घाव बीर सब मारे ॥

दोहा—अर्जुनसुत इमिमारुकिय, महाबीर परचण्ड ।
रूप भयानक देखियतु, जिमियमलीन्हेदण्ड ॥

क्रोधित होइ चहूँदिशि धाये ❀ मारि रुबै सेना बिचलाये ॥
यहिबिधि किये भयानक भारथ ❀ साहस धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
ऐसी मारु खम्भ सों कीन्हे ❀ दश सहस्र राजा बध लीन्हे ॥
मारि सबै राजा बिचलाये ❀ करलै गदा कुरूपति धाये ॥
शतबान्धव नृप संगहि आये ❀ अरु अनेक राजा मिलि धाये ॥
चहुँदिशि महारथी सब घेरे ❀ क्षत्री सबै बीर बहुतेरे ॥
नाना अस्त्र सबहि परिहारे ❀ निकट न जाहिं दूरि ते मारे ॥
दुर्योधन कहँ देखन पाये ❀ गहे खम्भ अभिमनु तब धाये ॥
जुरे बीर क्षत्री बहुतेरे ❀ खम्भ घाव ते बधेउ घनेरे ॥
जब नरेश के निकटहि आये ❀ द्रोण गुरू दश बाण चलाये ॥

दोहा—गुरू द्रोण अतिक्रोध कै, मारे बाण अचूक ।
कुँवर हाथको खम्भ तब, काटि किये दुइटूक ॥

खम्भ कटे अभिमनु भे कैसे ❀ मणिबिनुफणिकबिकलजग जैसे ॥
क्रोधित भये सहोद्रा नंदनु ❀ चरणघात कै तोरेउ सो धनु ॥
रथते कूदि कुँवर कर लीन्हे ❀ चका उठाय रणहि शुभकीन्हे ॥
चका कुँवर कर शोभित कैसे ❀ हरि कर चक्र सुदर्शन जैसे ॥
रुधिर प्रबाह चलत सब अङ्गा ❀ महाशूर मन नेकु न भङ्गा ॥
गहिकै चका चहूँ दिशि धावै ❀ जेहि पावै तेहि मारि गिरावै ॥
दुर्योधन पर चका चलाये ❀ गदा रोपि कुरुनाथ बचाये ॥
क्षत्री घेरि लगे शर मारन ❀ जुरे आइ केते हथियारन ॥
दुश्शासन सुत गदा प्रहारे ❀ अभिमनु के शिर ऊपर मारे ॥
जूझे कुँवर परे तब धरणी ❀ जगमहँ रही सदा यह करणी ॥

दोहा—धन्य धन्य सब कोउ कहै, कुँवर रहौ मैदान ।
पै गुरु द्रोण मलीन मुख, कहे बचन परिमान ॥
गुरु द्रोण यहि भांति बखाने ❋ हर्षि नरेश सबै सुख माने ॥
अभिमनु मरण सुनैगो पारथ ❋ करिहै महाभयानक भारत ॥
इन्द्र बरुण यम होयँ सहायक ❋ कोइ नहिं अर्जुन जितिबेलायक ॥
भीमादिक यह युद्ध बिचारे ❋ पै जयदर्थ सबहिं शर मारे ॥
क्रोधित भये पाण्डु के नन्दन ❋ फेंको सिन्धुराज को स्यन्दन ॥
गिरे दूरि उठि निकटहि आये ❋ भीम उपर शत बाण चलाये ॥
धर्मराय तब कीन्ह दरेरो ❋ पै जयदर्थ मारि मुख फेरो ॥
लै अनीक सब कुरुपति धाये ❋ जहँ जयदर्थ लरत तहँ आये ॥
कौरव दल जय शंख बजाये ❋ अभिमनु गिरे भूमि सुनि पाये ॥
धर्मराय सुनि मौनहि गहेऊ ❋ सन्ध्या भयो युद्ध तब रहेऊ ॥

दोहा—कुरु पाण्डव फिरिकै चल्यो, भयो युद्धको शेश ।
भीमादिक क्षत्री सबै, रोवत धर्मनरेश ॥
हाहा अभिमनु अभिमनु भाखेउ ❋ देखे बिना प्राण किमि राखेउ ॥
सुत सपूत तोसों नहिं पावों ❋ अर्जुनकोकिमि बदन देखावों ॥
रोवत भीम नकुल अरु मन्त्री ❋ सेना सबै महाबल क्षत्री ॥
रोवत सबै भवन कहँ आये ❋ ऊर्ध्वबाहु केशहि छिटकाये ॥
अभिमनु कहिकै सबै पुकारत ❋ दोऊ हाथ शीश पै मारत ॥
अन्तःपुर पहुँची यह बानी ❋ श्रवणन सुनी सहोद्रा रानी ॥
कुन्ती सुनत महादुख पाई ❋ रोदन करत शूल उर छाई ॥
सुनत सहोद्रा जननी कैसे ❋ बिना जीव कठपुतरी जैसे ॥
बहत प्रवाह नयन को पानी ❋ हिम ऋतु मनो कमल कुँभिलानी ॥
हा हा पुत्र परम सुखकारी ❋ सुन्दर मुख पै मैं बलिहारी ॥

दोहा—पुत्र शोच श्रवणन सुनत, धरणी परी अचेत ।
नयन नीरकज्जलसहित, मनोतिलाञ्जलिदेत ॥

जो तुम्हरे पितु होते सङ्गा ❋ तुमसों को जीतत रणरङ्गा ॥
कुन्ती सहित द्रौपदी रानी ❋ बहत प्रबाह नयन भरि पानी ॥
करुणा करहि ठोंकिके माथा ❋ रत्न गये पैये नहिं हाथा ॥
यह सुधि सुनि बैराट कुमारी ❋ बारह बर्ष बयस सुकुमारी ॥
पति जूझे रण सुनिकै मर्‍यो ❋ मानहुँ शोक समुद्रहि पर्‍यो ॥
कहां गयो प्रीतम सुख दायक ❋ चक्राव्यूह के भेदन लायक ॥
जूझे खेत जगत यश लीन्हे ❋ जयमाला सुर कन्यन दीन्हे ॥
तुम सुरपुर बिलसहु सुकुमारा ❋ म्वहिं अनाथ को नाथ बिसारा ॥
हे स्वामी म्वहि दरशन दीजे ❋ नातरु संग आपने लीजे ॥
पांच मास मम भये बिवाहा ❋ बिधि यहि समय बिछोहा नाहा॥

दोहा—लग्न व्यास गनि थापेऊ, दाता त्रिय बैराट ।
अर्जुन सुत बर कृष्ण हित, बिधि दुख लिखा ललाट॥

यह सुनि रोइ उठीं दुख बानी ❋ कुन्ती सहित द्रौपदी रानी ॥
ठोंकि ललाट कर्म बिधि सोये ❋ सुनि दुख पशु पत्ती सब रोये॥
करुणा कर सब रानिन जाई ❋ उत अर्जुन ने रची उपाई ॥
पारथ ब्रह्म अस्त्र परिहारे ❋ रणमां शिशपकागण मारे ॥
जय करि कह कीजें हरि गवना ❋ हांको रथ जैये त्रिय भवना॥
आजु चित्त कछु चञ्चल मेरे ❋ ताते उपजत शोच घनेरे ॥
बाम आंखि बायों भुज फरकै ❋ जिय अकुलात चहत हिय दरकै ॥
श्रीहरि सुनि यहि भांति बखानो ❋ मोरहु जिय अब है अकुलानो ॥
की गुरु द्रोण सूझ छत कर्‍यो ❋ धर्मराय पर संकट पर्‍यो ॥
सब जानत हैं अन्तरयामी ❋ अभिमनु मरण कहो नहिं स्वामी॥

दोहा—हांको रथ माधव तबहिं, धाये चपल तुरङ्ग ।
अशकुन देखो पन्थ महँ, भा पारथ मनभङ्ग॥

आतुर ह्वै चलि आये तहँवां ❋ रोदन करत भूमि पति जहँवां ॥
चलत प्रबाह अश्रु हैं नयना ❋ अर्जुन कही कृष्णसों बयना ॥

अभिमनु मरण सुनो श्रीमाधव ❋ नहिं जानतविधि कीन्होकाधव
रथते उतरि गयो पुनि तहँवां ❋ रोदन करत सबै हैं जहँवां॥
अभिमनु नाहिं सभामहँ देख्यो ❋ जूझयो पुत्र सत्य करि लेख्यो ॥
तब अर्जुन भाष्यो यह बयना ❋ अभिमनु कहाँ न देखहुँ नयना॥
धर्मराज सब बात सुनाई ❋ अकथ कथा बिधिकी प्रभुताई ॥
चक्राब्यूह गुरु द्रोण बनाये ❋ दुर्योधन कहि दूत पठाये ॥
भेदहु ब्यूह आनिके लरिये ❋ नातो हारि गवन बन करिये ॥
सो सुनिके हम बहु दुख कीन्हेउ ❋ सब क्षत्रिन को आज्ञा दीन्हेउ ॥

दोहा—ब्यूह भेद जानहि नहीं, कहहिंसबहिंपरिमान।
सब क्षत्री हिय हारिगे, अभिमनु लीन्होपान ॥

बहुत भांति मैं कहि समुझायो ❋ अभिमनु कैसहु मनहिं न आयो॥
छहों द्वार तोरों सतिभावा ❋ सतवां को रण मोहिं न आवा ॥
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ ❋ सतवां द्वार भार मम गहेऊ ॥
सो सुनिके साजी हम सयना ❋ चक्राब्यूह देखत तब नयना ॥
देखत सबहिं अचम्भव भयऊ ❋ अभिमनु ब्यूह भेदिके गयऊ ॥
भीमादिक क्षत्री सब धाये ❋ पै जयदर्थ सबनि अटकाये ॥
छहो द्वार सुत पेलिके गयऊ ❋ सतयें द्वार महारण भयऊ ॥
सो सब काहुन देखो नयना ❋ जूझेउ पुत्र सुनेउ यह बयना ॥
यह सुनि अर्जुन मूर्च्छित भयऊ ❋ राइके कृष्ण अङ्क महँ लयऊ ॥
अर्जुन कृष्ण बिकल होइ रोये ❋ पुत्र शोक चाहत जिय खोये ॥

दोहा—अर्जुन भाष्यो भीम सों, प्राण कि कीन्हे गोन।
सुताहिंजुझायो खेतमहँ, तुमसब आयो भौन॥

चौदह बर्ष बैस अति बारा ❋ द्रोण कर्ण के युद्ध बिचारा ॥
याही समय होत हम साथा ❋ बधे घेरि सुत मनहुँ अनाथा ॥
सुन्दर रूप मनोहर आनन ❋ खण्ड खण्ड बीरनकिये बानन ॥
करुणा कै पारथ यह भाखैं ❋ पुत्र बिना हम प्राण न राखैं ॥

सुनु हो बीर महाधनुधारी ❋ तुम पर प्राण करौं बलिहारी ॥
हम जीवत तुम जीवत रनमों ❋ यहै शोच आवत है मनमों ॥
धर्मराय के कामहि आयो ❋ हमहिं छांड़ तुमकहाँ सिधायो ॥
क्षत्री सबै बीर सरदारा ❋ सबहिं कुशल जूझेतुम बारा ॥
भीमसेन बहुतै गल गाजे ❋ सुतैं जुझाय खेत तजि भाजे ॥
सुनि कै भीम कहन अस लागे ❋ लज्जावन्त क्रोध सों पागे ॥

दोहा—सब मिलि कै भारत रचो, राज्य भोग के हेत ।
अबरोवत बिलखत कहा, जबसुत जूझेउ खेत ॥

जो मैं होतेउँ सुत के साथा ❋ सेनसहित बधतेउँ कुरुनाथा ॥
कही कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै ❋ चलहु गवन अन्तःपुर कीजै ॥
अर्जुन कही सुनो हो माधव ❋ अब उत जाइ कीजिये काधव ॥
आपु जाहिं हरि हम नहिं जैहैं ❋ रानिन में का बदन दिखैहैं ॥
सो सुनि अन्तःपुर हरि आये ❋ बहिन सहोद्रा देखन पाये ॥
धाइ सहोद्रा चरणन लागी ❋ हे माधव हम परम अभागी ॥
श्रीहरि तुम कीन्हे प्रतिपालक ❋ भारथ जूझिगयो मम बालक ॥
अर्जुन से पितु मातुल केशव ❋ रण जूझे सुत बड़ो अँदेशव ॥
करुणा करै सहोद्रा लागी ❋ बिह्वल बिकल शोक ते पागी ॥

दोहा—बधू उतारि आई तहां, गहे कृष्ण के पाइ ।
आज्ञा दीजे जाहिं हम, पति सँग यादवराइ ॥

तेरे गर्भ बाल भाषो गनि ❋ कुरुपाण्डव को बंश शिरोमनि ॥
होइहै पुत्र प्रबल बल भारी ❋ एक छत्र बसुधा अधिकारी ॥
या बिधिते श्रीपति समुझाये ❋ अन्तःपुर ते बाहर आये ॥
भोजन पान कहूँ नहिं कीन्हे ❋ सेना सबहि समर मन दीन्हे ॥
अर्जुन निकरि चले बनबासा ❋ पुत्र शोक ते जीव निरासा ॥
श्रीपति अग्र न देखो पारथ ❋ पाछे चले सखा के सारथ ॥
बनमों पारथ भेंटि मुरारी ❋ गहि कर बचन कहेउ बनवारी ॥

पारथ शोच छाँड़ि अब दीजै ❀ निर्मल ज्ञान चित्त में कीजै ॥
काको सुत बान्धव पितु जगमों ❀ पन्थिक मित्रश्राहिजिमि जगमों ॥
सगरादिक ऐसे नृप भयऊ ❀ ते सब यहि धरणीमहँ गयऊ ॥

दोहा—कोइ न काहूको अहै, कीजै हृदय बिचार ।
सबलसिंह चौहान कह, मिथ्या है संसार ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेद्रोणपर्व तृतीयो ऽध्यायः ॥ ३ ॥

सुनिकै अर्जुन तब यह भाखो ❀ दीनबन्धु जिय जात न राखो ॥
पारथ सङ्ग हमारे ऐये ❀ अभिमनु तुमकहँ आनिदेखैये ॥
यह सुनि पारथ को मन हरष्यो ❀ करि प्रणामकरिकेपग परश्यो ॥
बिनतासुतकहँ सुमिरण कीन्हे ❀ आये गरुड़ कहन मन दीन्हे ॥
मेरे संग चलहु तुम पारथ ❀ सुरपुर जाइँ तुम्हारे स्वारथ ॥
उड़ेउ गरुड़ तब कीन्हेउ गवना ❀ क्षणमहँ गयो देवनिशिभवना ॥
देखो जाइ महारण रङ्गा ❀ अभिमनु लरतदैत्य के सङ्गा ॥
कृष्ण कही अभिमनु पहँ जैये ❀ पकरि बाँह सुत करिलै ऐये ॥
सुत कहँ देखि महासुख पाये ❀ मिलिबे को आतुर होइ धाये ॥
मोहिं छांड़ि कित कीन्हे गवना ❀ हे सुत बेगि चलो निजभवना ॥

दोहा—सोसुनिकैअभिमनुकही, काहबकत बिनकाज ।
पुत्र पुत्र भाषत कहा, जाव न आवतलाज ॥

काको सुत काको रथ हाथी ❀ जैसे मिलत सपनमहँ साथी ॥
पितु ते सुत सुत ते पितु करणी ❀ जैसे चलत रहट को ढरणी ॥
हम शशि पुत्र बुद्ध है नामा ❀ रोदन काह करत बेकामा ॥
यह सुनि अर्जुन बहुत लजाये ❀ रहे मौन कछु बचन न आये ॥
मन महँ ज्ञान किये तब पारथ ❀ सत्य कहत जग सबै अकारथ ॥
अर्जुन गये कृष्ण के पासा ❀ कही कहत सुनि बचन उदासा ॥
शशि को पुत्र कहै बुध नामा ❀ काको सुत आयो केहि कामा ॥
सुत नातो छाँड़ो केहि कारण ❀ मोते भाषौ त्रास निवारण ॥

आदि कथा हरि भाषन लागे ❋ सुनिये भारत परम सभागे ॥
जब हम जठर देवकी जाये ❋ देव दैत्य सब जगमहँ आये ॥

दोहा—क्षत्री होइ जगमें सबै, मम लीला के काज ।
कुरुपति कालिको अंश है, धर्म युधिष्ठिरराज ॥

सुरगण सब पाण्डव हितकारी ❋ कुरुपति असुरनको अधिकारी ॥
ब्रह्मा कही चन्द्र सुनि लीजै ❋ बुध सुत देहु जन्म जग कीजै ॥
विधि सों विनय सुधाकर कह्यो ❋ इहई पुत्र मोर घर अह्यो ॥
जौलगि सुतहि जन्म जग करिहौं ❋ काहि देखि धीरज मन धरिहौं ॥
हँसि विधि कही निशापति आगे ❋ पन्द्रह वर्ष देहु म्वहि मांगे ॥
जन्म सहोद्रा गर्भहि लैहै ❋ भारत मों बहुतै यश पैहै ॥
पन्द्रह वर्ष लागि हम मांगे ❋ एको दिन नहिं रहिहै आगे ॥
जो यहि बीच आव नहिं पैहै ❋ दोउ दल मारि तोर सुत ऐहै ॥
तुम ते कही सुनो हो पारथ ❋ शोच न कीजै आपु अकारथ ॥

दोहा—अर्जुन को परबोध कै, लै आए प्रभु ऐन ।
शोक मिटातन क्रोध भो, कहो कृष्ण सों बैन॥

काल्हि युद्ध जयदर्थहि मारों ❋ नातरु देह अग्नि मों जारों ॥
यह प्रण मैं कीन्हा अपने मन ❋ बधों शत्रु की देहुँ अपन तन॥
प्रण सुनि श्रीहरि कहिबे लीन्हे ❋ जयद्रथ कहँ शंकर बर दीन्हे ॥
ताते अजय भयो है पारथ ❋ केहि बिधि तुम करिहो पुरुषारथ॥
हम तुम मिलि कीजै अब गवना ❋ चलु जाई शंकर के भवना ॥
नर नारायण सङ्ग सिधाये ❋ छणमहँ गिरि कैलासहि आये ॥
चहुँदिशि बनसपती सब फूले ❋ मत्त मधुप गुञ्जत रस भूले ॥
बटतर बैठे हैं गङ्गाधर ❋ उमासहित हरिनाम जपत हर ॥
अङ्ग बिभूति बसन मृगछाला ❋ चन्द्र ललाट गरे शिरमाला ॥
शीश जटा महँ गङ्ग बिराजत ❋ लोचन तीनि मनोहर छाजत ॥

दोहा—शंकर देख्यो कृष्ण कहँ, उपजो चित्त आनन्द।
बिहँसि बदनपूछनलगे, शरदश्यामसुखचन्द॥
करि आदर आसन बैठारे ❀ कहो आपु केहि काज सिधारे॥
हँसि हरि कह्यो सुनहु गङ्गाधर ❀ तुम दीन्हो जयदर्थहि को बर॥
अभिमनु जूझि गिरे भारत रण ❀ ता कारण पारथ कीन्हो प्रण॥
कालिह बधौं नहिं सिन्धुनरेशहि ❀ तो मैं अग्नि में करौं प्रवेशहि॥
पारथहो अब या बर दीजै ❀ कालिह बधहि जयदर्थहि कीजै॥
शंकर कह्यो दीन्ह बर पारथ ❀ बधि जयदर्थ करहु पुरुषारथ॥
जाको सखा आपु श्रीकेशव ❀ जय करिहो रण कोन अँदेशव॥
लै कर धनुष बतावब बाना ❀ यहि बिधिते कीजै संधाना॥
लै अर्जुन माधव गृह आये ❀ समाचार सब कुरुपति पाये॥
अर्जुन प्रण कीन्हेउ यहि कारण ❀ कालिह चहत जयदर्थहि मारण॥
दोहा—जो न बधौं जयदर्थहि, करहुँ अग्नि परवेश।
यह प्रणदृढ़पारथ किये, सुधि सब सुनीनरेश॥
सुनि जयदर्थ महाभय मानी ❀ इतई रहब मरण निज जानी॥
कुरुपति पहँ कीन्हो तब गवना ❀ कह्यो जात हम अपने भवना॥
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै ❀ को सन्मुख होइ तिनसम लरिहै॥
तेहि कारण भवनहिं बसि कीजै ❀ शंकर शरण जाइकै लीजै॥
सो सुनिकै कुरुनाथ बखाना ❀ अबनहिं कीजिय मम अपमाना॥
हम सब तव रक्षा रण करिहैं ❀ कर्णादिक लै आगे लरिहैं॥
सब मिलिकै करिये पुरुषारथ ❀ कैसे तुमहिं बधैंगे पारथ॥
भागि गये पुनि अमर न होइहो ❀ क्षत्रिन मध्य लाज बहु पैहो॥
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं ❀ सांझ समय तब अर्जुन मरिहैं॥
पारथ मरे युद्ध हम जीतैं ❀ तुम काहेक जिय मानत भीतैं॥
दोहा—सेनासपति हैं द्रोण गुरु, रक्षा करिहैं तोहिं।
साँझभये अर्जुनमरहि, बिधि जयदीन्हों मोहि॥

तातें अब हम तुमसों कहिये ❋ करि सहसा अस्थिर ह्वै लहिये ॥
सिन्धुराज तब बोले बयना ❋ कहूँ न ऐसो देखेहुँ नयना ॥
पारथ कोप धनुष जब धरिहै ❋ को समरथ जो सन्मुख लरिहै ॥
जब विराट पुर गोधन हरेऊ ❋ अर्जुन एक सबै बश करेऊ ॥
मोहिं ते कहेउ यहै त्रिपुरारी ❋ पारथसम नहिं कोउ धनुधारी ॥
उठिकै करण कही परतच्छक ❋ काल्हि दिवस हम होबे रच्छक ॥
तब जयदर्थ कहा समुझाई ❋ सबको बल हम जानत भाई ॥
जो गुरु द्रोण बाँह गहि राखैं ❋ रच्छा करहिं पैज करि भाखैं ॥
तौ मैं रहौं सुनो नृप बयना ❋ नतरु जाइहौं अपने अयना ॥
कुरुपति कही सबहि मिलि जैये ❋ जाय द्रोण सों बात जनैये ॥

दोहा—यहकहिकैसबमिलिचले, गये द्रोण के भौन।
आदर कै आसन दिये, किमिनृपकीन्हेउगौन॥

सो सुनिकै दुर्योधन कहेऊ ❋ अर्जुन प्रण कीन्हेउअस अहेऊ ॥
काल्हि दिवस जयदर्थहि मारौं ❋ नहिं तौ देह अगिनिमहँ जारौं ॥
जो गुरुद्रोण होहु तुम रच्छक ❋ दृढ़कै बाँह गहो परतच्छक ।
काल्हि दिवस जयदर्थ बचैये ❋ पारथ मरत युद्ध जय पैये ।
यह सुनि द्रोण कहे तब लीन्हे ❋ अब मन अपने मैं प्रण कीन्हे ।
ऐसो ब्यूह करौं निर्माना ❋ जाको भेद कोउ नहिं जाना ।
सब आगे होइहैं हम रच्छक ❋ देखो को आवत परतच्छक ॥
जो कोटिन अर्जुन चलि आवैं ❋ तौ मोते नहि द्वार छुड़ावैं ॥
काल्हि करौं यहिबिधि पुरुषारथ ❋ कृष्ण समेत जीतिये पारथ ॥
यहि बिधि बाणबुन्द झरिलाई ❋ पाण्डव सेन मारि बिचलाई ॥

दोहा—या प्रण मैं तुमते करहुँ, सुनहु बचन परमान ।
पारथ अन्त न पावहीं, करौं ब्यूह निर्मान ॥

कहो द्रोण अब साजहु सैना ❋ रचत ब्यूह अब देखो नैना ॥
कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे ❋ सुनिकै सबहि भूपगण गाजे ॥

सारथि रथ जोते हय चोखे ❀ इन्द्र बिमान परतहैं धाखे ॥
चढ़े अश्व असवार महाबल ❀ उदधिसमान पियादन को दल ॥
सब जुरिकै आये मैदाना ❀ कीन्हे द्रोण ब्यूह निर्माना ॥
बिकटब्यूह अति निकट बनाये ❀ जाको अन्त कहूँ नहिं पाये ॥
कमलब्यूह तेहि मध्यहि फेरेउ ❀ शत दलको ब्यूहहि तेहि घेरेउ ॥
कमलब्यूह महँ ब्युह बहुतेरे ❀ ते सब रहेउ अस्त्र गहि घेरे ॥
आपु द्रोण राखो है चक्रहि ❀ सोमदत्त बल समता शक्रहि ॥

दोहा—बाह्लीक गन्धार नृप, दोउ बाजिराहि ताहि ।
करणमध्य अस्थलरहो, सबहि सराहत जाहि ॥

अग्र भाग गुरु द्रोण बिराजत ❀ पहिरि सनाह सिंहसम गाजत ॥
कमल मध्यमहँ जयद्रथ राखो ❀ महाबिकट बलजात न भाखो ॥
षट योजन रचि ब्यूह बनाई ❀ योजन तीनि बनो चौड़ाई ॥
आठ छौहिणी दल सब राखे ❀ है समूह दल जात न भाखे ॥
कही छौहिणी दल परिमाना ❀ यहि ते बुध करिहैं अनुमाना ॥
रथ पर एक रथी छबि पावै ❀ तेहि पाछे पचास गज धावै ॥
गज पाछे शत शत असवारा ❀ बन महँ करत शत्रु संहारा ॥
एक एक असवारन पाछे ❀ शत शत पैदल आवत आछे ॥
इतनो होय रथो त्यहि कहिये ❀ शूरबीर कोई रण लहिये ॥
ऐसा रथी पाँच शत आये ❀ ताकी सेना एक कहाये ॥

दोहा—ऐसो दल सेना जुरी, प्रतिनी कहिये ताहि ।
दश प्रतिनी जुरिकै चले, यही बाहिनी आहि ॥

ऐसे दल बाहिनि जुरि आई ❀ एक छौहिणी फौज कहाई ॥
आठ छौहिणी दल परिमाना ❀ कीन्हो ब्यूह निकट निर्माना ॥
गहिकै धनुष द्रोण गुरु कह्यो ❀ सब छत्री दृढ़ कै थल गह्यो ॥
सब मिलि सावधान ह्वै रहिये ❀ अर्जुनसों कीन्हो रण चहिये ॥
अरुण उदय पाण्डव दल साजे ❀ शब्द अघात दमामे बाजे ॥

स्वकर रथहि जोते बनवारी ❋ चढ़े आइ पारथ धनुधारी ॥
पहिरि सनाह धनुष कर लीन्हे ❋ दोउ तुणीर कसिके दृढ़ कीन्हे ॥
शिरपर मुकुट मनोहर नीको ❋ भाल उदित हरिमंदिर टीका ॥
यज्ञोपवती बिराजत कांधे ❋ पीताम्बर कटि कसिके बाँधे ॥
सुन्दर श्याम शरीर बिराजत ❋ कुण्डल कान मनोहर छाजत ॥

दोहा—ब्रह्मा शंकर देव मुनि, नाहिं पायो ज्यहि अन्त।
भक्त हेतु जोती गहे, महिमा अगम अनन्त ॥

धर्मराय मैदानहिं आये ❋ तब श्रीपति यह बचन सुनाये ॥
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये ❋ लै सेना इतही अब रहिये ॥
जो सब मिलि रण को उरझये ❋ व्यूह भेद को अन्त न पैये ॥
अर्जुन रथी संग हम सारथ ❋ देखो नृप नयनन पुरुषारथ ॥
धर्मराय कछु कहिबे लीन्हे ❋ अर्जुन सौंपि कृष्णको दीन्हे ॥
तीनि लोक भाषत परतक्षक ❋ पाण्डुबंश के माधव रक्षक ॥
पारथ बीर अहैं हम सारथ ❋ कहा शोच करिये पुरुषारथ ॥
अस कहिके माधव रथ हांको ❋ गर्जत नन्दिघोष के चाको ॥
ध्वजा उपर हनुमत छबि पाये ❋ चञ्चल पवन अश्वगति धाये ॥
पहुँचो निकट व्यूह जब पेख्यो ❋ अतिअगाध दलपरत न लेख्यो ॥

दोहा—अर्जुन देख्यो द्रोण तब, संग कोउ नाहिं सैन ।
क्रोधत शर संधानिके, कह्यो कृष्ण सों बैन ॥

हे श्रीपति तुम अन्तरयामी ❋ मेरो प्रण यह सुन्यो न स्वामी ॥
जो कोटिन अर्जुन हरि आवैं ❋ व्यूह द्वार में जान न पावैं ॥
श्रीपति कही धरहु धनु पारथ ❋ देखत कहा करहु पुरुषारथ ॥
अर्जुन गुरुहि कीन्ह परणामा ❋ आशिष दीन्ह होय मनकामा ॥
द्रोण प्रथम कीन्ह्यो संधाना ❋ एकहि बार तजे दोउ बाना ॥
गुरु अरु शिष्य करत रण सरसे ❋ दोउदिशि बाणबुन्द सम बरसे ॥
साठि बाण अर्जुन तन मारे ❋ कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ॥

सहस बाण लागे हनुमानहिं ❀ लघुसंधान तजत गुरु बानहिं ॥

दोहा—अर्जुन बर्षत बाण इमि, जिमि सावनजलधार ।
सघनसेनभेदनकरत, निकरिजातशरपार ॥

तब गुरुद्रोण क्रोध जिय कीन्ह्यो ❀ महामारु पारथ पर दीन्ह्यो ॥
ऐसे बाण द्रोण गुरु जोरे ❀ शरते पग ठहरात न घोरे ॥
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ सरसनिरस कहिजात न बाना ॥
इन्द्र अस्त्र पारथ तब कीन्हेउ ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंकशर दीन्हेउ ॥
छूटत बाण शब्द घहरानेउ ❀ अचरजकै सबहीं जिय जानेउ ॥
हँसिकै द्रोण किये संधाना ❀ तजेउस्वामिकार्त्तिक कर बाना ॥
ताते इन्द्र अस्त्र छवि कीन्हेउ ❀ तब पारथ यमअस्त्रहि लीन्हेउ ॥
मृत्युक अस्त्र द्रोण परिहारेउ ❀ तब यम अस्त्रहि पारथ मारेउ ॥
अस्त्र अस्त्र सों कीन्ह निवारण ❀ तब लागे तीक्ष्णशर मारण ॥
पारथ बाण कीन्ह संधाना ❀ इत गुरु द्रोण सरस मैदाना ॥

दोहा—कही द्रोण अर्जुन सुनो, द्वार न छाँडौं आज ।
दीनबन्धु पारथ सहित, समुझिकीजिये काज ॥

श्रीपति कही सुनहु हो पारथ ❀ गुरुसों होइ न सकै पुरुषारथ ॥
भई अबेर दिवस चढ़ि आयो ❀ ब्यूह भेद अजहूँ नहिं पायो ॥
बाहर होइ रथ भीतर डारहिं ❀ भेदि ब्यूह जयदर्थहि मारहिं ॥
अर्जुन कहो उतै होइ जैये ❀ रणमों कैसे पीठि दिखैये ॥
माधव कही न जानत पारथ ❀ भूलि बात यह कही अकारथ ॥
कहा न कीजै अपने काजा ❀ द्विज गुरुते भाजे नहिं लाजा ॥
अस कहिकै हरि रथहि चलायो ❀ द्रोणहि तजि अन्तरहोइ आयो ॥
लै ताजन हरि अश्वन मारेउ ❀ दै करि हाँक ब्यूह पर डारेउ ॥
बहुतक पारथ मारि गिरायो ❀ कछु रथचाक कृष्ण कचरायो ॥
कछु हय धका उलटिकै डारेउ ❀ ताजन घाव कृष्ण कछुमारेउ ॥

दोहा—नन्दिघोष रथ जाइकै, ब्यूह किये परबेश ।
चहूँ ओर शर बर्षहीं, क्षत्री सबै नरेश ॥

सेन मध्य रथ धावत कैसे ❋ बोहित चलत सिन्धुमहँ जैसे ॥
अर्जुन कीन्हेउ शर संधाना ❋ मारन लगे क्रोधकरि बाना ॥
अगणित कीन्हेउ सेन निकन्दन ❋ नन्दिघोष हाँकत जगबन्दन ॥
बीर अनेक आनि कै घेरहिं ❋ मारहिं मारु मारु कहि टेरहि ॥
अर्जुन बीर कृष्ण से सारथ ❋ लागे करन सरस पुरुषारथ ॥
रथ पर लाग शूल शर बर्षैं ❋ युद्ध देखि पारथ मन हर्षैं ॥
बीर अनेक अस्त्र परिहारे ❋ खड्ग घाव रथ ऊपर मारे ॥
अर्जुन कोपि चलायो बाना ❋ योजन एक कियो मैदाना ॥
नन्दिघोष हांकत बनवारी ❋ जोती गहे पिताम्बरधारी ॥
योजन एक किये रथ आगे ❋ धर्मराय तब कहिबे लागे ॥

दोहा—धनु टँकोरध्वनि सुनिपरत, कहा होत धौं आहि ।
हरि अर्जुन सुधि लेनको, अब पठवों मैं काहि ॥

कह्यो नरेश सात्यकी जैये ❋ सुधि लैकै मोपर फिरि ऐये ॥
नृप आज्ञा माथे धरि लीन्हेउ ❋ रणको गमन सात्यकी कीन्हेउ ॥
तब सात्यकि देखेउ परतक्षक ❋ द्वारहि ब्यूह द्रोणगुरु रक्षक ॥
जब सात्यकि अति निकटहि आये ❋ हँसिकै द्रोण कहन मनलाये ॥
अरे मूढ़ मेरे ढिग आवा ❋ निश्चय भयो कालको खावा ॥
यह सुनि क्रोध भये बहु नाना ❋ एक बार मारे शत बाना ॥
ते सब शर गुरु बीचहि काटे ❋ पांच बाण तिन फिरिकै छांटे ॥
द्रोण सात्यकी भा रण रङ्गा ❋ दूनों बीर महाबल अङ्गा ॥
दोऊ सरस रचेउ पुरुषारथ ❋ कीन्हेउ महा भयानक भारथ ॥
द्रोण गुरू या बिधि शर जारे ❋ ब्यूह द्वार ठहरात न घोरे ॥

दोहा—हँसि भाषेउ गुरु द्रोण तब, सुनु सात्यकि अज्ञान ।
बाहर होइ अर्जुन गयो, तुम चाहत इत जान ॥

यम अरु इन्द्र बरुण जो आवैं ❀ ब्यूह द्वार होइ जान न पावैं ॥
सुनि सात्यकी किये पदबन्दन ❀ बेखटके हांकेउ तब स्यन्दन ॥
जौन पन्थ पारथ शुभ कीन्हेउ ❀ चक्रलीक मारग धरिलीन्हेउ ॥
जाइ ब्यूह कीन्हा परबेशा ❀ रण महँ जीते बहुत नरेशा ॥
चहूं ओर क्षत्री शर मारत ❀ नाना अस्त्र शस्त्र परिहारत ॥
जेहि पथ अर्जुन कीन्ह पयाना ❀ चले सात्यकी मारत बाना ॥
लरत सात्यकी आयउ तहँवां ❀ भूरि श्रवा भूप है जहँवां ॥
दोऊ बीर भिरे मैदाना ❀ क्रोधित लाग चलावन बाना ॥
आयो रथ अति निकटहि जाने ❀ भूरि श्रवा आनि लपटाने ॥
रथते उतरि परे दोउ धरणी ❀ मल्ल युद्ध कीन्हेउ बहु करणी ॥

दोहा—भूरिश्रवा महाबल, बर दीन्हो तेहि ईश ।
गह केश तेहि खड्ग लै, काटन चाहत शीश ॥

कोपि नरेश खड्ग कर लीन्हे ❀ शीश चलाय घात नहिं कीन्हे ॥
ताते घात नहीं बनि आई ❀ इहाँ कृष्ण अर्जुनहिं चेताई ॥
भूरि श्रवा खड्ग गहि हाथा ❀ काटत आहि सात्यकी माथा ॥
मन ब्यापक शर अर्जुन छांटे ❀ खड्ग समेत बाहु तेहि काटे ॥
उठि युयुधान खड्ग जब लीन्हे ❀ भूरिश्रवा शिर छेदन कीन्हे ॥
बधि नरेश अपने रथ आवा ❀ हांकि तुरँग आगे पथ आवा ॥
बिक्रम युद्ध करत पुरुषारथ ❀ पहुँचो जाइ लरत जहँ पारथ ॥
श्रीहरि निरखि बहुत सुखपाये ❀ भले भये सात्यकि तुम आये ॥
अर्जुन युद्ध करत परतक्षक ❀ नंदिघोष पाछे तुम रक्षक ॥
अस कहि रथ हाँकेउ बनवारी ❀ दल मारत अर्जुन धनुधारी ॥

दोहा—एकै शर अर्जुन हने, गुण जोरत दश बाण ।
छूटतही शत होतहै, बधत सहस परमाण ॥

यहि बिधिते सेना संहारे ❀ सन्मुख बीर जुरे ते मारे ॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर ❀ सौंहें जुरे गहे शारँग शर ॥

रहु रहु कर कीन्हो संधाना ❋ अर्जुन उर मारे दश बाना ॥
कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ❋ बीस बाण हनुमानहिं मारे ॥
सोमदत्त कीन्हों पुरुषारथ ❋ क्रोधित ह्वै जोरे शर पारथ ॥
पढ़ि रविमन्त्र बाण सब छांटे ❋ सोमदत्त को शीशहि काटे ॥
मुकुट समेत परो शिर धरणी ❋ अर्जुन रण कीन्हीं यह करणी ॥
बाहुलीक गन्धार महारथ ❋ सेन समेत करत पुरुषारथ ॥
नृप कौमोद धनुष कर लीन्हे ❋ महाभार्थ पारथ पर कीन्हे ॥
चहुँ दिशि ते लागे शर मारन ❋ बहुतक जुरे कुन्त हथियारन ॥

दोहा—शर बर्षत हैं बीर सब, शक्तिखड्ग की धार ।
शूल गदा मुद्गर घने, चहूँ ओर की मार ॥

सेना सबै आनि रथ घेरे ❋ मारु मारु कहि चहुँ दिशि टेरे ॥
पै पारथ मन नेकु न भङ्गा ❋ शर संधान करत रण रङ्गा ॥
अर्जुन बधत सेन यहि रूपहि ❋ प्रलय होत जैसे जल भूपहि ॥
लाखन दल कीन्हे शर खण्डित ❋ रुण्डमुण्ड धरणी सब मण्डित ॥
जुरे आइ सब बीर महाबल ❋ पल भरि पारथ नहिं पावतकल ॥
यहि बिधि करत घोर संग्रामा ❋ जूझिगिरे कुरुपति के कामा ॥
पारथ बारन करत निकन्दन ❋ नन्दिघोष हाँकत जगबन्दन ॥
जो दल अर्जुन मारि गिराये ❋ लोथिनपर हरि रथहि चलाये ॥
याबिधि सघन फौज अतिभारी ❋ प्रभु सारथि पारथ धनुधारी ॥
महारथी सब बाण चलावहिं ❋ नन्दिघोष रथ छाँह छिपावहिं ॥

दोहा—कठिनअस्त्रआवतजबहिं, जाहिनारिपुबाचिजाइ ।
ऊपर श्रीहरि लेत शर, अर्जुन अंग बचाइ ॥

नृप काम्बोज कठिन शर मारे ❋ कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे ॥
श्याम शरीर रुधिर छबिपाये ❋ पीतबसन तनु अरुण सुहाये ॥
क्रोधवन्त अर्जुन शर छाँटे ❋ शायक मोद के शीशहि काटे ॥
हाँकत अश्व जगत के तारन ❋ हर्षि वीर लागे शर मारन ॥

बहुतक आनि रथहि लपटाने ❋ महाशूर सब बाँधे बाने ॥
नन्दिघोष रथ राजन घेरे ❋ सावधान अर्जुन हरि टेरे ॥
बाहु बिशाल कृष्ण परिहारत ❋ अभिरत ताजन तासों मारत ॥
पुनि अनेक शर अर्जुन छाँटत ❋ रुण्ड मुण्ड बसुधा सब पाटत ॥
या बिधि होत युद्ध की करणी ❋ महामारु कछु जाइ न बरणी ॥
रथ पाछे सात्यकि है रक्षक ❋ बीर अनेक बधे परतक्षक ॥

दोहा–याबिधि अर्जुन रण करत, होत घोर संग्राम ।
हांक देत हय हांकहीं, सारथिश्रीघनश्याम ॥

याबिधि अर्जुन करत मसाना ❋ भारत अवनि करत मैदाना ॥
जोती गह्यो पतित के पावन ❋ थके तुरङ्ग सकै नहिं धावन ॥
अश्व किया चाहत जल पाना ❋ पारथ सो हरि आपु बखाना ॥
दोइ प्रहर दुइ ऊर्ध्वहि भयऊ ❋ तृषित तुरङ्ग तेज घटि गयऊ ॥
अर्जुन कहा न करो अँदेशव ❋ जल उपाय करिहौं हम केशव ॥
अस कहि पारथ करि संधाना ❋ भूमि निरखिके मार्‌यो बाना ॥
भेदि पताल गयउ शर तहवाँ ❋ भोगावति गंगा हैं जहवाँ ॥
या बिधिते शायक परिहारा ❋ निकरी फूटि गंग के धारा ॥
ताते भयो सरोवर ऐसो ❋ निर्मल नीर सुधा को जैसो ॥
पारथ कही कृष्ण सुनि लीजे ❋ रथते तुरंग खोलि जल दीजे ॥

दोहा–अस्त्र घाव क्षत्री करत, अभिरतबीर अनन्त ।
केहिबिधितेजलदीजिये, भाषैं श्रीभगवन्त ॥

अर्जुन कोपि किये संधाना ❋ मार्‌यो सेन कियो मैदाना ॥
तब पारथ शर पंजर छाये ❋ अर्ध नीर शर ओट छिपाये ॥
ताते बीर निकट नहिं आयो ❋ नन्दि घोष नहिं देखन पाया ॥
तब अर्जुन भाषेउ भगवानहिं ❋ खोलहु अश्वकरहि जलपानहिं ॥
श्रीहरि सुनिके जोती छोरे ❋ किये पान जल चारिउ घोरे ॥
स्वकर नाथ अश्वन को धोये ❋ फरकन लगे सबै श्रम खोये ॥

फेंट खोलि तब चूरण लीन्हे ❋ मिश्रित करि मिश्रिततेहि दीन्हे ॥
और दवा प्रभु आपु खवाये ❋ होइ बलवन्त भये सचुपाये ॥
दोऊ कर हरि धोवन कीन्हे ❋ गंगोदक भारी भरि लीन्हे ॥
चारिउ तुरँग आनि रथ जोरे ❋ चञ्चल चपल दिनन के थोरे ॥

दोहा—कुरुदल सबै अनन्द सों, करन लगे जल पान ।
धन्य धन्य पारथ जगत, अरिदल करत बखान ॥

शर पंजर ते भारत आगे ❋ चहूँ ओर शर बर्षन लागे ॥
महाशूर जो आगे आवत ❋ दाणमहँ अर्जुन मारि गिरावत ॥
चपल तुरङ्ग हांकि रथ दीन्हे ❋ पुनि पारथ बाणावलि कीन्हे ॥
अर्जुन बाण गिरत दल ऐसो ❋ प्रबलपवन कदलीबन जैसो ॥
यहिबिधिलरत शङ्क नहिं मनमों ❋ रुधिर प्रबाह चलत सब तनमों ॥
बीरन अङ्ग देखि दृग भूले ❋ जिमि बसन्त किंशुकतरु फूले ॥
अरुण बरण शोणित लपिटाने ❋ खेलत मनहुँ अबीरन साने ॥
पेलि फौज रथ याबिधि धावत ❋ मिलिमैनाकधरणिपर आवत ॥
याबिधिते रथ हांकत केशव ❋ धर्मराज इत करत अँदेशव ॥
खबरि हेतु सात्यकी पठाये ❋ सुधि लैके अजहू नहिं आये ॥

दोहा—भीमसेन तुम जाहु अब, हरि अर्जुन के ठौर ।
उतचाहत सुधि लेनको, बीर न देखौं और ॥

साहस कै बांधव शुभ कीजै ❋ अर्जुनखबरि आनि म्वहिंदीजै ॥
पहर अढ़ाई दिन भा आई ❋ अबलौं जिनकै खबरि न पाई ॥
नृप आज्ञा माथेपर लीन्हे ❋ रण को भीमसेन शुभ कीन्हे ॥
ब्यूह द्वार जब रथ पहुँचाये ❋ द्रोणगुरू देखन तब पाये ॥
क्रोधवन्त शारंग कर लीन्हे ❋ ते शर गुरु बीचहिं छाय कीन्हे ॥
अपर पांच शर मारे पायल ❋ ताते किये अश्व रथ घायल ॥
हँसि गुरुद्रोण कही यह बानी ❋ सब दिन भीम परम अज्ञानी ॥
नन्दिघोष रथ हरिसम सारथ ❋ सके न द्वार जान यह पारथ ॥

यहि मारग ह्वै जान न पैहो ❋ पारथ गये तितहि ह्वै जैहो ॥

दोहा—भीमसेन अतिक्रोधकरि, कहे द्रोण सों बैन ।
द्वारपेलि अब जातहौं, तुम देखत बाँधि सैन ॥

अर्जुन के धोखे जनि रहिये ❋ सावधान होइ शारङ्ग गहिये ॥
धावा उतरि छोड़िकै स्यन्दन ❋ मनमें सुमिरे श्रीजगबन्दन ॥
लघु संधान द्रोण गुरु मारत ❋ बायें अङ्ग भीम सब टारत ॥
प्रबल तेज शोणित शर छूटत ❋ बज्र शरीर लागि सब टूटत ॥
जाइ गदा रथ हेठ लगाये ❋ लै भुजबल गुरु सहित उठाये ॥
द्रोण समेत फेंकि रथ दयऊ ❋ गिरेउ न बीच कोशदुइ गयऊ ॥
गिर्यो भूमि टूट्यो तब स्यन्दन ❋ अश्व सारथी भयो निकन्दन ॥
उठिकै द्रोण पयादे धाये ❋ तब लगि भीम ब्यूह महँ आये ॥
चहुँदिशि गदा कोपि परिहारे ❋ सन्मुख ज्यहि पाये तेहि मारे ॥
गज मारे अनेक मय कीन्हे ❋ बहुतक फेंकि गगनमहँ दीन्हे ॥

दोहा—बहुतक मारे चरणते, बहु मुष्टिका प्रहार ।
भीमसेन सेना सबै, याबिधि कीनसँहार ॥

रथ ते रथ गज सों गज मारे ❋ पकरि अश्व पर अश्वप्रहारे ॥
सन्मुख आय बीर शर जोरत ❋ गदाघाव तिनको शिर घोरत ॥
यहिबिधि कीन्हे सेन निकन्दन ❋ हय गज मत्त तोर बहुस्यन्दन ॥
लैकर गदा क्रोध करि धाये ❋ बीरन मारत बार न लाये ॥
हांक मारिकै गदा प्रहारे ❋ एक बार सहसन दलमारे ॥
यहि विधि लरत चले परतच्छक ❋ पहुँचे जाय कर्ण तहँ रच्छक ॥
देख्यो कर्ण बृकोदर आये ❋ रहु रहु कहि गुण धनुष चढ़ाये ॥
आवत कहा और के धोखे ❋ असकहि बाण चलायो चोखे ॥
भीम अङ्ग मारे शर जबहीं ❋ हाँक मारिकै धायो तबहीं ॥

दोहा—रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग ।
गज अनेक मारन लगे, रचो भीम रणरङ्ग ॥

अर्जुन कही भीम प्रभु आवत ❋ युद्ध करत हैं हाँक सुनावत ॥
श्रीहरि कही दूरि अति पारथ ❋ योजन डेढ़ बीच पुरुषारथ ॥
करण अपर रथही चढ़ि आये ❋ क्रोधित ह्वै बहु बाण चलाये ॥
लाग्यो घाव भीम के तन में ❋ अधिक क्रोध उपजो तब मनमें ॥
लैकर गदा कोपि परिहारे ❋ चारि तुरंग सारथी मारे ॥
चक्र सहित टूटो तब स्यन्दन ❋ आतुर भागि चले रबिनन्दन ॥
औरहि रथ कीन्हो असवारी ❋ सन्मुख जुरे बीर धनुधारी ॥
तब याबिधि कीन्हो संधाना ❋ भीम अङ्ग मारे दश बाना ॥
अपर साठि शर भल्लुक लीन्हे ❋ ते शर चोट शीशपर दीन्हे ॥
तीन सहस शर ऊपर लागे ❋ थके भीम पग चलत न आगे ॥

दोहा—कर्ण धनुर्द्धर अतिप्रबल, याबिधि मारे बान ।
भीम अंग झाँझर सबै, मोहि गिरे मैदान ॥

श्रमजल रुधिर अङ्गमहँ बह्यो ❋ गजलोथिन के बीचहि रह्यो ॥
मूर्च्छित भये पाण्डु के नन्दन ❋ कर्ण बीर हांक्यो तब स्यन्दन ॥
रहे दूरि अति निकटहि आये ❋ धनुष अङ्गतन खोदि जगाये ॥
उठो भीम कीजै रण करणी ❋ मोहित कहा पर्‌यो है धरणी ॥
खाहु बहुत सोवहु निजधामा ❋ रणमहँ काह तुम्हारो कामा ॥
जीवदान मैं ताते दीन्ह्यो ❋ कुन्ती मातु माँगिकै लीन्ह्यो ॥
यह कहि कर्ण चले पुनि आगे ❋ भीमसेन मूर्च्छा तब जागे ॥
शीतल पवन परस तन कीन्हे ❋ श्रम भा दूरि गदा कर लीन्हे ॥
अपनो बल तब भीम सँभारो ❋ सेना पेलि अग्र पगु धारो ॥
यहि बिधि चल्यो करत पुरुषारथ ❋ कृष्ण समेत लरत जहँ पारथ ॥

दोहा—भीमसेन कह हाँक दै, मैं पहुँच्यो अब आय ।
पारथ तुम निरखत कहा, बधो सेन मन लाय ॥

भीम सात्यकी पाछे आवत ❋ आगे नन्दिघोष रथ धावत ॥
भीमसेन राजन संहारे ❋ पुनि सात्यकी अमितदल मारे ॥

हांके तुरंग पतित के पावन ❀ रुधिर नदी अति बढ़ी भयावन॥
मत्त गयन्द भिरे हैं कैसे ❀ दोऊ ओर कगारक जैसे ॥
बार सेवार सरस अरुझाने ❀ फेन समान जो पग उतराने ॥
टूटे खड्ग मीन सम चमकहिं ❀ ढाल मनहुँ कच्छप समदमकहिं ॥
कटे शीशधर बखतर राजैं ❀ मनहुँ ग्राह जलमाहिं बिराजैं ॥
या विधि कीन्हेउ खेत भयंकर ❀ नाचत मुराड लिये हैं शंकर ॥
भूत बैताल पिशाच सयाने ❀ रुधिर मांस सब खाइ अघाने ॥

दोहा—योगिनि खप्पर भरत हैं, काक कङ्क की भीर ।
गीध शृगाल अनन्दसों, बोलत सरितातीर ॥

यहि बिधिते कीन्हेउ रण भारथ ❀ पारथ करत जहां पुरुषारथ ॥
महाबीर कोटिन शर मारत ❀ बाणन ते अर्जुन संहारत ॥
यहि बिधि होत महारण शरसे ❀ अस्त्र समूह बुन्द सम बरसे ॥
सबै शूर सरदार महाबल ❀ पल भरि नहिं पारथ पावत कल ॥
अर्जुन हाथ बाण जो छूटत ❀ सेना बेधि धरणि महँ फूटत ॥
धर्म राय कुरुपति के सैनहि ❀ हित अनहित रबि देखत नैनहि॥
चक्रवाक पाराडवदल जानत ❀ सम उलूक कुरुदल निशिमानत ॥
बध जयदर्थ पाराडुदल भावत ❀ कौरवदल सब चहत बचावत ॥

दोहा—ब्यासदेव उपमा कही, दोऊ दलहि बिचारि ।
अर्जुन प्रण जयदर्थबध, बाल अ प्रौढ़ा नारि ॥

आतुर ह्वै अर्जुन शर छांटत ❀ बीर अनेकन के शिर काटत ॥
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ हांक देत हांकत रथ सारथ ॥
बाहुलीक कृतबर्मा अत्री ❀ सन्मुख आनि जुरे सब क्षत्री ॥
मारु मारु कै सब रण टेरे ❀ चहुँदिशि नन्दिघोष रथ घेरे ॥
अश्वत्थाम कृपा तब आये ❀ सब मिलि बाण बुन्द झरिलाये ॥
सेन अनेक अस्त्र परिहारत ❀ सांग शूल मुद्गर सों मारत ॥
यहिबिधि होत महारण भारी ❀ हरि सारथि पारथ धनुधारी ॥

श्रीहरि तब अपने मन जाने ❋ पहर दिवस बाकी अनुमाने ॥
जो सब दिवस बीति कै जैहै ❋ सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै ॥
जो अर्जुन निजप्राण गँवावा ❋ मेरो अयश सबै जग गावा ॥

दोहा–पाण्डव मेरे परम धन, पारथ प्राण समान ।
अर्जुनकेहिबिधिराखिये, करत शोच भगवान ॥

श्रीहरि कही सुदर्शन धावहु ❋ बेंड़े होइकै सूर्य छिपावहु ॥
हरि आज्ञा माथे धरि लीन्हा ❋ तब रबि ओट सुदर्शन दीन्हा ॥
गगन दिवस तकि तेज निहारी ❋ भई सांझ कुरुनसे पुकारी ॥
प्रमुदित ह्वै कौमुदी प्रकाशा ❋ पाण्डवदल सब भयो निराशा ॥
संध्या देखि थकित भे पारथ ❋ डारेउ धनुष तजेउ पुरुषारथ ॥
पारथ धनुष डारि जब दीन्हे ❋ मिटो युद्ध सबके मन कीन्हे ॥
दुर्योधन आनँद ह्वै आये ❋ सेन समूह सबै पलटाये ॥
तब पारथ यहि भाँति बखाना ❋ कुरुपति करहु चित्त अनुमाना ॥
सुनिकै दुर्योधन मन हर्षेउ ❋ जिमिचातक जलस्वाती बर्षेउ ॥
कुरुपति की आज्ञा जब पायो ❋ शतबन्धुनमिलिचिता बनायो ॥

दोहा–चिताचढ़नअर्जुन चलयउ, कहेउकृष्णसमुझाय ।
धनुषबाण लैकर चढ़उ; क्षत्री धर्म न जाय ॥

हरि आज्ञा पारथ मन बढ़ेऊ ❋ लैकर धनुष चिता पर चढ़ेऊ ॥
कुरुपति तब निरखनको लागे ❋ कही शकुनि जयदर्थहि आगे ॥
तुव कारण मारेउँ सब सैना ❋ पारथ मरण देखिये नैना ॥
याते और न है सुख कोई ❋ देखत नयन शत्रु क्षय होई ॥
उठि जयदर्थ निहारे जबहीं ❋ श्रीहरि गगन तकायो तबहीं ॥
कर्षि सुदर्शन तब ढिग आये ❋ रबि प्रकाश भा दिवस लखाये ॥
चकित सबहिं अचंभा माने ❋ तब श्रीहरि पारथहिं बखाने ॥
अर्जुन गहरु करत क्यहिकाजा ❋ देखत तुमहिं सिन्धु के राजा ॥
तब अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❋ कण्ठ ताकिकै मारेउ बाना ॥

जूझे शीश परन महि चह्यऊ ❋ तब अर्जुनसों माधव कह्यऊ ॥

दोहा—अन्तरिक्षशिरलैचलहु, सुनहु बचन परिमान ।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबल सिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषा कृते द्रोणपर्व चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❋ लै शर शीश चल्यउ असमाना ॥
हरि अर्जुन रथपर चढ़ि धाये ❋ शर लागत शिर गिरन न पाये ॥
पहुँचायो शिर पारथ बाणन ❋ जहाँ सुरथ तप साधत कानन ॥
धर्यो ध्यान अञ्जलिकर साधत ❋ पुत्र हेतु शंकर अवराधत ॥
कही कृष्ण अर्जुन सों ऐसो ❋ वाके हाथ परत शिर जैसो ॥
यहि बिधिते अर्जुन शर मारे ❋ नृपके हाथ शीश लै डारे ॥
छूट ध्यान चिन्ता मन कीन्हेउ ❋ मृतकहि शीशडारिमहि दीन्हेउ ॥
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं ❋ माथा सुरथ काटि गा तबहीं ॥
छूटे प्राण गिर्यो तब धरणी ❋ कहिनजातिबिधिकीयह करणी ॥
अर्जुन देखि भये भ्रम भारी ❋ यह चरित्र कहिये बनवारी ॥

दोहा—शीश गिरो वाके करहि, भूमिसों दीन्हेउ ढारि ।
प्राणतज्यो क्यहि कारण, हमसों कहिय मुरारि ॥

कथा पुरातन श्रीहरि कह्यऊ ❋ सुरथ नाम राजा यह रह्यऊ ॥
सिन्धूराज महाबल भारी ❋ क्षत्री प्रबल बीर धनुधारी ॥
राज भोग इन बहुबिधि कीन्हा ❋ पुनि तपहेतु जाय मन दीन्हा ॥
शंकर की पूजा अवराधे ❋ सेवा करि गौरी ब्रत साधे ॥
भयो प्रसन्न कहेउ गङ्गाधर ❋ जो इच्छा माँगहु सोई बर ॥
दीजै पुत्र सुरथ यह कह्यऊ ❋ मरै न अमर सदा जग रह्यऊ ॥
सुनिकै शंकर कहा बुझाई ❋ अमर छाँड़ि माँगो बर भाई ॥
जब मैं कहहुँ मरै तब स्वामी ❋ यह बर दीजै अन्तर्यामी ॥
जो वाको शिर करहुँ निपाता ❋ तुरत मरै तब ताकत ताता ॥
एवमस्तु कहि शिव बर दीन्हे ❋ तब जयदर्थ जन्म जग लीन्हे ॥

दोहा—दिनदिन सुतबाढ़नलग्यो, भयो महारथ वीर ।
शिव पूजा संतत करत, श्रीसुरसरि के तीर ॥

दुर्योधन की बहिनि दुसाला ❋ के बिवाह दीन्हेउ जयमाला ॥
जब भारत रणको पग दीन्हेउ ❋ सुरथ जाइ तप बन में कीन्हेउ ॥
सुत के कुशल तपस्या करई ❋ इनहिं कहै जयदर्थ सो मरई ॥
ता कारण इनको शिर ल्याये ❋ ताहि मारिकै तुम्हें बचाये ॥
यहि बिधि सब माधवकहि दीन्हा ❋ हांको रथ भवनहिं शुभकीन्हा ॥
धर्मराय सेना सब लीन्हे ❋ पारथ पन्थ चितै चित दीन्हे ॥
यहि अन्तर रथ देखन पाये ❋ सबहिं कहे हरि अर्जुन आये ॥
पारथ तब नृप के पग परसे ❋ आनन्दित सबके मन हरसे ॥
धर्मराय माधव सों भेंटे ❋ त्रिविध ताप तनुकी सब मेंटे ॥
हरिभाख्यउ प्रण राख्यउ पारथ ❋ बधि जयदर्थकिया पुरुषारथ ॥

दोहा—धर्मराय भाषन लग्यो, श्रीहरि सों यह बैन ।
पारथप्रण रक्षा सदा, तुमहीं पङ्कज नैन ॥

जहँ जहँ गाढ़ पर्‌यो पतरक्षक ❋ सब दिन तहां भये तुम रक्षक ॥
लाख भवन कुरुनाथ बनाये ❋ जरत तहां प्रभु तुमहिं बचाये ॥
रहो पास सब दिन बनवारी ❋ द्रुपद सुताकी लाज निवारी ॥
बन में दुर्बासा छल कीन्हेउ ❋ हे जगदीश राखि तुम लीन्हेउ ॥
युद्ध के हेतु बिभीषण आये ❋ मारत प्रभु तुम हमहिं बचाये ॥
जब कौरव बिष भोजन दीन्हे ❋ तहहुँ आप रक्षा तब कीन्हे ॥
बनमों तृषित भये बनवारी ❋ कर उठाय दीन्हेउ तुम झारी ॥
दीनबन्धु मोरे हित काजा ❋ चरण धोइ बैठारेउ राजा ॥
नारायण शर भीषम मार्‌यो ❋ मरत भीम प्रभु तुमहिं उबार्‌यो ॥
हनुमत सों हठ पारथ कीन्हेउ ❋ दीनदयाल राखि तुम लीन्हेउ ॥

दोहा—पारथ प्रणरक्षक सदा, श्रीबर दीनदयाल ।
जाके तुमसे सारथी, ताहि न जीतै काल ॥

जो जो चरण तुम्हारे ध्यावै ❀ संकट मों प्रभु सबहिं बचावै ॥
ग्रह गृहीत प्रभु सुमिरण कीन्हे ❀ धाये त्वरित राखित्यहि लीन्हे ॥
प्रण प्रहलाद राखि बिन कारण ❀ नरहरि रूप धरो जगतारण ॥
ध्रुवकहँ अटल करेउ सब ऊपर ❀ बिद्यमान बिभीषण भूपर ॥
भक्तवश्य भीषम प्रण कारण ❀ रणमहँ अस्त्र गह्यो जगतारण ॥
धर्मराय यहि भाँति बखाने ❀ श्रीपति सुनत बहुत सुख माने ॥
दुर्योधन गुरु द्रोणहिं कह्यऊ ❀ आज युद्ध पारथ प्रण रह्यऊ ॥
तुम सब भये न कोऊ रक्षक ❀ बधि जयदर्थ गयो परतक्षक ॥
सो सुनि द्रोण कहन असलागे ❀ सत्य बचन राजा के आगे ॥
बलते अर्जुन सक्यउ न मारण ❀ रच्यो उपाय जगत के तारण ॥

दोहा—रबिअस्थित निशि ह्वै गई, छलकीन्ह्यो भगवान।
भक्तपरण राख्यो कही, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाकृते द्रोणपर्वं पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अब राजा जिय शोच न करिये ❀ आजुयुद्ध निशिकालहि लरिये ॥
साजी सेन बिलम्ब न लाये ❀ रथप्रति सबहि मशाल बराये ॥
रथ प्रति चारि अश्व प्रति दोई ❀ यहिबिधि साज किये सब कोई ॥
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे ❀ इत दिशि भीम पाण्डुदलसाजे ॥
बरत मशाल ज्योति उजियारी ❀ शोभा मानहुँ बरत सवारी ॥
सुबरण शीश मुकुट छबि छाजै ❀ मोर मनहुँ बर शीश बिराजै ॥
सुन्दरि हाथ आरती लीन्हे ❀ सुरकन्यन ब्याहन मन दीन्हे ॥
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हे ❀ बीरन धनुषफोंक मन दीन्हे ॥
गजसों गज रथ सों रथ जोरे ❀ पैदल सों पैदल रण घोरे ॥
यहि बिधि लरत जोरसों जोरे ❀ महाशूर मन नेकु न मोरे ॥

दोहा—अर्जुन लीन्ह्यो धनुपकर, कीन्हो शर संधान ।
श्रीमुनिसोंकर उदितछबि, रथ हांको भगवान॥

पाण्डव दल अनेक रण मारे ❀ तब गुरु द्रोण बाण परिहारे ॥

अर्जुन कीन्हेउ लघु संधाना ❋ कुरुदल जूझि गिरेउ मैदाना ॥
निशाकालमहँ अति पुरुषारथ ❋ द्वउदल कीन्हेउअतिशय भारत ॥
शकुना ते सहदेव लराई ❋ महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई ॥
जुरे भीम दुश्शासन साथा ❋ दोऊ सबल गदा लै हाथा ॥
नकुल भिरे कृतबर्मा क्षत्री ❋ कृपाचार्य अरु सात्यकि अत्री ॥
जरासन्ध सुत द्रोणी सङ्गा ❋ दोऊ मचे महा रणरङ्गा ॥
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा ❋ दोऊ लरत आपु जय काजा ॥
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ ❋ बाणनसों छायो सब भारथ ॥
अन्धकार भा निशि अँधियारी ❋ चमकतअस्त्र होत उजियारी ॥

दोहा—सुनियत धनुटङ्कोर अति, निरखत अस्त्र उदोत।
हांक देत क्षत्री सबहिं, निशा युद्ध इमि होत ॥

द्रुपद नरेश द्रोण गुरु साथा ❋ खड्ग लेइ गुरु काट्यउ माथा ॥
गिरेउ द्रुपद धरणी महँ जबहीं ❋ पाछे को गुरुजान्यउ तबहीं ॥
धोखे मित्र बध्यो हम रनमें ❋ उपज्यो शोच द्रोण के मनमें ॥
महारथी करि एक न लागे ❋ चलहिं न एक एक के आगे ॥
सूझि न परत सघन अँधियारी ❋ आगे परत जात सो मारी ॥
मुकुट अनेक धरणि महँ परेऊ ❋ झलकत ज्योति जरायनजरेऊ ॥
गुरू द्रोण सबही ते कह्यो ❋ निशि को युद्ध अचेतो रह्यो ॥
दोऊ दल बिश्रामहिं लीन्ह्यो ❋ गुरुद्रोण मन में दुख कीन्ह्यो ॥
यहि बिधिकहासो कुरुपतिराजा ❋ गुरू शोच कीजै क्यहि काजा ॥
अन्धकार निशि गये न चीन्हे ❋ अपने हाथ मित्र बध कीन्हें ॥

दोहा—दुर्योधन भाषन लगे, कहोगुरुहिसमुझाय।
द्रुपदामित्रक्याहिविधिभये, सुनि संदेह नशाय॥

द्रोण गुरू आये यहि बातन ❋ हे नरेश सुनु कथा पुरातन ॥
तप कारण बन में हम आये ❋ यमुना मज्जन करन सिधाये ॥
द्रुपद देखि कीन्हे परणामा ❋ आशिष दीन्ह होहु मनकामा ॥

तब हम कहा कौन तुम अहहू ❋ कौन बर्ण क्यहि आश्रम रहहू ॥
राजा द्रुपद अहै मम नामा ❋ बिधि बशतजि आयेनिजधामा ॥
लिये किरातन राज हमारे ❋ हारे युद्ध बने पशु धारे ॥
रानी अरु मन्त्री लै साथा ❋ आये बनहिं अस्त्र नहिं हाथा ॥
हम भाषो राजा उतिलीजे ❋ मेरे साथ गमन अब कीजे ॥
बाधि किरात तुम कहँ बैठावों ❋ द्रोणनाम तव जगत कहावों ॥
कही द्रुपद सोइ बड़ो धनुर्द्धर ❋ जूझी सैन्य सकल जाके कर ॥

दोहा—क्षत्री ह्वै जुरि नहिं सके, तुमद्विज कोमलअङ्ग।
धनुबिद्याजानत नहीं, किमि करिहौ रणरङ्ग॥

तब हम या बिधि बचन सुनाये ❋ ज्यहि प्रकार धनुबिद्या पाये ॥
परशुराम जब यज्ञ बिचारे ❋ मुनि सब सुनत तुरत पगु धारे॥
पूजे यज्ञ दक्षिणा दीन्हा ❋ लै सब बिप्र भवन शभ कीन्हा ॥
बच्यो न कछु सबै उन दयऊ ❋ तब हम जाय उपस्थित भयऊ ॥
परशुराम यह बचन सुनाये ❋ अवसर गये विप्र तुम आये ॥
बच्यो कमण्डलु और कुशासन ❋ धनुषबाणकर एकन आसन ॥
तब हम कही सुनौ हे स्वामी ❋ तुम जानत सब अन्तरयामी ॥
बहुत भाँति दारिद्र सताये ❋ तब हम तुम्हैं ताकिकै आये ॥
यकइस बार निक्षत्रिन कीन्हे ❋ धरती धन बिप्रन कहँ दीन्हे ॥
कही नारि तुम बेगि सिधावो ❋ परशुराम ते धन लै आवो ॥

दोहा—आशाकरि आये हते, पै बिधि कीन्ह निरास।
कर्महीन जो जगतमों भवन कुबेर उपास॥

भृगुपति चित्त दया ह्वै आई ❋ निकट बोलि म्वहिं बैन सुनाई ॥
धनुबिद्या चाहहु तौ लीजै ❋ दुखी बिप्रत्वहिं बिमुख न कीजै ॥
यह कहि धनुबिद्या म्वहिं दीन्हे ❋ पुनि सब अस्त्र समर्पण कीन्हे ॥
परशुराम दीन्हे धनु शायक ❋ तीनि लोकके जीतन लायक ॥
जब सब भेद द्रुपद सुनि लीन्हो ❋ आनँदसहित मित्रता कीन्हो ॥

जो आपुहि किरात बध कीजै ❋ आधो राज्य बाँटिकै लीजै ॥
लै द्रुपदहि प्रणशालहि आये ❋ फल अरु मूल अहार कराये ॥
प्रात होत लीन्हे धनु बाना ❋ द्रुपदद्रोण मिलि कीन्ह पयाना ॥
सुनि किरात सब आतुरधाये ❋ तीनि कोटि सेना जुरि आये ॥
भाष्यो द्रुपद मित्र सुनिलीजै ❋ आये शत्रु युद्ध अब कीजै ॥

दोहा—ब्रह्म अस्त्र संधानिकै, हम कीन्हो परिहार ।
तीनिकोटि चतुरंगदल, जारि कीन्ह सबछार ॥

द्रुपदहि सिंहासन बैठाये ❋ तिलक देइ शिर छत्र धराये ॥
भाषो द्रुपद मित्र सुनिलीजै ❋ आधो राज्य भोग अब कीजै ॥
रहै राज्य अस्थिर तव पासा ❋ हम तप हेतु जात बनबासा ॥
असकहि हम प्रणशालहि आये ❋ मुनिसमाज सँग तप मनलाये ॥
बिधिबश पुत्र जन्म जग लीन्हे ❋ अश्वत्थाम नाम त्यहि कीन्हे ॥
मुनिकुँवरन सँग खेलत डोलत ❋ बातैं मधुर अमीसम बोलत ॥
सब मिलि कह्यो दूध हम पाये ❋ सुनि सो पुत्र मातुपहँ आये ॥
बालक कही दूध अब दीजै ❋ माता कही कहा अब कीजै ॥
तण्डुल हुते भवन महँ थोरे ❋ शिला ते बाँटि नीरते घोरे ॥
भरी द्रोण द्रोणी का दीन्हे ❋ हर्षवन्त ह्वै पानहि कीन्हे ॥

दोहा—हर्षवन्त खेलत चलो, मेरो करि अपमान ।
निरखि नारि रोवनलगी, जियमों भई गलान ॥

त्यहि अन्तर हम भवनहिं आये ❋ रोवत देखि महादुख पाये ॥
तिय लागी करसों शिर मारन ❋ हम पूछी रोवत क्यहि कारन ॥
दूध स्वादु मम पुत्र न जानत ❋ उज्वल नीर दूध करि मानत ॥
हम भाषो जनि होहु निरासा ❋ चलहु तुरत द्रौपद के पासा ॥
देखि नगर आनन्दित भयऊ ❋ तब चलि भूपति द्वारहि गयऊ ॥
प्रतिहारन कहँ जाइ जनायो ❋ कहो कि जाय मित्र नृप आयो ॥
सुनिकै तुरत गये प्रतिहारा ❋ राजा मित्र खड़े तव द्वारा ॥

द्विज अति दुखित बसन तनुफाटे ❀ सुनत द्रुपद प्रतिहारन डाटे ॥
द्विज संग्रह है बड़ो अपावन ❀ दूरि करो पावै नहिं आवन ॥
यह सुनि द्वारपाल सब धाये ❀ खेदि दिये हम जान न पाये ॥

दोहा—शाप दिये हम क्रोधकरि, जानि परम बिपरीति।
धनमदते अपमान करि, अति उदास चित थीति॥

पुरी हस्तिना तब हम आये ❀ तुम बालक खेलन मन लाये ॥
कूपहि परो गेंद जब जाने ❀ तुम सब शोच चित्त अनुमाने ॥
सिद्ध बाण संधानहिं कीन्हे ❀ गेंद उठाय हाथ तब दीन्हे ॥
तुम सब देखि अचम्भव भयऊ ❀ लयो गेंद भीषमपहँ गयऊ ॥
सुनत चित्त भीषम अनुमाने ❀ आये द्रोण सत्य हम जाने ॥
आदर करि निज गृह लै आयो ❀ चरण धोय आसन बैठायो ॥
धेनु अनेक बहुत बिधि दीन्हे ❀ पांचक गांव समर्पण कीन्हे ॥
मेरे संग रहौ सुख पैहौ ❀ बालक सब लै अस्त्र सिखैहौ ॥
सिखये अस्त्र निपुण सब कीन्हे ❀ सब मिलिकै गुरु दक्षिण दीन्हे ॥
पारथ ते कछु बाणहि लीन्हे ❀ यहै बात याचज्ञा कीन्हे ॥

दोहा—द्रुपद मित्र मेरो रहै, तिन कीन्हो अपमान।
बाँधि चरणतर डारिये, माँगत हौं यह दान॥

अर्जुन जाइ किये तहँ भारथ ❀ महा युद्ध कीन्ह पुरुषारथ ॥
यहि बिधिते पारथ शर सांध्यो ❀ नागफांस महँ द्रुपदहि बांध्या ॥
मम चरणन तर बांधिकै डारे ❀ गुरु दक्षिणा सों आपु उबारे ॥
तब हम छांड़ि द्रुपद कहँ दीन्हा ❀ मित्र जानिकै भाषण कीन्हा ॥
यहि बिधि मित्र द्रुपद सुनु राजा ❀ मारेउँ आजु तुम्हारे काजा ॥
सब मिलिकै आये निज धामा ❀ दोऊ दल कीन्हेउ बिश्रामा ॥
होत प्रात कुरु पाण्डव साजे ❀ कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे ॥
बेगि अनी आये मैदाना ❀ क्षत्री लगे चलावन बाना ॥
दल चतुरङ्ग चले सब आगे ❀ नन्दिघोष हाँकन हरि लागे ॥

अर्जुन कीन्हे सेन निपाता ❀ कुरुपति कही द्रोण सों बाता ॥
दोहा—हम अर्जुन सम्मुख लरैं, यह इच्छा मनमाह ।
सो सुनि भाषो द्रोणगुरु, को चलिहै नरनाह ॥
पढ़ि नारायण कवचहि दीन्हे ❀ राम कवच तेहि ऊपर कीन्हे ॥
भाष्यो द्रोण भूप अब लरिये ❀ सन्मुख अर्जुनते रण करिये ॥
दृढ़ ह्वै धनुष बाण कर धरिये ❀ शत्रु निपाति राज्य पुनिकरिये ॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ संधाना ❀ हृदय ताकिकै मारेउ बाना ॥
निष्फल भये बाण सब टूटे ❀ कवच प्रताप अङ्ग नहिं फूटे ॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय कीन्हे ❀ तीक्ष्ण बाण दिव्य कर लीन्हे ॥
मारेउ दुर्योधन के अङ्गा ❀ भेद न भये बचे सब अङ्गा ॥
तब पारथ यहि भाँति बखाने ❀ अहो नाथ यह भेद न जाने ॥
सुनि श्रीपति यहि भांति बुझाये ❀ कवच भेद नृप द्रोण बताये ॥
दोहा—द्रोण कवच पढ़िकै दये, बाण न फूटत अङ्ग ।
ता कारण पारथ सुनहु, होत सकल शर भङ्ग ॥
भेद जानिकै शर परिहारे ❀ चारिउ तुरँग सारथी मारे ॥
विरथ भयो दुर्योधन जाना ❀ तब गुरु द्रोण बाण संधाना ॥
पांच बाण पारथ उर मारे ❀ कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ॥
अश्वन तनु मारे दश बाना ❀ सहस बाण मारे हनुमाना ॥
पारथ कोपि गहे शारँग कर ❀ होन लागि अति मारु परस्पर ॥
तब अर्जुन ऐसे शर जोड़े ❀ मारेउ रथ के चारिउ घोड़े ॥
अपर और रथ किये सवारी ❀ अर्जुन द्रोण युद्ध भा भारी ॥
महारथी सब हतैं धनुर्द्धर ❀ कठिन युद्ध कीन्हे तेहि अवसर ॥
धर्मराय कीन्हे पुरुषारथ ❀ सन्मुखरचो शैलसों भारथ ॥
क्षत्री सकल करत संग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराज के कामा ॥
दोहा—बाणवृष्टि अतिहोतितब, शूलशक्ति परिहार ॥
मुद्गर तोमर फरी कर, गदा खड्गकी मार ॥

सबहिं अस्त्र क्षत्री परिहारहिं ❀ सन्मुखज्यहिपावहिंत्यहि मारहिं ॥
यहि बिधि युद्ध करै मनलाये ❀ लै कर गदा भीम तब धाये ॥
गज अनेक मारे तरवारा ❀ रथी अश्व पैदल संहारा ॥
देखि कर्ण कीन्हेउ संधाना ❀ भीम अङ्ग मारे दश बाना ॥
रथचढ़ि भीम धनुष कर लीन्हे ❀ बाणवृष्टि त्यहि दलपर कीन्हे ॥
धृष्टद्युम्न दुश्शासन क्षत्री ❀ दोऊ जुरे महाबल अत्री ॥
कृपाचार्य कीन्हे संधाना ❀ फिरे नकुल त्यहिसन मैदाना ॥
काशीराज द्रोण रण मराडे ❀ बाणन ते रिपुसेन बिहराडे ॥
काशिराज कीन्हेउ पुरुषारथ ❀ बाणन ते छाये सब भारथ ॥
द्रोणी अंग तीनि शर मारे ❀ चारि बाण अश्वन परिहारे ॥

दोहा—क्रोधवन्त द्रोणी भये, कीन्हेउ शर सन्धान ।
द्रोण पर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाकृते द्रोणपर्व षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

संध्या जानि किये विश्रामा ❀ दोऊ दल आये निज धामा ॥
भूप युधिष्ठिर कहिबे लागे ❀ मनमलीन मोहन के आगे ॥
चौदह दिवस भये रण भारथ ❀ भीषमद्रोण सरिस पुरुषारथ ॥
आपु युद्ध रचना जब कीन्हे ❀ तब भीषम शरशय्या लीन्हे ॥
गुरू कीन्ह सब सेन सँहारण ❀ अब उपाय कहिये जगतारण ॥
श्रीहरि आपु कहन असलागे ❀ राजा धर्मराज के आगे ॥
कालिह प्रात या बिधि रण कीजै ❀ आज्ञा नृपति भीम को दीजै ॥
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहिं ❀ आपु द्रोण मरिहैं बिनु मारहि ॥
कह्यो भीम सुनिये जगबन्दन ❀ द्रोणपुत्र फेंकों गहि स्यन्दन ॥
यहिबिधि कहि भूपहि समुझाई ❀ शयन किये निद्रा तब आई ॥
होत प्रात कीन्ही असवारी ❀ कुरुपाण्डव साज्यो दलभारी ॥

दोहा—बम्ब दमामा होत हैं, अरु बैरख फहरात ।
क्रोधवन्त रिससों भरे, बीरचले सब जात ॥

महामत्त कुञ्जर बहु आवत ❋ कम्बु मनहुँ घन शब्द सुनावत ॥
उड़िकै गरद लागि असमानू ❋ सूझि न परत अलोप्यउभानू ॥
हरित अरुण बैरख फहराने ❋ उपमा इन्द्र धनुष समजाने ॥
दोऊ दल अतिशोभा पावत ❋ हिंसत तुरँग जु पैदल धावत ॥
धनु टङ्कोर घोर धुनि राजै ❋ उभय फौज महँ मारु बिराजै ॥
क्षत्रो सकल करन रण लागे ❋ अर्जुन द्रोण करण के आगे ॥
श्वेत बर्ण पारथ रथ राजे ❋ श्याम बर्ण रथ द्रोण बिराजे ॥
हांक देत हांकत जगतारण ❋ सारथि भये भक्त के कारण ॥
अर्जुन द्रोण सरिस पुरुषारथ ❋ दल चतुरङ्ग भयानक भारथ ॥

दोहा—दोउदलबीरनरणरचेउ, कहि नसकहिंकबिबैन।
शरसमूह छाये गगन, रबि नाहिं सूझत नैन ॥

कुञ्जर भिरत करत रण घोरा ❋ होइ चौदन्त जोर सों जोरा ॥
रथी रथी सों सरस लराई ❋ छूटत बाण बुन्द की नाई ॥
अश्व अश्व लै सम्मुख जोरहिं ❋ शूलघाव सों बखतर फोरहिं ॥
पैदल ते पैदल रण घोरा ❋ अरुझे सबहिं जोरसे जोरा ॥
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❋ तोमर गदा खड्ग सों मारे ॥
जूझि गिरहिं भारत मैदाना ❋ सुर पुर गवनहिं चढ़े बिमाना ॥
यहिबिधि करहिं युद्धकी करणी ❋ रुण्डमुण्ड पाटे सब धरणी ॥
भूत बिताल योगिनी गावहिं ❋ जम्बुक अपनो भाव दिखावहिं ॥
उड़हिं काक अन्त्रहि लै कैसे ❋ टूटे डोरि चङ्ग गति जैसे ॥
यहि बिधि होत भयानक भारथ ❋ क्षत्री सबै करत पुरुषारथ ॥

दोहा—गुरू द्रोण अति क्रोधकै, मारेउ तीक्षण बान !
पाण्डव दल जूझे घने, शर छाये असमान ॥

अर्जुन बाण बृष्टि झरिलाये ❋ कौरव दल बहु मारि गिराये ॥
उरझे खेत जोर सों जोरा ❋ लागे करन महारण घोरा ॥
शूल सौंगि मुद्गर पारहारे ❋ सम्मुख जाइ खड्ग शिरझारे ॥

कोतल भये कटारन जोरहि ❀ जूझिजायँ मुखनहु न मोरहिं ॥
जहाँ तहाँ अर्जुन मन धावत ❀ तहाँ तहाँ हरि रथ पहुँचावत ॥
सारथि भये भक्तके कारण ❀ करिताजन हाँकत जगतारण ॥
पारथ करते जे शर छूटत ❀ अङ्ग भेदि धरणीमहँ फूटत ॥
गुरू द्रोण उत बाण चलावत ❀ श्वेतश्याम रथ शोभा पावत ॥
अर्जुन कोपि किये संधाना ❀ द्रोण अंग मोरे शत बाना ॥
गुरू द्रोण शर कोपि प्रहारे ❀ सो शर पारथ के उर मारे ॥

दोहा—तीस बाण अश्वन हने, लक्षबाण हनुमान ।
पीताम्बर तन अरुणकरि, महाबीर बलवान ॥

अर्जुन देखि क्रोध जिय सरषे ❀ गुरुपर लागि बाण बहु बरषे ॥
पारथ द्रोण करत पुरुषारथ ❀ बलसम दोउ करत महभोरथ ॥
दोऊदल महँ लोहा बाजत ❀ सिंहनाद क्षत्री गण गाजत ॥
अर्जुन द्रोण सरस शर छाँटत ❀ बाणन ते बसुधा सब पाटत ॥
शरशर भिरत होत चिनगारा ❀ योगिनि हाँकदेत करिहारा ॥
रथ ते उतरि भीम तब धाये ❀ गदा घाव सब बोर गिराये ॥
कृतवर्मा राजा सँग साथी ❀ अश्वत्थाम नाम त्यहि हाथी ॥
भीम उपर कुञ्जर जब धावा ❀ शीघ्रहिं अर्जुन मारि गिरावा ॥
द्रोण पुत्र कीन्हों सन्धाना ❀ क्रोधित भीम जुरे मैदाना ॥
गुरुसुतलग्यो कठिन शर मारन ❀ पाण्डवदल रण गिरेउ हजारन ॥

दोहा—भीमसेन अति क्रोधकै, गहिउठायकैरत्थ ।
द्रोण सुतहि फेंक्यउ तबहिं, महाबीर समरत्थ ॥

तीनि शतहि योजन परिवेशा ❀ विधिवश गयउ उड़ेउ सो देशा ॥
भुवनेश्वर शङ्कर अस्थाना ❀ अमर हतेउ नहिं त्याग्यउ प्राना ॥
चूरण भये सहित रथ सारथ ❀ लाग्यो धक त्याग्यो पुरुषारथ ॥
शंकर त्वरित नीर लै धाये ❀ बदन सींचिकै बिप्र बचाये ॥
अर्जुन द्रोण सरिस रण माच्यउ ❀ जूझे घने अल्प दल बाच्यउ ॥

सब सेना यहि भांति बखाना ❀ जूझे द्रोण पुत्र मैदाना ॥
निज सेना सों द्रोण बखानत ❀ कित सुत गयो कहहुतुमजानत ॥
सब मिलि कहैं गुरू सों बैना ❀ लरत भीमसों देख्यो नैना ॥
की भाजौ की जूझो रनमों ❀ यह कछु जानि परेउ नहिं मनमों ॥

दोहा—कही द्रोण तब भीम सों, जुरो हुतो तुम संग ।
कहा भयो सुत कितगयो, कहो सांच रणरंग ॥

भाषो भीम गदा परिहारे ❀ रथ समेत चूरण करि डारे ॥
सुनिकै द्रोण चित्त अकुलाने ❀ मिथ्या बात भीम की जाने ॥
कह्यो द्रोण सों पारथ बैना ❀ बध्यो भीम देख्यो मैं नैना ॥
अर्जुन बचन सुनत मन ऊबो ❀ करुणासिन्धु बीच जिय डूबो ॥
कही कृष्ण तुम त्यागहु प्राना ❀ पूर्ब आपदा बिधि निर्माना ॥
अर्जुन के मन भयो अँदेशव ❀ केहिबिधि आपद पाई केशव ॥
श्रीहरि कही सुनहु हो पारथ ❀ अकथकथा बिधिकी पुरुषारथ ॥
तप साधत जब बनमहँ हते ❀ मुनि सबके आश्रम यकमते ॥

दो॰—मुनिकुमार क्रीड़ा करत, सब मिलि एकै संग ।
उद्दालकसुत कह्यउ तब, देखहु मेरो रंग ॥

बाघ समान शब्द जो कीन्हा ❀ ऋषिनारिन कहँ बहु भय दीन्हा ॥
बोलत द्रोण कूदि ढिग आवा ❀ शब्द बेधि इन बाण चलावा ॥
मुख लाग्यो शर बिधिकी करणी ❀ छूटे प्राण परेउ तब धरणी ॥
सब बालक मिलि शोर मचायो ❀ सुनिकै सकल बिप्रगण धायो ॥
द्रोण आइ देख्यो शिशु मर्यो ❀ अपने चित्त शोच बहु कर्यो ॥
क्रोधवन्त उद्दालक भयऊ ❀ द्रोणहिं निरखि शापतब दयऊ ॥
पुत्र शोक हा त्यागत प्राना ❀ तुम ऐसे मरिहौ रण ठाना ॥
यहि बिधि शाप द्रोण कहँ दीन्हा ❀ तब द्विज प्राणत्याग सो कीन्हा॥
वही समय अब आयो पारथ ❀ मुये द्रोण जीते हम भारथ ॥
भाष्यो द्रोण कृष्ण सों बचना ❀ करत सदा तुम मिथ्यारचना ॥

दोहा—भूप युधिष्ठिर बूझि कै, तब त्यागहिं हम प्रान।
मिथ्या कहत न धर्मसुत, सदा बचन परिमान॥
जबहिं द्रोण यह बचन सुनाये ❀ तब हरि धर्मराय ढिग आये॥
तबहिं द्रोण राजा के आगे ❀ कर उठाइ कै पूछन लागे॥
सत्य बचन तुम सब दिन भाष्यउ ❀ हम दृढ़ता तुम ऊपर राख्यउ॥
जूझे सुत तुम देखे नैना ❀ हे नृप सत्य कहौ यह बैना॥
श्रीहरि कही भूप कहि दीजै ❀ अपने काज कहा नहिं कीजै॥
कही भूप सुनिये जग तारण ❀ मिथ्या बचन कहहु क्यहि कारण॥
सात द्वीप संपति जो दीजै ❀ तऊ कृष्ण मिथ्या न कहीजै॥
तब श्रीहरि अस कहा बखानी ❀ क्यहि कारण तुम भारत ठानी॥
जबहिं भूप पांसा मन लाये ❀ तब यह धर्म बिचार न आये॥
राजा द्रुपद सुता पटरानी ❀ गहिकर केश सभामहँ आनी॥
दोहा—दुश्शासन अञ्चल गहे, हरण चीरके काल।
तब यह धर्म कहाँ रहे, भाष्यो दीनदयाल॥
तुम जब लाज छांड़ि कै दीन्हेउ ❀ द्रुपदसुता ममसुमिरण कीन्हेउ॥
ये बातैं बिसरीं क्यहि कारण ❀ यहिबिधि कहीं जगतकेतारण॥
लाख भवन कुरुनाथ बनाये ❀ अर्द्धरात्रि महँ अनल लगाये॥
बिदुर खम्भ को मारग लयऊ ❀ तब तव धर्म कहां नृप गयऊ॥
जब भीमहिं बिषभोजन दीन्हेउ ❀ सुरसरि बोरिगमनघर कीन्हेउ॥
पुर पाताल कोन गहि गह्यऊ ❀ तब यह धर्म कहां तव रह्यऊ॥
कृष्ण बचन नृप के मन आये ❀ तब द्रोणहिं याबिधि समुझाये॥
अश्वत्थामा हत रण भयऊ ❀ की नर की कुंजर कहि दयऊ॥
आधे बचन द्रोण सुनि पाये ❀ आधे महँ हरि शंख बजाये॥
सुनि कै द्रोण सत्य करि जाना ❀ अपनो मरण हृदय महँ आनो॥
दोहा—यहि अन्तर महँ सप्तऋषि, गगनपन्थ महँ आय।
भरद्वाज मुनि साथ लै, द्रोणहि कहा बुझाय॥

तुम ऋषि बंश महा अभिमानी ❀ क्षत्री धर्म करत अज्ञानी ॥
अस्त्र घाव जो प्राण गँवावहु ❀ तौ तुम स्वर्गबास नहि पावहु ॥
मुनि सब देखि दण्डवत कीन्हे ❀ तब करजोरि कहन कछु लीन्हे ॥
तुम आज्ञा माथे पर लीजै ❀ ब्रह्मरन्ध्र भेदन अब कीजै ॥
धरा धनुष झारी कर लीन्हो ❀ कै आचमन देह शुचि कीन्हो ॥
अङ्गन्यासकरि नासहि गह्यऊ ❀ धरिकर ध्यान मौन ह्वै रह्यऊ ॥
यहि अन्तर बिराट नृप आये ❀ सिंहनाद कै हाँक सुनाये ॥
द्रोण सँभारि अस्त्र कर गहहू ❀ मारत हौं तीक्षण शर सहहू ॥
सुनिकै द्रोण क्रोध जिय कीन्हा ❀ ध्यान छाँड़ि शारँग करलीन्हा ॥

दोहा—दिव्यबाण संधानिकै, किये द्रोण परिहार ।
मुकुटसहितशिरटूटिकै, परयोधरणिबिकरार ॥

भाषो ऋषिन द्रोण के आगे ❀ छांड़ि ध्यान तुम लरिबेलागे ॥
दोउ कर जोरि द्रोण तब कह्यऊ ❀ बोर हांक सुनि ज्ञान न रह्यऊ ॥
ताते मैं बिराट बध कीन्हे ❀ यह कहि बहुरि नीरकर लीन्हे ॥
करि अस्नान ध्यान दृढ़ साधो ❀ परम ज्योति मनमों अवराधा ॥
खैंची पवन ऊर्ध्वगति ध्याये ❀ ब्रह्मरन्ध्र भेदन कहँ आये ॥
निसरो पवन ऊर्ध्वगति भयऊ ❀ हरि अर्जुन देखन को गयऊ ॥
भरद्वाज ऋषि सप्तक जेते ❀ ब्रह्मलोक सँग पहुचे तेते ॥
भारत मन क्षत्री तब लाये ❀ धृष्टद्युम्न क्रोधित होइ धाये ॥
रथते उतरि खड्ग लै हाथा ❀ मारो जाय द्रोण को माथा ॥
शीश समेत परो तन धरणी ❀ द्रुपद पुत्र कीन्हेउ यह करणी ॥

दोहा—पाण्डवदल जयजयकरत, जीतिखड़े मैदान ।
कौरवदलहिं मलीन मन, ज्योंसंध्याकोभान ॥

तब रथ हांकि करण चलि आये ❀ आगे ह्वै सेना अटकाये ॥
संध्या जानि कीन्ह तब गवना ❀ कुरु पाण्डव आये फिरि भवन ॥
आगे कथा कहन मन लायउ ❀ अश्वत्थाम कछु चेतन पायउ ॥

ह्वउ करजोरि शम्भु के आगे ❁ यहिबिधि बिनय करनतबलागे ॥
फेंको रणते भीम भयंकर ❁ प्राण दान दीन्हेउ मोहि शंकर ॥
यहिबिधि बरदीजे म्वहिं स्वामी ❁ होहुँ जगत में मनसागामी ॥
आजु राति पहुँचो कुरुखेता ❁ कुरु पाण्डव जहँ सेन समेता ॥
शङ्कर कही बिलम्ब न लैहौ ❁ एक पहर महँ जाइ तुलैहौ ॥
पहर एक महँ आयो तहँवा ❁ दल समेत कुरुपति रह जहँवाँ ॥

दोहा—दुर्योधन भाषनलग्यो, द्रोणी सुनिये बात ।
आजु युद्ध जूझे गुरू, धृष्टद्युम्न असिघात॥

सो सुनि द्रोणी कीन्ह्यउ क्रोधा ❁ पाण्डव सहित बधौं सब योधा ॥
धृष्टद्युम्न मारौं मैदाना ❁ तब पितृहिं देहौं जल दाना ॥
यह सब कथा यहां तक रह्यो ❁ धर्मराय उत हरिसों कह्यो ॥
तुम आज्ञा मैं मिथ्या कह्यो ❁ इहै शोच मेरे मन रह्यो ॥
मिथ्या दोष रहो है माधव ❁ नहिं जानों करिहैं विधि काधव॥
श्रीहरि कही सुनहु नृपज्ञानो ❁ धर्म कि गति सूक्षम यह जानी ॥
मिथ्या करिकै स्वर्ग सिधाये ❁ सत्य कही ते नर कहि पाये ॥
समय बिचारि बात जो कहिये ❁ अन्त काल महँ ते सुख लहिये ॥
धर्मराय परशंसा कीन्हा ❁ हरिसो कथा सु पूछै लीन्हा ॥
तब श्रीहरि यह कह्यउ बुझाई ❁ नृप हरिचन्द राज जब पाई ॥

दोहा—सत्यधर्मपथ नेमब्रत, सबहिं चलत संसार ।
साहभवन मूसनगयो, गहो चोर कोउवार ॥

लैकै नृप आगे त्यहि कीन्हा ❁ बधहु तुरत यह आज्ञा दीन्हा ॥
तब कोटवार मारिबे लाग्यो ❁ बन्धन तोरि चोरसम भाग्यो ॥
ऋषि आश्रम के निकटहिं आवा ❁ देख्यो लता सघनद्रुम छावा ॥
चोर दूत नृप देख न नैना ❁ यहिबिधि छिपेउ इहां मनुहैना ॥
धाइ गयो सब पाछे लागे ❁ कह्यो जोरिकर ऋषिके आगे ॥
चोर एक भागो इत आवा ❁ सत्य कहो मुनि जो लखिपावा ॥

तब ऋषि कह्यो सत्य यह बैना ❋ लता ओट मैं देख्यों नैना ॥
लै कोटवार बांधि तेहि टर्‌यो ❋ तब नृप चोर केर बध कर्‌यो ॥
यह अपराध ऋषय शिरपर्‌यो ❋ अन्तकाल नरकहिं थल कर्‌यो ॥
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानो ❋ समय जानि कै बोलिय बानी ॥

दोहा—सत्यबचन सों भाषि कै, परो नरक अति घोर ।
हत्या लाग्यउ बिप्रकहँ, नृपबध कीन्हें चोर ॥

मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई ❋ श्रीमाधव यह कथा सुनाई ॥
परशुराम त्रेता अवतारा ❋ क्षत्रिन मारि उतारेउ भारा ॥
पिता बैर कारण ब्रत लीन्हे ❋ इक इस बार निक्षत्रक कीन्हे ॥
भूप सुबाहु बधो बल भारी ❋ पुर हस्तिना केर अधिकारी ॥
भूप मारि सेना सब जीते ❋ भागे युग कुमार भय भीते ॥
भृगुपति तिनके पाछे धाये ❋ बिप्रभवनमहँ बालक आये ॥
महा त्रास तब बदन सुखाने ❋ हिमऋतुमनहुँ कमल कुम्हिलाने ॥
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक ❋ शरणागत कीजे प्रतिपालक ॥
परशुराम त्यहि अन्तर आये ❋ महा क्रोध करि हाँक सुनाये ॥
बालक बेगि निकरि नहिं आवत ❋ नहिंतो यहि घर आगि लगावत ॥

दोहा—सभय होय तब विप्रबर, परे चरण तब आय ।
स्वामी यह कारणकहा, आपुहि आयो धाय ॥

क्षत्री के बालक दुइ आये ❋ तेरे भवन देखि हम पाये ॥
देहु निकारि तुरत बध करऊँ ❋ तब अपनेभवनहिं अनुसरऊँ ॥
दुइ बालक मेरे घर अहईं ❋ हैं द्विज जाति पढ़त इत रहईं ॥
परशुराम कहि बालक लावहु ❋ तुरत आनिकै मोहिं दिखावहु ॥
बिप्र कही चलिये अब भवना ❋ अभिअन्तरकहँ कीजै गवना ॥
जबद्विज अभिअन्तर लै आया ❋ द्वउबालक तब आनि दिखायो ॥
परशुराम देखत अनुमाना ❋ क्षत्रिय करिनिश्चय जियजाना ॥

मिथ्या कहो बिप्र क्यहिकारण ❀ हैं दात्री दीजै म्वहिं मारण ॥
कोटि शपथ कै बिप्र बखाना ❀ द्विजबालक हम निश्चयजाना ॥
रन्धन करि बालक के हाथा ❀ भोजन करहु बिप्र इनसाथा ॥

दोहा—सो सुनि बिप्र अनन्दह्वै, करिरन्धन शिशुहाथ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं, खायो एकहि साथ॥

परशुराम तब क्रोध निवारेउ ❀ उठिकै अपने भवन सिधारेउ ॥
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये ❀ अन्त बिप्र बैकुण्ठ सिधाये ॥
संशय धर्म भूप के कारण ❀ यहिबिधि आपकही जगतारण ॥
श्रीमाधव यह आप बखाने ❀ भूप युधिष्ठिर सुनि सुखमाने ॥
कहो कृष्ण राजा सुनि लीजै ❀ प्रात होत रण उद्यम कीजै ॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ ❀ पन्द्रह दिवस बीतिगा भारथ ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं ❀ कुरुपति कर्ण मुकुटशिरधरिहैं ॥
त्रयदिन कर्ण सेन के रक्षक ❀ महा मारु करिहैं परतक्षक ॥
सुरपति शक्ति लई यहि कारण ❀ कर्ण बीर अर्जुन के मारण ॥
जो अर्जुन कहँ देखन पैहै ❀ बज्र शक्ति सों कौन बचैहै ॥

दोहा—धर्मराय यहिबिधिकही, सुनिये श्रीभगवान।
पाण्डव संकट परहिं जब, तुम रक्षक परधान॥

दीनबन्धु जाके रथ सारथ ❀ मारिसकै को रणमहँ पारथ ॥
कुरुपति जरत सेनबल कारण ❀ मेरेबल तुमहीं जगतारण ॥
यहसुनि कृष्ण बहुत सुख मान्यो ❀ नृप कहँ परम हितूकै जान्यो ॥
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये ❀ करि आदर आसन बैठाये ॥
तुम बल यह भारत हम ठाना ❀ मृत्युशेय आयो नियराना ॥
मुकुट बाँधि सेनापति हूजै ❀ अर्जुन रण समता नहिं दूजै ॥
नृप देख्यो मेरा पुरुषारथ ❀ पाण्डव सैन्य बधौं रण भारथ ॥
तीनि दिवस मोरे शिर भारहि ❀ निश्चय अर्जुन बन्धु सँहारहि ॥

सुनिकै दुर्योधन सुख पाये ❋ सेनापति करि मुकुट बँधाये ॥

दोहा--पाण्डव के रक्षक सदा, भक्त वश्य भगवान ।
द्रोणपर्व भाषारचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते द्रोणपर्व भाषासबलसिंहचौहानविरचितेद्रोणाऽर्जुनयुद्ध व
द्रोणबधबर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति द्रोणपर्व समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा ।

कर्णपर्व ।

प्रथमहिं करि गुरु चरण प्रणामा ❋ जाते होहिं सिद्ध सब कामा ॥
बन्दौं रामचन्द्र गुण सागर ❋ सीता पति रघुबंश उजागर ॥
महिमा अगम और नहि जाना ❋ परम भक्त जानत हनुमाना ॥
शुक्ल पक्ष आश्विन को मासा ❋ तिथि पञ्चमि यह कथा प्रकासा॥
सम्बत सत्रह शत चौबीसा ❋ नौरँगशाह दिलीपति ईशा ॥

दोहा—रघुपति चरण मनाइ कै, ब्यासदेवधरिध्यान।
कर्ण पर्व भाषा रचत, सबल सिंह चौहान ॥

गुरू द्रोण जूझे मैदाना ❋ दुर्योधन तब आपु बखाना ॥
द्रौणी कर्ण शल्य सब अत्री ❋ अरु अनेक बैठे हैं क्षत्री ॥
अब काके शिर मुकुट बँधैये ❋ जाते जयति पत्र रण पैये ॥
द्रौणी कहा भूप सुनि लीजै ❋ आपु शोच केहि कारण कीजै ॥
की मेरे शिर दीजै भारा ❋ नातरु कर्ण करहु सरदारा ॥
रबि सुत कर्ण महाबल भारी ❋ अर्जुन के समान धनुधारी ॥
तब राजा यहि भाँति बखाना ❋ गुरुसुत बचन कह्यो परमाना ॥
शकुनी शल्य दुशासन भाखो ❋ दल को भार कर्ण पर राखो ॥
कही कर्ण कुरुनाथ भुवारा ❋ जो सौंपत मोरे शिर भारा ॥
करिकै युद्ध पाण्डवन मारहुँ ❋ सेना सहित न एक उबारहुँ ॥
अर्जुन सहित एक गुण भारथ ❋ मनगामी श्रीपति हैं सारथ ॥
कृष्ण समान सारथी पावों ❋ काटिन अर्जुन मारिगिरावों ॥

दोहा—शकुनी कह्यो बिचारिकै, दुर्योधन सों बैन ।
शल्य सारथी कृष्णसम, और न देखो नैन ॥

मामा शल्य रचहु पुरुषारथ ❋ कर्ण रथहि होवहु तुम शारथ ॥
कही शल्य नृप लोग न थोरे ❋ कर्ण रथहि हम हाँकहिं घोरे ॥
कुरुपति कही शल्य सुनु राजा ❋ कहा न कीजतु अपनो काजा ॥
सारथि होहु हमारे स्वारथ ❋ कृष्ण समेत जीतिये पारथ ॥
करगहि नृप बहु भाँति बुझाये ❋ शल्यहि लिये कर्ण पहँ आये ॥
कृष्ण समान सारथी लीजै ❋ रण महँ सब पाण्डव बधकीजै ॥
सुनिकै कर्ण अनन्दहि छाये ❋ धाइ शल्य कहँ कण्ठ लगाये ॥
शल्य नरेश सारथी मेरो ❋ अब अर्जुनसम बधौं घनेरो ॥
कृष्ण शल्य सम सारथि दोऊ ❋ एकते एक सरिस नहिं कोऊ ॥
बिप्रन सकल बेदध्वनि कीन्हे ❋ मुकुट नरेश कर्ण शिर दीन्हे ॥
सब दिन मेरो मित्र भरोसव ❋ अर्जुन सहित जीतिहौं केशव ॥

दोहा—सेनापति कर्णहि किये, मुकुट बांधिकै शीश ।
धर्मराय सों इतकहत, सत्यसिन्धु जगदीश ॥

अब अनर्थ उपजा अति भारी ❋ रबिसुत कुरु सेना अधिकारी ॥
लिये बोलि सहदेवहि आये ❋ सब मिलि मन्त्र बिचारन लाये॥
कही कृष्ण कुन्ती पहँ जैये ❋ पांचो बाण मांगि लै ऐये ॥
जे शर परशुराम तेहि दीन्हे ❋ अर्जुन बधन प्रतिज्ञा कीन्हे ॥
नित प्रति वह पूजत है बाना ❋ पारथ पर करिहै संधाना ॥
तब हमहूँ नहिं सकैं बचावन ❋ यहि बिधि कही पतितके पावन ॥
हम नीके जानत हैं भेवा ❋ की पूछहु मन्त्री सहदेवा ॥
की कुन्ती जानति है तनमों ❋ पाप धर्म दोऊ हैं मन मों ॥
द्रौणी कर्ण बिलम्ब न लइहै ❋ माता जानि त्वरितसो दइहै ॥
सुनि कुन्ती उठि कीन्हेउ गवना ❋ आई त्वरित कर्ण के भवना ॥
उठिकै कर्ण किये परणामा ❋ मातु गमन कीन्हे केहि कामा ॥

सुनि कुन्ती यह बात जनाई ❀ अर्जुन कर्ण सहोदर भाई ॥

दोहा—जेठे धर्मज पुत्र तिन, लह्यो राजको भार ।
जन्मे मेरे उदर महँ, आये यहि संसार ॥

सुनिकै कर्ण कही यह बाता ❀ दात्रो धर्म कठिन है माता ॥
दुर्योधन कीन्हे प्रतिपालक ❀ अब तुम कही हमारे बालक ॥
अशन बसन बहुभाँति बड़ाई ❀ दुर्योधन दीन्ही प्रभुताई ॥
उन यह युद्ध रच्यो मेरे बल ❀ ऐसे समय कहा कीजे छल ॥
सात द्वीप इन्द्रासन पावों ❀ तौयहिसमय न चित्त डोलावों ॥
तब कुन्ती माँग्यो सो बाना ❀ कर्णदीन्ह मन भयनहिं आना ॥
जे दिनकर दीन्ह्यों ते बाना ❀ माता को दीन्हों करिदाना ॥
कर्ण भये सेनापति भाई ❀ इन्द्रलोक महँ परी अवाई ॥
सुनिकै इन्द्र चितहि दुख मानो ❀ अब अर्जुन को भयो निदानो ॥
सुत सनेह हित तुरत सिधाये ❀ चढ़ि बिमान कुरुखेतहि आये ॥
रथ ते उतरि द्वार पगुधारे ❀ कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ॥
द्रौणी तब तहँ आय जनायो ❀ देवनाथ द्वार पर आयो ॥
आतुर चल्यो बहुत सुखमाना ❀ अपनो जन्म सुफलकरिजाना ॥
परदक्षिणा प्रणाम जनाये ❀ चरण रेणु लै माथ लगाये ॥
आजु सुफल दिन भयो हमारा ❀ देवनाथ द्वारे पगु धारा ॥
तुम तो तीन लोक के स्वामी ❀ कहिय जानि आपन अनुगामी ॥
सहस नयन तब कहा बिचारी ❀ सुनहु करण यह बात हमारी ॥
दानी बड़े श्रवण सुनि पायो ❀ हमहूँ कछु मांगन को आयो ॥
कहौं सत्य जो मांगे दीजे ❀ तब तुम ते याचना कीजे ॥

दोहा—कही कर्ण आनन्द सों, कियो सत्य यहजान ।
नाहिं न कीन्हा जन्मभरि, दीजै तन धनप्रान ॥

मेरो, कर्म सबन सों भारी ❀ जा सुरपति भयो आयभिखारी ॥
मांगौ तुरत गहरु जनि लावहु ❀ जो इच्छाकरिहो स्वइ पावहु ॥

दाता हौ सब लोक बखाना ❋ कुण्डल कवच दीजिये दाना ॥
जन्म समय जो दिनकर दीन्हा ❋ ते हम अब याचज्ञा कीन्हा ॥
सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ़यो ❋ तालछोरिकै कवचहि काढ्यो ॥
हँसकि कर्ण इन्द्र कर दीन्ह्यो ❋ साधुसाधु सब देवन कीन्ह्यो ॥
देवराज तब बाहर आये ❋ चढ़िबिमान चलिबे मन लाये ॥
अति अटको धरणी रथ जोरे ❋ हाँकि थके मातलि सो घोरे ॥
चकित ह्वै तब कह्यो पुरन्दर ❋ अचल बिमान भयो ज्यों मन्दर ॥
तब मातलि यहि भाँति बखाना ❋ पापभार नहिं चलत बिमाना ॥
सुर राजा यात्रज्ञा लायो ❋ भन्यो पाप रथ चलै न पायो ॥
धन्य कर्ण जग में यश पाया ❋ जिन सुरपति को हाथ बढ़ायो ॥

दोहा—कहमातलितब इन्द्रसों, बचन सुनौ परमान ।
कर्णहि हाथ उठाइये, जाहिअकाश बिमान ॥

सुनिकै इन्द्र कर्ण पहँ आये ❋ धन्य धन्य कहि बचन सुनाये ॥
माँगहु बर जो इच्छा होई ❋ तव समान दाता नहि कोई ॥
सुनिकै कर्ण कहै मनलाये ❋ आखर चारि न गुरू पढ़ाये ॥
नाहिंन पढ़े ज्ञान मो अपने ❋ कहूँ कह्यो कबहूँ नहिं सपने ॥
कही इन्द्र यह हठहि तुम्हारो ❋ निष्फल दर्शन होइ हमारो ॥
माँगहु बर तुम को कछु दीजो ❋ तब हम गमन अमरपुर कीजो ॥
कही कर्ण माँगहुँ नहिं मुखते ❋ लियो चहहु तौ देहैं सुखते ॥
निकरहिं प्राण देह बरु छाँड़ै ❋ कबहुँ न कर्ण हाथ को बाड़ै ॥
कह्यो इंद्र जब दानहिं दीजै ❋ बिप्रमुखहिं कछुआशिष लीजै ॥
परशुराम धनु बिद्या दीन्हे ❋ तब तुम चरण परशिकै लीन्हे ॥
कह्यो इन्द्र यह नीति बिचारो ❋ सुनो कर्ण यक बचन हमारो ॥
क्षत्री होइ दान जो लेई ❋ ता कहँ दोष कोउ नहिं देई ॥

दोहा—कर्णअस्त्र गहि लीजिये, बिदित बेद यह बैन ।
भाष्यो ब्यास बिचारिकै, जहाँ देन तहँ लैन ॥

कही कर्ण जो अति हठ कीजे ❀ बज्र शक्ति म्वहिं मांगे दीजै ॥
सुनिकै इन्द्र शक्ति तब दीन्हे ❀ बहुरि बचन यह कहिबे लीन्हे ॥
बज्र शक्ति जानत संसारा ❀ यह तो है निज अस्त्र हमारा ॥
कर्ण बीर जो यहै चलैहो ❀ ताहि मारि मेरे कर ऐहो ॥
चढ़े जाइ रथ कीन्ह्यो गवना ❀ आये धर्मराय के भवना ॥
राजा देखि दण्डवत कीन्हा ❀ हृदय लगाय शक्र तब लीन्हा ॥
सुरपति कृष्णहिं भेद सुनाये ❀ कुण्डल कवच माँगि हमलाये ॥
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहिं होई ❀ कवच भेद भेदहि नहिं कोई ॥
ता कारण दोऊ हम लीन्हे ❀ तेहिते बज्र शक्ति वहिं दीन्हे ॥
अर्जुन कर्ण बैर है भारी ❀ तुम रक्षा करिहो बनवारी ॥
कहि सुर साइँ गमन तब कीन्हे ❀ धर्मराय सेनहिं मन दीन्हे ॥
प्रातहोत दोऊ दल साजे ❀ शब्द अघात बाजने बाजे ॥

दोहा—गज काछे हय पाखरहि, जोते सारथि रत्थ ।
पहिरि सजोदल अस्त्र लै, चढ़े बीर समरत्थ ॥

शैल नरेश आपु रथ साजे ❀ पहिरि सनाह कर्ण दल गाजे ॥
द्रोणी बीर दुशासन चढ्यो ❀ अरु अनेक बीरन मन बढ्यो ॥
शकुनी कृत बर्मा से क्षत्री ❀ दुर्मुख द्विरद महाबल अत्री ॥
दुर्योधन रथ सोहै कैसे ❀ इन्द्र बिमान देखिये जैसे ॥
यहिबिधि चढ़े साजि सब सैना ❀ कहो कर्ण राजा सों बैना ॥
अक्षयत्राण है अर्जुन बांधे ❀ घटत नाहिं कोटिनशर सांधे ॥
मेरे रथ जो शर पहुँचैहो ❀ रणमहँ बिजय पत्र तब पैहो ॥
राजा कही धरो जनि धोखा ❀ दोऊ हाथ चलत शर चोखा ॥
दशहजार हाथिन पर लादे ❀ चित्रितसबहि एकनहिं सादे ॥
दशहजार भरि ऊँट लदाये ❀ दशहजार गाड़िन भरवाये ॥
बीस हजार कहारन दीन्हे ❀ [illegible] साथसब वहिंगिन [illegible]न्हे ॥
तनक फांक अति तीक्षण धारा ❀ [illegible] पक्ष ते सबहिं [illegible] ॥

दोहा—कुरुपति चले साजिदल, सेना सिन्धुसमान ।
कर्ण तेज इमि देखिये, मनहुँ दूसरो भान ॥

श्वेत पीत बैरख फहराने ❋ अरुणश्याम रँग सबुजसोहाने ॥
यहि बिधि ते कीन्हेउ दल साजा ❋ बाजन लाग युद्ध के बाजा ॥
धर्मराय कीन्हेउ असवारी ❋ श्वेत गयन्द महाबल भारी ॥
भीमसेन अति शोभा पाये ❋ नकुल बीर सहदेव सोहाये ॥
धृष्टद्युम्न लीन्हे सब साथा ❋ चढ़े तुरङ्ग अस्त्र गहि हाथा ॥
अर्जुन रथ कीन्हेउ असवारी ❋ जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
पीत बसन तन शोभित नीका ❋ भालउदित हरिमन्दिर टीका ॥
बाजन बजत शब्द आघाता ❋ श्रीहरि कही भीम सों बाता ॥
धृष्टद्युम्न को साथहि लीजै ❋ सन्मुखयुद्ध कर्ण चितदीजै ॥
भीमसेन यह साहस करिये ❋ अर्जुन के सन्मुख ह्वै लरिये ॥
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❋ यहिबिधि आपकह्योकेहिकारण ॥
हाँको रथ आगे भे लरिये ❋ सन्मुख युद्ध कर्ण सों करिये ॥

दोहा—अर्जुन सुनिये मन्त्र यह, भाषेउ श्रीभगवान ।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ।

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृते कर्णपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

जौलौं शक्ति कर्ण के हाथा ❋ करौ युद्ध जनि वाके साथा ॥
इतना कहा हमारो काजै ❋ चलौ जाय द्रौणी रण लीजै ॥
दोऊ दल महँ बाजन बाजैं ❋ हाँक देत क्षत्री गण गाजैं ॥
गज सों गज रथसों रथजोरे ❋ मुख लागत हिंसत हैं घोरे ॥
पैदल सो पैदल अरुझाने ❋ महाबीर सब बाँधे बाने ॥
बर्षै बाण सकै को भाखन ❋ शत ते सहस सहस ते लाखन ॥
शल्य सारथी रथहि चलायउ ❋ आगे कर्ण पेलिकै आयउ ॥
गहे धनुष कर बाणहिं फेरत ❋ अर्जुन कहाँ हाँक दै टेरत ॥
सुनिकै भीमसेन तब धायऊ ❋ अस्थिर रहोनिकट नहिंआयऊ ॥

यह कहि बीस बाण करलीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हे ॥
करि संधान कर्ण तब भाषेउ ❀ जुरेउ आपु अर्जुनकित राखेउ ॥
बाण पचीस भीमऊर मारे ❀ सात बाण अश्वन परिहारे ॥

दोहा—इताहि कर्ण उत भीमसों, युद्धभयो अति घोर ।
महारथी सब हाँकदै, जुरे जोरसों जोर ॥

शकुनी सहदेवहि संग्रामा ❀ जुरे बीर अपने जय कामा ॥
नकुलहि कृतबर्मा सों भारथ ❀ दोऊ सबल रच्यउ पुरुषारथ ॥
कुरुपति धर्मराय तब सरसे ❀ छूटे बाण बूंद सम बरसे ॥
घटउत्कचहिं द्विरद संग्रामा ❀ कुरुपति धर्मराय के कामा ॥
शूल सांगि मुद्गर परिहारे ❀ कोऊ गदा कोपि शिर मारे ॥
खड्ग कटार उबाहहिं चोखे ❀ लागत जहां रहत नहिं धोखे ॥
कोऊ पाश साजि शिर मेले ❀ अरस परस करि आगे पेले ॥
भीम कर्ण ते सरस लराई ❀ महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई ॥
कर्ण बीर ऐसे शर जोड़े ❀ मारे रथके चारिउ घोड़े ॥
बिरथ भये भीमहिं जब जाने ❀ धृष्टद्युम्न तब शारंग ताने ॥
यहि बिधि सरस बाण संधाने ❀ कुरुदल के शर छाँह छिपाने ॥
बिरथहु भीम घात बनिआये ❀ लैकर गदा क्रोधकरि धाये ॥

दोहा—करमुष्टिका प्रहार ते, मारेउ सेन अनन्त ।
गदा घाव लोटत परे, मतवारे मयमन्त ॥

देखि द्विरद आगे चलि आयउ ❀ भीम उपर शतबाण चलायउ ॥
द्विरद संग आये शत भाई ❀ ते सब बाण वृष्टि झरिलाई ॥
भीमहिं घेरि लगे शर मारन ❀ इत अकेल उत बीर हजारन ॥
द्विरद आइ मुद्गर परिहारे ❀ भीमसेन बायें कर मारे ॥
युगरद शीश परो तब धरणी ❀ देखी सबन भीम की करणी ॥
द्विरदहि गिरत सबै मिलि धायउ ❀ शूल शेल सब बाण चलायउ ॥
बहुतक आनि गदा परिहारे ❀ बहुतक आनि खड्ग शिरझारे ॥

क्रोधित भीम भयो अति ताते ❀ शतबान्धव महँ बीस निपाते ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे ❀ धृष्टद्युम्न कर मारेउ घोरे ॥
शल्य सारथी रथ पहुँचावा ❀ रहुरे भीम कर्ण अब आवा ॥
यह कहिकै मारे तीक्ष्ण शर ❀ घायल ह्वै के फिरे बृकोदर ॥

दोहा—पाण्डव दल जूझे घने, लगत कर्ण के बान ।
धर्मराय यह देखिकै, कीन्हे शर संधान ॥

करगहि धनु कीन्हें संधाना ❀ कर्ण अङ्ग मारे दश बाना ॥
अपर बीस शर घायल छूटे ❀ ते सब शरहु हृदयमहँ फूटे ॥
हँसिकै कर्ण बाण दश लीन्हे ❀ भूप अङ्ग शर भेदन कीन्हे ॥
अर्जुन कहाँ दुरायहु भाई ❀ तुम मोसों रण रची लराई ॥
तुमते कहा करहिं पुरुषारथ ❀ मेरे बल समान है पारथ ॥
शल्य सारथी कर्ण चेताये ❀ बाँधो नृपति घात भलपाये ॥
जो लगि धर्मराय लै आये ❀ जयतिपत्र भारत महँ पाये ॥
नागफांस को उद्यम कीन्हे ❀ धर्मराय खगपति शर लीन्हे ॥
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ ❀ धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ ॥
क्रोधित कीन्हेंउ युद्ध भयंकर ❀ मुण्डमाल कीन्हेउ गर शंकर ॥
द्रोणी सों अर्जुन पुरुषारथ ❀ कीन्हो महा भयंकर भारथ ॥
सहस बाण द्रोणी तब छाँटे ❀ आवत बीचहि पारथ काटे ॥

दोहा—अर्जुन द्रोणी रणमचा, छूटत बाण अनन्त ।
हयरथ पैदल गिरत हैं, मतवारे मयमन्त ॥

दूनों दल महँ परी लराई ❀ संध्या काल आइ नियराई ॥
घटोत्कचहिं तब कृष्णबखाना ❀ आपु युद्ध कहँ करहु पयाना ॥
माया युद्ध करिय यहि रूपा ❀ मारो मिलि कौरवपति भूपा ॥
करत प्रणाम असुर सब धाये ❀ कुरुसेना के ऊपर आये ॥
गगन पन्थ कीन्ही अँधियारी ❀ बरषहि बाण मनहु घनझारी ॥
बृक्ष अनेक गगन ते छूटत ❀ लागत शिला सेन सिर फूटत ॥

यहिबिधि मारु भयानक कीन्हे ❋ अन्धकार कछु जात न चीन्हे ॥
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा ❋ कोउ न रहेउ काहु के साथा ॥
अपने मन सांचो करि जानेउ ❋ प्रलय काल अब आय तुलानेउ ॥
दुर्योधन तब आपु पुकारे ❋ कहां कर्ण हैं मित्र हमारे ॥
मारहु असुर बिलंब न लावहु ❋ संकट ते अब मोहिं छुड़ावहु ॥

दो०—कर्ण कही राजा सुनहु, बधहुँ असुर जो आज।
बज्र शक्ति मेरे अहै, राखेउँ अर्जुन काज ॥

आजुराति अस्थिर ह्वै रहिये ❋ सबमिलिकै धीरज मन गहिये ॥
राजा कही कर्ण सों ऐसो ❋ अहो मित्र बोलत हो कैसो ॥
जो सबमिलि अर्जुनकहँ मरिये ❋ अर्जुनमारि कालिहका करिये ॥
सांग शूल मुद्गर परिहारत ❋ बृक्ष पषाण शीश पर डारत ॥
अब जनि गहरु करो तुम भाई ❋ मारि असुर कहँ देहु गिराई ॥
कर्ण पुकारि कही यह बानी ❋ राजा तुम तो बात न जानी ॥
अहैं कृष्ण पारथ के रक्षक ❋ तिन उपाय कीन्हेउ परतक्षक ॥
मृत्यु बिना कोऊ नहिं मरही ❋ भये मृत्यु को रक्षा करही ॥
धीरज धरहु करहु मान गाढ़ ❋ मैं अब धनुष लिये कर ठाढ़ा ॥
बज्रशक्ति ते असुर न मारहुँ ❋ कालिह युद्ध अर्जुन संहारहुँ ॥
अर्जुन मारि जीतिहैं भारथ ❋ कुरुपति करहुँ तुम्हारो स्वारथ ॥
राजा कही मतिहि बौरानी ❋ आजुहि मरे कालिह का जानी ॥

दोहा—कर्ण कही बिधिकी रचित, टारिसकै सो कौन।
मारतहौं अब असुरकहँ, रहैं सबै होइ मौन ॥

यह कहिं बज्रशक्ति कर लीन्हे ❋ सहसनयन को सुमिरण कीन्हे ॥
मारि असुरको कर्ण चलायउ ❋ छिटकीज्योति अकाशहि आयउ ॥
लागी शक्ति असुर उर कैसे ❋ लगतबज्र गिरिवर गिरिजैसे ॥
पऱ्यो भूमितल असुरभयंकर ❋ मुण्डमाल लीन्हेउ सो शंकर ॥
गई शक्ति सुरपति के हाथा ❋ बहुत अनन्द भये जगनाथा ॥
साधु कर्ण सेना सब भाखे ❋ ऐसे समय कवन केहिराखे ॥

उभय सैन्य अपने गृह आयहु ❀ सब मिलि खानपान मनलायहु ॥
रोदन करै हिडम्बी कैसे ❀ बिछुरी गाय बच्छ सों जैसे ॥
भीमसेन करुणा बहु कीन्हे ❀ कृष्णदेव कछु कहिबे लीन्हे ॥
करुणा करहु कछू नहिं होई ❀ जगमहँ अमर भये नहिं कोई ॥
कुरुक्षेत्र महँ प्राण गँवाये ❀ आपु मरे अर्जुनहि बचाये ॥
भीमसेन अब साहस करिये ❀ अपनो प्रण रक्षा मन धरिये ॥

दोहा—क्षत्री होय प्रणको धरै, करै सत्य परमान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्री महाभारते भाषा कृते कर्ण पर्व द्वितियोऽध्यायः ॥ २ ॥

त्रय दश बर्ष छूट भा देशहि ❀ द्रुपदसुता नहिं बांधे केशहि ॥
जब यह बात कही बनवारी ❀ छूटो शोक क्रोध भा भारी ॥
धायल धर्मराज दुख पावा ❀ अर्जुनसों यह बचन सुनावा ॥
धृग अर्जुन धृग धनुशर तोरे ❀ कर्ण बाण झरझर तन मोरे ॥
सो सुनि अर्जुन क्रोधहि पायउ ❀ करगहिके यदुनाथ बुझायउ ॥
सेना सबहि शयन मन दीन्हे ❀ प्रात होत रण उद्यम कीन्हे ॥
कीन्हे बम्ब दमामे बाजे ❀ सावधान क्षत्री सब गाजे ॥
कर्ण तुरत अस्नानहिं कीन्हे ❀ बिप्रन बोलि दान बहु दीन्हे ॥
पहिरि सनाह किये रण साजैं ❀ चहुँ दिशि भेरि दुन्दुभी बाजैं ॥
माथे मुकुट बिराजत कैसे ❀ सूर्य प्रकाश अकाशहिं जैसे ॥
शल्य सारथी जोते घोरे ❀ चञ्चल चपल दिनन के थोरे ॥
खोदत महि फहरात हैं ठाढ़े ❀ मानहुँ सिन्धु मथन के काढे ॥

दोहा—पाखर लाल लगाइकै, पुनि बांधे गजगाह ।
चढ़े कर्ण गज कोपिकै, मन लरिबे की चाह ॥

दुर्योधन कीन्हे असवारी ❀ साजी सेन महाबल भारी ॥
भई बम्ब बैरख फहराने ❀ चले बीर सब बाँधे बाने ॥
पाण्डव के दल बाजन बाजे ❀ नन्दिघोषरथ श्रीपति साजे ॥
पहिरि सनाह खड्ग कटि बांधे ❀ अक्षय तूण बिराजत कांधे ॥

करगहि धनुष चढ़े रथ पारथ ❀ जोती गहे कृष्ण से सारथ ॥
धर्मराय कीन्हे असवारी ❀ आगे भये भीम धनुधारी ॥
दल चतुरङ्ग रङ्ग करि आई ❀ युद्ध भूमि महँ शोभा पाई ॥
मूर्ख महाउत लइ अधिकारी ❀ भिरे गयन्द युद्ध भा भारी ॥
दल चतुरङ्ग करत रण घोरा ❀ उरझे सबै जोर सों जोरा ॥
कही कर्ण अब रथहि चलावहु ❀ अर्जुन के सन्मुख पहुँचावहु ॥
मारौं आजु खेत महँ पारथ ❀ देख्यो शल्य मोर पुरुषारथ ॥
हँसि कै शल्य कही यह बानी ❀ रबिनन्दन यह बात न जानी ॥

दोहा–हंस काग जैसी भई, तैसी भई निदान ।
अबहिं कर्ण बलदेखिहो, भारत के मैदान ॥

क्रोधित ह्वै तब कर्ण बखाने ❀ हंस काग को भेद न जाने ॥
भाषो शल्य कर्ण सुन बीरा ❀ एक दिवस सरिवर के तीरा ॥
राज हंस सब चले उड़ाई ❀ सिन्धु पार महँ चर्नो चराई ॥
तिनसों काग कही अस बानी ❀ हमकहँ साथ लेहु खग ज्ञानी ॥
कही हंस तुम जाइ न पैहौ ❀ मरिहौ बूड़ि पार नहिं लहिहौ ॥
कही कागगति सबहि उड़हौं ❀ तुम सब साथ पार मैं जैहौं ॥
यह कहि चले हंस के सङ्गा ❀ कोश चारि लौं उपज्यो रङ्गा ॥
थको काग तब ढिग हो आयो ❀ बूड़त हौं यह बचन सुनायो ॥
कही हंस सुधि अबहि भुलानी ❀ अब काहे बूड़त जड़ ज्ञानी ॥
सुनिकै हंस निकट तब आयो ❀ पीठि उपर तब काग चढ़ायो ॥
फेरि बहुरि लाये यहि पारा ❀ राख्यो काग नींब की डारा ॥
सिन्धु पार सब गयो उड़ाई ❀ यह चरित्र हम देख्यो भाई ॥

दोहा–शरसों सागर बाँधिकै, जिन जीते हनुमान ।
शरपञ्जररथराखिकरि, तिनसोंतुमाहिसमान॥

जब बिराटको गोधन गह्यऊ ❀ तादिन कर्ण कहाँ तुम रह्यऊ ॥
क्रोधित कह्यो कर्ण यह बैना ❀ देखहु आजु युद्ध तुम नैना ॥

हाँको रथहि बिलम्ब न लाग्रो ❀ अर्जुन के सम्मुख पहुँचाग्रो ॥
सुनिकै शल्य तेज रथ हाँको ❀ पवन लगे फहरात पताको ॥
भीमसेन आगे ह्वै लीन्हे ❀ बाणवृष्टि करिबे मन दीन्हे ॥
कह तब कर्ण भीम तुम अहहू ❀ अर्जुन कहाँ सो मोसन कहहू ॥
यहै कहत अर्जुन तब आये ❀ नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये ॥
भाष्यो अर्जुन भीम सिधारो ❀ दुश्शासन सों युद्ध बिचारो ॥
आजु कर्ण सों हमहिं लराई ❀ पुरुषारथ देखो सब भाई ॥
यह कहिकै कीन्ह्यो सन्धाना ❀ लागे सरस चलावन बाना ॥
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ आवत बाण बीचही तोरे ॥
दोऊ बीर बाण संधाना ❀ शर के छांह छिपाये भाना ॥

दोहा—अरस परस दोऊ प्रबल, कीन्ह्यो शर संधान ।
अन्धकार भादव समों, सूझि परहिं नहिं भान ॥

चले बाण कबि सकहिं न भाखन ❀ शतसों सहस सहस सों लाखन ॥
नन्दिघोष हांकत बनवारी ❀ शल्य सारथी उत अधिकारी ॥
अर्जुनकर्ण करत मन जितको ❀ कृष्ण शल्यहाँकत रथ तितको ॥
अग्निबाण अर्जुन कर लीन्हे ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक गुण दीन्हे ॥
चलेबाण कौरवदल जारन ❀ प्रकटीं शिखा हजार हजारन ॥
देखि कर्ण जल बाण चलाये ❀ क्षण भीतर सबअग्नि बुताये ॥
जलकी धार सेन बिकलाने ❀ पवन बाण अर्जुन संधाने ॥
परम बेगि ताते जेहि ताका ❀ टुटन लगे सब ध्वजा पताका ॥
छांड़े कर्ण सर्प के बाना ❀ नागन कीन्ह पवन सब पाना ॥
तब अर्जुन खग बाण चलाई ❀ मोरन पकरि सर्प सब खाई ॥
दोऊ बीर चलावत हैं शर ❀ बलसमान सो बली धनुर्द्धर ॥
धरणी जल अरु स्वर्ग पताला ❀ बाण मारि सखे सरि ताला ॥

दोहा—पक्षी उड़त गगन महँ, ताको दिशा अधार ।
देवन देखत युद्ध कछु, शर छाया संसार ॥

कोटिन अर्ब खर्ब शर छांड्यो ❀ दोऊ दल बाणन ते पाट्यो ॥
कुरु पाण्डव दल सब भरमाये ❀ अर्जुन कर्ण न देखन पाये ॥
दोऊ बीर सरस पुरुषारथ ❀ कीन्हे महाभयानक भारथ ॥
चुश्चुक कही कर्ण के आगे ❀ अब मोकहँ सन्धान सभागे ॥
लीलों कृष्ण सहित रथ पारथ ❀ अब देखहु मेरो पुरुषारथ ॥
सो सुनि कर्ण बीर सन्धाना ❀ चुञ्चुकसहित त्याग तब बाना ॥
कही कर्ण अर्जुन संहारहु ❀ आजु जानिबो तेज तुम्हारहु ॥
हांक मारिकै बाण चलाये ❀ चुञ्चुक प्रकट देह धरि आये ॥
देखत रूप भयंकर भारा ❀ भादौं घटा उमड़ि जनु आवा ॥
दरबि बाढ़ि लाग्यो असमाना ❀ फण के छांह छिपाये भाना ॥

दोहा—रबि अछत निशि ह्वैगई, अर्जुन भाषै बैन।
अन्धकार कस देखिये, कहिये राजिवनैन ॥

तब श्रीहरि आये यहि बातन ❀ पारथ सुनिये कथा पुरातन ॥
जब खाण्डव बन दाहन कीन्हा ❀ सारथि होइजोती हम लीन्हा ॥
शर पञ्जर छाये तुम कानन ❀ शत योजन घेरे तुम बानन ॥
तादिन रथ ऐसा मैं हांका ❀ घुमिरत मनहुँ कुम्हार को चाका ॥
खग मृग पशु जागत दवकानन ❀ बाहर होय न बचत है बानन ॥
घुर्मि नाम नागिन जब जानी ❀ तेजवन्त आकाश उड़ानी ॥
तब तुम वेगवन्त शर छांटे ❀ नागिनि गई पूँछ त्यहि काटे ॥
ताको सुत यह चुञ्चुक नामा ❀ बसै पताल शेष के धामा ॥
करकोटक को पुत्र कहावा ❀ बैरलेन भारत मों आवा ॥
कर्ण के त्रोण रहत है तबसों ❀ कीन्हो युद्ध अरम्भन जबसों ॥
तब अर्जुन यह भेदहि जाने ❀ क्रोधित बाण कीन्ह संधाने ॥
अर्जुन क्रोध लगे शर मारन ❀ शत ते सहस सहस्र हजारन ॥

दोहा—अर्जुन मारत कोपिकै, नाहिन फूटत अङ्ग ।
चुञ्चुक के फल लागिकै, होत बाण सब भङ्ग ॥

गर्जत सर्प क्रोध ते कैसा ❋ प्रलयकाल बोलत घन जैसा ॥
चुञ्चुक कही सुनो हो पारथ ❋ लीलत अहौं करौ पुरुषारथ ॥
यह कहि बदन किये बिस्तारा ❋ मनहुँ उदर नहि अहहि पनारा॥
जो शर अर्जुन के कर छूटत ❋ गड़े न नेकु लागि सब टूटत ॥
पाण्डव दल देखत भय माने ❋ धर्मराय अचरज करि जाने ॥
नन्दिघोष रथ लीलै लीन्हेउ ❋ हाहा शब्द देवतन कीन्हेउ ॥
सुरपति देखि महाभय पायो ❋ हनूमान सों ऐस जनायो ॥
दाबहु रथ सो जाइ पताला ❋ यहिबिधि वञ्चितकीजियव्याला ॥
ऊपर बल कीन्हेउ हनुमाना ❋ रथ गड़िगयो पताल समाना ॥
चुञ्चुक के मुख पीत पताका ❋ पवन लगे डोलत है बाका ॥
दोऊ दल कीन्हेउ अनुमाना ❋ नन्दिघोष अहिउदर समाना ॥
चुञ्चुक फिरेउ कर्ण ढिगआवा ❋ साधु साधु कहि कर्ण सुनावा ॥

दोहा–शल्य कहीतब कर्णसों, झूंठ कहो क्यहि काज ।
पारथको को ग्रासि है, जेहि सारथि ब्रजराज ॥

यहि अन्तर हरि रथहि उठायउ ❋ नन्दिघोष धरणी पर आयउ ॥
पाण्डव दल देखत सुख मानेउ ❋ तबहिं कर्णसों शल्य बखानेउ ॥
रथ समेत देखहु यहि पारथ ❋ हनूमान रथ पारथ सारथ ॥
कर्ण कही चुञ्चुक सों बानी ❋ मिथ्या तुम भाषेउ अज्ञानी ॥
चुञ्चुक कही भयो छल भाई ❋ मैं तो कछु यह भेद न पाई ॥
फिरि मोको कीजै संधाना ❋ करौं ग्रसन पारथ भगवाना ॥
कही कर्ण यह उचित न होई ❋ बाण बटोरि चलाव न कोई ॥
आश देइकै कीन्ह निरासा ❋ पैहौ नाग नरक महँ बासा ॥
यह कहि नाग किये तब गवना ❋ जैहौ कर्ण काल के भवना ॥
चुञ्चुक जब भवनहि शुभ कीन्हे ❋ अर्जुन कर्ण युद्ध मन दीन्हे ॥
कब आवे कब शर सन्धाने ❋ कब छूटहि कोई नहिं जाने ॥
यहि बिधि करत युद्ध की करणी ❋ अङ्ग भेदि फूटत शर धरणी ॥

दोहा—महाबीर दोऊ भिरैं, करहिं अस्त्र परिहार ।
रण देखत मुनिदेवगण, काठिन बजाये सार ॥

अर्जुन कर्ण भयो रण घोरा ❋ परो भीम दुश्शासन जोरा ॥
भीमसेन ऐसे शर जोरे ❋ मारे रथ के चारिउ घोरे ॥
दुश्शासन शारङ्ग कर लीन्हे ❋ बाणन बृष्टि भीम पर कीन्हे ॥
चारि बाण ते अश्व सँहारे ❋ एक बाण ते सारथि मारे ॥
शत शर भीमसेन उर लागे ❋ क्रोध अनलतनु अन्तर जागे ॥
कर गहि गदा भीम तब धाये ❋ हांक मारि दुश्शासन आये ॥
दोऊ बीर खेत महँ कैसे ❋ महामत्तगज उरझे जैसे ॥
कर गहि गदा कोपि परिहारहिं ❋ एकहि एक कोपि करि मारहि ॥
धमकत घाव लगेउ जब तनमें ❋ बाढ़त कोप दोऊ के मनमें ॥
अस्त्र झारिकै दोउ लपटानेउ ❋ क्रुद्धित तरल युद्ध अरुझानेउ ॥
करगहि कच मुष्टिक परि हारहिं ❋ शीशहि शीश कोपिकै मारहि ॥
उरसों उर पेलत हैं दोऊ ❋ पारिसकत नहिं टरत हैं कोऊ ॥

दोहा—भीमसेन अतिक्रोधकर, अभिरत अमित अनन्द ।
आनि पछारेउ धरणिपर, मानहुँ सिंह गयन्द ॥

डरेउ भीम दुश्शासन कैसे ❋ व्याध कुरङ्ग पछारहि जैसे ॥
कहेउ भीम दुश्शासन बीरहि ❋ खैंचत कस न द्रौपदी चीरहि ॥
खेलहु पाँशा मुकुट बनावहु ❋ गहो केश द्रौपदि लै आवहु ॥
अबहिं सबहि सुधि बिसरी भाई ❋ मेरे चितहि आजु सब आई ॥
भीमसेन कह नकुलहि धावहु ❋ जाइ तुरत द्रुपदी लै आवहु ॥
पलमहँ नकुल गयो चलि भवना ❋ द्रुपद सुता अब कीजै गवना ॥
मेलेउ भीमसेन अभिमानी ❋ हँसिकै चली आपु तहँ रानी ॥
आई तुरत बिलम्ब न कीन्हे ❋ पौढ़े भीम दुशासन लीन्हे ॥
कही पुकारि द्रौपदी रानी ❋ सुनिये बात भीम तुम ज्ञानी ॥
ऐसे तौ तुम पाँच सहोदर ❋ धन्य धन्य तुम धन्य बृकोदर ॥

जब कीचक विराटपुर मारे ❀ तादिन मेरे लाज निवारे ॥
तन मन धनहि निछावर कीजे ❀ तोपर प्राण वारिकै दीजै ॥

दोहा—भीम भयंकर रूपधरि, कहेउ सुनौ दोउ सैन।
है कोऊ रक्षा करै, मोसे कहिये बैन ॥

कुरु पाण्डव जेते हैं क्षत्री ❀ कृष्ण सहित यदुबंशो अत्री ॥
असुर नाग नर सुरहु पुरन्दर ❀ धरणी सिन्धु मेरु गिरिकन्दर ॥
चन्द्र सूर्य तुम दोऊ साखी ❀ तीनि लोक देखत हैं आँखी ।
रक्षा करहु दुशासन मारत ❀ कही भीम हम भुजा उपारत ॥
सुनि पारथ के जिय रिस बाढ़ी ❀ तीक्षण शर निषङ्गते काढ़ी ॥
मारि भीम अब करों निपाता ❀ कैसेउ सहि न जाति यह बाता ॥
श्रीपति कही उचित नहि होई ❀ आजु भीम सों जितहि न कोई ॥
मैं नरसिंह रूप बल दीन्हा ❀ भीम अङ्ग परवेशित कीन्हा ॥
हाँक मारिके भुजा उपारे ❀ रुधिर द्रौपदी के शिर डारे ॥
शिरसों परत रुधिर की धारा ❀ द्रुपद सुता तब बाँधेउ बारा ॥
अरुण बरण तन सोहत कैसे ❀ असुर युद्ध महँ देवी जैसे ॥
द्रुपद सुता तब भवन सिधारी ❀ अर्जुन कर्ण रचेउ रण भारी ॥

दोहा—शर बर्षत हर्षत दोऊ, हाँकत रथ भगवान ।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते कर्णपर्व भाषाकृते तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोउ बीर हैं मेघ समाना ❀ बर्षत बाण बुन्द अनुमाना ॥
घन घहरात घहर रथ चाके ❀ बकपाँती सम श्वेत पताके ॥
ऐसे बाण गगन मों धावहिं ❀ शर रोकत शरपन्थ न पावहिं ॥
कुरु पाण्डव दल नाहिं न सूझै ❀ अपन पराइ कोई नहिं बूझै ॥
गज अरु शकट हजारन धावहिं ❀ कर्ण के रथहि बाण पहुँचावहिं ॥

दोहा—अर्जुन कर्णहिं रण मच्यो, जलदबुन्द समबान।
सरस निरस कहिजात नहिं, रह्यो मण्डि मैदान॥

कर्ण पाँच शर भालुक लीन्हे ❀ लघु संधान किरीटन कीन्हे ॥
दोऊ सारथि रथहि चलावत ❀ बोहित मनहुँ सिन्धु महँधावत ॥
जूझी सेन लगे तीक्ष्ण शर ❀ होन लागि अति मारु परस्पर ॥
अर्जुन कर्ण करत रण करणी ❀ रुण्ड मुण्ड माराच्यो सब धरणी ॥
अर्जुन बाण कोपि परि हाऱ्यो ❀ सहस पैग पाछे रथ टाऱ्यो ॥
देखि कर्ण तब शर संधाना ❀ माऱ्यो नन्दिघोष तकि बाना ॥
पैग अढ़ाई पाछे टाऱ्यो ❀ साधु कर्ण यदुनाथ पुकाऱ्यो ॥
सुफल जन्म जग जीवन तेरा ❀ बाण घात डोलत रथ मेरा ॥
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ साधु बचन भाष्यो क्यहि कारण ॥
सहस पैग हम रथहि चलायो ❀ पैग अढ़ाई मम रथ आयो ॥
तब श्रीपति बोले यह बानी ❀ अर्जुन तुम यह भेद न जानी ॥
नन्दिघोष रथ मेरु समाना ❀ ध्वजपर परम भार हनुमाना ॥

दोहा–महाबिश्वम्भर रूप धरि, हाँकत हैं यह रत्थ ।
टारो रबिसुत बाणते, महाबीर समरत्थ ॥

यह सुनि बाण लगे परिहारन ❀ जूझी सेना बीर हजारन ॥
कर्ण कोपि भालुक शर लीन्हे ❀ ते शर चोट शीश पर कीन्हे ॥
कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे ❀ सहस बाण हनुमानहिं मारे ॥
श्याम शरीर रुधिर छबि छाये ❀ पीत बसन तन शोभा पाये ॥
अर्जुन को तन झाँझर कीन्हे ❀ क्रोधित भये एक शर लीन्हे ॥
कर्ण के हृदय ताकि कै माऱ्यो ❀ भेदिके अंग निसरि शर पाऱ्यो ॥
बाण सहस्र शल्य उर दीन्हे ❀ घायल करि तन झाँझरकीन्हे ॥
अरुण बरण देखत तन भूले ❀ मधुमहँ मनहुँ किंशुकी फूले ॥
यहि बिधि कीन्ह्यो बाण दरेरो ❀ दशहू दिशा दोऊ रथ घेरो ॥
दोऊ रथ यहि बिधि छबि पाये ❀ पर्वत मनहुँ भूमि पर आये ॥
कही कर्ण अर्जुन सुनि लीजे ❀ सावधान मोते रण कीजे ॥
अब यहिबिधिते बाण चलायो ❀ काटो शीश बिलम्ब न लायो ॥

दोहा—मारतहौं अब गहरु नहिं, कह्यो कर्ण यह बैन ।
सारथि ह्वै रक्षा करहु, प्रियतम पङ्कज नैन ॥

यह कहि नीलबाण कर लीन्हे ❋ जो शर ऋषि दुर्बासा दीन्हे ॥
कृष्ण देव रण को मन दीजै ❋ अब पारथ की रक्षा कीजै ॥
क्रोधित बाण किये संधाना ❋ देखिशल्य यहि भाँति बखाना ॥
जाके रक्षक श्रीजगत्राता ❋ ताको कर्ण कोन्ह चहै घाता ॥
हृदय ताकि मारेउ तब बाना ❋ पलटिन करहुँ फेरि संधाना ॥
यह कहि धनुषकरण लगिताना ❋ कर्ण हाथ छुट्यो तब बाना ॥
अन्तरिक्ष शर आवत कैसे ❋ छूटै बज्र इन्द्र कर जैसे ॥
अर्जुन लगे कठिन शर मारण ❋ पै न सके यह बाण निवारण ॥
आयो बाण कराठ तकि जबहीं ❋ नन्दिघोष दाबेउ प्रभु तबहीं ॥
जुटिके अश्वरथहि ढिग आयो ❋ कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचाया ॥
मुकुट काटि शर बेधेउ धरणी ❋ जग में रही सदा यह करणी ॥
धन्य कृष्ण पाराडव सन भाखा ❋ दीनदयाल पारथहि राखा ॥

दोहा—जाके सारथि चक्रधर, मारि सकै तेहि कौन ।
अर्जुन के रक्षक सदा, श्रीपति राधारौन ॥

हाँक देत हाँकत हरि घोरे ❋ अर्जुन कोपि कठिन शरजोरे ॥
दोऊ बीर बाण परिहारे ❋ एकहि एक क्रोध ते मारे ॥
शर अनेक बरषत हैं कैसे ❋ श्रावण मेघ महाझरि जैसे ॥
पक्षी गगन उड़न नहिं पावत ❋ शर लागत धरणीपर आवत ॥
अरुण बरुण आये सँग आवहिं ❋ शर समूह ते पन्थ न पावहिं ॥
ऐसे लाग चलावन बाना ❋ शर पञ्जर छाये असमाना ॥
जूझी सेना पन्थ न पावहिं ❋ लोथिन पर रथहांकि चलावहिं ॥
गरजत नन्दिघोष के चाके ❋ पवन बेग फहरात पताके ॥
शल्य सारथी रथहि चलावा ❋ नन्दिघोष सम्मुख पहुँचावा ॥
अर्जुन करण जुरे हैं कैसे ❋ रघुपति सों रावण रण जैसे ॥

इकते एक महाबल भारी ❀ करण शूर दोऊ धनुधारी ॥
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ ❀ रणसमबली करण अरु पारथ ॥

दोहा—अर्जुनकरणहिंरणमच्यो, छूटत तीक्षण बान ।
कौतुकत्याग्यो सुरगणन, भाजे छाँड़ि बिमान ॥

शल्यहि कही करण तब ऐसो ❀ चाक भूमि परसै नहि जैसो ॥
जेहि दिन मैं बिराट पुर घेरी ❀ बैठी गाइ अहीरन टेरी ॥
तब सहदेव बुद्धि उपराजो ❀ खुरदे बाँधि आपु उठि भाजो ॥
लाठी छाँड़ि बहुत बिधि मारो ❀ अचल गाइ तन टरत न टारो ॥
मैथुनि नाम गाय यक रहेऊ ❀ क्रोधित ह्वै अस मोसन कहेऊ ॥
जैसे अचल भयो तन मोरा ❀ रथ अटकै भारथ में तोरा ॥
चाके चारि ग्रसैं जब धरणी ❀ तब न बनै कछु तोसों करणी ॥
यह सुधि मेरे मन में आई ❀ सावधान हाँको रथ भाई ॥
शल्य सारथी कीन्हेउ करणी ❀ चाक छुवै नहिं पावत धरणी ॥
अर्जुन कर्ण करत संग्रामा ❀ पलभरि नहिं पावत बिश्रामा ॥
देवअस्त्र दुउदिशि परिहारहिं ❀ एकहि एक क्रोधकरि मारहि ॥
गजरथ पैदल जूझे लाखन ❀ महा मारु कोउ सकै न भाखन ॥

दो०—नदी भयंकर रुधिर की, गजन करारे जान ।
भरत मांस जलफेन सम, लहरी चमकैं बान ॥

ढाल मनहुँ कच्छप उतराने ❀ बार सेवार सारस अरुझाने ॥
बख्तर सहित परे धर जेते ❀ ग्राह समान देखियत तेते ॥
गज भुशुण्डि टूटे कस जाने ❀ मनहुँ सूसि जल में उतराने ॥
चक्रित फरी लसत हैं कैसे ❀ रुचिर पत्र पुरइन के जैसे ॥
शूर शीश देखत दिग भूले ❀ जैसे कमल सहस दल फूले ॥
मांस बहुत सम सरस सोहावा ❀ नाव चलत जिमिरथ उतरावा ॥
परि जँजीर जल शोभा पावहि ❀ धीवर मनहुँ जाल छिटकावहिं ॥
भूत प्रेत करते असनाना ❀ योगिनि मनहुँ करैं सो पाना ॥

जम्बुक गीध काकगण आवहिँ ❀ मांस खाहिं मन मोल चुकावहिं ॥
नन्दी चढ़ि डोलत हैं शंकर ❀ मुण्डमाल गर रूप भयङ्कर ॥
गज शुण्डहिलैं योगिनि आवहिं ❀ दे मुख बिच करताल बजावहिं ॥
नाचि कबन्ध देहिं करतारी ❀ कौतुक रचि रणभूमिहिं भारी ॥

दो०—अंत लपेटे गज चरण, किये पखाउज साज ।
भैरवगण या विधि फिरत, खेत भयंकर लाज ॥

यहि बिधि युद्ध भयंकर भारो ❀ दोऊ भिरे खेत परचारी ॥
क्रोधित अरुण नैन भये कैसे ❀ भोरहिं उदित दिवाकर जैसे ॥
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे ॥
तीक्षण बाण कृष्ण उर दीन्हें ❀ हनूमान तन जर्जर कीन्हें ॥
तब अर्जुन कीन्हे सन्धाना ❀ करण हृदय तकि मारेउ बाना ॥
घायल किये शल्य से सारथि ❀ एकते एक सरिस पुरुषारथि ॥
बाणहिं त्यागत यहि व्यवहारा ❀ जिमि बरषा बरषै जल धारा ॥
रविमण्डल महँ शब्द सुनावहिं ❀ करण मारि अर्जुन यश पावहिं ॥
सुरपति कही जीतिहैं पारथ ❀ मारो कर्ण करहु पुरुषारथ ॥
यहिबिधि कहहिं देवगण बानी ❀ सुनिकै शल्य अचम्भव मानी ॥
कोऊ कहूँ लरो नहिं ऐसो ❀ अर्जुन करण भयो रण जैसो ॥
रुधिर प्रवाह चलै सब अङ्गा ❀ महाशूर मन नेकु न भङ्गा ॥

दोहा—घोर युद्ध यहि विधि करत, दोऊ बीर समान ।
शल्य सारथी करणरथ, पारथरथ भगवान ॥

भीमसेन कीन्ही बहु करणी ❀ परे बीर लोटत सब धरणी ॥
गजते गज हयते हय मारे ❀ रथहि पकरि रथ ऊपर डारे ॥
सम्मुख जुरे गिरे गण जेते ❀ गगन पन्थ कहँ फेंकत तेते ॥
जे अभिरे ते सबै पछारे ❀ बहुतक मींजि चरण ते डारे ॥
लागे घोर गदा सों मारण ❀ दुर्योधन के बन्धु सँहारण ॥
ते सब बहुरि कठिन श[illegible] [illegible]रे ❀ मुद्गर गदा शूल परिहारे ॥

भूमि परे पर भीम न डरपै ❋ मनहुँ बाज पक्षिन पर झरपै ॥
क्रोधित भए पाराडु के नन्दन ❋ यहिबिधि कीन्ह सेननिकन्दन ॥
तब अर्जुन छाँड़े शर पायल ❋ शल्यसहित रविनन्दन घायल ॥
करण बाण ऐसे परिहारे ❋ अर्जुन हृदय ताकिकै मारे ॥
कह्यो कृष्ण सुनिये अब पारथ ❋ प्रणकहँ सुमिरि करहु पुरुषारथ ॥
कर्ण बीर ऐसे शर जोरे ❋ हांकत पद ठहरात न घोरे ॥

दोहा—अर्जुनकरणहिं रण मचेउ, उपमा औरनतासु ।
भारत शरके अग्र ते उड़त गगनमहँमासु ॥

सखा साथ धरणी के ऊपर ❋ ग्रसो चाक गाड़ो रथ भूपर ॥
होनहार सो होय निदाना ❋ बिधि चरित्रकोऊ नहिं जाना ॥
भाषो शल्य कर्ण सों ऐसा ❋ अटको चाक चलत रथ कैसा ॥
सुनिकै कर्ण कियो दृढ ठाना ❋ मारो नन्दिघोष तकि बाना ॥
सहस बाण अश्वन उर मारे ❋ थकित भये पशु टरत न टारे ॥
असी बाण मारेहु हनुमानहिं ❋ शर अनेक घाले भगवानहिं ॥
तीनि बाण पारथ उर मारे ❋ नन्दिघोष रथ टरत न टारे ॥
कृष्णदेव हाँको रथ बाँको ❋ जैसे फिरत कुम्हार को चाको ॥
चहूँ ओर शर बर्षत कैसे ❋ भाद्र वृष्टि मन्दर पर जैसे ॥
जेहि दिशि अर्जुन का रथ धावै ❋ तेहि दिशि कर्ण बाण झरिलावै ॥
छूटत बाण कर्ण के करसों ❋ नन्दिघोष रथ घेरेउ शरसों ॥
हांक देत हांकत रथ घोरे ❋ अर्जुन कठिन बाण गुण जोरे ॥

दोहा—मारयो पारथ क्रोधकरि, चल्यो बाणपरचण्ड ।
कर्ण धनुर्द्धर श्री प्रबल; काटि किये शतखण्ड ॥

अश्वन शल्य बहुत बिधि हांको ❋ छूटत नाहिं भूमि ते चाको ॥
कूदि कर्ण रथ ते ढिग आये ❋ गहि चाका तेहि चहत उठाये ॥
कर्ण बीर कीन्ह्यो बल भारी ❋ अर्जुन सों भाष्यो बनवारी ॥
मारहु बाण गहरु जनि लावहु ❋ कर्ण शीश अब मारि गिरावहु ॥

पारथ कही उचित नहिं होई ❀ बिना अस्त्र नहिं मारहि कोई ॥
यह अधरम करिये केहि कारण ❀ यह सुनि कही जगतके तारण ॥
चक्रव्यूह महँ अभिमन्यु मारे ❀ तादिन कर्ण न धर्म बिचारे ॥
आजु धर्म तुम शोचौ पारथ ❀ तौ भारत रण किये अकारथ ॥
कुन्ती दिये बाण सो लीजै ❀ अर्जुन करण बधन तेहि कीजै ॥
मारहु तुरत गहरु जनि लावहु ❀ बहुरि न ऐसो अवसर पावहु ॥
रथ उठाइ करिहै धनु धारण ❀ तब अर्जुन तुम सकिय न मारण॥
सुनि अर्जुन कीन्हे संधाना ❀ श्रवण प्रयन्त शरासन ताना ॥

दोहा—दीन्हे हांक प्रचारिकै, चलो बज्र सम बान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाकृते कर्णपर्व चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

लाग्यो बाण कर्ण के कैसे ❀ इन्द्र बज्र पर्वत पर जैसे ॥
काटो शीश परा तब धरणी ❀ जग में रही सदा यह करणी ॥
कृष्ण आपु जय शंख बजायो ❀ पाण्डव सैन्य देखि सुख पायो ॥
हर्षि इन्द्र तब आज्ञा दीन्हा ❀ पुष्प बृष्टि सब देवन कीन्हा ॥
जय जय शब्द गगन महँ बोल्यो ❀ चढ़ि बिमान आनन्दित डोल्यो ॥
जूझेउ कर्ण जगत यश पायो ❀ निसरो रथ महि ऊपर आयो ॥
छूटो चक्र धरणि ते जबहीं ❀ फेर्‍यो शल्य हाँकि रथ तबहीं ॥
छूछो रथ दुर्योधन देखा ❀ जूझेउ कर्ण सत्य करि लेखा ॥
बिचली सेन कौरवपति जान्यो ❀ आगे ह्वैके शारँग तान्यो ॥
शरसों मारु भयंकर दीन्हे ❀ सेना सबै निवारण कीन्हे ॥
संध्या जानि किये तब गवना ❀ द्वउ सेना आई निज भवना ॥
अस अहमिति अर्जुन मन कीन्हे ❀ कर्ण मारि जग में यश लीन्हे ॥

दोहा—महाबीर रबिसुत निरखि, कही कृष्ण यह बात।
अर्जुन सुनिये श्रवण दै, षटजन किये निपात॥

परशुराम जब शापहि दीन्हे ❀ कुण्डल कवच पुरन्दर लीन्हे ॥

तुम हम धरणी कुन्ती माता ❀ छहउ जने मिलि कीन्ह निपाता ॥
अर्जुन कही सुनहु जगतारण ❀ भृगुपति शाप दियो क्यहिकारण ॥
तब श्रीहरि आये यहि बातन ❀ पारथ सुनिये कथा पुरातन ॥
रतन बर्ष ब्याकरण पढ़ायो ❀ भृगुपति पहँ पढ़िबे को आयो ॥
कटि में मूंज मेखला बांधे ❀ कीन्हे तिलक जनेऊ कांधे ॥
निकट जाय परणाम जनाये ❀ कौन जाति कहँवाँ ते आये ॥
मैं हौं बिप्र श्रवण सुनि लीजै ❀ आये पढ़न अनुग्रह कीजै ॥
बिद्या मोपहँ आय घनेरो ❀ पढ़िये जो मन आवै तेरो ॥
तब भाष्यो धनुबिद्या दीजै ❀ बालक जानि कृपा म्वहिं कीजै ॥
धनुबिद्या सिखइय मुनि ज्ञानी ❀ करण चतुर्दशि आय तुलानी ॥

दोहा—धनुष बाण लै हाथ महँ, करन चले अस्नान।
खरी तुरत लै आयहु, पाछे शिष्य सुजान ॥

आगे चलत वृक्ष यक देखा ❀ फूले फूल कदम्ब अशेखा ॥
परशुराम हँसि शारँग साधो ❀ मार्यो फूल कटो तब आधो ॥
एक शरहि यहि भाँति चलायो ❀ कटे सबै नहिं एक बचायो ॥
परशुराम जल तीरहि गयऊ ❀ पाछे कर्ण बृक्षतर अयऊ ॥
आधो फूल लाग है ऊपर ❀ आधो कटो परो है भूपर ॥
मनहिं कही मैं बाण चलावों ❀ आधो है त्यहि मारि गिरावों ॥
भूपर खरी धरै जो कोई ❀ बाढ़ै दोष पवित्र न होई ॥
उछलाये तब कनक कटोरा ❀ लै धनु बाण हाथ गुण जोरा ॥
यहि विधि ने कीन्हो संधाना ❀ कट्यो फूल सब एकहि बाना ॥
बायें हाथ धनुष शर लीन्हे ❀ दहिने हाथ कटोरा कीन्हे ॥
आये परशुराम के पासहि ❀ खरी लगाय पढ़ै सो आसहि ॥
करि अस्नान ध्यान तब कीन्हे ❀ चले तुरत भवनहिं मनदीन्हे ॥

दोहा—आये बृक्ष कदम्बतर, देखरहे होइ मौन ।
आधो सब हम काटिगे, आधो काटो कौन ॥

सुनिकै कर्ण कही यह बानी ❋ आधो काटो मैं अभिमानी ॥
परशराम मन माहिं बिचारी ❋ भयो सपूत सिद्ध धनुधारी ॥
यहिबिधिते कछु दिवस गँवायो ❋ एक दिवस निद्रा मन लायो ॥
आलस भयो शयन तब कीन्हा ❋ कर्ण जङ्घ ऊपर शिर दीन्हा ॥
बज्र कीट कीरा जो रह्यऊ ❋ जटासों निकसि जङ्घ सोगह्यऊ ॥
भेदेउ जङ्घ निकरि तब पारा ❋ तासों चली रुधिर की धारा ॥
तातो रुधिर अङ्ग सों लागा ❋ उठ्यो चौंकि भृगुनायक जागा ॥
रुधिर देखिकै मन अनुमान्यो ❋ लाग्यो बज्र कीट यह जान्यो ॥
सुधि अजहूँ नाहीं त्यहि केरी ❋ कहु रे शिष्य जाति का तेरी ॥
ऐसो बिप्र कहाँ ते आयो ❋ बिनु डोले जिन जंघ छेदायो ॥
क्षत्री जाति अहो मैं जाना ❋ छल काहेक कीन्हों अज्ञाना ॥
बिद्या दै बिनाश का कीजै ❋ बर अरु शाप एक सँग दीजै ॥

दोहा—पांच बाण मैं देतहौं, जौलौं रहिहैं हत्थ ।
अजय होहि संसार मों, जीतै तौ समरत्थ ॥

जब यह बाण शत्र कर जैहै ❋ तबहीं मृत्यु कर्ण तू पैहै ॥
बर अरु शाप दोउ जब जाने ❋ सो सुनि कर्ण अनुग्रह माने ॥
अर्जुन के जिय संशय रह्यऊ ❋ ता कारण या माधव कह्यऊ ॥
धर्मराय तब बात जनाई ❋ मेरे जिय कस संशय आई ॥
विप्र जानिकै बिद्या दीन्ह्यउ ❋ क्षत्री जानि शाप किमिकीन्ह्यउ ॥
या बिधि कही जगत के तारण ❋ धर्मराय सुनिये यह कारण ॥
भीषम गये रहे तहँ आगे ❋ परशुराम ते सिखे सो लागे ॥
बिद्या अस्त्र बहुत बिधि दीन्हे ❋ आपु समान धनुर्द्धर कीन्हे ॥
बिद्या पाइ भवन कहँ आये ❋ तब माता यह बचन सुनाये ॥
मेरो कहा कियो तुम चाहो ❋ जीति स्वयम्बर बन्धु बिवाहो ॥
दोऊ बन्धु साथ लै लीन्हे ❋ बाराणसी गवन शुभ कीन्हे ॥
जानि स्वयम्बर सब नृप आये ❋ रङ्गभूमि सब राजन छाये ॥

दोहा—अम्बे अम्बा अम्बली, तीनों कन्या साथ ।
निकरीं भूषण साजिकै, जयमाला लै हाथ ॥

जब कन्या इत पांव न दीन्ह्यो ❋ भीषम देखिक्रोध जिय कीन्ह्यो ॥
तीनिउ गहि कर रथहि चढ़ाये ❋ तब भीषम चलिबे मनलाये ॥
भिरे नरेश किये रण क्रोधा ❋ गङ्गा सुत जीते सब योधा ॥
कन्या लै भवनहिं पहुंचाये ❋ माता सों तब बचन सुनाये ॥
चित्राङ्गदहि अम्बिकहि दीन्हे ❋ अम्बहिं चित्रबीज तब लीन्हे ॥
अम्बालिका कोउ नहिं चाहे ❋ द्वउ कन्या द्वउ बन्धु बिवाहे ॥
जो भीषम अपनो भल चाहो ❋ तो मोको अब भाय विवहो ॥
जो अपने मन इच्छा कीन्हे ❋ जाहु शाल्व पर आज्ञा दीन्हे ॥
कन्या चली शाल्व पहँ आई ❋ भीषम मोकहँ दीन पठाई ॥
शाल्व कही यह उचित न होई ❋ अब तोकहँ ब्याहै नहिं कोई ॥
अम्बालिका बचन सुनि पाई ❋ तब फिरि परशुराम पहँ आई ॥
गङ्गा सुत मोकहँ हरि लाये ❋ करैं न व्याह बीच टरकाये ॥

दोहा—परशुराम सुनि क्रोधकै, कहा चलो मम साथ ।
भीषमको हौं सौंपिहौं, पकरि हाथसें हाथ ॥

भृगुपति आय दिये तब दरशन ❋ भीषम दौरि किये पग परशन ॥
इतना कहो हमारा कीजै ❋ जयमाला कन्या सों लीजै ॥
कीन्हो कौल पिता सों अपने ❋ संगम नारि करहुँ नहिं सपने ॥
की मानो तुम कहा हमारो ❋ की अब मोते युद्ध बिचारो ॥
गङ्गासुत सुनि क्रोधहि पाये ❋ बांधि अस्त्र मैदानहिं आये ॥
शिषि गुरु रच्यउ महारण भारत ❋ चोबिस दिवस रच्यो पुरुषारथ ॥
देवन आइ बीच कर दीन्हा ❋ तब कन्या कछु कहिबे लीन्हा ॥
गङ्गतीर शुचि चिता बनाई ❋ देखत सबहि जरत हैं भाई ॥
क्षत्री होइ लेहैं अवतारा ❋ तब भीषम को करहुँ सँहारा ॥
अस कहिकै निज देहै जारौं ❋ जन्म शिखण्डी भीषम मारौं ॥

तबसों परशुराम प्रण कीन्हो ❋ क्षत्री को बिद्या नहिं दीन्हो ॥
सुनिकै धर्मराय सुख माना ❋ सत्य बचन भाष्यो भगवाना ॥

दोहा—जहाँ धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहँ हरि बिजय प्रमान।
कर्णपर्व भाषा रच्यउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेकर्णपर्वणि सबलसिंह चौहानभाषा विरचितेकर्णार्जुनयुद्धे
कर्णबध वर्णनो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

॥ इति कर्णपर्व समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शल्यपर्व॥

जय जय गुरुचरणन चित दीजै ❋ रघुपतिपद अभिवन्दन कीजै ॥
शारद चरण करहुँ परणामो ❋ बन्दौं बालमीकि गुणग्रामा ॥
सम्बत सत्रह सै जग जाना ❋ त्यहि ऊपर चौबीस बखाना ॥
कार्तिकमास पक्ष उजियारा ❋ दशमी तिथि को कथा उचारा ॥
नौरँग शाह दिली सुल्ताना ❋ प्रबल प्रताप जगत सब जाना ॥

दोहा—व्यासदेव पद बन्दिकै, जा मुख बेद पुरान।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

जूझे कर्ण जगत यश पाये ❋ दुर्योधन यह बचन सुनाये ॥
हा हा मित्र परम सुखदायक ❋ महायुद्ध करिबे के लायक ॥
तुम पाये निज क्षत्री धर्मा ❋ यह सब दोष हमारे कर्मा ॥
बलसों अर्जुन सके न मारण ❋ छल करि बधे जगत के तारण ॥
अब काको सेना पति कीजै ❋ जाके बल भारत यश लीजै ॥
कृतबर्मा तब कह्यो बिचारी ❋ राजा सुनिये बिनय हमारी ॥
जब पाण्डव निज देशहि आये ❋ करि बसीठ यदुनाथ पठाये ॥
पांच ग्राम माँगे नहिं दीन्हेउ ❋ हठ करिकै भारत तुम कीन्हेउ ॥
अब करुणा कीजै त्यहि काजा ❋ साहस सदा चाहिये राजा ॥
सदा धर्म अपने मन राखउ ❋ सत्यछांड़ि मिथ्या नहिं भाखउ ॥
ब्राह्मण गउन की रक्षा करही ❋ परधन परनारी नहिं हरही ॥
सुतसम प्रजा करो प्रतिपालक ❋ ज्यों जननी पालै निजबालक ॥

दोहा—सदा दान सन्मानकरि, तजौनशील स्वभाव ।
शरणागत रक्षा करत, देश प्राण बरु जाव ॥

मातु पिता की सेवा करई ❋ आज्ञा तासु शीश पर धरई ॥
कृत बर्मा यहि बिधि कहि दीन्हेउ ❋ तब शकुनी कछु कहिबे लीन्हेउ ॥
शोच करत नृप काह अकारथ ❋ अर्जुन तोहिं रचहुँ महभारथ ॥
कृपाचार्य द्रौणी सम अत्री ❋ हमहूँ हैं कृतबर्मा त्तत्री ॥
शल्य नरेश अहै बल भारी ❋ त्तत्री महाबीर धनुधारी ॥
मुकुट बाँधि कीजै सरदारा ❋ दीजै भूप शल्य शिर भारा ॥
सुनिकै कुरुपति आनँद पाये ❋ मुकुट शल्य के शीश बँधाये ॥
बिप्रन आइ बेद ध्वनि भाख्यउ ❋ आगे कलश नीर भरि राख्यउ ॥
बहुत भाँति शकुनी शुभ कीन्हे ❋ दुर्योधन कछु कहिबे लीन्हे ॥
शल्य नरेश आपु यश लीजै ❋ रण पांचो पाण्डव बध कीजै ॥
भीषम प्रथम गिरे मैदाना ❋ द्रोण गुरू को भयो निदाना ॥

दोहा—सेन सहोदर सब गिरे, गिरे कर्ण से मित्र ।
शल्य पाण्डवन जीतिहैं, ऐसे नृप के चित्र ॥

कही शल्य देखहु पुरुषारथ ❋ मारि पाण्डवन जीतहुँ भारथ ॥
महायुद्ध करिहौं परतत्तक ❋ पै अर्जुन रथ श्रीपति रत्तक ॥
कुरुपति हर्ष भये सुनि बैना ❋ रबिके उदय साजि सब सैना ॥
कृपाचार्य अश्वथामा साज्यउ ❋ भेरि दुन्दुभी मारू बाज्यउ ॥
कृतवर्मा कीन्हेउ असवारी ❋ सेन अनेक बीर धनुधारी ॥
अस्त्र बाँधि शकुनी तब आयउ ❋ चढ़ो जाइ रथ शोभा पायउ ॥
कुरुपति रथ साजो है कैसे ❋ इन्द्र बिमान देखिये जैसे ॥
चञ्चल चपल आनि रथ जोरे ❋ पवन बेग सों चारिउ घोरे ॥
ध्वजा पताका बाँधेउ बाना ❋ बहुत भाँति बैरख फहराना ॥
गज पाछे पर्वत सम भारी ❋ पाँव जँजीर नैन अँधियारी ॥
चारिहु पाट बहत मद धारा ❋ ज्यों झरना झर बहै पनारा ॥

अति उतंग देखत छबि पावत ❋ मनहुँ मेघ धरणी पर आवत ॥

दोहा—कुरुपति चले साजि दल, सेना सिन्धु समान।
हय रथ पैदल चले बहु, गर्द लोपिगे भान ॥

धर्मराय कीन्ही असवारी ❋ पारथ रथ जोते बनवारी ॥
अर्जुन अङ्ग सनाह बिराजे ❋ अक्षय त्रोण गाण्डिव सो भ्राजै ॥
चढ़े कोपि रथ भीम भयङ्कर ❋ प्रलय काल महँ जैसे शंकर ॥
चढ़ि तुरंग पर नकुल स्वहाये ❋ धर्मराय कहँ शीश नवाये ॥
कञ्चन रथ सहदेव विराजे ❋ कर असुफरी सरिस शर छाजे ॥
धृष्टद्युम्न क्षत्री गण राजे ❋ चढ़े तुरङ्ग बीर सब गाजे ॥
गज अरूढ़ अगणित बल भारी ❋ जिनके नयन परी अँधियारी ॥
पहिरि सनाह महावत चढ़े ❋ मानहुँ बिधि अपने कर गढ़े ॥
क्रोध वन्त जानत रण घोरा ❋ छाया लखि देखहिं भुज ओरा ॥
कोपमान पैदल रण चांड़े ❋ फरी लेइ चमकावत खांड़े ॥
सांगि शूल लीन्हे कोऊ कर ❋ कोउ मुगदर लै कोउ धनुर्द्धर ॥

दोहा—धर्मराय यहिबिधिचल्यो, दलबलकीन्ह्योसाज।
पारथ रथ जोती गहे, साराथि श्री ब्रजराज ॥

सेन साजि कुरु खेतहि आये ❋ द्वउ दल बीरन शोभा पाये ॥
बम्ब निशान बाजने बाजे ❋ होत शब्द मानहु घन गाजे ॥
कोहकत गज हींसत हैं घोरे ❋ आगे होयँ शूर रण जोरे ॥
अग्रहि पेलि देहिं मयमन्ता ❋ क्रोधित जुरे फिरैं चौदन्ता ॥
रथी रथी शर बर्षन लागे ❋ कोप अनल उर अन्तर जागे ॥
खमसी अनी जुरे असवारा ❋ मुगदर गदा शेल परिहारा ॥
हांक मारिकै पैदल धाये ❋ महा युद्ध करिबे मन लाये ॥
यहि बिधि लरत करत घन घोरा ❋ मराडेउ खेत जोर सों भोरा ॥
आगे शल्य हांकि रथ आये ❋ बाण वृष्टि रथ ऊपर लाये ॥
शर अनेक बर्षत हैं कैसे ❋ जलद मनहुँ श्रावण महँ जैसे ॥

नन्दिघोष श्रीपति पहुँचायो ❀ अर्जुन बाण बुन्द झरिलायो ॥
द्रौणी भीम करत संग्रामा ❀ दोऊ जुरे खेत जय कामा ॥

दोहा—कृतबर्मा अरु नकुल सों, भिरे खेत परिचारु।
शकुनी रण सहदेव सों, भई भयंकर मारु ॥

कृपा चार्य कीन्ह्यो पुरुषारथ ❀ धृष्टद्युम्न सों मराड्यो भारथ ॥
कुरुपति धर्मराय रण सरसे ❀ छूटत बाण बुन्द सम बरसे ॥
द्वउ दल महा बाजने बाजे ❀ करहिं युद्ध क्षत्रीगण गाजे ॥
यहि विधि सरिस लरावत बाना ❀ जूझे बीर गिरे मैदाना ॥
शल्य हाथ तीक्षण शर छूटे ❀ सेन बेधि धरणी महँ फूटे ॥
अर्जुन के बाणन के मारे ❀ कुरुदल लोटैं परे निनारे ॥
परे शूर महि लोटत कैसे ❀ लागत पवन पाकफल जैसे ॥
क्षत्री सदा अस्त्र परि हारहिं ❀ एकहि एक क्रोध करि मारहिं ॥
शल्य कोपि ऐसे शर जोरे ❀ घायल नन्दिघोष के घोरे ॥
सहस बाण मारे हनुमानहिं ❀ असी बाण ते श्री भगवानहिं ॥
अर्जुन अङ्ग बाण बहु मारे ❀ शरते तन जरजर कै डारे ॥
तब पारथ कीन्हेउ संधाना ❀ शल्य अङ्ग मारे बहुबाना ॥

दोहा—आठ बाणते रथ हन्यो, तुरग अङ्ग शरबीश।
एक बाण यहिबिधिचल्यो, कट्योसारथीशीश॥

शल्यहि भयो क्रोध अति भारी ❀ करेउ अवर रथपर असवारी॥
यहि बिधि बाण बुन्द झरि लाये ❀ पाराडव दल बहु मारि गिराये ॥
अर्जुन त्यागि बाण यहि रूपा ❀ प्रलयकाल जैसे यम भूपा ॥
कुरुदल पारथ किये निपाता ❀ जानत सबै युद्ध की बाता ॥
ऐसे बाण क्रोध करि जोरे ❀ मानुष कहा शेष शिर फोरे ॥
शल्य कोपि लागे शर मारन ❀ जूझे सेन हजार हजारन ॥
भीमसेन द्रौणी ते भारथ ❀ दोऊ जुरे सरिस पुरुषारथ ॥
मारे बाण क्रोध ते पागे ❀ चलयउ न एक एक के आगे ॥

सत्तरि बाण भीम उर लागे ❋ क्रोधवान उर अन्तर जागे ॥
किये भीम तब लघु संधाना ❋ गुरु सुत अङ्ग हने शत बाना ॥
दोऊ बीर करत घमसाना ❋ जर जर भये लगे तन बाना ॥
क्रोधवन्त यहि विधि शर छांड्यो ❋ भारत भूमि बाण ते पाट्यो ॥

दोहा—यहिबिधि कीन्हेउ युद्धबहु, दोऊ बीर समान ।
सात लक्ष चतुरङ्ग दल, जूझि गिरे मैदान ॥

अर्द्धचन्द्र शर द्रौणी छांड्यो ❋ धनुगुण भीमसेन को काट्यो ॥
करते धनुष डारि महि दीन्ह्यो ❋ रथते उतरि गदाकर लीन्ह्यो ॥
दैकरि हांक वृकोदर धाये ❋ मानहुँ काल देह धरि आये ॥
द्रौणी कोपि बहुत शर मारे ❋ बाये अङ्ग भीम सब टारे ॥
क्रोधित भये गदा परिहारे ❋ बचो कूदि गुरुपुत्र सँभारे ॥
हय सारथि रथ चूरण कीन्हे ❋ सेना बधन भीम मन दीन्हे ॥
धर्मराय दुर्योधन सारन ❋ बरषैं बाण मनो घन श्रावन ॥
दोऊ भूप छत्र के धारी ❋ महाशूर क्षत्री अधिकारी ॥
भालुक पांच युधिष्ठिर लीन्हे ❋ ते शर चोट शीश पर कीन्हे ॥
दुर्योधन कीन्हेउ संधाना ❋ धर्मराय उर मारेउ बाना ॥
क्षत्री सबै करत रण सरसे ❋ चहुँदिशि बाणबुंद से बरसे ॥
कृतवर्मा सन नकुल लराई ❋ महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई ॥

दोहा—अर्जुन शल्याहि रण मचो, रथ चाके घहरात ।
हांकत हरि रथ हाँकदै, पीताम्बर फहरात ॥

श्याम शरीर जगत मन मोहै ❋ कुण्डल झलक कपोलन सोहै ॥
श्रम जल बुन्द बदन पर कैसे ❋ मरकत मणि मुक्ताहल जैसे ॥
सारथिरूप धरो बनवारी ❋ भक्त हेतु पाण्डव हितकारी ॥
कही कृष्ण अर्जुन सों बैना ❋ चित धरि करो शल्यसन सैना ॥
सुनि अर्जुन लागेशर मारन ❋ जूझी फौज हजार हजारन ॥
शल्य नरेश पाण्डुदल मारत ❋ जैसे अग्नि सघन बन जारत ॥

बीरन हाथ तेज शर छूटत ❋ भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटत ॥
महामत्त लाखन गज धावत ❋ आगे परत सो मारि गिरावत ॥
ठोकर पुनि बखोरिसों मारत ❋ बहुतक छेदि दन्तसों डारत ॥
बहुत लपेटि शुण्ड सों लीन्हे ❋ डारि चरणतर चूरण कीन्हे ॥
तोरि शीश फेंकत हैं कैसे ❋ पाके ताल गिरहिं महि जैसे ॥
अति उतङ्ग देखत भयकारी ❋ यहि बिधि बहुतक सेन संभारी ॥

दोहा–पाण्डवदल जूझे घने, भई भयंकर मारि।
लैकर गदा हांक दै, धाये भीम प्रचारि ॥

गदा घाव कुञ्जर संहारेउ ❋ ताते बदन फारिकैं डारेउ ॥
दशन पकरिकै जे गज हटकेउ ❋ गहिकरशुण्ड धरणिमँह पटकेउ ॥
फेंक पैदल जात न जाने ❋ ज्यों बकुलाको पंख उड़ाने ॥
यहि बिधि कीन्ह्यो सेन निकन्दन ❋ दौरे देखि द्रोण गुरु नन्दन ॥
क्रोधित ह्वै कीन्हे संधाना ❋ भीम अङ्ग मारे सत बाना ॥
तीक्षण तीनि बाण कर लीन्हे ❋ ते शर घाव शीश पर दीन्हे ॥
भीमसेन तब धनुष सँभारे ❋ द्रौणी अङ्गबाण दश मारे ॥
यहिबिधि दोउ युद्ध अरुझाने ❋ अरुणबाण शोणित लपटाने ॥
शकुनी कही भूपसों बाता ❋ कुरुपति सुनो युद्ध की घाता ॥
दोऊ दल अटके अरुझाने ❋ महायुद्ध कछु जात न जाने ॥

दोहा–अब आज्ञा म्वहिंदीजिय, लै धावौं कछु सेन।
बेड़े होइ अरिपर परैं, आपु देखिये नैन ॥

कुरुपति सुनिकै आज्ञा दीन्हे ❋ अपनी अनी साथ कै लीन्हे ॥
दश सहस्र कुञ्जर मतवारे ❋ तीनि सहस रथ सरिस सँवारे ॥
साठिसहस असवार महाबल ❋ डेढ़ लाख लीन्हे सब पैदल ॥
क्रोधवन्त होइ शकुनी धाये ❋ बिदरि होइ पाछे कहँ आये ॥
पैठे पेलि फौज महँ कैसे ❋ गङ्गा मिलीं सिन्धु महँ जैसे ॥
शल्य खङ्ग मुद्गर फटकारहि ❋ शरते बीर शैल बहु मारहिं ॥

मारे बहु पाराडव दल बीरा ❀ भरकी अनी धरहिं नहिं धीरा ॥
शकुनी रची युद्धकी करणी ❀ जूझी सेन परी सब धरणी ॥
भयो शोर दल बैरख डोले ❀ दगा दगा पाराडव दल बोले ॥
छूटे बाण सकै को भाखन ❀ पाराडव दल जूझे तब लाखन ॥
महाशूर रण पलटि सँभारे ❀ मारु मारु कै सबन पुकारे ॥
चलैं न एक एक के आगे ❀ उरझे सबै क्रोध ते पागे ॥

दोहा–यहिबिधिशकुनीसेनकी, जूझी फौज अनन्त ।
पारथअबानिरखतकहा, भाष्यउकमलाकन्त ॥

नन्दिघोष फेरे बनवारी ❀ भये अघात शब्द अधिकारी ॥
तब अर्जुन शर छांड़त कैसे ❀ प्रलयकाल घन बरषत जैसे ॥
हय गज रथकीन्हेउ बहुखरिडत ❀ रुराड मुराड धरणी महँ मरिडत ॥
यहि बिधिकीन्हे सेन निकन्दन ❀ हांक देत हांकत जगबन्दन ॥
तब शकुनी कीन्हे संधाना ❀ अर्जुन उर मारे शत बाना ॥
कृष्ण अङ्ग बहु बाण प्रहारे ❀ बीस बाणअश्वन उरमारे ॥
तब पारथ तीक्षण शर छाँटे ❀ मारे अश्व धनुष गुण काटे ॥
सेना बधि अर्जुन रण गाजे ❀ चढ़ि तुरंग पर शकुनी भाजे ॥
कह्यो जाय दुर्योधन भूपहिं ❀ पारथ युद्ध किये जेहि रूपहिं ॥
यहि बिधिते अर्जुन धनु खाँचे ❀ जूझे सकल एक नहिं बाँचे ॥
बिरथ भये आये तब तुमपै ❀ मन्त्र एक नृप सुनिये हमपै ॥

दोहा–धनुधारी अर्जन सरिस, जीतिसकै नाहिंकोइ ।
कोताहूवै सब मिलि जुरहिं, होनी होइ सुहोइ॥

कुरुपति के मन में तब आई ❀ कहा शल्य सों बूझो जाई ॥
उरझे शल्य युद्ध के घाता ❀ शकुनी आय कही तब बाता ॥
शरते अर्जुन सकहिं न मारन ❀ अब लरिये कोता हथियारन ॥
यहि बिधि कीन्हे क्षत्री धर्महिं ❀ हारि जीति राजा के कर्महिं ॥
सेवक धर्म करहिं प्रतिपालहिं ❀ होई अन्त लिखा जो भालहिं ॥

शकुनी शल्य लगे यहि बाता ❀ उत पारथ दल करत निपाता ॥
शल्य नरेश क्रोध कै धाये ❀ धर्मराय के सन्मुख आये ॥
भाष्यो शल्य युधिष्ठिर भूपहिं ❀ धर्मयुद्ध करिये केहि रूपहिं ॥
छांड़ेउ धनुष बाण की करणी ❀ रथहि छांड़ि धाये सब धरणी ॥
सत्रह दिवस भया रणभारथ ❀ भीषम द्रोण करण पुरुषारथ ॥
आजु युद्ध मेरे शिर भारा ❀ उतरि लरहु कोता हथियारा ॥
भूप शल्य भाष्यो यह बानो ❀ धर्मराय बोलेउ सज्ञानी ॥

दोहा–भूप युधिष्ठिर क्रोधकरि, कहेउ बचन परमान।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषा कृतेशल्यपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

लरहु शल्य जस आवहि मनमें ❀ निज कर आजु मारिहौं रनमें ॥
शल्य नरेश धनुष तब राखेउ ❀ रथते उतरि बचन यह भाखेउ ॥
रथहिं छाँड़ि उतरे सब धरणी ❀ धर्मयुद्ध कीन्ह्यो यह करणी ॥
धर्मराय त्यागी असवारी ❀ उतरे भूमिक्रोध करि भारी ॥
दोऊ दल छांड़े निज स्यन्दन ❀ नन्दिघोष बैठे जगबन्दन ॥
अर्जुन उतरि खड्ग लै हाथा ❀ धृष्टद्युम्न कहँ लीन्हे हाथा ॥
नृप आगे सहदेव बिराजे ❀ बांधे अस्त्र फरो कर साजे ॥
भीमसेन गहि गदा फिरावत ❀ नकुल शेल कर शोभा पावत ॥
उतरे सबहि युद्ध के शूरा ❀ चत्री धर्म महाबल पूरा ॥
कुरुपति उतरि रथहिं ते आये ❀ गहे अस्त्र कर शोभा पाये ॥
महाबीर सब बांधे बाना ❀ अटके ठौर ठौर मैदाना ॥

दोहा–दोऊदल याहि बिधि जुरे, काठिन बजाये सार।
मुद्गर गदा शेल कर, छूटत खड्ग कि धार ॥

लागत खड्ग घाव शिर फूटे ❀ बाहत शेल सजोइल टूटे ॥
मुद्गर धरत करत चकचूरन ❀ जूझि गिरे धर केतिक शूरन ॥
फेरि खड्ग सहदेव सँभारत ❀ कौरव दल बहुते रण मारत ॥

ऐसे हनत खड्ग कर साधे ❀ टूटि परहि हयगय गिरि कांधे ॥
क्रोधित शकुनि खड्ग परिहारे ❀ शिर काटत सहदेव सँभारे ॥
हँसि सहदेव कही यह बानी ❀ सुनु मन्त्री शकुनी अभिमानी ॥
तेरेहि मन्त्र भये सब नासा ❀ करहुँ आजुतोहि यमपुर बासा ॥
दोऊ बीर भिरेउ रण चांड़े ❀ उछरत तजि बचावत खांड़े ॥
तब सहदेव घात करि पाये ❀ मारि खड्ग शिर काटि गिराये ।
कुण्डल सहित परेउ शिर धरणी ❀ महामारु कछु जात न बरणी ॥
भीमसेन कर गदा सँभारे ❀ एकै घाव बीर सब मारे ॥
कुरुपति आय कियो पुरुषारथ ❀ मारेउ सेन कियो रण भारथ ॥

दोहा—गदा हाथ मणिमय लिये, करत कोपि परिहार।
हय गज रथ चूरण किये, सेना बीस हजार॥

हाथन शूर कटारिन मारहिं ❀ पकरि केश गहि भूमि पछारहिं ॥
यहि बिधि महायुद्ध रण होई ❀ पाछे पाँव धरहिं नहि कोई ॥
जुरे शिखण्डी द्रौणी सङ्गा ❀ महायुद्ध कीन्हे रणरङ्गा ॥
क्रोधित खड्ग घाव परि हारहिं ❀ दोऊ बीर ढालपर टारहिं ॥
गुरुसुत क्रोधित औभर भारो ❀ कटो शीश ह्वै परेउ नियारो ॥
अर्जुन गह्यउ खड्ग तब हाथा ❀ काटे बहु क्षत्रिन के माथा ॥
कहूँ शीश कहुँ परे अधर धर ❀ खड्ग सहित कहुँ परे कटे कर ॥
कोऊ युद्ध करत रण करणी ❀ कोऊ कटे अधर धर धरणी ॥
लगे शल्य महि परे कराहत ❀ कोऊ खड्ग कोपि शिर बाहत ॥
कहूँ देखियत गज को शुण्डा ❀ कहूँ मुण्ड कहुँ लखिये रुण्डा ॥
कहूँ कबन्ध धरणि पर आवत ❀ शीश परे महि जयजय गावत ॥
कुञ्जर शीश रुधिर की धारा ❀ जनु गेरू रँग स्रवत पहारा ॥

दोहा—कुन्त फरी तोमर गहे, लरत शूर परचारि।
मारत बीरन क्रोध कै, निसरत पञ्जर फारि॥

सेन सबहि लोटत लपटाने ❀ खेलत फागु अबीरन साने ॥

मारत शेल सजोइल फूटत ❀ रुधिरधार पिचिकासम छूटत ॥
यहिबिधि खेलत चांचरि रन में ❀ महा शूर शङ्का नहिं मन में ॥
धृष्टद्युम्न कीन्ह्यो रण करणी ❀ कौरवदल लोटत सब धरणी ॥
कृतबमां तब आपु सँभारे ❀ पाराडव दल बहुतै संहारे ॥
कोऊ बाहत खञ्जर धोपा ❀ कोउ मारत मुद्गर करि कोपा ॥
भीमसेन गज बहुत सँहारे ❀ जो अभिरे तेहि सबहिं पछारे ॥
मारु मारुकै सब मिलि भाखत ❀ महाबीर सब लोहुन चाखत ॥
अभिरत भिरत लरत मैदाना ❀ क्रोधित सबै शङ्क नहिं माना ॥
यहि बिधिसों जोरत रण रङ्गा ❀ करत भोग सुरकन्यन सङ्गा ॥

दोहा—दोउबीर दल इमि लरत, जूझि गिरत मैदान ।
कौतुक देखत देवगण, हर्षित चढ़े बिमान ॥

रहत खेत महँ शूर न कैसे ❀ देखत भोर तारगण जैसे ॥
धर्मराय तब कहा बिचारी ❀ सुनो शल्य हित बात हमारी ॥
अब हमसों तुमसों है जोरा ❀ चढि रथ कीजै धनु टंकोरा ॥
बांजा भीम खेत महँ खाँड़ो ❀ धर्मयुद्ध मोते रण चांड़ो ॥
तब रथपर कीन्ह्यो असवारी ❀ धनुष बाण कर गह्यो सँभारी ॥
कही शल्य अस्थिर अब रहियो ❀ मारतहौं तीक्षण शर सहिये ॥
यह कहि शल्य बाण दश छांटे ❀ धर्मपुत्र त्यहि बीचहि काटे ॥
सात बाण भालुक नृप लीन्हे ❀ ते शर चोट शल्य पर कीन्हे ॥
दोऊ बीर बाण परिहारहिं ❀ एकहिं एक क्रोध कै मारहिं ॥
कोपि शल्य यमअस्त्रहि लीन्हें ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हें ॥
हांक मारिकै बाण प्रहारहिं ❀ इत नृप इन्द्र बाणसों मारहिं ॥
तीसर बाण युधिष्ठिर छांटे ❀ नृपको धनुष बाण गुण काटे ॥

दोहा—डारि धनुष कर शूलै, घालेघाव प्रचण्ड ।
सात बाणते धर्मसुत, काटिकियो शत खण्ड ॥

दोऊ बीर क्रोध ते पागे ❀ अशकुन होन बहुत बिधि लागे ॥

दिशा धुंधि भयकारक भारी ❀ रबि अदृश्य बहुफिकर सियारी ॥
जम्बुकगण बोलत रथ आगे ❀ रुधिर बुन्द नभ बरषन लागे ॥
बैठे काक भयंकर बोलत ❀ भूमिचली अहिपति शिर डोलत
झंझर पवन बहै अतिभारी ❀ उलकापात होत भयकारी ॥
गीधन आय शल्य रथ छाये ❀ ध्वजा टूटि धरणी पर आये ॥
भगे अघात शब्द घहराने ❀ अचरज करि सब काहू माने ॥
भूप युधिष्ठिर हाँके दीन्हो ❀ क्रोधित शक्ति हाथ के लीन्हो ॥
मारत हौं अब शल्य सँभारो ❀ आजु जानिबो तेज हमारो ॥
क्रोधित शल्य खड्ग कर लीन्हे ❀ शक्ति घाव राजा तब कीन्हे ॥
छूटत शक्ति शब्द भयो भारी ❀ दशो दिशा कीन्ह्यो उजियारी ॥
बज्र समान शक्ति जब आई ❀ कुरुपति देखि महा भय पाई ॥

दोहा—धर्म प्रबल सुतधर्म को, कीन्हों शक्ति प्रहार ।
ढाल फोरि कर छेदिकै, हृदय भेदिगा पार ॥

जूझे शल्य परे तब धरणी ❀ धमराज कीन्ही यह करणी ॥
धर्मतनय जब शल्यहि मारो ❀ सब देवन जय जयति पुकारो ॥
भीमसेन बल आपु सँभारो ❀ ज्यहि पायो त्यहि सबै सँहारो ॥
द्रौणि कृपा कृतबर्मा भाजे ❀ जीति युद्ध पाण्डव दल गाजे ॥
अन्ध धुन्ध भा खेत भयंकर ❀ नाचत महा मगन मन शंकर ॥
भूप युधिष्ठिर भाष्यो बैना ❀ अन्धकार नहिं सूझत नैना ॥
कृष्ण समेत कियो तब गवना ❀ चले धर्मसुत अपने भवना ॥
दुर्योधन तब शोचत मनमें ❀ कोऊ साथ रह्यो नहिं सँगमें ॥
कीजे काह कवनि दिशि जैये ❀ बाढ़ो रुधिर पन्थ नहिं पैये ॥
सात ताल भा रुधिर उँचाई ❀ हय गज भाषत बरणि न जाई ॥
तुरग तुरंग कहत नहिं आवै ❀ रतनाकर की पटुतर पावै ॥
बहे जात लोहित मँझधारा ❀ कवनि भाँति जैये अब पारा ॥

दोहा—पृथ्वीपति दुर्योधन, लक्ष छत्रधर साथ ।
लक्ष्मीजाके कन्ध पर, त्यहि बिधि कीन्ह अनाथ ॥

तब नृप मन में कीन्ह बिचारा ❋ पैरि रुधिर जैये अब पारा ॥
अस्त्र सनाह खोलि सब डारे ❋ लैकर गदा भूप पगु धारे ॥
यहि बिधि भारत किये महारन ❋ एक लोथ पर परे हजारन ॥
वार पार ढिग आव न जाही ❋ रुधिर नदी अति भई अथाही ॥
पैरत भूप शङ्क नहिं मन में ❋ जात लोथ अभिरत है तन में ॥
जबहुँ केश चरणन अरुझावैं ❋ पैरत जात पार नहि पावैं ॥
जहाँ द्रोण गाड़ो जय खम्भा ❋ अभिरे भूप गहो तब थम्भा ॥
गहिकै खम्भ किये बिश्रामा ❋ जीव शोच पहुँचौं किमि धामा ॥
पकरहिं लोथ बहुत मँझधारा ❋ बूड़ि जात सब सहत न भारा ॥
बिधिबश एक लोथ तब गह्यो ❋ बूडो नहीं भार तिन सह्यो ॥
चलो लोथ गहि रोहित हेलत ❋ अभिरत मृत्यु गदासों ठेलत ॥
बहुत कष्ट सों उतरे पारा ❋ तब अपने मन कियो बिचारा ॥

दोहा—कौन बीर की लोथ यह, किय मनमाहँ निदान।
शल्यपर्व या बिधि कही, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाकृते सबलसिंहचौहान शल्यपर्वणि
शल्यबधबर्णनंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति शल्यपर्व समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा।

गदा पर्व ।

गदापर्व अब करत बखाना ❋ दुर्योधन मन में अनुमाना ॥
अन्धकार भो गयो न चीन्हा ❋ मुकुट ज्योति मुख देखै लीन्हा ॥
लषण कुमार चीन्हि जब पाये ❋ करुणा करत भूप मन लाये ॥
जूझे पुत्र हमारे काजा ❋ कहिहौं कहा भवन अनिलाजा ॥
ऐसे सुत सपूत संसारा ❋ मुयहु समय म्वहिं पार उतारा ॥
रोय कह्यो दुर्योधन राजा ❋ बिधिबिरुद्ध कीन्हा यह काजा ॥
यहि बिधि लोथ डारि जो जैहैं ❋ जम्बुक काक गीधगण खैहैं ॥
अग्नि देन अवसर नहि पाये ❋ कहो मृतिका दै करि जाये ॥
गदा घाव धरणी पर मारो ❋ भयो गढ़ा तब लोथहिं डारो ॥
ऊपर दियो मृत्तिका ऐसो ❋ जम्बुक काक न पावहिं जैसो ॥
महाशोच करि कीन्हो गवना ❋ पहुँचे जाइ सुकुरुपति भवना ॥
अन्तःपुर कीन्हे परबेशा ❋ रानी चकित देखि यह बेशा ॥

दोहा—एक बसन बूड़े रुधिर, अरुण बरण सबअङ्ग।
गदाहाथशिर मुकुटहै, और न कोऊ सङ्ग ॥

रानी रोय ठोंकिकै माथा ❋ जिनबिधिकीन्ह्यो हमहिं अनाथा ॥
आदर करि आसन बैठाई ❋ धोइ रुधिर बस्तर पहिराई ॥
दुर्योधन भाष्यो सब बचना ❋ ज्यहिबिधि भई युद्ध की रचना ॥
सुनि रानी बोलि यह बानी ❋ मेरी बात नाथ नहीं मानो ॥
भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी ❋ जूझेउ खेत सबहि बलभारी ॥
गिरे शल्यसुत बन्धु गिराये ❋ खेत छांड़ि काहे तुम आये ॥

जैसे तहाँ जहाँ पितु आवै ❀ जौलों खोज भीम नहिं पावै ॥
कछुक आनि मिष्ठान्न जेंवाये ❀ दीन्ह पान कछु विनय सुनाये ॥
अब यहि समय भूप सुनि लीजै ❀ साहस छोड़ि शोच नहिं कीजै ॥
चारिहु युग ऐसी चलि आई ❀ कर्म लिखा सो मेटि न जाई ॥
दुर्योधन सुनि कीन्ह्यो गवना ❀ आये त्वरित पिता के भवना ॥
चरण परसि ठाढ़े भे आगे ❀ कौरवपति सों कहिबे लागे ॥

दोहा—दुर्योधन सब बिधि कही, जूझ गिरे सब खेत।
अब उपाय का कीजिये, बूझत हौं सो हेत ॥

सुनत शोच धृतराष्ट्रक कीन्हो ❀ करि करुणा कछुकहिबो लीन्हो ॥
बिधि परपञ्च जानि नहिं जाई ❀ ब्यास सरोवर रहो छिपाई ॥
गान्धारी भाष्यो तब बैना ❀ देखों पुत्र खोलि त्वहिं नैना ॥
जबते पति देखो मैं आँधो ❀ तबते नैन पटी हम बाँधो ॥
बसन राखि सुत आगे आयो ❀ पाछे ब्यास सरोवर जायो ॥
एक बसन सों जंघ छिपाये ❀ दुर्योधन तब आगे आये ॥
पटी खोलि गान्धारी हेरी ❀ हे सुत बात न राख्यो मेरी ॥
ब्ज्रशरीर भयो सुत तोरा ❀ उबरा जंघ दोष नहिं मोरा ॥
अस कहि निशङ्क दुर्योधन कैसा ❀ परमहंस छाड़त गृह जैसा ॥
मातु पिता छाँड़े त्रिय भवना ❀ लैकर गदा पन्थ कहँ गवना ॥
तके सरोवर नृप तहँ आये ❀ फूले कमल सुबास सुहाये ॥

दोहा—चक्रबाक सारस युगल, निर्मल जल गम्भीर।
मधुकरगण डोलत सदा, बहु मराल की भीर ॥

पिछले पाँव धसो जल राजा ❀ पाण्डव खोज मेटिबे काजा ॥
यहि बिधि तृषित नीरतकि आये ❀ झलकत मुकुट देखि तेहि पाये ॥
जलथम्भन बिद्या कर कैसे ❀ बैठो जाइ भवन महँ जैसे ॥
लक्ष्मी कृपा बहुत बिधि कीन्ही ❀ कनकपलँग सोवन कहँ दीन्ही ॥
दुर्योधन कीन्हे बिश्रामा ❀ पाण्डु गये सब अपने धामा ॥

जयकरि बिजय भवन कहँ कीन्ही ❋ कुन्ती हाथ आरती लीन्ही ॥
रण महँ इन मारे कुरुनाथा ❋ करै आरती तेहि निज हाथा ॥
कही भीम सब बन्धु सँहारे ❋ दुर्योधन कहँ मैं नहिं मारे ॥
धर्मपुत्र कह भो रण घोरा ❋ मोसन परेउ शल्य सों जोरा ॥
अर्जुन कही मातु सों बैना ❋ कुरुपति हम नहिं देख्यो नैना ॥
नकुल कही नहिं जान्यो भेवा ❋ तब कुन्ती बूझा सहदेवा ॥
मन्त्री मन्त्र बिचारत मन में ❋ कुरुपति बच्यो किजूभयो रनमें ॥

दोहा—हाथ जोरि सहदेव कह, मातु सुनहु यह बैन ।
जीवत हैं दुर्योधन, गिरत न देख्यों नैन ॥

कुन्ती कही सुनहु हरि पारथ ❋ तुम भारथ रण कियो अकारथ ॥
कुशल गये दुर्योधन धामा ❋ तो सेना मारे केहि कामा ॥
पाँचो बन्धु कृष्ण सँग धाये ❋ दुर्योधनहिं बधे यश पाये ॥
तब कुन्ती यह बात जनाई ❋ कही कृष्ण मेरे मन आई ॥
पाण्डव तबहिं चले हरि साथा ❋ खोजत खोज फिरैं कुरुनाथा ॥
अन्धकार भा जात न चीन्हा ❋ बारि मशाल हाथ के लीन्हा ॥
जूझे बीर खेत मों परे ❋ झलकैं मुकुट जरायन जरे ॥
कहूँ मुण्ड कहुँ देखे रुण्डा ❋ कहूं गयन्द परे कहुँ शुण्डा ॥
कहूँ तुरङ्गम परे अरध खर ❋ कहूँ चरण कहुँ परे बिकरकर ॥
रुधिर पानकरि योगिनि नाचहिं ❋ जम्बुककाकलोथि बहु खाचहिं ॥
कुरुपति खोज करत नहिं पावत ❋ देखो पन्थ व्याध इक आवत ॥
भीमसेन पूछे तब बयना ❋ दुर्योधन को देख्यो नयना ॥

दोहा—कही व्याधकरजोरिकै, भीमसेन सों बात ।
बीर एक देख्यो हतो, व्यास सरोवर जात ॥

गदा हाथ शिर मुकुट सुहाये ❋ बीर एक हम देखन पाये ॥
सुनी भीम मन महँ अनुमाने ❋ निश्चय कै दुर्योधन जाने ॥
पाँचो बन्धु कृष्ण सँग आवत ❋ आगे व्याध पन्थ दिखरावत ॥

ब्यास सरोवर निकटहिं आये ❋ चरण चिन्ह तहँ देखन पाये ॥
धरत पाँव दुर्योधन जहवाँ ❋ फूलत करण धरणि महँ तहवाँ ॥
बिधि बिरोध काहू नहिं होई ❋ लक्षण भयो कुलक्षण सोई ॥
यहि बिधि खोज करत चलि आये ❋ ब्यास सरोवर देखन पाये ॥
अगम गँभीर सरोवर कैसो ❋ उठै तरङ्ग तरङ्गिनि जैसो ॥
कृष्णदेव तब आप बखानत ❋ जलथंभन नीको नृप जानत ॥
धर्मराज को भा अंदेशव ❋ जलमहँ कछुबल चलै न केशव ॥
अब उपाय करिये प्रभु कैसो ❋ अबहीं निकरै कुरुपति जैसो ॥

दोहा—महाबीर दुर्योधन, कहैं आपु भगवान ।
अबहीं निकरतनीरसों, भीम हाँकसुनिकान ॥

भीमसेन आये तब तीरा ❋ दिये हाँक दुर्योधन बीरा ॥
निकरौ नृप बूड़ो केहि काजा ❋ कुरुबंशहि लावत हो लाजा ॥
सुनतै हाँक क्रोध कै भारी ❋ उठिकर गदा गहो सम्भारी ॥
पकरि बांह लक्ष्मी बैठाई ❋ पुनि राजा को बहुत बुझाई ॥
जलसों निकरि युद्धमति करिये ❋ मेरा कहा चित्तमहँ धरिये ॥
दूजी हांक भीम जब दीन्हो ❋ कटुक बचन कहिबे बहुलीन्हो ॥
सुत बान्धव रण सर्बहि जुझायो ❋ आपु भागिकै जीव बचायो ॥
मानि गोविन्द धरायो नामा ❋ जलमेंआनिछिप्यो केहि कामा ॥
भीम हाँक सुनि कुरुपति कैसी ❋ द्रमदावा लागी पुनि जैसी ॥
गहि कर गदा उठन जब चह्यो ❋ आगे ह्वै कमला कर गह्यो ॥
अस्थिर रहो सुनो मम बैना ❋ काल्हि देहुँ संपति सों सैना ॥
दिवस अठारह भई लराई ❋ तीनि लोक फिरिकै हम आई ॥

दोहा—तोसमलक्षणवन्तनहिं, करचों कन्धजेहिबास ।
तीनिलोकमहँ ढूँढ़िकै, फिरिआइउँतवपास ॥

काल्हि दिवस जो तेरे मन में ❋ जीति सकै नहिं पाण्डव रनमें ॥
ता कारण सुनु तोसों कहिये ❋ आजु धीर ह्वै जल महँ रहिये ॥

सुनिकै नृप कमला के बयना ❀ पौढ़ि पलँगपर कीन्हेउ शयना ॥
तीजी हाँक भीम जब मारो ❀ निकरु निकरु कुरुनाथ पुकारो ॥
छाँड़त हौ कत क्षत्री धर्मा ❀ होइहहि सोइ लिखा जो कर्मा ॥
महागर्व तुम सब दिन कीन्ह्यो ❀ निकरत नहीं भाजिजल लीन्ह्यो ॥
धिक जीवन जग में हैं तेरो ❀ इतनी बात अंगवत मेरो ॥
अपने बसते गनत न आना ❀ अब काहे तुम तजत गुमाना ॥
मारहुँ गदा फाटि जल जैहै ❀ गहिकै केश अबहिं लै ऐहै ॥
सुनत बचन दुर्योधन जऱ्यो ❀ बरत अग्नि मानहुँ घृत पऱ्यो ॥
क्रोधित उठि कौरवपति जबहीं ❀ गही बाहँ कमला पुनि तबहीं ॥
बन्धु बैर को सकहि निवारी ❀ पाँयन ठेलि लच्छिमी डारी ॥

दोहा—गदापाणि दुर्योधन, ऊपर पहुँच्यो आय ।
धमराय तब दौरिकै, मिले हृदय महँ लाय ॥

धर्म युधिष्ठिर के मन आई ❀ चलि सिंहासन बैठिय भाई ॥
सबमिलि हम सेवा तव करिहैं ❀ आज्ञा सदा शीश पर धारहैं ॥
पाँच गाँव अजहूँ मोहिं दीजै ❀ अपनो छत्र सिँहासन लीजै ॥
यह सुनि दुर्योधन हँसि भाखे ❀ धर्मराय तुम धर्महिं राखे ॥
ऐसे समय न छाड़ौं टेका ❀ करिहौं आजु एक को एका ॥
सुई अग्र देहौं नहिं दाना ❀ करहुँ युद्ध भारत मैदाना ॥
धर्मराय कह सुनिये भाई ❀ तेरे मन ऐसो जो आई ॥
दोउ बन्धु अब हम सों लीजै ❀ तीनि तीनि समता रण कीजै ॥
हँसि दुर्योधन भाष्यो बानी ❀ भाई तुम यह बात न जानी ॥
अर्जुन भीम लेउँ जो दोऊ ❀ बाँधत तुम्हैं न राखत कोऊ ॥
धर्मराय तब कहा बुझाई ❀ एक एक ते उचित लराई ॥
दुर्योधन बोले परिमाना ❀ राजा राजहिं युद्ध समाना ॥

दोहा—कह्यो कृष्ण कुरुनाथ सों, यह है उचित बिचार ।
लरौ भीम सों खेत महँ, जय देइहि करतार ॥

दुर्योधन क्रोधित ह्वै भाष्यो ❀ कबते भीम छत्र शिर राख्यो ॥
कही कृष्ण तुम बात न पाई ❀ चारिहु युगहि याहि चलि आई॥
भुजबल ते बसुधा कर भोगा ❀ ज्ञानी ह्वै सुकरहि पुनि योगा ॥
भीम महाबल जीते पारथ ❀ लई राज अपने पुरुषारथ ॥
तब भीमहिं राजा करि लेखों ❀ धर्मराय नावहिं शिर देखों ॥
पाँचहु बन्धु कृष्ण मुख ताके ❀ सब दिन रहत भरोसे जाके ॥
धर्मराय जब शीश नवैहैं ❀ पल मों भीमसेन जरि जैहैं ॥
तब श्रीहरि रचना यह कीन्ह्यो ❀ ले हरिबन्श भीमकहँ दीन्ह्यो ॥
कृष्णदेव यह रचना ठाना ❀ ताथो दुर्योधन नहिं जाना ॥
श्रीपति कही बिलम्ब न लावहु ❀ धर्मराज अब शीश नवावहु ॥
भीम बगल हरिबंशहि राखो ❀ सो तकि धर्मयुधिष्ठिर भाखो ॥
भूप भीम कहँ शीश नवायो ❀ जयधुनि करि हरि शंखबजायो॥

दोहा—दुर्योधन कह भीमसों, क्रोधवन्त ह्वै बैन ।
गदायुद्ध हम तुम कराहिं, सबमिलि देखैं नैन ॥

गहिकै गदा दोउ भे ठाढ़े ❀ क्रोध अनल उर अन्तर बाढ़े ॥
मण्डलफिरहिं घात दोउ ताकहिं ❀ कोउ कोऊ कहँ यतन न पावहिँ॥
रोकत गदा गदा सों टारत ❀ एकहि एक क्रोध कै मारत ॥
गदा प्रहार शब्द भा कैसे ❀ छूटत बज्र इन्द्र कर जैसे ॥
सरस निरस कहि जात न काहू ❀ पण्डित गदा युद्ध बल बाहू ॥
धावत गदा हाँक दै हाँकत ❀ पद के भार मेदिनी काँपत ॥
कुरु पति भाष्यो भीम सँभारो ❀ आजु जानिबो तेज हमारो ॥
कही भीम अब जानत भाई ❀ गाल मारि जनि करहु बड़ाई ॥
मोंते आजु पर्यो है कामा ❀ देखो को जीतै संग्रामा ॥

दोहा—दुर्योधन तब क्रोधकै, घाल्यो घाव प्रचण्ड ।
गदा रोंकि सम्भारिकै, भीम महाबलबण्ड ॥

कोपि भीम तब गदा प्रहारा ❀ महाबीर कुरुनाथ सँभारा ॥

दोऊ बीर जोरते झरपत ❀ महाबीर मन नेकु न डरपत ॥
यहि बिधि करत युद्ध की करणी ❀ भूमिपाल डोलति है धरणी ॥
महामत्त तन उरभयो दोऊ ❀ प्रलय युद्ध देखत सब कोऊ ॥
गदा गदा सों लागत जबहीं ❀ निकरत अग्नि भभूका तबहीं ॥
गदा हाथ रण शोभा पावत ❀ पक्ष सहित पर्वत जनु धावत ॥
दोऊ जुरे युद्ध महँ कैसे ❀ सतयुग महँ बलि बाँध्यो जैसे ॥
चढ़े बिमान देवगण देखत ❀ अपने मन अचरज करि लेखत ॥
गौर श्याम दोउ सोहैं कैसे ❀ कुंकुम अरु कज्जल गिरि जैसे ॥
कलबल करत भीम फिरि आवत ❀ गदा पवन ते पक्षि उड़ावत ॥
जुरे भीम दुर्योधन कैसे ❀ प्रद्युम्नहिं शम्बर रण जैसे ॥

दोहा—अयुत नाग बल दुहुँनके, महाबीर परचण्ड ।
मारत गदा जु कोपिकै, ज्यों टूटत यमदण्ड ॥

लागत गदा दोउ के तन में ❀ धमकत घाव शब्द जन घनमें ॥
चञ्चल चपल फिरत दोउ बांको ❀ घूमत मनहु कुम्हार को चाको ॥
दोऊ बीर युद्ध मन लाये ❀ तीरथ फिरि बलभद्रहि आये ॥
देखो तहां महारण घोरा ❀ परे भीम दुर्योधन जोरा ॥
हलधर बिहँसि कही यह बाता ❀ कुरुपति सहित गदा के घाता ॥
बल कछु अधिक भीम के तनमें ❀ हार जीत नहिं देखत मनमें ॥
अजहूँ प्रीति करहु दोउ भाई ❀ केहि कारण अब रचहु लराई ॥
करिकै गदा ऊर्ध्व परिहारन ❀ कोउ न सकहि काहुको मारन ॥
अजहुँ दूनहूँ प्रीति बिचारहु ❀ जो मानहु हित बचन हमारहु ॥
युद्ध घात दोऊ अरुझाने ❀ हलधर बचन हृदय नहिं आने ॥
कहि बलभद्र कियो तब गवना ❀ कुरुक्षेत्र परिरक्षक कवना ॥
कृष्ण भीम कहँ जङ्घ बताई ❀ निरखि बृकोदर घात लगाई ॥

दोहा—भीमसेन तब क्रोधकै, मारयो घाव बचाय ।
दोउ जंघ भञ्जन भयो, परयो धरणिपर आय ॥

गिरि कुरुपति धरणी में ऐसे ❁ काटत मूल परत द्रुम जैसे ॥
पूर्व बैर मनमहँ सुधि आई ❁ भीमसेन तब लात उठाई ॥
हाहा शब्द युधिष्ठिर कीन्हा ❁ रहहु भीम कहिबे अस लीन्हा ॥
अष्टादश चौहिणी भुवारा ❁ भनत गोविंद जानु सब सारा ॥
कृष्ण सहित भाष्यो सब राजा ❁ चरण प्रहार करत क्यहि काजा ॥
करते चरण समेटन कीन्ह्यो ❁ बैठ सँभारि कहै तब लीन्ह्यो ॥
चत्री धर्म न भीम विचार्यो ❁ गदा घाव जङ्घन पर मार्यो ॥
कही भीम दुर्योधन बीरहिं ❁ जादिन हरो द्रौपदी चीरहिं ॥
तादिन मैं सबसों प्रण भाख्यों ❁ तोर्यों जङ्घ प्रतिज्ञा राख्यों ॥
श्रीपति कही कुरुपति राजहिं ❁ जब हम गये बसीठी काजहिं ॥
तादिन मेरो कहा न कीन्हा ❁ कटुक बचन मोसे कहि दीन्हा ॥
सेना संपति सकल गँवायो ❁ ज्यहि चण करगहि मोहिउठायो ॥

दोहा—दुर्योधन कह कृष्णसों, मैं हौं जन्तु समान ।
हमैं लगावत दोष अब, तुम प्रेरक भगवान ॥

जो तुम रच्यो भयो सो स्वामी ❁ मोहिं दोष नहिं अन्तर्यामी ॥
श्रीपति सुनत हृदय सुखमाना ❁ धर्मराय तब आपु बखाना ॥
कुरुपति कही बचन परमाना ❁ सुनि माधव तब कीन्ह पयाना ॥
पांचौ बन्धु कृष्ण सँग लीन्हे ❁ भारत जीति भवन शुभकीन्हे ॥
कृष्ण देव सों कुन्ती भाखो ❁ दीनदयाल भक्तप्रण राखो ॥
अस कहिकै आरती सँवारी ❁ प्रथम कृष्ण के शीश उतारी ॥
धर्मराय सों माधव भाखो ❁ मेरो मन्त्र सदा तुम राखो ॥
मो कहँ मति ऐसी बनि आई ❁ चलो साथ तुम पांचौ भाई ॥
आजु राति बसिये नहिं भवना ❁ नन्दिघोष चढ़ि कीजै गवना ॥
अस कहि पांचौ बन्धु चढ़ाये ❁ योजन एक भवन तजि आये ॥
अर्जुन हृदय शोच भा भारी ❁ का रचना यह कीन्ह मुरारी ॥
सुमिरण शम्भुनाथ कर कीन्हा ❁ शंकर आय दरश तब दीन्हा ॥

दोहा—श्रीहरिभाष्योशम्भुसन, हम सब कीन्हों गौन ।
आजु राति द्वारे रहौ, द्वारपाल ह्वै भौन ॥

गङ्गाधर भाष्यो परतक्षक ❋ आजु द्वार रहि हैं हम रक्षक ॥
जो बिधि रची होय पुनि सोई ❋ द्वारे जान न पावे कोई ॥
लै पाण्डव माधव पगु धारे ❋ शूलपाणि भे ठाढ़े द्वारे ॥
अश्वत्थाम मनहिं अनुमानी ❋ गिरे भूप यह हिय महँ जानी ॥
मध्य प्रहर निशि आयो तहवाँ ❋ जङ्घ भङ्ग दुर्योधन जहवाँ ॥
बैठे कर सों गदा फिरावत ❋ जम्बुकगीध निकट नहिआवत ॥
गुरुसुत दूरिहिते कहि कारण ❋ अमर सदा सक कोउ न मारण ॥
अजहूँ कहा हमारो कीजे ❋ पाण्डव मारि जगत यशलीजे ॥
सुनि बोले तब द्रौणी ऐसा ❋ राजा बिनु रण कीजे कैसा ॥
गन्ध रुधिर लै टीका कीन्हा ❋ मैं राजा तुम कहँ करि दीन्हा ॥
मारि पाण्डवन पाँचो भाई ❋ बसुधा भोग करहु तुम जाई ॥

दोहा—गुरुसुत भाषो क्रोध कै, दुर्योधन सों बैन ।
मारिपाण्डवनशीशलै, आनिदेखाबहु नैन ॥

ऐसो कहि पुनि आयो तहँवाँ ❋ कृपाचार्य कृतबर्मा जहवाँ ॥
तासों बचन कहे अस लीन्हे ❋ दुर्योधन राजा म्वहिं कीन्हे ॥
द्वौ जन मोरि सहाय जो कीजे ❋ पाण्डव मारि राज्य अब कीजे ॥
बटतर तीनों मन विहिं चारत ❋ एक उलूक काक बहु मारत ॥
द्रौणी कहै देखिये नैना ❋ बूझै शत्रुहि को बल रैना ॥
चलौ त्वरित जाइय यहि कारण ❋ दिवस नाशको पाण्डव मारण ॥
यह कहिकै तीनों जन आये ❋ द्वारे दरश शम्भु के पाये ॥
गढ़ चहुँ फेर शूल है रक्षक ❋ दरवाजे शंकर परतक्षक ॥
कृतबर्मा तब कह्यो बिचारी ❋ जात कहाँ ठाढ़े त्रिपुरारी ॥
द्रौणी कहा रहहु तुम रक्षक ❋ जैहौं निकट होइ परतक्षक ॥
अस कहिकै शंकर ढिग आये ❋ कै प्रणाम तब गाल बजाये ॥

तब कृपालु हर भाष्यउ बानी ❀ मांगो बर द्रोणी बड़ ज्ञानी ॥

दोहा—द्रोणपुत्र यहि विधि कही, भीतर दीजै जान ।
गदापर्ब भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते गदापर्व भाषाकृते प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

इति गदापर्ब समाप्तम् ॥

महाभारत ।

सौप्तिक और ऐषिक-पर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की
रीति पर दोहा चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है ।

जिसमें

सोते हुए द्रौपदी के पाँचों पुत्रों को अश्वत्थामा ने मार डाला,
तदनन्तर पाण्डवों पर ब्रह्मास्त्र के प्रहार करने
की कथा वर्णित है ।

काशी-

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा-
भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी में मुद्रित ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत सौप्तिकपर्व ॥

शम्भुनाथ बोल्यो यह बचना ❋ मनमें समुझि कृष्णकी रचना ॥
द्वारे मारग जान न पैहौ ❋ गढ़हि फाँदिकै भीतर जैहौ ॥
कह्यो द्रौणि शंकर सों ऐसो ❋ फिरत शूल त्यागहिम्बहिंकैसो ॥
काढ़ि भस्म शंकर तब दीन्हा ❋ जाहि शूल ते रक्षा कीन्हा ॥
कै प्रणाम तब तुरत सिधाये ❋ फांदो गढ़ भीतर तब आये ॥
प्रथम गये द्रौणी चलि तहँवाँ ❋ कीन्हे शयन द्रौपदी जहँवाँ ॥
बैठे चपरि हृदय पर कैसे ❋ ब्याध कुरंग धरत हैं जैसे ॥
लैकै खड्ग कराठ मों धरिहहुँ ❋ कटिहौं शीशबिलंब न करिहहुँ ॥
कनक पलँग पर कीन्हे शैना ❋ पाँच पुत्र तब देख्यो नैना ॥
पाँच बन्धुके पाँचो जाये ❋ रूप समान भेद नहिं पाये ॥
खड्ग घाव तब द्रौणी कीन्हे ❋ पाँचौ शीश बाम कर लीन्हे ॥
यहि अन्तर दासी सब जागीं ❋ हा हा शब्द पुकारन लागीं ॥

दोहा—जागिउठ्यो रनिवास सब, टेरत करुणा बैन ।
द्रोण पुत्र कर खड्ग लै, लाग निपातन सैन ॥

चौंकिउठे पुनि सब अकुलाने ❋ आपुस में बहुतै अरुझाने ॥
अन्धकार नहिं सूझै नैना ❋ मारु मारु करि भाषैं बैना ॥
भागि निकरि गढ़ बाहर जेते ❋ कृतबर्मा करि मारे तेते ॥
अन्धकार महँ कछु नहिं सूझत ❋ अपन परार कोउ नहि बूझत ॥
गढ़ भीतर द्रौणी संहारे ❋ निकरि चले कृतबर्मा मारे ॥
भारत माहिं बचे हैं जेते ❋ निशा युद्ध महँ जूझे तेते ॥
निकरि द्रोणसुत बाहर आये ❋ कृप कृतबर्मा देखन पाये ॥
मारि पाराडवन कीन्ह्यों काजा ❋ चलिये शीश देखाइय राजा ॥
बैठे खेत कुरुपति जहवाँ ❋ तानिउ बोर गये चलि तहवाँ ॥

द्रोणी कही नृपति सों बाता ❀ पाँचहु पाण्डव कीन्ह निपाता ॥
हर्षवन्त होइ राजा भाख्यो ❀ मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो ॥
धरे आनि शिर भूपति आगे ❀ मुकुट ज्योति सों देखन लागे ॥

दोहा—पांच बन्धु के पाँच सुत, भूप निहारे नैन ।
बिस्मयकारि भूपति कही, द्रोणपुत्र सों बैन ॥

करुणा करि भाष्यो तब राजा ❀ बालकबधकीन्ह्यो क्यहि काजा॥
मूक भये दुख हृदय भुवारा ❀ वंश जार कीन्हे हत्यारा ॥
असकहि प्राण तजे नृप जबहीं ❀ भय उपजो द्रोणी जिय तबहीं ॥
अर्जुन भीमसेन नहिं मारो ❀ द्रुपदसुता के पुत्र सँहारो ॥
कृतवर्मा जब चित्त बिचारा ❀ द्वारावती तुरत पगु धारा ॥
भे आतुर द्रोणी चले तँहवाँ ❀ उत्तर नरनारायण जहँवाँ ॥
उदय प्रभात सूर्य भे जबहीं ❀ लै पाण्डव हरि आये तबहीं ॥
देखे सबै सैन्य संहारे ❀ पाँचो पुत्र तेउ गे मारे ॥
करुणा करहि द्रौपदी सरसे ❀ आँसु नीर नैनन सों बरसे ॥
अर्जुन देखि अचम्भव माना ❀ द्रुपदसुता यहि भाँति बखाना ॥
करुणा करि पाञ्चाली भाखी ❀ अब घट प्राण जाहिँ ना राखी ॥
पाँच पुत्र करि बन्धु सँहारे ❀ अनुचर सहित सैन सब मारे ॥
द्रोणिहि बाँधि तुरतही दीजे ❀ नातरु प्राण त्याग हम कीजे ॥

दोहा—क्रोधवन्त अर्जुन भयो, हाँको रथ भगवान ।
बांधि लैआवों द्रोणसुत, यह प्रणकियेनिदान॥

इति श्री महाभारते सबलसिंह चौहान भाषा कृते सौप्तिक पर्वानु

कथनो नाम प्रथमो ऽध्यायः ॥ १ ॥

इति सौप्तिक पर्व समाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत

ऐषिक पर्व ।

यह सुनि रथ हांको बनवारी ❀ क्रोध शोक पारथ धनुधारी ॥
जेहि पथ द्रौणी किये पयाना ❀ तापथ रथ हाँको भगवाना ॥
सुनि रथशब्द द्रौणि उत ताके ❀ जात कहाँ अर्जुन तब हाँके ॥
सोवत पाँचो बालक मारे ❀ भाजा जात सुनु किमि हत्यारे ॥
सुनि द्रौणी अपने मन जाना ❀ आयु आनि अब समय निदाना॥
जाको भेद न अर्जुन जाने ❀ सोई बाण करै संधाने ॥
यह सुनि शृङ्गी अस्त्रहि लीन्हे ❀ पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे ॥
सुरगण देखि सबै भय माना ❀ प्रलय भये सबही मन जाना ॥
पाण्डव बन्श न एक उबारों ❀ अर्जुन सहित आज सब मारौं ॥
हाँक मारि द्रौणी शर छाँटे ❀ भूमि अकाश अग्नि ते पाटे ॥
छूट्यो बाण तेज सों कैसे ❀ प्रलय अनल महँ धावहिं जैसे ॥
अर्जुन निरखि अचम्भव माना ❀ श्रीपतिसों यहि भाँति बखाना ॥

दोहा—पारथ कही बिचारिकै, सुनु देवन के देव ।
कौन नाम है बाण को, बूझ परै नाहिं भेव ॥

तब श्रीहरि यहि भाँति बखाने ❀ यह शर अर्जुन तुम नहिं जाने॥
गुरु द्रोण बञ्चित तोहिं कीन्हे ❀ पुत्र जानि वाको शर दीन्हे ॥
त्याग किये यह शृंगी बाना ❀ तीनिलोक जाको भय माना ॥
श्रीपति कही सुदर्शन धावहु ❀ पाण्डुबन्श तुम जाय बचावहु ॥
सात बाण तब अर्जुन मारे ❀ महाप्रबल शर टरत न टारे ॥
बाण प्रताप सबन य पाये ❀ नन्दिघोष तजि यदुपति धाये ॥
बदन पसारि लीन भगवाना ❀ महाबाण हरि उदर समाना ॥
सहित युधिष्ठिर सबहिं बचाये ❀ गर्भ परीक्षित जरै न पाये ॥

नागपाश तब पारथ लीन्हे ❋ क्रोधित द्रौणिहि बन्धन कीन्हे ॥
तब श्रीपति रथ ऊपर डारे ❋ चले तुरन्त भवन पगु धारे ॥
करुणा करति द्रौपदी नारी ❋ आय गये पारथ धनुधारी ॥
अश्वत्थामहिं कीन्हे ठाढ़ा ❋ छूटे केश कुबन्धन गाढ़ा ॥

दोहा—तनुप्रस्वेदविगलितबदन, चितवनिनीचे नैन ।
भीमसेन कर खड्ग लै, क्रोधित बोले बैन ॥

अरे मूढ़ काटौं अब शीशा ❋ द्रौपदि सुतन बैर लै ईशा ॥
द्रौपदि देखि दया चित आई ❋ तब माधवसन भाष्यो गाई ॥
बिप्र बधेकर दूषण भारी ❋ बन्धन छोड़ि देहु बनवारी ॥
जूझे पुत्र फेरि नहिं पैहौं ❋ द्विजहत्या परलोक नशैहौं ॥
सो सुनि हरि बहुतै सुखमाना ❋ धन्य द्रौपदी आपु बखाना ॥
शीशचीरि श्रीहरि मणि लीन्हे ❋ पाछे छोरि द्रौणसुत दीन्हे ॥
भारत रणमहँ सब हैं जेते ❋ सद्गति कीन्हि धर्मसुत तेते ॥
पांच बन्धु श्रीपति सँगलाये ❋ देखै बुद्धिचक्षु पहँ आये ॥
बुद्धिचक्षु कछु कहिबे लागे ❋ सबै कृष्ण पाण्डव के आगे ॥
सब मिलि भीम सराहत तोको ❋ अङ्कमालिका दीजिय मोको ॥
हाररचना कै बृकोदर कीन्ह्यो ❋ लोहक भीम आगु लै दीन्ह्यो ॥
अन्धभूप तब भुजा पसारे ❋ मिलत समय चरणकरि डारे ॥
भाष्यो भीम अर्द्ध बल भारी ❋ तुम रक्षा कीन्ही बनवारी ॥

दोहा—गन्धारी सबही मिले, मधुर बैन जो भाखि ।
बहुतभाँति परबोधकरि, समाधानकरिराखि ॥

राजहि कहि गन्धारी रानी ❋ हरिरचना कीन्हो यह जानी ॥
दिवस अठारह भा यहि भारथ ❋ यकशत पुत्र सहितरथ पारथ ॥
सो संहार सकल हरि कीन्हा ❋ ते फल लेहिं शाप हम दीन्हा ॥
हलधर सहित सकल परिवारा ❋ एक दिवस सब होइ सँहारा ॥
क्रोधित होइ शाप जो दीन्हा ❋ हँसे कृष्ण रिस नेकु न कीन्हा ॥
पुरी हस्तिना कीन्ह्येउ गौना ❋ व्यासदेव भाष्यो यह रौना ॥
पुर में बन्दनवार बँधाये ❋ अति आनँदमय शोभा पाये ॥

नट नाचत गायन सब गावत ❀ बेद पुराणहिं बिप्र सुनावत ॥
कनक कलश गंगाजल धर्‍यो ❀ व्यासदेव घट आगे कर्‍यो ॥
द्रुपदसुता अरु धर्म नरेशहि ❀ गांठिजोरिकीन्ह्यो अभिषेकहिं ॥
उत्तम बसन आनि पहिराये ❀ श्रीपति सिंहासन बैठाये ॥
दोहा—दीन्ह्यो मुकुट शीशपर, मनहुँ उदित भे भान ।
जय जय भाष्यो देवगण, छाये बैठो आन ॥
यदुपति तिलक आपु कर लीन्ह्यो ❀ ब्यासदेव अनिबेदहि कीन्ह्यो ॥
भीमसेन तब चामर ढारो ❀ अर्जुन छत्र शीशपर धारो ॥
भूप युधिष्ठिर हरिसों भाखो ❀ दीनबन्धु अपनो प्रण राखो ॥
भारत तुम जीत्यो जगतारण ❀ कृपाकरीमोहिं जगत उधारण ॥
प्रभु तुम तीनि लोक के स्वामी ❀ जीव जन्तु सब के उरगामी ॥
बिप्र सुदामा दारिद भञ्जन ❀ केशी कंस अघासुर गञ्जन ॥
यह सुनिकै श्रीपति सुख मान्यो ❀ धर्मराय सों आपु बखान्यो ॥
तुम हो धन्य धर्म अवतारा ❀ परमभगत जानत संसारा ॥
यहि अन्तर पुरबासी आये ❀ दिये भेंट अरु शीश नवाये ॥
सब संसार सुखी भा भारी ❀ राजा धर्मराज अधिकारी ॥
प्रजालोग सब करहिं अनन्दा ❀ जिमिचकोर पावहिं निशिचन्दा ॥
दोहा—द्रुपदपुत्र मन्त्री भये, पकरे भक्ति निदान ।
सबलसिंहचौहान कह, भक्तिबश्य भगवान ॥
भारत कथा सुनै मनलाई ❀ ताके निकट पाप नहिं जाई ॥
जो फल सब तीरथ असनाना ❀ जो फल कोटिन कन्यादाना ॥
जो फल होइ शरण के राखे ❀ जो फल सदा सत्य के भाखे ॥
जो फल हो परमारथ कीन्हे ❀ जो फल पिण्ड गयाके दीन्हे ॥
जो फल रणमां प्राण गँवाये ❀ सो फल है वह कथा सुनाये ॥
दोहा—भारत सुनै अनेक फल, मोसे कहो न जाय ।
अनायास बैकुण्ठ लहि, दरश देहिं यदुराय ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहान भाषाविरचिते धर्मराजअभिषेककथा समाप्तम् ॥

महाभारत

स्त्री-पर्व

सबलसिंहचौहान-विरचित

जो

अत्युत्तमश्रीगोस्वामितुलसीदास-कृतरामायण की रीतिपर दोहा चौपाई में सरलता से वर्णित है।

जिसमें

दुर्योधन आदि सौ पुत्रों का मरना सुन, धृतराष्ट्र का दुःखित होकर व्यास आदि
महा पुरुषों को ज्ञान देना, पुनः गान्धारी-सहित सम्पूर्ण बन्धुओं का
विलाप, कुरुक्षेत्र में तीन वीरों को बचे हुए देख क्लेशित होना
तथा उन वीरों करके धैर्य देना, गान्धारी का कोप देख भीमादि
भाइयों को क्षमा कराना, अपने-आपने कन्तकी लोथों को देख
सब रानियों का महाविलाप, धृतराष्ट्र करके श्रीकृष्णशाप,
पुनः युधिष्ठिरादि करके मृतक कर्म करना व धर्मराज का
भ्रातृशोक से विरक्त होकर व्यासादि मुनियों का
ज्ञानोपदेश देना आदि कथाएँ वर्णित हैं।

काशी—

बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा—

भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी में मुद्रित।

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ स्त्रीपर्व ॥

दोहा—जन्मेजय ते कहत हैं, बैशम्पयन बखान ।
स्त्रीपर्व भाषा रचौं, सबलसिंह चौहान ॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी ❋ जाते होइ पाप की हानी ॥
संजय देख्यो मरे भुवारा ❋ बिस्मय मान्यो मनहिं मँझारा ॥
जाइ तबै धृतराष्ट्र के आगे ❋ पुत्र मरण बिस्मय अनुरागे ॥
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता ❋ मानो परी बज्र की घाता ॥
रोदन करि तब अन्ध भुवारा ❋ हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा ॥
दुर्योधन सुत रण संहारा ❋ सबौ पुत्र जे हते हमारा ॥
एक भीम सब रण महँ मारी ❋ का कीन्हेउ करतार खरारी ॥
हा हा पुत्र पुत्र करि राई ❋ रोवै कुरु भूपति दुख पाई ॥

दोहा—दुश्शासन अरु कुरु नृपति, सौ बान्धवलैसङ्ग ।
जूझे रणमहँ सबै दल, भयो चित्त महँ भङ्ग ॥

हा हा भीषम पित्र हमारा ❋ हाय द्रोण हा करण भुवारा ॥
जो जो गुण है पुत्र तुम्हारा ❋ सो सुमिरे तन जरत हमारा ॥
है सुत शोक महा संसारा ❋ कत गुण सुमिरौं भूप तुम्हारा ॥
राज पाट सब परा तुम्हारा ❋ कनक पलँग के सोवनहारा ॥
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ ❋ परा सुदेश सकल भुइँ गांऊ ॥
बृथा काल सुत शोकहि पाये ❋ बाम बिधाता भा दुखदाये ॥
कर्म दोष दुख लिखे हमारा ❋ सो अक्षर को मेटनहारा ॥

परिचर्या करिबो हम काहो ❋ पुत्र शोक हिरदय माँ आही ॥
बृद्धअवस्था बिधि दुख दीना ❋ जैसे पच्छी पंख बिहीनो ॥
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा ❋ का रचना कीन्हो करतारा ॥

दोहा—बिना नयन तनु ज्यों अहै, बासर ज्यों बिनु भानु।
चन्द्र बिना जिमि रैनि है, दीपक बिनु गृह जानु॥

त्यों बिनु पुत्र बंश है ऐसा ❋ कुल को नाम नाश भा तैसा ॥
परशुराम नारद समुझाये ❋ सुत के मनते बात न भाये ॥
हमैं छाँड़ि सुत कहाँ सिधाये ❋ गर्बवंत ह्वै प्राण गँवाये ॥
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी ❋ जीवन आश नहीं अब मेरी ॥
भीषम करण और भगदन्ता ❋ द्रोणगुरू को भया निहन्ता ॥
महाबिलाप अन्ध नृप करई ❋ संजय तबै बात अनुसरई ॥
राजा शोच तजो तुम यातें ❋ अब तुम सुनो ज्ञानकी बातें ॥
राजा अहो परम सज्ञाना ❋ जानतहौं सब शास्त्र पुराना ॥
जन्म मृत्यु दूनों सख्याता ❋ दूनों रहैं पिन्ड महँ ताता ॥
जन्म मृत्यु माया ते धारण ❋ समुझौ मन रोवत केहि कारण॥

दोहा—जन्म मृत्यु माया सबै, रोवत हौ केहि काज।
संजय तहँ समुझावहीं, अन्ध बृद्ध कुरुराज॥

संजय नाम हुते यक राजा ❋ पुत्र शोक ते भयो अकाजा ॥
सुत हित चाहत प्राण गँवाये ❋ तब नारद मुनि जाइ बुझाये ॥
जीवन मरण लोक दुख जाना ❋ कर्म फलित प्रापत परमाना ॥
सब माया जानो तुम नरपति ❋ केवल सबै कर्मकी यह गति ॥
पुत्रहि केर समुझि मन दोषा ❋ हृदय माहिं करिये संतोषा ॥
काहू केर बचन नहिं माना ❋ साधन बचन सुन्यो नहिं काना ॥
दुश्शासन मन्त्री सब जाना ❋ ताते मन्त्र गने नहिं आना ॥
शकुनी करण मन्त्र परमाना ❋ काहू केर कहा नहिं माना ॥
भीषम केर बचन नहिं राखे ❋ बहुतै नीति धर्म उन भाखे ॥

गन्धारी के बचन न माना ❋ तेहि अपराध तजे तिन प्राना ॥

दोहा—सदा पाप मनमें बसै, नाहिंन धर्म बिचार ।
सोई पाप ते भूप सुनु, जूझे पुत्र तुम्हार ॥

ब्यास केरि बाणी नहिं मानी ❋ अतिशय अहंकार मति ठानी ॥
बहुत प्रकार कृष्ण समुझाये ❋ पै बिरोध वाके मन भाये ॥
क्षत्री सब कीन्हे क्षय जानी ❋ कृष्ण केरि बाचा नहिं मानी ॥
तुम नृप सुत बश कछुनहि कह्यऊ ❋ पाप ते पुत्र नाश ह्वै गयऊ ॥
ताते शोक तजहु तुम राई ❋ बहुत प्रकार मन्त्र समुझाई ॥
सुनत कछू अधीर भा राजा ❋ महाशोक पुत्रन के काजा ॥
छाँड़ै भूप ऊर्ध्व करि श्वासा ❋ पुत्र शोक ते भयो उदासा ॥
रोवै धीर धरै नहि राई ❋ तबहि बिदुर राजहिं समुझाई ॥
सुनिकै बचन धीर भयो राजा ❋ कीन्हेउ शोक पुत्र के काजा ॥
उठो नरेश शोच नहिं करिये ❋ मेरे बचन हृदय में धरिये ॥
काल बश्य है सब संसारा ❋ तीन लोक बश मृत्यु भुवारा ॥

दोहा—जानै योग्य अयोग्य तब, जानै सब संसार ।
महाबीर क्षत्री जिते, सबै होत संहार ॥

बृद्ध ज्वान अरु बालक आहीं ❋ राजा प्रजा जिते जग माहीं ॥
सबहीं मृत्यु सत्य प्रचराना ❋ जानहु राजा परम निधाना ॥
सुनि नृप बात बिदुर मुख जबहीं ❋ भयो मौन धृतराष्ट्रक तबहीं ॥
तबहूँ होत हृदय नहिं धीरा ❋ मूर्च्छित भये अन्ध नृप बीरा ॥
तबहिं ब्यास संजय यक साथा ❋ बिदुर सहित बोधे नरनाथा ॥
शीतल नीर बदन में दीन्हा ❋ तबहीं हृदय चेत नृप कीन्हा ॥
यहि प्रकार तब चेत जनाये ❋ रोदन करत कहन मनलाये ॥
धिक यह जीवन जक्त हमारा ❋ पुत्र सुशोक सहै को पारा ॥
महाबिलाप धीर नहिं धरहीं ❋ पुत्रशोक पुनि पुनि उरकरहीं ॥
बारबार रोवत है राई ❋ हा हा पुत्र परम सुख दाई ॥

दोहा—धृतराष्टक रोवै तहाँ, पुत्र शोक कर हेत ।
क्षणयक होत सचेत नृप, क्षणयक होत अचेत ॥

बहुबिधि ब्यास कहत समुझाई ❋ तबहूँ धीर धरत नहिं राई ॥
बिदुर और संजय समुझावैं ❋ काहुकि बात हृदय नहि आवैं ॥
महा शोक करि रोदन करहीं ❋ पुत्र नाम पुनि पुनि उच्चरहीं ॥
तबहिं ब्यासमुनि कह समुझाई ❋ मन्त्र हमार सुनो हो राई ॥
रोदन केहि हित करहु भुवारा ❋ यह सब देवन को उपकारा ॥
मैं यक समय इन्द्रपुर गयऊँ ❋ नारद आदि मुनिन सँग लयऊँ ॥
तिहि अवसर बसुधा तहँ जाई ❋ बिधि सुरपति सों कह्यो बुझाई ॥
कहो देव मेरो उद्धारा ❋ मम ऊपर भवभार अपारा ॥
पूर्ब बिष्णु जे दैत्य सँहारा ❋ ते सब भये क्षत्रि अवतारा ॥
भारी पाप सहे नहिं पारा ❋ यहै निवेदन सभा मँझारा ॥
रोदन करि धरणी तब कहई ❋ सकल देवता साखी अहई ॥

दोहा—तहाँ बिष्णु हँसिकै कहेउ, सुनु भुव बचन हमार ।
मनचिन्ता त्यागन करो, हम टरिहैं तव भार ॥

हैं निज बंश देवता जेते ❋ जगत माहिं जन्मै लै तेते ॥
कुरुक्षेत्र भारत संचारा ❋ तहाँ होय सब को संहारा ॥
जाहु पुहुमि अपने अस्थाना ❋ देव बिचारि कहो भगवाना ॥
बसुधा मृत्य लोक कहँ आई ❋ तबहिं बिचार करैं यदुराई ॥
सो दुर्योधन पुत्र तुम्हारा ❋ कलियुग केर अहै अवतारा ॥
महाक्रोध चञ्चल है अङ्गा ❋ सो कलियुग आयसु करि भङ्गा ॥
सो बान्धव अरु करण भुवारा ❋ भारत हेत भयो अवतारा ॥
हम सब कथा कही तुव पासा ❋ भयो युद्ध तेरो सुत नासा ॥
ता कारण सब भयो सँहारा ❋ शोक तजहु अब अन्ध भुवारा ॥
यह सब कीन्हैं अन्ध भुवारा ❋ पृथ्वी केर उतारेउ भारा ॥

दोहा—यहि प्रकारतें ब्यास तब, कहेउ बहुत समुझाय।
धर्मरूप तुम अन्ध नृप, त्यागहु शोक उपाय॥

धर्म स्वरूप युधिष्ठिर राजा ❋ ताते होय तुम्हारो काजा॥
पाँचौ बान्धव पाण्डु कुमारा ❋ सो जानौ शत पुत्र हमारा॥
वे पाँचौ तुव सेवा करिहैं ❋ आज्ञा तोरि सदा शिर धरिहैं॥
मोरे बचन सत्य सुनु राजा ❋ तुम्हरे कोचिते पाण्डु अकाजा॥
राखहु नृपति आपने पासा ❋ दास भाव मन करै हुलासा॥
पाण्डव केर करौ कल्याना ❋ सुनि तब राजा करै बखाना॥
ब्याश मुनीश्वर अग्र बिधाना ❋ सुनो सबै तुम अब दै काना॥
पुत्र शोक तनु जरै हमारा ❋ धीरज धरों सो कौन प्रकारा॥
तौ तुव हेतु बात हम माना ❋ पुत्र शोक त्यागे हम जाना॥
यहि प्रकार शान्तन नृप भयऊ ❋ तबहिं ब्यास ऋषितपहित गयऊ॥
शीतल जल राजा को दीन्हा ❋ ब्यास बचन सुनि धीरज कीन्हा॥

दोहा—राजा को समुझाइकै, भे मुनि अन्तर्द्धान।
ब्यास बचनतें अन्धकहँ, मनमें उपजे ज्ञान॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वभाषासबलसिंहकृते व्यासअन्ध शोक निवारणोनामप्रथमोऽध्यायः॥१॥

सुनु राजा तब संजय कहई ❋ दोउ कर जोरि चरण गहिरहई॥
कछुक निवेदन अहै हमारा ❋ आज्ञा यद्यपि देहु भुवारा॥
गन्धारी कहँ बात सुनावो ❋ अन्तःपुर में खबरि जनावो॥
राजा सुनत दीर्घ लै श्वासा ❋ मूर्च्छित गात भूमि परकासा॥
तबहीं बिदुर उठायो राजहि ❋ रोदन काह करौ बे काजहि॥
तब धृतराष्ट्र कह्यउ समुझाई ❋ आनु बिदुर सब स्त्री जाई॥
बधुन समेत संग गन्धारी ❋ सब लावहु यह कहा बिचारी॥
चलौ संग तुमहूँ हम जैहैं ❋ सबही को अबहीं लै ऐहैं॥
यह कहि रथहि चढ़े तब राजा ❋ चले बधुन के आनहि काजा॥
गये तुरत तब महल मँझारा ❋ महा शोकते अन्ध भुवारा॥

दोहा—महादुखित रोदन करत, अन्तःपुरह प्रवेश ।
सब जूझ कुरुक्षेत्र महँ, सबहुन सुना सँदेश ॥

रोदन करत भयो आच्छाता ❋ मानो परी बज्र की घाता ॥
घर घर रुदन नगर में ठयऊ ❋ नर नारी सब रोवत भयऊ ॥
आंखिन जे देखी नहिं नारी ❋ परी भूमि लोटैं सुकुमारी ॥
बिकलवन्त रोवैं सब नारी ❋ छूटे केश न देह सँभारी ॥
एक एक पट पहिरे अहईं ❋ राजबधू स्त्री जे रहईं ॥
घरते बाहर चलीं पुकारी ❋ बिकल सबै कुरुक्षेत्र सिधारी ॥
गृह ते चलीं पुकारत जाईं ❋ मनहुँ सिंहिनी पतिन गँवाईं ॥
एक को गहे एक धरि रोवै ❋ एक को हाथ हाथ पर जोवै ॥
कन्या पुत्र गोदते डारहिं ❋ परी भूमि में सबहिं पुकारहिं ॥
कञ्चन पुतरी मनहुँ सँभारी ❋ रोवत लोटत भूमि मँझारी ॥

दोहा—आरत नाद नगर महँ, सबै बधू अनाथ ।
सबै बधू तहँ रोवतीं, धरे हाथ पर हाथ ॥

सासु श्वशुर सब एकहि साथा ❋ रोवहिं सबै धुनैं महि माथा ॥
चलि चलि नगर के बाहर तहँवाँ ❋ भयो युद्ध कुरुखेतहि जहँवाँ ॥
सहित अन्ध नृप औ गन्धारी ❋ आईं सब कुरुखेतहि झारी ॥
धृतराष्ट्रक तब देखन पाये ❋ तीनहु बीरन बचन सुनाये ॥
कृप कृतबर्मा द्रोण कुमारा ❋ महाप्रबल तीनों सरदारा ॥
राजा ते रोवत यह कहई ❋ बचन न आव नयन जल बहई ॥
महायुद्ध कीन्हेउ कुरु राजन ❋ बचे न कोउ सुनिये महराजन ॥
हम तीनों भारत में रहेऊ ❋ राजा सुनहु सत्य हम कहेऊ ॥
तीनों तब बोधत गन्धारी ❋ तजौ शोच सुनि बात हमारी ॥
जाना तुम्हैं क्रोध मं राई ❋ तबहिं लोहकर भीम बनाई ॥
क्रोध तजौ राजा परमाना ❋ पाण्डव तनय पुत्र करि जाना ॥
धर्मज के दुख देखु बिचारी ❋ तुम्हरे पुत्र दीन्ह दुख भारी ॥

ब्यास बिदुर भीषम समुझाये ❀ बहुप्रकार हम ताहि बुझाये ॥
काहू कर कहा नहिं माना ❀ हठकर कीन्हेउ रण मैदाना ॥
तुम सब जानत हौ सज्ञाना ❀ कहा कहों भाषत भगवाना ॥
तुम्हरे चित्त दया नहिं आई ❀ पाये बहु दुख पांचौ भाई ॥
पांच गाँउ तुमहूँ न दिवाये ❀ अपने पुत्रहि नहिं समुझाये ॥

दोहा—महादुःख सहि पाण्डवन, तब कीन्हों यह कर्म ।
मारन चाहौ भीम को, काह कहौ तुम धर्म ॥

कृष्ण बचन सुनि अन्धभुवारा ❀ कहे सुमति करि हृदय बिचारा ॥
बड़े भाग ते भीम बचाये ❀ धन्य कृष्ण अन्धहि समुझाये ॥
क्रोध सकल अब गयो हमारा ❀ महा कृपा मैं पाण्डुकुमारा ॥
पुत्र सकल रण जुझे हमारा ❀ महाशोक भा नन्दकुमारा ॥
तब जानेउ छूटेउ मन क्रोधहि ❀ परशहि अङ्ग पाण्डवन योधहि ॥
धर्मराज अरु भीम जुझारा ❀ पारथ सहदेव नकुल कुमारा ॥
सबहि अन्ध चरणन लपटाने ❀ तजिके क्रोध दया बहु माने ॥
पाण्डव पुत्र महा अज्ञाना ❀ आपन पुत्र सत्य करि जाना ॥
ऐसे पुत्रन शोक मिटाये ❀ प्रेम हर्ष तब पाण्डव पाये ॥

दोहा—धृतराष्ट्र को पराशिकै, पुत्र सुशोक मिटाइ ।
तब पांचौ पाण्डव बहुरि, गन्धारी पहँ जाइ ॥

गन्धारी पहँ कीन्ह पयाना ❀ आइ ब्यासमुनि तहां तुलाना ॥
पुत्र शोक गन्धारी अहई ❀ शाप देन पाण्डव को चहई ॥
पट्टा बांधे है दोउ नैनहिं ❀ तहां ब्यास भाषे यह बैनहिं ॥
बचन हमार बेद परमाना ❀ तू आगे मैं करों बखाना ॥
शान्त होहु सब दुखन मिटाई ❀ तुव सेवा करैं पांचौ भाई ॥
जात युद्ध दुर्योधन राऊ ❀ आज्ञा लै नहिं परशेउ पाऊ ॥
तब तुम्हरे मुख आइ न बाता ❀ धर्मज संजय पाप निपाता ॥
इतनी बात पुत्र सन भाषा ❀ पूरण भयो धर्म अभिलाषा ॥

बचन तुम्हार जक्त महँ टरई ❀ तौ रबि चन्द्र उदय नहिं करई ॥
सोई बचन भयो परमाना ❀ बिरथै धर्म कुकर्म नशाना ॥

दोहा—क्रोध क्षमा करु दोव तुव, कहेउ ब्यास समुझाइ ।
धर्म बृद्धि क्षय पाप की, यह सुनो मन लाइ ॥

ब्यास बचन सुनिकै गन्धारी ❀ तज्यो क्रोध तब कहेउ बिचारी ॥
ठढ़े पांच बन्धु भगवाना ❀ कहेउ ब्यास गन्धारि बखाना ॥
जो कछु ब्यास कहत हैं बानी ❀ बेद प्रमाण सत्य हम जानी ॥
पांचो पुत्र परम रिस नाहीं ❀ सुत को शोक भयो मनमाहीं ॥
जेहि सम कुन्ती जननी तासू ❀ तैसे हमैं देखि परगासू ॥
कुरुपति शकुनी करणहु चारी ❀ पापी सब भूप संहारी ॥
पाण्डुपुत्र पापहि मन दीन्हां ❀ जानु भङ्ग दुर्योधन कीन्हां ॥
नाभो हेठ दाग पर हारा ❀ ताते मनुभा क्रोध हमारा ॥
पापी भीम जानु में मारा ❀ सुनत त्रास भयो पाण्डु कुमारा ॥
मन महँ त्रास हाथ तब जोरे ❀ मातन कहो दोष कह मोरे ॥

दोहा—सबै बीर संहारिकै, बाच्यो एक भुवार ।
ताहि न मारैं जननि हम, निष्फल युद्ध हमार ॥

उनते जीति न सकेहु भुवारा ❀ पाप कपट करिकै हम मारा ॥
अरु भाई कर दोष बिचारी ❀ ताते जानु भङ्ग करि डारी ॥
जा दिन सभा द्रौपदी आनी ❀ जानु देखायो सो अज्ञानी ॥
ता दिन हमहु प्रतिज्ञा लीन्हा ❀ जानु भङ्ग ता कारण कीन्हा ॥
राजा बिनु जीते ते माई ❀ केहि प्रकार हम पृथ्वी पाई ॥
अन्तहु पांच गाउँ हम मांगे ❀ दीन्हों नहां गर्ब मन पागे ॥
सबहुँ न मानी बात भुवारा ❀ कहु जननी का दोष हमारा ॥
ता कारण नहिं धर्म बिचारा ❀ जस करि जाना तस हम मारा ॥
अपने कर्म भयो संहारा ❀ नाहिन सुत कछु दोष तुम्हारा ॥
यहु दुख मोहिं दीन्ह करतारा ❀ धर्मराज अस सुत रण मारा ॥

दोहा—नकुल साथ दुश्शासनहिं, लरे प्रथम मैदान ।
तुम गहि भुजा उखारेहु, यहै बड़ो अपमान ॥
पाछे भीम कह्यउ समुझाई ❋ बिना दोष कीन्हों नहिं माई ॥
रजस्वला जो द्रौपदी रानी ❋ गहि कर केश सभा महँ आनी ॥
एक बस्त्र सोउ खैंचके लीन्हा ❋ तहँ माता हमहूँ प्रण कीन्हा ॥
भुजा उखारों जबहिं तुम्हारी ❋ पुरै प्रतिज्ञा तबहिं हमारी ॥
क्षत्री धर्म प्रतिज्ञा कीन्हा ❋ ताते भुज उखारि मैं लीन्हा ॥
याते जननी दोष हमारा ❋ क्षमा करो मैं शरण तुम्हारा ॥
तुम जननी मन आनेहु आना ❋ हौं मैं जानत कुन्ति समाना ॥
तुम जननी हो बड़ो हमारी ❋ कृपा करहु अपराध बिसारी ॥
मधुर बचन तब भीम सुनाये ❋ ऐसे मातहिं शान्त कराये ॥
भीम तु क्रोध तज्यउ तब रानी ❋ परम हर्ष भयो शारँगपानी ॥
दोहा—क्रोध शान्त देवी भई, भीमबिनयसुनिकान ।
तब गन्धारीशान्तिकरि, कहा सुनो सज्ञान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्त्रीपर्वगन्धारी संकोपशान्तिकरणन्नामद्वितीयोऽध्यायः॥२॥

तब गन्धारी कह्यउ बुझाई ❋ कहँ स्त्री धर्म युधिष्ठिर राई ॥
सुनत त्रासकांपे नरनाथा ❋ ठाढ़े भये जोरि कर हाथा ॥
बोले बचन त्रास भइ भारी ❋ जननी सुनियो बात हमारी ॥
हम ते भा सब बंश सँहारा ❋ जननी आयों शरण तुम्हारा ॥
शाप योग मैं माता नाहीं ❋ सहै शाप तुव को जग माहीं ॥
धिग जीवन है जक्त हमारा ❋ अपने हाथ बन्धु संहारा ॥
देवी सुनत भयो मन धीरा ❋ दीन बचन भाषे नृप बीरा ॥
प्रति उत्तर तब कछु न दीन्हा ❋ मन का दुख प्रकाश नहिं कीन्हा ॥
दोहा—तब माता धीरज धरेउ, नृपति बिनय कह बैन ।
तीन बन्धु देवी कहै, हम नहिं देखे नैन ॥
अर्जुन सहदेव नकुल कुमारा ❋ सुनत बचन तब भयो खँभारा ॥

हरिके पाछे पारथ जाई ❋ भागि दुरे तब दूनों भाई ॥
तीनौ हरिके पाछे गयऊ ❋ शाप त्रास ते आतुर भयऊ ॥
एक घरी सबहीं चुप रह्यऊ ❋ क्रोध शान्त गन्धारी कह्यऊ ॥
पुत्र आउ अब निकट हमारा ❋ काहे कीजै त्रास कुमारा ॥
अपनो हुकुम करौ अब जाई ❋ धर्म पुत्र तुम पांचौ भाई ॥
देवी क्रोध तज्यउ परमाना ❋ पाण्डव शाप भयो परित्राना ॥
गन्धारी तब बोली बाता ❋ आनौ कुन्ती शत्रु अजाता ॥
पांचा बान्धव कुन्ती लाये ❋ सबही मिलि कुरुखेत सिधाये ॥

दो०गन्धारी कुन्ती सहित, पांच बन्धु भगवान ।
युद्धभूमि तब सबै जन, देखत ठाढ़ निदान ॥

तहँ शत बधू रूप उजियारी ❋ मानहुँ चन्द्रकला द्युतिधारी ॥
अपने अपने कन्त उठाये ❋ रोदन करैं सबै बिलखाये ॥
मनहुँ मृगी शिशु यूथ बिहाई ❋ रोदन करैं सबै बिलखाई ॥
युद्धभूमि देखी भयकारा ❋ देखे बीर अनेक जुझारा ॥
कुण्डल नाना रतन अपोरा ❋ महारूप ते परे भुवारा ॥
रथन छत्र अरु दण्ड अपारा ❋ पूरिरहेउ रणभूमि मँझारा ॥
बसन अस्त्र बहुतक तहँ देखे ❋ नाना मुकुट रतनमय लेखे ॥
शोणित नदो बहत है ऐसी ❋ सरिता यम बैतरणी जैसी ॥
गज रथ अश्व मनुष्य अपारा ❋ बहेजात शोणित की धारा ॥
तीन तार शोणित गम्भीरा ❋ परे नृपति क्षत्री बलबीरा ॥

दो०—रोवत हैं सब त्रियागण, नानारूप अपार ।
आपन आपन कन्त को, रोदन करत पुकार ॥

काहू केर शीश है नाहीं ❋ काहू केर परे कटि बाहीं ॥
काहू केर दोउ भुज नाहीं ❋ काहुहि शूल घाव तन आहीं ॥
कोई [illegible]टे खड्ग ते आधा ❋ काहुहि परे भूमि पर कांधा ॥
काहू केर जांघ द्वौ काटे ❋ काहू केर हृदय में छांटे ॥

ऐसे परे बीर बहु तहईं ❀ भारत रणहि भूमि है जहईं ॥
काक गृध्र जम्बुक जहँ नाना ❀ अरु दुर्गन्ध बास है आना ॥
बहुत रूप पक्षी गण आये ❀ मांस खाइ आनन्द बढ़ाये ॥
प्रेत भूत बैताल अपारा ❀ नाचै योगिनि ताल सँभारा ॥
नचैं कबन्ध देत करतारी ❀ योगिनि डाकिनि करैं धमारी ॥

दो०—क्रोधवन्त धनु बाण लै, कोई युद्ध प्रकाश।
उठे कबन्ध रणखेत महँ, प्रेत कराहिं सब हास ॥

कोइ पति कहि कोइ कहै कुमारा ❀ कोई बन्धु करि करै पुकारा ॥
भयो महारण आरत शोरा ❀ रोदन भयो महाघन घोरा ॥
रोवहि शतहु बधू बिलखानी ❀ महाबिकल दुर्योधन रानी ॥
सो कहँ लग मैं करहुँ उचारा ❀ भयो रुदन जहँ शब्द अपारा ॥
हा हा कन्त प्राणपति राजा ❀ जाको यश सब जगत बिराजा ॥
बासुक लक्ष्मी कन्ध नृपाला ❀ करैं सेवा लाखन भूपाला ॥
छत्रहि छत्र रहत जग छाई ❀ सेवा करन आवत बहुराई ॥
रतन सिंहासन पाट तुम्हारा ❀ नाम तुम्हार ज्ञान संसारा ॥
रतन मुकुट आलंकृत नाना ❀ रूप देखिकै काम लजाना ॥
अधिक सुन्दरी तुम्हरी रानी ❀ कर्मबश्य यह गति भै आनी ॥

दोहा—अपने अपने कहैं सुन्दरी, शतबान्धवकीनारि।
बहुबिलापकहिजातनाहिं, रोवहिं शीश उघारि ॥

लखि गन्धारी भई अधीरा ❀ देख्यो यह कारण यदुबीरा ॥
सकल बधू रोवतीं हमारी ❀ तुमहीं सब अनाथ करिडारी ॥
जो सुन्दरि मैं तुमहिं गनाहीं ❀ भईं अनाथ रोवत सब आहीं ॥
राजा एक करै सुत सेवा ❀ ताकी यह गति कीन्ह्यों भेवा ॥
जा तन अतर सुगन्ध सोहाई ❀ तौन शरीर गृध्र खग खाई ॥
यात्रा समय पुत्र सन भाखा ❀ बचन हमार राउ नहिं राखा ॥
ताहि दोष नहिं नन्द कुमारा ❀ सबै पराक्रम आहि तुम्हारा ॥

जूझे सो सुत रह्यउ न कोई ❋ अन्धनृपति की का गति होई ॥
अस कहि रोवहिं ऊंच पुकारी ❋ ताहि देखि बोले बनवारी ॥
तुम्हरे सुत मम बचन न माना ❋ मोर कहा सो तृण सम जाना ॥

दोहा—भीषम द्रोण बुझाये, और बिदुर मुनि ब्यास॥
कहा न मान्यो काहु कर, कीन्ह्यो रण परगास

धृतराष्ट्रक तब बहुत बखाना ❋ इन कीन्ह्यो सबकर अपमाना ॥
पाण्डव बीर महाबल भारी ❋ हठिकै कुरुपति रणहि बिचारी ॥
अपने कर्मन भये बिनाशा ❋ नारायण यह बचन प्रकाशा ॥
सुनिकै बात कहत गन्धारी ❋ अपने कर्मन गो अपकारी ॥
दोष न काहू को मन धरेऊ ❋ सो बान्धव तोह संगहि मरेऊ ॥

दोहा—क्षात्रि धर्म उन करेउ रण, सबै बीर मैदान ॥
कुरुक्षेत्र तन त्यागिकै, सब चढ़ि गये बिमान॥

तब तीनउ जन कह्यो बुझाई ❋ सुनिये मातु परम सुख दाई ॥
शोक तजो न करो बिललापा ❋ गये स्वग सब कह संतापा ॥
भीम पाप कीन्ह्यउ बहुसङ्गा ❋ ताते हम कीन्हेउ रणरङ्गा ॥
मारे दल पाण्डव संहारा ❋ बधे द्रौपदी पञ्च कुमारा ॥
पाण्डव को सो पराभव दीन्हा ❋ राजा द्रुपद पुत्र बध कीन्हा ॥
अब आज्ञा दीजै नरनाहा ❋ जैये हमहूँ निज थल माहा ॥
बिदा माँगि तीनों तब गयऊ ❋ द्रोणी ब्यासाश्रम पगु धरेऊ ॥
कृप कृतबर्म द्वारका गयऊ ❋ कुरुक्षेत्र महँ सब जन रह्यऊ ॥
गये सबै रण भूमि मँझारा ❋ जहँ बहु बीर परे बिकरारा ॥
रोदन करैं तहाँ सब कोई ❋ बाम बिधाता काहु न होई ॥
भयो शोर तहँ आरत भारी ❋ एक बार शत बधू पुकारी ॥

दोहा—महाशोर कुरुक्षेत्र महँ, रोदन भयो अपार ।
नगर लोगकी नारि सब, रोवत करत पुकार॥

राजा धर्म सुनो यह पाये ❋ कुरुक्षेत्र धृतराष्ट्रक आये ॥
पाँचौं पाण्डव नन्दकुमारा ❋ कुरुक्षेत्र तुरतहिं पगु धारा ॥
प्रथमै धर्मराज गये आगे ❋ अन्ध नृपति के चरणन लागे ॥
महीं युधिष्ठिर पुत्र तुम्हारा ❋ मोरे दोष न करौ बिचारा ॥
आप पिता हम पुत्र तुम्हारा ❋ क्षमौ दोष जो भयो हमारा ॥
राज पाट सब अहै तुम्हारा ❋ हम सेवक समेत परिवारा ॥
बहु प्रकार तब अस्तुति कीन्हा ❋ तब धृतराष्ट्र शान्ति मन लीन्हा॥
अन्ध नृपति तब कह्यउ विचारी ❋ भीम सबै मम पुत्र सँहारी ॥
मिलनहेतु हमरी है आशा ❋ कपट बुद्धि मन में परगाशा ॥
भस्म करन चाहै मन माहीं ❋ तब कह कृष्ण भीम यहँ नाहीं॥

दोहा—कालिह आइकै भेंटिहैं, भीम तुमहिं नरनाह ।
चारौ बान्धव मिले तहँ, विनय बहुत करि ताह ॥

तब यह श्रीपति युक्ति उपायउ ❋ लोहे भीम तहाँ निर्मायउ ॥
भीमसेन कहँ राखि दुराई ❋ लोहे भीम अन्ध पहँ लाई ॥
ठाढ़ो भीम कहत यदुराई ❋ मिलौ हेतु करि कराठ लगाई ॥
नृपके कपट आहि मनु भाई ❋ मारौ भीमहिं दुख मिटिजाई ॥
कहो बात हिरदय महँ चाही ❋ पुत्रके शोक बिकल तन माही ॥
हर्षित क्रोध मिले तब राई ❋ मनहुँ परी दुखिया निधिपाई ॥
अयुत नाग को बल तनमाही ❋ क्रोधित भीमसेन को गाही ॥
मिलत लोह चूरण करिडारा ❋ पुहुमी माहिं परा कै छारा ॥
संजय हा हा करी पुकारा ❋ भीमसेन को करै सँहारा ॥
सबही हा हा शब्द पुकारा ❋ भयो मोह तब अन्ध भुवारा ॥
तब माया करि रोवन लागे ❋ भीम शोक हिरदय महँ पागे ॥

दो०—हाय भीम सुत राजा, बहुविधिकरतपुकार ।
शोकशान्तिजबहींभयो, श्रीपतिबचनउचार ॥

राजहि बात कहत यदुनाथा ❋ रोदन कहा करौ नरनाथा ॥

अहै भीम सुनियो हो राई ❋ धृतराष्ट्रक को कृष्ण बुझाई ॥
राजा कहत सुनहु बनवारी ❋ है सब रचना कृष्ण तुम्हारी ॥
सर्बमयी तुम हौ भगवाना ❋ तुमहीं देहु ज्ञान अज्ञाना ॥
वैसी बुद्धि तासु को दयऊ ❋ जाते शत बान्धव मरिगयऊ ॥
पाण्डव कह जीते पुरुषारथ ❋ भक्तहेतु कीन्ह्यउ तुम स्वारथ ॥
पाण्डव कुल के भयो उबारा ❋ कौरव बंश कीन्ह संहारा ॥
दिना अठारह अस रण रच्यऊ ❋ शत बान्धव महँ एक न बच्यऊ ॥
मोर बंश तुम कीन्ह सँहारा ❋ कृष्ण लीजिये शाप हमारा ॥
त्रिंशति षट संवत यदुराई ❋ तव कुल आपुस महँ कटिजाई ॥

दोहा—छपन कोटि यदुबंश है, पुत्र प्रपौत्र तुम्हार।
लेहु कृष्ण तुम शाप मम, एकहि दिन संहार॥

हँसिके कृष्ण कही यह बाता ❋ को अस है जग में सज्ञाता ॥
यदुबंशिन सों जीतन चहई ❋ कौन जगत में ऐसो अहई ॥
आपहि बंश होय अपकारा ❋ यद्यपि पायो शाप तुम्हारा ॥
पापी कुरुपति गयो सँहारा ❋ काह दोष धौं भयो हमारा ॥
हम जब गये हत्यन दरबारा ❋ पांच गांव मांगे भूपारा ॥
ग्राम देहि नहिं मारन चहई ❋ तब कुरुपतिसन भीषम कहई ॥
मोहिं शाप केहि कारण दीन्ह्यउ ❋ सहै जगतपति कहिबे लीन्ह्यउ ॥
सुनिकै लज्जित भै गन्धारी ❋ कृष्ण बचन सों शोक निवारी॥
पुत्र शोक छांड़ेउ गन्धारी ❋ तज्यो क्रोध तनु सुरति सँभारी॥
ऐसे सुनत शान्त सब भयऊ ❋ तबहीं कृष्ण हर्ष मन लयऊ ॥

दोहा—क्षमा क्रोध जबहीं भयो, अन्ध करूपतिराय ।
पाछे तहवाँ द्रौपदी, पुत्र शोक बहुपाय ॥

पांच पुत्र गये बधे हमारा ❋ बिलपै डारि भूमि मंझारा ॥
गन्धारी गहि हाथ उठाई ❋ लीन्ह बधू कहँ कण्ठ लगाई ॥
बहु प्रकार समुझावहिं बांनी ❋ भइ तब मानि द्रौपदी रानी ॥

सबै बधू लै कन्तन रोवत ❀ देवलोक सब सुरगण जोवत ॥
तरुण बयस सब ही हैं बाला ❀ प्रथम बयस अतिरूप बिशाला ॥
छूटे केश न देह सँभाला ❀ व्याकुल सकल महाबिकराला ॥
यह सब देखि परिहर्‍यो शोका ❀ पुत्र तुम्हार गये सुरलोका ॥
रोइ सुभद्रा सुतहि पुकारी ❀ पुत्रहि बिना धीर किमि धारी ॥
चक्रब्यूह युद्ध में बीत्यउ ❀ करण द्रोण बीरनते जीत्यउ ॥
ऐसो पुत्र जासु को मरई ❀ तासु जननि किमि धीरज धरई ॥

दोहा—कैसे जीवै मातु वह, और तासु की नारि ।
उत्रा रोवति लाज तजि, हा प्रीतम सुखकारि ॥

देख्यो बिस्मय श्री भगवन्ता ❀ रोवत पारथ शोच अनन्ता ॥
उत्रहि देखि सबै तहँ रोवत ❀ कुन्ती रानि बधू मुख जोवत ॥
सासु सुभद्रा कहि समुझावत ❀ उत्रा कहँ कर गहि बैठावत ॥
यहि प्रकार रोवत सब नारी ❀ कुन्ती मातु करैं मनुहारी ॥
ऐसे एक एक भइ धीरा ❀ शोक ते व्याकुल रहै शरीरा ॥
कुन्ती रानी औ गन्धारी ❀ कीन्ह बधुन को बहु मनुहारी ॥

दोहा—आरत नाद मिटा तब, बहुबहु धीर धराइ ।
सब मिलि त्यागहु शोक अब, कहा युधिष्ठिर राइ ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्त्रीपर्वणिकुरुपाण्डवविलापवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

आरतनाद शान्त जब भयऊ ❀ धृतराष्ट्रक राजा सों कह्यऊ ॥
सुनहु बात धर्मज सुत राजा ❀ अबनहिं शोच करन को काजा ॥
हरि की माया ते संसारा ❀ आवत जात न लागै बारा ॥
मरे बीर भारत मैदाना ❀ दानव हते देव जे नाना ॥
अष्टादश क्षौहिणि दल भारी ❀ भारत भूमि परे सब झारी ॥
द्रोण करण भगदत्त भुवारा ❀ और नृपति जे हते अपारा ॥
और नृपति जिनके नहिं कोई ❀ समगति करो सबन की सोई ॥
राजा कैसो करै उपाई ❀ दाह कर्म बीरन के आई ॥
सुनिकै बात युधिष्ठिर राजा ❀ लागे करन दाह कर काजा ॥

धर्मज भीम धनञ्जय बीरा ❀ और नकुल सहदेव रणधीरा ॥

दोहा—पांचौ बान्धव मिलि तहां, करैं दाह उपदेश ।
बड़े बड़े सरदार सब, क्षत्री बीर नरेश ॥

चन्दन अगर सहित घृत लीन्हे ❀ दाह कर्म सबही को कीन्हे ॥
पहले दुर्योधन शत भाई ❀ लषण कुँवर को दाह कराई ॥
भूमि गुप्त करि कुरुपति धारा ❀ बाहर काढ़ि कुँवर को जारा ॥
द्रोण बीर भगदत्त भुवारा ❀ और कलिङ्ग शूर बरियारा ॥
कर्ण बीर अँगारमति रानी ❀ तेत्र मांझ सत्ती भइ आनी ॥
और त्रिया जेहि सत मनमाना ❀ भई संग पति सती प्रमाना ॥
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा ❀ अभिमन्यु दाह करें तब काजा ॥
उत्रा सती होने को जाई ❀ कहैं कृष्ण तासो समुझाई ॥
तुम्हरे गर्भ पुत्र यक होई ❀ कुरु पाण्डव के सरबर सोई ॥
है दुइ मास गर्भ कहि भाषा ❀ बहु समुझाइ कृष्ण तेहि राखा ॥

दोहा—बहु प्रकार उत्रा कहँ, कह्यउ कृष्ण समुझाइ ।
दुहूँ बंश महँ एक पति, होइ गर्भ तुव आइ ॥

तब बिराट अरु द्रोपद राजा ❀ सोमदत्त के दाहन काजा ॥
अंशुमान कोदह्यो शरीरा ❀ चेकीतान दह्यो रणधीरा ॥
काशीराज शिखण्डी बीरा ❀ धृष्टद्युम्न का दह्यो शरीरा ॥
कैकरि और त्रिगर्त नरेशा ❀ दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा ॥
जे द्रुपदी के पांच कुमारा ❀ गति कीन्हा तब धर्म भुवारा ॥
है घटोत्कच भीम कुमारा ❀ और हलंबुष दानव बारा ॥
दाहन कर्म सबहि को कीन्हा ❀ क्षत्री बीर जहां लगि चीन्हा ॥
पाछे को जेतने असवारा ❀ अरु पायक जे भये सँहारा ॥
भारत महँ जूझे हैं जेते ❀ दाहकर्म धर्मज किये तेते ॥
धृतराष्ट्रक अरु सँग नरनाथा ❀ गये गङ्ग तट ब्राह्मण साथा ॥

दोहा—तर्पण अरु अस्नान करि, क्षत्री देव प्रमान ।
यहि प्रकार राजा कर, दाहन कर्म सिरान ॥

करि अस्नान नगर में आये ❀ तब कुन्ती पुत्रन समुझाये ॥
सुत सुपुत्र भाषहि संसारा ❀ सोइ कर्ण सुत हते हमारा ॥
कन्या कलंक भयो अवतारा ❀ सूर्यध्यान कीन्ह्यउ ज्यहि बारा ॥
ज्येष्ठ बन्धु सोइ करण तुम्हारा ❀ प्रेत कर्म तेहि करो भुवारा ॥
यह चरित्र राजै सुनि पाये ❀ हाय करण तुम कहाँ सिधाये ॥
भ्राता आजु बात सुनि पाये ❀ अनजाने रण तुमहि गिराये ॥
आगे माता नाहिं जनाये ❀ भाष्यो तब जब मारि गिराये ॥
मो कहँ शोक सिन्धु में डारेउ ❀ पहले माता नाहिं सँभारेउ ॥
तबहिं शाप माता कहँ दीन्हा ❀ तव गुणमातु कर्ण बध कीन्हा ॥
गुप्त कथा नारिन तन माहीं ❀ रहै कदापि कला उर नाहीं ॥

दोहा—महाशोक राजा हृदय, कर्णहिं हेतु बिलाप ।
ज्येष्ठ बन्धु बधकीन्हेउ, भयो महा बड़ पाप ॥

कर्ण बीर के कर्महिं कीन्हे ❀ बेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे ॥
है बृषकेतु जो कर्ण कुमारा ❀ कर्म पिता के करै सँभारा ॥
औरौ ज्ञाति सबै परिवारा ❀ कीन्हे कर्म वेद व्यवहारा ॥
तर्पण ज्ञान गङ्ग महँ कीन्हा ❀ पिण्डदान तब दशदश दीन्हो ॥
यह कीरति जल में निर्वाहा ❀ पुनि बाहर आये नरनाहा ॥
क्रिया कर्म सबके हित कीन्ह्यउ ❀ बहुत दान बिप्रन कहँ दीन्ह्यउ ॥
बिदुर और धृतराष्ट्र भुआरा ❀ पांचो पाण्डव नन्दकुमारा ॥
गृहमें गये सबै यक साथा ❀ पाण्डव सङ्ग आप यदुनाथा ॥
रहे गेह महँ सब जन आई ❀ कुन्ती अरु गन्धारी माई ॥
सहित द्रौपदी गृह महँ जाई ❀ चिन्तावन्त धर्मसुत राई ॥

दोहा—ज्ञातिबन्धु को शोक है, धर्मराज मनमाह ।
दुख पावत हैं हृदय महँ, पाण्डव पति नरनाह ॥

यहि अंतर तहँ सब मुनि आये ❀ पाराशर तब हर्षि सिधाये ॥
नारद मुनि आये पुनि तहँवां ❀ सनक सनन्दनहू गे जहँवां ॥
व्यास कपिल अरुऋषिगण नाना ❀ मुनि वशिष्ठ तहँ कियो पयाना ॥
ऋषि जमदग्नि संग सब आये ❀ धर्मराज तब दर्शन पाये ॥
पांचों बान्धव बैठे जहँवा ❀ कुरुनृप और बिदुर हैं तहँवां ॥
बन्धु शोकते धर्म शरीरा ❀ नयन स्रवत जल बहु दुःखपोरा ॥
राज पाट हित बान्धव मारा ❀ महाशोक महँ धर्म भुवारा ॥
रोदन कर तहँ धर्म नरेशा ❀ बन्धु शोक तन भयो प्रवेशा ॥
तबहीं व्यास सिखावन लागे ❀ राजनीति धर्मज के आगे ॥

दो०—बहु प्रकार समुझायकै, धीर धरायो व्यास ।
कृष्ण समेत बन्धु सब, बुद्धि चक्षु हैं पास ॥

सुर अरु असुर दनुज नर दारा ❀ बन्धु बन्धु ते बैर सँभारा ॥
सर्प गरुड़ बान्धव परमाना ❀ सदा युद्ध ते करैं निदाना ॥
सदा सों यहै बात चलिआई ❀ तुम कह शोच करत हो राई ॥
जन्म मृत्यु होत परमाना ❀ हरिमाया काहू नहिं जाना ॥
तीनों रूप त्रिगुण अवतारा ❀ सिरजै पालैं करैं सँहारा ॥
जनमत संग मृत्यु तो आवा ❀ मायारूप गर्भ नर पावा ॥
मरिहैं सबै न बचिहै कोई ❀ जेतने देव दैत्य नर सोई ॥
मरहिं देव अरु इन्द्र भुआरा ❀ मरहिं अष्टकुल नागपसारा ॥
मरिहैं धरती और अकाशा ❀ मरिहैं मेघ नीर परगाशा ॥
मरिहैं चन्द्र सूर्य अरु तारा ❀ मरिहैं ब्रह्मऋषिहि संसारा ॥

दो०—शोक परिहरौ धर्मसुत, देखहु ज्ञान विचार ।
जो जन्मा सो सब मरा, मृत्युलोक संसार ॥

जेतक भये मही अवतारा ❀ कहां गये वे सबै भुवारा ॥
केते भये कहत नहिं आवै ❀ अन्तकाल सब मृत्युहि पावै ॥
राजा रङ्क मरैं सब भारी ❀ मरिहैं महाबीर धनुधारी ॥

मृत्युहि लोक नाम यहि अहई ❀ जो कोइ जन्म आइकै गहई ॥
मरिहैं सबै अमर नहिं कोई ❀ केवल सुयश रहै जग सोई ॥
माता पिता बन्धु सुत भाई ❀ जीवत भरि माया अधिकाई ॥
अन्तकाल एको नहिं अहई ❀ अपनो धर्म आप सँग रहई ॥
धर्म कर्म जो जाको जैसा ❀ ताको फल पावै सो तैसा ॥
ब्यास कहैं राजहि समुझाई ❀ शोक करो क्यहि कारण राई ॥
एक ब्रह्म कै सब यह माया ❀ देव असुर मानुष्य अमाया ॥

दो०—राजा शोक न करौ तुम, कहेउ ब्यास समुझाइ।
एक धर्म साथी अहै, और संग नहिं जाइ ॥

जैसे एक चन्द्र नभ माहीं ❀ कोटि कला सम प्रकटै ताहीं ॥
सर्ब मध्य देखौं सोइ चन्दा ❀ एको अङ्ग अहै सब बन्दा ॥
नाना घट माया बिस्तारा ❀ सुत पितु बन्धु मातु परिवारा ॥
यक घट नाश जबहिं ह्वै जाई ❀ ताको जल सब भूमि समाई ॥
तजिकै रूप पुरुष अस जाई ❀ चन्द्रज्योति जिमि चन्द्र समाई ॥

दो०—घट बिनाश ते पुरुष तब, लीन होइ तहँ जाइ।
प्राकृत माया त्रिगुण जो, सो भरमावत आइ ॥

यहिप्रकार मुनिब्यास बुझायो ❀ धर्मराज को धीरज आयो ॥
भारत कथा पुनीत प्रतापा ❀ नाशै सकल देह कर पापा ॥
आवै मति दुर्मति मिटिजाई ❀ सत्यवन्त ते जानत राई ॥
कहैं कथा मुनि बैशम्पायन ❀ जनमेजय सुनिये सुखदायन ॥
स्त्री पर्व यहै बिस्तारा ❀ अब अभिषेक सुनौ भुवपारा ॥

दो०—क्षत्री सुनत जे शूरमा, मूरुख ज्ञान प्रकास।
श्रवण पान जे करत नर, छूटत यमकी त्रास ॥

इति श्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वभाषासबलसिंहचौहानभाषाकृते व्यासयुधिष्ठिरसंवादेधर्मउपदेशवर्णनो नामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

इति स्त्रीपर्व समाप्तम् ॥

महाभारत

शान्तिपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण
कीरीतिपरदोहा-चौपाई, में सरलतापूर्वकवर्णितहै।

जिसमें

श्रीभीष्मपितामहजीने राजा युधिष्ठिर आदि पाँचो भाइयों व श्रीकृष्णचन्द्र जी व
कृष्णद्वैपायन ओर अच्छे २ श्रेष्ठ ऋषि मुनियों को ज्ञानोपदेश किया और
उत्तरायण सूर्य्य प्राप्त होने पर अपने शरीर को त्याग के स्वर्ग को गये
यही कथा उत्तम भाँति से बर्णन की गई है।

काशी

बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा-
भार्गव भूषण प्रेस काशी में मुद्रित ॥

* श्रीगणेशाय नमः *

अथ महाभारत शान्तिपर्व ॥

राजा सुनो शान्ति बिस्तारा ❀ करत राज श्रीधर्मभुआरा ॥
ज्ञातिशोक ते धर्म भुआरा ❀ भावत नहीं राज संसारा ॥
दिन दिन महाशोच तब माना ❀ चौथेपन का कीन पयाना ॥
शत बन्धुनरु द्रोण गुरु मारा ❀ रोवहि धर्म दीर्घ जलधारा ॥
कर्ण बन्धु सोऊ बध कीना ❀ भीषम तो शरशय्या लीना ॥
यहै शोच तो राजा करहो ❀ दिन २ तनु दुःखित दुखपरही ॥
जेही अवसर मुनि सब आये ❀ नारद और बशिष्ठ सिधाये ॥
मार्कण्डेय कपिल अरु भृगुमुनि ❀ जमदग्नी औरो मुनोशगुनि ॥
बृहदश्व लोमश सज्ञानो ❀ सब मन्त्रागण बिदुर प्रमानी ॥

दोहा–श्री बलभद्र नारायण, पांचौ बन्धु भुआर ।
बैठे सबै सभा बिषे, सुनो परीक्षित बार ॥

सबै करत राजा से बाता ❀ श्रीबलहरि मुनिऋषि सख्याता ॥
परजा भाग धर्मसुत राजा ❀ पुरी हस्तिना शोभित साजा ॥
बड़े भाग कुरु सब संहारे ❀ परम सुःखकर राज भुआरे ॥
जस संजय नृप शोक गमाये ❀ नारद सबको कहि समुझाये ॥
वेदव्यास ऋषी बहु ज्ञानी ❀ धर्मराज से कहे बखानी ॥
ज्ञानतन्त्र सुनहू नृप बाता ❀ चलो बेगि भीषम पे ताता ॥
ब्यास बचन सुनिकै नरनाथा ❀ चले नृपति हरिबल हैं साथा ॥
औरो सबै मुनी सँग लाये ❀ कुरुक्षेत्र में पहुँचे आये ॥
जहँ शरशय्या भीषम पाये ❀ बैठे सबै तहां मन लाये ॥
शरशय्या भीषम कहँ देखा ❀ महा शोक बाढ्यो नृप पेखा ॥

दोहा–रोदन धर्मराज कर, देखि पितामह नैन ।
हिरदय शोक प्रकाशिकै, कहै लाग नृप बैन ॥

बालक काल पिता के हीना ❀ तब प्रतिपालन तुमहीं कीना ॥
मोसम पापी मुग्ध न आना ❀ भीषम मैं मारे अज्ञाना ॥
सत्य बचन हमको गुरु जाना ❀ मैं कर पाप असत्य बखाना ॥
जेठ बन्धु कर्णहि रण मारा ❀ अस्त्रहीन पारथ संहारा ॥
मोसम पापी जगत न कोई ❀ भये नहीं नहिं होवे कोई ॥
पांच पुत्र द्रुपदी के गयऊ ❀ औ अभिमनु रणमें बध भयऊ ॥
कौन सुःख है राज हमारा ❀ अल्प काल पातक का टारा ॥
जाऊं बनहिं तजौं मैं राजा ❀ बनोबास कुमती के काजा ॥
शोक अनल ते दहै शरीरा ❀ महाशोक से कह नृप बीरा ॥

दोहा—राजा व्याकुल शोक है, जगतबन्धु दुख ताप ।
कर्म लिखा नहिं जानहि, सहब कहा संताप ॥

कहही बात ब्यास समुझाई ❀ समाधान ह्वै सुन अब राई ॥
बाल युवा बृद्धहु किन होई ❀ अन्तकाल मरते सब कोई ॥
दुख सुख है यक सम संसारा ❀ काल सर्व संहारन हारा ॥
रोगी मरै बैद्य मरि जाई ❀ स्त्री पुरुष मरैं सब राई ॥
राजा प्रजा गुणी सब मरैं ❀ देवरु दैत्य जन्म सब धरैं ॥
मरिहै गँधरब यक्ष अपारा ❀ चाँद सूर्य मरिहैं अवतारा ॥
सिध संन्यासी मरिहैं भारी ❀ मरिहैं राजा रङ्क भिखारी ॥
जहँवा जन्म मृत्यु है तहँवा ❀ दुख सुख सब एकै सँग आवा ॥
यहै बात जब भीषम सुना ❀ सुनतहि हिरदय में तब गुना ॥

दोहा—शरशय्या महँ भीष्म कह, सुनो धर्म नरनाह ।
जहँ संयोग बियोग तहँ, यही भेद जो आह ॥

पानी बिम्ब देख संसारा ❀ नाश होत नहिं लागे बारा ॥
होतव्यता जो कर कर्तारा ❀ कहा तुम्हार रहब संसारा ॥
जन्मे बीर रूप जग जाना ❀ होती मीच पतङ्ग समाना ॥
रात्रो दिन षटऋतु परमाना ❀ रचना रचते विविध बिधाना ॥

पुनि पुनि आय करै पैसारा ❀ आवत जात न लागहिं बारा ॥
कहैं ब्यास सुनहू नृप सोई ❀ आशा छोंड़ि सकत नहिं जोई ॥
औषध बिद्या मन्त्र अपारा ❀ अस्त्र सेज औ बलि बिस्तारा ॥
घना कुटुम्ब बहुत बिस्तारा ❀ अन्तकाल को राखै पारा ॥
काहू केर पुत्र पितु नाहीं ❀ भार्या भगिनी मातु न आहीं ॥
जैसे पथिक चलै मग माहीं ❀ तैसे जक्त माय सब आहीं ॥
एकहि संग रहे परिवारा ❀ अन्तकाल को देखन हारा ॥

दोहा—कौन पन्थ के गवन है, पाव न कोई चाह ।
मोर मोर जो भाषता, सो माया हरि आह ॥

पुनि पुनि जन्म होत संसारा ❀ घरी रहउ जानौ संसारा ॥
जैसे कर्म जौन छल करई ❀ सो प्रकार जग भुगते फिरई ॥
मायाजाल कपट मन बन्दा ❀ सब घट पूरण बाल गोबिन्दा ॥
यहि से तेरे नाम इक धाई ❀ यज्ञ ध्यान मनसाफल पाई ॥
बिना भक्ति बिष्णुहि को देखा ❀ कोटि यज्ञ औ धर्म अलेखा ॥
पूर्वज पाप सोय फल पावै ❀ धर्म पन्थ से सो सुख पावै ॥
गङ्गा सुत तब कहत बखानी ❀ श्रुति इतिहास पुराण बखानी ॥
अत्री कहेउ जनक के पाहाँ ❀ जनक यज्ञशाला के माहाँ ॥

दोहा—स्वर्ग मृत्यु पाताल सब, सृजा प्रजापति ताहि ।
देव दैत्य नर नाग है, जन्मत बाढ़त ताहि ॥

मृत्यु नहीं जानै सब कोई ❀ पृथ्वी भारन ब्याकुल होई ॥
राय कहा परजापति ताहाँ ❀ पिंग भये भारत रणमाहाँ ॥
दिन दिन सब बाढ़ी परिजाना ❀ परजापति से प्रथम बखाना ॥
क्रोधरुद्र के नैन निहारा ❀ कन्या एक भई अवतारा ॥
ब्रह्मा पाँह कहे सब बाता ❀ आज्ञा कहौ कवन सख्याता ॥
सबै जक्त अब करौं सँहारा ❀ तबै प्रजापति कहा बिचारा ॥
मृत्युहि नाम प्रजापति भाखा ❀ अम्बु बृद्ध के को गुणराखा ॥
चौंसठ रोग तुम्हारे सङ्गा ❀ तव परिवार करौं गुण भङ्गा ॥

सूर्य बदन यम को परमाना ❀ परम अधर्म बिचारहु नाना ॥

दोहा– चित्रगुप्त सँग यम रहैं, मृत्युलोक संचार ।
सुन्दा गृह रथीर यम, करत जगत संहार ॥

दण्डअस्त्र तब ताको दीन्हा ❀ यही प्रकार प्रजापति कीन्हा ॥
शिव विद्याधर हैं परमाना ❀ गँधरब किन्नर सुर तब जाना ॥
मृत्यु पाय चल उत्तर द्वारा ❀ उपमा कौन कहै को पारा ॥
उत्तम द्वार मार्ग उजियारा ❀ सो सूरज नहिं तहाँ पसारा ॥
योगी सिध संन्यासी जेते ❀ पश्चिम द्वार जात हैं तेते ॥
पूर्व द्वार उत्तम अस्थाना ❀ तहाँ जायँ जो सुनो बखाना ॥
कन्या भृङ्गी अन्न को दाना ❀ पूर्व माहिं सो पावहिं जाना ॥
सत्यवन्त दाया परमाना ❀ अतिथि सेव परहित सनजाना ॥
देवास्थल पुष्कर जो निकरैं ❀ पूर्व द्वार से सब संचरैं ॥
तीनद्वार के भेद बखाना ❀ जौनकर्म करि जेहिदिशि जाना ॥

दोहा–उत्तम कथा प्रकाश किय, सुनो धर्म कर राव ।
जवन कर्म करता जवन, तहाँ तवन सो पाव ॥

अब सुन दक्षिण मार्ग भुवारा ❀ तहँ पर हैं चौरासी धारा ॥
रात्रि दिवस है तहँ अँधियारा ❀ सात लाख औ तीन हजारा ॥
हैं यमदूत तहाँ निहधोरा ❀ देखत सबै कुरूप शरीरा ॥
लोहदण्ड सब के करमाहीं ❀ वहै द्वार यम रूप कुआहीं ॥
पापी जीव तहाँ दुख पावैं ❀ राजा हम से कहत न आवैं ॥
बहै नदी बैतरनी ताहां ❀ रक्त मांस औ जल अोगाहा ॥
नाना कृमी बिकट शारीरा ❀ जल सरिता सोहै गम्भीरा ॥
तहँ जो जात सुनो सो काना ❀ भीषम भाषे शास्त्र प्रमाना ॥
परदारा परद्रव्य चोरावैं ❀ मिथ्या सदा पाप तेहि भावैं ॥
स्त्री ब्राह्मण गोहत्या करहीं ❀ मात पिता गुरु चित्त न धरहीं ॥

दोहा—नगर पापकर भज्जता, दुख देवै संसार।
गुरुजन ते हिंसा करै, तहाँ करत पैसार॥
इनको तो यमदुत लै जाई ❀ जहां धर्म यम राजा अहई॥
चित्रगुप्त तहँ करत विचारा ❀ जाको जस पावै संसारा॥
पावन शमन नदी गम्भीरा ❀ ताते दाहत विवश शरीरा॥
लोहदण्ड मारैं यम ताही ❀ ऐसे कष्ट देत बहु आही॥
ऐस प्रजापति सिर्जें ताही ❀ कर्मज फल सबभुगतैं जाही॥
सब विष्णुहि माया जो अहै ❀ नाना रूप भीष्म तो कहै॥
जन्मत संग मृत्यु अवतारा ❀ यहिसे शोच न करो भुवारा॥
कर्म के बश नर पाव कलेशा ❀ छुटैं न कोटिकल्प परवेशा॥
श्रीकृष्णपद चिन्तन कर ❀ कर्म बन्ध से सो उद्धरै॥

दोहा—याहि विचारो भरते, तजो शोक संताप।
श्रीपति कर्ता सबन के, नाना पुण्यरु पाप॥
ताते सब कर्ता हरी, करन करावन सोय।
इन्हीं चरणलवलावहो, इनसे और न कोय॥

इति श्री महाभारतेभाषाशान्तिपर्वभीष्मदर्शधर्मराजा
पावनोनामप्रथमोऽध्यायः॥ १॥

पुनि भीषम भाष्यो सुन राजा ❀ तजो शोक शत करहू काजा॥
सो जस राजा कथा सँचारा ❀ भरत नाम राजा संसारा॥
हरि बिन और एक नहिं जाना ❀ महाराज भक्ती भगवाना॥
राज्य कियो बहुदिन बिस्तारा ❀ बन्धुराज्य दे बन पगु धारा॥
कियो प्रवेश महाबन नृपती ❀ निरत भक्तिपथ कृष्णकिगती॥
एक दिवस अस्नान के काजा ❀ सरवर माँह गये तब राजा॥
गर्भवती हरिणी यक आई ❀ नीर पियन को जल में जाई॥
पूरण गर्भ मृगी सो आहै ❀ माया बिष्णु सुनौ जो आहै॥
पीकर नीर चली शिर नाई ❀ प्रसव समय तो आय तुलाई॥

उदरपीर जो भई अपारा ❀ प्रसव भई सो सुनो भुवारा ॥
बालक एक नदी के तीरा ❀ राव चरित्र देख रणधीरा ॥
दोहा—विधि के रचना ऐसिहै, मृगी तजा तहँ प्रान।
देख भरत राजा तहाँ, सरमें करत अस्नान ॥
देख नृपति शिशु परा अनाथा ❀ तबहिं ताहि पाले नरनाथा ॥
तृण अरु नीर देत आहारा ❀ बहुत प्रीति के पाल भुआरा ॥
समय बिचार मृगा बन आये ❀ सुत समान तो पालहि राये ॥
कितने दिवस बीति तब गये ❀ यक दिन मृगा भागबन गये ॥
पाये सँग जो मृग के तहाँ ❀ रहे परम सुख सँगमें जहाँ ॥
राजा हृदय महादुख आना ❀ ढूढ़त नहिं पायो पछताना ॥
कवन लेगयो मोर कुरङ्गा ❀ ताके हेतु सदा मन भङ्गा ॥
कितने दिवस शोकमहँ गयऊ ❀ अन्तकाल राजा को भयऊ ॥
तब यमदूत गये लै ताहीं ❀ हिरण शोक हेतु मन माहीं ॥
दोहा—कै विचार तब धर्म नृप, दीन मृगा अवतार।
मृग स्वरूप में जो रहै, कौडलपुरी मँझार ॥
सहस लाख मुनिनेरे तो जाना ❀ कारण कहा एम भगवाना ॥
तुम चेतो माया अवतारा ❀ मृगारूप यह हेतु तुम्हारा ॥
पूरब बात भयो तब ज्ञाना ❀ जल तृणतजे किया नहिं पाना ॥
ऐसा शोक मृगा तज प्राना ❀ पाया तब दर्शन भगवाना ॥
आगे जन्म भये अवतारा ❀ तब सो राजहि भयो उधारा ॥
सगरे शोक काल के फासा ❀ ताते भूप करे हरि आसा ॥
हरता करता तारत हरि है ❀ तीनों लोक बखानत हरि है।
चारौ वेद प्रजापति धारा ❀ ध्यान धरे हरि पावन पारा ॥
शेष सहसमुख गुण जो गावै ❀ नारद कपिल सनातन ध्यावै ॥
मुनी करैं तप जा पद आशा ❀ करै अनन्त ब्रह्माण्ड प्रकाशा ॥
दोहा—सो हरिबिना सुजक्त महँ, दूसर नाहीं आन।
धर्म सत्य यह कहा हम, तौ अंग्रेत परमान ॥

सहस नाम ते धर्म न आना ❀ सहसनाम गाङ्गेय बखाना ॥
चारि बेद में सार जो आहै ❀ सहसनाम से पाप न राहै ॥
राम रमहि रामे रम रामा ❀ राम सहस्रन नाम समाना ॥
राजा स्वरूप व्याक भय नाहीं ❀ छूटे व्याध धर्म पद जाहीं ॥
करि संक्षेप बखाने नाना ❀ सहस नाम के महिमा आना ॥
नाम अनन्त अन्त को जाना ❀ एक नाम से पद निर्वाना ॥
पञ्च नाम से द्वादश नामा ❀ अष्टाविंश नाम है ज्ञाना ॥
सत्य नाम सहसन में जाना ❀ पुनि अनन्त को नाम बखाना ॥
परमतत्व अह नाम जो एका ❀ सुमिरहिं सन्त जो हृदय विवेका ॥
परम धर्म को सार है सोई ❀ नाम सहस्र पढ़े जो होई ॥

दोहा—राम कृष्ण रघुपति हरी, राघव राधा रवन।
विभु गोपाल शारंगधर, गोवर्द्धनधर जवन॥
रावणारि कंसारि हरि, भक्त बन्ध भगवान।
ध्यानकरौ मनजानिधरि, मनसाबाचा जान॥
सर्वसार जे जगपति, इतना नाम बखान।
नाम भजे पातक हरत, भूप सुनौ दै कान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

राजा सुनौ कथा तौ अहै ❀ पुनि गङ्गासुत राजहि कहै ॥
ब्राह्मण क्षत्री बैश्य सोहाई ❀ चौथे शूद्र बर्ण सुन राई ॥
गङ्गासुत तब कहैं बखानी ❀ इनके धर्म नीति सज्ञानी ॥
प्रथमहिं ब्रह्मकर्म सो जाना ❀ बिद्या बेद सहस्र प्रमाना ॥
त्रयसंध्या धारण नित ध्याना ❀ बेद प्रमाणहि जवन बखाना ॥
योग न जाप न औ अध्यापन ❀ उद्यापन औ धर्म परायन ॥
इत्यादि ब्रह्मबर्ण के धर्मा ❀ गङ्गासुत भाष्यो यह मर्मा ॥
ब्रह्मकर्म सब ब्रह्म सुजाना ❀ ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा परमाना ॥
सुन्दर जन्म जानु संसारा ❀ संस्कार से द्विज संचारा ॥

बेद अभ्यास विप्र सुजाना ❀ ब्रह्म जनम से ब्राह्मण जाना ॥

दोहा—सन्ध्यातर्पण विविधविधि, बेद पाठ परमान ।
परमकर्म यह बिप्रका, भीषमकहा बखान ॥

क्षत्री गो ब्राह्मण का पाले ❀ मन्त्री प्रीति शत्रु संहारे ॥
दुर्भिक्षा जु अन्न कर दाना ❀ गाढ़े शरण न जाय जो प्राना ॥
रण के शूर धर्म मन माना ❀ हैं क्षत्री जो धर्म बखाना ॥
बैश्य बणिज कृषि को संचारी ❀ द्विज बैष्णव पूजा अनुसारी ॥
सदा धर्म जो यहै बखाना ❀ चौगुण वर्ण धर्म जग जाना ॥
सुन्दर धर्म सुनै सब कोई ❀ तीन वर्ण को सेवत सोई ॥
आलस तजो भक्त भगवाना ❀ चौगुण वर्णरु धर्म बखाना ॥
आपन आपन राखहि धर्मा ❀ चार बर्ण के याही कर्मा ॥
सृष्टि होय है केहिन न सेवा ❀ त्यागै सत्य सुनहु नृप भेवा ॥
कै बीचार परै गृह माहीं ❀ तब तासू गृह भोजन खांहीं ॥
राजधर्म जो सुन बिस्तारा ❀ मिथ्या बाद दण्ड नहिं सारा ॥
धन्य प्रजा जो लोभ न करहो ❀ दानरु धर्म यज्ञ मन धरही ॥
जीति बाहुबल यह संसारा ❀ पालहु प्रजा पुत्र परकारा ॥
बचन प्रतिज्ञा अहै प्रमाना ❀ भूप यही नित पाल सुजाना ॥
मन्त्री दिश न धरै बिश्वासा ❀ प्रीति प्रतीति बचन परकासा ॥
गऊ ब्रह्म जो बिष्णु स्वरूपा ❀ पूजा करब एक मति भूपा ॥
तीन दिना कै सुनब पुराना ❀ राजधर्म सब सुनहु प्रमाना ॥

दोहा—देव दोष मिथ्या नहीं, रहही रैन सचेत ।
राजनीतिका धर्म अस, रिपुसे जीतब खेत ॥

रानी धर्म पती कर सेवा ❀ यह बृत्तान्त सुनहु जो भेवा ॥
सेवक धर्म पती सेवकाई ❀ बिनु बोले सबकर अधिकाई ॥
ताते धर्मज सब सुख पावै ❀ गृह द्वारा बिबाह करवावै ॥
दशहू अङ्ग गुरूका देई ❀ सेवक धर्म कहे पुनि तेई ॥

गृह को धर्म अभ्यागत पूजा ❋ अन्नदान से आन न दूजा ॥
बैष्णव धर्म यकान्तके पाऊ ❋ लीन ज्ञान परसंग उपाऊ ॥
लै संन्यास तपस्या करै ❋ भीषम राजा यह संचरै ॥
सर्वहि धर्मसार यतनाऊ ❋ अन्नदान औ सत्य स्वभाऊ ॥

दोहा—परहिंसा परकर्म तजि, दयावन्त हित होय ।
क्षुधार्थी अनदान दे, यहिसे धर्म न कोय ॥

गुरु भक्ती पर नाहीं भक्ती ❋ भक्ती बिना जात तनु अगती ॥
बिष्णु परे सुर और जु नाहीं ❋ गुरू बिष्णु सम कहिये ताहीं ॥
गङ्गा परे नदी नहि कोई ❋ एकादशि सम ब्रत नहिं होई ॥
बेद नाम जो साम प्रमाणा ❋ इन्द्रिय नाम न रूप प्रमाणा ॥
यह सब नाना शास्त्रक धर्मा ❋ ताको कहिये उत्तम कर्मा ॥
क्षत्री होय शोच का करहू ❋ ज्ञान हमार हृदय में धरहू ॥
रण में क्षत्री उपस्थित होई ❋ बन्धु पिता पुत्रहु नहिं कोई ॥
ताते शोच तजो परमाना ❋ राजा सुनिये करौं बखाना ॥
साहस रण क्षत्री को कामा ❋ भजो चरण तुम श्रीघनश्यामा ॥
हरिको चरण सदा मन लावो ❋ भवसागर तर निश्चय जावो ॥

दोहा—पिता बन्धु सुत क्षत्रिको, रणमें कौन बिचार ।
आपन धर्म जु आप सँग, भीषमकर उपचार ॥
धर्म एक सँग होत निज, और संग नाहिं कोय ।
यहिते वह मन राखिये, धर्म न छोड़ो सोय ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाछन्दकृतोशान्तिपर्व तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

बैशम्पायन कहैं बिचारा ❋ भीषम भाषे धर्म भुवारा ॥
ब्रतन शिरोमणि एकादशी ❋ तुलसी पुष्प तीर्थ बनरशी ॥
ताको राजा सुन बिस्तारा ❋ दुर्लभ जन्म जो कह संसारा ॥
एकादशि की महिमा याहै ❋ भीषम धर्मराज सों काहै ॥
दैत्य मुरासुर अति बल भारी ❋ ताते हरि माया संचारी ॥

युद्ध माहिं जीती नहिं पारा ❀ मुरा असुर दानव संहारा ॥
हरि को नाम मुरारी तबसे ❀ हरि बासर जु जन्म है तबसे ॥

दोहा—अनगिन माया बिष्णुकी, योगमाया संचार ।
एकादशि व्रत माहिमा, सो तो सुनौ भुवार ॥

अवधपुरी इक मङ्गल राजा ❀ बिष्णुस्वरूप करै सो साजा ॥
संभावती तासुकी रानी ❀ धर्म पुत्र गत शूर सुज्ञानी ॥
एकादशि व्रत सो संचारा ❀ ताको राजा सुनौ बिचारा ॥
नृप के पुष्प बाटिका आही ❀ तोरें पुष्प उर्बशी जाहीं ॥
मालाकार पती का दहै ❀ धर्म प्रमाण सभा तौ गहै ॥
राजा पहँ तौ बात जनाये ❀ तब राजा देखन को आये ॥
तब उर्बशि सब अर्थ सुनाये ❀ हमैं सुरपती यहाँ पठाये ॥
पुष्प हेतु आये तौ कामा ❀ पतिव्रतरत धर्महि के कामा ॥
एकादशि को पुराय जो चहिये ❀ तबहि बिमान अमरपुर जइये ॥
राजा पूछै सब व्यवहारा ❀ कहो भेद नाहीं संसारा ॥

दोहा—दशमी एकाहिबेर नृप, नियम करै आहार ।
एकादशिउपवास व्रत, शुचितनु रूपसबार ।

एकादशि व्रत रहै उपासा ❀ प्रात द्वादशी होत प्रकासा ॥
करि अस्नान अन्न दै दाना ❀ एकोत्तर सै सेर बखाना ॥
यहिके मांह छूट जो होई ❀ एकादशि निसरावा देई ॥
बिना पीत उछरंग न करै ❀ ताको पुराय सर्व को धरै ॥
ताको पुराय सो पावहि तबहीं ❀ जाय बिमान स्वर्ग को जबहीं ॥
तो राजा को जगमो नाहीं ❀ यहि प्रकार को जानत आहीं ॥
खोजत एक तु भई उपाई ❀ रजक एक नगरी में अहई ॥
तासु नारि सो रही कोहाई ❀ एकादशि को अन्न न खाई ॥
क्रोध बिबश सो रही उपासा ❀ व्रतपूरण द्वादशी प्रकासा ॥
तिन चरणन से छुये बिमाना ❀ तबहि बिमान तु स्वर्ग उड़ाना ॥

दोहा—यहगतिदेखत भूपमणि, एकादशि परमान ।
पुत्र समान प्रजापती, पालक रूप सज्ञान ।

दुखी दरिद्र कोइ पुर नाहीं ❀ धर्म वृद्ध सो राजा माहीं ॥
एकादशि बिन और न जाना ❀ और देव नहिं पूजत आना ॥
दशमी घर घर डोंडि बजाई ❀ कहै दूत सबकहँ हँकराई ॥
दशमी संयम कै उपहारा ❀ हरिबासर त्यागी संचारा ॥
एकादशी जागरण करै ❀ प्रात स्नान द्वादशी धरै ॥
करै अनेक अन्न जो दाना ❀ पुर में गृह प्रति करै बखाना ॥
ऐसी बात नगर संचारा ❀ गज बाजी नहिं पाव अहारा ॥
बृद्ध युवा पशु नर अरु नारी ❀ बालक दूध न दे थनहारी ॥
चारो बर्ण प्रजा जे रहै ❀ पशु अरु जीवजन्तु जो अहै ॥
पापक नगर नहीं लवलेशा ❀ ऐसा ब्रत सब नगर प्रवेशा ॥

दोहा—पशुश्वानादि गजादितक, और जीव चण्डार ।
मृत्यु समय प्राणी सबै, नहिंयमलोक संचार ॥

एकबार कौतुक तो भयऊ ❀ यक चराडाल मृत्यु जो भयऊ ॥
पापी महा रहा अपराधी ❀ यम के दूत चले लै बांधी ॥
बिष्णु दूत तात्तण तहँ धाये ❀ यमदूतन को दूर कराये ॥
बहु प्रचार से गये जु ताही ❀ जीवहि बिष्णुदूत लै जाही ॥
यम के दूत भाग सब राई ❀ यमराजा सन खबरि जनाई ॥
बिष्णुदूत मारे प्रभु काजा ❀ लै चराडाल गये सुन राजा ॥
बन्ध छोरिके हमका मारे ❀ जीवहि लै बैकुराठ सिधारे ॥
रथ चढ़ाय लैगे पुनि सोई ❀ यम से दूत कहैं अस रोई ॥
भाग हम लै आपन प्राना ❀ धर्मराज तुम सुनौ बखाना ॥
धर्मराज दूतन दुख देखी ❀ अपने मन में बिस्मय लेखी ॥

दोहा—दूतहि सँगलै भूपमणि, ब्रह्मलोक पगढार ।
ब्रह्म पास तौ जाय तब, कहा बचन संचार ॥

मोर काज यह पद से नाहीं ❀ जेहि मन मानै दीजै ताहीं ॥
कारण तासु सुनो परमाना ❀ अवध नगर चराडाल महाना ॥
ताको लेन दूत सब गयऊ ❀ बिष्णु के दूत महादुख दयऊ ॥
तब ब्रह्मा लागे अनुसारन ❀ सुनो धर्म कहता हों कारन ॥
एकादशा बिदित संसारा ❀ महापातकी पावत पारा ॥
एकादशी क्षुधा जो सहै ❀ तेहिके अनल पाप सब दहै ॥
तोर दूत तहँ जाय न पारा ❀ एकादशी बिष्णु अधिकारा ॥
सुना बात ब्रह्मा कै जाना ❀ धर्मराय को आप बखाना ॥
मोरा इह पद नाहीं काजा ❀ कहे बात ऐसे यमराजा ॥

दोहा—तब ब्रह्मा कह बात यह, सुना धर्म के राव ।
करत पक्ष तव कारिणे, रचिये एक उपाव ॥

नारद कहा नारि औ नारा ❀ ताते मोहित भये भुआरा ॥
नयननमो ब्रह्मा को जाना ❀ सर्व देव को अंश प्रमाना ॥
सिर्जा नानारूप अपारा ❀ लै ब्रह्मा तामें जिव डारा ॥
सब पर एक किये परधाना ❀ मोहनी रतीरूप परमाना ॥
मोरी बात अवधपुर जाई ❀ रुपमाँगत को धर्म नशाई ॥
लेकर पान सुकन्या जाई ❀ नगर निकट ठहरी बन आई ॥
राजा तहाँ अहेरहि गयऊ ❀ तहाँ भेंट कन्या से भयऊ ॥
कामवश्य तो राजा मोहै ❀ कह कत मात पिता का अहै ॥
तब कन्या कह बात बिचारी ❀ यहि बन में है बास हमारी ॥

दोहा—सुरकन्या देवानुग्रह, भया मोर अवतार ।
ब्याह नहीं भा भूपमणि, रहत बनै मंझार ॥

राजा काम मोह कै कहई ❀ अस स्वरूप जे बनमें रहई ॥
ब्याह न करत सो कौने काजा ❀ कन्या कहत सुनौ हो राजा ॥
मन बाञ्छित बर जो मैं .पाई ❀ सोई कन्त सत्य समुझाई ॥
राजा कहे चहो का सोई ❀ पचै देव जो मन में होई ॥

अवधनगर जो देश अनूपा ❋ मैं राजा रुपमांगत भूपा ॥
अपने बल जीता संसारा ❋ दैत्य अनेक दुष्ट संहारा ॥
सूरज बंश कहत मैं तोहीं ❋ आवै मन तौ बरिये मोहीं ॥
कन्या कहा तेज मन जेते ❋ महाबली मैं चाहौं तेते ॥
सत्यप्रण जो राजा कहिये ❋ तब हम राजा तुमको बरिये ॥
सत्य हमार संग नरपती ❋ तौ हम मानी ताकहँ पती ॥

दोहा—जब जो चाहैं हम नृपति, तब सो दीजै मोहिं।
यही शपथ करिये नृपति, तब हम बरिये तोहिं ॥

राजा सत्य कियो परमाना ❋ कन्या तबहीं कीन पयाना ॥
केतिक दिवस रहे तब राऊ ❋ मोहित भये मोहनी भाऊ ॥
दशमी राजा संयम कियऊ ❋ एकादशि ब्रत तब ते भयऊ ॥
संयम हेतु भये नृप ठाढ़े ❋ तबहिं मोहनी बोलत गाढ़े ॥
खावहु पान भूपमणि राऊ ❋ तब राजा ताकहँ समझाऊ ॥
एकादशि का संयम आहै ❋ मोरे हेतु नगर सब राहै ॥
तब मोहनी कहत रिसियाई ❋ यह तौ कन्त मोहिं नहिं भाई ॥
राजा भय पुरबासिन सुना ❋ सुनत बात सबही मनगुना ॥
दानरु यज्ञ होम कै कर्मा ❋ जानो यज्ञराज को धर्मा ॥
संन्यासी बैरागहु जेते ❋ ब्रत उपवास कर्म हैं तेते ॥

दोहा—पान खाइये भूपमणि, तजहू ब्रत कर बान ।
परबशते यह खाइये, दीजै हमको दान ॥

राजा तब मोहनि से सुना ❋ सुनत बात सबही मनगुना ॥
ऐसी बात बहुरि जनि कहो ❋ जो हमार जिव राखा चहो ॥
तुमहूं ब्रत करिये मन लाई ❋ लेहु अभयपद हरिपुर जाई ॥
सुनत मोहनी क्रोधित भयऊ ❋ जाना भूप सत्य अब गयऊ ॥
पूर्ब कहे जो चाह तुम्हारा ❋ देव आनि अब कहो सुआरा ॥
एकादशी तजो तुम राजा ❋ जो चाहत हो सत्य सुराजा ॥

नहिं तो देव पुत्रकर माथा ❀ नहिं तौ ब्रत तजहू नरनाथा ॥
राजा सुनिके चक्रित भयऊ ❀ बिनती बचन कहे तब लयऊ ॥
मानत नहीं मोहनी बाता ❀ राजहि शोक भयो तब गाता ॥
निज रानी से जाय जनाई ❀ धर्मांगत पुत्रहु सुनि पाई ॥

दोहा—पुत्र कहा सो बचन तब, सुनो सत्य तुम बात।
अन्तकाल पै देखहू, यही सत्य संघात ॥

धर्मांगत जु बचन तब भाखो ❀ मम मस्तक देकै ब्रत राखो ॥
बहुत प्रकार पुत्र समझावा ❀ रानी राजा के मन भावा ॥
एकादशि ब्रत करि अस्नाना ❀ पिता पुत्र दीन्ह्यों बहुदाना ॥
पुत्र पद्म आसन करि बैसे ❀ धरे ध्यान योगी जन जैसे ॥
तहाँ मोहनी कहै बखानो ❀ संभावती केशधरि तानी ॥
देव सबै तहँ देखन आये ❀ तब राजा कर खड्ग उठाये ॥
आसन डोलेव शंकर जाना ❀ द्विज स्वरूप करिगे भगवाना ॥
दिव्य एक रथ आया ताहा ❀ दर्शन प्रकट दिया नरनाहा ॥
नगरहु सहित परम पद पाये ❀ अन्तरिक्ष राजा मनभाये ॥
तब मोहनि को श्री भगवाना ❀ शाप्यो नरकग्राम परिमाना ॥

दोहा—मम भक्तन पर संकट, कीन तहाँ चण्डार ।
ताते अगति तुम्हारि भइ, नहीं तोर उद्धार॥

तब मोहनी बहुत दुख पाई ❀ तब राजा पहँ बिनती लाई ॥
क्षमहू मोर दोष नरनाहा ❀ मम उद्धार करो जगमाहा ॥
तब नृप हरि से बिनती लाई ❀ देव दयापति श्रीयदुराई ॥
शाप अनुग्रह करु नरनाथा ❀ रहिहै तौ यह मोरे साथा ॥
तब प्रसन्न भाषे भगवाना ❀ जाहू यन्त्र होव परित्राना ॥
द्वादशि में जो पारण करै ❀ और शयन जो नींद संचरै ॥
ताके ब्रतहि धर्म बहु होई ❀ तुमका ब्रत ह्वैहै पुनि सोई ॥
तबहिं मुक्ति होई तब नारी ❀ जग बैकुण्ठपुरी अधिकारी ॥

यह बरदान जो मोहनि पाई ❀ पुरी सहित नृपनगर सिधाई ॥
भीषम भाषे पद्म पुराना ❀ धर्मराज सुनतहि सुखमाना ॥

दोहा—एकादशी महातम, भाषे सब गांगेय ।
वैशंपायन कहत भे, जन्मेजय सुनुभेय ॥
हरिबासर उत्तम जु ब्रत, सर्ब पाप क्षय होय ।
नाम सदा जो गावही, त्यहिसमाननाकोय ॥

इति श्रीमहाभारते भाषा शान्तिपर्वण्येकादशीकथावर्णनोनामचतुर्थो ऽध्यायः ॥ ४ ॥

जनमेजय सुनिये यह काना ❀ धर्मराज से भीष्म बखाना ॥
बनसपती में तुलसि बखानी ❀ ताकी महिमा कह को जानी ॥
तुलसी रोपहि पूजहि ताही ❀ प्रात दर्श से पाप नशाही ॥
तुलसी रानि बिष्णु है राऊ ❀ करत ध्यान हरिलोक सो पाऊ ॥
एक पात्र राधे यदुराई ❀ जन्म जन्म के पाप नशाई ॥
करै प्रदक्षिण नामस्कारा ❀ कबहूं यमपुर नहि पैसारा ॥
शीश नवाय पत्र शिर धरही ❀ तनुमें के सब पातक हरही ॥
संध्या दीप नित्य जो दीन्हा ❀ अन्ध मार्ग उजियारा कीन्हा ॥
तुलसी दल पूजैं भगवाना ❀ शालग्राम शिला परमाना ॥
सदा बास बैकुण्ठहि पावै ❀ तुलसी महिमा कहत न आवै ॥

दोहा—सुमिरण तुलसी मन्त्रको, लह बैकुण्ठ स्थान ।
धर्मराज के आग्रह, भीषम कहै बखान ॥

शालग्राम रूप हरि जोई ❀ तुलसी दल संतुष्टहि होई ॥
पूरब दैत्य जलन्धर नामा ❀ तासु त्रिया बृन्दा गुणधामा ॥
देवन संग महारण होई ❀ दैत्यहि जीति सकै नहिं कोई ॥
बृन्दा पतिब्रता अवतारा ❀ आप शरीर दैत्य कर धारा ॥
तब हरि माया करि बिस्तारा ❀ तासु धर्म नहिं दैत्य सँहारा ॥
बृन्दा पहँ यह माँगेव हरी ❀ कै छल जाय नारि सो करी ॥
रति दानहि जब बृन्दा दयऊ ❀ तब रण मध्य दैत्य बध भयऊ ॥

तब बृन्दा जाना सब भेऊ ❀ पाहन शाप हरी का दयऊ ॥
दैत्यहि गति कारण तव नारी ❀ तब हरिपाहीं कहेउ बिचारी ॥
हरि ने कही कोटि अवतारा ❀ पाहन खराडव देह हमारा ॥

दोहा—पत्र तोर मम पूजा, तैं तरिहै संसार ।
शालग्राम होब हम, तुम तुलसी अवतार ॥

सो तुलसी की ऐसी महिमा ❀ शंकर शेष बखानत हियमा ॥
तुलसी माला जप जो करै ❀ ताहि फूल सच्यत जो धरै ॥
शालग्राम शिला को जोई ❀ तुलसीदल से पूजत कोई ॥
उत्तम पूजा कोइ करावै ❀ अन्त बास बैकुराठहि पावै ॥
तुलसी मज्जन हरिके पासा ❀ भीषम कहे बात परकासा ॥
तुलसी गृह मज्जन जो करै ❀ उत्तम मारग सो पगु धरै ॥
तुलसी माहँ अर्घ्य जल देई ❀ अन्तकाल सुख पावैं तेई ॥
तुलसी बास बदन परकाशै ❀ तोने बास पाप सो नाशै ॥
तुलसी गेह द्विजन जो देई ❀ उज्ज्वल मार्ग प्राप्ति सो लेई ॥
तुलसी मृत्यु समय जल पावै ❀ पापी ह्वै बैकुराठ सिधावै ॥

दो०—तुलसी महिमा भाष्यऊ, धर्मराज सुनु कान ।
तुलसी भक्ती करत जो, ताहि प्रीति भगवान ॥

आगे सुनो धर्म के राऊ ❀ तीरथ माहँ बनारस भाऊ ॥
जाति पत्र दै पूज महेशा ❀ यमके नगर न करु परबेशा ॥
श्रीफल केर पत्र महँ सोई ❀ शिवा शम्भु संतोषित होई ॥
शिव के लोक बास सो पावै ❀ काशी मध्य जु प्राण गँवावै ॥
जो काशी में करवट देई ❀ मन वाञ्छित फल पावै सोई ॥
जो काशी में करतो बासा ❀ यमके दूत न आवहिं पासा ॥
जो काशी में नर कहुँ मरई ❀ तो कैलास गमन सो करई ॥
जो काशी में धरही ध्याना ❀ हो शिवलिङ्ग रूप परमाना ॥
जो काशी में गोधन दाना ❀ ताको फल अनन्त नहिं जाना ॥

जो काशी तीरथ नृप कहै ❋ हर त्रिशूल पै काशी अहै ॥

दो०—जो काशी महँ बास कर, सहित महातम राव ।
शिवस्वरूपतेहि अन्त है, यमके नगर न जाव॥

तरे पतित अह गङ्गा पावनि ❋ देवमुनिन के शोक नशावनि ॥
कोटिन लिङ्ग करै परकासा ❋ सदा रहत बासहि कैलासा ॥
महिमा ताहि कहत ना आवै ❋ तीर्थ बनारस ब्रह्म बतावै ॥
यमके द्वारन परी पुकारा ❋ काशोबास बर्णा अधिकारा ॥
हरपूजा महिमा जा काशी ❋ बहुत प्रकार ब्रह्म परकाशी ॥
धन्य धन्य लक्ष्मीहि जनावै ❋ संतत बृद्धि शत्रुक्षय जावै ॥
रणमैं जेतिक होत प्रकाशा ❋ तनु ते व्याधि होत है नाशा ॥
शिवस्वरूप लिङ्ग परकासा ❋ अन्तकाल तेहि शिवपुरवासा ॥
हर को बास जो काशी अहई ❋ भै कैलास मृत्युपुर रहई ॥

दो०—काशी की माहात्म्य यह, तुमसों कहा बुझाय ।
चेतौ धर्मज धर्म नृप, सेय चरण यदुराय ॥

औरो धर्म सुनौ नरनाहा ❋ कातिकमास नहान जो चाहा ॥
औ बैशाख स्नान प्रमाना ❋ ताकी संख्या सुनिये काना ॥
आठमास कार्त्तिक अस्नाना ❋ दश बैशाख स्नान प्रमाना ॥
माससमास यहिबिधि जो करहीं ❋ गो सेवा औ दान सँचरहीं ॥
पञ्चरतन पट पराडादाना ❋ करै होम जो शास्त्र बिधाना ॥
प्रतिब्रत मास यहा परकारा ❋ ताके फल जो सुनहु भुआरा ॥
नृप होवे सुधर्म परमाना ❋ पावै सुख जन्महि भरि नाना ॥
नृप धर्महि तजि पापउ धावै ❋ नरक बास ता कोरण पावै ॥

दो०—कार्तिक अरु बैशाख जो, ताको सुनौ बखान ।
भीषम भाषे नृपति से, पद्मपुरान प्रमान ॥

औरौ धर्म सुनौ दै काना ❋ कन्या अरु कन्या को दाना ॥
ताके फल कत कहौं बुझाई ❋ विष्णुलोक सन्तत सुखदाई ॥

कन्या की ले धान्य जो कोई ❀ महापातकी जग में होई ॥
ताकी गती कल्पभरिनाहां ❀ धर्म कथा सुनहू मम पाहीं ॥
गऊ दूध घृत मधु को दाना ❀ जाय स्वर्ग सो दिव्य बिमाना ॥
दानधर्म को यह ब्यवहारा ❀ धर्मब्रत अब सुनो भुआरा ॥
शक्ती रवी अष्ट उपवासा ❀ ताके फलहि पाव कैलासा ॥
धर्मब्रत जो यह परमाना ❀ ताके फल को करौंबिधाना ॥

दोहा–नानाधर्म जु शास्त्रमत, भीषम कहा बखान ।
धर्मराज सुनतै सबै, ताते पाप नशान ॥
सब पुराण परसंगतौ, भाषे तहँ गाङ्गेय ।
जो यह मत प्राणी चलै, सो न जन्म जग लेय ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वणिपञ्चमो ऽध्यायः ॥ ५ ॥

औरो भीषम कहा बखानी ❀ गङ्गा को माहात्म्य सुजानी ॥
कन्दु नाम मुनि एकहि रहैं ❀ ताकी कथा भीष्मजी कहैं ॥
सो गृह तज द्विज पहँ मन भयऊ ❀ पृथ्वी की प्रदक्षिणा दयऊ ॥
नाना तीरथ भर्मत अहै ❀ केवल प्रीति बिष्णुकै रहै ॥
धर्म रूप विष्णूकै भगती ❀ चाहै सन्त होन नहिं अगती ॥

दोहा–जेतिक तीरथ पुहुमि में, बन सर नदी पहार ।
भमत भमत जगत में, कीरति सब संसार ॥

चन्दर भाग नदी पर गयऊ ❀ चन्द्रकेतु राजा तहँ रह्यऊ ॥
मण्डप एक अहै अनुपामा ❀ पञ्च बर्ष तहँ कर बिश्रामा ॥
बिकट रूप देखा द्विज जाई ❀ महाशोक सो ब्राह्मण पाई ॥
पाँचौ कहैं क्रोध से बाता ❀ कहौ नाम सोई सख्याता ॥
द्विज ने कहा कन्दु मम नामा ❀ कवन जोति है कितको धामा ॥
सुनत बचन तब पाँचौ कहैं ❀ पाँचौ जना प्रेत हम अहैं ॥
सूचीमुख शृंगीकर आहै ❀ जो यहि के बर ईप्सित काहै ॥

दोहा—यह चारौजन प्रेत हरि, पञ्चक लेखक नाम ।
जौने पापहि प्रेत भे, तासु सुनौ परिणाम ॥
बर जो शीत प्रेत परधाना ❋ प्रथम कही ये आप बखाना ॥
सत्य बात को झूँठ कहाये ❋ ताते महा कष्ट द्विज पाये ॥
तौ नहि पाप प्रेत अवतारा ❋ परयोषित है नाम हमारा ॥
सूचीमुख तो अतें बखाना ❋ मेरी बात सुनौ यह काना ॥
ब्राह्मण इक मेरे गृह आवा ❋ कर अपमान गबेऊ पावा ॥
वहाँ जाव जहँ यज्ञ सु होई ❋ ऐसा झूँठ कहा हम सोई ॥
आशा देके बिप्र बोलावा ❋ प्रेत जन्म ताही सों पावा ॥
सूचीमुख ताते अभिधाना ❋ अब शृङ्गीकर करैं बखाना ॥
अतिथि जु माँगा मोपहँ दाना ❋ क्षुधावन्त हम कीन बखाना ॥
रहत अन्न में नाहीं दीना ❋ प्रेत जन्म ताही सों लीना ॥
दोहा—ठाढो भिक्षुक रहो तहँ, उत्तर तुरत न दीन ।
क्षुधावन्त भो बिप्रबर, प्रेत तबहिं कहि लीन ॥
लेखक कहता बात बिचारी ❋ ब्राह्मण सुन अपराध हमारी ॥
लेखक कह माया भर्माऊ ❋ क्षुधावन्त तो यक द्विज आऊ ॥
ठाढ़ बिप्र आशा तब कीन्हा ❋ ताको मैं कुछ उतर न दीन्हा ॥
पहर एक ठाढ़ो है रह्यऊ ❋ भा निराश मुर्छाफरिकै गयऊ ॥
तोने पाप प्रेत अवतारा ❋ ताते लेखक नाम हमारा ॥
वहिकै बात सुनो परवेशा ❋ द्विज से प्रेतक कहत नरेशा ॥
गुरु नारायण माना नाहीं ❋ विद्या पात्र गर्ब मन माहीं ॥
गुरू बिप्र माना नहि राई ❋ प्रेत कि योनि ताहि से पाई ॥
सुनि पाँचो जन केर उपाई ❋ बिस्मय होय कहा द्विजराई ॥
काम भखनहा जगत तुम्हारा ❋ ताते देह धरेव संसारा ॥
दोहा—लज्जावन्तहि पञ्चजन, कहे बचन विस्तार ।
मल मूत्र उच्छिष्ट सब, यह सब करै अहार ॥

अन्धकार में रहन हमारा ❁ करो गोसाईं मम उद्धारा ॥
दयावन्त द्विज कहै पुराना ❁ गङ्गा केर महातम ज्ञाना ॥
श्रवण परत पातक क्षय होई ❁ सुनत बचन तरिगे सब कोई ॥
गङ्गा पतित पावनी अहै ❁ मृत्युलोक को महिमा कहै ॥
एक समय सब देव उपाई ❁ बैठे सभा अनूप बनाई ॥
बिष्णु कहा शङ्कर से बाता ❁ पञ्चबदन रागहि सख्याता ॥
शंकर कहेव देव से बानी ❁ धरो धीर मैं कहत बखानी ॥
पञ्चवदन जो राग गँभीरा ❁ सबै देव धरिसकै न धीरा ॥
लिये कमण्डलु सो जल परै ❁ राग निमित्त तो शंकर करै ॥

दोहा–बिष्णुशरीरहि सोय जल, राख्यो ब्रह्मा जानि ।
सुनौ नृपति भीषम कहै, गङ्गा चरित बखानि ॥

जब बलि छले त्रिपद हरि भयऊ ❁ एकजु पद आकाशहि गयऊ ॥
ध्यान तजो ब्रह्मा मन कीन्हा ❁ वहिजल से चरणोदक लीन्हा ॥
कन्या रूप भई अवतारा ❁ जलस्वरूप प्रकटी त्रयधारा ॥
सो गङ्गा मृतलोकहि आई ❁ सोइ महातम सुन मनलाई ॥
पतित पावनी गङ्गा जु अहैं ❁ महापातकी पातक दहैं ॥
सूर्यबंश तप सगर जु भयऊ ❁ साठि सहस्र पुत्र निर्मयऊ ॥
महाबीर सेना बलवाना ❁ अश्वमेघ यज्ञहि नृप ठाना ॥
बहुत मुनी आगे सब राऊ ❁ अश्वमेध यज्ञहि निर्माऊ ॥
सो सब ब्रत करिकै उपकारा ❁ श्यामकर्ण पूजा संचारा ॥
साठि सहस्र पुत्र दल संगा ❁ परदक्षिण करि छुटा तुरंगा ॥

दोहा–नाना देश जु सब जिते, कहत होय बिस्तार ।
सुरपति मन्त्र कियेउ तब, यज्ञखण्ड अनुसार ॥

जाना इन्द्र मोर पद लेई ❁ तासे मन शङ्का भै तेई ॥
इन्द्र आय तब मायाधरी ❁ श्यामकर्ण को लैगे हरी ॥
पुरी पताल कपिल मुनि पाहीं ❁ बांधे अश्वजान कोउ नाहीं ॥

लगी समाधि मुनी नहिं जानी ❋ गये इन्द्र निज स्वर्ग स्थानी ॥
तब सब बहुतो खोज तुरंगा ❋ कहँ गो अश्व भयामन भङ्गा ॥
तब पद चिन्ह तुरंगम जाई ❋ देखा अश्व मुनी के ठाई ॥
तब सब खोदे पुहुमी माहा ❋ साठि सहस्र कुदारिन जाहा ॥
देखा सबहि चोरकरि जाना ❋ मारा लात धरेव जो ध्याना ॥

दोहा—छूटा ध्यान जु मुनीको, क्रोधित नयन निहार।
साठि सहस्र समेत तो, भये पलक मों क्षार॥

सगर भूप तब सुनि यह बाता ❋ साठि सहस्र जो पुत्र निपाता ॥
पुत्र शोक राजा तब कियऊ ❋ महा खँभार यज्ञ नहिं भयऊ ॥
जेठ पुत्र असमञ्जस आवा ❋ राजा ताको बेगि पठावा ॥
कपिल मुनी से कहो प्रणामा ❋ हे मुनि कवन कौन हो कामा ॥
तब असमञ्जस गये पताला ❋ जहँवाँ ध्यान कपिल मुनिपाला॥
जाय प्रणाम कीन तेहि छनमें ❋ कपिल मुनी हर्षे तब मनमें ॥
तब भाषा जो मुनी बिचारा ❋ बिना दोष मोहिं लातहि मारा ॥
ताहि जरे सब राजकुमारा ❋ हम नहिं जानें अश्व तुम्हारा ॥
लै घोड़ा तुम जाहु कुमारा ❋ करो जाय तुम यज्ञ सँचारा ॥
करि प्रणाम अश्व तब लाये ❋ अवध नगर में तुरत सिधाये ॥

दोहा—करी यज्ञ पूरण तबै, जो है तासु बिधान।
सगरनृपति अति हर्षमन, दीना द्विजकोदान॥

यहि परकार यज्ञ तब भयऊ ❋ कितने दिवस बीतिकै गयऊ ॥
सगर नृपति परलोकहि गयऊ ❋ असमञ्जस राज्यहि मन दयऊ ॥
बन्धु बर्ग कस हो उद्धारा ❋ यह चिन्ता राजा अनुसारा ॥
तब बसिष्ठ से पूछा जाई ❋ तिन गङ्गा को नाम बताई ॥
ब्रह्म कमण्डलु में सो अहै ❋ करिकै ध्यान मुनी तब कहै ॥
करिकै तप जो आनै पारहु ❋ कुल समूह तुरतै उद्धारहु ॥
सुनिकै राय हेमञ्चल गयऊ ❋ तहां जाय तप महँ मन दयऊ ॥

देव बाणि को भा संचारा ❋ तुम से नाहीं होब भुआरा ॥
तोर पुत्र कै सुत अवतारा ❋ पुत्र तोर तौ करै उधारा ॥
तब सुनि राजा फिरगयऊ ❋ अंशुमान ताको सुत भयऊ ॥

दोहा—असमञ्जस को अन्तभा, अंशुमान भे राव ।
केतिक दिन ये राज्यकरि, सन्तति नहीं पाव ॥

सुनी बात यह जबहिं भुआरा ❋ मोरे सुतसे बंश उधारा ॥
मोरे पुत्र भया तौ नाहीं ❋ ताते राज्य छोड़िकै जाहीं ॥
राजा गये छोड़िकै राजै ❋ हेमाचल में तप के काजै ॥
कै तप भूप तजे तब प्राना ❋ सोते धर्म रानि सब जाना ॥
पाट शिरोमणि हैं द्वै रानी ❋ तब बशिष्ठ से कहा बखानी ॥
बंश नाश ह्वै गो मुनि राऊ ❋ सुनि बशिष्ठ तब कहा उपाऊ ॥
सूर्यबंश हित चिन्ता करै ❋ तब बशिष्ठ ज्ञानहि हितकरै ॥
बाम बाम करु रति शृंगारा ❋ होई पुत्र करब उपकारा ॥
रानी गृह आई तब ताहा ❋ रति शृंगार कीन बिन नाहा ॥

दोहा—रहस गर्भ आशा भई, सुनै जाय भव त्रास ।
दशममास के अन्त में, पुत्र जन्म परकास ॥

अस्थिबिहीन मांस कै देहा ❋ लै गमनीं वशिष्ठ के गेहा ॥
मुनि कह जहां सुमारग आहीं ❋ अष्टबक्र मुनि न्हानको जाहीं ॥
सो मारग में राखु कुमारा ❋ होब अस्थि तौ सुनौ भुआरा ॥
बालक लैकै तहाँ रखाई ❋ दूनों रानी तब गृह जाई ॥
अष्टाबक्र मुनी तौ आये ❋ पन्थ में बालक देखन पाये ॥
जाना मुनी करै अपमाना ❋ बिस्मय हर्ष बचन अनुमाना ॥
अस्थिरहित वाके जो देहा ❋ अधिक बङ्क हो कहा सनेहा ॥
जो बिन अस्थी देह सँचारा ❋ होइहै दिब्य अस्थि सुकुमारा ॥
कहत तासु तनु अस्थी भयऊ ❋ दै आशिष मुनि तब गृहगयऊ ॥
रानी देखि अङ्क में लाऊ ❋ देखा बोल बशिष्ठहि ठाऊ ॥

दोहा—हर्षित ह्वै मुनिनाथ तब, धरयो भगीरथनाम।
बालदशा के अन्ततब, सुनहू सकल बखान ॥
पितृलोक केरा उपकारा ❋ वह सब कैसे होय उधारा ॥
तबहिं भूप जो चाहै जाना ❋ मुनि बशिष्ठ तब जाय तुलाना ॥
पाद्य अर्घ्य दैकर परणामा ❋ पितर उधारन पूजहि कामा ॥
तब बशिष्ठ भाष्यो यह बानी ❋ गङ्गा बिनु नहिं गतिअरुजानी ॥
राजा कह गङ्गा कत अहैं ❋ नारद सन बशिष्ठ तब कहैं ॥
साँचे राव जु नारद आये ❋ गङ्गा मर्म पूछि मन लाये ॥
नारद कहा सुनौ हे राऊ ❋ मैं यक दिन गो इन्द्र के ठाऊ ॥
पूछेव गङ्गा महिमा ताहीं ❋ इन्द्र कहा मैं जानत नाहीं ॥
इन्द्र देश मैं आयों ताहा ❋ यम राजासों पूछे आहा ॥
उनहुँ कहा मैं जानत नाहीं ❋ यह तौ मर्म ब्रह्म का चाहीं ॥
दोहा—पूछा बिधि से जायकर, कह्योशम्भु पहँजाव।
शिवपहँ तब हम जायके, पूछा भेद बताव ॥
शिव कह तब गङ्गा का नामा ❋ नाशत पाप करै मनकामा ॥
जाहु बिष्णु पहँ तुम मुनिराऊ ❋ गङ्गा भेद तहाँ सब पाऊ ॥
तब बैकुण्ठ बिष्णु पहँ गयऊ ❋ महाभेद मैं पूछत भयऊ ॥
बिष्णु कहा सुन चितधरि नारद ❋ गये बिष्णु पहला गुणशारद ॥
सुने बिष्णु यह मनोकामना ❋ बड़ आश्चर्य चित्तमहँ आना ॥
गङ्गा की महिमा जु बखाना ❋ बिष्णुरूप भे बिष्णु सुजाना ॥
नारद गये जहां तौ राऊ ❋ पूछा महिमा गङ्गा नाऊ ॥
देखा रूप शंख कर चारी ❋ चक्र गदा अरु पद्म सवारी ॥
पूछा बात कहा तिन जानी ❋ चारौ जने सुनौ मुनि ज्ञानी ॥
श्वान योनि में भा अवतारा ❋ बिना अहार महादुख भारा ॥
दोहा—गङ्गाजल यक मुनी लै, जात रहे मग माहिं।
और एक मुनि मांगेऊ, भेट भई तब ताहिं।

तेहि मारग पर परे हजारहि ❀ बिप्र बिप्र दोउ हर्षित कारहि ॥
कुश से जल मुनि मुनिपर डारा ❀ परा बूंद यक भाग्य हमारा ॥
बूंद एक जल तनुमहँ डारा ❀ तासे रूप यह भयो हमारा ॥
तब बैकुण्ठ माहँ हम आये ❀ नारद राजहि बात सनाये ॥
सो गंगा आने जो पावहु ❀ पितर सबै यमपाश छुड़ावहु ॥
राजा सुनत बात बिस्तारा ❀ मन्त्री सौंपा राज्य भँडारा ॥
माता पाहँ बिदा तब भयऊ ❀ मन्त्र एक भागीरथ दयऊ ॥
प्रथम मेरुपर गे तप कीन्हा ❀ यम अरु नियममाहिं मनदीन्हा ॥
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❀ मन्त्र एक भागीरथ कियऊ ॥
सिद्ध करौ यह मन्त्र नरेशा ❀ पैहौ गंगा कर उपदेशा ॥

दोहा—यही मन्त्र के सिद्ध हित, तब गे चलि कैलास।
कथा रूप गङ्गा अहै, महा शोक परकास ॥

बारह बर्ष तपस्या कीन्हा ❀ पूरण आश शंभु बर दीन्हा ॥
गंगा अर्थ भगीरथ कहै ❀ कहारहै मोहिं पाहँन अहै ॥
बारह बर्ष रहे निरहारा ❀ गङ्गा नहिं पाये करतारा ॥
तबहि बिष्णु का तप संचारा ❀ बारह बर्ष रहे निरहारा ॥
नाना अस्तुति कै परकासा ❀ कह प्रसन्न हरि राजा पासा ॥
चारी भुजा गरुड़ असवारा ❀ भागीरथ तब करै बिचारा ॥
हौ तुम भक्त हमारे राजा ❀ करौं तोर मनबाञ्छित काजा ॥
चलहू संग हमारे तहाँ ❀ पुरवैं आशा गङ्गा जहाँ ॥
हरि आगे पाछे जु भुवारा ❀ आये तब ब्रह्माके द्वारा ॥
अर्घ्य पाद्य गङ्गा तब दीन्हा ❀ वही नीर चरणोदक लीन्हा ॥

दोहा—शीश माहँ चरणोदक, ब्रह्मा डारयउ ताहिं।
शिवआराधन कीन्ह्यउ, ब्रह्मकमण्डलु माहिं ॥

कन्या हरि से कहा बिचारा ❀ तुम्हरे चरण मोर अवतारा ॥
बिष्णु कहा गङ्गा तब नामा ❀ पापबिनाशन जग बिश्रामा ॥

जाहु मृतकपुर करौ न बारा ❀ तब गङ्गा बाणी संचारा ॥
जगके पाप हमहिं निस्तरैं ❀ मेरे पाप कहौ को हरैं ॥
तोरे पाप हरैं हरि कहहीं ❀ साधुस्नान करैं तो दहहीं ॥
नरको पाप जन्तु तो खाई ❀ वहो जन्तु नर भक्षै आई ॥
जासुके पाप तासुके पाहा ❀ सत्यस्नान तोरि गति आहा ॥
सुनि जल रूप गङ्ग भइ तबहीं ❀ आज्ञा हरिकी पाई जबहीं ॥
भागीरथ जो अस्तुति सारा ❀ माता पितृन कर उद्धारा ॥
ब्रह्मा हरि को कर परणामा ❀ लै गङ्गाजल राजा आमा ॥

दोहा—आगे नृप भागीरथ, पाछे सुरसरि धार ।
पहुँचे तौ कैलास महँ, शङ्कर देखि बिचार ॥

जाना गङ्गा चलीं भुआरा ❀ जटा तोन तौ तहां पसारा ॥
जटामाहँ गंगा शिव लयऊ ❀ महा शोर भागीरथ कियऊ ॥
हरि तुम बड़ दानी जु कहाये ❀ मैं सेवक नर दुख बहु पाये ॥
तब गंगा तुमतौ म्वहिं दीना ❀ अब बटपारी कै तुम लीना ॥
शिव समाधि शंभु सुख भयऊ ❀ माँगु माँगु बर बोलन लयऊ ॥
राजा कहा कष्ट बहु लाये ❀ महा कष्ट ते गंगा पाये ॥
छुटी समाधि शंभु सुख भयऊ ❀ माँगु माँगु बर शंकर कहेऊ ॥
जो तुम राखा दीजे दाना ❀ मोरे पितृ होयँ परित्राना ॥
अस्तुति बहुत भगीरथ कीना ❀ तब गंगा को शंकर दीना ॥
कै प्रणाम आये तब राऊ ❀ शंख बजावैं हर्ष उपाऊ ॥

दोहा—हेमगिरि दुर्गम शिखर, अटकी गङ्गा ताह ।
पर्वत लाँघि न पारहिं, रोवैं तब नरनाह ॥

गंगा कहा पुत्र से बाता ❀ इन्द्र पास अब जाव सख्याता ॥
ऐरावत हस्ती लै आवो ❀ देहि मार्ग करि पारहि जावो ॥
राजा गये इन्द्र के पाहा ❀ अस्तुति बहुत करैं नरनाहा ॥
बारह वर्ष तपस्या कीन्हा ❀ तबहि इन्द्र यह आज्ञा दीन्हा ॥

माँगु माँगु बर सुन नृप बोता ❀ ऐरावत दीजै सुरत्राता ॥
इन्द्र कहा तुम गज पहँ जावो ❀ जासे मनवाञ्छित फल पावो ॥
भागीरथ तब गज पहँ आये ❀ सब वृत्तान्त गजहि समुझाये ॥
पर्वत में करि दीजै द्वारा ❀ हमलै गंगा जायँ सो पारा ॥
गज भाषा हमसे नहिं होई ❀ होय काज बच राखै कोई ॥

दोहा—जो गङ्गा रति देइ मोहिं, देव तबै करि पार ।
नातौ हमसे होय नाहिं, अन्ते खोजु [illegible] आर ॥

सुनिकै राव गये फिरि ताहाँ ❀ गङ्गा जाना अन्तर माहाँ ॥
रोदन भूप करो केहि हेता ❀ आनहु गज तुम जाय सचेता ॥
कहहु हस्तिसे बचन हमारा ❀ सहे हमार जु तीन प्रहारा ॥
तो हम देवैं रति को दाना ❀ जाहु पुत्र मम करो बखाना ॥
तब राजा फिरि गजपहँ आये ❀ यह वृत्तान्त गजहि समुझाये ॥
सुनिकै गज तब परम अनन्दा ❀ भागीरथ कह सुन शुभ दन्दा ॥
तीन तरङ्ग हमारे सहै ❀ रति संग्राम हमारा लहै ॥
भाषै गज मो सहब तरङ्गा ❀ तब तरङ्ग परहान्यउ गङ्गा ॥
एक लहर तब गजगै माहा ❀ दुःखित महाजीव अवगाहा ॥

दोहा—गये बूड़ि गज [illegible], पहिले लेत [illegible] ।
दूसरि लहर जात जल ऊँ, [illegible] ॥

तब गज सुस्त भयो जलमाहीं ❀ गङ्गा की अस्तुति तब कांहीं ॥
मैं पापी माता सुनु बाता ❀ राखु [illegible] शरण मख्याता ॥
तव महिमा जानैं सब देवा ❀ करत चरण तुम्हरे नित सेवा ॥
गङ्गा कह्यो अरे अज्ञानी ❀ गर्भ हसे तव यह गति जानी ॥
देव सबै मम राह उपाई ❀ सुनतै गज तब उठा होसाई ॥
दन्तराय पर्वत गज ताहाँ ❀ भये रन्ध्र तब पर्वत माहाँ ॥
चलिकै पार भये गज धारा ❀ गज ने इन्द्रलोक पगुधारा ॥
आगे चले भगीरथ राऊ ❀ पाछे गंगा चार सिधाऊ ॥

जह्नु मुनीश करैं तप जहाँ ❋ पहुँचे जाय अचम्भित तहाँ ॥

दोहा—जाना मुनि हैं गंगयह, आय मृत्यु अस्थान।
परम हर्ष मन महामुनि, कर गंगा कहँ पान॥

भागीरथ बिस्मय तब भयऊ ❋ तब मुनीश की सेवा कियऊ ॥
मुनि के पाहँ बिष्णु को धाये ❋ बारह बर्ष तु तहाँ गँवाये ॥
कोटिन बिप्र गऊ दे दाना ❋ नहिं गंगासम तीर्थ बखाना ॥
बिष्णु आय हर्षित तब भयऊ ❋ मुनिकर ध्यान तुरत छुटि गयऊ॥
बिष्णु कहा तब मुनि सों बाता ❋ भागीरथ जगमहँ सख्याता ॥
गंगा देहु बहुत सुख पाये ❋ पितृलोक उद्धारन आये ॥
तब मुनि ज्ञान बिचारे तहाँ ❋ मैं गंगा देउँ केहि बिधि महाँ॥
मुत्र अशुद्ध मुख जूठा होई ❋ कहैं उच्छिष्ट जगत सबकोई ॥
जाँघ चीरिकै गङ्ग निकारा ❋ जाह्निवि नाम ताहि सों धारा ॥
अन्तर्धान बिष्णु भे जाहीं ❋ भागीरथ हर्षित मन माहीं ॥
आये देश माहिं तब राऊ ❋ माता पहँ धै गङ्गा लाऊ ॥

दोहा— गङ्गा पाहि कहा यह, गङ्गा काहि गोहराव।
तबहीं माता तब तहाँ, औरो ध्रुव बैठाव॥

माता पाहँ भगीरथ गयऊ ❋ मध्य नगर हर्षित तब भयऊ ॥
कहेउ बात माता के पाहा ❋ गंगा का बृतान्त सब काहा ॥
तहाँ देव गङ्गा परवाहा ❋ जाते जाय बिष्णुपुर माहा ॥
यहि प्रकार पूछत हो राऊ ❋ अभ्यन्तर अब सुनो उपाऊ ॥
गंगा नाम गऊ इक रहै ❋ एक अहीर पुकारत रहै ॥
गंगा गंगा नाम पुकारा ❋ गंगा चलो सहस ह्वै धारा ॥
भागीरथ कहते तब बाता ❋ यह का कौन कहो म्बहिं माता ॥
तब गंगा राजा से कहेऊ ❋ तुम्हरो संशय अब नहिं रहेऊ ॥
तब पितृन को करौं उधारा ❋ पाछे हम तारब संसारा ॥
भागीरथ प्रसन्न मन माना ❋ भीष्म धर्मनृप पाहँ बखाना ॥

दोहा—कन्दु नाम जो ब्राह्मण, कहे प्रेतगण माहँ।
चन्द्रभाग नाहिं प्राप्ती, परम हर्ष मनमाहँ॥

महापातकी जग में अहै ❀ गंगा परसत पाप न रहै॥
धन्य भाग्य जो लेत तरङ्गा ❀ पाप नाश अरु निर्मल अंगा॥
कोटिन बिप्र गऊ दे दाना ❀ नहिं गंगा के नीर समाना॥
सब तीर्थन में गंग प्रधाना ❀ श्रुति स्मृति भागवत बखाना॥
यहि प्रकार द्विज कथा सुनाये ❀ पञ्च बिमान स्वर्ग से आये॥
प्रेतरूप तज ताही बारा ❀ बिद्याधर स्वरूप सँवारा॥
स्वर्गलोक भा तेहि कर ग्रामा ❀ गंगा महात्म्य सुनत मनमाना॥
जाके चरण गंग अवतारा ❀ ते हरि सब दल संग तुम्हारा॥
तजोशोक सब धर्म नरपती ❀ हरि सहाय संतत तुम गती॥
सत्य सत्य जानो परमाना ❀ यहो देवपति श्रीभगवाना॥

दोहा—यहि प्रकार से भीष्मजी, सुनत पाप नशाय।
गङ्गा केर प्रभाव कह, धर्मराज समुझाय॥
सर्व नदी में गङ्गा, देवन महँ भगवान।
छन्द माहँ गीता सही, धर्म न दया समान॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाशान्तिपर्वणिगङ्गोत्पत्ति
वर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः॥ ६॥

धर्मराज सुनहू परमाना ❀ भीषम भाषे अर्थ पुराना॥
महादेव सेवा मन लावै ❀ सो कैलाशहि बास सुपावै॥
शिवका ब्रत चतुर्दशी अहै ❀ धन्यरु धन्यरूप हर कहै॥
चरत नाम व्याधा संसारा ❀ सो कैलास माहिं पशु धारा॥
कौन रूप सुनो बिस्तारा ❀ भीष्म कहा सुन नृपति भुआरा॥
पशुन मारिके बनसे लावै ❀ मांस बेचिके दिन भुगतावै॥
एक दिवस सो उपबन जाई ❀ संध्या भइ यक जन्तु न पाई॥

महा शोच बाढ़ा मन माहीं ❀ कौनेरूप आज गृह जाहीं ॥
स्त्री सुत पुत्री उपवासा ❀ सब तौ अहैं हमारी आसा ॥
यह चिन्ता ब्याधा के भयऊ ❀ महा शोच करता तब लयऊ ॥

दोहा-कौन रूप गृह गमन करूँ, सबहि परे उपवास ।
यह चिन्ता व्याधा मनहिं, तनुके माहँ प्रकास ॥

महादेव को ब्रत दिन सोई ❀ महाशोक ब्याधा के होई ॥
तब मन में यह करै बिचारा ❀ धिग धिग जगमें जन्म हमारा ॥
ताते यह कानन के माहीं ❀ रहौं आज हम गेह न जाहीं ॥
यहँ पर बाघ सिंह बहु आहै ❀ जन्म अन्त अब ब्याधाका है ॥
श्रीफल तरु प्रचठी सो रहै ❀ ब्याधा हृदय शोच बहु गहै ॥
कर्म अङ्क पै सदा सहाई ❀ कर्म के हेतु दुःख सुख पाई ॥
जो बिधना है लिखा लिलारा ❀ दूसर कौन मिटावन हारा ॥
कर्महिसे सुख होत जो राई ❀ पावै सुख अनेक सुखदाई ॥
सदा चित्तसों मेटत सोई ❀ लाख उपाय करै जो कोई ॥

दोहा-व्याधा रहिगो राति तहँ, श्रीफल तरु के ऊपर ।
महाभयंकर निशि तहाँ भय महाअंधार ॥

क्षुधावन्त अतिहो दुख पाई ❀ रोदन करत हृदय दुखदाई ॥
अर्ध रात्रि से शंकर आये ❀ बृषभ चढ़े गौरा संग लाये ॥
भूत प्रेत औ दैत्य अपारा ❀ बाजे डमरू झाँझ मंजारा ॥
ताहो बनमें भा उजियारा ❀ सोई तरु के पास भुआरा ॥
तहँ बैठे हर उमा जो जाई ❀ ब्याधा है क्यौं मर्म न पाई ॥
करो नृत्य महेश्वर तहाँ ❀ रोवै ब्याधा सो तरु महाँ ॥
आंसूपात बहते हैं ताई ❀ धर्म भयो ताके फलदाई ॥
एक श्रीफलपत्र प्रमाना ❀ आंसू भीजे रोवत नाना ॥
पवन तेज पत्ता सो झरे ❀ महादेव के शिर पर परे ॥

दोहा-महादेव हर्षित बदन, कहै बात तो लीन ।
ले बरदान आय अब, पुष्पाञ्जलि जो दीन ॥

उतरि रूख से ब्याधा पड़ा ❀ हाथ जोरिकै सन्मुख खड़ा ॥
शिव प्रसन्न होकर बर दीन्हा ❀ राजा श्री धन्यवन्ता कीन्हा ॥
अन्तकाल सो गो कैलासा ❀ भोलानाथ भक्त परकासा ॥
ब्याधा तब जानै नहिं पाये ❀ दैवी गति पत्ता हरि पाये ॥
जगत माहँ करिकै सुख नाना ❀ अन्तकाल कैलास पयाना ॥
भक्त बछ्ल तौ शिव भगवाना ❀ ब्रह्म इन्द्र पद पाय प्रधाना ॥
रण में जो शत्रू संहारा ❀ सोय भवानी बर संसारा ॥
राजा धर्म भक्ति मन धरौ ❀ शोक दुःख राजा परिहरौ ॥
शोक करौ तौ गहि है नाहीं ❀ बचन मोर राखौ मन माहीं ॥
केवल करौ हरी को ध्याना ❀ पावहु राजा पद निर्वाना ॥

दोहा—तजो शोक हो राजा, चितवो राधारौन।
यहि प्रकार भीषम कहा, तौ कीन्हो है मौन ॥

राजा सुना यही सब बानी ❀ तजा शोक तबहीं परमानी ॥
देव सुनी सब जो अस्थाना ❀ सहित पाण्डवन श्रीभगवाना ॥
प्रति बासर तौ राजा जाई ❀ सुना ज्ञान पितामह नाई ॥
जेते कहे जो शन्तनुनन्दन ❀ सुनते पाप होत हैं खण्डन ॥
सो चरित्र संक्षेपहि कहे ❀ पुनि बिस्तार बहुत तो रहे ॥

दोहा—भीषम बर्ण्यो धर्म सो, सुनो सत्य मम पाह।
महापाप सब नाशहीं, सुनते श्रवणन माह ॥
नाना शास्त्र पुराण मत, भीषम कह्यो बखान।
राजा हृदय राख यह, सत्य बचन परमान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषाशान्ति पर्वणिसप्तमो ऽध्यायः ॥ ७ ॥

बैशम्पायन गावन लागे ❀ जनमेजय श्रोता के आगे ॥
याहबिधि बहुत दिवस जबगयऊ ❀ उत्तर रवी प्रवेशत भयऊ ॥
भीषम तबहीं चेतेउ ज्ञाना ❀ अब तजि देह करीय पयाना ॥
धर्मराज के पाहँ बखाना ❀ राजा सुनो बात परमाना ॥

शरशय्या बहुतै दुख सहेऊ ❋ उत्तरायण अब सूरज भयऊ ॥
अब शरीर तजिहौं परमाना ❋ धर्मराज से कहत बखाना ॥
अबतो कली होब परवाना ❋ सन्तत भूप बिचार्यो ज्ञाना ॥
एही कृष्ण देव परवाना ❋ अन्तकाल गति श्री भगवाना ॥
हरि का छोड़ि रहहु जनि राजा ❋ कहौं बात तोरे भल काजा ॥
अब तोहार जो होय उधारा ❋ भीषम भाषे पाहि भुवारा ॥

दोहा—अब बैकुण्ठै आव हरि, शून्य देव अस्थान ।
केतिक दिनके अन्तमें, गमनब श्रीभगवान ॥

नृपति युधिष्ठिर से यदुराई ❋ बहु प्रकार भीषम समुझाई ॥
हरि ते भीषम कह्या बखाना ❋ सर्वलोकपति हो भगवाना ॥
कृपा करो हम तजें शरीरा ❋ बिश्व रूप तुमहीं यह बीरा ॥
बहु प्रकार ते अस्तुति कीन्हा ❋ तुरत शरण तब कृष्णहि दीन्हा॥
माघ सुदी अष्टमि शुभ जाना ❋ तादिन भीषम कह्यउ बखाना ॥
फाल्गुन मास पक्ष उजियारा ❋ सातो तीरथ कहे बिचारा ॥
श्री पति और जो पांचो भाई ❋ सबै पितामहँ लिये बोलाई ॥
बिदा भये प्रभु सबते गाये ❋ तजे शरीर परम सुख पाये ॥
मातलि रथ तो इन्द्र पठाये ❋ बिष्णु दूत सँग लेने आये ॥
रथ ऊपर भीषम बैठाये ❋ स्वर्गलोक की राह सिधाये ॥

दोहा—परम हर्ष नारायण, भीषम तजा शरीर ।
गये बैकुण्ठ बिष्णुपुर, परम अनन्दित धीर॥

धर्मराज तब रोदन कीन्हा ❋ क्रिया कर्म सबकर मन दीन्हा ॥
कीन्हा कर्म बेद ब्यवहारा ❋ शास्त्र शान्ती कर संचारा ॥
श्री पति कहे राव सन बानी ❋ पुरी हस्तिनापुर महँ आनी ॥
श्री पति संग करहु सब काजा ❋ करहु राज्य हर्षित मन राजा ॥
मोरी भक्ति करो मन लाई ❋ पुहुमी राज्य करो सुखदाई ॥
हमको बिदा दीजिये राई ❋ हमहुँ द्वारका देखैं जाई ॥

हर्षित राजा करै बखाना ❋ गति हमारि तुमहीं भगवाना ॥
मैं अनाथ तुम जनके साथा ❋ अस्तुति करत बहुत नरनाथा ॥
पायो बँधुसँग द्रौपदि रानी ❋ मिलेउ सबै सँग शारँगपानी ॥
बहिनि सुभद्रा भेटेउ जाई ❋ भये बिदा तु चले यदुराई ॥

दोहा—सात्यकि रथको साजेऊ, श्रीपति भे असवार।
सबते बिदा होय हरि, द्वारावति पगुधार ॥

हर्षित गये देव भगवाना ❋ द्वारावती नगर परमाना ॥
आये द्वारावति यदुराई ❋ यदुबंशी हर्षित सब आई ॥
धर्मराज राजा सुख करहो ❋ सदा धर्म धर्महि हित धरही ॥
नगर लोग सब तहँके सुखी ❋ स्वप्नहु तहँ सुनिये नहिं दुखी ॥
पुत्र समान प्रजा प्रतिपाला ❋ धर्मरूप श्रीधर्म भुवाला ॥
एहो भाँति राज्य नृप करही ❋ धर्मराज शोकित मन रहही ॥
सजन सखा बन्धू जन जेते ❋ गुरू गोत्र कुल भीषम तेते ॥
तिन सबको मारे निज हाथा ❋ यही शोच शोचै नरनाथा ॥
प्रजा लोग तब करैं अनन्दा ❋ जनु चकोर पाये निशि चन्दा ॥
भारत कथा पाप क्षय जाई ❋ पढ़त सुनत हो हर्ष बधाई ॥

दोहा—बैशम्पायन कथा कारि, पुरहस्तिना प्रकाश ।
जाते पावहिं परमपद, होत पापको नाश ॥
भारत कथा पुण्य फल, करैं नारि नर गान ।
शान्तिपर्व भाषारच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते भाषासबलसिंहचौहानकृतेशान्तिपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

इति श्रीशान्तिपर्व समाप्तम् ॥

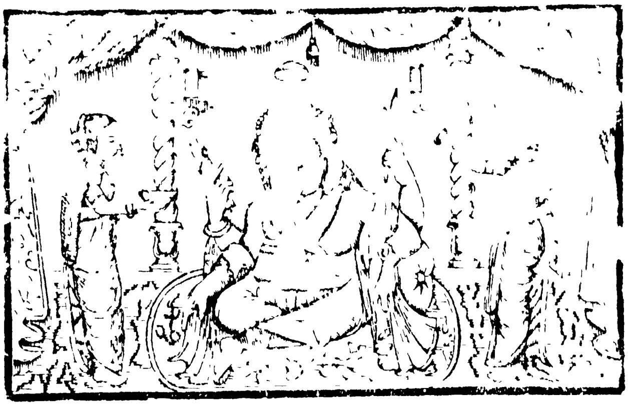

महाभारत ।

अश्वमेधपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की
रीति पर दोहा चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है ।

जिसमें

श्रीराजाधिराज महाराज युधिष्ठिरजी ने श्यामकर्ण घोड़ा छोड़-
कर समस्त दिशाओं तथा उपदिशाओं के राजाओं को
जीता था । उसी अश्वमेध-यज्ञ की कथाएँ वर्णित है ।

काशी-

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा-
भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी में मुद्रित ।

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ अश्वमेधपर्व

दोहा—गौरीनन्दन के चरण, बिनवों बारम्बार।
जिनके चिन्तन करतही, विघ्न होयँ जरिछार॥
पाराशर ऋषिके तनय, ब्यासदेव भगवान।
आचारज हौ भारतके, करौ नाथ कल्यान॥
महरानी बानी सुमिरि, करौं कथा सुखदान।
अश्वमेध भाषा रचत, सबलसिंह चौहान॥

बैशम्पायन कह्यो बुझाई ❀ यज्ञ कथा सुनु कुरुकुलराई॥
कियो युधिष्ठिर नृप तब शोका ❀ भीषम गये जबहिं परलोका॥
कह्यो ब्यास सन धर्मकुमारा ❀ मारा गोत्र पाप बहुभारा॥
यज्ञरु योग जाप का कर्मा ❀ कैसे पाप छुटै हो धर्मा॥
सुनी बात तब कहै ऋषेशा ❀ पातक खराडब तोर नरेशा॥
परशुराम कहँ सब जगजाना ❀ हने मातु आज्ञा पितु माना॥
माता द्विज बध हत्या पाये ❀ अश्वमेध तब यज्ञ बनाये॥
यज्ञ कियो तब पातक हरै ❀ तुमहूँ करौ यज्ञ अनुसरै॥
रामचन्द्र दशरत्थ कुमारा ❀ रावण बंश कियो संहारा॥
बिश्वशर्मा को सो सुत अहै ❀ ब्रह्म बधन तो रामहि गहै॥
बाजी यज्ञ कियो प्रभु रामा ❀ द्विज बध छुटि भये निष्कामा॥

दोहा—अश्वमेध तुमहूं करौ, गोत्रहि बध दुख हेत ।
धर्मराज यह सुना जब, भाष्यो बात सचेत ॥

यज्ञसमर्थ जो धन मम नाहीं ❋ कैसे यज्ञ होय जगमाहीं ॥
फल विहीन तरु पक्षि न जाई ❋ धन विहीन तस पुरुष कहाई ॥
बिन धन धर्म कहो कस होई ❋ धन से हीन पुरुष जगजोई ॥
कहैं ब्यास सुनु धर्म कुमारा ❋ अर्थ चहो सुनु बात हमारा ॥
पूर्ब मरुत नृप यज्ञ बनाये ❋ सुर नर मुनिजन हर्ष बढ़ाये ॥
दिये दान बहु विधि परकारा ❋ किये अयाचक मग्न अपारा ॥
लै न सके तो तजि नृप गयऊ ❋ गिरिहिमालयके बीचहि रह्यऊ ॥
सो धन लेय यज्ञ प्रण ठानो ❋ सुरतकरी धर्मराज बखानो ॥
द्विज धन लैके यज्ञ बनाओ ❋ यज्ञकरत तो अपयश पाओ ॥
ब्यास कह्यो सुन धर्मकुमारा ❋ सो सब द्विजन नहीं अधिकारा ॥
पूर्ब दैत्य बन राजा गयऊ ❋ ताहो मारि देव धन लयऊ ॥

दोहा—सोई धन हरिचन्द्र नृप, दीन्ह्यो मुनि को दान ।
पाछे बलि राजा भये, सब धन ताकोजान ॥

जो बलि राजा दीन्ह्यो दाना ❋ पाछे परशुराम जग जाना ॥
कश्यप मुनि को दीन्ह्यो दाना ❋ ऐसे धन राजा को जाना ॥
दान देय खाही बिलसाही ❋ ताको धन्य मुनी यश गाही ॥
सो धन लै करु यज्ञ भुआरा ❋ कछु दोष नहिं लागु तुम्हारा ॥
राजा धर्म ब्यास सन कहहो ❋ यज्ञ अश्व मोरे नहिं अहहो ॥
सुना ब्यास तब कह अस बाता ❋ आनहु अश्व आह सख्याता ॥
भद्रावति पुर हय है राई ❋ यौवनाश्व राजा के ठाई ॥
दश करोड़ दल हयको रक्षक ❋ यज्ञ नहीं सो करै प्रत्यक्षक ॥
ताही जीति अश्व लै आओ ❋ धर्मराज ते बात जनाओ ॥
भीम आदि बान्धव हैं जेते ❋ करि संग्राम थके नर तेते ॥

दोहा—मेघबर्ण बृषकेतु है. बालक औ पितु शोक।
तासन कछू न भाषिये, दोष देय सब लोक॥
सुनिकै भीम कहत अस बानी ❋ करबे यज्ञ अश्व धन आनी॥
होय प्रसन्न यज्ञ करु राजा ❋ आनबधन अश्वहु जगकाजा॥
हमैं सहाय जगत के तारण ❋ केहिते डरिय कौन सो कारण॥
राजा कह्यो सुनहु सब भाई ❋ कत अकेल बाजी बहुताई॥
दश करोड़ दल राख तुरङ्गा ❋ कैसे भीम करब रणरङ्गा॥
सुनि कै बृषकेतू तब कहैं ❋ आज्ञा देहु संग हम रहैं॥
आनो भीम के साज तुरङ्गा ❋ यौवनाश्व को करिये भङ्गा॥
सुनते राजा कहे बखानी ❋ कैसे कह न सको यह बानी॥
तोरे पितहिं धनञ्जय मारा ❋ देखे मुख मन दुःख हमारा॥
तब बृषकेतु कहेउ सुन राजा ❋ कीन्हेउ भला कर्णको काजा॥
दोहा—सभा मांझ द्रौपदि कहँ, पराभाव सो दीन्ह।
एहि पापते तजेउ तनु, उन्हके गति तुम कीन्ह॥
पार्थ बाण से गङ्ग बहाये ❋ ताते पिता धर्म पद पाये॥
सुने भीम राजा सुख पाये ❋ मेघबरन तब बात सुनाये॥
भीम संग हम जैहैं तहां ❋ भद्रावती नगर है जहां॥
कै प्रण तेज अश्व लै आऊं ❋ धर्मराज को यज्ञ कराऊं॥
भीम पितामह कर्ण को नन्दन ❋ करि रण उत्कट हेतु तुरङ्गन॥
सुनि हर्षित भे धर्मकुमारा ❋ यज्ञ भेद बहु पुराय प्रकारा॥
केते बिप्र कौन मति दाना ❋ केने घृत साकल्य प्रमाना॥
ब्यास कहे मुनि बीस हजारा ❋ लाख कलश है घृत बिस्तारा॥
तीन लाख साकल्यहिं लाई ❋ इन्दु कुँदन के अश्व बनाई॥
पीत पूँछ अरु बपु है श्यामा ❋ चैत्र पूर्णतिथि कीजे कामा॥
कञ्चन पत्र बांध शिर ताही ❋ अपने नाम यज्ञपति चाही॥
दोहा—हम छोड़ा है अश्व यह, जगतबीर कोउ और।
घड़ी एक जो गहि रखे, जीतब सो प्रण ठौर॥

करे अश्व लघुशङ्का जहाँ ❀ सहसन गऊ दान दे तहाँ ॥
एकहिं सेज द्रौपदी साथा ❀ साधन योग करो नरनाथा ॥
यावत अश्व गेह नहिं आवे ❀ तावत भोजन विप्र करावे ॥
बीचहि खड्ग राखिके राजा ❀ बर दिवस सोवत यह साजा ॥
नारी पासे मन जब जाई ❀ वही खड्ग चितवे तब राई ॥
अश्वमेध इन्द्रहि मन धारा ❀ स्त्री व्रत पाली नहिं पारा ॥
सत्यकेतु नाम सुनु राऊ ❀ अश्वमेध के सबै नशाऊ ॥
व्यास गये कहि अपने थाना ❀ राजा करहिं हरी को ध्याना ॥
सुनत राउ तब चिन्ता करै ❀ कठिन बरत आगा हरि धरै ॥
अभ्यन्तर आये भगवाना ❀ द्वारपाल ते कहे बखाना ॥

दोहा—कहो जाय राजा पहँ, आये श्री भगवान ।
सबै जानिकै आनहीं, कीजै जाय बखान ॥

प्रतीहार तब कह हरि पाहीं ❀ तुव अटकाव कि आज्ञा नाहीं ॥
कह कृष्ण रात्री परमाना ❀ कौने मत हम करों पयाना ॥
सुनि प्रतिहार तहाँ तब गयऊ ❀ जहाँ धर्म नृप स्थित रहेऊ ॥
सुनि सब बचन बन्धु हरषाये ❀ सहित द्रौपदी बाहर आये ॥
[illegible] हरिहि कियो परणामा ❀ चारों बन्धु मिले सुखधामा ॥
[illegible] बचन तब राजा कहेऊ ❀ बिना मम तव मनमहँ अहेऊ ॥
[illegible] रानी मिलि आई ❀ भे अचिन्त तब पांचो भाई ॥
[illegible] भाषेउ पातक ❀ सदा भक्त के हो तुम रक्षक ॥
[illegible] तौ लज्जा तारा ❀ दुर्गा छल मन बिस्तारा ॥
[illegible] भक्त के रक्षा कारण ❀ जगमाहँ कीन्हे तनु धारण ॥

दोहा—सावधान बैठे सबै, परम हर्ष मन कीन्ह ।
धर्मराज नृप समझिकै, हरि सन भाष लीन्ह ॥

यज्ञ हेतु हम चिन्ता कीन्हा ❀ नाथ आयके दर्शन दीन्हा ॥
[illegible] हम कियो बिचारा ❀ जो आज्ञा करे नन्दकुमारा ॥

कृष्ण कहे राजा के पाहीं ❋ जगत माहँ ऐसा को आहीं ॥
जाना मन्त्र भीम यह दीन्हा ❋ उदर भरे कर उद्यम कीन्हा ॥
दैत्यनिसंग भयो मन भङ्गा ❋ कामो बिबश सदा शुखरंगा ॥
जगत माहिं जो धर्म न जाना ❋ महाबीर भक्तन परमाना ॥
जानत नाहिं आप बल वाहीं ❋ भक्त बीर सब देखा नाहीं ॥
रामचन्द्र यज्ञहिं निरमाये ❋ चतुरङ्गिणि को संग पठाये ॥
शुक्रमती इक ग्राम अहेऊ ❋ तहँ श्रुतदेव सु राज रहेऊ ॥
तहँ भा युद्ध महाभयकारी ❋ पुनि बालक दोउ शरननमारी ॥

दो०—चारों बन्धु बधे रण, कुश लव दोऊ बीर ।
तुम कत यज्ञ करे चहो, अस भाषे यदुबीर ॥

को तुम को तो रक्षा करिहै ❋ को रण रचे अश्व को हरिहै ॥
सुनिकै भीम कहे तब बानी ❋ अस कस भाषहु शारँगपानी ॥
तोर ध्यान प्रथमे मैं गहे ❋ पाछे मन्त्र राजपहँ कहे ॥
लम्बोदर तुमहीं जग माहीं ❋ जगत माहँ कोउ दूसर नाहीं ॥
तुम तौ स्त्री के बश अहो ❋ कहते कहत मौन ह्वै रहौ ॥
धर्मराजको भ्रम उपजायो ❋ काहित काज नाश करवायो ॥
अश्वमेध हम तो अब करिहैं ❋ कैसे गोत्र पाप से तरिहैं ॥
जेते बीर जगत में आहीं ❋ मारो सबहिं महारण माहीं ॥
तुम हमार सर्बस हो स्वामी ❋ तुम सबही के अन्तर्यामी ॥
सुनिकै कृष्ण हर्ष तो पाये ❋ तब राजा ते हर्ष सुनाये ॥

दोहा—धर्मराज ते श्रीपती, भाषे बात बिचार ।
पातक जो है गोत्रबध, हम कहँ देहु भुआर ॥

मैं तो पाप करों सब भारी ❋ सुखते कीजै राज्य अघारी ॥
भीम तबहिं इक उत्तर दीन्हा ❋ पातक कौन आपु हरिलीन्हा ॥
पाप देहिं जो तुम कहँ राजा ❋ पाप बढ़े अरु धर्म अकाजा ॥
महापुराय मख में जब होई ❋ तुम कहँ राजा देहैं सोई ॥

हम तो यज्ञ करौं प्रण ठानी ❋ करिहौं यज्ञ अश्व धन आनी ॥
बृषकेतू जो कर्ण कुमारा ❋ मेघबर्ण सुत प्राण अधारा ॥
मोरे संग देय जन जैहैं ❋ श्यामकर्ण अश्वहि लै ऐहैं ॥
करौं युद्ध घोड़ा लै आवों ❋ तौं बृकओदर नाम धरावों ॥
धन जन सब जो है नृप पाहीं ❋ लाओ शीघ्र हस्तिपुर माहीं ॥
तुम सहाय जो हो जगतारण ❋ तो हम भरमहिं कौने कारण ॥

दोहा—सुनिकै हर्षे जगतपति, हर्षित आज्ञा दीन्ह ।
अश्वमेध परबश यह, सूक्षम भाषा कीन्ह ॥
जाको सुन जनमेजय, नाशै पाप पहार ।
सोई यज्ञहिं कियेते, नर उतरै भवपार ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाअश्वमेधयज्ञकथनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

सुनि राजा सो कथा प्रमाना ❋ यामिनिगत तो भये बिहाना ॥
मेघबर्ण अरु भीम सयाना ❋ बृषकेतू संग कीन्ह पयाना ॥
कुन्ती नृप औ श्रीभगवाना ❋ इन सब कहँ कीन्ह्यो परणामा ॥
माता कछु सम्मर लै दीन्हो ❋ भीमसेन तब भोजन कीन्हो ॥
पुनि माता कछु औरो लाई ❋ मेघबर्ण कहँ दीन्ह बनाई ॥
भीम कहे तब श्रीपति पाहीं ❋ यौवनाश्व नगरी हम जाहीं ॥
तुम रक्षा परजाके करहू ❋ सत्यबात यह हियमहँ धरहू ॥
यह कहिके तीनों जन जाई ❋ यौवनाश्व पुर चले चलाई ॥
तीनोंजना एक सँग भयऊ ❋ यौवनाश्व के नगरहिं गयऊ ॥
ग्राम रन्ध्र पुष्करणी अहे ❋ बन उपबन चहुँदिक् लहलहे ॥
पुष्पबाटिका देखेउ जाई ❋ अनुदिन पुष्प रहे तहँ छाई ॥

दोहा—पर्वत एक बिराजही, यज्ञ वेद पुर माहँ ।
तेहि पर पै तीनों जने, बैठे हय के चाहँ ॥

जब दोपहर दिवस भयो भारी ❋ जलके हेतु अश्व पगुधारी ॥

श्यामकर्ण हय चालत आव ❀ चँवर छत्र तापर छबि छावै ॥
बहुतक दल हय गज सँगआये ❀ देखत मेघवर्ण मन लाये ॥
भीमसेन सन कह तब बाता ❀ आनो जाइ अश्व सख्याता ॥
यह कहिकै तुरन्त चलिभये ❀ गिरि ते कूदि भूमिपर गये ॥
राक्षस माया तब सञ्चारा ❀ दश दिशि करे लागु अँधियारा ॥
पाहन वर्षा अधिक चलावे ❀ देखत लोगन दिशा गमावे ॥
देवन दूत स्वर्ग महँ गयऊ ❀ इन्द्र पाहँ जाकर सो कहेऊ ॥
दैत्य एक माया परकाशा ❀ जगत चहत है करै बिनाशा ॥
दूसर दूत सुरेश पठाये ❀ मेघवर्ण ताकहँ समुझाये ॥

दोहा—मेघवर्ण पुनि कहेउ तब, तुम शङ्कितकेहि काज ।
लै जैहैं हम अश्व तहँ, यज्ञ धर्म के राज ॥

सुनत दूत गवने सचुपाये ❀ सुनासीर कहुँ जाय जनाये ॥
तब सुरेश मन माहँ थिराना ❀ अश्वमेध सुनि बहु हर्षाना ॥
मेघवर्ण माया संचारा ❀ सबवीर भये शिथिल अपारा ॥
पाछे अश्व हरण तो करे ❀ पठोर माहँ तबै पगु धरे ॥
देखे भीम हर्ष तब माने ❀ राजा दल सब शङ्का आने ॥
राजा दल देखे तब धाये ❀ राक्षस तब वृषकेतु सिधाये ॥
भीमन काहँ हांक जब दीन्हा ❀ सब वीर यह भाषण कीन्हा ॥
काह नाम ओ जात तुम्हारा ❀ नाम सो तो पाहँ हमारा ॥
तब वृषकेतू कहा रिसाई ❀ युद्धसमय का जाति जनाई ॥
युद्ध करो या भागो भाई ❀ नाम गोत्रका करो रुगाई ॥
तब वीरन सब रण दिय ठाना ❀ महामार नहि जात बखाना ॥

दोहा—महाबली सब सैन्य के, जलद सम वर्षत बान ।
कोटि बीर शर वर्षते, कर्ण कुँवर पर आन ॥

कर्णपुत्र तब बाण चलाये ❀ अगणित बीरहि मारि गिराये ॥
भो वीर पुरुषारथ देखे ❀ जुझे वीर रण माहँ अलेखे ॥

राजा आगे परी पुकारा ❀ हरे अश्व सबदल कहँ मारा ॥
राजा कह केता दल अहै ❀ हम ते रण करने को चहै ॥
धारन कहै देवता अहे ❀ तीन बोर हैं सब तब कहे ॥
यौवनाश्व नृप तहँ पगु धारा ❀ और चले सब राजकुमारा ॥
कर्णपुत्र को राजा देखा ❀ बालक देखत अचरज पेखा ॥
राजा पूछा कहो कुमारा ❀ नाम गोत्र का अहै तुम्हारा ॥
सुने कुँवर तब कहे बिचारा ❀ कश्यप गोत्ररू कर्णकुमारा ॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❀ ताते अश्व लेन कहँ आये ॥

दोहा—यौवनाश्व तब अस कहेउ, तुम्हरे तौ रथ नाहिं।
रथ लीजे मम पास से, करौ युद्ध रणमाहिं ॥

कर्ण पुत्र तब कियो बखाना ❀ मैं तो रथ को युद्ध न जाना ॥
राजा पुनि कह बाण चलैये ❀ कर्ण पुत्र जब यह सुनि पैये ॥
तुम तौ वृद्ध अहो मैं ज्वाना ❀ तुम्हरे दरश करौं भगवानो ॥
राजा तब दश बाण चलाये ❀ कर्ण पुत्र निज शरन उड़ाये ॥
तीन बाण राजा को मारा ❀ निष्फल कीन्हे सबै भुवारा ॥
अर्धचन्द्र कुँवर तब छाँटे ❀ धमर छत्र गुण शारँग काटे ॥
तब राजा धनु पै गुणधारा ❀ साठ बाण वृषकेतुहिं मारा ॥
रक्तबाण कुँवर तब लीन्हा ❀ तीनबाण रिसकरि तजिदीन्हा ॥
सारथि अश्व तजे तब प्राना ❀ जूझे राजा सब दल जाना ॥
अग्नि पवन के बाण चलाये ❀ उड़िकै सैन्य अग्नि जरिजाये ॥

दोहा—तब राजा दूसर रथहि, क्रोधित भये सवार।
वारि बाण तब भूपमणि, तहँ जो कीन्ह प्रहार॥

ताते सब जो अग्नि बुताये ❀ बाणन कर्ण कुमार छिपाये ॥
भीमसेन तब देखन पाये ❀ राजा महामार मन लाये ॥
कर्णपुत्र तब चक्र चलाये ❀ काटे बाण बिलम्ब न लाये ॥
पुनि इकबाण नृपति कहँ मारा ❀ क्रोधित भो मद्रेश भुवारा ॥

मारेउ बाण कर्णसुत राऊ ❋ कर्ण पुत्र को मूर्च्छा आऊ ॥
देखत भीम क्रोध तब पाये ❋ गहि कर गदा क्रोध करिधाये ॥
काह कहब राजा से जाई ❋ यह कहि भीम चले रिसिआई ॥
धावत जँघ ते पवन चलाये ❋ हय गज रथ पैदल उड़ि आये ॥
बहुतै गज तहँ भये सँहारा ❋ जैसे पुराय पाप करु छारा ॥
यौवनाश्व राजा को मारा ❋ ताको नाम सुबेश उदारा ॥

दोहा—कुँवर हांक तब भीम को क्रोधित दीन्हे आय।
गदा घाव तब धायके, मारे भीम घुमाय ॥

क्रोधित भीम सेन फिरि आये ❋ सो बैरी फिर भूमि गिराये ॥
तब सुवेश आपुहि सम्भारा ❋ भीमसेन को भूमि पछारा ॥
भीम उठाये गजते भारे ❋ राजपुत्र के ऊपर डारे ॥
मार्यो गदा घाव भूवारा ❋ पड़े दोऊ रणभूमि मँझारा ॥
राजा सुनो कथा अब आगे ❋ कर्ण पुत्र मूर्च्छा ते जागे ॥
यौवनाश्वको मारेउ बाना ❋ पाँच शरन नृप मोहन जाना ॥
राजा मूर्च्छि परे मैदाना ❋ कर्ण पुत्र धर्मी करि ज्ञाना ॥
फंट छोड़ि अंबर तब लीन्हा ❋ कुँवर पवन तब राजहिं कीन्हा ॥
भाषे जो भक्तो भगवाना ❋ तब राजा पाये जिवदाना ॥
यहि अंतर राजा तब जागे ❋ रहु रहु कै तब बोलन लागे ॥

दोहा—चेत पाय देखा तबै, कुँवर डोलावै पौन ।
देखत लज्जा भै नृपहिं, तब कीन्हा है मौन ॥

गल लगाय तब भेंटा राऊ ❋ तुमहीं हमरे प्राण बचाऊ ॥
सदा धर्मरत तव पितु रहे ❋ ताके पुत्र कुँवर तुम अहे ॥
देश राज धन प्राण तुम्हारा ❋ धन्य बीर हो धर्म भुवारा ॥
अवरन केर नहीं है कामा ❋ चलो तहाँ जहँ भीम सुठामा ॥
यौवनाश्व औ कर्ण कुमारा ❋ भीम पाहँ हर्षित पगुधारा ॥
कहे जाय तब युद्ध न काजू ❋ कर्ण पुत्र मोहिं रखेउ आजू ॥

प्रथम किये मूर्च्छित मैदाना ❀ तेहि पीछे दीन्हो जी दाना ॥
अब है युद्ध काज कछु नाहीं ❀ चलो भीम मेरे पुर माहीं ॥
अब मेरे मन उपजो ज्ञाना ❀ दर्शन जाइ करब भगवाना ॥
दश सहस्र गज श्वेत जु अहै ❀ लै चल मखको राजा कहै ॥

दोहा—राजा यज्ञ आरम्भेउ, रक्षक हम को जान।
यहि प्रकारते प्रीतिकरि, पुरकहँ कीन्ह पयान॥

प्रीति भये तब देखन पाये ❀ मेघबर्ण हय लेकर आये ॥
नगर माहँ कीन्हा परबेशा ❀ अन्तःपुर पठयउ सन्देशा ॥
आरति लै रानी करु साजा ❀ अन्तःपुर आये तब राजा ॥
राजा कहेउ सुनो तुम रानी ❀ बीरन के आरति करु आनी ॥
कराठ शत्रु जो अहै हमारा ❀ सो तुम राखो कर्णकुमारा ॥
पीछे भोजन पान कराये ❀ हर्ष होय तब भोजन पाये ॥
शयन किये रैनी संख्याता ❀ गत भइ रैन भये परभाता ॥
राजा उठि सेवकहि हँकारा ❀ सबते बात कहे संचारा ॥
दल साजन को कर मनलाई ❀ हर्षित सब हस्तिनपुर जाई ॥

दोहा—नगर लोग सब जेते, दलबलहयगजसाथ।
नगरहाइतनापुरचले, जहँ दर्शन यदुनाथ॥

यौवनाश्व माता के पासा ❀ जाय तहाँ ये बचन प्रकासा ॥
माता चली हस्ति पुर माहीं ❀ कृष्णाचरण जेहि पुर में आहीं ॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये ❀ देश देशके नृप सब आये ॥
सदा धर्म रूपहि भगवाना ❀ जाके चरण गंग परमाना ॥
माता चलो ताहि पुर माहीं ❀ जहँ बस नृपति युधिष्ठिर आहीं ॥
तब माता कहि बचन सुनाई ❀ कारण कवन तहां को जाई ॥
देव धर्म नाहीं हम जाना ❀ वहाँ गये मम देश नशाना ॥
गोरस अन्न दासि अरु दासा ❀ गये हमारे होहिं बिनासा ॥
कृष्ण युधिष्ठिर का दोउ करैं ❀ आपन पुर मिथ्या परिहरैं ॥

जैसे गृह वे हैं मन दीन्हा ❋ तैसे गृह आपन मन कीन्हा ॥

दोहा—बहु प्रकार राजा कहे, माता मानति नाहिं ।
बाँधि मातु कहँ राव तब, डारा डोली माहिं ॥

यहि प्रकार माता कहँ लीन्हा ❋ तब राजा चलबे मन दीन्हा ॥
पुरके लोग चले सब सङ्गा ❋ नृपति सदल हिय भरे उमंगा ॥
नाना धन जेते गज श्वेता ❋ चले हर्ष नृप सबै सचेता ॥
दिवस पाँच तो पंथ सिराना ❋ देश हस्तिना आय तुलाना ॥
योजन एक हस्तिपुर रहे ❋ राजा पावँ भीम तब कहे ॥
इहाँ रहा राजो तुम भाई ❋ मैं यह बात जनावों जाई ॥
यह कहिके बृकओदर गयऊ ❋ हस्तिनपुर प्रवेश तब भयऊ ॥
चारों बन्धु और भगवन्ता ❋ इनकहँ मिलेउ सप्रेम तुरन्ता ॥
भाषेउ तब यह बात बुझाई ❋ अश्व सहित लै आयउँ राई ॥
राजा सब परिवार समेता ❋ आयउ तव दर्शन के हेता ॥
दरश चहै प्रभु तव चरननकी ❋ जो तारन सुर नर मुनिजनकी ॥
तब नृप धर्मराज अस कहई ❋ जाहु भीम द्रौपदि जहँ अहई ॥
जाय कहहु अस बयन हमारा ❋ तुम द्रुत नवसत करहु शृंगारा ॥
भूषण अलङ्कार सजु अङ्गा ❋ बेगि चलहु कुन्ती के सङ्गा ॥
भीमसेन द्रौपदि पहँ गये ❋ पूछा कुशल कहन तब लये ॥
कहेउ भीम सब कुशल हमारा ❋ यौवनाश्व मम पुर पगुधारा ॥
परभावति अति नैन बिशाला ❋ सखो सहस दश संग रसाला ॥

दोहा—तुरै सहित सब आयऊ, भूषण करहु बनाव ।
दरश तुम्हारो चहत हैं, भेटहु आगे जाव ॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी ❋ बिनु शोभा नहिं देव मुरारी ॥
यहि अवसर नहिं यादवराई ❋ विनु गोबिन्द नहिं शोभापाई ॥
तब द्रौपदी भीम से कहीं ❋ हैं हरि निकट गये नहिं अहीं ॥
इतना कहत भीम संचरा ❋ नृप के पास देखि हरि खरा ॥

चले नृपति संग चारो भाई ❋ कृष्ण सहित शोभा बनिआई ॥

दोहा—रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर, गजचढ़ि चारो भाइ ।
चले नकुल सहदेव सह, पार्थ भीम समुहाइ ॥

यौवनाश्व दल साज बनाई ❋ हय बनाय कर अग्र चलाई ॥
धर्मराज पै अमरहुँ जाई ❋ हनि निशान जनु घन घहराई ॥
यौवनाश्व दल गरुअ भुआरा ❋ महि डगमगै सैन्य के भारा ॥
आय दोउ दल सम्मुख भयऊ ❋ धर्मराज तब देखन लयऊ ॥
देखि नृपति मन कीन्ह बिचारा ❋ बड़े नृपति हैं गरुअ भुआरा ॥

दोहा—यौवनाश्व कहँ देखा, सुत पत्नी परिवार ।
तब रथ से उतरे नृपति, दोऊ मिले भुआर ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञभाषाकृतेयौवनाश्वधर्मराजसम्मिलनोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

बैशम्पायन ऋषि तब आगे ❋ जनमेजय सन भाषन लागे ॥
यौवनाश्व तब लागै पाऊ ❋ आशिष दीन्ह युधिष्ठिर राऊ ॥
तुम मोरे जस चारो भाई ❋ मिलेउ कृष्ण नृप दीन्ह दिखाई ॥
धरहु चरण उर करु सेवकाई ❋ जेहि ते अहै हमार बड़ाई ॥
यौवनाश्व प्रणयउ यदुबीरा ❋ भो निर्मल बहु शुद्ध शरीरा ॥
नमस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा ❋ नृप द्रौपदी सह आशिष दीन्हा ॥
धन्य तुरँग सब कहबे लयऊ ❋ जेहिहित तीन बीर चलिगयऊ ॥
धनि वृषकेतु कर्ण के बारा ❋ जेहिते भयउ सुखी परिवारा ॥

दोहा—भावी धन्य हमार यह, पूर्ब पुण्य बहुकीन्ह ।
दर्शन नयन जुड़ानेउ, नृप ये कहिबे लीन्ह ॥

पुनि अर्जुन माद्रीसुत आये ❋ भे अनन्द तब अंकम लाये ॥
अर्जुन नमस्कार तब कियऊ ❋ अस्तुति करि तब कहबे लयऊ ॥
हमरे तुम जस धर्म नरेशा ❋ अतिगरिष्ठ जस देव महेशा ॥
धन्यदेश जहँ बसहु नरेशा ❋ हमरे भाग्यन यहाँ प्रबेशा ॥
पुनि सुबेश पारथ से मिलेऊ ❋ करि प्रणाम तब कहबे लयऊ ॥

वृषकेतू के कीन्ह बखाना ❀ जिनके करत मिले भगवाना ॥
धन्य तहाँ जहँ बस भगवाना ❀ बिनु गोबिन्द नर प्रेत समाना ॥
हरिसम दुर्लभ और न आना ❀ कृष्ण नाम नित करो बखाना ॥

दोहा-धर्मराय यदुपति सहित, आनँद भये अपार।
मिलकर सब आवत भये, नगर कीन्ह पैसार ॥

पहर एक जब निशिगत भयऊ ❀ दामोदर तब कहबे लयऊ ॥
सुनहु बात इक धर्म कुमारा ❀ यज्ञ काज सब करहु सँभारा ॥
चैत पूर्णिमा गत भो राजा ❀ अब बिशाख शुभ करिये काजा ॥
मास बिशाखतिथिनोमी धरिया ❀ तेहि दिन यज्ञ अरम्भन करिया ॥
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा ❀ यज्ञ करे कहँ यह व्यवहारा ॥
कञ्चा सुबरन सागर पारा ❀ तहँ रह बीभीषण भूआरा ॥
तहँवां से कञ्चन जो आवे ❀ सोइ यज्ञ के यतन करावे ॥
तब राजा मन बिस्मय कीन्हा ❀ कौन पुरुष कहँ यश यह दीन्हा ॥
तब अर्जुन अस कहबे लागे ❀ राजा कहहु हमारे आगे ॥
जेहि कारण तुम बिस्मय करहू ❀ सो आयसु मेरे शिर धरहू ॥

दोहा-तब राजा मन हर्षेउ, हँसिकै बीरा दीन्ह ॥
अर्जुन लीन्हों बिहँसिके, चरण जुबन्दै कीन्ह ॥

कृष्णहिं किय प्रणाम करजोरी ❀ होहु सहाय जगतपति मोरी ॥
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा ❀ बेगि जीत फिरु पाण्डुकुमारा ॥
तब अर्जुन दक्षिणदिशि गयऊ ❀ तहँ यक राक्षस भेटत भयऊ ॥
भाष्यो दैत्य भाजि कहँ जासी ❀ मारों तोहिं मेलिके फाँसी ॥
तब अर्जुन तिष्ठित ह्वै कहई ❀ कौन बीर तैं डाँटत अहई ॥
तब दानव अस कहै प्रचारी ❀ राय बिभीषण के रखवारी ॥
तब अर्जुन किय मन अनुमाना ❀ मारों दैत्य करों यश माना ॥
दैत्य शैल शिर ऊपर छावा ❀ सन्मुख अर्जुन सपदि चलावा ॥
अर्जुन सपदि बाण कर लीन्हा ❀ शैल काटि तो दुइ टुक कीन्हा ॥

दैत्य भाजि लङ्का कहँ गयऊ ❋ हनुमत सों भेटत तब भयऊ ॥
कह दानव सुनु पवन कुमारा ❋ इक क्षत्री बड़ आउ जुझारा ॥
तहँवा सों भागत मैं आवा ❋ तुम्हरे शरणहि जीव बचावा ॥

दोहा—मैं जानत हौं रामहहिं, कीतौ लक्ष्मण आहि।
भगि आये हम तुम पहाँ, जाहु खोजलेहु ताहि॥

यह सुनि पवनतनय मन हर्सा ❋ चलहु साथ नहि कीजे अर्सा ॥
कह दानव सुनु पवन कुमारा ❋ हम नहिं जाउब साथ तुम्हारा ॥
शैल एक मैं उन पर डारा ❋ धनुष टँकरो कीन्ह वे छारा ॥
तिनके डरसे भगि मैं आवा ❋ कैसे मुख मैं उनहिं देखावा ॥
बन्दि चरण दानव गो तहाँ ❋ बीभीषण नृप बैठत जहाँ ॥
तबकहि बचन ताहि समुझावा ❋ बीभीषण सुनि आनँद पावा ॥
तब हनुमत निज मन अनुमाना ❋ पवनतनय तो पवन समाना ॥

दोहा—पवन तनय तब ऊछला, उदधिपार चलिआय।
सेतु बांध जहँ बांधेउ, खड़े हुये पुनि जाय॥

हनुमत कोपि कहे अस बाता ❋ कौन बीर यह आहि बिधाता ॥
पूछ्यो आये तुम केहि कारन ❋ तब कह पारथ लाउ न बारन ॥
कह अर्जुन सुनिये कपि बीरा ❋ हम अर्जुन आहहिं रणधीरा ॥
ब्रह्म सहोदर बध हम कीन्हा ❋ चिन्ता सोइ युधिष्ठिर लीन्हा ॥
बालेउ राज्य छोड़ि बन जाहीं ❋ भारी पाप भये हम पाहीं ॥
छयुनत गये रात सब बीती ❋ चिन्ता नृपहिं भयउ नहिं रीती ॥
ब्यास ऋषै तब पूछै लीन्हा ❋ कारण ताहि यज्ञ उन कीन्हा ॥
तब राजा दोऊ कर जोरा ❋ सुनहु ब्यासमुनि बिनती मोरा ॥
गुरू सहोदर बध हम कीन्हा ❋ भारी पाप हमहि बिधि दीन्हा ॥
कहा ब्यास सुन धर्म सुराजा ❋ त्रेता कियउ राम मखसाजा ॥
रामचन्द्र त्रेता महँ भयऊ ❋ पूर्बिलकथा कहन तब लयऊ ॥
रामचन्द्र रावण बध कीन्हा ❋ ताकारण यज्ञहिं चित दीन्हा ॥

ऐसन यज्ञ तुमहुँ जो करहू ❀ तब यहि पापन ते उद्धरहू ॥
ब्यास ऋषय अस कहिकैगयऊ ❀ तेहिके सेवक बनचर रह्यऊ ॥
रामचन्द्र तब किय अनुमाना ❀ केहिविधि उतरब जलधिमहाना ॥
तीनि दिवस सागर तट रहेऊ ❀ तऊ न पथ सागर तन लहेऊ ॥
तब कोपेउ लछमण बलबीरा ❀ खैंच श्रवण लगि धनु पै पीरा ॥
कर धरि जाम्बवन्त समुझावा ❀ स्वामी उदधि आप चलिआवा ॥
सुनि लछमण मन धीरज भयऊ ❀ ब्राह्मणरूप सिन्धु चलि अयऊ ॥
ऐ स्वामी का अवगुण मोरा ❀ केहि हित बाण शरासन जोरा ॥
हौं सेवक तुव आदि गुसाईं ❀ तुम मारहु मम काह बसाई ॥
तुम जो मोकहँ दीन्ह बड़ाई ❀ उतरहि कपि तो का प्रभुताई ॥
नल अरु नील जो कपिकर बीरा ❀ औ सुग्रीव आहिं रणधीरा ॥
नल अरु नील खेल लरिकाई ❀ वाही समय ब्रह्मऋषि आई ॥
तिन अशीश दीन्हा मनलाई ❀ सिन्धु शिला तोहिं दे उतराई ॥
सो नल नील आहिं तुवसाथा ❀ आज्ञा देहु सुनहु रघुनाथा ॥

दोहा—सो अशीश तिन पाये, कीजे कापर रोख ।
सो आज्ञा इन दीजिये, बांधहिं सागर चोख ॥

तब हनुमत सुग्रीव बुलावा ❀ तुरतआय तिनप्रभु शिरनावा ॥
तब कपि कहा सबहिं समुझाई ❀ गिरि पहार तुम आनहुजाई ॥
तब सब मिलि पहार लै आये ❀ सेतु बाँध तब तुरित बँधाये ॥
रामचन्द्र तब आज्ञा दीन्हा ❀ चले बीर निर्भय मन कीन्हा ॥
यहि मिसु सागर बाँधेउ बीरा ❀ तब तुव लङ्क जरे रणधीरा ॥
सेतुबन्ध चढ़ि जाय न देऊं ❀ मैं हनुमत परतिज्ञा लेऊं ॥

दो०—रामचन्द्र कर सेवक, पवनपुत्र हनुमान ।
रण जीतेउ कौरवदल, देखौं तुव अनुमान ॥

अर्जुन बाण हाथ कै लीन्हा ❀ तब हनुमन्तहि उत्तर दीन्हा ॥
तोहिं राम अतुलितबल दीन्हा ❀ तौ समर्थ मम खोजै लीन्हा ॥

तुम हनुमन्त पवनसुत जाये ❀ बलअनुमान न मोसन आये ॥
कहु सागरहिं करौं जरि छारा ❀ कहु बाणन ते बांधों सारा ॥
कहहु मारि पौरुष तुव चूरों ❀ की तोहिं मारि सिन्धुमहँ बूरों ॥
कोपि बचन जब अर्जुन कहेऊ ❀ हनुमत तब सम्मुख ह्वै रहेऊ ॥

दो० कोपि पूंछ तब फेरा, हनुमत बीर रिसान ।
दोऊ बीर बिचक्षण, दोऊ चतुर सयान ॥

तब अर्जुन धनु शर संधाना ❀ हनुमत सन भाषेउ परमाना ॥
एकहिं बाण समुद्रहिं पाटौं ❀ तब निजनाम धनञ्जय राखौं ॥
तब हनुमन्त कोपि कह बैना ❀ देखब बाण तोर भरि नैना ॥
मोर बांध तैं चढ़िकै देखा ❀ तोर बाण मेरे केहि लेखा ।
तोरां बाण तौ हनुमत बीरा ❀ नातरु सेवक हों रणधीरा ॥
जो तोरे जिय अस मन देऊ ❀ तब अर्जुनहुँ प्रतिज्ञा लेऊ ॥
दोनों बीर पैंज जब किये ❀ डोलेउ नारायण तब हिये ॥
धरे ध्यान तब श्रीभगवन्ता ❀ जहां हुते अर्जुन हनुमन्ता ॥

दोहा—यज्ञविषम जहँ थे हुते, आसन टरु भगवान ।
तबहिं कृष्ण तहँते उठे, भक्तिबश्य भगवान ॥

उठे कृष्ण द्वारका बासी ❀ सबै कृष्ण घट आहिं निवासी ॥
एक रूप राखे मख माहीं ❀ दूसर देह सिन्धु तट माहीं ॥
खैंचेउ बाण शरासन ताना ❀ मारेउ शर पारथ सन्धाना ॥
दोऊ बीर प्रतिज्ञा कीन्हा ❀ कृष्णचरण तब सुमिरे लीन्हा ॥
उदधि पाटिगो आरहिंपारा ❀ कह अर्जुन सुन पवनकुमारा ॥
जो यह पाव तोरु हनुमाना ❀ तौ न छुवों मैं धनु गुन बाना ॥
कृष्णचरित्र तबै यह कीन्हा ❀ बाँध के तरे पीठ प्रभु दीन्हा ॥
तब हनुमन्त कोपि कह बाता ❀ देखब बाँध तोर मैं भ्राता ॥

दोहा—हनूमान बहु कोप करि, उछल बाँध बलबीर ।
जहवाँ हनुमत पग धरैं, हरि तहँ देहिं शरीर ॥

तब हनुमत लज्जित ह्वै गयऊ ❀ दौरि चरण अर्जुन कहँ नयऊ ॥
यहां बहुत जो कञ्चन पावों ❀ तब मैं हस्तीनगर सिधावों ॥
कह हनुमत यह केतिक बाता ❀ सुबरन आनि देहुँ मैं भ्राता ॥
तब अर्जुन कहँ धीरज दयऊ ❀ कहि यह बचन पवन सुत लयऊ ॥
वही ठाम अर्जुनहि बिठावा ❀ आज्ञा लै हनु लङ्कहि आवा ॥
तत्क्षण खोजे कञ्चन मेरू ❀ कञ्चन खोज लेत चहुँ फेरू ॥

दोहा—खोजतबीतेउ तीनादिन, हनुमत मन अनुमान ।
क्रोधित भे तब हनुबली, लङ्का सबै सकान ॥

यह जब भेद बिभीषण पावा ❀ जहां पवनसुत तहवाँ आवा ॥
अञ्जलि जोरि बीनती कीन्ही ❀ कवन काज प्रभु आयसु दीन्ही ॥
तब हनुमन्त कहैं सुनु वीरा ❀ कञ्चा सोन देहु रणधीरा ॥
कहा बिभीषण अञ्जनि पूता ❀ तुम आपुही कीन्ह अजगूता ॥
सगरी लङ्का खोरि जराये ❀ तहँ सो कञ्चन रहे न पाये ॥
एक बात सुनहू हनुमाना ❀ रामचन्द्र सुमिरहु बलवाना ॥

दोहा—हम तुम्हार सेवक अहैं, मोपर बृथा कोहाहु ।
जिउ हमार तुव आगे, जैसे शशि को राहु ॥

यह ता बात पवनसुत सुन्यऊ ❀ परमज्योतिके सुमिरण कियऊ ॥
बाणी यह तब भई तुरन्ता ❀ काहे कोपेउ तुम हनुमन्ता ॥
प्रथम लात कंगुरन मारा ❀ सो खसि परेउ समुद्र मँझारा ॥
सो कञ्चन समुद्र महँ अहई ❀ मांगि लेहु यह बाणी कहई ॥
तबहि विभीषण विदा करावा ❀ तबही चला पवनसुत आवा ॥
डाटि दर्प जो कह हनुमन्ता ❀ देहु रत्न नहिं बाँधु तुरन्ता ॥
ब्राह्मण रूप उदधि प्रगटाना ❀ हनुमत से छल किया महाना ॥
हम नहि जानहि कञ्चन मेरू ❀ काहे कोपि कहत चहुँ फेरू ॥

दोहा—हम नाहिं जानहिं हनुमत, कञ्चन मेरु सुमेरु ।
जो घट मोरे होहि तौ, खोजि लेहु चहुँफेरु ॥

कहि यह सिन्धु हँसो मदमाता ❀ तब हनुमन्त कोपि कह बाता ॥
जैसे लङ्का मैं जो डाहा ❀ तैसे आज समुद्र उछाहा ॥
पवन पुत्र मैं तव हनुमन्ता ❀ नातो कञ्चन देहु तुरन्ता ॥
नातो रारि होइ यहि ठाई ❀ देखिहो आजु मोरि मनुसाई ॥
तब हनुमंत लंगूर उठावा ❀ अवलोकत मीनहु डरखावा ॥
तब कीन्हेउ अजगुत हनुमन्ता ❀ बिधी बिष्णु तब कांपु तुरन्ता ॥

दोहा—देहु मोहिं कञ्चन नहीं, कह अस पवनकुमार ।
ब्रह्मा बिष्णु जु रक्षहीं, तौ मारौं परचार ॥

इतनी बात पवनसुत करिया ❀ सिन्धु डरे मत्स्यहु खर भरिया ॥
कह राघव सुनु सिन्धु गुसांई ❀ इहां मृत्यु हम सब कर आई ॥
देहु सोन सब के जी रहई ❀ राघव अस समुद्र से कहई ॥
कह समुद्र जो है घट तोरे ❀ आनि देहु कस लावहु भोरे ॥
उगलि मीन तब कञ्चन दीन्हा ❀ करन उठाय सिन्धु तब लीन्हा ॥
पवन पुत्र के आगे आवा ❀ करि बिनती हनुमत समुझावा ॥
मैं नहि जानों धर्म दोहाई ❀ क्षमा करहु अपराध गोसांई ॥
राघव मत्स्य कहां तो पावा ❀ सो मोहि आपुहि आनिमिलावा ॥

दोहा—तबहिं पवनसुत हर्ष, कञ्चन लिये सुमेरु ।
आनि दीन्ह अर्जुन कहँ, अङ्कमाल किय फेरु ॥

तब हनुमन्त अर्जुन सन कहेऊ ❀ हम सेवक अब राउर अहेऊ ॥
जहँ सुमिरहु आवे तोहिं पासा ❀ अरु हनुमत यह बचन प्रकासा ॥
जैसे रामचन्द्र के काजा ❀ बिमुख होहिं तो मातुहि लाजा ॥

दोहा—तब अर्जुन सम्बोधेउ, सुनहु बीर हनुमान ।
हमहुँ तुरत अब जाहिंगे; जहँवाँ श्रीभगवान ॥

अङ्कमालिका अर्जुन किये ❀ पुर हस्तिन कहँ मारग लिये ॥
हनूमन्त तब उहवाँ गयऊ ❀ तब अर्जुन हस्तिनपुर अयऊ ॥

कीन्ह प्रणाम पार्थ तब जोई ❀ कृष्ण लीन्ह तब अङ्कमलाई ॥
सुनि कुन्ती तब हर्ष कराई ❀ द्रौपदि सँग लै आरति लाई ॥
राय युधिष्ठिर अङ्कम कीन्हा ❀ सहदेव नकुल चरण शिरदीन्हा ॥

दोहा—पांचौ पाण्डव मुदितमन, कृष्णयुधिष्ठिरराय।
धन्य धन्य तुम अर्जुन, यज्ञ सम्बोधे आय॥

सुन राजा अब कथा प्रमाना ❀ पतिव्रता पर पुरुष न जाना ॥
धर्मराज नृपती सख्याता ❀ पूछे ब्यास ऋषी ते बाता ॥
धर्म अधर्म पुराय अरु पापा ❀ लक्ष्मी गृह कैसे अस्थापा ॥
चारि बर्ण के धर्म प्रमाणा ❀ अपने धर्म केरि निर्माणा ॥
ब्राह्मण क्षत्री शूद्र बईसा ❀ चारों बर्ण धर्म परदीसा ॥
जो जन जाप न होम प्रमाणा ❀ अपने धर्म करै निर्माणा ॥
षट कर्मन विप्रन परमाना ❀ इह सब बिना विप्र कत जाना ॥
दान शौर्य अरु सत्य जुझारा ❀ क्षत्री धर्म याहि परकारा ॥
कृषी बणिज बैश्यहु कर जाना ❀ सेवक धर्म शूद्र परमाना ॥

दोहा—याहि प्रकार सुनु राजा, धर्म कथा परभाव।
रानी धर्म जो राजा, तोहि कहौं अब राव॥

पति आज्ञा सनद्ध रह जोई ❀ पर पुरुषन से रहे अगोई ॥
सासु ससुर की सेवा करे ❀ बीथिन माहि सोचि पगुधरे ॥
स्त्री धर्म इहै परकारा ❀ अब अधर्म जो सुनो भुआरा ॥
कर्मन छहो हीन द्विज जोई ❀ क्षत्री बंश और जो कोई ॥
आपन धर्म जो बैश्य न जाना ❀ दूसर कर्म करे परमाना ॥
शूद्र गर्म उत्तम तै करै ❀ इहै अधर्म रूप संचरै ॥
ये गृह कहँ नारी जो जाई ❀ बिना काज सूनो होराई ॥
पति के आज्ञा नाहिं जो माना ❀ अपर पुरुष ते बात बखाना ॥
बिधवा होके करे शिंगारा ❀ जानहु सब अधर्म केसारा ॥
माता पिता पुत्र नहिं सेवा ❀ चञ्चल पुरुष नारि जो भेवा ॥

दोहा—इहै सकल सुन राजा, कहौं अधर्म उपाय ।
पुण्य पाप औ राजा, सुनो सत्य मन लाय ॥

गुरु को शिष्य जान सम हरी ❋ छेद बेद मन माहँ न करी ॥
है गुरु ब्रह्मा रूप समाना ❋ भिन्न भाव वाको नहिं जाना ॥
सदा पवित्र सुकीरति रहै ❋ माता सम परनारिहि कहै ॥
भिक्षुक नाहीं होत निराशा ❋ कूप तड़ाग बाग परकाशा ॥
येही पुराय जगत महँ सारा ❋ ब्यास कहे सुनु पाराडुकुमारा ॥
पाप कर्म के सुनो बिचारा ❋ गुरु को आनहिं भाव निहारा ॥
हृदय नाहिं सत सुकृत प्रकाशा ❋ परनारी ते सदा बिलाशा ॥
भिक्षुक जन निराश फिरिजाई ❋ ज्ञान धर्म हृदये नहिं राई ॥
तनु अपवित्र सदा जो रहे ❋ मिथ्या बचन सन्त से कहे ॥
गुरू द्रोह पावे न प्रसादा ❋ यह सबते है परम बिषादा ॥

दोहा—यह सब पातक जगतहै, परधन हरु जो कोय ।
सदा पाप मन बसत है, राजा सुनिये सोय ॥

लक्ष्मी को भाषें अस्थाना ❋ सदा पवित्र जौन नर जाना ॥
सात बर्ष कन्या जु कहावै ❋ ताके दान धर्म फल पावै ॥
पतिब्रता नारि जो होई ❋ सदा पवित्र रहति है सोई ॥
द्विज बैष्णव अरु गुरुजन माना ❋ देवालय बहु कर निर्माना ॥
काहू की निन्दा नहिं करहीं ❋ ताके गृह लक्ष्मी संचरहीं ॥
अब सुनु राजा कथा बिछेदा ❋ जहां लक्ष्मी तहाँ न भेदा ॥
जाके सदा जुआ मन भावे ❋ सुरापान में चित्त रमावे ॥
परदारन रति सबै सुहावे ❋ धातुनाम जो सबै चुरावे ॥
पुस्तक तेल घीव अरु धानो ❋ मूल पुष्प फल काठ समाना ॥
अमवस्या संक्रांति सुहावे ❋ एकादशी नारि मनलावे ॥

दोहा—ग्रहणसमयअरुश्राद्धदिन, तियसँगभोगसुहाय ।
देव गुरू नहिं मानहीं, तहाँ न लक्ष्मी जाय ॥

ब्यास कहे राजा के पाहा ❀ यज्ञअश्व आनहु नरनाहा ॥
धर्मराज भीमहि हँकराये ❀ जाहु द्वारका हरिहित भाये ॥
आनहु कृष्ण सहित परिवारा ❀ द्वारावति मधुपुरी मँझारा ॥
सबहि संग लै आवो जाई ❀ राजा भीमहि कहा बुझाई ॥
भीमसेन तब हर्ष प्रमाना ❀ तब द्वारावति कियो पयाना ॥
पहुँचे जाय कृष्ण के द्वारा ❀ जेंवत थे तहँ नन्दकुमारा ॥
बहुबिध भोजन परसे आनी ❀ पवन करत चारों पटरानी ॥
जाम्बवती अरु रुक्मिणि बाला ❀ सतिभामा लक्ष्मणा रसाला ॥
जाम्बवती तब हास्य बखाना ❀ नँदगृह भोजन भूलेउ कान्हा ॥
क्षीर पियत बन महँ यदुराई ❀ सो सब चितसे दीन्ह भुलाई ॥

दोहा—कौतुकनारी करत तहँ, सो नाहिं कीन्ह बखान ।
तेहि अवसर में भीम तब, तहँ को जाय तुलान ।

तब सतिभामा हरिते कहे ❀ आये भीमसेन तो अहे ॥
इहाँ न आवन दीजे नाथा ❀ बूझे भीम कहत तब गाथा ॥
कौतुक भीम करन तब लागे ❀ ठाढ़ होय आँगन महँ आगे ॥
कैधों अशुचि होउँ भगवाना ❀ कैधों मैं पापी अज्ञाना ॥
कहा सोहाई हरिके आहे ❀ एसा काम कीन्ह जो चाहे ॥
जो वाकहँ हम देखन पावें ❀ नासा श्रवण हीन करवावें ॥
जो कछु अटके कराठ तुम्हारे ❀ देउँ गदा ते बेगिहिं टारे ॥
कौतुक सुने हर्ष भगवन्ता ❀ हँसिके भीमहिं कहे तुरन्ता ॥
आवो भीम जु भोजन करहू ❀ मनमें कछु रोष नहिं धरहू ॥

दोहा—भीमसेन तब भाषेउ, जो तुम भये भुआर ।
जानो हरि हम जेंयमें, आपुन को अहार ॥

सुनिकै कृष्ण हर्ष मनलाये ❀ बाँह गही भीमहि बैठाये ॥
भोजन पान तुरित करवाये ❀ किय आचमन परमसुख पाये ॥
बैठे भीम निमन्त्रण दीन्हे ❀ बाँचेउ कृष्ण हर्ष तब कीन्हे ॥

तब श्रीपति अक्रूर बुलाये ❋ पुनि प्रद्युम्न अनिरुद्ध मँगाये ॥
कृतबर्मा तुरन्त हँकराये ❋ सुनि सात्यकी सारथी धाये ॥
सबते कहा कृष्ण यदुराई ❋ साजहु दल हस्तिनपुर जाई ॥
बाजिमेध सुयज्ञ परवाना ❋ देखहु जाय ताहि अस्थाना ॥
सुनिकै सबहि हर्ष तो पाये ❋ आगे पुरके लोग सिधाये ॥
बर्ण बर्ण हय चढ़ि सब धाये ❋ श्वेत बाजिपर श्रीहरि आये ॥

दोहा–बर्ण बर्ण सब हय चले, कौतुक होत अपार ॥
बल बसुदेव बुझायकै, भाषे नन्दकुमार ॥

रक्षा करो नगर के माहा ❋ रहो द्वारका कहो यदुनाहा ॥
तब बसुदेवजु बोलन लागे ❋ प्रेम अर्थ श्रीपति के आगे ॥
साधूलोग धर्म जो जाना ❋ तबतो सँग लीजै भगवाना ॥
नारीवश कामीजन होई ❋ दुष्ट लोग जेतिक हैं सोई ॥
इन्हके संग गवन जनि करहू ❋ बचन मोर तुम हिय में धरहू ॥
यह कहिके तब बिदा कराये ❋ कृष्ण चलेउ बहु हर्ष बढ़ाये ॥
रानी सबै कृष्ण के सङ्गा ❋ हर्षित गात चले श्रीरङ्गा ॥
भोम करत हाँसी मग माहीं ❋ देखन बहुत नारिके पाहीं ॥
बर्ण बर्ण सब चलिभे तहाँ ❋ आये एक सरोवर जहाँ ॥
कुञ्ज अनेक हंस बहुताई ❋ नाना भँवर तहाँ गुणनाई ॥

दोहा–कौतुक प्रेमकथा हरी, कहे रुक्मिणी पाँह ।
भानु अस्त जब लीन्हहै, सदा भँवर रस चाह ।

निशिके माँह हर्ष तब पावे ❋ प्रातबिकसि के पतिहिं दिखावे ॥
श्रीके मन थिरना रहे ❋ सुनि प्रत्युत्तर रुक्मिणि कहे ॥
यहां न पक्षपात कछु राखों ❋ सत्यबचन प्रभु तुमसन भाखों ॥
भौंरा तो बालक सम अहै ❋ माता के हिय भीतर रहै ॥
बालक सम रोदन सो करै ❋ माता हिय अन्तर संचरै ॥
प्रेम सहित सुत गोद लगावै ❋ प्रीति हेतु मन चञ्चल धावै ॥

जब रुक्मिणि यह बात जनाई ❀ सुनतहिं कृष्ण परमसुख पाई ॥
रहे रात भरि हरि पुनि तहाँ ❀ अनुपम पाथ सरोवर जहाँ ॥
तबहिं चले आये यहि भाँती ❀ मिले हरी के बाल सँघाती ॥

दोहा—नाना कौतुक सभा सब, करत श्याम को देख ।
परमअनन्दित हर्षहिय, आदि सखा सबपेख ॥

पाछे सब गोपी तब आईं ❀ हर्षित दर्श कृष्ण को पाईं ॥
नाना कौतुक भाव बनाई ❀ चले अनेक संग मन लाई ॥
सबै संग मिल चल भगवाना ❀ तब यमुनातट आय तुलाना ॥
तहँ उतरे प्रभु श्रीयदुराई ❀ नगर लोग सब भेंटेउ आई ॥
ब्राह्मण अरु बन्दोजन नाना ❀ पावन गुण गावत सबिधाना ॥
पुर नारी देखहिं घनश्यामा ❀ सन्यासी को करैं प्रणामा ॥
होके सावधान इत रहो ❀ धर्मराज को पुर महँ कहो ॥
निशि भो बिगत प्रात जब भये ❀ सबै राखि हरि अंक्रूत लये ॥
अश्व चढ़े सब जन ले साथा ❀ पुर हस्तिन गौने यदुनाथा ॥

दोहा—नाना कौतुक अस्तुति, पन्थ माहँ बिस्तार ।
बहुत होत भये नाटक, सुक्षम किया बिचार ॥

इति श्रीमहाभारते अश्वमेध यज्ञकृतेकृष्णराजा सन्मिलनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

बैशम्पायन कथा सुनाये ❀ राजा गृह तो श्रीपति आये ॥
तब अन्तःपुर गे यदुराई ❀ राजा देखि परम सुख पाई ॥
धृतराष्ट्रक अरु बिदुर बन्धुगन ❀ कृष्ण मिलेउ पारथ सहसबजन ॥
भेट कृपाचार्यहि से कीन्हा ❀ धर्मराज तब पूछन लीन्हा ॥
आये संग बंश परिवारा ❀ कहे कृष्ण सब आउ भुआरा ॥
पिता और हलधर को तोहीं ❀ रक्षाको राखो पुर माहीं ॥
सुने धर्म राजा सुख पाये ❀ अन्तःपुर तो श्रीपति आये ॥
कुन्ती और सुभद्रा भेटी ❀ पञ्चाली भेटी दुख मेटी ॥
पीछे धर्मराज पहँ आये ❀ धर्मराज अर्जुनहि बुलाये ॥

कुन्ती आदिक जेतो नारी ❀ निपुण काज कर कर शृंगारी ॥

दोहा—सबै संगलै चालिये, जेहि थल सब यदुबंश ।
धर्मराजके बचनका, सब नर करहिं प्रशंश ॥

चले सबै संगहि हरि लीन्हे ❀ आगे सबन अश्ववकरि लीन्हे ॥
राजा चले सबै दल सङ्गा ❀ नारी सब तौ परम अनङ्गा ॥
आये सबै यमुन तट जहां ❀ सब यदुबंशी उतरे तहां ॥
देवकि और रोहिणी आई ❀ कुन्ती चरण परी सो जाई ॥
रुक्मिणि अरु सतिभामानारी ❀ कुन्ती चरण परीं ब्यवहारी ॥
पांचाली हरिजन तेहि परशी ❀ यहिपरकार त्रिया सब दरशी ॥
सतिभामा परिहास कर तहां ❀ परम कथा सतिभामा कहा ॥
पञ्च पुरुष बश तुम कस कीन्हा ❀ तब पञ्चाली यह बर दीन्हा ॥
तुम कुछ बोल हरी ते कहा ❀ कैसे पुरुष कीन्ह बस चहो ॥
आपन तन मन दीजै वारी ❀ तबहिं कन्तबश करै सो नारी ॥

दोहा—एक पुष्पके अर्थ तू, सखिकै दीन्हेउ कन्त ।
कैसे प्रीतम होत बश, मुँहकी प्रीति अनन्त ॥

यहिप्रकार ते कौतुक नाना ❀ सखिन सबै आपन हठाना ॥
सतिभामा देवन सन कहा ❀ करन अश्वपूजन सब चहा ॥
देवन कहा कृष्ण के पाहा ❀ श्रीहरि कहा धर्म नरनाहा ॥
मातु अश्व को पूजन चहैं ❀ आज्ञा कहा नरायण कहैं ॥
धर्मराज सब बीर बोलाये ❀ समाधान कै सब समुझाये ॥
त्रिया अस्व पूजो घर आवैं ❀ तब तुव कार्य पूर मन भावैं ॥
तब बीरन सब साज बनाये ❀ श्यामकर्ण के संग सिधाये ॥
सब जब अश्वहि पूजन लागी ❀ कौतुक प्रेम हर्ष शुभ भागी ॥
गो अनुशल्य तहां बिकराला ❀ जहां अश्व को पूजैं बाला ॥
कृष्णहिं बधौं शाल महँ आई ❀ लेउँ बैर मारौं यदुराई ॥

दोहा—यह बिचारिकै राक्षस, घेरेउ जाय तुरङ्ग ।
शोर भयो त्रिययूथ महँ, बीर भये सब भङ्ग ॥

अश्व बांधि वह हमहीं राखा ❀ समाधान अपने बल भाषा ॥
कृष्ण कहे पारथ ते बाता ❀ हरे अश्व सब के सख्याता ॥
महा गर्ब करि यह लै गयऊ ❀ आजुकाल दैत्यन यह भयऊ ॥
धर्मराज से कह ब्रजराजा ❀ अश्वहरन से मैं मोहिं लाजा ॥
मरहिं बीर तुव हारहिं क्षत्री ❀ योवनाश्व क्षत्री पति अत्री ॥
अश्व लीन्ह अब का बरु चहिये ❀ ताकारण सबही ते कहिये ॥
तब श्रीपति बीरा कर लीन्हे ❀ क्षत्रिनशीरा नीच तब कीन्हे ॥
काहूके साहस नहिं चीन्हें ❀ कामदेव तब बीरा लीन्हें ॥
मैं गहि अश्वक्षणक महँ लावों ❀ कामदेव तब नाम कहावों ॥
कामदेव चढ़ि रथ पर धाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र सजवाये ॥

दोहा—प्रदुमन केरे हाथ तब, बीरा श्रीपति दीन्ह ।
बीर सबै चुप भवन गे, वृषकेतुहि सँगलीन्ह ॥

कर्णपुत्र रथ चढ़िकै धाये ❀ कामदेव के साथहि आये ॥
हाँक दीन अरु शंख बजाये ❀ दैत्यराज सुनि क्रोधित धाये ॥
रहु रहु काम कहे जब बाता ❀ कर्णपुत्र देखेउ सख्याता ॥
तब अनुशल्य काम परचारा ❀ बहु प्रकार ताही तुतकारा ॥
पतिब्रत नारि पुत्र के पाहीं ❀ चले तेज तोरत धिक नाहीं ॥
महाक्रोध करि दैत्य भुवारा ❀ पाँच बाण कामहि के मारा ॥
लगत बाण तब भयो अचेता ❀ उड़ि हरि पहँ छाँड़े तब खेता ॥
देख क्रोध किय नन्दकुमारा ❀ तुरत कामको चरण प्रहारा ॥
तिनके बहु अवगुण प्रभु कहा ❀ कर्म कमीन जन्मलिय कहा ॥
गर्भपात काहे नहिं भयऊ ❀ हारे समर प्राण नहिं गयऊ ॥

दोहा—गर्भपात जो होते, कै मरते रण देश ।
काहे होत कुनाम मम, भाषे श्रीहृषिकेश ॥

सुनत भीम असगुन मनलाई ❀ ए प्रभु काम भागि नहिं आई ॥
बाण तेज ते तुर उड़ि आये ❀ बरबस काम आप पहँ आये ॥
सबै दोष क्षमिये अब कामा ❀ हम लै संग जात हैं धामा ॥
कामहिं संग भीम लै धाये ❀ गदा घाय बहु बीर उड़ाये ॥
भीम ने गदा घाव दल मारा ❀ कोटिन गदा रथिन को मारा ॥
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ कोटिन गदा रथिनको मारा ॥
कर्णपुत्र तब भीम ते कहई ❀ आप समान जगत को अहई ॥
तुम लायक दल है यह नाहीं ❀ इत क्यों अस्त्र गहे रण माहीं ॥
सुने भीम हर्षित ह्वै कहई ❀ काम पराभय संगर रहई ॥
तुम मारो रिपुको दल भारी ❀ हम राजहि मारब परचारी ॥

दोहा—यह कहि क्रोधित भीमभो, तब राजाशिर घाय।
काल सरिस शर मारेउ, भीम मुरछि गिरजाय॥

मूर्छित भीम देखि जगतारन ❀ आये इत रण को पगुधारन ॥
क्रोधित दारुक रथ लै आये ❀ हाँकमारि राजा पहँ आये ॥
तब अनुशल्य हांककर दीन्हा ❀ मैं हो इनको बध है कीन्हा ॥
भीम काम रण महँ मैं मारा ❀ अब बल देखों नन्द कुमारा ॥
तबहीं दैत्य राज परचारा ❀ भारी बाण कीन्ह परिहारा ॥
चारो बाण तुरंगहि लागे ❀ रथके अश्व तुरत ही भागे ॥
भो अदेख रथ श्री भगवाना ❀ तब हरिको आगमन बखाना ॥
मैं तो पापी हों भगवाना ❀ आप गये मैं भेद न जाना ॥
पुहुपवन्त कन्या जो होई ❀ रजस्वला अस्नान करोई ॥
तादिन पुरुष जो तजि के भागे ❀ गर्भपात की हत्या लागे ॥

दोहा—मोर देश के सबनहीं, अरुमम पावन कीन्ह।
दीजै दर्शननाथमोहिं, सुनिहरि दर्शन दीन्ह ॥

जब श्रीहरि तो आगे आये ❀ तब अनुशल्य हर्षि पहुँचाये ॥
तीनि बाण तब प्रभुहि चलाये ❀ एकहि शरते काटि गिराये ॥
हरिके बाण क्रोधते काटे ❀ औरहु एक बाण तब डाटे ॥

प्रभु के तनु में लाग्यो बाना ❁ मूर्छित भये तहाँ भगवाना ॥
रथ चढ़ाय सारथि लै आयो ❁ भागे सैन्य चेत तब पायो ॥
धर्मराज जब देखे नैना ❁ हा हा शब्द करे तब बैना ॥
हरिप्रिया अरु रुक्मिणि रानी ❁ मूर्छित देखा शारँगपानी ॥
रोदन करती हरि की रानी ❁ हा हा शब्द भये घनबानी ॥
कछु चेते जागे यदुराई ❁ सबहि समोधि परम सुखपाई ॥
तब सतिभामा कह्यो रिसाई ❁ कछुक चेत जान्यो यदुराई ॥
जब प्रद्युम्न मूर्छित भयऊ ❁ बलि अनुशल्य मलेच्छन कियऊ ॥

दोहा—तुम भागे केहि हेतु प्रभु, कह सतिभामा बात ।
चण्डिरूप अब धरब मैं, दैत्य बधब सख्यात ॥

यहि अन्तर श्रीपति तब जागे ❁ महाक्रोध हिरदै महँ लागे ॥
गहे अस्त्र रथही चढ़ि धाये ❁ युद्ध भूमि रण भीमहिं आये ॥
बृषकेतुहि कर शारँग धारा ❁ सप्त बाण अनुशल्यहि मारा ॥
तब अनुशल्य चारि शर मारा ❁ बृषकेतु रण काटि प्रचारा ॥
चारी बाण बहुरि कर जोड़े ❁ मारेउ रथके चारिउ घोड़े ॥
एक बाण ते सारथि मारा ❁ रथ सारथि पैदल संहारा ॥
तेहि क्षण सूरज देख न पाये ❁ हय रथ तब बेगही पठाये ॥
चढ़ि रथ कर्णपुत्र सन्धाना ❁ शरनछांह अनुशल्य छिपाना ॥
सारथि अश्व तुरत संहारा ❁ क्रोधित भो अनुशल्य भुवारा ॥
क्रोधवन्त दैत्यन पति धावा ❁ तब कर गहि बृषकेतु फिरावा ॥

दोहा—कर्णपुत्र क्रोधित भये, अनुशल्याहि गहि लाय ।
सम्मुख देखत कृष्णके, पन्द्रह बार फिराय ॥

फिर अस कहा सुनो जगनायक ❁ यह तुरङ्ग हरने के लायक ॥
श्रीपति भाषे धन्य कुमारा ❁ जो अनुशल्य बीरकहँ मारा ॥
ऐसी बात कहन हरि लागे ❁ यहि अन्तर अनुशल्यहु जागे ॥
जब देखा तहँ श्रीभगवाना ❁ नाना स्तुति हर्ष बखाना ॥

कर्ण पुत्र कहँ धनि कर भाषे ❋ तव प्रताप मैं श्रीपति लाखे ॥
जो जगदीश्वर भगत उधारे ❋ ध्रुवहि अचल पद कर संचारे ॥
स्तुति करत बहुत तहँ राऊ ❋ सुनि श्रीकृष्ण बहुत हर्षाऊ ॥
अनुशल्या किरपा हरि कीन्हा ❋ हर्षि गात आलिङ्गन दीन्हा ॥
दक्षिण कर गहिकर हरि लाये ❋ धर्मराज के दर्श दिखाये ॥
सम्मुख हाथ जोरिभे ठाढ़े ❋ धर्मराज तब बचन उचारे ॥

दोहा—भीमआदि ममबन्धु जे, तुमहौ तिनहिसमान ।
यज्ञ अश्व प्रति पालहु, राजा कहै बखान ॥

तब अनुशल्य कही अस बाता ❋ देहौं शीश भुजा सख्याता ॥
भाषे प्रभु अरु धर्म भुवारा ❋ धन्य धन्य हो कर्ण कुमारा ॥
तव प्रताप अनुशल्यहि पाये ❋ परम हर्ष तब राजा आये ॥
पाछे राजा धर्म नरेशा ❋ सहित अश्व पुरका परवेशा ॥
रथ तुरंग गज पैदल सारा ❋ नृप हस्तिन पुरका पगुधारा ॥
पहुँचे जाय नगर के माहीं ❋ बीर आदि जेते सब आहीं ॥
अरु क्षत्री गण जेते आये ❋ अर्घ्य देय आसन बैठाये ॥
भोजन पान सबन करवाये ❋ ऐसे दिन तब बीस गँवाये ॥
चैत्र पूर्णिमा पुरब प्रमाणा ❋ तबहीं यज्ञ होय निर्वाणा ॥
सबै बिप्र तहँ यज्ञ बनाये ❋ द्रुपद सुता नृप तबहिं नहाये ॥

दोहा—गाँठि जोरि तब राजा, बैठि यज्ञ महँ जाय ।
मणि सुबर्ण बहु दान दै, उठीं युवति जनगाय ॥

यज्ञ दान जो कछु बिबिधाना ❋ तेहि प्रकार तहँ दीन्हो दाना ॥
बाद्य शब्द घन मानो गाजे ❋ पूजा अश्व वेद तब साजे ॥
उत्तम घरी बेद जो बरणा ❋ बाँधि अश्व के माथ अभरणा ॥
तामहँ लिखे धर्म के राजा ❋ अश्वमेध यज्ञ तिन साजा ॥
ऐसो क्षत्री को जग आही ❋ गहे अश्व को निज बल वाही ॥
यह लिखिकै पार्थहि बोलवाये ❋ अश्व संग तब भूप पठाये ॥

यौवनाश्व अनुशल्य भुवारा ❀ प्रद्युमन है अरु कामकुमारा ॥
अपनी अनी संग कै लीजै ❀ तबहि गमन अश्वहि सँग कीजै ॥
पारथ सुनत हर्ष तहँ पाये ❀ धर्मराज को शीश नवाये ॥
माथे मुकुट गाण्डिव हाथा ❀ और सेन क्षत्री सख्याता ॥

दोहा—दल साजे सेनापती, जहँ लगि सब सरदार ।
भेटे सबै सुपार्थ कहँ, अरु धृतराष्ट्र भुवार ॥

सब तौ बिदा भये सुख पाये ❀ पाछे शीश मातु कहँ नाये ॥
अश्व संग नृप आज्ञा दीन्हा ❀ पारथ कह माता सों लीन्हा ॥
कुन्ती कह केतक दल सङ्गा ❀ निज बल ते गवनहु रणरङ्गा ॥
पारथ कहे सबै सरदारा ❀ श्रीपति अरु हैं कामकुमारा ॥
यदुबंशी ये सोहहिं संगा ❀ यदुनन्दन दीन्हो मम संगा ॥
कुन्ती कहा सुनो मन दीन्हे ❀ कर्णपुत्र की रक्षा कीन्हे ॥
तासों यज्ञ सफल नहिं पैहो ❀ जो पुत्रन कहँ कहूँ जुझैहो ॥
यह कहिकै तब आज्ञा दीन्हा ❀ पारथ चरण बन्दना कीन्हा ॥
चले पार्थ तब हर्षित गाता ❀ कर्णपुत्र पुनि चले सख्याता ॥
भद्रावती कुँवर को रानी ❀ सुनिपति बिदाहोत बिलखानी ॥

दोहा—पियअनुरागिनिनारितब, कहतपार्थ सों बात ।
जहँ इच्छा तहँ जाइये, जिव हमार लै साथ ॥

रण महँ कादरता नहिं करौ ❀ मम लज्जा माथे पै धरौ ॥
कर्णपुत्र बामा सों कहे ❀ जो सब तीर्थ पुण्य पै अहे ॥
गया पिण्ड तिरिया गति पावै ❀ हरा नाम यमदूत बरावै ॥
यह सब तो जो झूठ बखानहिं ❀ तो हम भागहिं रण संग्रामहिं ॥
ऐसे चले कहे रह सोई ❀ आपन सेना संग लगोई ॥
श्रीपति और भीम उठि धाये ❀ पारथ को पहुँचावन आये ॥
मध्यदेश गये तजा तुरङ्गा ❀ नाना दल पारथ के सङ्गा ॥
चला तुरंग तेज पगु जाई ❀ तौ पारथ परसे यदुराई ॥

धर्मराज माथे पर लीन्हा ❀ श्रीपति काम बुलाइहि लीन्हा ॥
पारथ मेरो सब धन प्राना ❀ तुम रक्षा कीजो सज्ञाना ॥
दोहा—यह कहि सौंपा काम को, पारथही यदुराय ।
भीमसेन ते पारथ, बिदाभये सुखपाय ॥
सेन संग पारथ चलि आये ❀ श्रीपति पुनि हस्तिनपुर आये ॥
भीम कृष्ण हस्तिनपुर आये ❀ पारथ अश्व संग तब धाये ॥
बाणे बाणन होत अघाता ❀ चले बीर पारथ के साथा ॥
कर्णपुत्र अनुशल्य कराला ❀ मेघवर्ण यौवन भूपाला ॥
औ सुवेग जो प्रदुमन बीरा ❀ अनिरुद्ध बीर जो है रणधीरा ॥
सैन समूह चले जो साजा ❀ महावीर तब बाजन बाजा ॥
चले बीर हैं हर्षित नाना ❀ सबही बीर भगत भगवाना ॥
महाबली सब दल है राऊ ❀ चले बीर आनँद उपजाऊ ॥
दल चतुरङ्ग पन्थ नहिं पावै ❀ आगे अस्व तेज पग धावै ॥
पाछे सेना बीर अपारा ❀ हय सँग चले बीर विस्तारा ॥
हय गज रथ जो पैदल नाना ❀ क्षत्री महावीर जग जाना ॥
दिशि दक्षिण प्रथमहि सो धाये ❀ छल बल महावीर सँगलाये ॥
दोहा—पवनबेग दिशि दक्षिण, चला तुरन्त तुरङ्ग ।
हर्षित सब सेनाधिपति, करत कुतूहल रङ्ग ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषाकृतेअश्वदक्षिणदिशिगमनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

राजा सुनो ऋषी तब कहै ❀ यहि सरस्वती नगर इक अहै ॥
नालपुञ्ज तहँका नरनाहा ❀ प्रथमहि अश्व गयो चलिताहाँ ॥
नाम प्रदीप राजनि कुमारा ❀ कुञ्ज महा त्रियरूप अपारा ॥
नदी नर्मदा तट सो अहै ❀ तहां अश्व गो मुनि अस कहै ॥
कुञ्ज माहिं स्त्री जब पाये ❀ तहँ पर बीर देखि मन लाये ॥
पढ़ि पत्रहिं तिरियन समुझाये ❀ धर्मराज के हय यहँ आये ॥
हैं रक्षक पारथ धनुधारी ❀ सुनि नारी सब गृह पगुधारी ॥
तबहिं कुँवर रणकर मन धरे ❀ दललै पारथ सम्मुख खरे ॥

तब सब क्षत्री देखन धाये ❀ कर्णपुत्र तहँ आगे आये ॥
भाषे रण महँ काह बिचारो ❀ पाछे पारथ पास सिधारो ॥

दोहा-पांच बाण हनि कर्णसुत, मारे चारि तुरङ्ग ।
पुनि सारथिरथकाटिकै, कियोवीरतवभंग ॥

त्रयगांसी शर राजकुमारा ❀ क्रोधित कर्णपुत्र कहँ मारा ॥
कर्ण पुत्र मूर्च्छित मदाना ❀ तब अनुशल्य चलाये बाना ॥
शरन छाँह छपि राज कुमारा ❀ जुरे बीर दूनौ सरदारा ॥
नीलध्वज सुनि दल लै आये ❀ बाणावरि कर पुत्र छुड़ाये ॥
सब दल कहँ तब मारे बाना ❀ पार्थ हाँक करि क्रोध बखाना ॥
क्रोध युक्ति सुनि पारथ पाया ❀ पांच बाण ल क्रोध चलायो ॥
एक बाण ते राजा काटे ❀ तब पारथ क्रोधित शर छांटे ॥
नीलध्वज तब मूर्छा पाये ❀ जागे महा युद्ध मनलाये ॥
अग्निबाण तब राजा मारा ❀ पारथ दल में भयो सँहारा ॥
रथ गज दल पैदल असवारा ❀ जरै लगे सब करैं पुकारा ॥

दोहा-मारिपार्थतब बरणशर, पावकअस्तुतिठानि ।
हाथजोरिकैपार्थतहँ, बहुप्रशंसउरआनि ॥

सदा कृपा तव हमरे पाहीं ❀ रथ धनु बाण दिये तुम आहीं ॥
अब कह दुख यह हमको दीन्हा ❀ बारेक महँ सना बध कीन्हा ॥
तब कह पावक ऐसी बानी ❀ पारथ तुम तो भये अज्ञानी ॥
सदा रहत सँग जग के तारण ❀ अश्वमेध कीजै केहि कारण ॥
हम राखे राजा कर माना ❀ ससुर हमार महिम जग जाना ॥
जनमेजय पूछत मन लाई ❀ नीलध्वज कत ससुर कहाई ॥
कैसे नृ कन्या तेहि दीन्हा ❀ बैशम्पायन कह मन लीन्हा ॥
नीलपुञ्ज के ज्वाला रानी ❀ श्याम नाम कन्या मैं आनी ॥
भइ तरुणी तब पूछहिं राऊ ❀ चाहो बर सो हमैं सुनाऊ ॥
कन्या कहे मनुष नहिं काजा ❀ देव श्रेष्ठ जो बर देहु राजा ॥

दोहा-बोले नृप इच्छा कहा, अरु संयम परवान ।
जोमन आवत पुत्रितब, हमतेकहो बखान ॥

कन्या कहेउ चार कै करनी ❀ कीन्हे पाप छले ऋषि घरनी ॥
सर्फ काम बश हुइ अज्ञानी ❀ ऐसे संग ते धर्म नशानी ॥
दूजो पति जो नारी करै ❀ कुम्भीपाक नरक महँ परै ॥
अग्नि माहँ मरते जरहो ❀ ताते दुइ पति नहिं अनुसरई ॥
यहि कारण तनु अग्निहि दीजै ❀ बचन मोर पितु यह सुनलीजै ॥
पुरंजन राजा अचरज माना ❀ कन्या करै अग्नि को ध्याना ॥
राजा कहा सब जो खाहीं ❀ सात जीभ ताके मुख आहीं ॥
मुख अरु चर्मत्यागि सुख कैसे ❀ नदी नार नीचे बह जैसे ॥
हरका शीश तेज यश गंगा ❀ पृथ्वी महँ तिन कीन्ह प्रसंगा ॥
काहू बात न कन्या मानी ❀ समाधान कै तबहीं आनी ॥

दोहा—चन्दनघृतअरुचिनोलै, तिलजौंमधुकोराव ।
जायफललौंगकपूरको, आहुतिहोमकराव ॥

बेद वाक्य मन्तर अहिवाना ❀ बिप्र रूप तब अग्नि तुलाना ॥
राजा पाहिं हर्षि पगु धारा ❀ देखि बिप्र तब पूछ भुवारा ॥
को हो देव कहाँ ते आये ❀ तब ब्राह्मण अस बचन सुनाये ॥
कन्या स्वाहा हमको दीजै ❀ ताते आये नृप सुनि लीजै ॥
नृपति कहे सो पावक चहैं ❀ बिप्र कहे हम पावक अहैं ॥
राजा कहा प्रतीत मोहि कीजै ❀ अग्नी रूप आपनो कीजै ॥
मन्त्री कहा याहि बिधि जबहीं ❀ अग्नी रूप प्रकट कियो तबहीं ॥
भइ प्रतीत तब अस्तुति लाई ❀ कन्या की तब मोसी आई ॥
सो कहि द्विज यह चेटक करै ❀ प्रकट रूप अग्नी को धरै ॥
राजा कहे आप गृह माहीं ❀ परखाये कैसी जय ताहीं ॥

दोहा—ताकेगृह पावक गये, रूपधरा बहुबार ।
चीरकंचुकिहिजारत, औरशीशको बार ॥

राजा पहँ वह रोवत गई ❀ राखि लेहु वह पावक अहई ॥
स्तुति करि नृप आगि बुझाई ❀ तबहिं ब्याहकी बात चलाई ॥

मेरे गृह में संतत रहो ❀ आवै रिपु तेहि आरत रहौ ॥
ऐसे बचन करौ परमाना ❀ तब राजा दिये कन्यादाना ॥
राजा गृह में पावक रहै ❀ बैशम्पायन राजहि कहै ॥
सो बाचा से सैन जराई ❀ ताते पारथ स्तुति लाई ॥
पारथ कहँ पारथ तब कहै ❀ पयनिधि बहुत कछु अब अहै ॥
अब देखो दल तुमही नैना ❀ उठिहै सबै तुम्हारी सैना ॥
सबै उठे जब पार्थ निहारा ❀ राजा पहँ पावक पगु धारा ॥

दोहा--कहे जायतब नृपतिसन, पारथ मित्रहमार ।
मिलौजायनहिं जीतिहौ, जेहिसहाय कर्तार ॥

पारथ मित्र कहे बैसाई ❀ मोहिं खवायो अन्न पुराई ॥
बचन सुनत राजा खुश भये ❀ तब रानी को पूछन गये ॥
मिलन मन्त्र ते कोपी रानी ❀ जब राजा को बोली बानी ॥
सेना रण न जुझाये काहू ❀ कायर ह्वै मिलबे को जाहू ॥
राजा सुनत क्रोधकर भारा ❀ गो पारथ पहँ रण बिस्तारा ॥
राजा क्रोधित धनु संधाना ❀ तेहि क्षण बहुत चलायो बाना ॥
ऐसे बाण पार्थ तब मारा ❀ बाण छाहँ ते भयो अँधारा ॥
बाण पार्थ के राजहि लागे ❀ रथ चढ़ाय सारथि लै भागे ॥
ह्वै अचेत तिरिया से कहे ❀ सुतहि गवाँय मन्त्र तब गये ॥

दोहा–असकहि हयधनराजा, संगहिचले लेवाय ।
स्यामकरनकरि आगे, पारथ भेंटेहु जाय ॥

भेंटे जाय द्रब्य बहु दीन्हे ❀ हर्षित पारथ सो लै लीन्हे ॥
सैनापति तुम राउ हमारा ❀ परम मित्र पारथ संचारा ॥
अश्व पाय चलिबे मन दये ❀ संग नीलध्वज राजा भये ॥
ज्वाला क्रोध शोक ते भारी ❀ तुरत बधौं गृह में पगुधारी ॥
बन्धौं पहँ सो रोदन कीन्हा ❀ मोर पुत्र पारथ बध कीन्हा ॥
बैर लेहु पारथ ते जाई ❀ सुनतहि बात कहे सो भाई ॥

अपने गृह महँ बैठहु जाई ❀ आयो हम कहँ सोवन धाई ॥
सो सुनि ज्वाला क्रोधित भई ❀ रोवत गङ्गा तट चलि गई ॥
तरणी चढ़े कहे सो नारी ❀ भयो पाप लखु गंग हत्यारी ॥
गंगातरि के मानुष जेते ❀ ज्वाला पाहि कहे सब तेते ॥

दोहा—पतित पावनी गंगजू, जगको पाप बिनास ।
सिधमुनि तट तेहि जायके, पावतसुरपुरबास ॥

धर्म रूप तब कहे भवानी ❀ गंगा दोष का कहौं बखानी ॥
ज्वाला कहा अपुत्री भारी ❀ सात पुत्र दीन्हे जल डारी ॥
एक पुत्र तब तात बचाये ❀ ताको पारथ मारि गिराये ॥
सुनतहि गंगा क्रोध अपारा ❀ पारथ कहँ शापो विस्तारा ॥
मेरो पुत्र पार्थ संहारा ❀ छठ मास सो जैहै मारा ॥
ज्वाला कहा कृपा करु माई ❀ बाण जन्म लै मारब जाई ॥
तब गंगा दीन्हो बरदाना ❀ ज्वाला तजे गंग महँ प्राना ॥
प्राण तजे भो शर अवतारा ❀ अर्ध चन्द्र पर्वत तनु धारा ॥
जन्म बाण पाये परसंगहि ❀ पारथ सुत के रहे निषंगहि ॥
बभ्रबाहन है नाम भुआरा ❀ वही पुत्र ते करब सँहारा ॥

दोहा—यह चरित्र इतही भये, उत तह चलत तुरंग ।
नीलध्वज अर्जुन सहित, यौवनाश्व नृप संग ॥

जौन धर्म इक कानन रहा ❀ अश्व गयो वाही बन महा ॥
योजन एक शिला है जाहाँ ❀ अश्व जात भयो ताही माहाँ ॥
पाहन लागि अश्व रहे कैसे ❀ चुम्बक लोहे लागत जैसे ॥
कोटि यतन करि अश्व छुड़ावत ❀ शिला छोड़ि तब अश्वन आवत ॥
तब सब शोच करन तहँ लागे ❀ कहे जाय पारथ के आगे ॥
पारथ देखि शोच भयो भारी ❀ तबसेवक से कहा हँकारी ॥
देखो ऋषि कोई इत अहै ❀ पारथ बात सबन ते कहै ॥
दूरि गये हेरन बन माहीं ❀ शौंभरि नाम मुनी तहँ आहीं ॥

नाहक गऊ सर्प शिष्य सन्ता ❀ मूस मँजारी संग अनन्ता ॥
सदा प्रीति उनमें जहँ रहै ❀ ऐसो तेजमुनी को रहै ॥

दोहा—स्तुतिहि देखिकै मुनिकहा, बोलिधनञयचाह ।
पारथ प्रदुमन सात्यकी, यौवनाश्व नरनाह ॥

कर्णपुत्र संग ले गये तहां ❀ ऋषि आश्रम हैं बनमें जहां ॥
पार्थ जाय तहँ बात जनाये ❀ धर्मराज यज्ञहि मन लाये ॥
रक्षाहित हम सब इत आये ❀ बनमें अश्व शिला अटकाये ॥
कौन उपाय अश्व अब छूटै ❀ गोत्रबन्ध को पातक टूटै ॥
तब ऋषि कहे पार्थ सज्ञानी ❀ गीता सुनि के भये अज्ञानी ॥
जो तुम काज करन को चाहो ❀ अस जनि कहो नाऽरते चाहो ॥
कहो कि गोत्र बन्धु संहारा ❀ जो पालै सो मारन हारा ॥
सर्ब शरीर पुरुष रह मही ❀ गेह लिलार मुनी अस कही ॥
ज्ञान पाय भूलो जो पारथ ❀ अश्वमेध तौ करत अकारथ ॥
पारथ कहा बिष्णु की माया ❀ कोई जग महँ अन्त न पाया ॥

दोहा—पारथ के सुनि वचनअस, तबऋषिकहेप्रकास ।
शिलाचरित्र जो कौतुक, हर्ष धनञय पास ॥

संज्ञा पपीचराड इक रहै ❀ ताकी कन्या चराडो अहै ॥
उद्दालक को दीन्हेउ ब्याहीं ❀ लै नारी आयो गृह माहीं ॥
पति सेवा सिखवै सेवकाई ❀ चरिड सुनत क्रोध तब पाई ॥
पति सेवा को मोहिं जो कहा ❀ मोसों नाहिं परोजन अहा ॥
पुनि भाषे पूजा मन लाओ ❀ चरिड कहे का हेतु सुनाओ ॥
पती पुत्र ते मोर न कामा ❀ तोरा बचन करौं परमाना ॥
एक बार मज्जन लगि जाई ❀ कहे कमराडलु दीजै लाई ॥
सुनतहि नारि क्रोध भयो भारी ❀ डारेउ फोरि भूमि दै मारी ॥
पति के संग शयन नहिं करै ❀ पति की हँसी करत सो फिरै ॥
दुष्ट तिरिया ते मुनि दुख पाये ❀ सुनत कमराडलु मुनि पद आये ॥

दोहा—दुर्बल देख उद्दालक, पूछेउ मुनि मनलाय।
कौन हेतु दुर्बल भयो, कहो मुनी समझाय ॥
तब उद्दालक बोलत भयऊ ❀ तिरिया दुष्ट विधातैं दयऊ ॥
मोर कहा मनमें नहिं धरै ❀ अपने मनका कारज करै ॥
पीतर श्राद्ध समय दुख पावे ❀ क्यहि बिधि पितृ श्राद्ध महँ आवे ॥
तब हँसि कह्यो कमराडलु बानी ❀ उलटी बात कहौ नहिं ज्ञानी॥
जो कछु कार्य करण तुम चहो ❀ उलटे बचन नारि ते कहो ॥
हम तो गौतम तीर्थहि जैबे ❀ फिरत समय यहि मारग ऐबे ॥
अस कहि मुनि कमराडलु गयऊ ❀ तिरियहि आपु हीनमत दयऊ ॥
काल्हो श्राद्ध पिताकी अहै ❀ प्रात कमराडलु आवन चहै ॥
मोते श्राद्ध कर्म नहिं होई ❀ केहि बिधि आव कमराडलुसोई ॥
सुनतहिं नारी क्रोधित भई ❀ बोली बात कन्त मति गई ॥
दोहा—द्विजाहिं बुलाओ प्रेमकरि, देव पिण्ड को दान ।
उत्तम होवे श्राद्ध विधि, मैं करिहौं निरमान ॥
बात उलटि कै श्राद्ध प्रचारा ❀ श्राद्ध कर्म यहि बिधि अनुसारा॥
जो कछु बचन कहैं मुनि ताहीं ❀ तौन बात तिय मानत नाहीं ॥
ऐसे श्राद्ध सिद्धि करवाये ❀ इतना कहि मुनि नाम नशाये ॥
मुनि कछु कार्य करन को कहई ❀ प्राण जाँय बरु तिय नहिं करई ॥
बात भूलिकै मुनि संचारो ❀ लै पिराडा गंगा में डारो ॥
सुनत बात क्रोधित ह्वै नारी ❀ लै पिराडा घूरे महँ डारी ॥
देखि क्रोध मुनि शापेउ भारी ❀ पाहन होहु जन्म हत्यारी ॥
जब पारथ के दर्शन पैहो ❀ शीघ्र शापते तब तरि जैहो ॥
शिला भई तब मुनिकी नारी ❀ फेरो हाथ बात सुन म्हारी ॥
करि प्रणाम पारथ शुभ कीन्हा ❀ जातहिं हाथ शिला महँ दीन्हा॥
दोहा—छूटा अश्व चला तब, पाहन ते भइ तीय ।
उद्दालक तिय लै चले, परम हर्ष ह्वै जीय ॥

इति श्रीमहाभारतेभाषा अश्वमेधयज्ञकृतचुम्बकाश्वमोचनोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वैशम्पायन कथा सुनाये ❀ पारथ अश्व चले मन लाये ॥
छूट शिला ते अश्व सिधाये ❀ पञ्चज पुरी अश्व तो आये ॥
हंसध्वज राजा पुर माहीं ❀ पाँच पुत्र राजा के आहीं ॥
सुन्दर सेरन सबल कुमारा ❀ तीजे नाम सुरथ संचारा ॥
चौथा पुत्र सुरथ परवाना ❀ सबते छोट सुधन्वा माना ॥
दूत जाय राजहिं समझाये ❀ अश्व संग हैं पारथ आये ॥
सुनि राजा मन चिन्ता आई ❀ तब सब सेनापतिहि बुलाई ॥
सब ते कहन लाग अस बैना ❀ अबलौं दीख न पङ्कज नैना ॥
लखौं आज हरि आनन्दकन्दा ❀ पारथ पास सदा यदुनन्दा ॥
नगर माहिं कोऊ जनि रहहू ❀ लाओ सबहिं दरश हरि करहू ॥

दोहा—हर्षित है सब आयके, कह्यो सुनो नरनाह ।
जो नहिं आवै यज्ञहित, भुँजब कराहे माह ॥

राजा चले सबै दल साजा ❀ बाजन लये अनेकन बाजा ॥
बिद्रथ चन्द्रकेतु तब आना ❀ चन्द्रसेन संग दल परमाना ॥
चन्द्रदेव औ बरत सिधाये ❀ यह पांचौ राजा संग आये ॥
सत्रह सेनापति लै साथा ❀ रणको चलत भये नरनाथा ॥
पांच सहस इकसौ रथआये ❀ सहस निशान तोप लदवाये ॥
गजके ठाट पचासि हजारा ❀ लक्ष सहस्र रहैं असवारा ॥
सब दल चढ़ि मैदानहि हये ❀ पाछे कुँवर सुधन्वा गये ॥
दल मधि तेल कराहन भरी ❀ पावक लाय तप्त तब करी ॥
जो नहिं आवै दलमहँ कोई ❀ मांझ कराह मृत्यु त्यहि होई ॥
शंख लिखित प्रोहित दुइ भाई ❀ बाचा हेतु सबसों जाई ॥

दोहा—चले सुधन्वा हर्ष हिय, माताको शिरनाय ।
कृष्ण दरश गति पाइहौ, माता कहेसि बुझाय ॥

तहँते गये कुँवर परमाना ❀ पाछे गये बहिनि के धामा ॥
बहिनी करते आरति कीन्हा ❀ तब बीरन ते बोलन लीन्हा ॥

बहिनी भेटिके बाहर आई ❀ त्रिया प्रभावति देखन पाई ॥
प्रिया कन्त सन कह वरि नारी ❀ ताहि छोड़ि कहँ चले सिधारी ॥
नारी एक सदाव्रत आही ❀ चलिये भवन देहु रति चाही ॥
कुँवर कह्यो दिवस न होही रति ❀ तब नारी व्याकुल ह्वै विनवति ॥
ऋतु स्नान कीन्हा मैं नाथा ❀ रतीदान दै करो सनाथा ॥
विन अपराध पुरुष तिय त्यागा ❀ गर्भ वधेकर हत्या लागा ॥
बहु प्रकार नारिहि समुझाये ❀ मिलना कठिन बहुरि सुरझाये ॥

दोहा—विवशहिं रसमें कुँवरतब, मिलभेतत्क्षणधाम ।
सुचितभये रतिदान दै, चले पार्थ संग्राम ॥

कुँवर कह्यो सुनु वचन हमारो ❀ को पीछे रह प्रश्न विचारो ॥
ताको मुंजहुँ कराहन माहीं ❀ याहो प्रण कीन्हों मनमाहीं ॥
तब नारी कह रतिदै जैये ❀ पीछे दरश तिहारो पैये ॥
विवश कुँवर नारी के परे ❀ टोप सनाह उतारी धरे ॥
रति रस हेत तबहिं तो साजा ❀ इत दल माहिं हंसध्वज राजा ॥
पूछन लाग सबन के पाहीं ❀ देखियत कुँवर सुधन्वा नाहीं ॥
सुधि कराह भूला मैं जाना ❀ बेगि दूत तहँ करो पयाना ॥
गहिकर केश कुँवर लै आयो ❀ ताहि कराहे माहिं जरायो ॥
राजा दूत चलन मन दीन्हा ❀ करि रति कुँवरशीघ्रशुचिकीन्हा॥
बाँधि अस्त्र रथ भे असवारा ❀ हर्षित चलिभा राजकुमारा ॥

दोहा—याहि अवसरभेंदूतसब, देख्योकुँवराहिजाय ।
राजा आज्ञाजो दियो, कुँवराहि कहा बुझाय ॥

सुनतहि शोश गाज जनु परी ❀ दूतन पाहि वचन अनुसरी ॥
आज्ञा तात यहै परमाना ❀ यह कहि कुँवरहिकीन पयाना ॥
जातहिं गये पिता के आगे ❀ क्रोधित ह्वै नृप बोलन लागे ॥
पारथ हरिके दर्शन कारण ❀ आये नहीं मूढ़ मति धारण ॥
मेरी आनि कुँवर नहि माने ❀ सुनत कुँवर कर जोरि बखाने ॥

पुत्र पतोहू तुम्हरे अहै ❀ रती दान जल्दी यक चहै ॥
तेहिते म्वहि ह्वै गई अबारा ❀ कीजै जो कछु होय बिचारा ॥
राजा दूतहि कह्यो बुझाई ❀ तेलहि तप्त करो अब जाई ॥
अब तो नात पुत्र का नाहीं ❀ पूछो जाय पुरोहित पाहीं ॥
सुनतहिं तेल तप्त तब कीन्हा ❀ प्रोहित पाहिं पूछ सब लीन्हा ॥

दोहा—तबहिंपुरोहितअसकह्यो, अघुपूछतकाजानि ।
पुत्र हेतु माया बिबश, ताते पूछत आनि ॥

बचन हीन राजा तब भयऊ ❀ अब हम यहाँ रहब नहिं कहेऊ ॥
जाय दूत राजा पहँ कहेऊ ❀ राजाके मन चिन्ता भयऊ ॥
राजागे प्रोहित के पासा ❀ बिनती करिकै बचन प्रकासा ॥
करि बिनती प्रोहित दोउ भाई ❀ अपने सँग लैगयो लेवाई ॥
तेल तप्त है पावक जैसा ❀ मन्त्री पाहिं कहै नृप ऐसा ॥
मध्य कराह सुधन्वाहि डारो ❀ तेलके मध्य जराय के मारो ॥
मन्त्री गया कुँवर के पासा ❀ करुवो बचन जाय परगासा ॥
हमते कछु नहिं बनत बिचारा ❀ आज्ञा तात जो कीन्ह तुम्हारा ॥
मधि कराह डारो किन आना ❀ सुना कुँवर तब कीन्ह बखाना ॥
बचन तात का करो प्रमाना ❀ मन्त्र मोहिं भावै नहिं आना ॥

दोहा—शोच कियेकाहोतअब, परबशजनी को होय ।
अब, काकी शङ्का करो, कुँवर कह्योअसकोय ॥

तेल कराह अग्नि सम ताता ❀ कुँवर कह्यो धीरज धरि बाता ॥
मोसनघाटि भई जग तारन ❀ आयेते हरि दर्शन कारन ॥
ध्रुव प्रह्लाद और पंचारी ❀ तुहों बिभोषण लिये उबारी ॥
दीन दयाल राखि अब लीजै ❀ महिमा प्रकट आपन कीजै ॥
जैसे ग्रहते गजहिं छुड़ाओ ❀ ताही बिधि अब मोहिं बचाओ ॥
ऐसो सुयश रहै संसारा ❀ कुदा कराहे राजकुमारा ॥
करि अस्नान अस्तुती कीन्हा ❀ तुलसीपत्र शीशपर दीन्हा ॥

बहुप्रकार हरि अस्तुति ठानी ❀ कह्यो अल्पनहिं बहुत बखानी ॥
नृप आज्ञा मन्त्री प्रतिपाली ❀ दीन्ह कराह कुँवर को डाली ॥

दोहा—पावक उठा कराह सों, देखहिं सबदलबीर ।
त्राहि त्राहि सबहिन कही, राखिलिये रघुबीर ॥

रोवहि दलके सब सरदारा ❀ कुँवरहिं राखि हमैं किनमारा ॥
शीतल तेल भयो सख्याता ❀ कुँवर बदन भयो कञ्ज प्रभाता ॥
केशव कृष्ण जपत यहिनामा ❀ प्रोहित संगकरै नृप ग्रामा ॥
कुँवरहि देखि पुरोहित कहै ❀ जाते अग्नि बरायनि रहै ॥
कीधों तेल तप्तनहि आही ❀ कीकछुजरी कुँवर मुखमाहीं ॥
दूतन कह्यो झूठ सब अहै ❀ केवल नाम कृष्ण को कहै ॥
प्रोहित तबहिं प्रतिज्ञा धारी ❀ नरियर एक कराहे डारी ॥
परत कराह फूटि छितराई ❀ प्रोहित के माथे लग जाई ॥
तात्क्षण प्रोहित बहुत लजाना ❀ भक्तद्रोह मैं कियो निदाना ॥

दोहा—धनि धनि कुँवर सुधन्वा, तोर हृदय हरिबास ।
परा कराहे मो कहा, मिले कुँवर के पास ॥

बिप्र आय अङ्कहि भरि लीन्हा ❀ अस्तुतिबहुत कुँवर की कीन्हा ॥
कुँवर प्रताप बिप्र सुख पयऊ ❀ भक्तिप्रभाव बदननहिं जरेऊ ॥
ऐसी महिमा प्रभुकी बाढ़ी ❀ प्रोहित कुँवर दुहुँन कहँ काढ़ी ॥
कुँवर साथ लै गये नृप आगे ❀ प्रोहिततबहिं कहन असलागे ॥
नृप तुव पुत्र भक्त मैं जाना ❀ इनके हृदय बास भगवाना ॥
सुनि राजा तब सुतहिं बुलायो ❀ उठि नृप दौरि अङ्कलपटायो ॥
राजा कुँवर दुहुँन सुख पायो ❀ बहुत प्रसंशा करि बैठायो ॥
पितुके दोष धरहु नहिं मनमें ❀ मैं दल गमन करौं अब रणमें ॥
हर्षित कुँवर तात पग परशे ❀ करि प्रणाम प्रोहित के दरशे ॥

दोहा—रणको चले कुँवर तब, रथ पर ह्वै असवार ।
गहौ तुरँग तुमजाय अब, सबते कहा भुआर ॥

बीरन जाय अश्व हरि लाये ❋ युद्ध करनको राव सिधाये ॥
कुँवर सुधन्वा सबके आगे ❋ बाद्य जुझाऊ बाजन लागे ॥
सब दल समाधान करि रहे ❋ तब पारथ प्रद्युमन से कहे ॥
हमरो हय जो हरि लैगये ❋ अस बलधारी नृप सब भये ॥
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा ❋ नीलध्वज कृतवर सरदारा ॥
कामकहे अब उचितक अहै ❋ औरो सबहिं अस्त्र कर गहै ॥
मेरी तात संमती अहो ❋ आप युद्ध कत कीन्हो चहो ॥
कर्णपुत्र तब कहै यह बाता ❋ तुम दुइबीर प्रलय के घाता ॥
इतहि रहो तुम हम रणजाहीं ❋ इतना कहि आये रणमाहीं ॥

दोहा—कर्णपुत्र अरु नृपसुवन, दोउ भये इक ठाँव ।
राजपुत्र तब पूछता, कर्णपुत्र के नाँव ॥

कह बृषकेतु कर्ण ममताता ❋ कश्यप कुलजो कह सख्याता ॥
बृषकेतु नाम हमारो अहै ❋ सुनिकै बात सुधन्वा कहै ॥
बन्धु छन्द मुनि गोत्र हमारा ❋ नाम सुधन्वा बीर अपारा ॥
दोउ बीरन तो रण प्रणठाना ❋ क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुबाना ॥
नृपति पुत्र के मारे बाना ❋ सारथिरथ सबकिय भङ्गाना ॥
मूर्च्छा पाय क्षणक महँ जागे ❋ बाणन बृष्टि करन तब लागे ॥

दोहा—दूसर रथ सारथि लिये, पुनि आये वाहि ठाम ।
कर्णपुत्र तब चढ्यो रथ, सुमिरि कृष्णकानाम ॥

कर्ण पुत्र बहु जय रण लीन्हा ❋ बिपुलबीर क्षणमहँ बध कीन्हा ॥
हना सुधन्वा बाण रिसाई ❋ कर्णपुत्र को मूर्च्छा आई ॥
कर्ण पुत्र रण मूर्च्छित जाना ❋ तब प्रदुमन हाँके मैदाना ॥
तुरतहिं काम पंचशर मारे ❋ सारथि हय पैदल संहारे ॥
त्रिशिख लायो तब खसेतुरङ्गा ❋ जोती ध्वज छत्रहु भे भङ्गा ॥
यह देखतहिं सुधन्व रिसाना ❋ क्रोधवन्त ह्वै गहि धनुबाना ॥
तीन बाण सारथि संहारा ❋ सिंहनाद करि राजकुमारा ॥

पारथ को स्पर्श जब लीन्हा ❀ ऐसे त्रिया ब्याह तौ कीन्हा ॥
छाँड़ि गये होते जो ताता ❀ अब हम भेट करब सख्याता ॥
करि मन प्रेम बुद्धि बीचारा ❀ आने अश्व कौन परकारा ॥
मन्त्री कहै अश्व लै मिलो ❀ राजा कहै मन्त्र यह भलो ॥
तब राजा बहु साज बनाये ❀ नाना द्रव्य अनेक मङ्गाये ॥
नाना राग रंग तब ठाना ❀ श्यामकर्ण लै किये पयाना ॥
गज ते उतरि राव तब गये ❀ पारथ चरण माथ तब दये ॥
मैं अब पुत्र तोहार प्रमाना ❀ चित्राङ्गदा गर्भ निर्माना ॥
सम्पति राज्य लेहु अब ताता ❀ कीजै कृपा जन्म कर दाता ॥
पारथ के दलका सरदारा ❀ सब पारथ सों कहै सुधारा ॥

दोहा—पारथ मिलो न पुत्रते, देखो सुतकर देश ।
शीश चरण दै सुनत यह, मणिपुरपती नरेश ॥

पारथ उपजो क्रोध अपारा ❀ नृपके हृदय लात इक मारा ॥
भाषत तोहि लाज नहिं आवै ❀ वैश्यगती मम पुत्र कहावै ॥
मोसे जन्म तोर नहिं अहै ❀ मेरो पुत्र ऐस नहिं कहै ॥
अभिमन्यु पुत्र जानु संसारा ❀ चक्रब्यूह अकेल संहारा ॥
नाच गान गन्धर्ब को काजा ❀ राजा भे तुहि नेकु न लाजा ॥
अश्वहि गहे सर्व मन लाये ❀ भय आतुर तब देखन पाये ॥
युद्ध न भौ तोहिं शरणन लागे ❀ देखत भय आतुरते पागे ॥
बभ्रूबाहन सुनत रिसाना ❀ क्रोधवन्त ह्वै बचन बखाना ॥
और सही सब जो तुम कहो ❀ एक बात तो जात न सही ॥
कहे वैश्य सुत मोकहँ मारी ❀ तो मम मातु भई ब्यभिचारी ॥

दोहा—अब तौ अश्व न देब हम, सुनु पारथ यह बैन ।
वैश्यनते हय लेउ अब, देखों क्षत्री नैन ॥

यह कहि अश्व बाँधि लैगयऊ ❀ तब रणहेतु युद्ध मन दयऊ ॥
नृपको दल निकरो अति भारी ❀ आगे भये बीर धनुधारी ॥

अश्वहिं राखि गेह नृप आये ❋ महाक्रोध युद्धहि मन लाये ॥
तात जानि अश्वहि मैं दयऊ ❋ महागर्ब ते गारी दयऊ ॥
अब आवतहौं युद्धहि करे ❋ सुनत क्रोध अनुशल्वा जरे ॥
नऊ बाण मारे अनुशल्या ❋ बभ्रुबाहन क्रोध भौ कल्या ॥
धनुष सँभारा सौ शर छांटे ❋ तीनि बाणते इन्ह दल काटे ॥
तब राजहिं भयो क्रोध अपारा ❋ लगे बाण बर्षन जलधारा ॥
भीजे रक्त दोऊ सरदारा ❋ ऋतु बसन्त टेसू परकारा ॥
चारि बाण राजा तब मारे ❋ रुण्ड मुण्ड महि परे बिकारे ॥

दोहा—पाँच बाण ते सारथी, काटे ध्वजा निशान ।
हाथ धनुष तब कटपरो, अनुशल्व लाग बान ॥

भयो क्रोध अनुशल्व भुवारा ❋ और रथहिं भये असवारा ॥
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❋ रथ समेत ते काम बहाये ॥
शर शारङ्ग करै संधाना ❋ मारे राव सहस इक बाना ॥
तबहिं गदा लै राजा धाये ❋ जाय धाय अनुशल्वहु लाये ॥
तापाछे नो बाणहिं मारा ❋ मूर्च्छा भौ अनुशाल्व भुवारा ॥
सारथि लैके तुरतहि आये ❋ पाछे कामदेव तब धाये ॥
रहुरहु करिकै शर दश छांटे ❋ अयुत शस्त्र ते राजहि काटे ॥
दोनहुँ बीर लगे शर मारन ❋ सौते सहस हजार हजारन ॥
अश्वरु गज रथ पैदल जूझे ❋ बाणन बिना और नहिं सूझे ॥
रुण्ड मुण्ड तब भे बहुताई ❋ रक्तनदी तहँ बहु बढ़िआई ॥
नदी तरङ्ग बहत है भारी ❋ योगिनि सब तौ करैं धमारी ॥

दोहा—कामदेव ने रण किया, रक्त बहायो खेत ।
रुण्डमुण्ड भय मेदिनी, नाचहिं योगिनि प्रेत ॥

जबहिं काम ऐसे शर ठाना ❋ तौ मणिपुर पति क्रोध रिसाना ॥
क्रोधित ऐसे बाण चलाये ❋ रथ समेत तौ काम छुपाये ॥
कामहि तनु तौ झांझर भयऊ ❋ ऐसी मार कामको दयऊ ॥
दोनों बीर तजें क्रोधित शर ❋ होनलगी अति मार परस्पर ॥

राजा मार्‌यो बाण रिसाई ❀ मोहित कामदेव भे आई ॥
साँग गदा तब लेकर छाटे ❀ तीन बाण ते गद नृप काटे ॥
दोनों शर मारहिं रिसिआई ❀ तब दोनों मूर्च्छित भये जाई ॥
क्रोधित राजा मार्‌यो बाना ❀ मूर्च्छित भयो काम मैदाना ॥
मूर्च्छित काम बहुत दल मारे ❀ रुण्ड मुण्ड महि परे बिकारे ॥
बिकट कबन्ध रूप तब धावें ❀ योगिनि गण तो मङ्गल गावें ॥

दोहा—हाथ चरण शिर कहुँ परे, कहूँ रुण्ड कहुँ मुण्ड।
नाना अस्त्र सुहाथ महँ, मारत धावत रुण्ड ॥

बीर अनेकन पारथनन्दन ❀ पारथ को दल कियो निकन्दन ॥
तब अनुशल्व चेत भो धाये ❀ प्रद्युमन चेतत आगे आये ॥
हंस ध्वज नीलध्वज राई ❀ यौवनाश्व सूबेग सिधाई ॥
मेघवर्ण आदिक सरदारा ❀ वह अकेल मणिपुरी भुवारा ॥
सबै बीर मिलि शर तो छाटे ❀ पारथ पुत्र सबै शर काटे ॥
जूझे बीर खेत मों लाखन ❀ महामारु भै सकि को भाखन ॥
सुर तुरंग जूझी नहिं परे ❀ कायर प्राण प्रथम तो हरे ॥
लड़ि लड़ि शूर तजें तब प्राना ❀ गये अमरपुर बैठि बिमाना ॥
सुरकन्या सँग रम सुख पाये ❀ अपनी देह अवनि दिखराये ॥
कुञ्जर अश्व पदादिक नाना ❀ जूझे बहुत न जाय बखाना ॥

दोहा—जैसे लव वश रामते, मारु भई बिपरीति ।
पारथ सुत अरु पार्थ ते, युद्ध होत यहि रीति॥

राम कथा सब मुनि तब कहे ❀ जैसे रण तहँ होते भहे ॥
पारथ नन्दन बाण प्रहारा ❀ मूर्च्छित भो अनुशाल्व भुवारा ॥
औरौ बाण काम को लागे ❀ मूर्च्छित भये नेकु नहिं जागे ॥
नीलध्वज मूर्च्छित मैदाना ❀ यौवनाश्व लीन्हे तब बाना ॥
क्रोधवन्त तब बाणन छाटे ❀ पारथपुत्र मांझ तौ काटे ॥
पारथसुत तब मारे बाना ❀ यौवनाश्व मूर्च्छित मैदाना ॥

तब सुबेग अमरष भरि धाये ❀ मणिपुरपति पर बाण चलाये ॥
मध्य बाण तब राजा काटे ❀ बाण सुबेग और तब छाटे ॥
मूर्च्छित भये मणीपुर राऊ ❀ पलक माहँ चेतन तब पाऊ ॥
चेत भये तब मार्‌यो बाना ❀ तब सुबेग मूर्च्छित मैदाना ॥

दोहा—मेघबर्ण तब धायऊ, करले शारँग बान ।
महायुद्ध तब लागेऊ, राजा सुनहु बखान ॥

मेघबर्ण पुरुषारथ करे ❀ दल अनेक खेतन महँ परे ॥
जबहिं मणीपति मार्‌यो बाना ❀ मेघबर्ण मूर्च्छित मैदाना ॥
मेघबर्ण मूर्च्छा जब पाये ❀ तब हंसध्वज राजा धाये ॥
रहु रहु करि मारे तब बाना ❀ मणिपति को छाये मैदाना ॥
ऐसे शर तब राजा मारे ❀ रथ सारथि पैदल सहारे ॥
हंसध्वज कीन्हा प्रभुताई ❀ पांच चोहिणी मारि गिराई ॥
क्रोधित भये मणीपुर राऊ ❀ हंसध्वज पर बाण चलाऊ ॥
रथ सारथी कीन्ह नीदाना ❀ हंसध्वज मूर्च्छित मैदाना ॥
जेते बीर सबै बध भये ❀ वृषकेतू सों पारथ कहे ॥
जैये पुत्र हस्तिना देशहि ❀ कहोजाय सुधि धर्म नरेशहि ॥

दोहा—कहो जाय बृत्तांत सब, अग्र राधिकारौन ।
जो तुम जूझे रण त्रिषे, कहै जाय सुधि कौन ॥

तुम जूझे कुन्ती दुख पैहै ❀ हमहिं शाप दै प्राण गवैहै ॥
जब पारथ यह कहे बखानी ❀ तब देखा है मृत्यु निशानी ॥
पारथ उपर गृध्र उड़ि आये ❀ रुगड छाँह लखि पारथ पाये ॥
कर्णपुत्र तुम शीघ्र सिधाओ ❀ यह अब कष्ट जाय समुझाओ ॥
मोरे बलहि यज्ञ नृप करै ❀ मोपर काल आय अब नियरै ॥
देखन यज्ञ नैन नहिं पाये ❀ यह बड़ शोच मोर मन आये ॥
दगड सहस्र छत्र जेहि लागे ❀ सोइ चला राजा के आगे ॥
यज्ञ माहँ दीन्हा नहिं दाना ❀ नृपने कीन्ह शेष अस्थाना ॥

गंगा जल नहिं रानी भरै ❋ यही शोच मोरे जिय धरै ॥
जाहु तुरन्त कर्ण के नन्दन ❋ कहो जायके जहँ जगबन्दन ॥

दोहा—कर्णपुत्र तब असकह्यो, जो रण तजि हम जाहिं।
मम प्रपितामह स्वर्ग ते, टूटि परैं भुवि माहिं ॥

रहै सुयश सब यहि संसारा ❋ यहिते भल जो मृत्युबिचारा ॥
ताको जन्म सफल है पारथ ❋ जो तन धन देवहि परस्वारथ ॥
तन धन निष्फल ताको गयो ❋ पर उपकार विमुख जो भयो ॥
जीतैं यश बड़ाई पावें ❋ जूझैं स्वर्गलोक को जावें ॥
उत्तम देह पार्थ परमाना ❋ मणिपुरनृप है तृणहि समाना ॥
बहुप्रकार पारथ समझायो ❋ कर्ण पुत्र के हृदय न आयो ॥
शारँग बाण हाथ करि लीन्हा ❋ रथचढ़ि तबहिं हाँकतो दीन्हा ॥
औरे बीर सम हमैं न जानो ❋ अब हमते रण तुमहीं ठानो ॥
यह कहि तीन बाण फटकारा ❋ लगे मणीपतिगात भुवारा ॥

दोहा—तब सँभारि मणिपुरपती, मारे बाण प्रचण्ड ।
सहित अश्वके सारथी, काटि किये नौखण्ड ॥

कर्ण पुत्र क्रोधहि तब पाये ❋ एक लक्ष तब बाण चलाये ॥
रथ सारथि काटे पल माहा ❋ दोनों बीर बड़े बल बाहा ॥
पारथ पुत्र कहे तब बैना ❋ तो सम बीर न देख्यों नैना ॥
कर्णपुत्र शर ऐसे मारा ❋ पर्बत पवन छाय अँधियारा ॥
रवि कुबेर औ यमके बाना ❋ ते सब कुँवर करै संधाना ॥
लेकर शम्भु बाण तब अत्रहि ❋ ताते हते पताका छत्रहि ॥
मणिपुर नृपति हने अस बाना ❋ कर्णपुत्र नभ कियो पयाना ॥
रविमण्डल मो पल इक रहे ❋ पितु प्रपिताके दर्शन भये ॥
तबहिं बीर बसुधा पर आवा ❋ पारथसुत तब बचन सुनावा ॥

दोहा—बिनतासुतजिमिइन्द्रवध, तैसे हति तव प्रान ।
सुनतक्रोध भो कर्णसुत, मारे राजहिं बान ॥

तबमणिपुरपति स्वर्गहि गयऊ ❀ सूर्यतेज महँ छिपि सो रह्यऊ ॥
वहँते जबहीं कीन्ह पयाना ❀ तो सम बोर न देख्यों आना ॥
तब फिरि गये सूर्य के पाहा ❀ अंग अंग तनु जर नरनाहा ॥
पुत्र सुपुत्र कहे रिसियाई ❀ हंस ध्वज को बधि प्रभुताई ॥
ताते स्वर्ग देखायो तोहीं ❀ अजहूँ बीर न चीन्ह्यो मोहीं ॥
मणिपुरपति तब बसुधा आये ❀ वृषकेतू पर बाण चलाये ॥
कर्णपुत्र स्वर्गहि महँ गयऊ ❀ पाछे प्रकट भूमिमहँ भयऊ ॥
कबहुँ अकाश कबहुँ धर धरनी ❀ पार्थ ठाढ़ देखत रणकरनी ॥
बाण लगे तब मांस उड़ाये ❀ अन्तरिक्ष महँ पक्षी खाये ॥
पाँचदिवसलों तब रण कीन्हा ❀ रैनिदिवस सांसहुनहिं लीन्हा ॥

दोहा—मारे बाणजु क्रोधकर, मणिपुरपती नरेश ।
काटि शीश बृषकेतुकर, भये युद्ध करशेश ॥

उठी कबन्ध अस्त्र तो धरे ❀ शिर पारथ के रथ पर परे ॥
हय रथ पैदल रुण्ड सँभारे ❀ देखा पार्थ रुदन संचारे ॥
हा हा कर्णपुत्र धनुधारी ❀ सुन्दर मुख बलिजाउँ तुम्हारी ॥
कुन्ती नृप भाई यदुराई ❀ इन सबते का कहिहौं जाई ॥
बहुप्रकारते रोदन करही ❀ बिबिध भाँति बिलाप संचरही ॥
हा हरि सारथि कीन्ह हमारा ❀ अबतको नहिं दोष तुम्हारा ॥
कर्णपुत्र को बदन निहारी ❀ मोहित भये पार्थ धनुधारी ॥
शीश गोद लै मुर्च्छे पारथ ❀ रसना रटै श्रीपती सारथ ॥
पारथ मूर्छित राजै देखा ❀ आय निकट तो कहो बिशेखा ॥
देखे मूर्च्छित पारथ आई ❀ बभ्रुबाहन परमसुख पाई ॥

दोहा—मूर्च्छित जाने तात कहँ, धनुषाहि अग्र उठाय ।
कछुबचनकहिमणिपती, भाषतकटकसुभाय ॥
सुनिये राजा श्रवण दै, ताको करौं बखान ।
शोच किये का काम है, गहौ धनुष कर बान ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधपर्वभाषाबभ्रुवाहनयुद्धकर्णपुत्रवधोनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

बैशम्पायन करैं बखाना ❋ पारथपुत्र कह्यो परमाना ॥
सुत बैश्यन को तब तुम कहेऊ ❋ ताकारण ते प्रण हम गहेऊ ॥
सूझि परत नहिं क्षत्रिय कोई ❋ बैशम्पायन हय ले सोई ॥
एते दल महँ बीर न ऐसे ❋ कर्णपुत्र कहँ देख्यो जैसे ॥
तुम क्षत्री हम वैश्य सख्याता ❋ करौ युद्ध ऐसी कहि बाता ॥
यह सुनि कर तब पारथ जागे ❋ महा खँभार क्रोध में पागे ॥
बाण धनुष तब कर में लीन्हा ❋ क्रोधित ह्वै रथचढ़ि शुभकीन्हा ॥
करिकै क्रोध कहा यह पाहा ❋ रे मणिपुरपति जोहै काहा ॥
मेरो दल तुमने सब मारा ❋ तोहिं बधौं अब पांडु कुमारा ॥
औरो बहुत बात कहि आये ❋ बाणबृष्टि तो पारथ लाये ॥

दोहा—क्रोधित पारथ बीर तब, बाण बृष्टि झरि लाय ।
रथ गज हय पैदल घने, त्रासित सब महराय ॥

कृतवर्मा को उत्तम साथी ❋ अश्वत्थामा नामा हाथी ॥
भीमउपर कुंजर जब धायो ❋ बीचहि अर्जुन मारि गिरायो ॥
प्रलयकाल महँ शंकर जैसे ❋ पारथ अस्त्र प्रहारत तैसे ॥
पारथ बाण करैं संधानहि ❋ देखे कोइ न मर्महि जानहि ॥
छूटत बाण न देखे पायो ❋ तब देख्यो जब मारिगिरायो ॥
मणिपुरपति तब बिचले जाई ❋ पारथ लगे कोट महँ आई ॥
बाण धावते गढ़ तब तोरे ❋ शर के घाव कँगूरा फोरे ॥
नगर नारि नर रानो भागी ❋ शर ते पावक पुरमें लागी ॥
जबहीं पारथ किय प्रभुताई ❋ क्रोध भये मणिपुरके राई ॥
मारे बाण मणीपुर राऊ ❋ चारों हय के लागो घाऊ ॥
तीनि बाण पारथ को मारे ❋ एक बाण ते छत्र सँहारे ॥
सात बाण मुर्च्छे तब वीरा ❋ बेरथ भये पार्थ रणधीरा ॥

दोहा— तब दोऊ जन भूमि महँ, युद्ध करत विपरीत ।
महामारु को कहिसकै, देखत सब भये भीत ॥

पारथ ने जेते शर छाटे ❋ मणिपुर पति तुर्तहिं सब काटे ॥
बभ्रुबाहन बोलै तब कीन्हा ❋ अस्त्र अनेक जु देवन दीन्हा ॥
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये ❋ सारथि भे हरि सदा बचाये ॥
सो सब अस्त्र होत हैं कैसे ❋ कृपिणी के घर भिक्षुक जैसे ॥
मम माता है सती प्रमाना ❋ ताको दोष दीन्ह अज्ञाना ॥
साधुहिं दोष दीन्ह अज्ञाना ❋ निष्फल होत ताहिको बाना ॥
यह अपराध बूझ दे गारी ❋ अजहूँ सुधिनहिं लीन्ह तुम्हारी ॥
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना ❋ तबलगि हम नहिमारहि बाना ॥
सुनि पारथ क्रोधित शर मारा ❋ मणिपति घायल भये अपारा ॥
बभ्रुबाहन क्रोधित शर मारा ❋ बाणनंत ह्वैगो अँधियारा ॥

दोहा—प्रबल बाण तब मारेऊ, मणिपुरपती भुवार ।
पारथ तब मोहित भयो, भूले घात प्रहार ॥

कोपि पार्थ तब बाण चलाये ❋ पै नहिं सकहिं पुत्र बिचलाये ॥
गङ्गा शाप तुलानेउ आई ❋ बिसरा बल औ बुद्धि नशाई ॥
क्रोधवन्त मणिपुर के नाथा ❋ लीन्हें अर्धचन्द्र शर हाथा ॥
गङ्ग बैर लै ज्वाला रानी ❋ अर्धचन्द्र शर आप समानी ॥
उहै बाण लै धनु संधाना ❋ तेज मनो द्वादशहू भाना ॥
देखत शर पारथ अकुलाना ❋ लक्ष बाण बहु किय संधाना ॥
पावक बाण लगे तब झारन ❋ पै वह बाण लगै नहिं टारन ॥
लाग्यो बाण कण्ठ महँ आई ❋ तजे कबन्ध शीश उड़ि जाई ॥

दोहा—कार्तिक सुदि एकादशी, उत्तरा मङ्गलबार ।
सांझ समय जूझे तहाँ, पारथ पाण्डुकुमार ॥

पारथ बध राजा तब धाये ❋ शंखध्वनि कार हर्ष मनाये ॥
हर्षवन्त बहु बाजन बाजैं ❋ बन्दीजन तौ अस्तुति साजैं ॥
नगर माहिं तब भूपति चले ❋ नाना शकुन होत सब भले ॥
तब अन्तःपुर को शुभ कीन्हा ❋ रानी उतारि आरती लीन्हा ॥

राजा सुनि तब आनन्द मानो ❀ जीते सुत बहु हर्ष बखानो ॥
दासी एक जाय कहि तहां ❀ चित्राङ्गदा उलूपी जहाँ ॥
महाबीर है पुत्र तुम्हारा ❀ पारथ को कीन्हा संहारा ॥
सुनत दोउ मूर्च्छित भुविपरी ❀ दासी सब तब बिस्मयकरी ॥
राजा पाहिं कहा तब जाई ❀ माता दोउ मूर्च्छा खाई ॥
सुनतहिं राजा अचरज पाये ❀ देखन मातुहि तुर्त सिधाये ॥

दोहा—कोइ चन्दन कोइ पवन करि, हाहा करत पुकार ।
असदेखा दोउ मात कहँ, मणिपुरपती भुवार ॥

अलङ्कार बिन विधवा जैसे ❀ मातुहिं जाय दीख नृप तैसे ॥
माता कहँ तब भूप उठाये ❀ औरो बचन कहे मन लाये ॥
हर्ष माहिं दुखभो का जाना ❀ माता हम सों कहो बखाना ॥
मेरो सुयश सुनो अस माता ❀ पारथ कहँ मार्‍यो सख्याता ॥
हंसध्वज नीलध्वज राजा ❀ यौवनाश्व प्रदुमन रणगाजा ॥
अनुशल्वा सुवेग जूझारा ❀ और महाबल कर्णकुमारा ॥
अलङ्कार पहिरो हे माता ❀ देखत हैं अब मङ्गलदाता ॥
सुनत बचन माता तब कहै ❀ हे सुत तुम पापी बड़ अहै ॥
पारथ कन्त हमारो अहै ❀ मेरो सुत है पापहि कहै ॥

दोहा—मेरो भूषण सकल तुव, ताहि उतार्‍यो आज ।
अब भूषण पहिरावता, नेक न आवै लाज ॥

यज्ञनाशि धर्महिं दुख दीन्हे ❀ कुन्ती कहँ पारथ बिन कीन्हे ॥
युद्ध समय पूछेउ नहि मोहीं ❀ पापी पापबुद्धि भइ तोहीं ॥
हम अब कन्तहिं सङ्ग सिधावैं ❀ रे पापी म्वहिं कन्त देखावैं ॥
यह कहि दोउ तिय बाहर गई ❀ बिस्मय राय बहुत बिधिभई ॥
तब उलुपी भाषण अस कहई ❀ एक परीक्षा पियकै अहई ॥
आप बिलोकत हैं अब राय ❀ है उपाय करि सकै जो कोय ॥
मणी सजीवन अहै पताला ❀ प्राण सजीव होय ततकाला ॥
जीवहि पारथ जो मणि आवै ❀ बभ्रुबाहन सुनतै सचुपावै ॥

हमरे पितुसन शङ्कर हारे ❀ बलसम भो को सर्प बिचारे ॥
मैं पताल चलि मणि लैआवों ❀ जीतिनाग अब तात जिआवों ॥
सुनत मातु कह हेतु बुझाई ❀ पुत्र न करु यह बड़ि लरिकाई ॥
बिषम बिषैल तेज प्रत्यक्षक ❀ पन्द्रह कोटि नाग जहँ रक्षक ॥

दोहा—सौ मुखकोइदुइसैबदन, कोइ बदन सौ तीन ।
चार पांच छः सात सौ, बदन आठ सौ कीन॥

नागन केर मणी है प्राना ❀ परस्वारथ जिय देत को दाना ॥
रहा पुत्र मैं मन्त्र उपावों ❀ अपनो भूषण पितहिं पठावों ॥
तबहीं मन्त्रि बोलिकै लीन्हा ❀ सबै आभरण साथहि दीन्हा ॥
कहियो जाय पिता के पाहीं ❀ तुव दुहिता बिधवा भइ आहीं ॥
मणी देहु तौ तात बचायो ❀ कह्योतबहिं इकलो जब पायो ॥
तात पाहँ जो सहोदर कहेऊ ❀ खलुकै रहो रहा नहिं चहेऊ ॥
पुण्डरीक मन्त्री कह बाता ❀ नाशहोय तनु पार्थ सख्याता ॥
पिण्ड लगै तो मणि का करही ❀ कैसे प्राण फेरि संचरही ॥
मैं डसि जाउँ पिण्ड तो रहई ❀ सुनत बभ्रुबाहन तब कहई ॥

दोहा—बड़े बड़े सरदार सब, कर्णपुत्र औ तात ।
जाहुडसीयहकहैंसब, मणिपतिकहसख्यात ॥

तब मन्त्री सबकहँ जो डसेऊ ❀ हर्षित होय पतालहि धसेऊ ॥
पञ्च पेड़ दाडिम के अहहीं ❀ ताहि देखि अब मोते कहहीं ॥
यज्ञ माहिं जो पारथ मरहीं ❀ पाँचों पेड़ आपुते जरहीं ॥
जौनि परीक्षा मृतकै पावो ❀ तो हम तुम मिलि प्राणगँवावो ॥
देखो जाय जरे तरु आहैं ❀ तब रोदन करि चलिपियपाहैं ॥
हाहा कन्त पुकारत चली ❀ संगहि उलुपी रोवत भली ॥

दोहा—देखा जाये शीश भुइँ, दोउ त्रिया लगि पावँ ।
शीश लगाये हृदय महँ, देहपरी केहि ठावँ ॥

रोदन करत कन्तको देखी ❀ बहुतं बिलाप न जाय बिशेखी ॥

हा हो कन्त किरात सँहरेहू ❀ राहु बेधके द्रुपदी हरेहू ॥
द्रोणहि हेतु द्रुपद लै धायो ❀ नृप बिराटके गऊ छोड़ायो ॥
पावक शरण होत नरनाथा ❀ बन अखण्ड जार्‌यो हरिसाथा ॥
रुदन करै अरु बात संचारी ❀ सुत मम शीशकाटि महिडारी ॥
माता कह सुनिये अब राई ❀ दीजै कठिन चिता बनवाई ॥
तजिहौं कन्त संग मैं प्राना ❀ सुनि रोदन करि पुत्र बखाना ॥
पितुको जानि अश्व लै गयऊ ❀ मिलत तात गारी मोहिं दयऊ ॥
सो माता अब कहा न जाय ❀ यहिते क्रोध हृदय मम आय ॥
जन्मत हमैं मातु बध करती ❀ शोक सिन्धु केहिकारण परती ॥

दोहा—बिभवबिलास हुलास रस, बिनपारथकेहि काज।
निश्चय अब पावक जरौं, स्वामी संग लै साज॥

सेवक बोलिकै राजा कहैं ❀ रचो चिता जरनो हम चहैं ॥
चित्राङ्गद सुनत तब कहै ❀ आपुहिं जरो हेतु का अहै ॥
लै भूषण तो चली प्रवेशा ❀ प्रथम गये ब्यालन के देशा ॥
सुतल तलातल सब परमाना ❀ देखे जाय लोक तहँ नाना ॥
नागसुता सब धर्म सुशाला ❀ देखत पहुँचे सप्त पताला ॥
गङ्गाधर देखन जब पाये ❀ तब गङ्गा पहँ शीश नवाये ॥
बहुरि अन्हाय देवकुल पूजा ❀ पूजत हेरहि और नहिं दूजा ॥
नाग सुता सब देखहिं नाना ❀ मदन रूप लखि चित्त लोभाना ॥
पूजि देवता तुर्त सिधाये ❀ सुधाकुण्ड तब देखन पाये ॥
नागयूथ तहँ रक्षा करहीं ❀ हरित बदन जे उपमा धरहीं ॥
ताहि देखिकै अग्र सिधारा ❀ पहुँचे शेषनाग दरबारा ॥
कर्कोटक जहँ मन्त्री अहै ❀ हरित बर्ण ते शोभित रहै ॥

दोहा—भरी सभा महँ मन्त्री, दीन्ह आभरण डारि।
तुव दुहिता बिधवा भई, भाषै बात बिचारि॥

सो कन्या मणि हेतु पठाई ❀ जाते पार्थ जिये सुखदाई ॥

सुनिकै शेष अचम्भो माना ❀ सबै कथा जो पूछि प्रमाना ॥
कैसे पार्थ तज्यो है प्राना ❀ पुण्डरीक सुन कियो बखाना ॥
धर्मराज यज्ञहि निर्माये ❀ हयरक्षक अर्जुनहिं पठाये ॥
बहुत देश जीतत जब आये ❀ तब मणिपुर जो अश्वसिधाये ॥
बभ्रू बाहन पार्थकुमारो ❀ गह्यो अश्व जब सुने भुवारा ॥
पिता जानि मिलने जब गये ❀ तब पारथ बहु गारी दये ॥
तात क्रुद्ध ह्वै रण अनुसारा ❀ सब दल सहित पार्थ को मारा ॥
तुव कन्या सब बिनय प्रमाना ❀ है सरवर संजीवन जाना ॥
मणी देहु तो बचिहै पारथ ❀ नातो सब जो भये अकारथ ॥

दोहा—शेष कहै बिस्मय बदन, धृतराष्टक की बात ।
सुनि मन्त्री आश्चर्य है, पार्थ मृत्यु उत्पात ॥

मणी देहु औ अमृत भाई ❀ जाते पार्थ प्राण बचिजाई ॥
सुनतै सबै नाग रिस ताता ❀ एकहि बदन कहे सब बाता ॥
धृतराष्ट्रक राजा ते कहेऊ ❀ पृथ्वीनाथ एक मणि अहेऊ ॥
पुरो पताल नाग जहँ मरई ❀ कहो बात तब कत संचरई ॥
यह मणि मृत्यु लोक कहँ जाई ❀ औषध मन्त्र होब कतराई ॥
तेज हमार हीन बिष होई ❀ भय हमार मनिहै नहिं कोई ॥
ताते मणी दीन्ह नहिं चही ❀ सुनतै शेषनाग तब कही ॥
मणि दोजै ह्वैहै यश मेरो ❀ और काम तो होय घनेरो ॥
मन्त्री कहै देब नहिं राजा ❀ मणी गये नाशै सब काजा ॥
धनुष बांधिकै नागन खैहै ❀ गरुड़ दुष्ट आवत दुख पैहै ॥

दोहा—शेष कहै मणि दीजिये, पारथ हरि को दास ।
आये दूत सुआस करि, कैसे करहु निरास ॥

ग्वाल बच्छ जब ब्रह्मा हरे ❀ माया रूप कृष्ण सब करे ॥
बर्ष एक बिधि रहे भुलाये ❀ सो पारथ के आय सहाये ॥
मैं मणि देहों जग यश रहै ❀ सुनत बात मन्त्री अस कहै ॥

जो बिनाश नागन कुल कीजै ❋ मृत्युलोक तौ मणि यह दीजै ॥
मन्त्री हेतु कहा सब यही ❋ राजा के मन बिस्मय रहो ॥
अब हम कछू कहैं नहिं बाता ❋ अहि के भवन गये सख्याता ॥
पुण्डरीक के शेष बुझायो ❋ हम ते कछु नहीं बनियायो ॥
वहँ हैं कृष्ण जगत के तारण ❋ तुम पताल आये केहिकारण ॥
शेषनाग तौ कह मन दयऊ ❋ आशा भङ्ग दूत तब भयऊ ॥
भये निराश चले पुनि तहाँ ❋ नर नारी मन जोहत जहाँ ॥

दोहा—रोदन करतीं त्रिया सब, विस्मय मनबहुराय।
मग जोहत अभ्यन्तर, दूत पहूँचे आय॥

बातैं कह्यो सबै समुझाई ❋ पुरी पताल मणी नहि पाई ॥
शेष दीन्ह मन्त्री नहिं दीन्हे ❋ सुनत क्रोध बभ्रुबाहन कीन्हे ॥
धृतराष्ट्रक राजा ते कहई ❋ मृत्यु भुवन को मणी न अहई ॥
मणि अमृत हति सर्पहि लोऊँ ❋ बभ्रुबाहन तब नाम कहाऊँ ॥
इन्द्र बरुण यम शंकर होई ❋ जीतों सबहिं जो आवै कोई ॥
इतना कहि किय रणके साजा ❋ लै दल चले युद्ध के काजा ॥
पहुँचे जबहिं शेष सुनि पाये ❋ तब मन्त्री सन कहा बुलाये ॥
आये रणहि मन्त्र का अहै ❋ सुनत बात मन्त्री तब कहै ॥
हम तो जाब करन रण साजा ❋ मारहुँ सबहिं शोच का राजा ॥
इतना कहि धृतराष्ट्र सिधाये ❋ नाग सैन्य तब अद्भुत आये ॥
हय गज रथ पर भे असवारा ❋ बिषम बिषैल चले मणिआरा ॥

दोहा—दोय तीनसौ चार मुख, बिषधर बीर अपार।
गहे अस्त्र आये सबै, अगणित पार्थ कुमार॥

देखत पारथ कुँवर रिसाना ❋ बर्षन लागे अद्भुत बाना ॥
नागहिं अस्त्र बिषम फुफकारा ❋ मानुष जूझैं होत सँहारा ॥
सेल्ह साँग मार्‌यो असि बाना ❋ मारो सर्प बीर बलवाना ॥
बिषके तेजहि दल अकुलाना ❋ जूझा दल तब बहुत रिसाना ॥

सहस एक इस दल बध भयऊ ❋ बभ्रुबाहन नाम तब लयऊ ॥
धृतराष्ट्रक सो मारे बाना ❋ क्रोधवन्त है काल समाना ॥
न्यूर मोरको अस्त्र चलायो ❋ ऐसे बहुत नाग बिचलायो ॥
महा मारु तब प्रकटी भारी ❋ मारेगये बहुत बिषधारी ॥
पुनि सबनागन कीन्ह देरा ❋ दशो दिशा में नरदल घेरा ॥
बभ्रुबाहन तब बहुत रिसाना ❋ क्रोधित मारे मधुको बाना ॥

दोहा—मधूप्रश्न करिकै तबै, मारत पिलके बान ।
चाम मास औ हाड़ जे, छेदे उभय प्रमान ॥

ऐसी मारु भई घमसाना ❋ तबहिं नागदल सब भहराना ॥
मारन गये क्रोध करि बाना ❋ भागे हेतु कहा सो माना ॥
अबहूँ मणी तुरन्तहि दीजे ❋ शेष कहा मन्त्री अस कीजे ॥
शेषनाग उर हर्ष जु कीन्हा ❋ मणि अमृत दोऊ लै दीन्हा ॥
मिलन हेतु सो सब पग धरे ❋ गृह में मन्त्री रोदन करे ॥
बैरी पाण्डव दुष्ट हमारा ❋ मणि अमृत गै करै बिचारा ॥
दुष्ट दुर्बुधी दो सुत अहैं ❋ तब ते बात तात सन कहैं ॥
हम हैं ऐसो पुत्र तुम्हारा ❋ जिये पार्थ कैसे संसारा ॥
आजु जाहु राजा सँग धाई ❋ हम कछु तबहीं रचब उपाई ॥

दोहा—शिर आनब मैं पार्थका, रुण्ड रहै मैदान ।
देखौं कैसे सुधामणि, करि देही जिवदान ॥

यह कहि तात तुरन्त सिधाये ❋ दूनों बन्धु मणीपुर आये ॥
भेद कोउ जानैं नहिं पाये ❋ पारथ को लै शीश सिधाये ॥
कुञ्ज बिपिन महँ मलिके डारा ❋ शीश नहीं तब त्रिया निहारा ॥
रोदन करैं त्रिया बहुरूपा ❋ मणिपति मिले धाय के भूपा ॥
मणि अमृत दीजे तौ हाथा ❋ हर्षित चले मणीपुर साथा ॥
शेष आदि सबही तब आये ❋ रणभूमी जहँ पार्थ गिराये ॥
देखा तहाँ राव दुइ नारी ❋ काहु हरो शिर करौ गोहारी ॥

राजा सुनतै मूर्छित भयो ❋ हे विधि कौन कर्म तैं कियो ॥
जबहीं राजा मूर्छित भया ❋ पुरी हस्तिना की सुधि किया ॥
पारथ सपना मातुहि दयऊ ❋ कुन्ती हरिते बोलन लयऊ ॥

दोहा—तेलकुण्ड महँ पार्थ अरु, सबन करै अस्नान।
चाढ़िगर्दभनदखीनादिशि, कीन्हारौनिपयान ॥

सोबर्तन सुलाल है फूल ❋ पारथ सपन देखि भय शूल ॥
रोदन करि कुन्ती संचारे ❋ श्रीपति कीन्हा पारथ मारे ॥
चले भीम तब कुन्ति डेरानी ❋ हरी गरुड़ पर आसनठानी ॥
पार्थ हेतु चल शारँगपानी ❋ मणिपुर चले पहूँचे आनी ॥
देखा रण श्मशान समानौ ❋ तम्बू एक देख भगवाना ॥
अगणित रानी रादन करहीं ❋ कृष्णारु भीम तहाँ पगुधरहीं ॥
देखा हरि पारथ के रुण्डा ❋ रोदन करैं त्रिया बिनु मुण्डा ॥
कह तब हरिहिं कौन रणराना ❋ को पारथ को कौन निदाना ॥
हा पारथ करि कहा बखानी ❋ रोये भीम कुन्ति पटरानी ॥
तबहीं भीम कहा अस बानी ❋ ऐसो कौन बीर जग जानी ॥

दोहा—मेरे देखत अश्व हरि, बधे पार्थ रणधीर।
जाहि कुशल सो प्राण लै, ऐसो को यदुबीर ॥

बभ्रुवाहन रोदनकरि कहै ❋ हमतो पुत्र पार्थ कर अहै ॥
कर्म दोष हत्या हम पाये ❋ तातहि अपने हाथ गिराये ॥
अमृत हरि पताल ते लाये ❋ अभ्यन्तर शिर कोउ दुराये ॥
ताते भीम गदा परिहारो ❋ मेरो शीश चूर्ण करिडारो ॥
मैं दर्शन श्री हरिके पाये ❋ जगके भय मोमन नहिं आये ॥
श्रीपति हमैं मृत्यु अब दीजै ❋ मेरो पाप उऋण अब कीजै ॥
चित्राङ्गदा रुदन तब करी ❋ कुन्ती के चरणन महँ परी ॥
शोकित कुन्ती परि मुर्च्छाई ❋ शेष कहा सुनिये यदुराई ॥
पाण्डुबंश बूड़त अब कैसे ❋ तुमहिं कियो रक्षा उनजैसे ॥

सुनिकै हरि चिन्ता उर पागे ❀ सबै लोग तब बोलन लागे ॥

दोहा—ब्रह्मचर्य जो पुण्य हम, कीन्ह जगत मोझार ।
तौ आवै शिर पार्थ को, चोर होउ संहार ॥

कहतै तुर्त शीश तब आये ❀ मन्त्री दुष्ट नाश तब पाये ॥
पाय शीश कन्धा पर धारे ❀ हरि मणिहाथ कहै संचारे ॥
उरमें पारथ मणि तब राखे ❀ उठत पार्थहि श्रीपति भाखे ॥
लागे शोश उठो तब कैसे ❀ चुम्बकमाहिं लोहलग जैसे ॥
प्रद्युमनवह मणि धरि जगबन्दन ❀ रहुरहु करि तब उठे अनन्दन ॥
कर्णपुत्र सूबेग कुमारा ❀ यौवनास्व अनुशल्यभुआरा ॥
हंसध्वज नीलध्वज राऊ ❀ जागे सबै चेत तब पाऊ ॥
पारथ आदि सबै जब जागे ❀ धाय कृष्ण के चरणन लागे ॥
सेवक शेषनाग तो भयऊ ❀ शेष अनन्द बहुत बिधि भयऊ ॥

दोहा—नाना कौतुक बाद्य तब, होत अनन्द अपार ।
पैदल सैना पार्थले, सुनत नगर पगुधार ॥

बभ्रुबाहन लज्जा पाये ❀ सभामाहिं नहिं मुख देखराये ॥
कहै पाप पितुको बध ऐसो ❀ पाप याहि कूटै धों कैसो ॥
करवट लेउँ दहौं तनु काशी ❀ हिमप्रयाग जाइहौं प्रकाशी ॥
तबहुँ पाप का छूटत अहै ❀ सुनिकै भीम बोधि तब कहै ॥
सुनहू पुत्र शोच नहिं कीजै ❀ हमजो कीन्ह श्रवण सुनिलीजै ॥
भीष्मपितामह मैं संहारा ❀ द्रोण गुरू अपने कर मारा ॥
हरि दर्शन सों पाप नशाना ❀ तुव दर्शन पाये भगवाना ॥
पारथ गहे तबहिं सुत हाथा ❀ गहि बैठारे अपने साथा ॥
पुरमहँ भई अनन्द बधाई ❀ परमहर्ष माने यदुराई ॥

दोहा—पाँच दिवस आनन्द बहु, बीते माणपुर देश।
प्रात समय सब आयहू, बोलत भये ऋषेश ॥

कह्यो भीमते श्रीयदुराई ❀ चित्राङ्गदहि लीन्ह सँग लाई ॥

शेषसुता तौ सङ्ग सुजाना ❀ कुन्ती अरु मम मातु प्रमाना ॥
अब तौ जाहुँ हस्तिना देशहि ❀ हम हस्तिनके संग बिशेषहि ॥
सुनतै सबको सँगकरि लाये ❀ भीम बिदा तो हस्तिन पाये ॥
शेषनागको पूजा दीन्हे ❀ शेषागमन पतालहि कीन्हे ॥
भीमसेन हस्तिनपुर गये ❀ सब बात तो कहबै लये ॥
बिस्मय हर्षतु धर्मकुमारा ❀ वैशम्पायन कथा सँचारा ॥
पाण्डु बिजय यह पुण्य कहानी ❀ बाढ़ै धर्म पापकी हानी ॥
तब जनमेजय पूछन लागे ❀ कौनो कौन देश नृप आगे ॥
कहा भयो कैसो रण भारी ❀ बैशम्पायन कहौ बिचारी ॥

दोहा—बैशम्पायन भाषेऊ, रहस कथा सुन राय ।
मणिपुरते हय छूटऊ, चले बीर सँग धाय ॥

इति श्रीमहाभारत अश्वमेधयज्ञ भाषामणिपुरतोहय मोचनो नाम नवमोऽध्यायः ॥९ ॥

बभ्रुवाहन संग है पारथ ❀ बैशम्पायन कहै यथारथ ॥
चलत पन्थ महँ कौतुक भाया ❀ ताम्रध्वज हय देखन पायो ॥
मोरध्वज को पुत्र जुझारा ❀ अपनो अश्व करै रखवारा ॥
मोरध्वजहि यज्ञ निर्माये ❀ पारथ को हय देखन पाये ॥
पारथ को हय गह सो पाये ❀ पठै सचिव तौ अर्थ सुनाये ॥
बहुत शुद्ध मन्त्री की बाता ❀ ताम्रध्वज हर्षित सुनि गाता ॥
हरे अश्व दलको संहारा ❀ कहै कुँवर तौ काज हमारा ॥
संवत मध्य यज्ञ तो करै ❀ अष्टम यज्ञ अश्व तब हरै ॥
हरे अश्व तौ हर्ष अपारा ❀ तब पारथ दल परो पुकारा ॥
हन्यो अश्व तब खरब भारी ❀ तब पारथ ते कह बनवारी ॥

दोहा—महाबली तो मोरध्वज, सब राजा कर देत ।
बभ्रुवाहन कह सत्य है, हम कर देत सचेत ॥

कह्यो कृष्ण नर्मद के तीरा ❀ इनके तात यज्ञ करि धीरा ॥
इनते जीति सकै नहिं कोई ❀ यद्यपि सैना साजै जोई ॥

गीध पुष्प दल करी प्रमाना ❀ अनुशल्या रह कन्धस्थाना ॥
हंसध्वज नयनन महँ राखो ❀ और काम अनिरुद्धहि भाखो ॥
सात्यकि पुत्र पच्छ के माहा ❀ मेघवर्ण दल रक्षक ताहा ॥
पारथ सुत औ कर्ण कुमारा ❀ दोनों चोचन के रखवारा ॥
ऐसे दल संयुत करवाये ❀ ताम्रध्वज पहँ कृष्ण सिधाये ॥
करि प्रणाम ताम्रध्वज कहै ❀ आपै युद्ध हेतु मन गहै ॥
आपुहि युद्ध करिय मनलाई ❀ मोको नाहीं भ्रम यदुराई ॥
अर्धचन्द्र शर सैना करै ❀ अगणित ताम्रध्वज संचरै ॥

दोहा—सत्रह बाणन हाथ लै, मारचो विरह अनङ्ग।
तीनि बाण तो श्याम के, मारचो ताकि अभङ्ग॥

पाँच बाण दारुक को मारे ❀ घायल भये न ज्योति सम्हारे॥
रण महँ गर्जा सिंह समाना ❀ मारा सात्यकि को तब बाना ॥
कृतबर्महि मारे नौ बाना ❀ सहस बाण प्रद्युम्न समाना ॥
बाण सहस्र कामसुत ताना ❀ अनिरुध क्रोधे काल समाना ॥
रह रह अब सह बाण हमारा ❀ यह कहि बहुत बाण संचारा ॥
करिके क्रोध बाण तब छांटे ❀ मोरध्वज ता बीचहिं काटे ॥
पांच बाण ताम्रध्वज मारा ❀ मारे चारौ तुरँग तुशारा ॥
ब्याकुल भये क्रोध रण ठये ❀ पारथ दल सब घायल भये ॥
प्रद्युमन के रथ को तो तोरा ❀ तब अनिरुद्ध क्रोध शर जोरा ॥

दोहा—तब दोनों बसुधालरे, महामारु तो ठान ।
मल्लयुद्ध तब ठानऊ, अनिरुधगिर मैदान ।

और रथ ताम्रध्वज चढ़े ❀ महामार युद्धहि मन बढ़े ॥
हरि ते भाषै अनिरुध गिरे ❀ तब देखत बृषकेतू फिरे ॥
मारि हांक तो बाण प्रहारा ❀ ताम्रध्वज को रथ संचारा ॥
जौने रथ ताम्रध्वज आवै ❀ कर्णपुत्र सो मारि गिरावै ॥
तबहीं क्रोध ताम्रध्वज भयो ❀ काल समान बाण तो लयो ॥

तेहि शर मूर्च्छित कर्ण कुमारा ❀ पांच बाण तौ तेहि संचारा ॥
ताते मूर्च्छित भयो अनुशल्या ❀ देखत बभ्रुबाहन तब चल्या ॥
पांच बाण रहु रहु करि मारा ❀ ताम्रध्वज रथ काटि पँवारो ॥
यौवनाश्व पारथ सुत मारे ❀ ताम्रध्वज सो काटि पँवारे ॥
क्रोधित बाण छाँड़ि तब दीन्हा ❀ बभ्रुबाहन को मूर्च्छित कीन्हा ॥

दोहा—रहो कृष्ण रणमाहिं अब, सहौ हमारो बान ।
क्षत्री भागेउ देखतै, पारथ दल भहरान ॥

सबै बीर देखत हैं ताहाँ ❀ ताम्रकेतु डारत रण माहाँ ॥
देखत पारथ वीर रिसाना ❀ ताम्रध्वज कहँ मारेउ बाना ॥
नवो बाण पग अश्वन मारे ❀ और बाण ते रथ संहारे ॥
औरे रथहिं भये असवारा ❀ नवो बाण पारथ कहँ मारा ॥
और बाण ते रथ संहारा ❀ औरे रथहिं भयो असवारा ॥
तबहीं क्रोध करे बहु लीन्हा ❀ बाण बृष्टि पारथपर कीन्हा ॥
ते असदेखि सुचित तहँ भयऊ ❀ शंखध्वनि पारथ तहँ कियऊ ॥
ताम्रध्वज का रथ संहारा ❀ औरै रथ चढ़ि श्यामकुमारा ॥
क्रोधवन्त बाणन तब मारा ❀ पारथ के सारथि संहारा ॥
और बाण पारथ के लागे ❀ मूर्च्छित भे पुनि पारथ जागे ॥
महा मारु पारथ पर दीन्हे ❀ एक सहस्र मारि रथ लीन्हे ॥

दोहा—ताम्रध्वज को सबै दल, पारथ शर भहरान ।
तबहूँ ताम्रध्वज बली, छांडा नाहिं मैदान ॥

पारथ मारा बाण रिसाई ❀ ताम्रध्वज रथ मारि गिराई ॥
औरहि रथ पर भो असवारा ❀ पारथ ऊपर बाण प्रहारा ॥
पारथ के शिर प्रबल समाना ❀ द्रोहिणि दुइ दल गिरे प्रमाना ॥
अयुत बाण ताम्रध्वज मारा ❀ पारथ क्रोधित बाण सँचारा ॥
धनुषे गुन काटे तब पारथ ❀ दोय सहस मारे रथ सारथ ॥
सात दिवस लग दिन अरु राती ❀ ऐसी मारु भई बहु भाँती ॥

ताम्रध्वज शर हते रिसाई ❀ पारथ को रथ चला उड़ाई ॥
ऊपरते रथ भुवि करि ग्रामा ❀ हस्तकमल पर लीन्हे श्यामा ॥
भुविपर जब राखे यदुराई ❀ त ताम्रध्वज कह बिलखाई ॥
भूमें मैं उड़ाय रथ डारा ❀ राखे कर धरि नन्द कुमारा ॥

दोहा—श्रीपति गदा घाव करि, औ करिचरण प्रहार ।
मूर्छा रहि पल एकलौं, जागे राजकुमार ॥

तीनि बाण हरिको तब मारा ❀ कह हरि पार्थ करो संहारा ॥
हम तुम आजहि इनको मारैं ❀ यहि अन्तर श्रीकृष्ण बिचारैं ॥
मारे रिस करि पारथ बाना ❀ बहुरि क्रोध भे पार्थ रिसाना ॥
क्रोधवन्त ह्वै बाण चलाये ❀ ताम्रध्वज गुन काटि गिराये ॥
तब ताम्रध्वज कहै रिसाई ❀ अब पारथ राख्यो यदुराई ॥
जो नहिं रथ पर पारथ आये ❀ सारथि भे तब रथहि बचाये ॥
ताम्रध्वज हरिको हनुमाना ❀ पारथ दल तो सब भहराना ॥
हय गज रथ पैदल हैं जेते ❀ वहि रण में बिचले सब तेते ॥

दोहा—ताम्रध्वज को सबै दल, क्रोधित ह्वै भगवान ।
गहे चक्र तब चक्रधर, महा मारु तब ठान ॥

रथ ते बेगि उतरिकै धाये ❀ तीनि लोक तब शङ्कापाये ॥
डगमगानि भुवि सब संसारा ❀ एक क्षोहिणी दल संहारा ॥
तब सुचित्र बहुघातैं करै ❀ आय धाय श्रीकृष्णहि धरै ॥
दहिने हाथ गहे तब धाये ❀ बायें कर पद शीश चढ़ाये ॥
पारथ जाना मिले प्रमाना ❀ ताम्रध्वजहिं क्रोध तब माना ॥
बाम चरण पारथ कहँ मारा ❀ हरि पर गिरे सुचित्रकुमारा ॥
हरि अर्जुन तब मूर्छित भये ❀ लेकर अस्त्र चलन मन दये ॥
हर्षि गात अपने पुर चले ❀ दूनौ अश्व संग हैं भले ॥
मोरध्वज तब देखन पाये ❀ दूजो अश्व कहाँ ते लाये ॥

दोहा—ताम्रध्वज औ मन्त्रि ने, भाषे सब बिरतन्त ।
धर्मराज कर अश्व है, रक्षक कमलाकन्त ॥

रक्षक पारथ श्री भगवाना ❀ सबदल मोहित किय मैदाना ॥
सुनहु ताम्रध्वज राजा कहै ❀ धिक धिक सुत तू मेरो अहै ॥
हरिको तजे अश्व लै आये ❀ धिक जीवन तोहिं गुरुपदाये ॥
बहुप्रकार ते डाटन लागे ❀ इत पारथ हरि मूर्च्छा जागे ॥
बभ्रुबाहन आदि सरदारा ❀ चेतन भये सबै बिस्तारा ॥
पारथ कहै कहाँ यदुराई ❀ अश्वहि लिये कहाँ भो जाई ॥
हमहूँ को चलिये लै तहाँ ❀ सुनी बात तब श्रीपति कहाँ ॥
रत्नपुरी मोरध्वज राऊ ❀ वह लै अश्व गयो परमाऊ ॥
परम बली है भक्त हमारा ❀ माया कै कीजै संचारा ॥
वृद्ध द्विज हम तुम हो बालक ❀ यहि विधि चलो कहैं गोपालक ॥

दोहा—नृप का सत्त देखाइहौं, तुमको पारथ बीर ।
बाल बृद्ध माया करी, चलो नृपति के तीर ॥

सेन राखिके द्वउ जन आये ❀ रत्नपुरी निशि माहिं सिधाये ॥
नर नारी कौतुक लख नाना ❀ प्रात होत नृप पहँलो आना ॥
यज्ञशाल मो राजा अहै ❀ दूनो अश्वहि देखत रहै ॥
जाय बिप्र जब आशिष दयो ❀ तब राजा यह बोलत भयो ॥
बिन प्रणाम तुम आशिष दयऊ ❀ मोको महापाप द्विज भयऊ ॥
द्विज कह कछु पाप नहिं राजा ❀ याचक द्विजकी है यह काजा ॥
करि प्रणाम तब राजा कहै ❀ कहो बिप्र मन का मन अहै ॥
द्विजन कहो मध्यपुर ग्रामहि ❀ कृष्ण शर्म्मा है मेरो नामहि ॥
अपने सुत को ब्याह बनाये ❀ पुत्र बधू लै तुम पहँ आये ॥
मार्ग माहिं घन कानन अहै ❀ तहाँ सिंह मेरो सुत गहै ॥

दोहा—मैं बिलाप बहु कीन्ह तब, सिंह न छांड़ै पुत्र ।
हम न गहै शिशुही गहै, खान चहत ममपुत्र ॥

सिंह कहै आयू जेहि अहैं ❀ ताको हम नाहीं द्विज गहैं ॥
जो चाहत हौ पुत्र बचावा ❀ तौ दीजै जो मन मम भावा ॥
एक बस्तु माँगा हम पामा ❀ जाते हम आये करि आसा ॥
मोरध्वज राजा तब कहै ❀ मेरे देश सिंह नहि अहै ॥
तब राजा पूछन यह लागे ❀ तुम ते सिंह कहो का माँगे ॥
जो माँगे सो हमैं सुनाओ ❀ जामें तुम अपनो सुत पाओ ॥
मिथ्या होय न बात हमारी ❀ तब द्विज यह बाणी संचारी ॥
मोरध्वज को अर्ध शरीरा ❀ म्वहिदै सुतकहँ ले द्विजबीरा ॥
तब हम कहा सिंह सुनु बीरा ❀ मोहित नृप कत देत शरीरा ॥
तबहिं सिंह कह सत जो ह्वैहै ❀ दीहै देह कछु ना कहिहै ॥

दोहा—ताते नृप मैं आयऊं, अपने सुत की आस ।
धर्मराज साहस सुनो, सो तो तुम्हरे पास ॥

मोरध्वज हर्षित ह्वै कह्यो ❀ लेहु शरीर बिप्र जो चहो ॥
कछु नहि दुःख करौ संचारा ❀ यह ब्राह्मण है इष्ट हमारा ॥
सुनतहिं जग मों द्विज हैं जेते ❀ हाहा शब्द पुकारत तेते ॥
काल स्वरूप बिप्र इक आवा ❀ नगर निवासिन बहुदुख पावा ॥
खम्भ दोय तहँ तबहो गाड़ो ❀ राजा तहां जाय भो ठाड़ो ॥
करि अस्नान तुलसिदल लये ❀ कृष्ण ध्यान महँ अतिमनदये ॥
तबहि म्लेच्छ राजा ते कहे ❀ करवत शिर देखो जो गहे ॥
पशु पक्षी रोवत पुर भारी ❀ तब रानी गइ कहै बिचारी ॥
पतिब्रता तु रानी कहई ❀ अर्ध अङ्ग स्त्री द्विज अहई ॥

दोहा—अर्ध गात द्विज भाषेऊ, सिंह कहा समुझाय ।
बाम अङ्ग जानि लायऊ, दाहिना लाओ जाय ॥

बाम अङ्ग पतिब्रता आहै ❀ ताते सिंह तुम्हैं नहिं चाहै ॥
यहि अन्तर ताम्रध्वज आये ❀ करि प्रणाम तो द्विजहि सुनाये ॥
पितु को अङ्ग पुत्र सो अहै ❀ मेरो तनु लीजै यह कहै ॥

सुन्दर तनु जो पुष्ट सोहाई ❀ तबहिं बिप्र यह बचन सुनाई ॥
सिंहहि कहा और नहिं काजा ❀ लाओ तनु मोरध्वज राजा ॥
स्त्री पुरुष चीरिहैं देहा ❀ बिस्मय नहिं आनन्द सनेहा ॥
मङ्गल करिकै देह चिराओ ❀ दहिने अङ्ग बिप्र लै आओ ॥
स्त्री पुरुष हर्ष तब करी ❀ करवतलै राजहिं शिर धरी ॥
इन्द्र आदि देवनगण जेते ❀ नृप सत देखन आये तेते ॥
नगर लोग सब देखहिं नाना ❀ स्त्री पुरुष तु हर्ष निदाना ॥

दोहा—उलटे आरा नयन कर, अर्ध शीश गयो चीर ।
बाम नैन मोरध्वजहि, तुर्त चला तब नीर ॥

देखतहीं द्विज कह नृप पाहीं ❀ कादर दान लेत द्विज नाहीं ॥
देत शरीर तु रोदन करैं ❀ याहि दान हम कैसे धरैं ॥
बरु पुत्रही सिंह लै खाऊ ❀ यह कहि चले तुर्त द्विजराऊ ॥
संगहि पारथ करिकै चलेऊ ❀ लोग सबै तहँ देखत भयऊ ॥
तब रानी करवतो उतारा ❀ गहे दाबि शिर हाथ भुवारा ॥
कहहीं बात नाथ सुनि लीजे ❀ बिप्र काहि सन्तुष्ट करीजै ॥
तजे शरीर बिमुख द्विज जाई ❀ अहो कन्त द्विज लेहु मनाई ॥
तब राजा कर शिर धरि कहै ❀ पाछे बात बिप्र सों कहै ॥
अहो बिप्र बिनती सुनि लीजै ❀ पाछे आप गमन जो कीजै ॥
करवत ते नहिं दुःख हमारे ❀ बहुत दुःख जो विमुख सिधारे ॥

दोहा—बाम अङ्ग रोदन करै, हम निष्फल संसार ।
दक्षिण अङ्गहि हर्ष बहु, मैं द्विज राज सँवार ॥

सुनतहि बात हर्ष द्विज पाये ❀ हर्षित राजहिं रूप दिखाये ॥
चतुर्भुजा ह्वै दर्शन दीन्हा ❀ माँग माँग बर बोलैलीन्हा ॥
दै शरीर तोषित किय मोहीं ❀ जगमें भक्त देखियत तोहीं ॥
धन्य पुत्र ताम्रध्वज तेरो ❀ सबदल जीतिलियो जिन मेरो ॥
तब राजा अस्तुति बहु कहै ❀ पाछे बात बिप्र सों कहै ॥

माथे हाथ मृतक के दीन्हा ❋ सब कलेश नाश तब कीन्हा ॥
राजा कह बिश्वम्भर देवा ❋ माँगहु बर सूनौ हरि भेवा ॥
जैस परीक्षा हमरे लयऊ ❋ स्त्री सुत चिन्ता नहिं भयऊ ॥
कलिमहँहोय जु भक्त तुम्हारा ❋ ऐस न याचहु त्यहि जगतारा ॥
यह कहि धन अरु सम्पतिदयऊ ❋ दूनहु अश्व आप सँग लयऊ ॥

दोहा—यह भाषे जगहेतु कहँ, पाय दर्श भगवान ।
करै यज्ञ हरि दर्श लहि, होय सदा कल्यान ॥
अश्वदलहि नृप संगलै, चले मोरध्वज राव ।
भक्त परीक्षा लेन को, तौ हरि कीन उपाव ॥

इति श्रीमहाभारतेअश्वमेधयज्ञ भाषाकृत मोरध्वजराजा दर्शनपावनोनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दूनो हय लै पारथ चले ❋ बैशम्पायन बोलत भले ॥
दल समग्र चलि आयो तहाँ ❋ सरस्वति पुरी नगर है जहाँ ॥
बीर भानु तहँ नाम नरेशा ❋ दोनों अश्व करैं परवेशा ॥
नगर के लोग धर्म अनुरूपा ❋ आये अश्व सुन्यो तब भूपा ॥
पञ्च बीर को आज्ञा दयऊ ❋ तबहीं अश्व नृपतिपहँ गयऊ ॥
सुरभ सुलभ अरु नीलप्रमाना ❋ कुबलयबल पाँचो बलवाना ॥
पांच वीर रण मों गह गहै ❋ तब मणिपुरपति रहुरहु कहै ॥
शंखनाद तब बीरन कीन्हा ❋ धनुषबाण हाथै सब लीन्हा ॥
बर्षन लगी बाण की धारा ❋ दोउ दल जूझै बीर अपारा ॥
रथ गज अश्वरु पैदल लाखन ❋ जूझन लगे सकै को भाखन ॥

दोहा—याहि अन्तर यम आयकै, सैना बधे हजार ।
जामाता यम नृपति के, भाषे नन्दकुमार ॥

ताते सैना इह बध कीन्हा ❋ तब पारथ पूछै कह लीन्हा ॥
यमको कत नृप कन्या दीन्हा ❋ सुनतै कृष्ण कहे तब लीन्हा ॥
राजा के मालिन भौ बारी ❋ योग स्वयम्बर भूप बिचारी ॥
राजा पूछहि कन्या कहौ ❋ माँगहु बर जो मनमें चहौ ॥

देव नाग अरु मनुज सुरारी ❀ जो बर चाहो कहो कुँवारी ॥
कन्या कहै तात ते बाता ❀ यमराजा को चाहत ताता ॥
कालहि पाय त्रिया जो मारे ❀ अन्त जन्म तो गृह पगुधारे ॥
तबै कन्त दूसर तौ होई ❀ महापाप ताते है सोई ॥
ताते प्रथमहि यम को बरो ❀ एक पुरुष दूसर परिहरो ॥
नृपकन्या नृपपर मन साधे ❀ निशिबासर यमको आराधे ॥

दोहा—नारद यह तौ जानिकै, यमपुरगो हरपाय।
कन्याका बृत्तान्त सब, कहा धर्म सन जाय॥

पांच पुराय जानो सम राजा ❀ मालिनिसुधिबिसरे केहि काजा ॥
धर्म्मवन्त कन्या सो अहै ❀ सारस्वतपुर नृपको रहै ॥
एकब्रत सो मनमहँ धरै ❀ यम राजा को चाहत बरै ॥
जाय करौ अब ताको ब्याहा ❀ तब यम भाष्यो नारद पाहा ॥
आपु जाहु हम पाछे ऐहैं ❀ बैशाख मास मों हमहूँ जैहैं ॥
शुक्लपक्ष मो ऐहौ सही ❀ नारद सुना चले तब जही ॥
सारस्वत नगरै तब गयऊ ❀ सबै बात राजा सों कहेऊ ॥
कहिकै नारद सुरपुर आयो ❀ शुक्लपक्ष बैशाख तु भयो ॥
धर्मराज सब बीर बोलाये ❀ सबै लोग तब तुरतहिं आये ॥
दुइ आहैं सबके सरदारा ❀ शुक्र प्रमेह रोग अपारा ॥

दोहा—सबरोगन सों यम कहै, चलो संग बरिआत।
ब्याह हमारो होत है, सारस्वत पुर जात॥

तब सब रोग कहैं यह बाता ❀ पुराय धर्म है ह्वाँ बहु ताता ॥
वहां हमार नहीं संचारा ❀ तुरत तेज बल जाब हमारा ॥
यमहि कहा पापी नर जेते ❀ रूप कुरूप देखिहैं तेते ॥
धर्मवान जेते नर अहई ❀ रूप अनूप देखिहैं कहई ॥
जाको पीड़ा कर बहु भाई ❀ ताको भेद कहो समुझाई ॥
ब्रह्मबधे कर पातक जाही ❀ ब्रह्म अंश क्षयी गहु ताही ॥

गोदावरि गोतम इक मासा ❋ परशे क्षयी रोग को नाशा ॥
देव द्रव्य हरघरी सतावै ❋ तासु शरीर विसूचिक आवै ॥
ताको नाम खराड है भाई ❋ अजयाकञ्चन मुख नहिं जाई ॥

दोहा—कञ्चन भूषण श्रद्धया, दान दिये ते जाय ।
गर्भापात के पाप ते, गहत जलन्धर आय ॥

एकोत्तर सौ तुला जो करई ❋ लक्ष छत्र दीन्हे सो हरई ॥
रस अरु द्रव्य जो चोरी करै ❋ ताका व्याधि अरुचित धरै ॥
कञ्चन दान करे ते जाय ❋ गौवें देहि कहे यमराय ॥
बेश्या संग हरै गुरुनारी ❋ सन्निपात पीड़ा तौ धारी ॥
पक उधारन को धन हरै ❋ यमराजा को चाहत बरै ॥
श्रुति दै भूषण भेटत दाना ❋ दूनहु व्याधि तुरन्त पराना ॥
भूमिदान दीन्हे सो जाई ❋ पुनि द्विजभोजन जाय छोड़ाई ॥
अरुचक तौ ताही गै धरै ❋ लाखन द्विज भोजन परिहरै ॥
आशा भङ्ग पन्थ बटपारी ❋ शूलब्याधि तेहि होती भारी ॥

दोहा—पक्षी काटिन नाशकर, या बचत जो होय ।
हेमयज्ञ बैष्णव द्विजहिं, दान दिय क्षय होय ॥

बरदनि कादर हुचका होय ❋ लक्ष होम महँ नाशै सोय ॥
साजु योग जो दारे होई ❋ चुगुल रोग पावत है सोई ॥
तेलकुण्ड दाना एक मासा ❋ तब सो व्याधि होति है नासा ॥
निन्दा सन्त राग मुख पावै ❋ लक्ष दान दै ताहि भगावै ॥
परनारी देखत जो धावहि ❋ नैन रोगते बहु दुख पावहि ॥
गुरु अपने को ध्यान जो धरही ❋ नैन रोग तुरतहि परि हरही ॥
अंश छोड़ावै घेघा होई ❋ पञ्च रतन दीने सुख सोई ॥
देखत दान सूम मुरझाही ❋ मृगी रोग होता है ताही ॥
कृष्ण धेनु कञ्चन कर दाना ❋ मृगी रोग जाता क्षय माना ॥

दोहा—यज्ञ स्थिन जो ढाहतनु, डारत बन्दी माहि ।
शिवपजै आनहेतु सो, तब सों ब्याधिनशाहि ॥
यही प्रकार और बहुतेरे ❋ नाना ब्याधि पुरुष तनु घेरे ॥
यहि प्रकार ते सबहि बुझाये ❋ तब सब सारस्वत पुर आये ॥
राजा हर्ष गात ह्वै कहै ❋ कन्यादान देन तो चहै ॥
मेरे रिपु सों करहु लराई ❋ यह बाचा तो कोन्ह्यो राई ॥
तब कन्या दीन्हो यह दाना ❋ पारथ पाहँ कहैं भगवाना ॥
तै बाचा ते रण हरि लाये ❋ ताते युद्ध हेतु को धाये ॥
आप सबै रण को मन दीजे ❋ युद्ध जीति अश्वहि को लीजे ॥
पारथ के रथ पर हरि आये ❋ युद्ध हेतु सबही मन लाये ॥
बीर बर्म राजा तब आये ❋ पारथ सों तब बात सुनाये ॥
करो युद्ध पारथ मन लाई ❋ महा मारु ह्वै है प्रभुताई ॥
दोहा—जो सेना सरदार सब, मैं जानत बल तासु ।
सुनिबात क्रोधितबदन, पारथ बचन प्रकासु ॥
छांड़ो अश्व कहैं हम राजा ❋ ना तो महामार अब साजा ॥
बर्म बीर तो बोलन लागे ❋ अश्व कहाँ अब पैहो मांगे ॥
दुओ अश्वलै मख मैं करों ❋ तुम्हैं समेत कृष्ण कहँ धरों ॥
मोरे रण लायक नहिं पारथ ❋ पारथ सुनो क्रोध पुरुषारथ ॥
मारे पारथ बाण अपारा ❋ बर्मा बीर काटि शर डारा ॥
तब सो बाण पार्थ कहँ मारा ❋ साठि बाण तो नन्द कुमारा ॥
पांच बाण मारे ध्वजराऊ ❋ लग्यो बाण तब मूर्च्छापाऊ ॥
जब राजा के सारथि आये ❋ तब पारथ बहु बाण चलाये ॥
पारथ शर तो बर्षत नाना ❋ बीर बर्म मारे बहु बाना ॥
पारथ कृष्ण दृष्टि नहिं आये ❋ बाण बुन्द ते बर्षा लाये ॥
दोहा—पारथ मारा बाण तब, कोटि बाण संजाय ।
सात बाण तब राजहीं मारे पार्थ रिसाय ॥

नृप करि क्रोध साठि शरमारा ❀ सौ शर लागे नन्दकुमारा ॥
चारि बाण अश्वहि पर दयऊ ❀ तबै अश्व आतुर ह्वै गयऊ ॥
बीर बम तब कह यह बाता ❀ मोरे जयकर पाव सख्याता ॥
भीषम द्रोण कर्ण संहारा ❀ ते शर काम न आव तुम्हारा ॥
सुनिकै हरि भाष्यो हनुमानहि ❀ नृप रथ तुमलैजाहु अकाशहि ॥
घोर सिन्धु रथ डारो जाई ❀ सुना हनू तब चले रिसाई ॥
लै रथ अन्तरिक्ष कपि गयऊ ❀ बीर बर्म बहुबल तब कियऊ ॥
कूदि पार्थ रथ ध्वजको गहेऊ ❀ लै रथ अन्तरिक्ष पुनि नहेऊ ॥
जहाँ स्वर्ग माहीं हनुमन्ता ❀ पारथ रथ लै गयो तुरन्ता ॥

दोहा—हनूमान सन भापेऊ, लीजै रथहि हमार ।
हम लै आये पार्थ कहँ, सहितै नन्दकुमार ॥

कहिये रथ लै डारों कहाँ ❀ क्षीरसिन्धु लक्ष्मी हैं जहाँ ॥
हनुमत कह्यो धन्य तुम राजा ❀ सुयश तुम्हार जगत मों बाजा ॥
साधु भक्त औ बली कहाये ❀ बीरबर्म तो बात चलाये ॥
मैं तौ नाम सुना है तोरा ❀ लै रथ जान सके नहिं मोरा ॥
यह कह एक मुष्टिका दई ❀ हनूमान के पीरा भई ॥
हरि राजा पारथ हनुमाना ❀ तब सब बसुधा आय प्रमाना ॥
देखत श्रीपति हाथ प्रहारे ❀ बीरबर्म मूर्च्छित बिकरारे ॥
जागत भक्ति हृदय महँ भयऊ ❀ तुर्त कृष्ण के आगे गयऊ ॥
प्रभु कृपालु भक्तन भयहारी ❀ आयो शरणौ कृष्ण तिहारी ॥
तुव दर्शन करि पातक भागे ❀ प्रेम भक्ति हिरदय महँ जागे ॥

दोहा—तब राजा अस्तुति करी, धनुषबाण दिय डार ।
करि प्रणाम घोड़ा लिये, आगे किये भुवार ॥

पारथ मन भाष्यो यदुराई ❀ इनते जय काहू नहिं पाई ॥
वीरबर्म को जीतन पायो ❀ मोरि भक्ति है प्रीति बढ़ायो ॥
पारथ कह जो तुम्हें मनायो ❀ तासों जगमा जय को पायो ॥

मिले पार्थ श्रीकृष्णहि राजा ❀ भाँति भाँति के बाजन बाजा ॥
सब दल लैके नग्रहि गये ❀ दिन इक छै बीती जब गये ॥
देश भूमि तब आगे कीन्हा ❀ अष्ट भार मुक्ताहल दीन्हा ॥
शत सहस्त्र हाथी तो दये ❀ औरहु अश्व अनेकन लये ॥
छूट अश्व तौ संग नरेशा ❀ भरमत फिरा अनेकन देशा ॥
नदी एक महँ पैठ तुरंगा ❀ तटहीं तट पारथ दलसंगा ॥
पारथ भये अश्व तौ जाई ❀ तबै सर्ब दल पार सिधाई ॥

दोहा—परमानन्दित सर्ब दल, पारथ हयके संग ।
बैशम्पायन यह कहत, पारथ परम अनंग॥
चले अश्वके संग सब, नाना बीर नरेश ।
आय देश सब जीतिकै, चन्द्रहास के देश ॥

इति श्रीमहाभारत अश्वमेधयज्ञकृतवीरवर्म विजयो नामएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बैशम्पायन राजहि कहा ❀ चलो अश्व तब आगे कहा ॥
चन्द्रहास राजा जहँ रहे ❀ तहां अश्वचलि भो मुनि कहे ॥
कित गो अश्व शोच सब पाये ❀ यहि अन्तर नारदमुनि आये ॥
पारथ पाहँ कह्यो समुझाई ❀ कुन्तल पुरहि अश्व तब जाई ॥
चन्द्रहास जो भक्त कहाये ❀ बड़े कष्ट राजा तब पाये ॥
धृष्टबुद्धि बैरी तेहि अहे ❀ रक्षक सदा लक्ष्मिपति रहे ॥
बहुत कष्ट महँ कृष्ण बचाये ❀ महो प्रसाद राज पद पाये ॥
तब पारथ कह बिनती लाई ❀ चन्द्रहास गुण कहो गुसाँई ॥
नारद कह भल समय सुहाये ❀ कथा सुनै का हेतु सुनाये ॥
अश्व कहाँ खोये मन लाई ❀ तब पारथ बोले बिहँसाई ॥

दोहा—कुरु पाण्डवके युद्ध महँ, एक पलकके माहि ।
गीता कृष्ण बखानेऊ, सुना ज्ञान हम ताहि॥

सुनत कथा नारद तब कहहीं ❀ कदिदल देश धर्म नृप रहहीं ॥
ताके गेह जन्म इन लये ❀ जन्मत तात मातु मरिगये ॥

लै के धाइ कुँतलपुर आई ❋ बर्ष तीनिपर सोउ मरिजाई ॥
तीनि बर्षको बालक अहै ❋ षट अगुलि बायांपद रहै ॥
ताको लोग दया करि राखैं ❋ लक्षण राजा सबै तो भाखैं ॥
धृष्टबुद्धि मन्त्री गृह माहीं ❋ एक दिना सो बालक जाहीं ॥
जादिन द्विज उन भोजन दयो ❋ सो दिन बालक तहँवां गयो ॥
रूप देखि मन्त्री सुख पायो ❋ करि बहु प्रीति अग्र बैठायो ॥
द्विज मुनि तो कहते यह बाता ❋ बालक नृप होवे सख्याता ॥
राजा ह्वै है आशिष दयो ❋ धृष्टबुद्धि तब चिन्तित भयो ॥

दोहा—सबबिप्रनकोबिदा करि, मनमों करै बिचार ।
मदन अमल दो पुत्र मम, पै यह होत भुवार ॥

यह बालक राजा मुनि कहै ❋ ताते मन बहु चिन्ता गहै ॥
मुनिके बाक्य झूठ नहि सही ❋ बोलि चराडालहि मन्त्री कही ॥
बालक हति चिह्नहि लै आवा ❋ धन सम्पति मोते बहु पावो ॥
लै चराडाल बाल बन गये ❋ दधि पावन शिशु मुखमांलये ॥
गोली खेलै मुख मो रहै ❋ तब चराडाल हतन को चहै ॥
हरि माया मोह्यो चराडारा ❋ पूर्ब पाप कहँ जनु अवतारा ॥
बाल बधे अघ का गति होई ❋ बालक कहँ मारो जनि कोई ॥
बाम पाद षट अंगुलि देखो ❋ काटिलीन तो देखि बिशेखो ॥
धृष्टबुद्धि को दीन्ह्यो जाई ❋ धन सम्पति चाराडालहि पाई ॥
भई झूठ बिप्रन मुख बानी ❋ बालक हते होति रजधानी ॥

दोहा—धृष्टबुद्धि आनान्दित, बालक बन महँ राय ।
पशुपक्षी बनजन्तुसब, कारिमनुहार सुजाय ॥

सो बन गयो शिकारहि राजा ❋ नाम कुलिन्द भक्त रघराजा ॥
ते बालक देखन को पाये ❋ हर्ष गात लै गोद चढ़ाये ॥
धृष्टबुद्धि के सेवक सोई ❋ पाछे शिशू हर्ष मन होई ॥
सत्रावती तासु त्रिय आही ❋ बालक लेकर दीन्ह्यो ताही ॥

पुत्र सरिस प्रतिपालन कीन्ह्यो ❋ गुरु को सौंपि पढ़ै कहँ दीन्ह्यो ॥
जैसे हरि प्रह्लाद पुकारे ❋ कृष्ण ध्यान इन तैसे धारे ॥
गुरु तब जाय कुलिन्दहि कहै ❋ तुव सुत बाउर हरि हरि कहै ॥
औरहु कछु बात नहिं अहई ❋ तब कुनिन्द गुरुसों असकहई ॥
सात बर्ष महँ बिद्या देहों ❋ मन्त्ररु जाप पवित्र सिखैहौं ॥

दोहा-जादिन ते सुखदायऊ, राजा शिशुधनबृद्धि ।
कृष्णसदाहिंजपतशिशु, सर्व तासु करसिद्धि ॥

सात बर्ष मों यज्ञ कराये ❋ पुत्रहि तबै पढ़न बैठाये ॥
वेद पुराण शास्त्र तौ पाये ❋ क्षत्री ब्रत सब अस्त्र सिखाये ॥
पारथ मनहिं हर्ष उपराजू ❋ ऐसेहि भक्तहि देखब आजू ॥
पन्द्रह बर्ष के भये कुमारा ❋ दुर्ग बिजय कीन्हा संचारा ॥
बहुतक देश जीति धन लाये ❋ अपने देश अनेक बसाये ॥
द्विज बैष्णव तौ अगणित राखे ❋ ग्राम भूमि दै प्रीतिहि भाखे ॥
ग्राम ग्राम महँ देवल दीन्हा ❋ कूप तड़ाग बाग बहु कीन्हा ॥
घर घर सबै जपैं भगवाना ❋ श्रवण करैं सब वेद पुराना ॥
सबहो ब्रत एकादशि अहहीं ❋ परमानन्द प्रजा सब रहहीं ॥
दुर्ग बिजय करि गृह पग धारे ❋ आरति हर्षित मातु उतारे ॥

दोहा—रूप दाखि सब मोहित, गृह में गयो कुमार ।
कह कुलिन्द कुन्तल पुरी, आहै भूपहमार ॥

तिन्ह कहँ बस्तु पठाये कञ्जन ❋ बारह सेर सोप गृह रञ्चन ॥
सेर षष्ठ रानो सचिवन ते ❋ सो सुत जाहु सेवकहि चेते ॥
पत्रो लिखि दीना ता हाथा ❋ औ कञ्चन दीन्हा है साथा ॥
गयो पन्थ में पहुँचे ताहा ❋ जादिन ब्रत एकादशि आहा ॥
करि अस्नान ध्यान मन दये ❋ तब मन्त्री के गृह को गये ॥
भीगे बस्त्र देखि संचारा ❋ मन्त्री कुशल पूछि बिस्तारा ॥
कहै कुशल तौ सबै सँदेशा ❋ और बस्तु तब दीन्ह प्रबेशा ॥

पत्री पढ़ी सुनी सब बाता ❋ दुर्ग बिजय देवस सख्याता ॥
तब भोजन कहँ मन्त्री कहै ❋ सब परकार भवन मम अहै ॥
चन्द्रहास भाष्यो द्विज पाहीं ❋ एकादशी अन्न ना खाहीं ॥

दोहा—प्रात काल है द्वादशी, कारण कीन्हों जानि।
बिदा होन जब लागेऊ, मन्त्री कहा बखानि ॥

चन्दनपुर हम देखन जाई ❋ बिदा माँगि नृपते चलिआई ॥
राज्यकार्य मदनहि जो दीन्हा ❋ चन्दनपुर मन्त्री शुभ कीन्हा ॥
जाय दीख चन्दनपुर थाना ❋ वही ग्राम कोधौं है आना ॥
देखत मन महँ चिन्ता भयो ❋ तब कुलिन्द के गृह को गयो ॥
बहु आनन्द कुलिन्दहिं करै ❋ तब मन्त्री पूछन मन धरै ॥
जब तुम्हरे गृह बालक भयो ❋ मोहिं खबरि काहू नहिं दयो ॥
कहै कुलिन्द नहीं त्रिय जाये ❋ कानन विचरत बालक पाये ॥
छठई अँगुरी काटी कोई ❋ बालक व्याकुल बनमहँ रोई ॥
हम लै आये पालै आनी ❋ मन्त्री सुनत बुद्धि हैरानी ॥
जाना निश्चय बालक जो है ❋ चाण्डाल नहिं मारा सो है ॥

दोहा—अस्त्र शैल सम लागई, मन आनन्द न पाव।
क्यहि बिधि बालक मारिये, काधौं मन्त्राहिआव ॥

करिहौं झूठ मुनिन की बानी ❋ चन्द्रहास ते कहा बखानी ॥
कागज मसी कलम लै आओ ❋ लै पत्री तुम मम गृह जाओ ॥
चन्द्रहास आनो कै दयऊ ❋ मन में मन्त्री शोचत भयऊ ॥
प्रकटहि बधे द्वन्द बहु होई ❋ गरलहि देकै मारै सोई ॥
पत्री लिखे मदन को ताहा ❋ सोसति मदन पुत्र तौ आहा ॥
यही हेतु पत्री लिखि दयऊ ❋ चन्द्रहास गति दर्शन दयऊ ॥
शील पराक्रम पण्डित सोई ❋ हम सम्पति को ठाकुर होई ॥
कछु बिचार हृदय नहिं कीजै ❋ तुरतै विषया कहँ सुत दीजै ॥
सबही काम सिद्ध तब होई ❋ कागज माहिं छापकरु सोई ॥

चन्द्रहास को पाती दीन्हा ❋ मम गृह जाहु बोल असलीन्हा ॥

दोहा– पत्री करमें लै तबै, कहै पिताहि बिरतन्त ।
पाछे माता पहँ गये, बिदा होन सुत सन्त ॥

माता तबहीं आरति कीन्हा ❋ रक्षकदेव कहे तब लीन्हा ॥
पद्मनाभ ऊदर हैं माधो ❋ दोषहरण नरसिंहहि साधो ॥
कटि मधुसूदन मखपति जानू ❋ मुख नारायण रक्ष प्रमानू ॥
बक्षस्थल माहीं ऋषि केशो ❋ सब तनु रक्षक पवन नरेशो ॥
स्त्री लेकर गृह को ऐहैं ❋ मनोकाम तुरतै सिधि पैहैं ॥
करि प्रणाम माता को चले ❋ ह्वै सवार हय मोदित भले ॥
पत्री पाग माहिं तब कीन्हे ❋ उत्तमहार शीश सों लीन्हे ॥
चन्द्रहास तब उपमा पाये ❋ मानहु दूलह ब्याहन आये ॥

दोहा–कुन्तलपुर पहुँचे तबै, बाहर ग्राम सुरेष ।
मध्य दिवस आये तबै, जहँवा बाग विशेष ॥

शीतल छाँह जु देखन पाये ❋ चन्द्रहास बिश्राम कराये ॥
गज अरु अश्व अम्बतरु बाँधे ❋ तृण अरु जल दै हर्षित साधे ॥
पाँचौ जने शयन मन दिये ❋ यहि अन्तर यह कौतुक भये ॥
नृपकन्या तौ अनुपम बामा ❋ चम्पक मालिन ताके नामा ॥
मन्त्री की कन्या तौ अहै ❋ संगहिं सखी अनेकन रहै ॥
वहि सर माहिं सबै तौ गई ❋ तूरि पुष्प न्हाती फिर भई ॥
कौतुक न्हान सबै तो कियऊ ❋ पीछे पग गृहको तब दयऊ ॥
पाछे बिषया चलो बिशेखी ❋ तहँवाँ चन्द्रहास को देखी ।
रूप देखि मोहित भयो भारी ❋ वही ठांव बिलमो घरि चारी ॥
अश्वहि किये प्रणाम बनाई ❋ हे प्रिय जनु बिधि देहु जगाई ॥

दोहा–पुरुष निकट गइ नारि तब, देखत रूप अघाय ।
पिता हाथ की पत्रिका, तासु पागमँह पाय ॥

छाप खोलिकै पाती पढ़े ❋ महाशोच तौ मनमहँ बढ़े ॥

बिष दै यहिको तुरतहिं मारै ❀ तब का बन जब सबै बिगारै ॥
रूप देखि भइ मोहित नारी ❀ मनमा तब इक युक्ति बिचारी ॥
नख कनिष्ठते कज्जल लीन्हा ❀ जहँ बिष तहँ बिषया कै दीन्हा ॥
पूरब बिधि तौ छाप बनाई ❀ बांधे पत्र प्रथम जहँ पाई ॥
चलि सखीनमहँ मिलि सो जाई ❀ नाना कौतुक सखिन बनाई ॥
पूर्ब देखि तब रही लोभाई ❀ लागी कौतुक करै सोहाई ॥
तब कन्या अपने गृह गई ❀ सांझ पहर की बेरा भई ॥
चन्द्रहास उठिकै मुँह धोवै ❀ खाये पान मगन मन होवै ॥
गजारूढ़ ह्वै चलते भये ❀ मन्त्री गृह अभ्यन्तर गये ॥

दोहा—द्वार द्वार प्रतिहार हैं, छठे द्वार महँ जात ।
सप्तम द्वारे शूर हैं, अष्ट द्वार सख्यात ॥

तिन तो जाय मदन सों कहा ❀ चन्द्रहास द्वारे महँ रहा ॥
बेद पुराण सुनै तो आहा ❀ सुनत तुरन्त चले उठि ताहा ॥
बाहर आय भेंट हियलाई ❀ भीतर को सो गयो लिवाई ॥
कुशल प्रश्न पूछे मन दीन्हा ❀ सबै कुशल कहवे तब लीन्हा ॥
गूढ़ पत्र तव तात पठाये ❀ यह पत्री पढ़ि बूझहु जाये ॥
पढ़ने मदन सभामहँ लागे ❀ सो सति मदन लिखा है आगे ॥
यही हेतु पत्री लिखि दये ❀ चन्द्रहास गति सुन्दर लये ॥
शील पराक्रम पण्डित सोई ❀ हम सम्पति कर ठाकुर होई ॥
कछु बिचार हृदय नहिं कीजे ❀ तुरतहिं बिषया ब्याहि सो दीजे ॥
पूरण कार्य सिद्धि तब होई ❀ मदन पढ़ै चिट्ठी महँ सोई ॥

दोहा—हर्षित मदन हृदय महँ, तुर्त ज्योतिषी लाय ।
सर्ब सुयोग सुमङ्गल, लग्न बिवाह धराय ॥

बिषया तहां मनाव भवानी ❀ चन्द्रहास बरदे कल्यानी ॥
तृतिया ब्रत करिहों मैं तोरी ❀ तुम जो आश पुजावहु मोरी ॥
अन्तःपुरै मदन तब गये ❀ सब बृत्तान्त मातु पहँ कहे ॥

गोधन समय ब्याह परमाना ❀ चन्द्रहास बर बिषया बामा ॥
बिषया ते सब सखिन सुनाई ❀ सुनतै विषया लज्जा पाई ॥
लग्न भये तब बाजन बाजे ❀ मङ्गल चार सखीगण साजे ॥
चन्द्रहास को तब अन्हवाये ❀ बिषया को शृंगार बनाये ॥
बिबिध प्रकार लग्न धरवाये ❀ ब्राह्मण प्रोहित तहां बोलाये ॥
गोत्र पूछि कह तब मनलाई ❀ चन्द्रहास तब बात सुनाई ॥
माता पिता गोत्र हरि अहै ❀ लै कुलिंद पारावति कहै ॥

दोहा—शाखोच्चार उचारि कै, बेद जो बिबिध प्रमान।
शास्त्र धर्म कुल धर्म मत, मदन देत है दान ॥

कन्यादान मदन तब कीन्हा ❀ गज तुरंग मणि मुक्ता दीन्हा ॥
रजत सुबर्ण बहुत तेहि दीन्हा ❀ सब भण्डार शून्य तो कीन्हा ॥
होम करी गँठि बन्धन भये ❀ भाँवरि सात अग्नि पर दये ॥
दक्षिणा ब्राह्मण सबहिन पाये ❀ यहि प्रकार ते ब्याह कराये ॥
सब द्विज और पुरोहित आये ❀ दान देय सब बिदा कराये ॥
मँगला चार युवतिजन गाये ❀ बहुत गुणीजन मँगता आये ॥
विष देवायकै मारन चहै ❀ हरि सहाय तो नारद कहै ॥
केवल हरिहि सदा मन लाये ❀ विष देते बिषया सो पाये ॥
परम भक्त प्रभु कपट न करै ❀ एक पिता भक्ती मन धरै ॥
ताहि सदा हरि रक्षक अहैं ❀ काह करै बिष नारद कहैं ॥

दोहा—मङ्गलदायक वही, नारद कहा बखानि ।
बैशम्पायन भाषेउ, सुनत दुःखकी हानि ।

धृष्टबुद्धि चन्दन पुर माहां ❀ तब कुलिन्द को पाये ताहां ॥
प्रजा लोग को दण्डै ताहा ❀ महा कष्ट चन्दनपुर माहा ॥
बहु प्रकार ते कष्ट दिखावे ❀ यहि बिधि सबसों धन मँगवावे ॥
मठ देवालय देखत जरई ❀ महाकष्ट कालिन्दहि करई ॥
लूटि मारि लीन्हा जब देशा ❀ तब कुलिन्द को भई अँदेशा ॥

मन्त्री महाहर्ष मन भयऊ ❀ जाना शत्रु नाशि अब गयऊ ॥
इक दिन बसे दुजे दिन गये ❀ तीजे अन्त भोर जब भये ॥
हर्षित ह्वै चण्डोल सवारा ❀ तुरत आपने पुर पगु धारा ॥
सौ तीनसौ कहार सोहाये ❀ त्यहिचँडोल सम पवन चलाये ॥
मारग माहिं सर्प एक रहै ❀ बिषया खाकी बातैं कहै ॥

दोहा—मूँहकलश मो हम हते, देखा बिषया ब्याह ।
बूझा नहिं सो मन्त्रिने, चला हर्ष मनमाह ॥

बाद्य शब्द सुनियो मनभङ्गा ❀ बिधना कीन्ह छत्र को भङ्गा ॥
गृहके निकट पियादे भये ❀ जहँ मंगत जन तहँवाँ गये ॥
ब्याह अर्थ सबही तहँ कहे ❀ मन्त्री सुनत क्रोध उर दहे ॥
भाषे चन्द्रहास है जाना ❀ मंगत जन भाषे परमाना ॥
आगे जात द्विजन को देखा ❀ आशिर्बाद देत द्विज पेखा ॥
चन्द्रहास बर भाग्यन पाये ❀ सुनतहि मन्त्री मारन धाये ॥
गांठि गहे बहु क्रोधित पागे ❀ देखत सबै बिप्र तब भागे ॥
काहु यज्ञ में सूत्र उतारी ❀ काहू कुश पैंती अराडारी ॥
भागे द्विज गृह मन्त्री आये ❀ चित्र बिचित्रहि देखन पाये ॥
स्त्री धूप दीप लै आई ❀ तब मन्त्री पूछा मनलाई ॥

दोहा—कहा दये कह पायऊ, मङ्गल कौन उपाय ।
चन्द्रहास कहँ पायऊ, स्त्री कहैं बुझाय ॥

पूछे काह तासु कह दीन्हा ❀ स्त्री सबै निवेदन कीन्हा ॥
धन रतनन दै कन्या दीन्हा ❀ सुनत क्रोध मन्त्री तब कीन्हा ॥
क्रोधवन्त मन्त्री चलि आगे ❀ बर कन्या तो चरणन लागे ॥
क्रोधित नैन सो देखत अहै ❀ सत्य असत्य न एकौ कहै ॥
आगे बैठिके मदन बोलाये ❀ धिक धिक करि तब बात सुनाये ॥
पत्री पढ़िकै काम न कीन्हा ❀ मदन जोरिकर बोलै लीन्हा ॥
धन अरु रत्न अश्व गज दये ❀ सब भण्डार सून तब भये ॥

सुनते अधिक क्रोध उर भये ❀ जा बनवास तु आज्ञा दये ॥
मदन कहा मम दोष न दीजे ❀ का अपराध प्रकट त्यहि कीजे ॥
एक घाटि भइ है भैजाना ❀ नहीं कुलिन्द बुलाया माना ॥

दोहा—आज्ञा दीन्हीजाहि हम, लाओ चरण मनाय ।
तुमनेलिखासुसत्य है, जरहु काहि मनलाय ॥

सुनते मन्त्री बहुतै जरई ❀ करमींजै औ हाहा करई ॥
मन्त्री कह वह पत्री लाओ ❀ बाँचि अर्थ तो हमैं सुनाओ ॥
मदन तुरन्त पत्रि लै आये ❀ बिषया नाम तु तुर्त बताये ॥
देखत पत्री बिस्मय भयऊ ❀ बहुत बोध तो पुत्रहि दयऊ ॥
बिधिका लिखा मेटि नहिं जाई ❀ आन करत आनै होजाई ॥
करि संतोष तु पोथी लीन्हा ❀ चन्द्रहास तब बोलन लीन्हा ॥
जनि कछु संशय करु मनमाहीं ❀ तुमतौ हमरे पितु सम आहीं ॥
कपट रूप भाष्यो तब बाता ❀ मनहिं बिचारैं बध सख्याता ॥
यहि हतिकै कन्या बिधवाओं ❀ करिकै छल यहि तुर्त मराओं ॥
बोलि चँडाल कहै यह बानी ❀ प्रथमहिं कपट करेहु अज्ञानी ॥

दोहा—अब तौ मानहु बात मम, लैकर बान कृपान ।
पुर बाहर है चाण्डगृह, छिपि रहियो सज्ञान॥

संध्या जाय मारियो ताहीं ❀ बहुतै धन पैहो मम पाहीं ॥
तब चण्डाल जाय छिपि रह्यो ❀ चन्द्रहास सों मन्त्री कह्यो ॥
हमरे कुलको चण्डी आहा ❀ पूजहु जाय कियो है ब्याहा ॥
संध्या समय अकेले जैयो ❀ चण्डी कहँ पूजा दै ऐयो ॥
सुनत बात तौ पूजन चले ❀ मदन गये राजा गृह भले ॥
कुन्तल राजैं सपना पाई ❀ गालभ प्रोहित को समुझाई ॥
बिना शोश देखा परछाहीं ❀ कहो बुझाय कौन फलआहीं ॥
गालभ कहै अमङ्गल अहै ❀ अन्त निकट आये मुनि कहै ॥
और परीक्षा बहुत बताई ❀ जाते मृत्यु जान सब राई ॥

बहुत अरिष्ट तु सुने भुवारा ❀ ताको नहीं करै बिस्तारा ॥

दोहा—कुन्तल नृपती मदनते, कही बात समुझाय ।
चन्द्रहास को राज्य दै, हम तप कानन जाय ॥

कन्यादान राजपद पाये ❀ तुरतहि चन्द्रहास को लाये ॥
गोधुलि बेरा सब चलि आहीं ❀ आगे और लग्न है नाहीं ॥
सुनतहि मदन तुरन्त सिधाये ❀ मगमहँ चन्द्रहास को पाये ॥
धूप दीप नैवेद्य सुहाये ❀ कहँ लै चल्यो पूछि मन लाये ॥
चन्द्रहास कह मन्त्रि पठाये ❀ अकसर चराडी पूजन आये ॥
मदन कह्यो हम पूजैं जाई ❀ तुमहि तुरन्त हँकारत राई ॥
चन्दन पुष्प जो हमको दीजै ❀ आप बिजय राजापहँ कीजै ॥
लै नैवेद्य मदनच तब चले ❀ चन्द्रहास नृप गृह गयो भले ॥
मदन कहे तो असगुन भये ❀ मनमहँ तौ बहुचिन्तित भये ॥

दोहा—राजा तब अभिषक करि, दीन्हा कन्यादान ।
राज्य देश भण्डार सब, दीन्हे हर्ष प्रमान ॥

राज्य देश संकल्पहि दीन्हा ❀ राजा बनहि गमन तब कीन्हा ॥
मदन गये चराडी गृह माहीं ❀ मृत्यु भवन ह्वैगी तब ताहीं ॥
चाराडालन तब कीन्हे धाऊ ❀ भूल खड्ग लै घाव लगाऊ ॥
मदन तबहिं चराडी ते कहा ❀ हमको बलि दीन्हे तुव अहा ॥
परस्वारथ किय मैं गो मारा ❀ माता पूजत तुम ने मारा ॥
मैं नहिं महिषासुर हौं माता ❀ रक्तबीज नहिं शमन सख्याता ॥
और निशुम्भ नही हौं माई ❀ परमज्योति तुम सुन मनलाई ॥
यह कहि प्राण अन्त तब भयऊ ❀ रो चराडाल सबै गृह गयऊ ॥
चन्द्रहास राज्यासन पाये ❀ मन्त्री गृह लै त्रिया सिधाये ॥
दूत जाय मन्त्रिहि समुझाये ❀ कहे जाय सब बात बुझाये ॥

दोहा—राजा कन्या दान दिय, करि नृप बनै पयान ।
मन्त्रि बात तब सुनतही, लागे शैल समान ॥

चन्द्रहास जब आये आगे ❋ कन्यासहित चरण तब लागे ॥
मन्त्री पूछ चरिड गृह माहीं ❋ गये हते कीधों पुनि नाहीं ॥
चन्द्रहास कह मिदन सधाये ❋ हमहिं नृपतिके भवन पठाये ॥
चन्द्रहास कहि गृहको गये ❋ पुत्रशोक मन्त्री कहँ भये ॥
रोवत चलिगो चराडी पाहां ❋ अन्धकार रैनी भइ ताहाँ ॥
श्मशान महँ आये जबहीं ❋ भूत प्रेत सब भागे तबहीं ॥
बरते चिता काठ यक लाये ❋ तेहि उजियार चरिड गृह आये ॥
डारि काठ तब पुत्र उठाये ❋ ग्रीव लगाय रुदन मनलाये ॥
मराडप माहँ खम्भ यक आह ❋ मारे शीश खम्भ के माह ॥
मृतक भया मन्त्री परमाना ❋ यहि अन्तर तब भयो बिहाना ॥

दोहा—द्विज पूजन कहँ गयो जब, देखा गृह मों जाय ।
मन्त्री मदन परे हते, चण्डी मण्डप आय ॥

विप्र जाय राजा ते कहेऊ ❋ चन्द्रहास तहँपर तब गयऊ ॥
बहु अस्तुति चराडो की करै ❋ कुराड खनाय यज्ञ संचरै ॥
घृत चीनी यव तिल तब लीन्हा ❋ बेद मन्त्र आवाहन कीन्हा ॥
चराडी पहँ राजा अस कहै ❋ तू तो शक्ति मातु जग अहै ॥
मोरे हेतु पूजने आये ❋ मोते रिसकरि बलि यह खाये ॥
यह कहिकै तब होम शरीरा ❋ सर्व शरीर होम नृप बीरा ॥
पाछे माथ उतारन चहै ❋ काढ़ि खड्ग हाथ महँ गहै ॥
गह्यो हाथ तब हर्षि भवानी ❋ चन्द्रहास यह बचन बखानी ॥
जन्म जन्म भक्ती भगवन्ता ❋ दीजै माता हमहिं तुरन्ता ॥

दोहा—पाछे मांग्यो भूपने, ये द्वौ देहु जिआय ॥
चन्द्रहास यह भाषेऊ, सुनहु चण्डिका माय ॥

तब हँसि चराडी कह मृदुबानी ❋ अचल भक्ति होइहि सज्ञानी ॥
बालापनका चरित तुम्हारा ❋ सो कलि में गावत संसारा ॥
मुँदौ नयन मैं देउँ जिआई ❋ सुनत नयन मूँद्यो तब राई ॥

मन्त्रो मदनहि दिये जगाई ❀ अन्तर्धान चरिड है जाई ॥
नयन खोलिकै राजा देख्यो ❀ उठे दोउ तब हर्ष बिशेख्यो ॥
तीनहु जन तब मग्नहि गयऊ ❀ चन्द्रहास अस राजा भयऊ ॥
तब पारथ पूछै मन लाई ❀ फेरि कुलिन्द मिले किमि आई ॥
पारथ सों नारदमुनि कहै ❀ चन्दन पुर कुलिन्द दुख सहै ॥
जो कुछ धन होते परमाना ❀ सब दे दियो द्विजन को दाना ॥

दोहा—करि बिचार पावक दहन, मरै पाय दुख पाय ।
संशय यह तब मन्त्रिसन, कहा दूत कोइ जाय ॥

तब मन्त्री चन्दन पुर गयऊ ❀ बहु प्रकार अनुहारी कियऊ ॥
चन्द्रहास चन्दन पुर गयऊ ❀ देखि कुलिन्द हर्ष मन भयऊ ॥
सब समेत कुन्तल पुर आये ❀ परमहर्ष ते राज रजाये ॥
बर्ष तीनि राजा तप कियऊ ❀ चन्द्रहास को सुत तब भयऊ ॥
बिषया सुत मकरध्वज नामा ❀ पद्म नेत्र सुन्दर परमाना ॥
पञ्चक मालीनी बिद्वानी ❀ दोनों गर्भ दोउ सुत जानो ॥
बाल दशा बीते जब ताही ❀ शालग्राम ब्रत साधे आही ॥
शिला महातम उत्तम अहै ❀ शालग्राम निरञ्जन लहै ॥
मृत्यु समय चरणोदक पावै ❀ पापी तरि बैकुण्ठ सिधावै ॥
निरमायल जो भक्षत कोई ❀ देव पितृ सन्तुष्टित होई ॥
दानी दाता द्वापन राऊ ❀ चन्दन लेपन मुक्ति उपाऊ ॥

दोहा—शालग्राम जहाँ रहैं, देव पितृ सब ताहिं ।
सर्ब तीर्थ जल पुण्य तौ, चरणामृतके माहिं ॥

तुलसी सम तौ तरु नहिं आहीं ❀ बिष्णु समान देवता नाहीं ॥
तुलसी मञ्जरि हरिको बासा ❀ दर्शे पाप होत है नासा ॥
ऐसे चन्द्रहास नृप भयऊ ❀ सबै कथा तुमते कहि दयऊ ॥
नारद देवलोक कहँ गयऊ ❀ सुनत पार्थ आनन्दित भयऊ ॥
दल लेकर कुन्तल पुर आये ❀ राजा अश्वहि देखन पाये ॥

पत्र पढ़े राजा सुख पाये ❀ धर्मराज को अश्व जु आये ॥
आज देखिबे श्रीपति नैना ❀ चन्द्रहास हर्षित कह बैना ॥
मकरध्वज ते बात जनाई ❀ पूरब दिवस निकट भो आई ॥
युद्ध रचे जग होहै नासा ❀ लैके अश्व मिलो हरि पासा ॥

दोहा—पन्द्रह दिन पर्यन्त हय, रक्षा कीन्हो राव ।
पाछे मिलन हेतु तब, चन्द्रहास नृप आव ॥

तिलक सुतुलसी माल बिराजै ❀ मोर पंख रथ ऊपर छाजै ॥
तब श्रीपति देखे कहँ पाये ❀ होय चतुर्भुज तुरत सिधाये ॥
गरुड़ चढ़े दरशन वहि दीन्हे ❀ चारो भुजते अङ्कम लीन्हे ॥
चन्द्रहास चरणन में परे ❀ बहु प्रकार ते अस्तुति करे ॥
तब राजा से कह भगवाना ❀ इनके हृदय मोर अस्थाना ॥
आकर मिलो भक्त यह आहै ❀ तब पारथ श्रीपति ते काहै ॥
भारत माहँ कहे यदुराई ❀ प्रणको गुन आये दुखदाई ॥
ताको मिलों कहो का राजा ❀ क्षत्री धर्म होत है लाजा ॥
तब हरि भाषे यह तनु मेरा ❀ मिले आयकै हर्ष घनेरा ॥

दोहा—प्रभू पुण्य सों राजा, भाषे श्री यदुराय ।
सुनत बिहँसिके पारथ, मिले तुरन्तहिजाय ॥

प्रेम हर्ष मे अंकम गहे ❀ चन्द्रहास राजा ते कहे ॥
मो मन करना हती लराई ❀ पै इक बर्ष आय नियराई ॥
युद्धहि रचे यज्ञ कर भङ्गा ❀ ता कारण मिलाप तुव सङ्गा ॥
जहँ श्रीपती तहाँ रण कैसो ❀ यह अचरज मनमाहँ अँदेसो ॥
अश्वरु धन राजा तब जाना ❀ राजा दीन्ह चरण भगवाना ॥
श्रीपति राजा ता सुत किये ❀ प्रेम हर्ष आनन्दित भये ॥
तीन दिवस रह तेहि पुर माहा ❀ छूटो अश्व चलो पुनि ताहा ॥
चन्द्रहास कहँ तब सँग लीन्हा ❀ बालक ते जिन रक्षा कीन्हा ॥
ते पुर छांड़ि रहब घर माहीं ❀ कृष्ण संग सैना करि जाहीं ॥

लै दल चन्द्रहास तब चले ❋ पारथ संग चले सुख भले ॥

दोहा—प्रेम हर्ष नारायण, पारथ परमानन्द ।
चन्द्रहास संगहि चले, बिष्णु भक्त सानन्द ॥
चला अश्व भर्मत फिरे, नाना देश विदेश ।
ऐस न कोई जगत महँ, पकरे अश्व नरेश ॥

इति श्रीमहाभारतभाषाअश्वमेधपर्वणिचन्द्रहासमिलनो नामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

बैशम्पायन कहैं बखानी ❋ चला अश्व बिधिवत परमानी ॥
जौने जौन देश हय गयऊ ❋ सबै नृपति पारथबश भयऊ ॥
पाछे अश्व चले जग माहां ❋ समुद्र माहँ परबेश्यो ताहां ॥
पारथ तब शोचन को लागे ❋ दीन बचन भाषे हरि आगे ॥
कहो कृष्ण का करौं उपाई ❋ तब पारथ सों कह यदुराई ॥
तुम हंसध्वज पुत्र तुम्हारा ❋ मोरध्वज हम पञ्च भुवारा ॥
ये सब रथो उदधि महँ चले ❋ दरशनमात्र रिपुदल भले ॥
पांचो रथ सागर महँ गये ❋ जल में रथ चलते तब भये ॥
छाये मकरा देवल छाये ❋ पशु पत्ती तहँपर बहु आये ॥
देखा पुनि इक दालभमुनी ❋ बटको पत्र धरे शिर पुनी ॥

दोहा—जंघाभेदी लाल भ्रू, औ बहु अहै भुअंग ।
नमस्कार गे कीन्ह तब, पांचौरथ इक संग ॥

पारथ कहे गेह किन करो ❋ ऐसा कष्ट हेतु केहि धरो ॥
मुनी कहै दुख गृह में अहै ❋ स्त्रीग्रहण पाप बहु रहै ॥
घरी घरी बिचारत नाना ❋ पै हैं पाप झूठ परवाना ॥
पातक नहीं धर्म पुनि नाना ❋ पाप पुण्य बहुतैं बीधाना ॥
सुत नारी कब देखन नैना ❋ माया विष्णु की सब चैना ॥
ताते थोरे जीवन काजा ❋ ताते गृह कीजै नहिं राजा ॥
मार्कण्डेय बशिष्ठ जो मुनी ❋ लोमश मुनि आदि हैं पुनी ॥
प्रलय समय हम देखा जेते ❋ पारथ बात कहत हैं तेते ॥

दोहा—एक बट तरे आरहैं, तासु एकसौ डार ।
एक पत्र के ऊपर, बाल रूप कर्तार ॥

बालरूप बट पत्रहि रहै ❋ पद अँगुष्ठ सो चाटत रहै ॥
तैं प्रभु जाना मैं मनमाहा ❋ एही कृष्ण सन्त जग आहा ॥
अब मोको आलिङ्गन दीजै ❋ धर्मराज को यज्ञसु कीजै ॥
श्रीपति कहैं मुनी सों बाता ❋ महामुनी तुम हो सख्याता ॥
एक बार करि गर्ब जु नाना ❋ हरि माया इक पवन उड़ाना ॥
मोहिं समेत गयो लै तहाँ ❋ अष्टमुखी ब्रह्मा है जहाँ ॥
उन पूछा तुमको यह अहो ❋ इन कह ब्रह्मा जानत रहो ॥
उन कह अष्ट बदन हैं मोहीं ❋ कह ब्रह्मा मुख कह को तोहीं ॥

दोहा—अष्टबदन ब्रह्मा हम, तुम हो कौन प्रकार ।
यहै रूप तो बोलत, भयो पवन संचार ॥

दूनो ब्रह्मा गे तब तहाँ ❋ सोलह मुख ब्रह्मा है जहाँ ॥
उनहु एक परकार सुनाये ❋ तीनौ ब्रह्मा पवन उड़ाये ॥
बत्तिस बदन पाहँ तब गयऊ ❋ उनहु रारितो यहिबिधि कियऊ ॥
चारो ब्रह्मा पवन उड़ाये ❋ चौंसठ मुख पाहीं पहुँचाये ॥
उनहू रारि करैं मन लाई ❋ पाँचौ ब्रह्मा पवन उड़ाई ॥
इक सौ अट्ठाइस मुख जहा ❋ उनहू गर्ब बात तो कहा ॥
छाहौ ब्रह्मा उड़िगे तहाँ ❋ शतमुख ब्रह्मा रहते जहाँ ॥
तिनने सबको ज्ञान सिखायो ❋ यह दालभमुनि कथा सुनायो ॥
ऐसो ब्रह्मा मान गमाये ❋ बकदालभ मुनि सबै बताये ॥
मुनि को लै चराडोल चढ़ाई ❋ अश्व दोउ लाये यदुराई ॥

दोहा—चले अश्व तब लेयके, बकदालभ मुनि साथ ।
वैशम्पायन कहत हैं, सुनजनमेजय नाथ ॥

चले अश्व तब आये तहाँ ❋ जयद्रथ को बालक है जहाँ ॥
दूतन कहा हमारे देशा ❋ अर्जुन कृष्ण कीन्ह परवेशा ॥

जो पारथ जयदर्थहि मारो ❋ सुनत मृत्यु त्यहि भये भुवारो ॥
सभामाहि मृत्यू तौ भये ❋ ताको माता रोदन ठये ॥
रोदन करत हरी पहँ गई ❋ पारथ हमैं हमादुख दई ॥
पती पुत्र मार्यो दुइ सही ❋ देखत दयावन्त हरि कही ॥
चलो पुत्र तव देखौं जाई ❋ सभामाहँ पहुँचे यदुराई ॥
देखा नृपहि अचेतन परे ❋ श्रीहरि हाथ शीशपर धरे ॥
उठे पुत्र कहतै भय त्यागो ❋ सुनतहि बात तुरत सो जागो ॥
जागे हर्षित भै महतारी ❋ पुत्रहि लै पारथ पग डारी ॥

दोहा—पारथ विनती कीन्ह बहु, नेवता दीना शाल ।
पुत्रसहित हर्षित मनहि, चले यज्ञ के काल ॥

श्रीपति कहत पार्थके पाहीं ❋ वर्ग तुलान चलो गृहमाहीं ॥
दूनो अश्व गये बनवारी ❋ सबै नृपन सों कहा मुरारी ॥
नीलध्वज हंसध्वज राऊ ❋ बीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ ॥
चन्द्रहास्य अनुशल्या अहै ❋ यौवनाश्व बेगहि तव कहै ॥
वृषकेतू औ कामकुमारा ❋ सब सों भाषो श्रीभर्तारा ॥
हम तो जात अग्र गृह आछे ❋ तुम सब मिलिकै आवहु पाछे ॥
यह कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ ❋ आनन्दित तव अर्जुन भयऊ ॥
राजा सुनत हर्ष मन माना ❋ हरिको दै आलिङ्गन दाना ॥
जहाँ जहाँपर भै रण करनो ❋ करि बिस्तार सबै हरिबरनी ॥

दोहा—भीम आदि पाण्डव सबै, परशे तबै मुरारि ।
नारिरुक्मिणिआदि जहँ, तहाँ गये बनवारि ॥

भीम सङ्ग हरिगे जहँ नारीं ❋ सतिभामा परिहास बिचारी ॥
नाना कौतुक भये हमारा ❋ ताको नहीं करे बिस्तारा ॥
तव हरि भीम नृपति पहँ आये ❋ चले अग्र राजा समुझाये ॥
धृतराष्ट्रक आगे तव कीजे ❋ आगेहा पारथ कहँ लीजै ॥
कुन्ती आदि सहित गन्धारी ❋ औ जेतो श्रीपति की नारी ॥

बेदध्वनि कर ब्राह्मण चले ❀ कीन्हा गवन लोग सब भले ॥
दधी दूब अक्षत औ माला ❀ यह सब लेइ चले द्विजपाला ॥
आरति बहुतै भाँति सँवारी ❀ चलीं साजि क्षत्रिनकी नारी ॥
शंखध्वनि तो होत अपारा ❀ नाना भ्रमर करत गुञ्जारा ॥
उतते अश्व अग्र हैं दोऊ ❀ बकदालभ्य संग हैं सोऊ ॥

दोहा—भूप भूप सब भेंटते, मिलत सबै सरदार ॥
स्त्री से स्त्री सबै, लेत अहैं इकबार ॥

मिलिकै सबै नगर महँ गयऊ ❀ धर्मराज आनन्दित भयऊ ॥
राजा सब तो करैं जोहारा ❀ पुराय प्रतापी धर्मकुमारा ॥
सब राजाको करि सन्माना ❀ यज्ञ रचा तो बेद बिधाना ॥
अश्वमेध को मराडप साजे ❀ अष्ट द्वार तो सरस बिराजे ॥
बेलि पर्ण औ पुष्प बनाये ❀ यज्ञ साज सबही निर्माये ॥
बकदालभ जो बर्णें धर्मा ❀ लागे मुनी यज्ञ के कर्मा ॥
बामदेव बशिष्ठहि आये ❀ पाराशर मुनि अत्रि सिधाये ॥
भरद्वाज ऋषि गोतम आये ❀ मुनि अङ्गिरा आइ मनभाये ॥
आठो मुनी दया के पाला ❀ बरन कीन्ह है धर्म भुवाला ॥
छौक्षन भे नृप द्रौपदि रानी ❀ हरिणा सींग गहे कर जानी ॥

दोहा—धौम्य पुरोहित यह कह्यो, जइये गङ्गातीर ।
निज तिरिया लै जाइके, मज्जन गङ्गा नीर ॥

तिरियन संग चले सब भले ❀ अरुंधती बशिष्ठहुँ चले ॥
कृष्णसंग श्रीरुक्मिणि रानी ❀ प्रभावती प्रद्युम्न प्रमानी ॥
ऊशा अरु अनिरुधकै जोरी ❀ भीम सुसंग हिडंबो तोरी ॥
बृषकेतू भद्रावति रानी ❀ मोरध्वज कुमोदनी रानी ॥
यौवनाश्व चन्द्रावति चली ❀ नीलध्वज नन्दिनी भली ॥
बेद पढ़ैं द्विज सबै सिखाये ❀ नारद सतिभामा गृह आये ॥
कहे बात रुक्मिणि हरि प्यारी ❀ गांठि जोरि जल हेतु पधारी ॥

तब सतिभामा मुनि ते कहे ❀ सदा कृष्ण मेरे ढिग रहे ॥
तहाँ हरी मुनि देखन पाये ❀ ऐसे अष्ट नारि पहँ पाये ॥
गोपिन गृह कहँ देखन जाई ❀ तहवाँ देखा श्रीयदुराई ॥

दोहा–सतिभामाश्रीजाम्बवति, रुक्मिणि नारी संग।
गांठी जोरी चले हरि, भरन हेतु जल गंग ॥

जलके हेतु तु सबै सिधाये ❀ तब राजा नारद पहँ आये ॥
हरीसहित जेते हैं राजा ❀ गङ्गा माहँ करैं जल काजा ॥
प्रथम शीश पर रुक्मिणि धरे ❀ पाछे और सबन संचरे ॥
व्यास आदि जल पूजन करे ❀ कञ्चन कलश नीरसों भरे ॥
चले नीर ले सब नृप रानी ❀ अरुन्धती रुक्मिणी बखानी ॥
कलश भार दुखदायक अहे ❀ सुनिये बात जाम्बवति कहै ॥
कर पर धर तौ कृष्ण पहारा ❀ शीशन धरे कलशको भारा ॥
बहुतै कौतुक छिन कीन्हे ❀ आये सबै गङ्ग जल लीन्हे ॥
बेदध्वनिकै कलश उतारा ❀ युवती गावहिं मङ्गलचारा ॥

दोहा–श्यामकर्ण जलपान करि, रानी नृप अस्नान।
द्रौपदि रानी धर्मसुत, जैसो यज्ञ बिधान ॥

धोती पहिरि मुनी सब आये ❀ उत्तम चन्दन अङ्ग लगाये ॥
पारथ भीम देत हरि दाना ❀ राजा सबै किये अस्नाना ॥
दच्छिणा भये यज्ञ के हेता ❀ सबकहँ पूजन किया सचेता ॥
बेद उचार मन्त्र तब कीन्हे ❀ धौम भीम ते बोलै लीन्हे ॥
बायें श्रवण अश्व को मारा ❀ ताते चलै क्षीर कै धारा ॥
तब सबहीं बिस्मयकै माना ❀ धौम कह्यो भीमहि सुनकाना ॥
मारौ अश्व होइ द्वै खण्डा ❀ तबहीं भीम गहे कर खण्डा ॥
तबहीं भीम क्रोध करि छांटा ❀ दोय टूककै अश्वहि काटा ॥
शिर उड़ि रबिमण्डल महँरहे ❀ सुघर अश्व जग जीवनकहे ॥
हयके हृदय आप हरिमारा ❀ हृदय चली रक्तकै धारा ॥

दोहा—अश्वज्योति हरि अङ्गमों, प्रविशत भैत बजाय।
परा अश्व बसुधाविषे, भो कपूर तनु आय ॥
सो कपूर धराहै आगे ❀ ब्यास होम करने को लागे ॥
कुण्ड माहिं तब आहुति दीन्हे ❀ तबहीं ब्यास कहनकहँ लीन्हे ॥
इन्द्र आगमन परिश्रम करो ❀ तबहीं इन्द्र बचन अनुसरो ॥
इन्द्र कह्यो पावक मुख मेरो ❀ आहुति दें सब देव घनेरो ॥
अश्वलिखा आहै गुरु पारा ❀ होम करो द्विज बेद उचारा ॥
सो कपूर ते आहुति दये ❀ सब संसार संतुष्टित भये ॥
यज्ञ धर्म आगम में लागे ❀ धर्मराज के पातक भागे ॥
कृष्ण कह्यो सब राजा ठांय ❀ यज्ञ धर्म लीजे तन आय ॥
अब आगे कलियुग जो ऐहै ❀ कोइ न ऐसो यज्ञ करैहै ॥
नृपति देव संतुष्टित भये ❀ सबै यज्ञ के पातक गये ॥

दोहा—शेषस्नान भुवाल तब, कीन्हा रानी सङ्ग।
सहस दण्ड धरि छत्रतब, ताने नृपशिर रङ्ग ॥
भयो यज्ञ सब पूरण, भागे पाप अनन्त।
जहाँ आप ठाकुर रहे, तहाँ सबै हर्षन्त ॥

बैशम्पायन कथा सुनाये ❀ तो सब राजा तहाँ न आये ॥
धर्मराज हर्षित मन भयऊ ❀ श्रीहरिको आलिङ्गन कियऊ ॥
पाछे देन लगे सब दाना ❀ जो कछु होवे यज्ञ बिधाना ॥
ब्यासहि भूमिदान तौ दयऊ ❀ साठ एक बकदालभ भयऊ ॥
एक हस्ति अरु एक तुरङ्गा ❀ कञ्चन माल एक तौ सङ्गा ॥
मुक्ता अञ्जलि गऊ हजारा ❀ सेवकचारि तु दिये भुआरा ॥
एकक द्विज तो एतिक पाये ❀ करि मख सबै दरिद्र भगाये ॥
गज सौ चार तुरंग हजारा ❀ प्रतिदिन दीन्हों भूप उदारा ॥
स्त्रिनको भूषण पहिराये ❀ बैष्णव ब्राह्मण खुशी कराये ॥

प्रेमहर्ष धर्म नृप जाना ❋ सिंहासन बैठे भगवाना ॥

दोहा—अश्वमेध मख पूरण, हरि करि दीन्ह्यो राउ ।
तीन लोक संतुष्टित, देवन आनँद पाउ ॥

पाछे नृपति मुनीजन आये ❋ षट्रसभोजन अमृत जिमाये ॥
करि भोजन तब अचमन कीन्हा ❋ खरिकाशोधन केशव दीन्हा ॥
त्यहि अन्तर ब्राह्मण दो आये ❋ झगरत धर्मराज पहँ धाये ॥
एक कहै भूमी मोहि दीन्हा ❋ इनने खेतजु बलकरि लीन्हा ॥
कहै धान्य बांटी कर लीजै ❋ लेउँ मैं कैसे सो कहि दीजै ॥
दूसर कहै भूमि है तेरी ❋ सबै धान्य है है कत मेरी ॥
कृष्ण कह्यो धर्मज के पाहीं ❋ है अन्याय छुटो है नाहीं ॥
तीन मास बीते कलि ऐहै ❋ आपन न्याय आप करिलैहै ॥
तुम जो दीन बांटि कै आधा ❋ ऐसे कली कपट दुख दाधा ॥
यह कह घरको दीन्ह पठाये ❋ पाछे राजन बिदा कराये ॥

दोहा—जहाँ देश है जाहि कर, तहँ तहँ गये नरेश ।
अश्वमेध भारत कथा, काटे पाप कलेश ॥

बिधि संयोग आय बन आवा ❋ बैशम्पायन कथा सुनावा ॥
राय युधिष्ठिर कहबै लीहेउ ❋ मम अस मख काहू नहि कीहेउ ॥
एही बीच नकुल इक आवा ❋ मध्य उच्छिष्ट बूड़की खावा ॥
तन मन देखि बुड़ै पै सोई ❋ क्षण बूड़ै क्षण ऊपर होई ॥
यह अचरज तहँ देखत भयऊ ❋ यहि बिधि पहर एक सो गयऊ ॥
कृष्ण देव सों राजा कहै ❋ यह चरित्र देखो कस अहै ॥
उच्छिष्ट माहिं बूड़ै उतराई ❋ तन मन देखि बहुत पछताई ॥
ऐस नकुल मैं कबहुँ न देखा ❋ कञ्चन मुख कबहूं ना पेखा ॥
तबहीं कृष्ण कहा समुझाय ❋ यह बृत्तान्त कहौं मैं गाय ॥
पूरब कथा सुनो नरनाहा ❋ जाहीते मुख कञ्चन आहा ॥
सो बृत्तान्त कहौं मैं तोहीं ❋ जो नृपती तुम पूछेहु मोहीं ॥

पूर्ब जन्म इक ब्राह्मण रहेऊ ❀ बहुत दुःख तनुब्यापित भयऊ ॥
सुत पत्नी द्विज के सँग आहा ❀ चारों प्राणी रह सँग माहा ॥
परम दरिद्र दुखित सो रहई ❀ तोरथ ब्रत सो फिरि फिरिकरई ॥
नेम धर्म बहुतै सो करई ❀ अस ब्राह्मण शुचिवन्ता रहई ॥
चारो प्राणी बहु शुचिवन्ता ❀ निशिबासर ध्यावत भगवन्ता ॥
भिक्षा मांगि बिप्र लै आवै ❀ आधा अन्न संकल्प करावै ॥
याही विधि बहु दिवस गँवावा ❀ ब्यासदेव तब नृपहि सुनावा ॥
चारों प्राणि बिप्र मो रहेउ ❀ एकते एक धर्म बहु किहेउ ॥

दोहा—एक दिवस चलि यात्रा, पत्नी सह द्विजराव ।
ऋषि अनङ्ग तहँ भूपती, सबही कृष्ण सुनाव॥

चला यात्रा बिप्र नहाईं ❀ चारि दिवस सो अन्न न पाईं ॥
क्षुधावन्त ब्राह्मण तब भयऊ ❀ पञ्च दिवस याही बिधि गयऊ ॥
छठयें दिवस नगर इक आयो ❀ बिधि संयोग तहाँ कस भायो ॥
जव कर खेत तहां इक अहई ❀ मारग बीच तहां सो रहई ॥
जव काटी किसान लै गयऊ ❀ जव इक परा तहाँपर रहेऊ ॥
तब द्विजसुत ब्राह्मणिसो कहेउ ❀ चुनहु आय बुद्धी यह किहेउ ॥
पुत्र सहित द्विज बीनै लीन्हेउ ❀ एकक जव चुनि राशिजोकीन्हेउ ॥
जव सब चुनी बनावत भयऊ ❀ तबहीं बिप्र कहत अस भयऊ ॥
आधो आधा द्विज तब किहेऊ ❀ आधा अंश हाकिमहि दिहेऊ ॥
आधा अंश गृहस्थ बिचारी ❀ जो उबरा सो लियो सँभारी ॥
सो ब्राह्मणि लैगै जतसारा ❀ जवको चूरन कीन सुसारा ॥
सत्तु पीसि ब्राह्मणि लै आई ❀ दोना पांच ब्राह्मणी बनाई ॥
पांचो पत्र कीन्ह द्विज जबही ❀ एकक पत्र चारलिय तबही ॥
इकसो अभ्यागत कहँ राखा ❀ अस धर्मिष्ठ कृष्ण तो भाखा ॥
जबहीं भोजन चाहै लीन्हा ❀ स्तुति आय बिप्र इक कीन्हा ॥
तब द्विज चरण पखारा जाई ❀ बहु आदर आन्यो बैठाई ॥
हर्ष सहित द्विजपत्र जु दीन्हा ❀ तबहो द्विज कृष्णार्पण कीन्हा ॥

कह्यो बिप्र संतुष्ट न भयऊ ❀ आपन पत्र जो ब्राह्मण दयऊ ॥
उनहु पत्र द्विज याचन कीन्हा ❀ चारौ पत्तर जेवै लीन्हा ॥
करि प्रसाद अचवा पुनि सोई ❀ नीर प्रवाह पुहुमि में होई ॥
एक नकुल तहँ आव पियासा ❀ ठौर कुँवा ये नीर प्रकासा ॥
नीर उच्छिष्ट मुखै जब पिहेऊ ❀ कञ्चन मुखहि तहाँतक भयऊ ॥

दोहा—अस कौतुक तहँ होतभा, सुनौ राव चितलाय।
पुनि उच्छिष्ट पानी पियत, सब सुबर्ण होजाय॥

नकुल मनहिमन करै हुलासा ❀ अब बिधि मोर जो पुरवै आसा ॥
सुना नकुल ने यह सदभाऊ ❀ राय युधिष्ठिर यज्ञ कराऊ ॥
बहुत ऋषय आये मखशाला ❀ औरौ बहु आये महिपाला ॥
बड़ बड़ ऋषि तहाँ चलिआये ❀ प्रेम पुनीत देख मन भाये ॥
औरौ देव मुनीजन भारी ❀ तिनके सँग आये बनवारी ॥
उनकर जूंठ परा तहँ होई ❀ तनु मोरा कञ्चन हो सोई ॥
यह गुण जानि नकुल तहँ आवा ❀ उच्छिष्ट माहि तनु आप बोरावा॥
सो जु देह सुबरण नहिं होई ❀ तब तब बुड़की मारै सोई ॥
यह गाथा जब कृष्ण सुनाई ❀ सुनतहि मानभङ्ग भो राई ॥
राय युधिष्ठिर गर्ब गँवावा ❀ लज्जा बश ह्वै शीश नवावा ॥
सबै ऋषि कहँ लज्जा आवा ❀ मान महातम सुनत गँवावा ॥

दोहा—यह चरित्र सुन राजा, कृष्ण कहा समुझाय।
सबके मान जु भंगभे, रहे ऋषै शिरनाय ॥

कृष्ण साथ लिय सब परिवारा ❀ द्वारावती नगर पग धारा ॥
प्रेम हर्ष आनन्द उपाय ❀ कृष्ण द्वारका पहुँचे जाय ॥
बैशम्पायन कहैं बखानी ❀ अश्वमेध है पुराय कहानी ॥
दुखी सुनै दारिद्र पराय ❀ रोगी रोग तुरत क्षय जाय ॥
निष्पुत्री सुनतै सुत पावै ❀ पुरुषन सुनत ज्ञान उपजावै ॥
सहसन धेनु देइ जो दाना ❀ सर्ब तीर्थ करते अस्नाना ॥

पर्व अठारह सुन फल होई ❀ अश्वमेध जानो फल सोई ॥
यह चरित्र सुनि जे मनलाई ❀ यमके दूत निकट नहिं जाई ॥
कथा सुनत देते जो दाना ❀ प्रापति देव होयँ भगवाना ॥
पाण्डव विजय कहै अनुसारा ❀ कह संक्षेप करे बिस्तारा ॥

दोहा—पाण्डव विजय कथा यह, पुण्य श्लोक बखान।
अश्वमेध सम्पूरण, सुनु राजा सज्ञान ॥

अश्वमेध मख पातक हरता ❀ राजा सुनो श्रीपती करता ॥
कर श्रद्धा नर सुनै पुराना ❀ तापर रह प्रसन्न भगवाना ॥
श्रद्धा जाके मनमहँ नाहीं ❀ सुन अनसुनी एक सम ताहीं ॥
मनसा फल प्रापति तौ होई ❀ यही सत्यके जानो सोई ॥
मनमें धरे ज्ञान गुरुदेवा ❀ मनमें पार होत नर सेवा ॥
श्रद्धा मन जानो परवाना ❀ ताते परब्रह्म पहिचाना ॥
काम क्रोध मद अज्ञय चाहा ❀ भावै ज्ञान कहो का ताहा ॥
का कामी के आगे ज्ञाना ❀ काह क्रोधते भक्ति बखाना ॥
का लम्पटके आगे धर्मा ❀ कामी काह पुण्य का कर्मा ॥
जैसे ऊसर बीज बोवाये ❀ तैसे यह सब भेद बताये ॥

दोहा—भारत गाथा हिय धरे, होत पुण्य परवेश ।
मनमें भक्ति न जासुके, सो नहिं फल उपदेश॥

इति श्रीमहाभारत सबलसिंह चौहान कृत अश्वमेधयज्ञभाषाराजप्रयाणवर्णनोनाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति अश्वमेधपर्व समाप्तम् ॥

महाभारत ।

आश्रमवासिक, मुशलपर्व संयुक्त

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायण की रीति पर दोहा चौपाई में सरलता पूर्वक वर्णित है ।

जिसमें

विदुरकथा, सपत्नीक धृतराष्ट्र और कुन्ती का देहत्याग, और अर्जुन का श्रीकृष्णचन्द्रजी के हाल लेने के लिये रथारूढ़ होकर द्वारकापुरी में गमन, दुर्वासादि ऋषियों का तप-निमित्त द्वारका में गमन, दुर्वासाशाप, मुशल के खण्ड करके समुद्रमें बहाना वहाँ मछली का खाकर बालिव्रत केवट का पाना, उद्धव का श्रीकृष्णजीकी आज्ञा के अनुसार बदरिकाश्रम-गमन, राजा जनमेजय का नव योगियों से सम्वाद आदि कथाएँ संयुक्त हैं ।

काशी-

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा-

भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन काशी में मुद्रित ।

सन् १९२९ ई०

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ महाभारत भाषा

आश्रम वासिकपर्व ॥

जयति जयति रघुबर श्रीरामा ❋ भक्त जनन को पूरणकामा ॥
बन्दौं गुरु गोबिंद सब ताता ❋ बन्दौं पुनि श्रीपितु अरु माता ॥
बन्दौं अज इन्द्रादिक देवा ❋ बार बार शिवकी करि सेवा ॥
श्रीशक्तिहि प्रभु शारद देवी ❋ सबिधि काब्य जनकी जो सेवी ॥
बन्दौं ब्यासादिक मुनि नारद ❋ हनूमान जो ज्ञान बिशारद ॥
सबलसिंह यह भारत भाखा ❋ श्रीप्रभु जब अरके दै राखा ॥
औरँगशाह दिलीपति राजत ❋ मित्रसेनि भूपति तहँ गाजत ॥
ये नृप के पुरुषन महँ गाये ❋ सबलसिंह चौहान बनाये ॥
सम्बत सत्रह सै इक्यावन ❋ शुक्लपक्ष दशमी बुध सावन ॥
तब मैं कथा अरम्भन कीन्हा ❋ ब्यासदेव को सुमिरण कीन्हा ॥

दोहा—लक्ष्मी के पति जौन हैं, हैं लक्ष्मीबिश जाहि ।
सल्लक्षण जामें मिलैं, बन्दत हौं मैं ताहि ॥
श्रीहरि ब्यापक जक्त सब, तेहिते बन्दिय सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, आश्रमवासिकपर्व ॥

नृपबर यज्ञ सरावत भयऊ ❋ कछुदिन अधम शम्भु बलिगयऊ ॥
नृपबर यज्ञ सुभग श्रमभवा ❋ जादिन सभा अनूपम हवा ॥
द्विजन पूजि सह भाइन बैठो ❋ ठौरहि ठौर भूप जन ऐंठो ॥
कथा बारता बिबिध प्रकारा ❋ सुरन पूजि नृप कीन्ह जुहारा ॥

दोहा–प्रथमहिं पूजियगणपातहि, जाकी सेवा सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा आश्रमपर्व ॥

सब जन नृप बैठे आसन प्रति ❋ होइनि यज्ञ ठौर होके अति ॥
ताहि समय द्वैपायन आये ❋ नृप सब बन्दि भ्रात मुद पाये ॥
सिंहासन पर नृपवर राजत ❋ नृत्य होत बाजन बहु बाजत ॥
बैठे भूप सकल पृथिवीके ❋ अर्जुन भीम जोति पदवीके ॥
बभ्रुवाहन हैं नृप अनुशाला ❋ नीलाम्बुज आदिक महिपाला ॥
औरो बहु बैठे तहँ राजा ❋ विविध तँबूर तबल जहँ बाजा ॥
तब नृपवर जनमेजय बोले ❋ पाणि जोरि मुख अम्मृत खोले ॥
सकल भूप तहँ रहे बखानी ❋ कहाँ हुते बलि शारँगपानी ॥
कह मुनि सुनु नृप बचन सोहाये ❋ तुव हित हेत कहत हम गाये ॥

सो०–रहे दूरि के राय, जे आये नृप यज्ञ महँ ।
जे नगीचके आय, निजनिजनगरनकोगये ॥
षष्ठमास की बात, यज्ञन्तर नृप ह्वै गयो ।
रहे दूर नृप तात, द्वैपायन सह भूपमणि ॥

नाच होइ तहँ बिबिध प्रकारा ❋ मुख मोरहिं जोरहिं सब तारा ॥
उछरहिं और केश छिटकावहिं ❋ कुच देखाइकै भूप रिझावहिं ॥
द्वादश षोड़श बर्ष कि नारी ❋ करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी ॥
तासु आभरण कौन बखानै ❋ पहिरे कर्णा मोतिया सानैं ॥
त्रिबली तरल तरङ्ग सोहाई ❋ अमिगण नाभि मनोहर ताई ॥
कटिकरकिङ्किणि तहँ छबिछाई ❋ पग नूपुर झनकार सोहाई ॥
कुचयुग चक्रवाक जनु साजे ❋ मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजै ॥

दोहा–नाचैं नारी मनहुँ रति, अलकझलकछबिहोत ।
चन्द्रबदनिमृगनैनिशिशु, भृकुटीकुटिलउदोत ॥

सोरठा—कुन्दकलीसमदांत, अधरअनूपमचिबुकतिल।
कुचसुचक्रकी भांत, तिलप्रसून नासा सुभग ॥

यहि बिधि नृत्य होत दिनराती ❋ नृपसमाज देखत मुनिपांती ॥
द्वैपायन नृप गे आश्रम को ❋ रैन ब्यतीत मिलन कोकीको ॥
यहि बिधि होत रोजप्रति उत्सव ❋ आवत देशन के वकील सब ॥
जीतत हारत सकल वकीला ❋ करत सुभगहित नृपगणमीला ॥
बभ्रूबाहन नृप दुश्शाला ❋ जीवनाथ आदिक महिपाला ॥
करिकरि फौज साजि सबराजा ❋ बिदामाँगि गे सहित समाजा ॥
ले जनवास बिदा रानिन ह्वै ❋ चले नृपति सब श्रीशिवसुत ह्वै ॥
करत बड़ाई धर्मज केरी ❋ निज निज धाम गये नृपफेरी ॥
इहाँ हस्तिपुर धर्मज राजा ❋ नित नव मङ्गल मोद समाजा ॥
बहुन बर्ष बीते सुखदाई ❋ आगे नृप सुनु कथा चलाई ॥
यकदिन कृष्णचन्द्र बलरामा ❋ पुत्र पौत्र आदिक बर बामा ॥
आये धर्मराज के धामहिं ❋ यथा उचित सबकीन्ह प्रणामहिं ॥
बास कीन्ह श्रीप्रभु बलनागर ❋ कुन्तीभगिनिद्रुपदिमिलि आगर॥
यहिबिधि बीतिगये कछुकाला ❋ रहे कृष्ण गे हलधर बाला ॥

दोहा—कृष्णचन्द्र नारिन सकल, बलसँगदीन्हपठाइ।
आपु रहे हस्तिननगर, आनन्दितसुखपाइ ॥

यहि बिधि कृष्णचन्द्र सुखदाई ❋ रहे हस्तिना मास गँवाई ॥
यकदिन द्वै ब्राह्मण तहँ आये ❋ तिन्हबोलायतिन्ह बात जनाये ॥
इनकी भूमि लीन्ह जोतन हित ❋ जोतत रहत सुनो हे नृप नित ॥
तामें मिलो सघन भंडारा ❋ हमरो हक नहिं ताहि पुकारा ॥
सो हम धनहिं कृष्ण नहिं लीजै ❋ यादव पाण्डु न्याव करि दीजै ॥
हमसों अन्नदेव ते कामा ❋ गड़ो मिलो सो याकर जामा ॥
यह सुनि बोलेउ द्विजबर दूसर ❋ नहिं हमार धन उपजो ऊसर ॥
हम सों वर्ष दण्ड सों रहै ❋ और मिलै सो याकर अहै ॥

नाहीं होत अन्न जब याके ❋ तबहूं लेत दण्ड हम साके ॥
उपजै जो करोरि धन भाई ❋ तबहूँ वहै मिलत है राई ॥
उपजो जवन अवनि धन राजा ❋ हमसो नहीं कछु है काजा ॥

दोहा—नृपबर सुनिद्विजबर बचन, कृष्ण पाहिं दै ताहि।
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हैं, षष्ठमास निरवाहि ॥

षष्ठमास महँ तुम द्विज आयो ❋ धमराय मुख न्याव करायो ॥
यहसुनिगेद्विज निजनिज धामहिं ❋ सभा बन्दिनितप्रति यह कामहिं ॥
सुनु आगे नृप सुत अब कथा ❋ मैं गुण गाइ कहत भइ यथा ॥
इकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा ❋ द्विजन बुलाइ दान बहु दीन्हा॥
ह्वैकै बिदा सुभद्रा पासहि ❋ द्रुपदिहि मिली बहुरिकै सादहि ॥
मिलि नृप भीम पार्थसों भेंटत ❋ मन्त्रिहिन कुलहि मिलिसम्भेटत ॥
कर्ण पूत गान्धारी मातहिं ❋ तो पितुअन्ध और बहुजातहिं ॥
मिलत सबन सों चालल कीन्हा ❋ रथ ह्वै बेगि द्वारकहि चीन्हा ॥
मिलत सबन यदुबंशिन आछे ❋ गये प्रथम मन्दिर कहँ पाछे ॥
इत नृप धर्मराज शुभ करई ❋ चलै न मारग सत्य न टरई ॥
बीते कछुक दिवस इमि ईछे ❋ आये ब्यास शिष्यसह पीछे ॥
देखि नृपति बन्धुन सह बन्दे ❋ अश्वासन लखिव्यास अनन्दे ॥
कहा व्यास सुनु धर्ममहीसो ❋ कहेउ दास कारण सबहीसो ॥
मम आगम तोहि लागत फीको ❋ जाते होउ दास नृपहीको ॥
धर्मज सुनत बन्दि हँसि दीन्हें ❋ कहेउ कृपा तव सबसुखकीन्हें ॥
शत्रुन मारि राज्य हम पावा ❋ तव प्रसाद घोड़ा फिरि आवा ॥

दोहा—अबकछुदिनसोंमहामुनि, लखतअन्य उपकार।
मिथ्या वाक्य प्रमोदअति, और सकल आकार॥

सोरठा—ताहि समयसुनुतात, करत बतकहीब्याससो।
आयो द्विज बतरात, बोलेन्याव लागेकरन ॥

भाष्यो द्विज है भूमि हमारी ❀ अन्न छांड़ि सब लेब करारी ॥
याके हाथ भूमि क्रय नाहीं ❀ करि करिया लेबै हम आहीं ॥
सुनि बोलेउ द्विज दूजो बानी ❀ लेबै छीनि कहत शिव आनी ॥
याको भूमि बित्त सो चहिये ❀ और मिलै मोको नृप अहिये ॥
यहसुनि सबहिंन धिकधिकबोले ❀ बृक्ष हलै धरणी सब डोले ॥
डर सबके तिहुँपुर सब कांपै ❀ जल समुद्र उछलै अरु तापै ॥
धर्मज सुनत आँगुरी चापी ❀ पवन चली बसुधा सब काँपी ॥

दोहा—सुनि धर्मज कम्पनलगो, भे प्रमुदित भूपाल।
रामकृष्ण कहिकै गिरे, भे सचेत पुनि हाल॥

आधो अर्ध दीन्ह कै राजन ❀ तब लागो पूछन महराजन ॥
अहो व्यास मुनि कारण कहिये ❀ नहितो चित्त अनलसों दहिये ॥
कहो व्यास यह कलियुग लागो ❀ धर्म धर्म नृप धर्महि त्यागो ॥
ताते आपु बद्रि पहँ जैये ❀ गलि हेवार हरि आश्रम रहिये ॥
कलिमें सकल गोत्र बध करिहैं ❀ पाप तिहारे ऊपर धरिहैं ॥
कलियुग नगर हेतु हम भाखा ❀ दोष झूंठ तव ऊपर राखा ॥
ऐसे व्यास कहेउ बहु ज्ञाना ❀ व्यास धर्म बिन जाको आना ॥
ब्यास गये निज आश्रम काहों ❀ कहेउ धर्म अब रहिबे नाहीं ॥
चलो कृष्ण पहँ माँगि रजाई ❀ तब उत्तर दिशि चाह्यो जई ॥
सुनि अर्जुन अतिशय सुख माना ❀ भीम नकुल मन्त्री हर्षाना ॥
बेगवन्त अर्जुन रथ साजा ❀ तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा ॥
चारि बन्धुभूपति सँग लीन्हे ❀ हरिपुर ओर गमन नृप कीन्हे ॥
चले अलौकिक देखत शोभा ❀ जितहि जात तितहीं मन लोभा ॥
कतहूं शिक्षित पण्डित बालक ❀ कतहूं जात सैनरिपुशालक ॥
कहूं लरत गज अतिहित तारे ❀ उज्ज्वल गिरि समान भैभारे ॥
माल महिष उष्ट्रादिक नाना ❀ लड़त शब्द फाटतते काना ॥
कहत धनुर्बिद सूरति छीजत ❀ पुरबाहर है कोउ कोउ ईछत ॥
कोउ नृप नाटक करत रिझावत ❀ बारमुखी नाचैं गुण गावत ॥

माली गण सींचत कहुँ बान ❋ मधुकर काम अन्ध सहरागन ॥
कहुँ कहुँ होत युद्ध के साजा ❋ आवत नृपन पत्र जहँ राजा ॥

सोरठा—को कबि करै बखान, जहां रहैं श्रीब्रह्मप्रभु।
असकोत्रिभुवन आन, जोनभजतश्रीप्रभुअसहि॥

कहुँ बिबाह चूड़ा कर नादो ❋ गावत मङ्गलचार सदादो ॥
सर अरु बाग नदीतट पावन ❋ भर्मत नारी काम लजावन ॥

दोहा—कोकिलपिक अरुमोरगण, सुमनसहितऋतुराज।
रहत सदा हरिकी कृपा, होनित्प्रति यह काज॥
यहिबिधिलखतसबन्धुनृप, करतमिलनसबपास।
रामकृष्ण कहि मिलतसब, कुशलकहतहमदास॥

कहेउ कृष्ण नृप कहु केहिकाजा ❋ आये सकल बन्धु महराजा ॥
ब्यास बचन अरु न्याव बतायो ❋ कलियुग घोर पापमय आयो ॥
जान चहत उत्तरदिशि प्रभु हम ❋ कीन्ह गोत्रबध हम नाहीं कम ॥
जो आज्ञा प्रभु आगे करी ❋ हम तो पलक कोर प्रभु हेरी ॥
भाष्यो कृष्ण सुनो हे राजन ❋ कलियुग अहैघोर यहिकाजन ॥
तुम्हैं गोत्र बध पाप न ह्वैहै ❋ पुनि कलियुग बासी नहिं छुइहै ॥
कहिहैं धर्मराज जो कीन्हा ❋ पाप पुण्य उनहूँ नहि चीन्हा ॥

सो०—ब्यास कहेउयहि हेत, कलिबासी जोजन करत।
दोष तुम्हैं जो देत, पाप लहै तुव सोइ सुनो॥

कलियुग ऐहै घोर अपारा ❋ तामें चलै न कछुक अचारा ॥
वृद्ध स्यान मम भुगिहैं राई ❋ मानहिं मातु पिता नहिं गाई ॥
यौवन ममवश करहिं कुकर्मा ❋ तजिहैं देश लोक कुलशर्मा ॥
ब्राह्मण जोतहिं हल तजिपुञ्जा ❋ जोतजिदिवसकरहि निशिपूजा ॥
बीर्य होन क्षत्री ह्वै जैहैं ❋ तबहीं म्लेच्छ नृपति ह्वै ऐहैं ॥
वैश्य देव द्विज सेवा हीना ❋ कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीना ॥

छत्री भूमि हीन ह्वै जैहैं ❋ बूझो नृप कब कलियुग ऐहैं ॥

दोहा—भाद्रमास पक्ष कृष्ण जो, त्रयोदशी रबिबार ।
अबते बाकी मासषट, कलियुगकर अवतार ॥

जब कलियुग गङ्गा कहँ जाना ❋ तब ह्वै हैं अतिअवगुण नाना ॥
नारि धर्म जो बिधवा करिहैं ❋ कन्या गर्भ कुमारहि धरिहैं ॥
कहँलौं कहौं प्रभाव भुवाला ❋ संकर बर्ण होइ कलिकाला ॥
कछुदिन करहु राज्य नृप आछे ❋ हमसह चलब कछुक दिन पाछे ॥
अब तुम नगर जाइयो राजन ❋ प्रथमैं कहेउ किहेउ जब साजन ॥

दोहा—सुनि नृप प्रभुके बचनबर, मिले सबहिं भूपाल ।
अर्जुन रहिग द्वारकहिं, आगे सबजन हाल ॥

नगर आइ भूपाल सुहाये ❋ पौत्रहिं बोलि सुकराठ लगाये ॥
माता को सब बात जनाई ❋ कृपाचार्य सुनतै दुख पाई ॥
धीरज धरि कुन्ती यह भाषा ❋ पतिसँग गमन मोहिंबिधिराखा ॥
पुत्र बिना कस रहिहौं राई ❋ जावा चहत सुतहि तुम हाई ॥
कलियुग केर प्रभाव बतावा ❋ तब कछु हृदय ज्ञान भरिआवा ॥
कलियुग पुत्र जो पियअबआयो ❋ ताते मान मोहिं नहि भायो ॥
हम सबको तिलअञ्जलि दीजै ❋ उत्तर पन्थ गमन तब कीजै ॥

दोहा—चलन कृष्ण आपहु कहे, तबलग माता जाय ।
आये अर्जुन तेहि समय, गये मातुलग धाय ॥

कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी ❋ अर्जुन कही कथा जस हेरी ॥
कहेउ कृष्ण नृप रहो कछुक दिन ❋ सुनिनृप भये प्रशंसत छिनछिन ॥
द्वै कारज अब ह्वैहैं पारथ ❋ मातुजाब यह सब बिधिस्वारथ ॥
संध्या भई सबन शुभ कीन्हा ❋ भोर अन्हाय दान सब दीन्हा ॥
क्रिया कराई सुबिर सुहाये ❋ गये हुते बहु दिन अब आये ॥
ताही समय आगमन कीन्हा ❋ पुरजन सहितनृपतिबर चीन्हा ॥
बन्दि चरण सब जन तब ईछे ❋ चरण धोइ आसनपर पीछे ॥

दोहा–कुन्ती द्रुपदी भांगिनि प्रभु, तुवपितु मातुसबान्दि।
आशिषदीन्हेंमुदितमन, श्रीबरबिदुर अनान्दि॥
संध्या देखि क्रिया नित कीन्हे ❋ भोजन कीन्ह सबन मुदलीन्हे ॥
ताहि समय नृप बन्धु सयाना ❋ बिदुरहि कहेउ पौढिये आना ॥
करहु तात अब तुम बिश्रामा ❋ यहसुनिकहेऊ बिदुर निजकामा ॥
बिदुर कहे भूपति सो बोले ❋ चाहत मिलन भ्रात मन डोले ॥
आज्ञा दियो धर्म के राजन ❋ बिदुर चले मिलिबे के काजन ॥
दोहा–किङ्करजनलैगे विदुर, चरण गहेउ कहिनाम।
सुनतनामनृपउठिमिले. सहसंजय अभिराम ॥
सोरठा–बिदुर मिले सह नारि, बार बार धीरज कहत।
दीन्हेउ जो मुखचारि, ताकी प्रभुता है महत ॥
हा हा बिदुर कहत भूपाला ❋ असकहि दम्पति ठोंकत भाला ॥
हाय बिदुर मम सुत सब जूझे ❋ अजहुँ क्षुद्रतन प्राण असूझे ॥
नात गोत्रजन सों भयों हीना ❋ पुत्रहीन हम अबहूँ चीना ॥
मरत न फूटत हियो है भाई ❋ मम सम भयो न होने आई ॥
अस कहि दम्पति रोवनलागे ❋ अस सुनि जनमेजय नृप आगे ॥
धीरज दियो बिबिध परकारा ❋ दियो ज्ञान भू एक अकारा ॥
तब बोले नृप अन्ध सुजाना ❋ कहँ कहँ गये बन्धु इत आना ॥
इतते गये सुनहु नरपाला ❋ रहे उजयनी जहँ महकाला ॥
चर्मवती अरु तीर्थ अनेका ❋ सोमनाथ बसि भयो अशोका ॥
गङ्गाद्वार बास तब कीन्हा ❋ आय नैमिषारण्यहिं लीन्हा ॥
बाराणसी तहाँ ते आये ❋ बिश्वेश्वर के दर्शन पाये ॥
गये हिमालय कहँ भूपाला ❋ अलकापुरी लख्यो सुखशाला ॥
ब्यासाश्रम दश बर्ष बिताये ❋ तहँ ते चित्रकूट कहँ आये ॥
यह सत संग ऋषिन कर लीन्हा ❋ ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा ॥
तहँ ते गये बड़े सो देशहि ❋ भुवनेश्वर किये दर्श बिशेषहि ॥

रामनाथ कर दरश सुहाये ❀ तात तहाँ ते इतको आये ॥
लहि मैत्रेय पास कछु शुभगति ❀ तुमहि देखिबे आयगये सति ॥
तव सुधि बिसरति हुती न नेको ❀ देखत तुमहिं सुखी नहिं एको ॥
चलौ भ्रात तप हेतु महाबन ❀ जहँ थलअहै ब्यासकर पावन ॥
सुनु नृप दुख न मानिये एको ❀ सोइ हरि बिनुजगमाहिं न एको ॥
सोई जल सोई थल जानो ❀ सुगुन निर्गुन तैसेहि मानो ॥
सोई पृथ्वी सोइ अकासा ❀ आपुइ स्वामी आपुइ दासा ॥
आपुहि राजा आपुहि रानी ❀ सोई अग्नि सोई है पानी ॥
सोई धन सोइ चोर कराला ❀ सोई मरत सोई है काला ॥
सोई है हीन सोई है पावन ❀ सोइ है राम सोई है रावन ॥
हरि आपुइ नर आपुइ नारी ❀ आपु गृहस्थ आपु ब्रह्मचारी ॥
आपुहि पिता आपुही माता ❀ आपुहि पुत्र आपुही भ्राता ॥
आपुहि पण्डित आपुहि ज्ञानी ❀ आपुहि महिष आपुही सानी ॥
आपुहि ग्वाल आपुही गाई ❀ आपुहि आपु चरावन जाई ॥
आपुहि भँवर आपुही फूला ❀ आपुहि ज्ञान बिना जन भूला ॥
राज रङ्क दूजो नहिं कोई ❀ आपुइ आपु निरञ्जन होई ॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका ❀ तैसे जानै ब्रह्म बिबेका ॥
यहि प्रकार जाको मन लागै ❀ जरा मरण नासै भ्रम भागै ॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै ❀ ब्रह्मानन्द सुनहि तब पावै ॥
सोइ बैकुण्ठ सोई है नरका ❀ सोइ है शोक सोई है हरषा ॥

दोहा—मातु सोई पितु सुत सोई, सोइ नृपति सोइ रंक ।
एक रूप जानो सुखद, नृप मति करियो शंक ॥

बोले बिदुर सुनहु हे राजा ❀ दुखबश देखि परत केहि काजा ॥
कहा अन्ध नृप सुनि हे भाई ❀ भीम बचन मोहि सहो न जाई ॥

सोरठा—और सकल सुख देत, भीम कहत मोहिं कटु बचन ।
सो न सबह मन लेत, को भाषै हरि की रचन ॥

बिदुरजाहि जिमिनृप कटुभाषत ❋ श्वानसमान नृपति तुवभाषत ॥
जैसे लकुट हनत कोइ ईछे ❋ टूक देखाय बुलावत पीछे ॥
तस तुवदशा करत नरनायक ❋ भीम कहत नृप से युवलायक ॥
खात शूद्र गृह लाज न आवत ❋ हीन बंश अजहू हो रावत ॥
ताते करौ चलो तप जाई ❋ नातरु लहौ अधिक दुख भाई ॥
सुनि कटु बैन तपहिं कहँ ईछे ❋ बिदुर सुनाय ज्ञानसह पीछे ॥
सुनो बन्धु जगकर ब्यवहारा ❋ जामें बँधो सकल संसारा ॥
सुख दुख स्वप्न जानियो राजा ❋ यक इतिहास कहत तव काजा ॥

दोहा—एकबणिकलैबहुतधन, चल्यो करन रुजिगार ।
एक दिवस बनमो परा, सूर्य अस्त की ब्यार ।

तहँ षट चोर मिले हे राजन ❋ लूटन संगचले तेहि काजन ॥
बहुत चलो तब बणिक अजानो ❋ बसन हेत नहिं नगर निरानो ॥
अधिकअधिक बन चलतपरत जस ❋ पंक ताल यकरहो बैठि तस ॥
तहँ षट आकर चोरन लागे ❋ बणिक देखि भयबश तब भागे ॥
बन महँ परो भुलाय बणिक जब ❋ देख्यो तब चरित्र नृप सब अब ॥
कहूं देखि भाजत गज भारी ❋ कहूँ सिंह कहुँ सर्प करारी ॥
दावा देखि जात भय भागत ❋ गिरत परत उठि कांटा लागत ॥

दोहा—यहिबिधिते ब्याकुलभयो, गिरचो अँधेरे कूप ।
बैशंपायन मुनि कहेउ, सुनु जनमेजय भूप ॥

बटको बृक्ष हेठ पर राजत ❋ पकरि बणिक डालीकहँ ताजत ॥
जो शाखा लटको मधि कूपहि ❋ ताहि रहे देखत हे भूपहि ॥
मूष श्याम उज्ज्वल द्वउ राजत ❋ शाखा काटि रहे पुनि गाजत ॥
पकरि चहत सोइ हेठहि आवन ❋ हालत डार गिरत मधु पावन ॥
मुख मधि गिरत चाटि सुख पावत ❋ कूपहि सर्प देखि भय लावत ॥
शाखा गिरे सर्प दुख लीन्हो ❋ ऐसहि दशा सबहिं प्रभु कीन्हो ॥
बोले तब नृप बचन सुहाये ❋ कौनत बन अब देहु बताये ॥

बोले बिदुर सुनहु हे भाई ❋ जीवहि बणिक जानि जो आई ॥
काम क्रोध अरु मोह लोभ मन ❋ इन्द्रिय यह जानौ तसकरजन ॥
अरु पुत्रादि सकल परिवारा ❋ पाइ सहायक चोर अपारा ॥
जाते कहत बनाय जीवको ❋ उत धन धर्म अधर्म हीवको ॥
जिमिब्याघ्रादि डरावत बणिकहि ❋ तिमिकुल चोर डरावत जनिकहि ॥
बन है दुःख जौन संसारा ❋ स्त्री आदि कूप है कारा ॥
है आयू वह शाखा जौन ❋ द्रब्य अहै तौ बहता पौन ॥
मूषक राति दिवस करि जानो ❋ काल सर्प को नृप करि मानो ॥
कह संजय जो बिदुर बखानत ❋ हमहूँ कहत जाहु अस जानत ॥

दोहा—इन्द्री हय अरु मन बहक, देह सुरथ रथवान ।
याके बश भर्मत फिरत, जीवन कछु है आन ॥

सोरठा—कह संजय मतिमान, रूपहि देखा साधुको ।
ताबिन कछु नाहिं आन, जड़ चेतनउत्पन्निसत ॥

दोहा—भई ब्यतीत सुरैनि तब, भयो ज्ञानको भोर ।
धर्म नृपति आवत भयो, बन्दत पितुहित ओर ॥

नृपति भीम अर्जुन तबबन्दे ❋ नकुल देव सहदेव अनन्दे ॥
नाम कहेउ तब पाण्डव चीन्हो ❋ गदगद ह्वै दम्पति शिष दीन्हो ॥
कृपाचार्य मिलि बिदुरहि भेटत ❋ संजय मिलो तापत्रय मेटत ॥
मिलि युयुत्सु आदिक बहुतेरे ❋ औरो सकल बसैया नेरे ॥
कर्णपुत्र नृप हृदय लगायो ❋ मेघबर्णमिलि दुसह नशायो ॥
बैठे निज निज आसन पर सब ❋ अन्ध नृपति गदगद बोले तब ॥
हो हो पुत्र धर्म सुखदाता ❋ किय प्रतिपाल मोर अरु माता ॥
दुर्योधन आदिक सब जूझे ❋ तबसों तुम मोको अति बूझे ॥
बिसरो दुख पुत्रन बध मोहीं ❋ रोमहिं रोम अशीशत तोहीं ॥
मम सुत तुमहिं दुःख बहु दीन्हो ❋ फल पायो ते आपन कीन्हो ॥

अब मम देह सकल जरजरसै ❋ बलसुहीन सब निकरिगई सै ॥
सरिता हेठ बृच्छ मोहिं जानो ❋ त्वच्छ उखरि बो शङ्क न मानो ॥

दोहा—आज्ञा दीजै जाइँ हम, दम्पति भ्राता साथ ।
कर्ममुक्ति हित बनै कछु, उतहित धनजोहाथ ॥

नृप सुनि यह बन्धुनसहदुखअति ❋ बोलत भे तब ज्ञान चक्षुपति ॥
हमरे तुम सबके सुखदाता ❋ केहि बिधि कहौं जाहु असबाता ॥
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू ❋ होय सुभग सह मङ्गल सेतू ॥
तब कुन्ती बोली बिलखाई ❋ हमहूँ चलब संग तुव राई ॥
सुनतै सब काहुन समुझावा ❋ कुन्तीके मन नेकु न आवा ॥
तब धृतराष्ट्र कहन अस लागे ❋ धर्मराज राजा के आगे ॥
पुत्र मात सम्बन्धी जोई ❋ जाना है औरौ सुन सोई ॥
पिण्डा श्राद्ध सबन की करिकै ❋ भोर जाब पुनि सबब्रत धरिकै ॥

सोरठा—सुनिधर्मजगुणऐन, बन्दिसबानिपितुपदपदुम ।
आये निज निजऐन, नित्यक्रियाभोजनाकियो ॥

नृप ह्वै शुचि सहदेव बुलाये ❋ तिन नृपआयसु सुखद सुनाये ॥
लै बन सबन बस्त्र पट नाना ❋ गजरथ बाजी उष्ट्र बिताना ॥
अरु भोजन के साज अथोरा ❋ लै मतिदृग पहँ जाहु करोरा ॥
यह सुनि किङ्कर सकल बुलाये ❋ जो जेहि लायक ताहि सुनाये ॥
निकरत मुखबानी किङ्कर जन ❋ लै सबगये मिलो अति अरु बन ॥
लादि साज नृपमन्दिरमोंसब ❋ होनलाग शुभकाज सकल तब ॥

दोहा—निशाभयो पुनिब्यक्तमो, गये धर्म के राज ।
पिताहिंबन्दिलागेकरन, सबजनसबबिधिसाज ॥

होम भयो पिण्डा नृप दीन्हा ❋ जस बिधिबेद कहेउ तसकीन्हा ॥
भोजन श्राद्ध यथाबिधि कीन्हों ❋ दान अथोर बिप्र नृप दीन्हों ॥
याचक सकल अयाचक भये ❋ यकदिन एकनिशा इमि गये ॥
अरुणोदय लखि चालन कीन्हा ❋ दान दयासों ब्राह्मण दीन्हा ॥

आशिषदै निज धामन आयो ❋ जनमेजय सुनमुनि सबगायो ॥

दोहा—कुन्तीमिलिगन्धारिता, बिदुरसाहितामिलिधर्म ।
सबनमिलतआगेचले, पुरजनसह जिमि सर्म ॥
पुरजनमहँसुरराजसम, नृप धर्मज सह भाय ।
नारी नर सब बिकल ह्वै, हा हा हा कहि राय ।

नृप धृतराष्ट्र सबन समुझावा ❋ मिलिसबहिनियोजन यक आवा ॥
धर्मराजकहँ आशिष दीन्हा ❋ संजय कहँ प्रबोध तब कीन्हा ॥
सब काहुन पलटायो राजा ❋ गाङ्गेय मिले अर्ध मगराजा ॥
मायामोह तोरि तृणइव सब ❋ आगे चले सुनहु नृपबर अब ॥
बिदुर कन्ध धरि कर नरपाला ❋ पति कन्धा गन्धारी बाला ॥
तापाछे कुन्ती धरि हाथा ❋ चले नवाय गङ्गकहँ माथा ॥
करि मज्जन अरु बहुकर दाना ❋ चले बनहिं चारिउ जन भाना ॥
यहि बिधि करत बासमगमाहीं ❋ चले जात नित भय दुख नाहीं ॥
ब्यासाश्रममिलि सब मुनिजूहन ❋ भे प्रसन्न भोजन फलमूलन ॥
ब्यासहिं मिलत अधिक सुखपावा ❋ कहमुनि भलीकीन्ह जो आवा ॥
जैमिनि शुकदेव बकदालम्भी ❋ औरो मिले मुदित मुनितम्भी ॥
कह नृप लहेउ दुःख मैं ताता ❋ सुतजूझन आदिक बहुबाता ॥
कह मुनि प्रथम तुम्हैं समुझावा ❋ नेकु हृदयमहँ ज्ञान न आवा ॥

दोहा—निजतनतूलभराइकै, निजकर अग्नि लगाय ।
दोष देय तब ईशको, कह्यो ऋषै समुझाय ॥

सोरठा—तातें करु तप भूप, हृदयराखि अब्यक्तप्रभु ।
देखि चराचर रूप, जोत्रिभुवनमहँएकप्रभु ॥

करन लगे तब नृपहो रानी ❋ बिदुर आनिकरि ज्ञानसुहानी ॥
भे अद्भुत सदश यमारजा ❋ मग्नफिरत बनऔर न काजा ॥
उत नृप धर्मराज दुख पावत ❋ लख्यो तबै ऋषिनारद आवत ॥

उठे सभासद मुनि कहँ बन्दे ❋ लख्यो धर्मनृप बहुत अनन्दे
अर्घ देइ आसन बैठार्यो ❋ मुनि समीप अस बचनउचार्यो ॥
त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ मुनीशा ❋ फिरत रहत तुम सदा अहोशा ॥

दोहा—तुम मुनीश सर्वज्ञ प्रभु, जानत मन भगवान ।
कह्योखबरिकछु बिदुरकी, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंह चौहानभाषाकृते आश्रम वासिकपर्वप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

बिदुर बिरक्त फिरत बनमाहीं ❋ त्यागो तन गे हरिपुर काहीं ॥
तो पितु और दोउ पटरानी ❋ गईअग्निजरि सुनुगुण खानी ॥
भये बिकल सुनि बन्धु नृपाला ❋ जोगतिहोत बिकलजिमिकाला ॥
रोवत बार बार हा हा कहि ❋ मूर्च्छित ह्वै कै गिरत अहैं महि ॥
यह देखत बोले मुनि नारद ❋ सुन नृपबर बिज्ञान बिशारद ॥
मरण भयो न कछू यह जाना ❋ समुझनहेतु कहेउ असराना ॥
हे पितु भक्त सदृश कोइ नाहीं ❋ परपितु मानत समपितु आहीं ॥
अबचलि दरश करो पितु केरा ❋ नातरु काल आयगो नेरा ॥

दोहा—यह कहिकै नारद ऋषै, चले ब्रह्मपुर ओर ।
अब आगे सुनु नृप कथा, श्रोतनके शिरमोर ॥

तुरत तयार नृपति बर भये ❋ बन्धु सहित नृप मिलि अबगये ॥
पति औ नारी सकल समाजा ❋ नगर महाजन अरु द्विज राजा ॥
चले सकल जेहि राजत पुरमों ❋ बाण सदृश यह लागत उरमों ॥

सोरठा—चले नृपाल भुवाल, सहितबन्धुपुरजनसकल।
ठौर ठौर रक्षपाल, राखि चले हस्ती नगर ॥

नृप तब नगर राखि रत्नकगन ❋ चलेसबन सहदुखित नृपति बन ॥
तीरथ करत बास भगवाना ❋ चले बनहिं जहँ कुरुपतिराना ॥
गये ब्यास आश्रम के पासा ❋ भे पदत्रान बिहीन सुदासा ॥
मिलत ऋषिन कहँ बिबिधबिधाना ❋ गये जहां हैं ब्यास सुजाना ॥
मिले ब्यास कहँ बन्दन करि करि ❋ बारबार शिर पद महँ धरिधरि॥

दै अशीश नृप कहँ मुनिराया ❋ कृपा कटाक्ष सबन पर दाया ॥
मिले पिता द्वौ मातन काहीं ❋ नाम सुनाइ कहेउ कछु नाहीं ॥
सकल मोहबश जल नैनन महँ ❋ को अस कहै दशा नृप भै तहँ ॥

दोहा—दै अशीश सबकहँ सबन, बैठे सब जनराय ।
बैशम्पायन कहत हैं, जनमेजय पहँ गाय ॥

दुर्लभ देखि राय कहँ राजा ❋ सहमतु नहिं दुर्बल तपकाजा ॥
बोले नृपबर गदगद बानी ❋ कहँहैं बिदुर कहेउ तब रानी ॥
कुन्ती कह भे परमहंस वै ❋ ढूंढ़न चले अकेल बनै स्वै ॥
देख्यों भागिज्ञात जात बनमाहीं ❋ गोहरायो ठिठुके त्यहि नाहीं ॥
तदपि बृक्ष आश्रित चीन्हो जब ❋ नयन नीर भरि रहेउ ठाढ़ित ॥
चरण गहेउ धर्मजके राजा ❋ ताहि समइ दुन्दुभि बर बाजा ॥
बिदुर त्याग तनु ताही औसर ❋ गे यमराज बिदुर ह्वैकै बर ॥
देखि धर्म नृप बन्धु बोलाये ❋ कहि सब कथा नयन जल छाये ॥
दाहन चहेउ तबै बाणी भय ❋ जीवन मुक्ति बिदुर यम कह हय॥

दोहा—यमराजा को अङ्ग है, बिदुर भक्त भगवान ।
धर्मराजाहियसुमतिभो, परबोधिक सुनिकान ॥
सोरठा—आयो राजा धर्म, कहेउ कथा सब बिदुरकी।
कीन्हों बिधिवतकर्म, निजकर राजाअन्धबर॥

रहे बनहिं कछु दिन शुभबीतत ❋ महादुःख लखि मुनिबर चीतत ॥
पूछेउ सबसों को केहि चाहत ❋ जासों होत उऋणमो दाहत ॥
कुन्ती कहेउ कर्ण मैं देख्यो ❋ गन्धारी जामात्रहि लेख्यो ॥
सुभद्राआदिक सुतकहँ भाग.त ❋ पितु सुतबन्धु पतिहिशरणागत ॥
सबै कौशिकी तट लै गयऊ ❋ तप प्रभाव सब आवत भयऊ ॥
दिब्यदृष्टि अन्धहि नारी सह ❋ सुनत लगायो कह हाहा तह ॥
कोउ पति मिलत महामुद छाये ❋ कोउ कोउ पुत्रन हृदय लगाये॥
कोऊ भाई बापहि लावत ❋ दुख मिटिगे कोउ मङ्गल गावत॥

रैनि एक सुखसे सब बीतत ❀ अरुणोदय लखि सब जन चीतत ॥
फांदे सब बन नृप छलमाहीं ❀ रहे न एकौ धौं कोउ माहीं ॥
सकल मोहबश नारि अपारा ❀ धसीं जलै करि घोर चिकारा ॥
कोउ कोउ बनमहँ ढूँढ़त भागत ❀ कोउ कोउ प्राणतजत भैलागत ॥
कोउ कोउ ब्याघ्रादिक धरिखायो ❀ जलमहँ धसि सब प्राण गँवायो॥
कोउ कोउ शून्य होम मखशाला ❀ जरीं अग्निमहँ जे बरबाला ॥

दोहा—सबकाहुनतनत्यागिकरि, गईं पतिनके साथ ।
ब्यास कहेउयहधर्म सों, अबभलतबाहिंअनाथ॥

सोरठा—आये सुनि नरपाल, जहां होमशालानृपति ।
सुनु अब कछु सुतहाल, बैशम्पायन कहतभे॥

धर्मनृपति मख करत रहे तहँ ❀ मखशाला रह ब्यासकेर जहँ ॥
अग्नि प्रचण्ड शिखा अतिबाढ़ी ❀ अर्ध नृपति अङ्गहि तहँडाढ़ी ॥
कुन्ती चलन चहेउ उठि तहँते ❀ अक्षबिहीन नृपतिवर जहँते ॥
धर्म बिचारि जरी सँग तिनके ❀ रामकृष्ण कहि कहि वै जिनके ॥
कोऊ ऋषि अरु पाण्डु कुमारा ❀ रहे न तब कोउ उठवनहारा ॥
आय नृपति यह दशा निरेखी ❀ कीन्हों रुदन सुनत जिन देखी ॥
रोय उठे सह नृप बन्धुन जन ❀ और नगरबासी आये बन ॥
रोवहिं कुन्तिहि गन्धारी कह ❀ हाय हाय कहि अन्धनृपतिसह ॥
लेकर अस्थि सुदम्पति केरी ❀ लीन्हे अस्थित ढूँढिमा केरी ॥
कीन्हे कर्म सबिधि गङ्गातट ❀ जहँ पबित्रबन मोहिं एकबट ॥
कीन्ह तिलञ्जलिदेय सबिधिबिधि ❀ चलेधीरधरि नगर नृपतिसिधि ॥
करि बन्दन ऋषिब्याससबन को ❀ चलेमगहिंमहँ श्रम नहिं मनको ॥

दोहा—बासचलनकारमिगनसब, नृपराजन सहभाय ।
नारीसंग सुभद्र सह, द्रुपदी सह दुख पाय ॥

सोरठा—आयेनगरनृपाल, दियेतिलाञ्जलिदिवसनिशि।
एकादशसुखपाल, दिये बाजि नारी सबन ॥

दोहा--द्वादशयें दिन भूपमणि, दीन्हों दान अथोर ।
बासलसो दम्पति तबै, सह कुन्ती सब ओर ॥

पायो बास सुखद सब काहू ❋ मिटेउ दुःख प्रबलित जो राहू ॥
धर्मराज जो बिदुर कहायो ❋ निजपुर बास न्यावमन लायो ॥
जनमेजय सुनि भाषन लागे ❋ सम्पुट जोरि मुनीशन आगे ॥
नाथ कहो यम केहि अपराधू ❋ भये मनुज गुणबर अरु साधू ॥
बोले मुनि राजा के आगे ❋ गदगद बचन रावके पागे ॥
एक [illegible]रूपी ऋषा सोहावन ❋ करतहु तप्त पवनमधि पावन ॥
बहु तसकर चोरी कर लाये ❋ तहँ बन मध्य मोर करि पाये ॥
तहँ ब[illegible] डारि सकल तब भागे ❋ उन नृप आपु उदय लखिजागे ॥
धन [illegible] लखि रक्षक डाटे ❋ तिनके चोप रह्यो नहि काटे ॥
चरण चिह्न देखत ते दौरे ❋ धन देख्यो देख्यो मुनि बौरे ॥
धन [illegible] मुनि बूझन लागे ❋ अरे चोर क्रोधहि अतिपागे ॥
धरे मौन [illegible]त मुनि नहिं बोले ❋ धन सहायकरि गयो नृप तोले ॥
नृप दे[illegible] अति क्रोधहि पागे ❋ कहिकटुबचन कहन असलागे ॥
शूलो [illegible] चढ़ाय सुचोरहि ❋ दियचढ़ाइ तब मुनिवर ओरहि ॥

दोहा-[illegible]पर बैठे ऋपै, धरे तत्त्व को ग्राम ।
[illegible]यम[illegible] ऋपितबै, आये ऋपि के धाम ॥

सो[illegible]-[illegible] मृगरूपन धारि, आयेमुनिबूझनलग्यो ।
प[illegible] कौन असचारि, जोऋपिबरअतिकष्टहौ॥

दोहा-[illegible] इच्छाअसकहिदयो, सबसों मुनिबर गौन।
[illegible] सुनत दीन्हों छुटै, आयो यम के भौन ॥

हे यमराज कहो केहि पापन ❋ सह्यो घोरदुख सुनु सोइ दापन ॥
कह यमराज सुनो मुनिराजा ❋ लह्यो कष्टअति सुनुसोइ काजा ॥
है पतङ्ग गुद बाली कीन्हों ❋ तेहि कारण इतनो दुख लीन्हों ॥

यह सुनि क्रोधित ह्वै ऋषि बोले ❀ अगिन शिखा मुखअग्निहिबोले ॥
शूद्र सदृश तुव प्रकृति जनावत ❀ शूद्रयोनि जन्मज तुम पावत ॥
सुनि यमराज चरण गहि लीन्हों ❀ ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों ॥
ह्वै है शूद्र मुख भाषन कीन्हों ❀ हरिके भक्त और सिख दीन्हों ॥
पुनि यमराज होइहो आई ❀ आये मुनि कहि अति सुखपाई ॥
बिदुर व्यास तप बल ते राई ❀ भे हैं शूद्र प्रथम में गाई ॥
बोले जनमेजय भूपाला ❀ व्यास रच्यो नरवश सब बाला ॥
बनमहँ देह त्यागि तिन्हकीन्हों ❀ माया तप यह चाहत चीन्हों ॥
बोले मुनि तपबल ऋषिव्यासा ❀ कीन्ह देखु अमरावति बासा ॥
मैं जानी नृप तुव मन इच्छित ❀ ताते आवत पिता परीक्षित ॥
ताहि समय न भगइगह बाजत ❀ आवत देखि बिमानहि गाजन ॥
कि न्नरदेव नृपति सँग आवत ❀ बाजत बेणु अप्सरा गावत ॥
नील नारि नलनी कच राजत ❀ कुचयुग झरत फूलमकुराजत ॥

दोहा—चमकतमोतिनजोरिमुख, हँसत फँसताचितहून ।
लाजतदेखत जाहि रति, मति न रहतशुभजून ॥

सो०—यहिबिधिसुभगसुजान, आयो रथ बगमेलमें ।
मिले पतिहि दै यान, बारबार बन्दत उदित ॥

मिले देव किन्नर सब राजा ❀ बाजे हरि तन आनँद बाजा ॥
मिले परीक्षित कहँ सब नृपगण ❀ नातगोत्रसुत सह पुरजनजन ॥
तब जनमेजय द्विजन बोलाये ❀ आशिष पाय प्रसन्न जनाये ॥
देव सकल पितु सह उठि ईछे ❀ मज्जन करवायो सब पीछे ॥
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो ❀ ब्रह्मदेव सब रसन जेंवायो ॥
सिंहासन पर पूजा कीन्हों ❀ चरणधोय चरणामृत लीन्हो ॥
सुभग सुगन्धित माला दीन्हों ❀ शय्यादै आश्वासन कीन्हों ॥
तब पश्चिमलखि अस्त दिवाकर ❀ द्विजभवन मिलि मिले पुत्रवर ॥
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे ❀ चढ़े प्रथम पुनि मुनिकहँ बन्दे ॥

दोहा—बाजैकिंकिणिचारुध्वनि, नाचन लागीं नारि ।
जाइ पहूँच्यो इन्द्र पुर, तनक न लागीबार ॥
तब जनमेजय भूपबर, मुनिअस्तुतिअनुरागि।
सूत शौनकादिककहत, निशाबीतिसबजागि ॥

अरुणचूड़ अरुणोदय लागत ❋ श्रोता बक्ता सब जन जागत ॥
मज्जनकरि आसन प्रति आये ❋ जनमेजय इमि अर्ज सुनाये ॥
कहो तात सब कथा सुहावन ❋ पापनशनि समपुराय बढ़ावन ॥
शत्रुनशनि मित्रनि सुखदानी ❋ कलिनाशनिमुनिमहजिमिबानी ॥
कल्पलता कल्पाय सुतासी ❋ कुन्दकली उचलित कुन्दासी ॥
जीवनसी जीवात्मा ईशी ❋ परमतत्त्व परतत्त्व तमीशी ॥

दोहा—जीवन धनसी ईशसी, पीससदृश गुणदाय ।
सो अबभाष्योमहामुनि, कलिजनपापनशाय ॥
सो०—मुनिबर भाष्यो बैन, राजासुनुधरिध्यान यह ।
सबसुखको जो ऐन, पढ़तसुनतसुखनवलनित॥
यकदिन राजाधर्म, भोर उठ श्रीकृष्ण कहि ।
कीन्होंनितकृतकर्म, बन्धुनसह राजत सभा ॥

ताहिसमय कलियुग सुधि आई ❋ देह दशा धर्मज दुख पाई ॥
कह पारथ हरिपुर अब जैये ❋ उत्तर चलौ कृष्ण पहँ लैये ॥
मातुपिता के हित इत रहेऊ ❋ ते सबगाय सबिधि ते कहेऊ ॥
अब रहिबो नहिं उचित सुभाई ❋ ताते लावहु श्रीहरि जाई ॥
अर्जुन सुनत सुभग रथ साजा ❋ भीमहिं मिले सबहिं पुनि राजा ॥

दोहा—वेगवन्त अर्जुन चले, जहां बसत भगवान ।
आश्रमवासिकपर्व कहि, सबलसिंह चौहान॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृते आश्रमवासिकपर्वणिद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ मुशलपर्व ॥

दोहा–श्रीगिरिजागणपतिसुमिरि, बरणिभक्तिहनुमान ।
मूशल को भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥
जनमेजयमुनिसों जवन, भाष्योसुनिशुभगाथ ।
ताहि सुभगभाषारचत, धरिशिरनिजप्रभुपाथ ॥

बन्दौं गुरु गोबिंद के पायन ❋ जिन प्रसाद हूजै सुखदायन ॥
सुमिरौं अवधनाथ सीतापति ❋ नारद शारद सुमिरि महामति ॥
सुमिरौं आदिकाव्य घट व्यासहि ❋ जाकीसबिधिभाँतिमोहिं आशहि ॥
ईश्वररूप जानि जगती को ❋ सुमिरौं राम आदि शिव नीको ॥
सम्बत शुभ सहस्र सैंतीशा ❋ भाद्रमास सप्तमि रजनीशा ॥
औरँगशाह दिलीपति नायक ❋ सबलसिंह तब हरिगुणगायक ॥
बैशम्पायन कहत सुनाई ❋ सुनहु सार्थ कुलबर नृपराई ॥
जब धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी ❋ गे हरिपुर सह कुन्ती रानी ॥

दोहा–इत अर्जुन गे द्वारकहि, कुशल हेत सुखपाय ।
मार्गमिले नारद सुमुनि, रथमों लिये चढ़ाय ॥

बिबिध भाँति भाषत शुभगाथा ❋ जातचले अर्जुन मुनि साथा ॥
पहुँचे निकट द्वारका ग्रामा ❋ मिले अमृतही श्रीबलरामा ॥
अनिरुध साम्ब प्रद्युम्न सुआदी ❋ औरौ चले देखि मिलनादी ॥
देखि पार्थ नारद मुनि राई ❋ उतरे रथ सुमिलनहित धाई ॥
यदुबंशिन प्रणाम तब कीन्हो ❋ नारदमुनि आशिष तब दीन्हो ॥
पग बन्दे पारथ हलधर के ❋ हिये लगाय कहत हौं नीके ॥
जेते कृष्ण पुत्र अरु नाती ❋ बन्दे चरण मिले सब जाती ॥
कुशल प्रश्न इत उत सब पूछे ❋ मिले सात्यकादिक छलछूछे ॥

यहि बिधि मिलत पार्थसुनिराम ❀ राजहिं मिलि गे जहँ सुखधाम ॥
सम बन्दे तहँ मुनिबर ईछे ❀ अर्जुन कृष्ण मिले तहँ पीछे ॥
अर्धपाद मुनिबर कहँ दीन्हा ❀ बिधिवतपूजि सुआशिष लीन्हा ॥
लै अन्तःपुर गे मुनि पारथ ❀ मिले पार्थ सब त्रियन यथारथ॥
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा ❀ मन भावत आशिष शुभलीन्हा ॥
पटरानिन सेवा मन दीन्हो ❀ पार्थ कृष्ण मुनि भोजन कीन्हो॥

दोहा—भोजन करि बीरा लयो, सुभग सुगन्धितलेपि।
तब सोये बर पार्थभट, बूड़ेउ नारद सोपि॥

सोरठा—आगम कहो मुनीश, केहिकारण आवनभयो।
कहेउ नारद सुनिईश, ब्रह्मा पठयो आपुपहँ॥

मानुष उमिरि अधिक ह्वै गयऊ ❀ अजहुँ न आवन हरिकर भयऊ ॥
प्रभु डर काल डरत नहिं आवत ❀ यदुकुल कतहुँ जीव नहिं जावत॥
तब प्रसाद पितु मातु तुम्हारे ❀ उग्रसेन आदिक ज्येठारे ॥
तेऊ मरत न सुनहु कृपाला ❀ ब्रह्मा है यहि हेत बिहाला ॥
कहति सृष्टि नइ नीति चलाई ❀ केहि कारण मोहिं ईश बनाई ॥
चतुर्मुख केहि कारण भाखत ❀ देवन में सरिता करि राखत ॥
हौं पुनि उनहीं केर बनावा ❀ अन्त खोज प्रभु हमहुँ न पावा॥
तौ निजकर क्यों नाहिं बनावत ❀ हमरे ऊपर दोष धरावत ॥
ब्रज मों गाय गोप उन कीन्हो ❀ तब प्रथमै हम परचो लीन्हो ॥
ताते अब यह उचित न तुमको ❀ हँसवन उचित प्रभू है हमको ॥
ताते कृपा करहु बनवारी ❀ पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी ॥
औरौ कही बात कर जोरी ❀ कहँलौं कहौं अनुग्रह तोरी ॥
हँसि कह प्रभु भो घोर नेवारा ❀ तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा ॥
कह मुनि भार अथोर अपारा ❀ यदुकुल मरिहि न काहुहिमारा ॥
करिय नाथ अब कछुक उपाई ❀ जाते नाथ लोक निज आई ॥
कह हरि गन्धारीसुत जूझे ❀ तब अस पुनि संजयगों बूझे ॥

दोहा—श्रीहरि पक्षी पाण्ड के, जयकी आशा छूटि ।
अन्ध दीन्ह मेरे लिये, शत सूताबिधनै लूटि ॥
कहा कृष्ण सिरजै तवै, सुनु माता अस कौन ।
हारि यहाँ मेटन चहै, मनमानी किय जौन ॥
यह सुनिक्रोधालुब्ध ह्वै, शाप गँधारी दीन्ह ।
अबते छात्तिस बर्ष में, जो मोकहँ तुमकीन्ह ॥

करि असमत गन्धारी शापा ❋ निजकुलहते सुनिजकर पापा ॥
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा ❋ गुण गावत मुनि चले अकाशा ॥
ब्रह्मा पास कही जो हेरी ❋ यदुकुल नाश आइहै फेरी ॥
यहिबिधि बीतिगये कछु काला ❋ आगे सुनहु नृपति भो हाला ॥
यक दिन ब्रह्मा अतिदुख पायो ❋ अजहुँन काशी श्रीप्रभु आयो ॥
अस मन समुझि देव ले साथा ❋ गे द्वारकहि जहाँ ब्रजनाथा ॥
करि परिक्रमा नायकरि शीशा ❋ अस्तुति करत देव दिगईशा ॥
पाहि पाहि शरणागत बत्सल ❋ हे कृपालु पालन श्रीअत्सल ॥
दीनानाथ देवकी नन्दन ❋ मैं तव शरण भक्त पालनजन ॥
जय गोबिंदबासी बृन्दाबन ❋ जयति देव जय जगजनबन्दन ॥
जय जय जय माधव असुरारी ❋ तारण तरण गौतमी नारी ॥
दशरथसुत जयजय यग पालक ❋ जनकसुता बारन हरिबालक ॥
परशुराम निजरूप मानहर ❋ बनहि बास कियनाशत्रिशिरखर ॥
मग मारीच बधन सीता छल ❋ बानर संग सहित हनुमतबल ॥
सेतु बांधि रावण को मारो ❋ अवधपुरी प्रभु भक्ति उधारो ॥
कंसादिक सब दुष्ट सँहारण ❋ चलिये निजपुर श्रीजगतारण ॥
हे प्रभु भक्तबछल बनवारी ❋ हँसि तब मधुर गिरा उच्चारी ॥
चलब कछुक दिन में हे देवा ❋ यह सुनि लगे जनावन सेवा ॥

दोहा—सुनि ब्रह्मा सह पुर सकल, गे प्रसन्न तब सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा मूशल पर्व ॥

इति श्रीमहाभारतेमुशलपर्वणि सबलसिंहचौहानभाषाकृतेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

गे निजधाम देव समुदाई ❋ अब नृप कथा सुनहु जो गाई ॥
इत सुपाराड़ु सुत पारथ जागे ❋ कृष्णाचन्द्र सन बूझन लागे ॥
पठयो मोहिं युधिष्ठिर भूपा ❋ जो प्रथमहिं प्रभुमन्त्र अरूपा ॥
इतसों जाइ चलन जब चहे ❋ तब कुन्ती माता बश रहे ॥
अब पौत्रहिं दै राज्य सोहाई ❋ जान चहत उत्तर नृपराई ॥
चलन हेतु प्रभु तुमहूँ भाखा ❋ चलहु नाथ अब काहे राखा ॥
यह सुनि धर्मबन्धु की बानी ❋ सुनु नृप बोले शारँगपानी ॥

दोहा—चलब कछुक दिनमें सुनहु, रहौ इतै कछ काल ।
सुनु असकहि राखत भये, श्रीप्रभुकरिकैजाल ॥

रहे बहुत दिन आदर लहिके ❋ अतिमुद सहित बारता कहिके ॥
यकदिन हरि असकह्यो बिचारी ❋ नाशहोइ केहि विधि कुलकेरो ॥
ताहि समय नारद मुनि आये ❋ हरिगुणगावत आदर पाये ॥
तिनसों बूझेउ यदुकुल नायक ❋ नाश यत्न भाषो जेहि लायक ॥
नारद कह बिन शाप दिवाये ❋ देखि न परत कि युद्ध मचाये ॥
यह भाषत नारद सुनु राई ❋ ताहिसमय ऋषि मुनिगण आई ॥
आये व्यासशिष्य सब साथा ❋ हमहूँ हते सुनिय नरनाथा ॥
शृंगी ऋषि भङ्गी मुनि नायक ❋ देवल कपिलआदि सुखदायक ॥
सनतकुमार सप्तऋषि राजा ❋ दुर्बासाऋषि सहित समाजा ॥
विश्वामित्र वशिष्ठादिक मुनि ❋ अरुकौशिडल्यसुनो भारतगुनि ॥

दोहा—अरु भृगुनायक अङ्गिरा, पाराशरऋषिराय ।
देखि कृष्ण आदिक सकल, परे पार्थ सह पाय ॥

सो०—उग्रसेन सह कृष्न, पायँ धोय भोजन दयो ।
हलधर कीन्ह्यो प्रश्न, केहिकारण आगमसबन ॥

बोले मुनिबर ब्यास सुहावन ❀ अशनदेहु इत कछुदिन पावन ॥
चतुर्मास बरषाऋतु पावन ❀ देहु अशन यहिहित सबआवन ॥
रहब इतै सबमुनि सुखदायक ❀ करब सुतप जो आज्ञा पायक ॥
कह हलधर मम भाग्य अपारा ❀ महा महामुनि जो पगुधारा ॥
रहो देव हम अशन सोहावन ❀ टिकयोमुनिन्ह अपावन पावन ॥
नित प्रति भोजन सुभग बनाई ❀ बिलग मुनिन्हप्रति देत पठाई ॥
यहिबिधिकछुक दिवस नृप बीते ❀ यक दिन सबशिकार हितरीते ॥
प्रद्युम्नादि साम्ब सुत नातो ❀ लै आज्ञा ह्वै चढ़ि सबभाँती ॥
खेलि शिकार मारि मृग रूरे ❀ पुरहि पठाय चले मुदपूरे ॥
आये मुनिबर जेहि बनबासा ❀ बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्बासा ॥
कोउ कह मुनि भोजनहित आये ❀ माँगत भीख कतहुँ नहिं पाये ॥
मिलो पेटभरि इतै अहारा ❀ परे ताहिते ये शठ द्वारा ॥
कछु नहिं जानत हैं मुनि कोई ❀ जो बिधि लिखा होत है सोई ॥

दोहा—कोउ कहहैंसर्वज्ञनिधि, कृपायतन मुनिराज ।
नृपन चाहियो दानशुभ, मुनिबरभोजनकाज॥
सोरठा—निन्दोमतिसबकोय,इनकोमानतकृष्णबलि ।
जो बिश्वास न होय, कतन परीक्षा लेहु तुम ॥

तुरत ग्राम को दूत पठायो ❀ मूशल काढ़ि एक लै आयो ॥
पियो सुरा सब यादव बालक ❀ भयो मस्त हरिइच्छा सालक ॥
बांधि साम्ब हियकाढ़ि सुहावन ❀ मूशल राखि मध्य हियरावन ॥
सुभग नारि गर्भिणी बनाई ❀ केश मूल गहना पहिराई ॥
गेंदन के तहँवाँ कुच कीन्हे ❀ सेंदुर दै शिर बेंदी दीन्हे ॥
बिछुवा आदि अभूषण जेते ❀ कहँ लौं कहौं किये सब तेते ॥
जाय बन्दि मुनिबर दुर्बासा ❀ बैठि बचन असकीन्ह प्रकासा ॥
हे मुनिबर सर्वज्ञ निधाना ❀ पुत्री पुत्र जात नहिं जाना ॥
जो कृपालु ह्वै तुरत बतावो ❀ अतिशुभसुयशजगत महँ पावो ॥

ध्यान धरी मुनिबर तहँ देखे ❀ छलसमुझे कछु और न देखे ॥
क्रोधित मुनिवर बोले बैना ❀ सुत सुख देख्यो यह कुल नैना ॥

दोहा—बोले मुनिबर क्रोधकरि, होय सत्य यह बैन ।
याही सुत के होत ही, मरै कृष्ण सह सैन ॥

सोरठा—सकलसंहारिहैंसर्व, जिनटिकायअपमानकिय ।
असमुनियेनृपपर्व, मरै रुक्मिणी जवनसिय ॥

यह सुनि सकल भभरि तब भागे ❀ मनहुँ सिंह कोउ सोवत जागे ॥
मुनिहि सकोप बकत बहु बैना ❀ इत आये सब निज निज ऐना ॥
सकल बात सब काहुन पावा ❀ जुरि समाज सब नृपपहँ आवा ॥
सुनत कृष्ण अतिभये प्रसन्य ❀ उग्रसेन सह शोचत अन्य ॥
शोचत बसुदेव अरु बलरामा ❀ बारबार कहि शिवहरि नामा ॥
तब नृप मन्त्री ज्ञात बोलाये ❀ उद्धव सात्यकादि सब आये ॥
शोच सुमत करि यह ठहराये ❀ बोलि लोहार सहस्रन आये ॥
मूशल काढ़ि छोरि तब लयऊ ❀ चूरन करि समुद्र महँ बहेऊ ॥
ताते भयो सुखर उत्पन्य ❀ औरो सुनौ कछुक नृप अन्य ॥
एक चूर जो लोह बहायो ❀ शापसत्य हित मीन सो खायो ॥
मीनहिं ताहि पकरिकै लावा ❀ बालि नाम धीमर जो आवा ॥
चीरेउ हृदय निकारेउ लोहा ❀ तीक्षण धार थोथ महँ सोहा ॥

दोहा—सुनु नृप भावी मिटैकस, अरुश्रीकृष्णप्रताप ।
जो न चहत श्रीकृष्णप्रभु, करतकोटिकहशाप ॥

कछु दिन बीतिगये यहि भाँती ❀ आनन्द जात दिवस अरु राती ॥
श्रीप्रभुकृष्ण वृत्य अस जागी ❀ द्वारावती शाप नहिं लागी ॥
असमन समुझि कृत्तिभगवाना ❀ चहहुँ प्रभासकरिय असनाना ॥
यहसुनि सकल बुलाय सुबासी ❀ भोर चलनकह आनँदरासी ॥
यह सुनि उद्धव हरिपहँ आये ❀ नमस्कारकरि अस्तुति गाये ॥

पुनि रोवन लागे हाहा कहि ❋ कबमैं रहौं नाथ दुख यह सहि ॥
तब मन मेंहौ निजपुर जैहौ ❋ नाथ लौटि नहिं द्वारहि ऐहौ ॥
ताते रहौ जहां हम पैये ❋ जो मन चहौ नाथ सो ह्वैये ॥

दोहा—कहौ नाथ का करिय हम, जाते होहुँ सनाथ ।
असकहि लागे रुदन तब, धरेउ चरणपरमाथ ॥

सोरठा—भाष्यो श्रीप्रभुबैन, करत शोच तुमहौ कहा ।
धरिपद निजहिय ऐन, करौ जाय तप बद्रिका ॥

यह देखत हो जौन सकल जग ❋ सो जानहु सबजाहि एकमग ॥
हय गय द्रब्य पुत्र अरु दारा ❋ सो सबजानु झूठ ब्यवहारा ॥
मरण काल कोउ काम न आवत ❋ कबि कोविद मै सज्जन गावत ॥
मम नाभीते कमल भयो जब ❋ ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तब ॥
ताते भई सृष्टि बिस्तारा ❋ मैंहूँ धरेउँ बहुत अवतारा ॥
चारि वेद श्वासन ते गाये ❋ मुखते द्विज भुज क्षत्रिय गाये ॥
बैश्य जानु पद शूद्र बनावा ❋ याही [illegible] जग बलभावा ॥
तब श्रीकृष्ण कृपा अति कीन्हे ❋ [illegible] दुख हरिलीन्हे ॥
औ यह कह्यो सुनो उद्धव तुम ❋ अब तु जाउ बद्रिकाश्रम ॥
नाश होन चाहत अब द्वारा ❋ किहउ द्विजन मिलि भजन हमारा ॥
बृक्ष योनि ते मनुज होत जब ❋ सुमिरण भये अचित सुनहु तब ॥
सुनि उद्धव तब शीश नवायो ❋ परिक्रमा करि तुरत सिधायो ॥
इत यदुबंशी भोर भये जब ❋ चले प्रभास काल प्रेरित तब ॥
सजि सजि साज चले सब कोई ❋ पुरजन [illegible] सहित बलि जोई ॥

दोहा—कहँलगि कहिये सुनहुनृप, चले सहित यदुनाथ ।
सात्यकि कृतबर्मा सहित, यदुजन पुरजन साथ ॥
उग्रसेन बसुदेव बिन, रह्यो न कोइ पुरमाहिं ।
अर्जुन राख्यो कृष्ण प्रभु, सुखद सुगाहिकैबाहिं ॥

सोरठा—उद्धव ज्ञान बुझाय, बद्रीदिशि भेजेउतिन्हैं ।
उद्धव दुःख नशाय, ब्रह्म मिले करि नेहबर ॥
पारथ राखि नगर रखवारी ❋ आपु चलनहित कीन्ह तयारी ॥
दारुक अरु पारथसो कहेऊ ❋ आयो कालिह नारसिह रहेऊ ॥
गे सब प्रभाक्षेत्र सुख पाई ❋ तहँ नारद मुनि बीण बजाई ॥
नारद आयसु दीन कृपाला ❋ जाहु नगर द्वारकहि विशाला ॥
सिखवो तात मातु नृप जाई ❋ मोह मूल को शूल नशाई ॥
तहँ नारद असज्ञान सिखावत ❋ भूमि अकाशहि निज दरशावत ॥
दोहा—वृक्षयोनिते मनुज तनु, पायो पुनि हरिपूत ।
ताते अजहुँ न सुमिरियो, होन चहत हौ भूत ॥
पारब्रह्म हरिसुत लयो, पूर्व भाग्य मुनिराज ।
भक्ति मुक्ति माँगी नहीं, अब आवतिहै लाज ॥
सोरठा—मुनि बोले इमिबैन, तुवाहित हेताहि कहतहम ।
यकइतिहास गुनैन, नौयोगीश्वर जनकको ॥
नो योगीश ऋषभ सुत आये ❋ जनक देखिकै शीश नवाये ॥
आश्वासन कीन्हेउ बहुभांती ❋ सिंहासन दीन्हो मन माती ॥
कृपा कीन्ह मम भाग्य अपारा ❋ ऋषभदेव सुत जो पगुधारा ॥
जैसे कियो पवित्र मोहिं चरणन ❋ तैसे पूछत करिये बरणन ॥
तब बोले योगी बर बैना ❋ निज इच्छित तुम पूछत हैना ॥
कहा जनक कर सम्पुट करिकै ❋ कौन वस्तु अस्थिर बिनभरिकै ॥
जो कह धन स्त्री अरु बालक ❋ आज्ञा करिकै अरु कुलपालक ॥
ताते मुनि कछु अस्थिर नाहीं ❋ धनद कुशासन सब मरिजाहीं ॥
ताते शोक होत है भारी ❋ है अस्थिर को कहौ बिचारी ॥
जामें घट न बढ़ै कछु ऐसी ❋ अस्थिर नाश न कहिये तैसी ॥
बोले कश्यप नामक योगी ❋ प्रथम भगो हरिहर यश भोगी ॥

बहु सुख प्राप्त उन्हें मिथिलेशा ❋ जे हरि भक्ति ते त्यागि अँदेशा ॥
पुत्र दार धन सब परिवारा ❋ भाग्यमान जिमि अलब करारा ॥
जे लपटे पुत्रादिक नेहा ❋ ते जब मरे बिकल संदेहा ॥
ताते नाश बस्तु है जोई ❋ अलग रहै सुख पैहै सोई ॥
हरि अवतार यहि हेतु धरत हैं ❋ गाय जाहि नरनारि तरतहैं ॥
जो मन लाग एकधा नाहीं ❋ थोरा थोरा कीजिय ताहीं ॥
जिमि भूखा अन ज्यो ज्यो खैहै ❋ त्यों त्यों बूत तासु के ऐहै ॥
जोकोउमगनित प्रति चलिहैं नर ❋ एक दिवस वै जाहिं पहुँचिबर ॥
जो न चली वह पहुँची कैसे ❋ हे मिथिलेश भक्ति है तैसे ॥
माया थोरी थोरी छूटै ❋ भक्ति थोरही थोरी जूटै ॥

दोहा—पारब्रह्म जो एक है, आद्यो ब्रह्म स्वरूप ।
सोइ तो थिरता सुनौ, और झूठ है भूप ॥

सो०—योगीकहि भ मौन, करजोरे कह जनक तब ।
कहिये तपमितभौन, भक्तिरूप किमि होतहै ॥

तब हरिनाम दूसरो भाई ❋ सुनु नृप कहत सुलक्षणगाई ॥
कबहुँ हँसत जब होइँ प्रसन्नित ❋ कबहुँ रोष लक्षण उनके इत ॥
हँसन हेतु यह सुनहु बिदेहा ❋ करत भक्ति पर तुम हरिनेहा ॥
धरते सगुण गाय जाते जन ❋ भवसागरतरि जाहिं जोंनबन ॥
गाय ध्यानधरि तरियतु जाते ❋ ये लक्षण हंसन मन माते ॥
रोषन कर लक्षण यहि काजन ❋ सो अब सुनहु कहत मैं राजन ॥
आयु हमारी बीती भारी ❋ फँसो रहो ममता अवतारी ॥
बिनु हरि भक्ति बीतिगे सोई ❋ हे जनकेश देत बय राई ॥
भक्ति और सुनु तीन प्रकारा ❋ उत्तम मध्यम और नकारा ॥
सकल चराचर देखिय जौन ❋ चौरासी लक्षित नृप तौन ॥
यक सों लखत ब्रह्म सबमाहीं ❋ हैं लक्षण ये उत्तम आहीं ॥
साधू संगति सत पथ चलिये ❋ हैं ये लक्षण मध्यम पलिये ॥

पुनि ये तेज बराबरि सबमाहीं ❋ नहिं समुझत बिदेह वे जगमें ॥
अब निकृष्ट लक्षण ये सुनिये ❋ माया मोह फँसे हैं दुनिये ॥
काहू पहर असमरण पूजा ❋ ते करिलेहिं निकृष्टित मूजा ॥

दोहा—जबलगितृष्णानहिंछुटत, तौलगिनहिंबिरक्त।
दूसर योगीश्वर कहैं, तबलगिबिषयासक्त ॥
तीनिप्रकारित भक्तिके, सुनुलक्षणमिथिलेश।
हाथ जोरि पूछन लगे, मेटहु नाथ कलेश ॥

सो०—माया जाको नाम, नारायण में लीन है ।
की हैंबिलगअकाम, तौंननाम नाथ बर्णनकरौं॥

अन्तरिक्ष जो तीसर योगी ❋ सुनिये नृपति रामयशभोगी ॥
माया हरि की ईहा जानो ❋ ताको त्रिगुणरूप है मानो ॥
सात्विक राजस तामस जोई ❋ मारण उत्पति पालन सोई ॥
बिनु हरि मायाकर भ्रमजाला ❋ काम क्रोध मद लोभ कराला ॥
नाहिंन छूटि सकत कोउ राजा ❋ चहिये करिबो उत्तम काजा ॥
महाप्रलय ऊपर हरि रचना ❋ चाहत जबहिं सुनहु नृप वचना ॥
तब माया की ओरहि देखत ❋ माया महातत्व को पेखत ॥
महातत्व सब उत्पति करिकै ❋ सब जगदेत बराबरि भरिकै ॥

दोहा—नाशकरन चाहत जबहिं, मूशल धारा बर्षि ।
सुनो करत मायासहित, पारब्रह्म तहँ हर्षि ॥
तेहिते हरि ईहा सुनो, मायाकर ब्यवहार ।
समुझबहरिकोउचित है, सुनुजनकेशउदार ॥

जो माया हरि ईहा कहिये ❋ संसारी किमि उतरन चहिये ॥
माया ते छूटै किमि योगिनि ❋ तुमहो बैद्य बताइ अरोगिनि ॥
पर बुधि नाम चौथ है जौन ❋ जब जान्यो हरि ईहा तौन ॥

माया इरिच्छा जब जानो ❋ तब हरि ईहा एकै मानी ॥
हरि परिक्रमा करैं नर जोई ❋ पावैं सफल अफल नहिं होई ॥

दोहा–ब्राह्मण लक्षण सहित हैं, ब्राह्मणकी मत्तिधीर ।
नहिं सो ब्राह्मणशुद्रसम, ताहिकहत मतिधीर ॥
ऐसो जानौ जनक नृप, चारि वर्णकी चाल ।
पारब्रह्म को जानिबो, नातरु सोई काल ॥
पारब्रह्म जानो जिन्हैं, सो पायों मों लीन्ह ।
नातरुहै सब अन्यथा, जन्म विधाता कीन्ह ॥

बोले जनक राय कर जोरी ❋ को अस बिना हृदय जो होरी ॥
कौन जीव सोवत हैं नाहीं ❋ जल थलनभ अकाश के माहीं ॥
बोले पञ्चम योगी बैना ❋ हृदय तात पत्थरके हैंना ॥
सोवत मीन सुनो नृप नाहीं ❋ और सकल श्रमवश ह्वै जाहीं ॥

दोहा–जगमें गरुआकौन अति, अतिऊंचो है कौन ।
बोले षष्ठम योगिवर, अतिबर बुधिकोभौन ॥
मेरोगिरि ते गरू है, मात सुनो नृप बात ।
आसमानते ऊँच अति, जानो है निजतात ॥

सोरठा–कैसे मन नाहिं लाग, विषयोंमेंमनसबनकर ।
बोलेउ मुनि अनुराग, सप्तनसुखदसोहावनो ॥

ऐसे कृपा कृष्ण की होई ❋ मन लागै हरि यह सुनु सोई ॥
जेते रोवां जानो तनुमें ❋ तेते रोकन हारे जनमें ॥
पाप पुण्य कछु जगमें नाहीं ❋ कर्म भोगवत है सब याहीं ॥
बोले तब जनकेश उदारा ❋ काके बीज जगत बिस्तारा ॥
कह मुनि पारब्रह्म को जानो ❋ बीज ज्ञान काको को मानो ॥
परदादा के दादा जाये ❋ दादाके पितु निज तब भाये ॥

ताके सुत यह देह भई सुनु ❀ को ताको अस सकै भूप गुनु ॥

सोरठा—कहेउ जनक यह बात, कहौ कर्मब्यवहार अब।
कह मुनिसुनुनृपतात, कर्म आदिब्यवहारसब॥

दोहा—कही पुर्ब निष्ठाद्विधा, ज्ञानयोग संचार।
सांखिनकहयोगीनकह, कर्मयोग ब्यवहार॥
अनारम्भ के कर्म ते, होत न नर निष्कर्म।
सर्वत्याग संकल्पते, मिलत न सिद्ध सुधर्म॥
मनसा इन्द्रिन रोकिजे, करत न तत्व बिचार।
रहत लगाये विषय में, मनसों मिथ्याचार॥
अस कहिकैयोगीसकल, गये ब्रह्मपुर ओर।
असकहिनारदमुनिगये, सकलमुनिनशिरमौर॥

अब नृप सुनहु कथा मनलाई ❀ वहां टिके यदु यदुकुलराई ॥
गड़े बितान अमोलिक लाखन ❀ राखनलगे सूरप्रभु माखन ॥
बस्तु अमोलिक भाँतिन केरी ❀ बाजहिं ठौर ठौर प्रतिभेरी ॥
सेना देखि लगत भय हियमें ❀ तबहिं बिचारे श्रीप्रभु जिय में ॥
सबते कहेउ चलिय अस्नाना ❀ करि अस्नान कीन्ह सबदाना ॥

दोहा—प्रभाक्षेत्रअस्नानकरि, निशिहिटिकैउयदुवंश।
उतरु देवामिलिसुनुनृपति, खैंच्योनिजनिजअंश।

हलधर सह पुनि होत बिहाना ❀ सुरापान करि गे अस्नाना ॥
भे मदमत्त उछाड़ै कूदैं ❀ और हनैं पुनि आंखी मूंदैं ॥
देहिं परस्पर गारि प्रचारी ❀ नाहीं हँसहिं देहिं करतारी ॥
पितु सुत नहिं घरनी हो वारा ❀ लाजहीन लपटहिं जनु दारा ॥
लटपटाहिं धरणी द्वो गिरहीं ❀ भाजत लड़हिं दौरितेहि धरहीं ॥

करहिं जलहिं अस्नान सोहावन ❀ आपु बीरदल लागो आवन ॥
पुनि पुनि जलउछाल सब करहीं ❀ डराडठों कि पितुसुत सो भिरहीं ॥
एक पकरि बोरहिं जल माहीं ❀ बूड़हि रोवहि छांड़हिं नाहीं ॥
एकहि डारि सुजल के माहीं ❀ चढ़िहि सहस्र सहस्रन ताहीं ॥
उत सात्यकि कृतबर्मा जूटे ❀ भिरहिं प्रचारि केश शिर छूटे ॥

दोहा—लरहिं भिरहिं याहीविधि सुनहु, रहो न काहू ध्यान ।
शापबश्य राजा सुनो, को सुत को पितु आन ॥

सोरठा—जलउछाल करि बोर, आये निज निज पक्ष लखि ।
जहँ सात्यकि कृतबीर, है समाज उमहत दोऊ ॥

तब सात्यकि कृतबर्म बखाना ❀ भागेसि शठ नत काल नेराना ॥
मम सहाय पाराडव रण जीते ❀ मारे दुर्योधन भट रीते ॥
सो मैं शत्रु आउँ कृत तेरे ❀ भागि बचो नहिं हनत सबेरे ॥
ताते अजहुं मानु शठ बानी ❀ नत अब होन चहत कुलहानी ॥
कह कृत होत अधम केहि धोखे ❀ निजकर बधब हनब शरचोखे ॥
मानि कृष्ण प्रभुकेरि रजाई ❀ नत मारत बहु पाराडवराई ॥
अजहूं सात्यकि जीह संभारो ❀ नत अब शरन देत शिरभारो ॥
सुनि सात्यकि कोपित ह्वै मनमों ❀ मानहुं जीतिचले रण घरमों ॥

दोहा—अरे अधम सात्यकि कहेउ, सोवत ते बहु मारि ।
सत्राजित पाण्डवसुवन, अजहुँ बकत बश हारि ॥

सोरठा—तब सात्यकि भट युद्ध, पारथ गुरु को ध्यान धरि ।
लै हथ्यार हित युद्ध, तदपि मध्य आवत भयो ॥

तब कृत कह अति कोपित बैना ❀ शठ धर्मातम देख्यो नैना ॥
भूरिश्रवा हनि डारन चहेऊ ❀ ताहि समय बर पारथ रहेऊ ॥
भुजाकाटि तब हत तुम कीन्हा ❀ यह धर्मातम तव हम चीन्हा ॥
असकहि सहपत्ती बर बीरा ❀ लै हथ्यार आयो तेहि तीरा ॥

सात्यकि पत्त सहित लै हाथा ❋ बज्रनाभि भजिगो तजिसाथा ॥
जाय बचो अनिरुध सुत भागी ❋ शापबश्य लागी तब आगी ॥
तब सात्यकि प्रचारि निजपत्ती ❋ कृतलैकरि सेनानिज अच्छी ॥
बाक्य बादि करि करि उतकर्षा ❋ लागे करन मूल शर बर्षा ॥
चहुँदिशि बाणगदा असिधारा ❋ भिरे बीर करि क्रोध अपारा ॥
तदपि न जूझो कोउ बर बीरा ❋ टूटि गिरे हथियार व तीरा ॥
तब सब समुद्रफेन खर लीन्हा ❋ ताते मारु भयानक कीन्हा ॥
सुगमस्तभट जूझैं गिरिगिरि ❋ उलटिपलटिलपटैं पुनि भिरिभिरि॥
भाजत लखहिं प्रचारहिं फेरी ❋ मारहिं सुभट फेनु तेहि घेरी ॥

दोहा—शाप कृष्णमंशा प्रबल, अबला मनुष्य उपाउ।
जे गदादि जूझे नहीं, ते जूझे खर घाउ ॥

सोरठा—जूझि गिरे बहुबीर, जे रहिगे प्रभुपहँ चले।
योगाभ्यास गंभीर, तनु त्याग्यो जे सहसबर ॥

कृष्णचन्द्र तब भागि पर्वांरे ❋ रहे जवनते युद्ध विचारे ॥
मरे जूझि एको नहिं बाचे ❋ मन क्रम रह शूर सब साँचे ॥
इत तहँ श्रीप्रभु कृपा निधाना ❋ बैठे पीपल वृक्ष सुजाना ॥
तातरु बैठि कीन्ह शुभ आसन ❋ लीलाकीन्हसुभग हितदासन ॥
धरे जानुपर चरण कृपाला ❋ ताहि समय आया बहुकाला ॥
जान्यो नयन मृगाकर सोहत ❋ लैके धनुष बाण मन मोहत ॥
बालिनाम बानर त्रेता कर ❋ धीमररूप छाँड़ि दीन्होशर ॥
चरणमध्य चमकत तहँ जानी ❋ आया लेन शिकार गिल्यानी ॥
देखि कृपालु कृष्ण भगवाना ❋ बन्दि चरण तब ऐच्यों बाना ॥
कह कृपालु बदला तुम लीन्हो ❋ रथहि चढ़ाय परमपद दीन्हो ॥
उत अर्जुन सब रथहि चढ़ाई ❋ रानिन सबहिन लीन्ह चढ़ाई ॥
दारुक पास कही अस बाता ❋ लै रथ जाहु अग्र तुम ताता ॥
पाछे हम आवत सह नारिन ❋ जाने होइ न श्रम कंसारिन ॥

दारुक हांकि सुभग रथ गयऊ ❀ उतरिरथहि हरि चरणन नयऊ ॥
उतरत दारुक के नर पाला ❀ हय समेत रथउड़िगा हाला ॥
यह लखि दारुक बिस्मय पावा ❀ सब चरित्र तब कृष्ण बतावा ॥
यह सुनि सूत परेउ गिर धरणी ❀ तब हरिकही दुःखकी हरणी ॥
तुम धरि ध्यान त्यागु तनुजाई ❀ अर्जुन पास कहेउ अस जाई ॥
कछुक दिवस में बुड़िहै ग्रामा ❀ कहेउ जाइँले निजनिज सामा ॥

दोहा—गीता ज्ञानहिं राखिहिय, जाय बद्रिका धाम ।
अबआयोकलियुगप्रबल, इतै न रहिबो काम ॥
ऐसे कहते कहत हरि, गह गह हनें निशान ।
चले ब्रह्मपुर आपुप्रभु, किङ्किणिनादबिमान ॥

सोरठा—यहिविधिकृष्णकृपाल, गयेधामनिजनिजलहुँ ।
दारुकगयो उताल, अर्जुनसों सब यो कहेउ ॥

सुनि अर्जुन सह यदुकुल नारी ❀ रोवहिं गिरहिं मुर्च्छितसुकुमारी ॥
दारुक जायकतहुँ तनुत्यागा ❀ तब सबहिनकर मुर्च्छा जाग ॥
सह नारिन गे जहँ रणपावन ❀ देखि भूलिगो को कत आवन ॥
पटरानी अरु यदुकुल नारी ❀ अति दुख बूडिमरीं कछुवारी ॥
कछुक चितारचि धरि सुत नाती ❀ पतिसहजरत भई सब जाती ॥
गईं सकलमिलि निज निज अंशन ❀ अनिरुद्धसुत बिन रहेउनबंशन ॥
इत अर्जुन पुनि धीरज धारा ❀ बज्रनाभ सह गे नृप द्वारा ॥
पढ़ै सुनै जो कथा सुहावन ❀ बंशबृद्धि होवै अति पावन ॥

दोहा—पाप नशै कीरति बढ़ै, ब्यास गिरा परमान ।
भणितपर्व मूशल कथा, सबलसिंह चौहान ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंहचौहानभाषाकृते मुशलपर्वणिनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

महाभारत ।

स्वर्गारोहणपर्व

सबलसिंह चौहान-विरचित

जो

अत्युत्तम श्रीगोस्वामि तुलसीदास-कृत रामायणकी रीतिपर दोहा-चौपाई में सरलतापूर्वक वर्णित है ।

जिसमें

महाभारत करके द्रौपदी सहित पांडवों का गोत्राघात का पश्चात्ताप होकर व्यासोपदेश से श्रीकृष्णचन्द्र के दर्शन कर उत्तराखण्ड हिमालय में गलना और युधिष्ठिर का सदेह हरि विमान में बैठ स्वर्गलोक जाना आदि कथाएँ वर्णित हैं ।

काशी ।

बाबू काशी प्रसाद भार्गव द्वारा—

भार्गव भूषण प्रेस काशी में मुद्रित ।

* श्रीगणेशाय नमः *

अथ महाभारत भाषा
स्वर्गारोहणपर्व ॥

दोहा—प्रथमहिंगुरुकेचरणशुभ, सुमिरौं शीश नवाइ।
जाकी कृपा कटाक्षते, सकलविघ्नामिटिजाइ ॥
महादेव पदकञ्ज पुनि, सुमिरौं दोउ करजोरि।
जो अभिलाषा मनबढ़ी, सो पुरवौ प्रभु मोरि ॥

श्रीशक्ति मैं बिनवौं तोहीं ❋ माता पार लगायो मोहीं॥
हरिलीला बरणौं मन लाई ❋ सो तुम अक्षर देहु मिलाई ॥
महाबीर सुमिरौं सबलायक ❋ भयभञ्जन मनबाञ्छितदायक ॥
अगणित बिघनहरण हनुमाना ❋ सो भरोस मैं मन अनुमाना ॥
दिहिनि मोहिं मन प्रभु उपदेशू ❋ सो कहिहौं हिय सुमिरि गणेशू॥
कहौं हृदय गुरु को धरिध्याना ❋ त्यहिते पावौं निर्मल ज्ञाना ॥
अगहन मास पुनीत सुहावा ❋ बुधबासर हरि तिथिशुभपावा ॥
सम्बत सत्रहसै इक्यासी ❋ ताहि समय हरिकथाप्रकासी ॥
हरिको रूप सकल जग जाना ❋ करिसबहिनकहँ दण्डप्रणामा ॥
ईश्वर को द्रुम रूप बखानी ❋ तीनि लोक सो शाखा जानी ॥
चारिहु युग सो पत्र समाना ❋ शुभ अरु अशुभयुगलफलजाना ॥

दोहा—सबलसिंह करजोरियुग, सबसन्तन शिरनाइ।
अस्तुतिकरत गणेशको, अक्षर देहु मिलाइ ॥

सोम बंश हस्तिनपुर राजा ❋ नृपति युधिष्ठिर तहाँ बिराजा ॥
कीन्हेउ महाभारत अतिभारी ❋ गुरु औ बन्धु सखा सब मारी ॥

दुर्योधन को जीति भुआरा ❀ पाछे कीन्हेउ यज्ञ पसारा ॥
श्रीकृष्णकी आज्ञा पाई ❀ कीन्हेउ यज्ञ कछु वरणि न जाई ॥
राज कीन्ह बहु काल सोहाई ❀ पाछे नृप के मन अस आई ॥
गोत्रघात कीन्हें बहुतेरा ❀ कस होई भवसिन्धु निबेरा ॥
ब्यासदेव सों द्वौ कर जोरी ❀ सुनो नाथ अब बिनती मोरी ॥
जहि प्रकार हरिलोकहि जाई ❀ सो प्रसंग प्रभु कहो बुझाई ॥

दोहा—तब ऋषिब्यास बिचारकरि, बोले बचनबिनीत।
जाय हवार गरौ तुम, तबतनहोय पुनीत ।

जो हेवार तन त्यागै कोई ❀ मन वाञ्छित फल पावै सोई ॥
कोटि जन्म के पाप कमाये ❀ गलत हेवार पार तिन पाये ॥
ब्यास कहा नृप सुनु इतिहासा ❀ जो सुनि होय सकल भ्रमनासा ॥
एक ग्राम यक पण्डित रहई ❀ नित उठि एक नृपति के जाई ॥
श्रीभागवत सो जाय सुनावे ❀ दच्छिणा लै अपने घर आवे ॥
एक दिवस तेहि मारग माहीं ❀ मिला नाग तेहि पण्डितकाहीं ॥
नर बानी बोल्यो शिरनाई ❀ पण्डित दीनदयाल गोसाईं ॥
हमहि भागवत आजु सुनावो ❀ हरिलीला अमृत रस गावो ॥

दोहा—नागवचन सुनि पण्डित, मनमहँकीन्हबिचार।
हरिलीला पर प्रीतिलखि, तब कीन्हो उच्चार ॥

अध्याय एक तब पण्डित बांचा ❀ मनक्रम वचन ताहि लखि सांचा ॥
कथा सुनाय बिदा जब भयऊ ❀ यक मोहर त्यहि दच्छिणा दयऊ ॥
बिप्रहि बहुरि कहेउ शिरनाई ❀ नितमोहिं यक अध्याय सुनाई ॥
गयो बिप्र तब अपने ग्रामा ❀ रहेत नाग सो अपने धामा ॥
नित उठि बिप्र भूपघर जाई ❀ श्रीमत कहे नृपहिं समुझाई ॥
फिरती बार नाग गृह आवै ❀ यक अध्याय नित ताहि सुनावै ॥
एक अशरफी सो नित देई ❀ पण्डित महा मगन ह्वै लेई ॥
कछुक दिवस यहिबिधिगे बीती ❀ पण्डित नाग केरि शुभरीती ॥

सुनत कथा भा ज्ञान अपारा ❀ लाग सुमिरि मिथ्या संसारा ॥

दोहा—पण्डित सों सिरनायके, नाग कहेउ मृदु बयन।
बचन एक मैं मांगहुँ, मोहिं देहु गुणअयन ॥

एवमस्तु तब पण्डित कहेऊ ❀ जो तुम कहो तोन मैं दयऊ ॥
नाग कहेउ बिप्रहि समुझाई ❀ बद्रिका आश्रम चलो गोसांई ॥
बिपुल अशरफी मोरे धामा ❀ सो लैजाहु नाथ निज ग्रामा ॥
सकल अशरफी तब द्विज लीन्हा ❀ लैके नाग गमन तब कीन्हा ॥
कछुक दिवस महँ तहँ चलिआये ❀ बद्रीपति जहँ धाम सुहाये ॥
जाय शम्भु के दरशन कीन्हा ❀ तब सो नाग उतर फिरि दीन्हा ॥
निकट हेवारे कहँ अब चलहू ❀ जो मैं कहौं तोन तुम करहू ॥
बिप्र निकट तब गयो तुरन्ता ❀ नाग सुमिरि तब लक्ष्मी कन्ता ॥
कह्यो बिप्रसन सुनहु गोसांई ❀ मोहिं शीत महँ देहु चलाई ॥

दोहा—बिप्र चलायो नाग कहँ, गिरो हेवारे जाइ।
बिप्र चल्यो घर आपन, हँस्यो नाग ठट्ठाइ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहान भाषाकृते स्वर्गारोहणपर्वणि नाग बद्रिकाश्रम गमनंनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

तब फिरि बिप्र उतर असदीन्हा ❀ जो तुम हँस्यो चहहुँ सो चीन्हा ॥
तेइ तब कह्यो सुनहु द्विजराई ❀ हँसेक भेद मिलै यक ठांई ॥
काशी पुरी शम्भु अस्थाना ❀ तहां के राजा परम सुजाना ॥
त्यहिते जाइ पूछि तुम लेहू ❀ अनते जाइ कह्यो जनि केहू ॥
तबहिं तुरत द्विज गमनत भयऊ ❀ कछुक दिवसमहँ काशिहिगयऊ ॥
पुरी मनोहर देख्यो जाई ❀ दरशन करत सकल अघ दहई ॥
तुरतहि चल्यो शम्भु दरबारा ❀ प्रदक्षिणा दै बिप्र उदारा ॥
उठि तब चल्यो भूप दरबारा ❀ करि प्रणाम राजा बैठारा ॥
प्रथम कथा द्विज कह्यो बुझाई ❀ सुनो नृपति यहचरित सुहाई ॥
नाग हेवारे ज्यहि बिधि गयऊ ❀ हँसेक भेद जौन कछु रह्यऊ ॥

दोहा—सो वहु भेद बतावहु, सुनौ भूप रणधीर ।
तब मैं निजगृह जाइहौं, मिटै हृदयकी पीर ॥

तब नृप कह्यो सुनहु द्विजराई ❀ बैष्णव तीन रहैं यक ठांई ॥
महि प्रदक्षिणा करत सोहाये ❀ फिरत फिरत आश्रम यक आये ॥
करत प्रसाद रहैं यक तीरा ❀ तीनिउ जाने ज्ञान मतिधीरा ॥
तहँवां एक श्वान चलि आवा ❀ त्यहिका दै तिन भोजन पावा ॥
भोजन करि वे चलिभे आछे ❀ श्वान चला तब तिनके पाछे ॥
तब तिन कह्यो ताहि समुझाई ❀ हम नितवाह सुनोरे भाई ॥
जन्म भूमि यह होय तुम्हारी ❀ रहो श्वान अस हृदय बिचारी ॥
तब वह कहै लाग अस बूझी ❀ मोकहँ परत यहै अब सूझी ॥
जहाँ मिलै मम उदर अहारा ❀ सोई है निज धाम हमारा ॥
यह कहि चलयउ तासु संग सोई ❀ नित तिनके सङ्ग भोजन होई ॥
यहि विधि महि प्रदक्षिणा दयऊ ❀ तीनिउ जने अमरपद गयऊ ॥
पाछे श्वान लाखि तहँ गयऊ ❀ तीनिइ जने अमरपद लयऊ ॥

दोहा—कुत्ताके श्रवणन महँ, रहैं किलना दुइ लाग ।
कुत्ता गलेउहे वारमहँ, तिनहु कीन्ह तनत्याग ॥

सुनहु हेवारे के प्रभुताई ❀ किलना दोउ भूप भे आई ॥
जगन्नाथ पुर एक बिराजा ❀ यक मकसूदाबाद के राजा ॥
महीं होउँ वह श्वान सुहावा ❀ काशीपुरी रुचिर मैं पावा ॥
सो वहु नाग हँसा अस जानी ❀ ब्राह्मण रहे बड़े बिज्ञानी ॥
दैकै द्रव्य आइ तन त्यागी ❀ लौट्यो बिप्र कौनसुख लागी ॥
सो वह हँसा सुनहु द्विजराई ❀ मैं अपनी निज करणी गाई ॥
यह इतिहास व्यास असकह्यऊ ❀ सबलसिंह संक्षेपहि लह्यऊ ॥
सुनो युधिष्ठिर अस मन जानी ❀ गलो हेवारे मन क्रम बानी ॥
यह सुनि तब सहदेव बिचारा ❀ कह्यो भूप सुनु कहा हमारा ॥
जो गुरु कह्यो सत्य सो बानी ❀ चलो जहां हैं शारँगपानी ॥

यदुनायक सो आज्ञा माँगी ❋ चलो हेवारे महँ तन त्यागी ॥
तुरत ब्यास सो आज्ञा लीन्हा ❋ द्वारावती गमन नृप कीन्हा ॥
अर्जुन जाय तुरत रथ साजा ❋ त्यहिपर चढ्यो युधिष्ठिर राजा ॥
अतिशोभित रथ बरणि न जाई ❋ किङ्किणिध्वनि सुनि देव सिहाई ॥

दोहा–पांचो भाई चढे तब, श्रीगुरुचरण मनाय ।
सिन्धु तीर द्वारावती, तहाँ पहूँचे जाय ॥

द्वारावती निकट नृप गयऊ ❋ तब रथ त्यागि पियादे भयऊ ॥
जहँ श्रीकृष्ण बिराजहिं धामा ❋ तहँ नृप कीन्ह्यो दण्डप्रणामा ॥
धर्मतनय सम्पुटकरि हाथा ❋ अस्तुति करत मनाइहि माथा ॥

छन्द ॥

नमामि शिखरधारणं ❋ गोकुला गोपतारणं ॥
सुरेश मान मर्दनं ❋ नमामि प्रभु जनार्दनं ॥
नमामि कंसमर्दनं ❋ चाणूरगर्व गञ्जनं ॥
गयन्द प्राणरक्षकं ❋ ग्राह गर्ब भञ्जनं ॥
प्रहलाद प्राणरक्षकं ❋ नृसिंह दुष्ट भक्षकं ॥
सिन्धुसुता नायकं ❋ बिप्र सुख दायकं ॥
मही भार टारणं ❋ फणीश मानमारणं ॥
मच्छ कच्छ रूपराखी ❋ ताके सब बेद साखी ॥
बाराह बपुष धारी ❋ हिरण्याक्ष दुष्ट मारी ॥
नमामि रूप बावनं ❋ ब्रह्माण्डकियो पावनं ॥
नमामि गरुड़ बाहनं ❋ तवशरण कामदाहनं ॥
नमामि चक्र धारणं ❋ सुर धेनु दुःख हारणं ॥
जय बिश्वरूप स्वामी ❋ कृपालु अन्तरयामी ॥
जय जक्तहरण न्यारे ❋ नरदेह आय धारे ॥
मुकुन्द जक्त पालकं ❋ गोबिन्ददनुजघालकं ॥
जय जय जलशायनं ❋ जय सब गुणआयनं ॥
नमामि शरण आयों ❋ श्रीकृष्णदरश पायों ॥

सोरठा—यहिविधि अस्तुतिकीन्ह, पाणेजोरिकैधर्मसुत ।
कृष्णअङ्कभरिलीन्ह, करिदायाबहुबिधिभिलैउ ॥
सबलसिंह तजिमोह, जो सुमिरे हरिनामदृढ़ ।
सोई नर अति सोह. जन्म जन्मसुख पावहीं ॥
बैठे तुरत नृपहि बैठारी ❀ बोले बचन सन्त भयहारी ॥
कहौ कुशल नृप हमहिं सुनाई ❀ हस्तिनपुर कै सब कुशलाई ॥
आयो सकल भाइ किमिआजू ❀ सो महिपाल बतावहु काजू ॥
तब बोले नृप दोउ कर जोरी ❀ सुनहु मुरारी बिनती मोरी ॥
हमसे व्यास कह्यो अस बाता ❀ तुमनृपअगणितगोत्र निपाता ॥
दोहा—कोटिन यज्ञ करहु जो, तीर्थ करहु समुदाय ।
दान अनेकन देहु नृप, यह हत्या नाहिं जाय ॥
सो यदुनाथ कहौ समुझाई ❀ ज्यहिबिधि हम भवपारै जाई ॥
तब बोले श्रीयदुकुल नाथा ❀ कर्म अकर्म सबै बिधि हाथा ॥
एक बात समुझावहुँ तोहीं ❀ जस नृप समुझि परत है मोहीं ॥
आयो कलियुग महा अनीती ❀ अब न कोय निजइन्द्रिय जीती ॥
ब्राह्मण नहिं करिहैं शुभ काजा ❀ सजिहैं शूद्र तपस्या साजा ॥
दाया धर्म रहित ह्वै जाई ❀ साधु निरादर जहँ चलिजाई ॥
कलियुग तीरथ रहे छपाई ❀ बिरला कोउ तीरथ का जाई ॥
कलियुग गोवैं दूध न देहैं ❀ कन्या बेचि सकल धन लेहैं ॥
दायारहित सकल संसारा ❀ कोउ न आतम करहि बिचारा ॥
मेघवृष्टि करिहैं अति थोरा ❀ मण्डलखण्ड वृष्टि चहुँओरा ॥
राजा प्रजा त्रासि धन लेहैं ❀ कोइ किसान अंश नहि देहैं ॥
दोहा—करिहैं राज्य मलिच्छ सब, क्षत्री सबबिधिहीन ।
धर्महीन ह्वै जाइ हैं, तेहिते ह्वैहै क्षीन ॥
कन्या द्वादश बर्ष प्रसूता ❀ षोड़श बर्ष जाइहै पूता ॥

अर्थ लागि नर धर्महि करहीं ❀ बिना अर्थ नहिं दाया धरहीं ॥
कलियुग करम विविध परकारा ❀ बरणत होई ग्रन्थ अपारा ॥
सो संक्षेप कह्यो समुझाई ❀ आगिलचरित सुनहु मनलाई ॥
श्रीकृष्णहि जब कह्यों बुझाई ❀ तब राजा के बिस्मय आई ॥
बिबिध भांति मन कीन्ह बिचारा ❀ अब नाहीं होई निस्तारा ॥
तुरत कृष्णकहँ करि परणामा ❀ चढ़िरथचलतभयो निज धामा ॥
आया तहँवां पांचो भ्राता ❀ जहँवां रहै कुन्तिमा माता ॥
पुत्रन देखि कुन्तिमा कहई ❀ काहे वदन सूख तव अहई ॥

दोहा—कहा नृपति माता सुनहु, कलियुग भा बिस्तार।
सबलसिंह श्रीकृष्णप्रभु, भाष्यो सबै बिचार ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कहा नृपति मातहि समुझाई ❀ उत्तर पन्थ जाब सब भाई ॥
सुनत कुन्तिमा नृप के बयना ❀ हृदय शोच भरिआयो नयना ॥
क्यहि कारण मम पुत्र बिछोहू ❀ यहमनसमुझि भयो अतिकोहू ॥
फिरिधरि धीरज कह्यो बिचारी ❀ सुनहु पुत्र यह बात हमारी ॥
भूमि हेतु तुम भारत कीन्हा ❀ रणमहँलोह गुरुनसन लीन्हा ॥
दुर्योधन कै सेन सँहारी ❀ गुरु औ बन्धु गोत्रसब मारी ॥
मारेउ करण दुशासन बीरा ❀ विष्वक्सेन हत्यो रण धीरा ॥
भीषमचार्य धर्मध्वज मारेउ ❀ अश्वत्थामा बन्धु सँहारेउ ॥
वीर कलिङ्ग जोन धनुधारी ❀ कुँवर लक्ष्मण हत्यो प्रचारी ॥

दोहा—बिबिधभाँति संग्राम करि, जीत्यो बीर अनेक।
पाइ एकछत राज्य अब, तजो भीम की टेक ॥

सुनि माता के वचन विनीता ❀ तब नृप बोल्यो गिरा पुनीता ॥
सुनु माता अब कलियुग माहीं ❀ राज्य करें कर पौरुष नाहीं ॥
श्रीकृष्णहि आज्ञा शिर धरिहौं ❀ उत्तरपन्थ गमन अब करिहौं ॥
राज्य परीक्षित देहु सुहाई ❀ करिहैं मातु तोरि सेवकाई ॥
यह सुनि शीश परीक्षित नाये ❀ बोले नृप सन बचन सुहाये ॥

तुम बिन नाथ मोहिं सुख नाहीं ❋ बन्धुहीन नहिं राज्य सोहाहीं ॥
तब नृप पुत्रहि हृदय लगावा ❋ धीरज दीन बहुत समुझावा ॥
सत्य बचन सुत कह्यो बिचारी ❋ क्षत्री धर्म सदा अनुसारी ॥
दाया राख्यो मन करि धीरा ❋ पाल्यो प्रजा सदा तुम बीरा ॥

दोहा—दायाराख्यो हृदय महँ, कहेउ सो किहेउप्रमान।
राजधर्म लक्षण यही, ऐसे बेद बखान ॥

भीमसेन सों कह्यो भुवारा ❋ बेगि करो अभिषेक बिचारा ॥
अगणित स्यन्दन तुरत सजाये ❋ ओषधिमूल फूल सब लाये ॥
दूतन बोलि तुरत जल मांगा ❋ साजे बेगि अनेकन नागा ॥
बिबिध भाँति बाजन बजवाये ❋ व्यास आदि सब ऋषै बोलाये ॥
बिप्रन कीन्ह बेद उच्चारा ❋ जय जय शब्द भयो अनुसारा ॥
महादिव्य सिंहासन आवा ❋ मणिनजटितबहु भाँतिसोहावा ॥
व्यासदेव की आज्ञा पाई ❋ राज्य परीक्षित को बैठाई ॥
व्यासदेव तब तिलक करावा ❋ देशके भूपन माथ नवावा ॥
पौत्रहि राज्य भूप जब दीन्हा ❋ सबहिनबिबिधनिछावरि कीन्हा ॥
तबहिं नृपति मातहिं शिरनाई ❋ पाँचो भाइ चले हर्षाई ॥
गङ्गातीर तुरत नृप आये ❋ मणि मुक्ता बहुभाँति लुटाये ॥

दोहा—बोले बिप्र अनेक बिधि, दीन्हदानबहुभांति ।
स्यन्दनहयगजबसनमणि, बरणतबरणिनजाति ॥

बायु बेग साज्यो रथ पावन ❋ ऊँच ध्वजा अतिपरम सुहावन ॥
सहित द्रौपदी पाँचो भाई ❋ तिहि पर नृपति चढ्यो हर्षाई ॥
उत्तर मुख तुरतहि रथ भयऊ ❋ नगर लोग व्याकुल ह्वै गयऊ ॥
रोवहिं पशु पक्षी सब नाना ❋ महाबियोग न जाइ बखाना ॥
अब कथहिक शरणागत रहिबे ❋ होइहि त्रास भागि कहँ जैबे ॥
तब सबहिन समुझाय नरेशा ❋ कहि सब कलियुग को उपदेशा ॥
धर्मराय सब कहँ समुझावा ❋ उत्तरदिशाहि बिमान चलावा ॥

ब्रह्मचर्य ब्रतयुक्त सुहाये ❋ हरद्वार समीप नृप आये ॥
को छबि हरद्वार की कहई ❋ दरशन करत महाअघ दहई ॥
घाट सोहावन रतन जड़ाये ❋ जहँ बहु देव रहैं नित छाये ॥

दोहा—हरिचरणनदरशनकरी, ब्रह्मकुण्ड असनान ।
श्रीकृष्णपद सुमिरि तब, नृपाफिरिकीन्हपयान ॥

हरद्वार उत्तर चलि आये ❋ वीरभद्र के दरशन पाये ॥
करि दरशन नृप आगे गयऊ ❋ तपकानन प्रमुदित मन भयऊ ॥
विविध मुनिनके धाम सुहाये ❋ भूपति देखि महासुख पाये ॥
भरत दरश कीन्ह्यो हरषाई ❋ लक्ष्मण चरण बिलोक्यो जाई ॥
करि परदक्षिण सुमिरि मुरारी ❋ सुरप्रयाग देख्यो भयहारी ॥
फेरि नृपति तहँवाँ चलि आये ❋ शिव आश्रम जहँ बेदन गाये ॥
शंकर दरश हेत मन ठाना ❋ सो गिरिनाथ हेत सब जाना ॥
छिपे शम्भु महिषा उर माहीं ❋ ढूँढन लगे मिलहिं हर नाहीं ॥
कह नृप सुनहु बचन अब ताता ❋ कहँगे शम्भु कहो सो बाता ॥

दोहा—कह सहदेव बिचारि करि, सुनहु भूमिपति बात ।
यहै जानि छिपि रहे शिव, हम कीन्हे कुलघात ।

सुन्यो भीम महिषासुर जबहीं ❋ क्रोध कीन्ह बायूसुत तबहीं ॥
जो महिषा उर छिपे महेशू ❋ तो तुम सुनो मोर उपदेशू ॥
मम चरणन के बीच निकारी ❋ तब दरशन देहैं कामारी ॥
भूप कह्यो सुनु भीमकुमारा ❋ क्रोध किये नहि काज हमारा ॥
शंकर दीनबन्धु जगदीशा ❋ सुर नर मुनि सबनावहिं शीशा ॥
धर्मराय तब अस्तुति ठाना ❋ पाँचो भाइन यह मत माना ॥
जय जय शंकर जनभयहारी ❋ दीनबन्धु भयहरन पुरारी ॥

छन्द त्रिभंगी ॥

जय शिवशंकर शरण भयहरण व्यापक रूप अनूपा ।
पाणि त्रिशूल दरिद्रदवंन प्रभु कृपासिन्धु सुररूपा ॥

सुर मुनि पालक खलकुल घालक जय कृपालु बृषकेतू ।
जय त्रिपुरारी प्रभु कामारी जासु नाम भवसेतू ॥
अङ्ग बिभूति अभूषण सो हैं देखिरूप सुर नर मुनि मोहैं ।
कण्ठ शेष गरल कृत भच्चन शीश जटा गङ्गाजी सोहैं ॥
हमहिं कृतारथ करनहेत अब दरशन देहु कृपाला ।
सबलसिंह पुनि पुनि नृप बिनवैं जय जय दीन दयाला ॥
जयशिव सब लायक सब जगनायक गञ्जनबिपति समूहा ।
गुण औगाह थाह नहिं पावत गावत सब सुर जूहा ॥

सोरठा—यहिबिधि बिनतीकीन्ह, पाणिजोरिधर्मराज तहँ।
तब हर दरशन दीन्ह, तबकेदारपतिपरच्छिनृप॥
परच्छि केदार भुवाल, बिनयकरतमहिभालधरि।
जयजय शम्भुकृपाल, प्रभुमोहिपार लगाइये ॥

छन्द ।

नमामि ईश ईश्वरं ❋ पाहि मे प्रमेश्वरं ॥
नमामि आशुतोषनं ❋ समस्तलोक पोषनं ॥
अनेक रूप धारणं ❋ बिभञ्जलोक कारणं ॥
गिरीश रूप आगरं ❋ त्रिलोक में उजागरं ॥
कपाल माल शोभितं ❋ पाहि शरण मैंनितं ॥
नमामि गङ्ग धारणं ❋ भवसिन्धुसुतातारणं ॥
व्यापकं बिभुं प्रभो ❋ गुणाकरं कृपाल भो ॥
दयाल दीन नायकं ❋ सन्त सुःखदायकं ॥
कराल काल भच्चकं ❋ स्वभक्त दीन रच्चकं ॥
हिमवन्त सुता नायकं ❋ सर्व सिद्धि दायकं ॥
निरङ्कार रूप नाथ ❋ अर्थ चारि प्रभो हाथ ॥
शैलनाथ शिवनाथ ❋ नागेश्वर रामनाथ ॥
दरश दियो जानि दीन ❋ मैंतो सर्वज्ञ हीन ॥
बार बार हाथ जोरि ❋ राखो अभिलाषमोरि ॥

दोहा—बार बार बिनती करी, भूप दण्डवत कीन्ह ।
मनवाञ्छित बरपायो, शम्भु आशिषहि दीन्ह ॥
पांचो भाइ बहुरि शिरनाई ❀ आगे कहँ रथ दीन चलाई ॥
चलेउ बद्रिकाश्रम को ताके ❀ अगणित पर्वत नांघत बांके ॥
शंखावत पर्वत पर आयो ❀ महा ऊँच नहि मारग पायो
ताहि तूरि तहँ पवन कुमारा ❀ रजकर शृंग तूरि महिडारा ॥
निर्मल पन्थ कीन्ह बलवाना ❀ आगे चलत भजत भगवाना ॥
विश्ववती गिरि देख्यो जाई ❀ मारग तहां भीम नहिं पाई ॥
बायें हाथ तूरि तिहि दयऊ ❀ तहां पन्थ अति निर्मल भयऊ ॥
तिहि पर चढ़िगे पांचो भाई ❀ शिखर बिमानवती नियराई ॥
तहां एक अति दैत्य प्रचराडा ❀ आगे आइ मिला बरबराडा ॥
देखि नृपहि अति हर्षित भयऊ ❀ बचन क्रोध अतिशीतल कहेऊ ॥
सुफल जन्म मम भयो भुवारा ❀ शत्रुदरश मोहिं मिलेउ तुम्हारा ॥
सज्जन शत्रु आजु गृह आवा ❀ मिटा कोटि दुख दारुण दावा ॥
दोहा—आजु जन्म ममसुफल भा, सज्जनरिपुगृह पाइ ।
देहु युद्ध धर्मराज मोहिं, कहैलाग गोहराइ ॥
कहा भूप सुनु निशिचर राजा ❀ मैं छांड्यो सब लौकिक काजा ॥
ब्रह्म चर्य हम पांचौ भाई ❀ बर्त युक्त नहि युद्ध सोहाई ॥
अस्त्र सकल अर्जुन धरि दीन्हे ❀ अगमपन्थ महँ काहु न लीन्हे ॥
शङ्कर दरश कीन्ह हम जबहीं ❀ भीमहु गदादीन्ह धरि तबहीं ॥
पगिडत है भाई सहदेऊ ❀ नकुल न जान युद्धकर भेऊ ॥
यहि मा लरनहार नहिं कोई ❀ हम सों युद्ध कबहुँ नहिं होई ॥
यह सुनि मेघनाद अस कहई ❀ बिना युद्ध नहि देबै जाई ॥
देहु युद्ध मोहिं नृप रणधीरा ❀ पुनि पुनि कहै निशाचर बीरा ॥
सुनिकै भीम क्रोध भरि आयो ❀ धर्मराय सों बचन सुनायो ॥
दोहा—आज्ञा देहु नृपाल मोहिं, निशिचर हतौं प्रचारि ।
भूपति कहेउ भीमसेन, राखहु क्रोध सँभारि ॥

कहा पन्थ कहँ जो कोउ जाई ❋ क्रोधै तजै शास्त्र अस कहई ॥
हरिजन कहँ रिस कबहुँ न आवै ❋ द्वादश षष्ठ पुराणै गावै ॥
दयत नृपति कहँ बहुत प्रचारा ❋ नहि आवा कछु हृदय खभारा ॥
मेघनाद तब गर्जत भयऊ ❋ जनु घनघोर महाधुनि कयऊ ॥
प्रलय समान ठोंकि भुजदण्डा ❋ कीन्ह्यसि नाद महापरचण्डा ॥
झपटि द्रौपदी को लै गयऊ ❋ भीम हृदय अतिविस्मय भयऊ ॥
कहो भूपसन्न पवन कुमारा ❋ नाथ भयो अपमान हमारा ॥

दोहा—पञ्चाली को दैत्य अब, लैगा अपने धाम ।
धिकधिकजीवनजन्ममम, जो न कीन संग्राम ॥

इति श्रीमहाभारते सबलसिंह भाषाकृते स्वर्गा रोहणपर्वणि द्रौपदी हरणंवैशम्पायन राजाजनमेजय संवादो नामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

असकहि भीम क्रोध भरि आयो ❋ मानहुँ सोवत सिंह जगायो ॥
ताल ठोंकि पर्वत लै धायो ❋ जहँवां असुरधाम तहँ आयो ॥
कोटिन दैत्य महा बरियारा ❋ धाये गरजत बिबिधप्रकारा ॥
शिखर प्रहार भीम तब कीन्हा ❋ मानहु बज्रघात करि दीन्हा ॥
पवन तनय अति भुजबलजोरा ❋ सहस निशाचर गहिशिरफोरा ॥
मेघनाद कहँ भूमि पछारी ❋ हाहाकार भयो अति भारी ॥
मारि निशाचर तपसिन लीन्हा ❋ तबहिं द्रौपदी आशिष दीन्हा ॥
धन्य पवननन्दन बलवाना ❋ अपनि प्रतिज्ञा कियो प्रमाना ॥
धन्य महाबल अतिभुज जोरा ❋ राख्यो भीम सत्य तुम मोरा ॥

दोहा—धन्य धन्य पाण्डवसुवन द्रुपदी कीन बखान ।
पाँचोभाइनसुमिरिहारि, पुनिफिरिकीनपयान ॥

बैशम्पायन कहि समुझाई ❋ सुनु जनमेजय नृप मनलाई ॥
कथा पुनीत सुनत दुख भागे ❋ पांचौ भाइ चले पुनि आगे ॥
यूप कूप आगे शत बीरा ❋ देखत कूप भीम रणधीरा ॥
कहा कूप सुनु पाण्डुकुमारा ❋ सुनहु नाथ अब कहा हमारा ॥
क्रोध ढील अरु पन्थ सुहाये ❋ हमहूँ दरश तुम्हारे पाये ॥

अस शुभ बचन कूप जब कह्यऊ ❀ सुनत भीम तब शीतल भयऊ ॥
आगे चले युधिष्ठिर राजा ❀ बेनवता देखिनि नृप साजा ॥
देवसुता तब आगे आई ❀ दोउ करजोरि कहा शिरनाई ॥
धन्य धर्मध्वज राजकुमारा ❀ अबकछु सिखबन सुनहु हमारा ॥
उत्तर पन्थ नाथ दुख भारी ❀ महाशिखर आगे भयकारी ॥

दोहा—इहवाँरहहु नरेश तुम, करहुबिबिधबिधिभोग ।
सुरपुरते अतिसरिससुख, छूटै जक्त बियोग ॥

कहेउ भूप सुनु कन्या बानी ❀ बेद चारि अस कहें बखानी ॥
राजपसार लोक तिन त्यागा ❀ हरि चरणन तिनकर मनलागा ॥
तिन सम धन्य और नहिं कोई ❀ हरिहि पियार सदा वे सोई ॥
अन्तसमय केवल पद पावैं ❀ फिरियहि जक्त बहुरि नहिं आवैं ॥
मैं निज पुर त्यागो अस जानी ❀ कहत भयो नृप अति मृदुबानी ॥
बेनवती समुझाय भुवाला ❀ बहुरि सुमिरिनिज इष्टगोपाला ॥
धरा शिखर ऊपर चढ़ि आये ❀ महा गहन नहिं मारग पाये ॥
भीम हृदय तब कीन्ह बिचारा ❀ धरा शिखर अतिऊँच अपारा ॥
सब पर्बत ते अति बिस्तारा ❀ ताके शृङ्ग तूरि महि डारा ॥

दोहा—धरा पर्बतन तूरिकै, कीन्हो पन्थ पुनीत ।
हरिहरसुमिरतबन्धुसब, आगे चलेउ बिनीत ॥

भद्रकालि कन्या तहँ रहेऊ ❀ देखि पाण्डवन मोहित भयऊ ॥
आगे आइ नृपति शिरनाई ❀ मृदुल बचन अति कह्यो सुहाई ॥
धन्य देव राजन शार्दूला ❀ सत्यब्रादि तुम सुकृती मूला ॥
बिबिध बिलास महा अस्थाना ❀ करहु भोग नृप परम सुजाना ॥
देवन कन्या परम सुहाई ❀ सो तुम्हार करिहै सेवकाई ॥
इन्द्रपुरी सुख सरिस सुहाये ❀ सो पैहौ नृप नित मनभाये ॥
करहु बिलास त्याग निज हेतू ❀ रहो नाथ सब बन्धु समेतू ॥
उत्तर पन्थ गहन बहुतेरे ❀ तहँवां पन्थ न पैहौ हेरे ॥
देव सुतन तब रूप देखावा ❀ देखि भूपके नहि मनभावा ॥

दोहा—भद्रकालिमों धर्मसुत, बहुबिधि कहेउ बुझाइ।
इन्द्रपुरी सो सरिस सुख, सों मैं चलेउँ बहाइ॥

हम जाइब श्रीपति के धामा * हम से नहीं भोगसे कामा॥
भद्रकालि समुझाइ नरेशा * आगे चलेउ अगम जहँ देशा॥
शिखर अनन्त महाबिस्तारा * शतयोजन सो ऊँच अपारा॥
चढ़ेउ युधिष्ठिर पाँचौ भाई * संग द्रौपदी पन्थ न पाई॥
आगे भीम पन्थ तहँ कीन्हा * गिरिके शृङ्ग तूरि तब दीन्हा॥
नाँघि अनन्त शिलापर गयऊ * श्रीपति कहँ देखन भयऊ॥
दूरिहिं ते प्रदक्षिणा कीन्हा * ठाकुर के दरशन नहिं कीन्हा॥
अस्तुति कीन्ह नृपति हरषाई * जय कृपालु सन्तन सुखदाई॥

त्रिभङ्गी छन्द॥

जय भवतारण असुरसँहारण जय चक्रगदाधर स्वामी।
महिभारविभञ्जन सुरमुनिरञ्जन जयकृपाल अन्तर्यामी॥
जय गदापदुमधर जिनहिं नमत हर जासु चरण श्रीगङ्गा।
प्रकट भई संसार में आइ कीन्हेंनि पाप सकल भङ्गा॥
जय दुष्टनिकन्दन जय जगबन्दन तुम भस्मासुर भस्म करो।
तुमहीं प्रभु प्रहलाद उबारेउ हरिणाकुशको उदर बिदारेउ तब ह्वैकै नरसिंह हरो॥
ते सबलायक सब सिधिदायक जिनकर मन रत पदकञ्जा।
सुमिरैं नाम हेत सब त्यागी धन्यधन्य तेनर बड़भागी जिनमायाको दलभञ्जा॥
तुमहीं प्रभु मधुकैटभ मारेउ तिहिके तनकै महि बिस्तारेउ सुरताल कोबलभञ्जा।
मच्छ कच्छ नरसिंह रूप बावन परशुराम बपु ह्वै हरिसुर सन्तनको दुखगञ्जा॥
सकल चराचर रूप तुम्हारा तुमहीं प्रभु यह जग बिस्तारा कोइनपावै पारा।
निगमागम निशिबासर गावैं शेष शारदा शङ्कर ध्यावैं बीते कल्प हजारा॥
गुण औगाह थाह नहिपावैं अपनी मतिभरि सहिनहिंगाई कोकबिकरै बखाना।
जेहिपर नाथ दयाकरि हेरेउ तेहिकी मति मदमोह नवेरेउ सोचरणनलपट्याना॥
बार बार कर जोरि धर्मसुत सहित द्रौपदी औ अर्जुन युत अस्तुतिकरत सुजाना।
मनबाञ्छित फल सोदीन्हेउ मोहिं जयकृपाल प्रभु मैं याचों तोहिं यहिबरमन अनुमाना॥

फिरि नृप बन्धु सहित गे तहँवां ऋषियसमूहबिराजैं जहँवांकीन्हेउदण्डप्रणामा ।
लोमशादि मुनि सकल बिराजैं निज निज बेदिन ऊपरराजैं तेज ज्ञानके धामा ॥

दोहा—गौतम औ जमदग्नि मुनि, भरद्वाज सुखधाम ।
अङ्गी ऋषि शृङ्गी ऋषि, जिनजाने हरिनाम ॥

पारस उदालीक मुनि ज्ञानी ❀ औ कौण्डिल्य महासज्ञानी ॥
शोभाऋषै गर्गऋषि तहँवां ❀ मारकण्डेय सहित हैं जहँवां ॥
सुरगुरु कपिलदेव तहँ भ्राजा ❀ बिश्वामित्र करहि तपसाजा ॥
सूर्यबंश के गुरु तहँ देखे ❀ राजै धर्म धन्य करि लेखे ॥
बामादिक अरु ऋषय बरिष्ठा ❀ ये सब बैठे सकल सरिष्ठा ॥
बालमीकि सब ऋषै अनेका ❀ ऋषिदल मध्य जे परमबिबेका ॥
भृगुनायक औ भारंगादो ❀ और सकल परमारथबादी ॥
अत्रीमुनि तहँ ज्ञाननिधाना ❀ कुम्भज आदि सकल सज्ञाना ॥
परमहंस देखत मन मोहे ❀ मानहुँ बेद धरे तन सोहे ॥
सनक सनन्दन सनतकुमारा ❀ शौनकादि नारदहि निहारा ॥
जान्यो सुफल जन्म मम होई ❀ ऋषि समूह जब देख्यो सोई ॥

दोहा—सबकहँ कीन्ह्यो दण्डवत, धन्यजन्मनिजजानि ।
सबल सिंह नृपबन्धु युत, चरण परेउ तबआनि ॥

तब ऋषि बोले गिरा सुहाई ❀ आशिष दीन्ह नृपहिं बैठाई ॥
नारदऋषि बोले तब बानी ❀ सुनहु धर्मनन्दन बिज्ञानी ॥
करतेउ राज सकलसुखनाना ❀ अबहीं काहेक कियो पयाना ॥
बैतरणी अति दूरि भुवाला ❀ मारग अगम बसै बहुकाला ॥
तहँको पहुँचब कठिन नरेशा ❀ काहेक तज्यो रुचिर अति देशा ॥
हस्तिनपुरी महासुख सोहै ❀ जेहिके देखत सुरगण मोहै ॥
सुनि नारदके बचन सुहाये ❀ भूप जोरिकर बचन सुनाये ॥
मोरिभाग्य अतिबल ऋषिराई ❀ जो तव चरण बिलोक्यों आई ॥
नृप कर जोरि मुनिनके आगे ❀ अस्तुति करन लगे अनुरागे ॥

छन्द नाराच ॥

नमामि सिद्धि दायकं ❀ मुनीश सन्त नायकं ॥
बेद रूप आगरं ❀ श्री ब्रह्मपुत्र नागरं ॥
सर्बज्ञ नाथ ब्रह्ममय ❀ नमो नमःकृपाल जय ॥
जय ब्रह्मबिष्णु शम्भुरूप ❀ अग्नि सूर्य चन्द्ररूप ॥
बेदनाथ बेदरूप ❀ तारो भ्रमजाल कूप ॥
नमामि मोह त्यागी ❀ हरि रूपमें अनुरागी ॥
मोहिं दीन जानिकै ❀ दरश दियो आनिकै ॥
पाहि पाहि नाथ मे ❀ सनाथ भयो देखि ते ॥

सोरठा—अहो भाग अवगाह, देख्यो चरण मुनीश तव।
छुटिगे कोटिन दाह, सबलसिंह नृपकहेउअस॥

सुनहु ऋषय कह बहुरि नरेशू ❀ ज्यहि कारण मैं छोड़ेउँ देशू ॥
आयो कलियुग महाप्रचण्डा ❀ अब सबके उर बस पाखण्डा ॥
नीति बिचार करी नहिं कोई ❀ बिबिध भाँति अनीतिजग होई ॥
नारदऋषि तब बोले बयना ❀ सुनहु महोपसकल गुण अयना ॥
भलकीन्हेउ तुम यह मतठाना ❀ जो उत्तर पथ कियो पयाना ॥
नारद कहन लगे बिज्ञाना ❀ सुनहु महाप हृदय धरि ध्याना ॥
यहि तनुअमित अनीतिहि रहहीं ❀ अपनी बृद्धि सकल वे चहहीं ॥
अस्थि माँस नारी त्वच जोरा ❀ काम क्रोध तिहिमा बरजोरा ॥
माया मोह साज भय सङ्गा ❀ इनकै बिबिध प्रकार तरङ्गा ॥
रजो तमो औ सतगुण आवै ❀ इनसब जीव बिबिध बिधि भावै ॥

दोहा—ये सबकराहिं कर्मबश, जीव कहै हम कीन्ह।
नारद भाषत ज्ञान यह, तेहि ते इनमहँ लीन्ह॥

चिन्ता हर्ष बसै तनु माहीं ❀ बहुबिधि नींद बश्य ह्वै रहहीं ॥
प्राकृतकर्म जीव कहँ लागै ❀ होइ सुखी जो इनकहँ त्यागै ॥
कर्म अकर्म उभय जग करई ❀ त्यहितें देह अनेक न धरई ॥

इन्द्री स्वाद भूलि जग माहीं ❀ हरिशरणागत आवत नाहीं ॥
दश इन्द्रिन के दशै बिचारा ❀ वे निशि बासर चलैं अपारा ॥
नेत्रन रूप रूप बश करई ❀ देखे की इच्छा बहु धरई ॥
श्रवणन शून्य सुनै कछु जबहीं ❀ जीवहि आइ करै बश तबहीं ॥
जिह्वै पर रस रस को चाहै ❀ नासा गन्ध गन्ध बश राहै ॥
त्वचा बसत अस्पर्श सुहाई ❀ शीत तपनि दुख सुखहि बताई ॥
औरौ इन्द्रिन के अति स्वादा ❀ सो वै चहै गयरि मर्यादा ॥
औरौं चारि अवस्था गाढ़ी ❀ तिन बहुभाँति जीवकहँ दाढ़ी ॥
बालक होइ युवा ह्वै जाई ❀ वृद्ध होय तनु जाय पराई ॥
योनि लक्ष चौरासी जोई ❀ कर्म निबन्ध करै जिय सोई ॥
यहि प्रकार जिय हरिकहँ भजई ❀ रहत अधीन संग कस तजई ॥
तीनि अवस्था बेद बखाना ❀ जाग्रत स्वप्न सुषोपति जाना ॥
पाँच पचीस तत्त्व बलवाना ❀ इन सङ्ग जीव भयो अज्ञाना ॥
शोधि मनै नहिं धावै पावै ❀ इनते गाँसि नादपर लावै ॥
त्रिकुटी संयम चढ़ै गगनमा ❀ सुरति बांधि देखो निजतनमा ॥
पाँचौं शब्द होयँ झनकारा ❀ सोइ साहब त्रिभुवनते न्यारा ॥

सोरठा—प्राकृत संग छोड़ाइ, मनकहँगाँसिबिचारिकरि।
हरि पदसुरतिलगाइ, फिरि न परै भ्रमजालनर॥
समदरशी ह्वै जाइ, एकरूप सब जक्त लखि ।
कहु नारद समुझाइ, सबलसिंह भवतरै सोइ॥

इति श्रीमहाभारतेसबलसिंहचौहानभाषाकृतेस्वर्गारोहणपर्वणि विज्ञानवर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

जब नारद राजहि समुझावा ❀ तत्वज्ञान को भेद बतावा ॥
तब नृप बहुरि हरषि शिरनाये ❀ सहित द्रौपदी पन्थ सिधाये ॥
आबू शिखर गये सब भाई ❀ तहँवाँ दैत्य मिले समुदाई ॥
कोटिन निशिचर यूथ घनेरे ❀ गर्जहिं आइ पन्थ महँ घेरे ॥
माँगहिं युद्ध गर्जि घनघोरा ❀ प्रलयकाल रव भै चहुँओरा ॥
कोइ गयन्द ह्वै रूप देखावैं ❀ ह्वै केहरि कोइ गर्जत आवैं ॥

अगणितरूप भयंकर देखी ❀ नृपति भीमसों कहेउ बिशेखी ॥
क्रोध न कीन्हेउ पवन कुमारा ❀ अब मन सुमिरहु जक्त उदारा ॥
दोहा—बासुदेव भगवान प्रभु, हरे कृष्ण गोपाल ।
गोपीपति गोबिन्द कहि, आगे चलेउ भुआल ॥
तहँवां शीत प्रबल अति भयऊ ❀ तुरत द्रोपदी तनु गलिगयऊ ॥
पश्चाली तनु तजि अनयासा ❀ जाइ कीन्ह बैकुण्ठ निवासा ॥
देखि भीम अतिशोच बढ़ावा ❀ दोनो नयन नीर भरि आवा ॥
हा देवी तुम तनु तजि दीन्हा ❀ तुम सम बर्त न काहू कीन्हा ॥
जस रोहिणी चन्द्रमहिं जाना ❀ जस रुक्मिणी कृष्ण कहँ माना ॥
तस अर्जुन कहँ मानेहु देवी ❀ निशिदिन चरणनृपति के सेवी ॥
तव ब्रत राखा कृष्ण मुरारी ❀ उभय सभामहँ होत उघारी ॥
भीमहिं बाढ़ा शोच अपारा ❀ तब समुझायो धर्म कुमारा ॥
भीमसेन तुम तजहु कलेशू ❀ निगमागमकर अस उपदेशू ॥
भारत भयो द्रौपदी हेतू ❀ जूझिगये सब गुरुन समेतू ॥
त्यहि कारण तनु गत है गयऊ ❀ धरहु धीर राजहिं अस कहेऊ ॥
ज्ञान मिटै उर करत अँदेशा ❀ धर्म सुवन बहुबिधि उपदेशा ॥
दोहा—जनअर्दन यदुनाथकहि, शिरीकृष्णकुलकेतु ।
आगे बढ़ेउ नरेश तब, पाँचौ भाइ समेतु ॥
कछुक दूरि आगे जब गयऊ ❀ कञ्चन पुरी बिलोकत भयऊ ॥
रतनखम्भ सब जड़ित सोहाये ❀ कञ्चन के कपाट बहु लाये ॥
देवन कला बिबिध परकारा ❀ जिनके रूप न कोउ संसारा ॥
रति रम्भा उर्बशी लजाहीं ❀ और त्रिया को लेखे माहीं ॥
शिव हरिशक्ति गने को भाई ❀ जक्तमातु उपमा किमि लाई ॥
रूपराशि कन्या सब धाई ❀ धर्मतनय सो कह्यो बुझाई ॥
अहहु भूप तुम शील निधाना ❀ राज्य करौ हमरे अस्थाना ॥
त्रिबिधभाँति सुख करहु नरेशा ❀ देव सुतन कर अस उपदेशा ॥
पाँचो भाइ रहो सब जानी ❀ बोलीं सकल बचन रससानी ॥

तब राजैं सब बचन सुनाये ❀ हम तो राज भोग तजि आये ॥
श्रीपति पुरुषहि इच्छा जागी ❀ तब हमचले महलसुख त्यागी ॥

दोहा—राजबिषय रस भोगहैं, मैं त्यागेउँ अस जानि ।
शिरीकृष्णपदपङ्कज, मति लाग भय हानि ॥

अस कहि भूप चलत पुनि भयऊ ❀ नाम अनङ्ग शिलापर गयऊ ॥
शीत प्रबल कछु बरणि न जाई ❀ सहदेव तनु तहँ गयो बिलाई ॥
कीन्ह भीमतहँ अति दुखधाता ❀ बुद्धिमन्त नहिं देखिय ताता ॥
कह्यो भीम भा बन्धु बिछोहू ❀ यहसुनि नृपहि भयो अतिकोहू ॥
ज्योतिष सकल बिशारद भाई ❀ सकलशास्त्र मतिबरणि न जाई ॥
बेदनिधान सकल गुण पूरे ❀ क्षत्री धर्म अस्त्र के पूरे ॥
अहह बन्धु गत भे क्यहि पापा ❀ सुमिरिभीमअति कीन्ह बिलापा ॥
राय युधिष्ठिर तब समुझाये ❀ कूर्मशिला ऊपर चढ़ि आये ॥
अतिघनघोर शिला तब कीन्हा ❀ नकुलहिआयतोपितेहि लीन्हा ॥
कीन्ह कोलाहल तेहि भयकारी ❀ अति प्रज्वलित शीत त्यों डारी ॥
तहवाँ नकुल देह गलि गयऊ ❀ पवनतनयके अतिदुख भयऊ ॥

दोहा—रूपराशिममबन्धुदोउ, सकलगुणनकोखानि ।
रोवहिं अर्जुनभीमसब, बल औ शीलबखानि ॥

नृपति समेत क्षणक करि शोचू ❀ आगे चल्यो छांड़ि सबशोचू ॥
नाम गोमती शिला पुनीता ❀ त्यहिपर प्रबल अमित अति शीता ॥
गर्जि धनञ्जय कहँ लै लीन्हा ❀ गजपुरनाथ सोच तब कीन्हा ॥
अहह बन्धु तुम यज्ञ कराई ❀ घोड़ा लायहु भूमि फिराई ॥
तुम्हरे बल बिप्रन कहँदाना ❀ दीन्ह्यों मैं जो मो मन माना ॥
महाधनञ्जय कृष्ण पियारे ❀ तुम राजन के गर्ब प्रहारे ॥
तुव भुजबल सुरनाथ गयन्दा ❀ पूजि पूजि मैं कीन्ह अनन्दा ॥
तुम बिनु दिशा शून्य ह्वै गयऊ ❀ अहह बन्धु कहवां तुम गयऊ ॥
धिक ममजन्म युधिष्ठिर कह्यऊ ❀ जो मम बन्धु नाश ह्वै गयऊ ॥
क्षणक शोच फिरि शोच बिहाई ❀ आगे चलत भये द्वौ भाई ॥

बैतरणी जहँ नदी सोहाई ❀ तिहि अस्थान गये द्वौ भाई ॥

दोहा—बैतरती जहँ शिला बड़, गर्जा प्रलय समान ।
तिहितर तोपि गयो पुनि, बायुसुत बलवान ॥

नृपति युद्धिष्ठिर शोच बढ़ावा ❀ श्वानस्वरूप तहाँ यक आवा ॥
ताहि देखि नृप कह्यउ बिचारी ❀ अहो श्वान कहँ बास तुम्हारी ॥
उत्तर पन्थ स्वर्ग भयकारा ❀ तुम कहुँ देख्यहु भीम कुमारा ॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेवा ❀ कहो श्वान कछु इनकर भेवा ॥
यह सुनि श्वान कह्यो मृदुबानी ❀ सुनहु युद्धिष्ठिर नृप विज्ञानी ॥
बैतरणी यह नदी पुनीता ❀ कृष्ण स्वरूप कहत अस गीता ॥
मज्जन करहु पाप मिटि जाई ❀ फिरि नहिं जक्त जन्म नियराई ॥
नरतनु मोह लोभ सँग लागे ❀ मायारवगुण तोनि अभागे ॥
यह नरदेह मूत्र मल झोरी ❀ यहिमा पांच तत्व हैं जोरी ॥
कामादिक विष्ठा लपटानो ❀ करु अस्नान नृपति असजानी ॥
यामें मज्जन करै जो कोई ❀ पलटै देह देवतन होई ॥

दोहा—श्वानकह्यउ समुझाइकै, करहु नृपति अस्नान ।
सकल पाप तब छूटै, आवै स्वर्ग बिमान ॥

तुरत नृपति मज्जन तब कियऊ ❀ छुटिगा मोह ज्ञान बर भयऊ ॥
भूप श्वान की अस्तुति कीन्हा ❀ तुम मम पिता ज्ञान मोहिं दीन्हा ॥
माता बन्धु सखा तुम मोरे ❀ यहि विधि नृपति कहत करजोरे ॥
तिहिक्षण आवा बिष्णु बिमाना ❀ तेजपुञ्ज रविकिरणि समाना ॥
को शोभा त्यहि यान कि कहई ❀ शेष शारदा त्यउ ठगिरहई ॥
मुक्तन के गुच्छा चहुँ ओरा ❀ मणिनसिंहासन तिहिपरजोरा ॥
महापुनीत रत्नमय सोहा ❀ जानै धर्मसुवन जिन जोहा ॥
विविध सुगन्ध लपेटि सोहावा ❀ लेकै विष्णुदूत तहँ आवा ॥
धर्म तनय सन कहेसि बुझाई ❀ चढ़हु बिमान नाथ अब आई ॥
चढ़ि बैकुण्ठहि चलो भुवाला ❀ तहँ भोगहु सुखबिविध बिशाला ॥
सकल देव जहँ श्रीभगवाना ❀ मुनिजन तहां बसत हैं नाना ॥
बिबिध तपस्या जिन महिकीन्हा ❀ तिनहिं निवास तहां बिधिदीन्हा ॥

दोहा–बिष्णुदूतकेबचनसुनि, कहा नृपति करजोरि ।
श्वानचढ़ावोयानपर, प्रभुबिनतीसुनिमोरि ॥
बिना श्वाननहिं चढ़ौं बिमाना ❀ नहिं बैकुण्ठ करौं प्रस्थाना ॥
नृपबाणी सुनि सूर्य कुमारा ❀ कह्यो धन्य सुत ज्ञान तुम्हारा ॥
चढ़हु तात हरि रुचिर बिमाना ❀ मैं तव पिता नहीं मैं श्वाना ॥
धन्य युधिष्ठिर देवन कहेऊ ❀ सुरतरु सुमन बृष्टि नभ करेऊ ॥
धर्मराज सुररूप देखावा ❀ राइ युधिष्ठिर पद शिरनावा ॥
धन्य जन्म मम भयो सोहावा ❀ पिता तुम्हार दरश मैं पावा ॥
नेम क्रिया सब सुफल हमारे ❀ तात चरण अब देखि तुम्हारे ॥
नमोऽस्तुते कहि बारहिं बारा ❀ हरि बिमान पर चढ़्यो भुवारा ॥
बिष्णु बिमान बैठि जब राजा ❀ तबहरिगणन अभूषण साजा ॥
मुकुट मनोहर शीश बँधावा ❀ पीताम्बर पट आनि ओढ़ावा ॥
नवभूषण भुज बांधि बहूंटा ❀ कङ्कण आनि हाथमहँ जूटा ॥
हरिस्वरूप जस बेदन गाये ❀ विष्णुगणन तस नृपति बनाये ॥
रुचिरछत्र शिर ऊपर ताना ❀ ढोरत चमर उड़ान बिमाना ॥
दोहा–याहिबिधिनृपहिं विष्णुगण, क्षणमहँ लैगेधाम ।
जे छलछांड़ि भजहिं हर, तिनहिंदेत गति राम ॥
हरिगण नृपति धाम लै आये ❀ श्रीनिवास के दर्शन पाये ॥
देखि भूप दोनों करजोरी ❀ जय दयाल राख्यहु रुचि मोरी ॥
जय सच्चिदानन्द घनश्यामा ❀ यह सुनि आपु उठे श्रीरामा ॥
क्षीरनिवास हृदय महँ लाये ❀ गहि भुज अपने ढिग बैठाये ॥
नृप बैकुण्ठ विराज्यो जाई ❀ बैशम्पायन कथा सब गाई ॥
जनमेजय सुनि अतिसुखपावा ❀ मुनिकहँ बहुरि हर्षि शिरनावा ॥
कथा पुनीत सुनत दुख भागा ❀ आगे बहुरि करहु अनुरागा ॥
मुनिअभिलाष नृपति की जाना ❀ फिरि आगे तब कीन्ह बखाना ॥
हरिपुर नृपति जाई सुख पाई ❀ तहां विलोक्यो चारिहु भाई ॥
सहित द्रौपदी रूप अनूपा ❀ द्रोणाचार्य सहित सब भूपा ॥
देवरूप तहँ भीष्मपितामा ❀ करण सहित राजहिं हरिधामा ॥

दुर्योधन आदिक बलवाना ❀ जिनजिन मरत युद्ध रणठाना ॥
कुरुक्षेत्र पर जूझे जेते ❀ हरिपुरमध्य विराजहिं तेते ॥
नृप बैराट सहित सुत देखा ❀ औरहु बहुत करै को लेखा ॥
गांधारी माता तहँ देखा ❀ माद्री सहित धरे शुभ बेखा ॥
जयद्रथ नृप अहिवरण कुमारा ❀ सबहिनवहँ तहँ देखि भुवारा ॥

दोहा—भारत महँ जे जूझे, स्वर्ग निवासहि झारि ।
विविध भांति सुखपायो, धर्मसुतसहितनिहारि ॥

पुर बैकुण्ठ पाण्डवा गयऊ ❀ सुनि जनमेजय कहँ सुखभयऊ ॥
बारम्बार जोरि युग पानी ❀ ऋषिते कह्यो भूप मृदुबानी ॥
आनन शशि तवनाथ पुनीता ❀ अमृतमय यह गिरा बिनीता ॥
तृषितहृदयसुनि अतिसुखभयऊ ❀ नानाभांति लाभ मैं लह्यऊ ॥
यह तन कल्प पाण्डवन केरा ❀ सुनि छूटै चौरासी फेरा ॥
व्यासदेव भारत महँ भाखो ❀ यहिके चार निगम हैं साखी ॥
जो कोउ सुनै कपट करि दूरी ❀ पाइहि सिद्धि सकल सुख भूरी ॥
क्षत्री सुनै समर जय पावै ❀ जो बिश्वास मानि यह गावै ॥
ब्राह्मण पढै सुनै छल त्यागी ❀ बेदनिधान होय बड़भागी ॥
जो नर नारि सुनै मन लाई ❀ त्यहिकर पाप सकल मिटिजाई ॥
अन्तकाल निर्भय हरिलोका ❀ जाइ बसै तजिकै यमशोका ॥
काशी प्राग गया अस्नाना ❀ तसफलयहसुनि व्यास बखाना ॥
दान अनेक देय जो कोई ❀ तस फल होय सुनै यह सोई ॥

सोरठा—शंकर शारद शेश, चारिहु बेद सहस्र षट ।
सबकरअसउपदेश, भजुहरिचरणबिहायछल ॥
सबलसिंहमतिहीन, ब्यास कहततसकहेउहम ।
प्रभु तारत जनदीन, सोइ मनकर्मभरोसकरि ॥

इति श्री महाभारते सबल सिंह चौहान भाषाकृते स्वर्गारोहण पर्वणिश्रीपाण्डवस्वर्गवास वैशम्पायननृपजनमेजयसंवादोनाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

इति श्रीस्वर्गारोहणपर्व समाप्तम् ॥

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा—भार्गवभूषण प्रेस, गायघाट त्रिलोचन काशी में मुद्रित ।

आसनादि प्रयोगों से युक्त—

सचित्र कोक-शास्त्र

अर्थात् पति पत्नी

(मानवरति तथा जीवन सम्बन्धी एक अपूर्व ग्रन्थ)

लेखक—अमरपालसिंह "विशारद"

आजकल वैवाहिक जीवन भारस्वरूप और दुनियां के झंझटों का केन्द्र बन रहा है। पति और पत्नी इच्छा रखते हुये भी एक दूसरे को प्रसन्न नहीं रख सकते कारण यह है कि पति और पत्नी अपने २ कर्तव्यों को नहीं जानते। दम्पति का एक दूसरे के प्रति क्या कर्तव्य है, वैवाहिक जीवन क्योंकर सफल और सुखमय हो सकता है, गृहस्थाश्रम किस प्रकार स्वर्ग का नमूना बनाया जा सकता है, स्त्री पुरुष को और पुरुष स्त्री को किस प्रकार प्रसन्न और वश में रख सकता है इत्यादि २ बातों को सर्व साधारण के सामने रखने के लिये ही यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। इसमें कामशास्त्र के लक्षण उसकी उपयोगिता और आवश्यकता, स्त्री पुरुष की जननेन्द्रियों की बनावट, रज-वीर्य, मासिक धर्म अप्राकृतिक मैथुन ब्रह्मचर्य्य नारी पुरुषभेद विवाह संस्कार संयोग-शिक्षा दाम्पत्यप्रेम बेश्यागमन आदि २ आवश्यक विषयों पर तो पूर्ण प्रकाश डालाही गया है इसके अतिरिक्त स्त्रियों के कामोद्दीपन उनके अंगों में कामका चढ़ाव आलिङ्गन चुम्बनादि, उनको स्खलित तथा तृप्त करने और इच्छानुसार पुत्र पुत्री या किसी विशेष गुण वाली स्वस्थ सुन्दर दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न करने को ऐसी विधियाँ लिखी गई हैं और आसनादि कामशास्त्र सम्बन्धी ऐसे २ गूढ़ रहस्य खोल दिये गये हैं जो आज तक और इस प्रकार की पुस्तक में न देखे होंगे। पुस्तक की योग्यता देखने ही से मालूम होगी अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है परन्तु इतना कह देंगे कि वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने के लिये जितनी भी बातों की आवश्यकता हो सकती हैं वे सब इस पुस्तक में मोजूद हैं और उन विषयों पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है जिनके न जानने के कारण कितने हो स्त्री पुरुष कुसंगति में पड़कर अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि इस पुस्तक में बताये हुये सभी नियमों का पालन करने से आप अपने जीवन को स्वर्गीय बना सकेंगे और सुख तथा प्रेम मय जीवन व्यतीत करते हुए दीर्घजीवी हो सकेंगे और अपनी बहू बेटियों को गुण्डों के पन्जेसे बचासकेंगे। पुस्तक के अन्त में कामशास्त्र से सम्बन्ध रखनेवाले सभी रोगों का वर्णन और अनुभूत प्रयोगभी दिये हुएहैं। पृष्ठ संख्या लगभग ४०० सचित्र और जिल्ददार पुस्तक का दाम २)

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस सिटी।